खोज में उपलब्ध

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों

का

पंद्रहवाँ त्रैवार्षिक विवरण

[सन् १९३२-३४ ई०]

संपादक

स्वर्गीय डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल

(श्री दौलतराम जुयाल द्वारा अंग्रेजी से हिंदी में रूपांतरित)

उत्तर प्रदेशीय शासन के संरक्षण में काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
संपादित और प्रकाशित

काशी

सं० २०११ वि०

विषय सूची

वक्तव्य

हमने त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६–२८ ई०) में दिए गए वक्तव्य में बताया है कि सौर मिति २० श्रावण २०१० वि० (५ अगस्त १९५३ ई०) की खोज उपसमिति ने उत्तर प्रदेशीय शासन की १००००) रु० की सहायता को—जो खोज विवरणों के छापने के निमित्त दी गई—दृष्टि में रखकर तीन हजार पृष्ठों में अधिक से अधिक विवरणों को छापने का निश्चय किया था। तदनुसार दो जिल्दें (पहली और दूसरी) छप चुकी हैं जिनमें क्रमशः उक्त त्रैवार्षिक विवरण और चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२९-३१ ई०) हैं। तीसरी जिल्द पाठकों के सामने प्रस्तुत है। इसमें सन् १९३२–३४ ई० का त्रैवार्षिक विवरण है। इसका कलेवर बड़ा न होने से इसका संक्षेपीकरण नहीं हुआ है। इस विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक स्व० डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल ने खोज विभाग के साहित्यान्वेषकों की सहायता से अंग्रेजी में संपादन किया था। हिंदी में इसका रूपांतर खोज के वर्तमान साहित्यान्वेषक श्री दौलत राम जुयाल ने सावधानी से किया है। रूपांतर में ग्रंथों एवं ग्रंथकारों का अनुक्रम अंग्रेजी लिपि के ही अनुसार है। इसको परिवर्तित न करने का कारण पूर्वोक्त त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण में पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र द्वारा लिखित पूर्वपीठिका में दिया गया है।

दीर्घ व्यवधान के पश्चात् खोजविवरण प्रकाशित हो रहे हैं। इसके लिए हम उत्तर प्रदेश राज्यशासन के आभारी हैं जिसकी सहायता से यह संभव हो सका है और जिसे इस कार्य के संरक्षण का श्रेय प्राप्त है। हमें पूर्ण आशा है कि राज्यशासन की सहायता से अप्रकाशित सभी विवरण शीघ्र ही छप जाएँगे।

मैं सभा के प्रधानमंत्री डा० राजबली पांडेय के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने इस कार्य में पूर्व रुचि लेते हुए इस विवरण को नागरी मुद्रणालय में छपवाने का शीघ्र प्रबंध कर दिया। मुद्रणालय के मैनेजर बाबू महताबराय जी का मैं विशेष अनुगृहीत हूँ जिन्होंने प्रस्तुत विवरण को समय पर छापने के अतिरिक्त प्रूफ संशोधन के कार्य में बड़ी सहायता पहुँचाई है। खोज विभाग के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल के परिश्रम और लगन से ही यह कार्य शीघ्र संपन्न हो सका है। उन्होंने ही इस विवरण का हिंदी में रूपांतर किया है। अतः वे और उनके सहायक रघुनाथ शास्त्री भी हमारे विशेष धन्यवाद के भाजन हैं।

काशी
२१ दिसंबर, १९५४

हजारी प्रसाद द्विवेदी
निरीक्षक, खोज विभाग

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का पंद्रहवाँ त्रैवार्षिक विवरण

(सन् १९३२, १९३३ और १९३४ ई०)

इस त्रिवर्षी (सन् १९३२, ३३ और ३४ ई०) में खोज का कार्य मैनपुरी, एटा, आगरा, हरदोई (अवध), अलीगढ़ तथा मथुरा के जिलों में हुआ। पं० बाबूराम बित्थरिया, पं० छोटेलाल और पं० लक्ष्मीनारायण त्रिवेदी ने अन्वेषण का कार्य किया। पं० छोटेलाल सन् १९३२ ई० में कुछ समय कार्य करने के बाद खोज विभाग से अलग हो गए।

इस अवधि में १९०५ हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण प्राप्त हुए जो इन तीन वर्षों में इस प्रकार विभक्त हैं :—

सन् ईसवी	विवरण लिए हुए हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या
१९३२ ,,	८६३
१९३३ ,,	५२८
१९३४ ,,	५१४

इस प्रकार ४७६ ग्रंथकारों द्वारा रचित १०१६ ग्रंथों की १३९४ प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। इनके अतिरिक्त ५११ ग्रंथों के रचयिता अज्ञात हैं। २३१ ग्रंथकारों के रचे हुए ४०१ ग्रंथ खोज में बिलकुल नवीन हैं। इनमें १७६ ऐसे नवीन ग्रंथ सम्मिलित हैं जिनके रचयिता तो ज्ञात थे किंतु उनके इन ग्रंथों का पता नहीं था।

नीचे सारिणी द्वारा ग्रंथों और उनके रचयिताओं का शताब्दिक्रम दिखाया जाता है :—

शताब्दि	१२वीं	१३वीं	१४वीं	१५वीं	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९वीं	अज्ञात एवं संदिग्ध	योग
ग्रंथकार	१	०	१	८	५१	६६	६८	८३	१६८	४७६
ग्रंथ	४	०	२	५३	३१९	२२८	३२९	१९७	७७३	१९०५

ग्रंथों का विषयानुसार विभाग नीचे दिया जाता है :—

१—धार्मिक	२७५	२१—नाटक	११
२—सांप्रदायिक	१७५	२२—व्याकरण	३
३—प्रार्थना	७६	२३—भूगोल	२
४—भक्ति	१३२	२४—इतिहास	१२
५—दर्शन	४०	२५—मृगया	२
६—पौराणिक काव्य	१०७	२६—मनोरंजन	२
७—संत काव्य	४६	२७—संगीत	६
८—प्रबंध-काव्य	५७	२८—गणित	६
९—संग्रह	१६४	२९—ज्योतिष	१४५
१०—जीवन-चरित्र	७२	३०—वैद्यक	९६
११—शृंगारी काव्य	१६४	३१—रसायन	८
१२—अलंकार	४३	३२—काम-शास्त्र	२३
१३—पिंगल	१५	३३—मंत्र-तंत्र	२६
१४—पहेली	७	३४—वनस्पति-शास्त्र	३
१५—कोष	१७	३५—पाक-शास्त्र	१
१६—कहावत	४	३६—पशु-चिकित्सा	६
१७—तर्क	३	३७—सामुद्रिक और शकुन	१५
१८—पत्रप्रबंध	१	३८—उपदेश	४३
१९—ग्राम्य काव्य	४६	३९—विविध	११
२०—टीका	३७		

नवीन लेखकों में से जनराज वैश्य, जनखुस्याल (कायस्थ), मानिक कवि और सेवादास मुख्य हैं।

१—**जनराज वैश्य** और उनका ग्रंथ 'कवितारस-विनोद' इस खोज में सर्वप्रथम प्रकाश में आ रहे हैं। इन्होंने इस ग्रंथ की रचना संवत् १८३३ वि० तदनुसार १७७६ ई०, में की।

> अठारह सै तेंतिस, सुभ संवत जेष्ठ सुमास बषानौं।
> सेत सुपक्ष तिथि दसमी अरु वार महावर भौम सु जानौं ॥

अर्थात् ग्रंथ का रचनाकाल मि० ज्येष्ठ शुक्ला दशमी भौमवार सं० १८३३ वि० (१७७६ ई०) है, और उसका लिपिकाल मिती मार्गशीर्ष कृष्ण १२ सं० १९०९ वि० (१८५२ ई०) है। वार का उल्लेख नहीं हुआ है। ग्रंथ काफी बड़ा है। इसमें पिंगल, काव्यगुणदोष, नवरस, नायिकाभेद और चित्रालंकार का वर्णन किया गया है। अंत में राजवंशादि का भी परिचय दे दिया है। ग्रंथकार के आश्रयदाता जयपुराधीश पृथ्वीसिंह थे और पूर्वज 'गढ़वीर' नामक ग्राम के अधिवासी थे। गलता के रहनेवाले कोई आचारज

(आचार्य) इनके गुरु थे जिन्होंने इनके वास्तविक नाम डेडराज को बदलकर जनराज कर दिया :—

"तब उन मोसों यों कही, भोग में (?) कवित्त में देइ (?) ।
नाम धरयो जनराज तब, श्रीमुष ते कर नेह ॥"

अपने आश्रयदाता का वर्णन कवि ने यों किया है :—

"करै सु जैपुर नग्र में, प्रथीसिंघ व [र] राज ।
तिनको प्रगट्यो जगत में, असो तेज समान (? ज) ॥"

और अपना परिचय इस प्रकार दिया है :—

"अब मैं अपने कुल कहौं, उपज्यो तिन में आनि ।
अगरवाले वैस हैं, सिंगल गोत बषान ॥
गढ़वारे इक ग्राम में, वासी आदि सुजान ।
हिरानन्द तिनके भए, कृपाराम सुखदान ॥
दयाराम तिनके सुवन, आए जैपुर ग्राम ।
तिनके हौं मतिमंद भौ, डेडराज मो नाम ॥"

इससे विदित होता है कि ग्रंथकार गढ़वारे के रहनेवाले (सिंघल) सिंगल गोत्रज अग्रवाल वैश्य थे । इनके पिता का नाम दयाराम, पितामह का कृपाराम तथा परपितामह का हीरानंद था । दयाराम, जो इनके पिता थे, अपना गाँव छोड़ जयपुर में आकर बस गए थे ।

२—जनखुस्याल (कायस्थ) का रचा हुआ "विपिन-विनोद" नामक ग्रंथ इस विवरण में सर्वप्रथम प्रकाश से आ रहा है । उक्त नाम का ग्रंथ शार्ङ्गधर ने संस्कृत में रचा था । जनखुस्याल ने संवत् १८९२ वि० में इसका अनुवाद किया । दौलतराव महाराज के पुत्र जनकराव भूपाल के लिये इस ग्रंथ की रचना हुई थी । यह दौलतराव कौन थे ? कहाँ के राजा थे ? इसका कवि ने कुछ वर्णन नहीं किया । इस प्रति में इस ग्रंथ के तीन नाम, विपिन-विनोद, बागविहार और जनकविलास दिए हैं । दो नाम तो नीचे अवतरण में दिए गए हैं और तीसरे नाम "बागविहार" से ग्रंथ आरंभ हुआ है—"अथ बागविहार लिष्यते":-

'गुरु गोविंद गंगा सुमिरि, गणपति गौरि मनाइ ।
पोथी विपिन-विनोद की, भाषा करौं बनाइ ॥
सारँगधर कृत संस्कृत, समुझि न आवत चित्त ।
जनखुस्याल भाषा करी, दोस न दीजो मित्त ॥
महाराज + + + , (श्री) दौलतराव नरेस ।
जिनके गुनगन की कथा, बरन सके नहिं सेस ॥
तिनके सुत महाराज श्री, जनकराव भूपाल ।

तिन कारन भाषा करी, सादर सदा दयाल ॥
या पोथी को नाम अब, राख्यो जनक विलास ।
पढ़त सुनत सुख ऊपजै, हिय को होय हुलास ॥
संवत् दस अरु आठ सै, नौवे ऊपर दोइ ।
माघ मास तिथि चौथि सुदी, भाषा कीनी सोइ ॥"

दौलतराव के नाम के पहले कुछ अक्षर छूट जाने से यह संदेह होता है कि संभवतया उनमें उक्त राजा के स्थान का नाम दिया रहा होगा। "बागविलास" अथवा "दौलत बागविलास" नाम का एक ग्रंथ शिव कवि ने भी लिखा है (दे० खो० वि० सन् १९०६-०८ संख्या २३६)। इस प्रति के विवरण उपलब्ध नहीं हैं, केवल विवरण-पत्र के प्रारंभिक कोष्ठ भरे गए हैं, उनमें उसका रचनाकाल नहीं दिया है। ग्वालियर-नरेश दौलतराव सेंधिया का समय विवरण के अनुसार सं० १८५१-१८८४ वि० (१७९४-१८२७ ई०) माना गया है, और शिव कवि का सं० १८५७ वि० (१८०० ई०) के लगभग माना गया है। प्रस्तुत ग्रंथ सं० १८९२ (१८३५ ई०) में बना है जो महाराज दौलतराव के राजत्वकाल की समाप्ति से ८ वर्ष उपरांत पड़ता है। हो सकता है कि यह ग्रंथ दौलतराव सेंधिया के ही पुत्र के लिये लिखा गया हो। ग्रंथकार ने अपना परिचय निम्नांकित दोहों में दिया है:—

"भुजपुर देस आरा सहर, सूबा नगर बिहार ।
दफ्तर भलुईपूर के, कानुनगोइ विचार ॥
श्रीवास्तव कायस्थ कुल, कहियत नाम खुस्याल ।
ब्रज कौं आयो जानिके, सरन लाड़िलीलाल ॥"

इससे ज्ञात होता है कि भोजपुरांतर्गत आरा शहर (सूबा बिहार) के वह निवासी थे और भलुईपुर के दफ्तर में कानूनगो थे, जाति के श्रीवास्तव कायस्थ थे और अंत में ब्रज में आकर लाड़िलीलाल (श्रीकृष्ण) की शरण में रहने लगे थे।

३—मानिक कवि ने बैतालपचीसी नामक ग्रंथ संस्कृत में अनुवाद कर "वैताल-पचीसी" की रचना की। इस ग्रंथ का यह बहुत पुराना अनुवाद है। खोज में यह ग्रंथ सर्वप्रथम प्रकाश में आया है। इसका रचनाकाल वि० सं० १५४६ (१४८९ ई०) है और लिपिकाल वि० सं० १७६३ (१७०६ ई०) है।

संवत् पंद्रह सै तिहि काल। ओरु बरस आगरी छियाल ॥
निर्मल पाष अगहनु मास। हिम रितु कुंभ चंद्र को बास ॥
आठे द्योसु बारह तिहि भानु। कवि भाषै बैताल पुरानु ॥

लेखक जाति का कायस्थ और अयोध्या का रहनेवाला था स्वयं कवि के शब्दों में:—

"काइथ जाति अजुध्या बासु। अमऊ नाऊ कविन को दास ॥
[कथा पचीस कही बैताल। पहोंच्यो जाइ भीव के पताल ॥]
ताके बंस पाँचई साप। आदि कथन सो मानिक भाष ॥
ता मानिक सुत सुत को नंदु। कवितावंत गुननि को बंदु ॥"

अंतिम पंक्ति का अर्थ समझ में नहीं आता। भानुसिंघ शायद ग्वालियर के तत्का-लीन राजा का नाम है। उसका कथन है कि उन्होंने यह ग्रंथ गढ़ग्वालीय (ग्वालियर ?) में सँघई पेमल के कहने से बनाया था।

"गढ़ ग्वालीय कथानु अति भलौ। भानुसिंह तौ बरु जा वलौ (?) ॥
सघई पेमल वीरा लीयो। मानिक कवि कर जोरें दीयो ॥
मोहि सुना बहु कथा अनूप। ज्यों बैताल किए बहु रूप ॥

विवरण लेनेवाले अन्वेषक का कथन है कि ग्रंथ बहुत अशुद्ध लिखा हुआ है। अतएव पढ़ने में कठिनता होती है।

४—सेवादास नाम के कई कवि पिछले खोज विवरणों में भी आ चुके हैं (दे० खो० वि० सन् १९०६–०८ ई० सं० ३२७; सन् १९२३–२५ ई० सं० ३८०, ३८१ और ३८२; और सन् १९२६–२८ ई० सं० ४३३)। परंतु यह उन सबसे भिन्न, नवीन कवि है। उनके रचे चार ग्रंथ—१ अलबेलेलाल जू के छप्पय, २ अलंकार, ३ नखशिख और ४ रसदर्पन पहली बार विवरण में आए हैं। सभी ग्रंथ प्रायः एक ही साल (सं० १८४० = १७८३ ई०) के रचे और एक ही साल (सं० १८४५ = १७८८ ई०) के लिखे हुए हैं। दूसरा ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रंथों का विषय उनके नाम से ही प्रकट है। कवि ने इनमें से किसी में भी अपना परिचय नहीं दिया है।

ज्ञात लेखकों में से अकबर (बादशाह), अखैराम, उजियारेलाल, उदय, गंग, गोकुलनाथ, बैजू, बोधा, मान या खुमान, लक्षोदय या लालचंद, वृंदावनहित, सुरति मिश्र और हरिराय आदि की कुछ नई रचनाएँ प्रकाश में आई हैं। उनमें से जो महत्त्वपूर्ण हैं उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है।

५—अकबर (बादशाह) ने साहित्य का बहुत हित किया। वह अनेक कवियों का आश्रयदाता था। गंग, तानसेन, बाण और नरहरि आदि हिंदी भाषा के कवियों की सजीव कविताएँ उसी के आश्रय में बनीं। बीरबल, टोडरमल और रहीम जैसे हिंदी के कवि उसके मंत्री और पदाधिकारी थे। यही नहीं, वह स्वयं भी कवि था। उसके इन्हीं गुणों पर रीझ कर भगवतरसिक ने अपने 'ग्रंथ निश्चयात्मक उत्तरार्द्ध' में उसे १२६ भक्तों की सूची में रखा है (दे० खो० वि० १९०० ई० सं० ३२)। इस शोध में अकबर की कविताओं के एक छोटे से संग्रह का विवरण प्राप्त हुआ है। इस संग्रह की कुछ कविताओं में ऐतिहासिक तथ्य भी है। उनका एक दोहा है:—

"पीथल से मजलिस गई, तानसेन से राग।
हँसबो रमबो खेलबो, गयो बीरबल साथ ॥"

पीथल, बीकानेर के राजा रामसिंह के छोटे भाई थे; अकबर ने इन्हें गागरोन का इलाका जागीर में दिया था। यह दोहा अकबर के उस मनस्ताप का द्योतक है जो उसे 'पीथल', 'तानसेन' और 'बीरबल' के निधन के कारण हुआ था।

अकबर को यश की बड़ी लालसा थी। वह यशस्वी व्यक्ति का ही जीवन सफल समझता था। इस संग्रह का सर्वप्रथम दोहा इसी भाव को प्रदर्शित करता है:—

"जाको जस है जगत में, जगत सराहै जाहि।
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि॥"

अकबर की रचना में लालित्य और भाव-सौंदर्य के साथ ही ऊँचे दर्जे की सूझ भी है। इस संग्रह में उनके प्रसिद्ध और प्रचलित सवैए—"शाह अकब्बर बाल की बाँह······बिछोह परै मृगछौने"—के अतिरिक्त और भी अच्छे अच्छे सवैए हैं।

६—अषैराम पहले फुटकर कविता के रचयिता के रूप में प्रकाश में आए थे। इसके पश्चात् उनका हस्तामलक वेदांत नामक सुंदर ग्रंथ उपलब्ध हुआ (दे० खो० वि० १९१७-१९ ई० सं० ४), किंतु उनके परिचय के संबंध में जिज्ञासा बनी ही रही। केवल "बुंदेलखंडी जान पड़ते हैं" इतना ही अनुमान लगाकर संतोष करना पड़ा। अब प्रस्तुत खोज ने हमारी जिज्ञासा की पूर्ति कर दी है। उनका एक ग्रंथ "विक्रम बत्तीसी" मिला है, जो उनकी जीवनी पर प्रकाश डालता है, उनका कविता-काल स्पष्ट करता है और उनके आश्रयदाता का परिचय देता है :—

"अठार से बारे गिनो, संवतसर घनसूर।
श्रावण वदि की तीज को, ग्रंथ कियो परिपूर॥
भूतनगर जमुना निकट, मथुरामंडल माँझ।
तहाँ भए भीषम सुकवि कृष्ण-भक्ति दिन साँझ॥
ताके मिश्र मलूक पुनि, अति सुंदर सब अंग।
खोजत वेद पुरान में, कियो नहीं चित भंग॥
तिहि घर गोविंद मिश्रजू, परसराम सम तेज।
तेज त्याग अनुराग में, नवहिं सदा मद तेज॥
दामोदर ताको प्रगट, जोतिष अधिक प्रवीन।
नवत रहैं नित छत्रपति विविध सुखासन दीन॥
तिहि घर नाथूरामजू, प्रगटे दीनदयाल।
जाचक जन सब देस के, धन दे किए निहाल॥
मिश्र जगतमनि अवतरे, तिहि घर अधिक प्रवीन।
ब्रजमंडल विख्यात जस, विद्याभूषण कीन॥
अषैराम ताके भए—सहस्र (?स) कवितु अनुसार।
जो कछु चूको होय सो लीजो ग्रंथ सुधार॥"

इससे एक बात तो यह स्पष्ट हो गई कि वह बुंदेलखंडी न होकर ब्रजवासी थे, दूसरे वह एक ऐसे घराने में उत्पन्न हुए थे, जो विद्या, बुद्धि, पराक्रम और वैभव में पहले से ही चढ़ा बढ़ा चला आता था। उसमें बड़े यशस्वी, दानी और उदार व्यक्तियों ने जन्म लिया था। राजा महाराजाओं में इनका मान था। संभवतः इनके पूर्वपुरुष भीष्म थे, जिनका

परिचय सुप्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ श्री मद्भागवत के अनुवादक के रूप में हिंदी-संसार पहले ही पा चुका है (देखो खो० वि० १९१७-१९ ई०, सं० २५) तथा मिश्र-बंधु-विनोद के सं० ३५६ पर भी इनका वर्णन है। सरोजकार एक का जन्मकाल सं० १६८१ (१६२४ ई०) और दूसरे का सं० १७०८ (१६५१ ई०) मानकर दो भीष्म मानता है किंतु विनोदकार, इन दोनों को अभिन्न मानकर उनका कविता-काल सं० १७१० वि० (१६५३ ई०) मानते हैं। विक्रम - बत्तीसी या सिंहासन-बत्तीसी में अखैराम ने भरतपुर-नरेश सुजानसिंह को अपना आश्रयदाता बताया है। उन्हीं के लिये उन्होंने इस ग्रंथ का संस्कृत से हिंदी पद्य में अनुवाद किया था :—

"बदनेस श्रीजदुबंस भूपति सकलगुणनिधि जानिए।
तिहि अरिन के बल खंड कीए, कृष्ण-भक्ति बखानिए।
तिहि सुवन लाल सुजानसिंघ, बिलास कीरति छाइयो।
कवि अषैराम सनेह सो पुतरी, सिंघासन गाइयो ॥"

इसके अतिरिक्त इनके रचे दो ग्रंथ 'स्वरोदय' और 'वृंदावनसत' भी इसी शोध में प्राप्त हुए हैं। हस्तामलक वेदांत और प्रस्तुत रिपोर्ट में आए विवरणों की रचना-शैली भी प्रायः मिलती है। अतएव, उनका एक दूसरे से अभिन्न मानना अनुचित नहीं है।

७—उजियारेलाल का सं० १८३७ (१७८० ई०) का रचा और सं० १८९६ वि० (१८३९ ई०) का लिखा हुआ "जुगलप्रकाश" नामक ग्रंथ नवीन प्राप्त हुआ है। इसमें रस आदि का वर्णन है। इन्होंने ग्रंथ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है :—

"महा मुनाढय सनाढ्य कुल, तहाँ धनाढय अपार।
मही महे मूरोतिया—भागीरथी उदार ॥
नन्दलाल तिनके तनय, नवलसाह सुअ तास।
तिन सुत उजियारे कियो, यह रस जुगल प्रकास ॥
ब्यास बंस अवतंस हुअ घासीराम प्रकास।
तिन सुत सुत संबंध कवि, किय बृंदावन बास ॥"

इससे विदित होता है कि ग्रंथकार 'मूरोतिया' अल्ल के सनाढय ब्राह्मण, नवलसाह के पुत्र, नंदलाल के पौत्र और भागीरथी के प्रपौत्र थे और पहले अन्य किसी गाँव [संभवतः मही (मई-मथुरा ?)] में रहते थे और घासीराम ब्यास के किसी पौत्र के संबंध से वृंदावन आकर निवास करने लगे थे।

रचनाकालः—

"संवत् अष्टादश शतक, बीते अरु तेतीस।
चैत वदी सातै डंवौ (?), भयो ग्रंथ बकसीस ॥"

ऐसा ज्ञात होता है कि 'डंवौ' किसी दिन का नाम होगा, जो ठीक पढ़ने में नहीं आया। बहुत संभव है, यहाँ भुवौ या बुधौ पाठ हो।

इसी नाम का एक लेखक जिसने 'गंगालहरी' का निर्माण किया पिछले खोज-विवरण में आ चुका है (दे० खो० वि० १९१७-१९ ई०, सं० १९९)। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि ये दोनों एक ही हैं।

८—**उदय कवि** सुप्रसिद्ध दूलहा कवि के पिता उदयनाथ से भिन्न हैं (दे० खो० वि० १९०५, सं० ३ और १९०६-०८, सं० २४६)। इसके बनाए हुए १४ ग्रंथों की १६ प्रतियाँ प्रस्तुत खोज में पहली ही बार उपलब्ध हुई हैं जिनके नाम—(१) अघासुर-मारन-लीला, (२) चीर-चिंतामणि, (३) दानलीला, (४) गिरवर-धारन लीला, (५) गिरवर विलास, (६) जोगलीला, (७) जुगलगीत, (८) कृष्णपचीसी, (९) मोहिनी माला, (१०) रामकरुणा, (११) सुमिरणमंगल, (१२) सुमिरणश्रृंगार, (१३) श्याम-सगाई तथा (१४) वंशी-विलास हैं। इनमें से सं० १० की ३ प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से एक सन् १८२९ ई० की लिखी हुई है। सं० १३ का लिपिकाल सन् १८३० ई० है। सं० ४ और ५ क्रम से सन् १७९५ तथा १७८८ ई० के रचे हुए हैं। शेष में सन् संवत् का उल्लेख नहीं है। इन्होंने राम और कृष्ण का चरित्र वर्णन किया है। इन्होंने नंददास का अनुकरण करके उनके भ्रमरगीत में प्रयुक्त छंद का व्यवहार अपनी कविता में किया है। इनकी रचना सरस है। स्व० मायाशंकरजी याज्ञिक कहा करते थे कि "यदि और सब गढ़िया" और "नन्ददास जड़िया" "तो उदय पालसिया हैं।" उक्त पंडितजी के कथनानुसार ये भरतपुर राज्य और मथुरा जिले के बीच अवस्थित किसी गाँव के निवासी थे। उन्होंने इनके रचे प्रायः ४० ग्रंथों का एक बृहद् संग्रह स्वयं देखा था।

९—**गंग** अकबर के दरबार के एक सुप्रसिद्ध कवि थे। यद्यपि इनके कोई भी स्वतंत्र ग्रंथ प्राप्त नहीं हो सके हैं तो भी इधर-उधर से पाई जानेवाली इनकी फुटकर कविताओं ने इन्हें एक प्रौढ़ और श्रेष्ठ कवि सिद्ध कर दिया है। प्रस्तुत खोज में इनकी कविताओं के दो पुराने संग्रह मिले हैं जो हिंदी साहित्य की अत्यंत उत्कृष्ट और मूल्यवान् कृतियाँ सिद्ध होंगी।

एक संग्रह में लगभग ४०० सवैए और कवित्त हैं जिनसे बहुत सी ऐतिहासिक बातों पर प्रकाश पड़ता है। इतिहास से संबंधित, अकबर बादशाह, दानयाल, जहाँगीर, शाहजहाँ, अब्दुलरहीम खानखाना, वीरबल, महाराना प्रताप और रामदास आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय हैं (दे० खो० वि० सन् १९२९–३१ ई०, सं० ८५)।

१०—**गोकुलनाथ** गोस्वामी विट्ठलनाथ के पुत्र और महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी के पौत्र थे। ये प्रसिद्ध भक्त होने के साथ साथ एक उत्कृष्ट विद्वान् और श्रेष्ठ लेखक भी थे। इनका जीवनकाल संवत् १६२५ वि० है। इन्होंने बहुत से गद्य ग्रंथों का निर्माण किया है। प्रस्तुत खोज में इनके ६ ग्रंथ—वनयात्रा, पुष्टिमार्ग के वचनामृत (लि० का० १८४८ ई०), रहस्यभावना (लि० का० १८५४ ई०), सर्वोत्तम स्तोत्र, सिद्धांतरहस्य और वल्लभाष्टक

प्रकाश में आए हैं। सब ग्रंथ व्रजभाषा में होने के कारण महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें पुष्टिमार्ग के सिद्धांतों तथा भक्ति-विषय का प्रतिपादन किया गया है।

११—बैजू के दो ग्रंथों 'मनमोदनी' और 'मतिबोधिनी' के विवरण प्रस्तुत खोज में प्राप्त हुए हैं। ये दोनों ग्रंथ भगवद्भक्ति तथा अध्यात्म-विषयक हैं। निर्माणकाल किसी में भी नहीं दिया गया है, किंतु लिपिकाल दोनों का संवत् १८८७ वि० (सन् १८३० ई०) है। बैजू का कोई परिचय प्राप्त नहीं हुआ है, केवल अन्वेषक को ग्रंथस्वामी से मौखिक ज्ञात हुआ कि एक साधु ने, जिससे ये ग्रंथ उन्हें (ग्रंथस्वामी को) प्राप्त हुए थे, बैजू का निवासस्थान ग्वालियर बतलाया था।

बैजू बावरा नाम का एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ हो गया है जिसके विषय में कई दंत कथाएँ प्रचलित हैं। उपर्युक्त बैजू और बैजू बावरा एक ही हैं या अलग अलग, यह जानने का कोई साधन नहीं है। हाँ, ग्रंथस्वामी का कथन कि वह ग्वालियर का निवासी था, इसके पक्ष में है।

इसी नाम का एक लेखक सन् १९२६–२८ ई० के त्रैवार्षिक विवरण में भी आया है जिसका नाम एक कवित्त-संग्रह के संबंध में आया है। इस संग्रह का संकलनकाल सन् १८१८ ई० है और लिपिकाल सन् १८२३ ई०।

मालूम होता है कि ये दोनों लेखक एक ही हैं।

१२—बोधा हिंदी-साहित्य संसार में एक कुशल शृंगारी कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका पन्ना दरबार में होना माना जाता था। मिश्रबंधुविनोद के सं० ८८७ पर उनका विस्तृत वर्णन है तथा खो० वि० १९१७–१९ के सं० ३० और खो० वि० १९२०-२२ के सं० २१ में भी उनका उल्लेख हो चुका है। इस वर्ष बोधा के नाम से (१) वागवर्णन, (२) बारहमासी, (३) फूलमाला, (४) पक्षीमंजरी और (५) पशु जाति नायिका नायक कथन नामक पाँच ग्रंथ और प्राप्त हुए हैं जो संभवतः किसी दूसरे बोधा के हैं। कहा जाता है कि फीरोजाबाद के निकटस्थ रहना और उसायनी नामक ग्रामों में इनकी कुछ जमींदारी थी। उसायनी के रहनेवाले श्री शंकरलाल के पास, जो खैरगढ़ जिला मैनपुरी में पटवारी हैं, ये ग्रंथ सुरक्षित हैं। इनमें से तीन ग्रंथों में सन्-संवत् का ब्योरा नहीं है, सं० ५ की प्रतिलिपि सं० १८३६ (१७७९ ई०) में हुई है और संख्या ४ (पक्षीमंजरी) की रचना संवत् १६३६ (१५७९ ई०) में।

"संवत् सोरह सै सही—जानों तुम छत्तीस।
तेरह शुक्ल असाढ़ की, वार कुंभ को ईस।"

अभी तक बोधा के निवासस्थान के ही विषय में मतभेद चल रहा था। यह भी कहा जाता था कि ये निवासी तो फीरोजाबाद के थे किंतु रहते तत्कालीन पन्ना-नरेश के दरबार में थे। कोई कोई यह भी मानते थे कि फीरोजाबाद और पन्ना के बोधा पृथक् पृथक् दो व्यक्ति थे और अब यही ठीक जान पड़ता है। पन्नावाले बोधा के समय के विषय में कोई पुष्ट प्रमाण तो नहीं मिला, परंतु शिवसिंहजी ने इनका जन्म सं० १८०४ वि० माना है

और वही मत विनोदकार एवं खोज-विवरणों में भी ग्राह्य माना गया है। इस मत को सत्य मान लेने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत बोधा, जो इस विवरण में आ रहे हैं, प्रसिद्ध बोधा से भिन्न हैं और उनसे लगभग २०० वर्ष पूर्व विद्यमान थे। प्रस्तुत ग्रंथों के विषय में यह प्रसिद्ध भी है कि ये बोधा ही के रचे हुए ग्रंथ हैं और इनको बोधाकृत मानने के लिये प्रमाण भी हैं:—

'तन मन व्याकुल ह्वै रहौं, धीरजु धरौ न जाइ।
'बोधा' आनँद होहिंगे, गल गल लागों पाँइ॥
तोता हौं साँची कहौं, भजिले सीताराम।
'बोधा' मन फूले कहैं, सब है फीको काम॥"—पक्षीमंजरी।
"संपति विपति जुतन तजन, तन मन पति सौं हेत।
'बोधा' स्वकीया कहत हैं, पति चीतो करि देत॥"
—पशुजाति नायिका नायक भेद।

वागविलास, फूलमाला और बारहमासी से विवरणपत्र में उद्धृत उदाहरणों में उनके नाम की छाप नहीं है। परंतु पक्षीमंजरी में, जिसमें रचनाकाल भी दिया है, उनकी छाप मिलती है। अतएव उसके संबंध में यह संदेह नहीं किया जा सकता कि वह बोधाकृत है भी कि नहीं। मिश्रबंधुओं ने जिन विचारों के आधार पर प्रसिद्ध बोधा का रचनाकाल माना है, वह भी औचित्य की सीमा के अंतर्गत ही है। इधर पक्षीमंजरी के रचना-काल सूचक दोहे को अशुद्ध मानने के लिये भी हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है। ऐसी अवस्था में हमें यही मानना पड़ेगा कि बोधा नाम के दो कवि हुए—एक १८ वीं शताब्दी के मध्य में और दूसरा १६वीं शताब्दी के अंतिम तथा १७वीं शताब्दी के प्रथम भाग में। प्रस्तुत शोध प्रस्तुत 'बोधा' के निवासस्थान के विषय पर किसी प्रकार का प्रकाश नहीं डालती। यद्यपि ये ग्रंथ फीरोजाबादी 'बोधा' के नाम से ही प्रकट हैं, किंतु इस बात का कोई लिखित प्रमाण नहीं है। कविता की दृष्टि से जो सौंदर्य और उत्कृष्टता "विरहवारीश" और "इश्क-नामा" में है, वह पक्षीमंजरी और बारहमासी आदि इस खोज में मिले ग्रंथों में नहीं है। फिर भी इसमें संदेह नहीं कि उक्त दोनों ही श्रृंगार के अच्छे कवि हैं। यदि बोधा दो न होकर एक ही हुए तो मानना पड़ेगा कि अब तक उनका जो समय प्रसिद्ध था, वह गलत है और वे तुलसीदासजी के सम-सामयिक थे (र० का० १६३६ वि०)। ऐसी दशा में यह कहना अनुचित न होगा कि ये उनकी प्रारंभिक कविताएँ होंगी, इसी लिये उनमें उतना सौंदर्य नहीं। इश्कनामा के आदि में बोधा ने अपने आश्रयदाता का नाम भी लिखा है :—

"षेतसिंह नरनाह को, हुकुम चित्त हित पाइ।
ग्रंथ इश्कनामा कियो, बोधा सुकवि बनाइ॥"

यदि इन षेतसिंह का विशेष विवरण मिल जाय तो 'बोधा' का सच्चा इतिहास भी ज्ञात हो जाय।

प्रस्तुत ग्रंथों में दोहे ही अधिक हैं। इनकी बारहमासी में कुछ मनहरण कवित्त भी हैं।

१३—**मान या खुमान कवि** चरखारी-नरेश विक्रमशाह के आश्रित और हनुमान्‌जी के अनन्य भक्त थे। इनके रचे ग्रंथों के विवरण अनेक बार आ चुके हैं (दे० खो० वि० १९०६-०८ ई० सं० ७०, सन् १९०५ ई० सं० ८६, सन् १९२०-२२ ई० सं० १००, १९२३-२५ ई० सं० २१०, १९२६-२८ ई० सं० २३१)। प्रस्तुत खोज में इनके नाम से चार ग्रंथ—'लक्ष्मण-चरित्र', 'नरसिंहचरित्र', हनुमानपचासा' और 'नख-सिख'—विवरणों में आए हैं। अंतिम ग्रंथ–'नखशिख'–के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रंथ पहले मिल चुके हैं। यह 'नखशिख' उनके रचे 'हनुमान नखशिख'—से भिन्न है और यह श्रृंगार रस से संबंध रखता है। इसका पूरा नाम "राधाजी का नखशिख" है। इसमें न तो सन्-संवत् का उल्लेख है और न कवि का कोई परिचय ही दिया हुआ है। अतएव निश्चयात्मक रूप से ज्ञात नहीं होता कि इस ग्रंथ के रचयिता यही 'मान' हैं अथवा उनके अतिरिक्त इसी नाम का कोई अन्य कवि है। किंतु वैसे इस ग्रंथ में आई हुई कविता में कोई ऐसी बात नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि वह उक्त खुमान कवि की रचना नहीं है।

खुमान (मान) चरखारी राज्यांतर्गत सुरगांव के रहनेवाले थे। इनका रचनाकाल अठारहवीं शताब्दि का उत्तरार्द्ध है।

१४—**लब्धोदय*** **या लालचंद** का बनाया हुआ, हिंदी-मिश्रित मारवाड़ी भाषा का "पद्मिनीचरित्र" नामक ग्रंथ इस बार खोज में मिला है। अब तक यह ग्रंथ विवरण में नहीं आया था। इसके रचनाकाल सं० १७०७ वि० (१६५० ई०) का कवि ने स्वयं ही उल्लेख किया है :—

"संवत् सतरे से बड़ोतरे, श्रीउदयपुर सु वरवाण।
हिंदुपति श्री जगतसिंह, जिहाँरे राज करै जगभान॥
तासु तणी माता श्री जंबवती कही रे निरमल गंगानीर।
पुण्यवंत षट दरसणा, सेवक करे सहारे, धर्ममूर्ति मतिधीर॥
तेहतण परधान जगत् में जाणी मेरे।
अभिनव प्रभा कुमार केसर मंत्री सरश्रुत अरिकेसरी रे॥
हंसराज ताही रे। तासु बंधु डूँगर सीते मणि दीप तोरे।
भागचंद कुल भाण।
विनयवंत गुणवंत सोभा सेहरि, बड़दाता गुण जाणि।
तसु सुत आग्रह करि संवत् सतरो भोरे, चैत्र पूनम शनिवार।
नवारस सहित सरस संबंध तवो रच्यो रे निज बुधि के अनुसार॥"

---

* श्री अगरचंद नाहटा लालचंद का उपनाम 'लब्धोदय' और ग्रंथका रचनाकाल संवत् १७.७ बतलाते हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में ग्रंथकार का नाम लक्षोदय पढ़ा गया। देखिए, ना० प्र० प० (वर्ष ४६, सं० १९९८; अंक २), पृष्ठ, १८३।

इससे विदित होता है कि उदयपुर के राजा हिंदूपति श्री जगतसिंह की माता जंबवती के प्रधान, अभिनव प्रभाकुमार के मंत्री हंसराज के बंधु डूंगरसी के पुत्र भागचंद के सुत ने आग्रह करके संवत् १७०७ के चैत्र की पूर्णिमा शनिवार को यह ग्रंथ बनवाया। ग्रंथकार ने अपना नाम कहीं लब्धोदय (लब्धोदय कहै आदमीरे ढाल रसिक सुखकार) और कहीं लालचंद (लालचंद कहै सभलो मनोगेरे) लिखा है। ग्रंथकार जैनमतावलंबी है; क्योंकि ग्रंथारंभ में उसने जिन की वंदना की है। एक लालचंद जैन ने 'राजुल पचीसी' नामक ग्रंथ लिखा है (दे० खो० वि० दिल्ली सं० ५४)। किंतु उसमें सन्-संवत् नहीं है। लालचंद ने ही एक 'लीलावती' नामक ग्रंथ सं० १७३६ वि० (१६७९ ई०) में बनवाया है (दे० खो० वि० १९०२ सं० ७६)। वहाँ ये जैनधर्म के खरतरगच्छ के नायक जिनचंद्र सूरि के सेवक सोभाग सूरि के शिष्य लालचंद बताए गए हैं और उस ग्रंथ की रचना बीकानेर में महाराज करणसिंह जी के बेटे राठोड़ अनूपसिंह जी के राज्य में अधिकारी कोठारी नेणसी के अंगज (पुत्र) जयतसी के कहने से हुई है। संभव है उपर्युक्त दोनों ग्रंथों के रचयिता एक ही हों। एक लालचंद ने (दे० खो० वि० १९१७-१९ सं० १०६) 'नाभि कुँवर की आरती', वरांग चरित्र भाषा' (र० का० वि० सं० १८२७ या ई० १७७०) और 'जयमाला' (दे० खो० वि० १९२६-२८ सं० २६०) बनाए, किंतु इन ग्रंथों का लेखक लालचंद प्रस्तुत ग्रंथकार से भिन्न है। इसकी रचनाएँ अठारहवीं शताब्दि की हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ का कथानक यद्यपि जायसी के 'पद्मावत' के कथानक के सदृश है, परंतु कहीं कहीं घटना-चक्र में अंतर है। इस ग्रंथ का लिपिकाल सं० १७५७ वि० = १७०० ई० है।

१५—वृंदावन हित अथवा चाचा वृंदावन, ब्रज के प्रतिभाशाली कवियों में हैं। इनकी रचना परिमाण में भी अधिक है। यह राधावल्लभ संप्रदाय के वैष्णव थे और हित-हरिवंशजी के शिष्य थे। इनके कुछ ग्रंथ सन् १९०६-०८ के खोज विवरण के सं० २२२ में आ चुके हैं। इस विवरण में इनके रचे १६ ग्रंथों के विवरण सम्मिलित हैं जो परिमाण में प्रायः दस सहस्र श्लोकों के बराबर हैं। उनका 'वाणी' नामक ग्रंथ पूरे ८ वर्ष के परिश्रम से पूर्ण हुआ था। सं० १८१२ = १७५५ ई० में आरंभ होकर सन् १८२० = १७६३ ई० में वह समाप्त हुआ। उनके रचे समस्त ग्रंथों के नाम, (१) उपदेश बेलि, (२) दीक्षा मंगल, (३) होरी धमार, (४) पद, (५) पद, (६) पद-संग्रह, (७) पदसंग्रह, (८) पदावली (९) पदावली (१०) पद्यावली (११) राधाजन्मोत्सव के कवित्त, (१२) रसिक अनन्य प्रचावली, (१३) समाज के पद, (१४) विवेक लक्षनवेलि, (१५) संतों की वाणी तथा (१६) वाणी हैं। इनमें से सं० १ सं० १८१० वि० = १७५३ ई० का और सं० ११ सं० १८१२ = १७५५ ई० का तथा सं० १६ सं० १८१२-२० = १७५५-६३ ई० का बना हुआ है और सं० २ और ६ के लिपिकाल क्रम से १७६८ तथा १८२९ ई० हैं। शेष में सन्-संवत् का उल्लेख नहीं है। सं० ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० और १३ महत्त्वपूर्ण संग्रहग्रंथ हैं। सं० १२ उपयोगी ग्रंथ है। इसमें नाभा जी के भक्तमाल के सदृश अनेक भक्तों के नाम और परिचय छप्पयों में दिए गए हैं। इसमें

ऐसे नाम हैं, जो भक्तमाल में नहीं हैं। ऐसा जान पड़ता है कि इसमें प्रायः उन्हीं भक्तों के नामों का समावेश हुआ है जो इनके संप्रदाय के थे। ये जबरदस्त लेखक थे। इन्हें जन्मभर रचना करते ही बीता। वह कहते हैं:—

"लिषत लिषत आँखें थकीं, सेत भए सिर बार।
तऊँ न रीझे तनक हूँ, नगधर नंदकुमार॥
बरनत हारौ बुद्धिबल, दौरि दौरि भई चूर।
हरि प्रीतम तुम देसरा, तऊ दूरि ते दूर॥"

१६—**सूरति मिश्र** आगरा-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह कई बार विवरण में आ चुके हैं (दे० खो० वि० १९०३ सं० १०४, १९०६-०८ सं० २४३, १९१२-१६ सं० १८६, १९२३-२५ सं० ४१९, १९२६-२८ सं० ४७३)। इस विवरण में उनका रचा हुआ 'श्रृंगारसार' नामक एक नवीन ग्रंथ मिला है। इसका रचनाकाल सं० १७८५ वि० = १७२८ ई० है :—

"संवत् सत्रह सै तहाँ, वर्ष पचासी जानि।
भयो ग्रंथ गुरु पुण्य में, सित असाढ़ श्रय मानि॥"

इससे विदित होता है कि यह ग्रंथ मिति अषाढ़ सुदी पूर्णिमा गुरुवार संवत् १७८५ वि० (१७२८ ई०) को रचा गया है। इस ग्रंथ में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ग्रंथकार ने अपने रचे प्रायः ११ ग्रंथों के नामों का उल्लेख कर दिया है और साथ ही साथ प्रत्येक का विषय भी दे दिया है।

प्रथम कियो सत कवित में, इक **श्रीनाथविलास**।
इकही तुक पर तीन सौ, प्रास नवीन प्रकास॥
श्री भागवत पुरान के तहँ, **श्रीकृष्ण-चरित्र**।
वरने गोवर्द्धन-धरन लीला लागि विचित्र॥
भक्तविनोद सुदीवता, प्रभु सो सिक्षा चित्र।
देव तीर्थ अरु पर्व के समय समय सुकवित्र॥
बहुरि **भक्तमाला** कही, भक्तन के जस नाम।
श्रीवल्लभ आचार्य्य के, सेवक जे गुनधाम॥
कामधेनु इक कवित में, कढ़त सतवरन छंद।
केवल प्रभु के नाम तहँ, धरे करन आनंद॥
इक **नषसिष** माधुर्य्य है, परम मधुरता लीन।
सुनत पढ़त जिहि होत है, पावन परम प्रवीन॥
छंदसार इक ग्रंथ है, छंद-रीति सब आहि।
उदाहरन में प्रभु जसै यौं पवित्र विधि ताहि॥
कीनो **कविसिद्धांत** इक, कवित रीति कौं देखि।
अलंकारमाला विषै, अलंकार सब लेषि॥
इक **रसरत्न** कीन्हीं बहुरि, चौदह कवित प्रमान।
ग्यारह से बावन तहाँ, नाइकानि को ज्ञान॥

सारसिंगार तहँ, उदाहरण रसरीति।
चारि (? ग्यारि) ग्रंथ ये लोक-हित रचे धारि हिय प्रीति ॥

इस प्रकार उन्होंने अपने रचे (१) श्रीनाथविलास, (२) कृष्ण-चरित्र, (३) भक्तविनोद, (४) भक्तमाल, (५) कामधेनु, (६) नषसिष, (७) छंदसार, (८) कवि-सिद्धांत, (९) अलंकारमाला, (१०) रसरत्न तथा (११) श्रृंगारसार, इन ग्यारह ग्रंथों के नाम लिए हैं। इनमें से सं० ६ और सं० ९ का नाम विनोद के सं० ५५५ पर दिया हुआ है; शेष सभी नवीन हैं। 'वैताल पचीसी', 'अमरचंद्रिका', 'जोरावर-प्रकाश' या रसप्रिया की टीका 'रसरत्नाकर' और 'रसग्राहक चंद्रिका' प्रथम खोज विवरण में आ चुके हैं। इससे विदित होता है कि सूरति मिश्र ने साहित्य के विभिन्न अंगों की पूर्ति में योग दिया था। अपनी स्मृति में उन्होंने बहुत साहित्य छोड़ा है। अपने पिता का नाम 'सिंघमनि' लिखते हैं।

"नगर आगरौ वसत सौ, बाँकी ब्रज की छाँह।
कालिंदी कल्मषहरनि, सदा बसति जा माँह ॥
× × ×
भगवत पारायन भए, तहाँ सकल सुषधाम।
विप्र कनावजु कुल कलस, मिश्र सिंघमनि नाम ॥
तिनके सुत सूरत सुकवि, कीने ग्रंथ अनेक।
परम रम्य वरणन विषै, परी अधक सी टेक ॥
माथे पर राजित सदा, श्रीमद गुरु गंगेस।
भक्ति काव्य कीरति लही, लहि जिनके उपदेस ॥"

उपर्युक्त पद्य यह भी प्रकट करता है कि सूरति मिश्र गंगेश जी के शिष्य थे; और उन्हीं के उपदेश से उन्होंने भक्तिकाव्य लिखना आरंभ किया था।

१७— हरिराय नाम के दो लेखकों का उल्लेख ना० प्र० सभा से प्रकाशित "हिंदी हस्तलिखित ग्रंथों के संक्षिप्त विवरण" में हुआ है। उनमें से एक का जन्मकाल सं० १७९५ वि० (१७३८ ई०) है और दूसरे का जीवनकाल सं० १६०७ (१५५० ई०) माना गया है। ये दोनों ही वल्लभाचार्य्य के शिष्य एवं संस्कृत तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाता बताए गए हैं। किन्तु अन्वेषक को गोकुल-स्थित गोकुलनाथ के मंदिर के अधिकारियों से पता चला है कि वल्लभाचार्य्य के शिष्य हरिराय केवल एक ही थे, दो कदापि नहीं। वल्लभाचार्य्य ने इन्हें श्रीनाथद्वारा (मेवाड़) का महंत बनाया था। ये संस्कृत एवं हिंदी के अच्छे कवि तथा विद्वान् थे। इनके कई ग्रंथ पिछले खोज विवरणों में आ चुके हैं। (दे०वि० १९०० ई० सं० ३८, १९०९-११ ई० सं० ११५; १९१७-१९ ई० सं० ७४; १९२३-२५ ई० सं० १६० और १९२९ ३१ ई०)। उनसे ज्ञात होता है कि इनका रचा हुआ बहुत सा साहित्य हिंदी में विद्यमान है। इस खोज में उनके रचे ७ पद्य ग्रंथ—(१) कृष्णप्रेमामृत, (२) पुष्टि दृढ़ावन की वार्ता, (३) पुष्टि प्रवाह मर्यादा, (४) सेवाविधि, (५) वर्षोत्सव की भावना, (६) वसंत होरी

की भावना और (७) भाव-भावना प्रकाश में आए हैं। इनमें हमें तत्कालीन ब्रजभाषा के गद्य का नमूना मिलता है और इनसे इस आक्षेप का प्रायः निवारण होता है कि हिंदी का गद्य भाग उस समय अत्यल्प एवं नहीं के सदृश था। इसके लिये हमें यह कहकर चुप रह जाना पड़ता था कि हमारी धार्मिक भावनाओं के प्राबल्य के कारण त्याग की मात्रा की इतनी अभिवृद्धि हुई कि जीवन-होड़ में हमें उस समय गद्य की आवश्यकता नहीं पड़ी। गद्य की प्रवृत्ति ही कुछ ऐसी है कि वह दलित मानवजाति को अपनी ओर उस समय तक आकर्षित नहीं कर सकता, जब तक कि उसे अपनी जीवनोपयोगी आर्थिक भावनाओं के पुष्टीकरण के लिये लाचार होकर सतर्कता के साथ उत्साहित नहीं होना पड़ता। वैष्णव-धर्माचार्यों को सर्वसाधारण में अपने प्रमुख धार्मिक सिद्धांतों द्वारा भक्ति का प्रसार करना था, अतएव उन्होंने अपने ध्येय की सिद्धि के लिये गद्य का सहारा लिया। हरिराय जी के ये सभी ग्रंथ हमारे कथन की सत्यता के प्रमाण हैं। इनमें रचयिता ने रचनाकाल किसी में भी नहीं दिया है। चार में लिपिकाल का भी अभाव है। शेष सं० २, ४ और ६ क्रम से ई० सन् १८५६, १८०७ तथा १८४५ के उतारे हुए हैं। सं० १ में कृष्णभक्ति के नियम और प्रेम-व्रत पालन करने का मार्ग बताया गया है। सं० २ में पुष्टिमार्ग के सिद्धांत और उन पर विश्वास दृढ़ करने के नियम बताए हैं। सं० ३ में वल्लभकृत संप्रदाय-संबंधी उपदेश तथा सिद्धांतों का उल्लेख है। सं० ४ में गोकुलनाथजी की सेवा की (श्रृंगार, भोग, शयन, आरती आदि की) विस्तृत विधि तथा साल भर में पड़नेवाले सभी व्रतोत्सवों को मनाने के नियम दिए गए हैं और सं० ७ गद्य का एक विशालकाय ग्रंथ है, जिसमें राधाजी के चरण-चिह्नों की भावना (संस्कृत मूल के रचयिता गोकुलनाथ तथा भाषाकार हरिराय), नित्य की सेवाविधि, वर्षोत्सव की भावनाएँ, डोल उत्सव की भावना, छप्पन भोग की रीति, हिंडोरादि की भावनाएँ सातों स्वरूप की भावना एवं भोग की सामग्री आदि बनाने की रीति दी गई है।

इनके अतिरिक्त दो लेखक और हैं जिनके विषय में संदेहजनक बातें पैदा हुई हैं। अतः उनका भी यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। एक तो हैं ताराचंद जिनका ग्रंथ "शालिहोत्र" देखने में आया है और दूसरे हैं धर्मदास या खड्गदास जिनके तीन ग्रंथ "मंत्रावली", "शब्दस्तोत्रविज्ञान" तथा "शब्द" देखने में आए हैं।

१८—ताराचंद रचित एक 'शालिहोत्र" का विवरण इस खोज मे लिया गया है। इन्होंने अपना परिचय एवं ग्रंथ का रचनाकाल भी दिया है, जो इस प्रकार है :—

"पुरहा पांडे गोपीनाथ। कान्हकुबज में भये सनाथ॥
तिनके सुत चारयौ अधिकाई। इंद्रजीत, लछिमन, जदुराई॥
चौथे ताराचंद कहीजै। जिन यह अश्वविनोद बनायो॥
हरिपद चेतन नाम की आसा। सालिहोत्र भाष्यो परगासा॥
कुसलसिंह महाराज अनूप। चिरंजीव भूपनि के भूप॥
(सोरठा)—यहै ग्रंथ सुखसार, जिनके है हित हीय मैं।
लेहुँ सुधारि विचारि, चेतनचंद्र कह्यो यथा।

(दोहा)—संवत् सोरह सौ अधिक, चारि चौगुनो जानि ।
ग्रंथ कह्यो कुसलेस हित, रक्षक श्री भगवान ॥"

इससे स्पष्ट विदित होता है कि यह ग्रंथ संवत् १६१६ (१५५९ ई०) में महाराज कुशलसिंह के लिये लिखा गया था और उसके रचयिता खुरहा पांडे वंश के कान्यकुब्ज ब्राह्मण गोपीनाथ के चतुर्थ पुत्र ताराचंद थे। उपर्युक्त सोरठे में "चेतनचंद" नाम भी आता है। सोरठे का भाव यों जान पड़ता है कि "यह सुखसार ग्रंथ जिनके हीय में हित है (जो उसे उपयोगी समझते हैं वे उसे) विचारि यथा (जैसा) चेतनचंद कह्यो (चेतनचंद ने कहा है तथा) सुधारि लेइँ।" अब यहाँ यह विचारणीय है कि इस ग्रंथ की रचना से भी चेतनचंद का कुछ संबंध है या नहीं, अथवा वह केवल सुधारने की प्रार्थना करनेवाले मात्र हैं। दूसरे के रचित ग्रंथ में ऐसी प्रार्थना करने से किसी को क्या मतलब ? ग्रंथ के आरंभ में भी कुछ बातें ऐतिहासिक दृष्टि से उपयोगी हैं :—

"श्री महाराज गुरु, सैंगर बंस नरेस ।
गुनगाहक गुण जनन के, जगत विदित कुसलेस ॥
× × × ×
चित चातुर चष चातुरी, मुष चातुर सुख दैन ।
कवि कोविद बरनत रहत, सब सुख पावत जैन ॥
बालापन ते सरन रहि, मैं सुख पायो वृंद ।
सालहोत्रि मत देषि कै, बरनति चेतनचंद ॥"

इससे मालूम होता है कि ग्रंथकार के आश्रयदाता सेंगरवंशीय क्षत्रिय हैं, कवि-कोविद उनका वर्णन करते रहते हैं और जैन सब सुख पाते हैं। इसमे लक्षित होता है कि रचयिता संभवतः जैनी है, किंतु १९०६-०८ वाली रिपोर्ट में जैन के स्थान पर चैन है, अतएव शंका का निवारण हो जाता है। उसका नाम चेतनचंद है। चेतनचंद के नाम से उपर्युक्त नाम का एक ग्रंथ विवरण में भी आ चुका है (दे० वि० १९०९-११ सं० ४६, १९२३-२५ सं० ७७ और १९२६-२८ ई० सं० ८०)। पहले विवरण में रचनाकाल संवत् १८१० वि० (१७५३ ई०) और दूसरे तथा तीसरे विवरण में रचनाकाल सं० १६२८ वि० (१५१७ ई०) दिया है। प्रस्तुत विवरण में वह सं० १६१६ (१५५९ ई०) निकलता है। तीसरे विवरण में रचनाकाल का केवल एक सोरठा दिया है जिसमें संवत् के साथ मास आदि नहीं हैं। इन दोनों ग्रंथों के रचनाकाल में अंतर पड़ने का कारण यह पद्यांश है—"चारि चौगुनो जानि" (प्रस्तुत विवरण), "वार चौगुनो जानि" (पिछला विवरण), क्योंकि ४ के चौगुने १६ होते हैं अतएव प्रस्तुत विवरण रचनाकाल सं० १६१६ वि० मानता है, और वार (७) के चौगुने २८ होते हैं, अतएव पिछले विवरण में उसे १६२८ वि० माना है। यदि वार का अर्थ बारह लिया जाय तो रचनाकाल १६४८ वि० हो जाता है। वार न दिए जाने के कारण जाँच नहीं हो सकती। इस खोज विवरण के दूसरे विवरण में रचनाकाल नहीं है। इन दोनों ग्रंथों में 'चेतनचंद' का नाम आता है। दूसरी प्रति के एक दोहे को छोड़कर शेष तीन दूसरे में मिलते हैं।

ग्रंथकार का नाम पिछले खोज विवरणों में चेतनचंद है। या तो वह मूल संस्कृत ग्रंथ के रचयिता होंगे और अनुवादक का नाम ताराचंद होगा या हो सकता है, चेतनचंद, ताराचंद का ही उपनाम हो। खोज विवरण सन् १९०६-०८ ई० वाली प्रति में 'ताराचंद' के परिचयवाला पद्य नहीं है। संभव है, विवरण लेते समय ध्यान न जाने के कारण वह उतारने से रह गया हो; क्योंकि इस विवरण में अंतिम भाग की नकल में जो सोरठा उद्धृत किया गया है, ठीक उसी के ऊपर उक्त पद्य दिया हुआ है। यह भी संभव है कि रचयिता ने पहले यह पद्य न देकर पीछे उसको जोड़ा हो, इसी कारण कुछ प्रतियों में वह आ गया हो और कुछ प्रतियों में जो पहले की लिखी हों न आया हो।

१९—धर्मदास के रचे हुए "मंत्रावली", "शब्दस्तोत्र विज्ञान" तथा "शब्द", ये तीन ग्रंथ पहले-पहल प्रकाश में आए हैं। विषय और शैली के ढंग से ये ग्रंथ कबीर की रचनाओं का अनुगमन करते हैं। ग्रंथकार के समयादि के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता तीनों ग्रंथ कैथी लिपि में हैं। जहाँ कवि का नाम आया है, वहाँ "षूगदास" सा लिखा गया है जिसका मूलरूप खड्गदास होगा। ये तीनों ग्रंथ एक ही जिल्द में हैं; इनके अतिरिक्त इसी जिल्द में कबीर की कुछ रचनाएँ भी हैं। इनमें कई स्थलों पर "कहत कबीर सुनौ धूमदास", यह पद आया है। इन दोनों नामों का पहला अक्षर पहले ग्रंथ में "घ" ऐसे लिखा है। करीब करीब इसी प्रकार यह धर्मदास के नाम में भी है। यह अक्षर ष और ध दोनों रूपों में पढ़ा जा सकता है, परंतु दूसरा अक्षर पहले में स्पष्ट 'ग' है और दूसरे में स्पष्ट 'म' है। इसीलिये ये दोनों नाम भिन्न भिन्न पढ़े गए। केवल एक लकीर ने ही शंका उत्पन्न कर दी है कि वह नाम धर्मदास है या खड्गदास? बहुत ध्यान देकर पढ़ने पर इस ग्रंथकार का नाम धर्मदास ही समझ में आता है, क्योंकि अक्षरों की बनावट से स्पष्ट होता है कि लिपि-कर्ता के हस्तदोष से ही 'ध्र' का 'षू' और 'म' का 'ग' हुआ है, जिससे पढ़ने में इतना अंतर हो गया। वास्तव में लेखक षूगदास न होकर धर्मदास ही है।

इस खोज में ३२ कविता-संग्रहों का पता लगा है जिनमें अब तक अज्ञात कवियों की भी कोई कोई कविता आ गई है। ऐसे कवियों की संख्या ८० है। इनकी तालिका अक्षरानुक्रम से परिशिष्ट ३ में दी गई है।

विवरण के परिशिष्टों की सूची नीचे दी जाती है :—

परिशिष्ट १—ग्रंथकारों पर टिप्पणियाँ।

परिशिष्ट २—ग्रंथों के विवरण पत्र (उद्धरण, विषय, लिपि और कहाँ वर्तमान हैं आदि विवरण)।

परिशिष्ट ३—उन रचनाओं के विवरण पत्र (उद्धरण, विषय, लिपि और कहाँ वर्तमान हैं आदि विवरण) जिनके लेखक अज्ञात हैं।

परिशिष्ट ४—काव्य-संग्रहों में आए हुए उन कवियों की नामावली जिनका पता आज तक न था।

पीतांबरदत्त बड़थ्वाल
निरीक्षक, खोज विभाग

प्रथम परिशिष्ट

उपलब्ध हस्तलेखों के रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

प्रथम परिशिष्ट

रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

१ अचल कीर्ति (जैन)—'विषापहार स्तोत्र' नाम से इनकी एक रचना मिली है जिसमें जैन तीर्थंकरों की स्तुतियाँ हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल सं० १५१७ दिया है:—

'पंद्रा सै सत्रा शुभ थान। बरनौ फागुन सुदी चौदस जान ॥

परंतु इनकी अन्य दो प्रतियों में, जिनका उल्लेख खोज के पिछले दो विवरणों (१९००, सं० १०३ और दि० ३१, सं० १) में है, रचनाकाल सं० १७१५ वि० दिया है। सन् १९०० के विवरण में इसका उल्लेख इस प्रकार है:—

सत्रह सै पंद्रह सुभ थान। नार नौल तिथि चौदसि जान* ॥

२ अहमद—इस मुसलमान कवि का उल्लेख पिछले कई खोज विवरणों में हो चुका है, देखिये खोज विवरण (१९२०–२२, सं० २; १९२३–२५, सं० ५; विनोद, पृष्ठ ४२४, सं० ३१८)। ये कामशास्त्र संबंधी रचनाओं के प्रणेता के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस बार इनकी 'बारहमासी' के विवरण लिए गए हैं जिसके अनुसार ये एक अच्छे कवि भी विदित होते हैं। उदाहरण स्वरूप इससे एक एक उद्धरण दिया जाता है:—

"आज भले ही उदोत भयो दिन नारि के नाह विदेस ते आये।
हौं मग जोइ थकी बहु चावनि भागि बड़े घर बैठे ही पाये॥
नैन सिराय हियो भयो सीतल कोटिक भावनि मंगल गाये।
अहमद सेज सिंगारहिं साजिके आनन्द सों पिय गोविन्द गाये॥"

"सुख सिज्या सीतल महल, सनमुष पिय बतराय।
अहमद अब बैकुण्ठ की, आसा करे बलाय।"

रचयिता यद्यपि मुसलमान था पर उसमें वैष्णव प्रवृति भी विद्यमान थी। वह जहाँगीर बादशाह के राज्यकाल में सं० १६२८ के लगभग वर्तमान था। प्रस्तुत रचना की प्रति में लिपिकाल नहीं दिया है।

३ अकबर—(राज्यकाल सन् १५५६–१६०५ ई० तक)—ये सुप्रसिद्ध बादशाह अनेक कवियों के आश्रयदाता होने के अतरिक्त स्वयं भी एक अच्छे कवि थे। इनकी काव्य-रचनाएँ अनेक संग्रह ग्रन्थों में पाई जाती हैं। स्व० पं० मयाशंकर जी याज्ञिक द्वारा किये गये इनकी कविताओं के संग्रह का जो अभी तक अप्रकाशित है, विवरण लिया गया है।

---

* संभावना यही जान पड़ती है कि उक्त दोनों प्रतियाँ एक ही रचना की हैं। लिपिकार ने प्रस्तुत प्रति में प्रमादवश 'सत्रह सै पंद्रह' का 'पंद्रह सै सत्रह' कर दिया है।

इनका उल्लेख पिछले कई खोज विवरणों में हुआ है, देखिये खोज विवरण (१९००, सं० ३२; १९०१, सं० १२; १९०३, सं० ११; १९०६-८ सं० १३४ और सं० १५०)। विशेष के लिये देखिए विवरण का अंश संख्या, ५।

४ **अखैराम**—इनकी एक दो रचनाएँ पहले मिल चुकी हैं, देखिये खोज विवरण (१९१७-१९, सं० ४ और पृ० ११)। परंतु ये प्रचुर रचनाओं के प्रणेता विदित होते हैं। इस बार इनकी तीन रचनाएँ मिली हैं जिनसे इनके संबंध का विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है। इनमें से विक्रम बत्तीसी के अनुसार जो मूलमें संस्कृत ग्रंथ का छंदोबद्ध अनुवाद है, ये मथुरा जिले के अंतर्गत यमुना के समीप में बसे हुए भूतनगर के निवासी थे:—'भूतनगर जमुना निकट, मथुरा मंडल माँझ' प्रस्तुत अनुवाद इन्होंने सन् १७५५ ई० में भरतपुर नरेश महाराजा सुजान सिंह के लिये किया था। इन्होंने अपनी विस्तृत वंशावली दी है जिससे पता चलता है कि भागवत के सुसिद्ध अनुवादक 'भीष्म' इनके पुरखे थे। वंश वृक्ष इस प्रकार है:—

भीष्म > मलूक > गोविंद मिश्र > दामोदर > नाथूराम > जगतमणि > अखैराम

इनकी शेष दो रचनाएँ, जिनके विवरण लिए गए हैं, 'स्वरोदय' और 'वृंदावन सत' हैं। स्वरोदय की प्रति में लिपिकाल सन् १८४४ दिया है। इनकी कविता उत्तम श्रेणी की है। 'गंगा महात्म्य' और 'कृष्ण चंद्रिका' भी इनकी कृतियाँ कही जाती हैं, पर ये अभी तक अप्राप्त हैं। अपने आश्रयदाता का भी इन्होंने थोड़ा सा विवरण दिया है। विशेष के लिये देखिए विवरण का अंश संख्या ६।

५ **अखंडानंद**—इनके दो ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं जिनमें से एक वेदांत दर्शन विषयक मूल संस्कृत ग्रंथ 'अष्टावक्र गीता' का छंदोबद्ध अनुवाद है और दूसरा भी जो छोटासा है दर्शन विषय से ही संबंधित है। इन्होंने एक रामदास का उल्लेख गुरू के रूप में किया है:—'रामदास गुरुचरन को' महत न वरन्यो जाय'। 'रामदास गुरु कृपाते सबै भेद कहि दीन'। 'अष्टावक्र गीता' का अनुवाद संवत् १८९३ = १८३६ में प्रस्तुत हुआ था:— 'संवत् अठारहसै नवै तीन अधिक पुनि जानि, पौष शुक्ल तिथि चौथ है, भौमवार शुभ जानि'। रचयिता खोज में नवोपलब्ध है।

६ **आलमकवि**—हिंदू से मुसलमान बने ये ख्यातिप्राप्त कवि हैं। इनकी प्रस्तुत रचना 'स्याम सनेही' इन्हीं की है, यह संदिग्ध सा है। विनोदकार इस नाम के दो कवियों को एक ही मानता है; परंतु प्रस्तुत रचना का काव्य इस कोटि का नहीं जैसा कि 'आलम-केलि' का है। पिछले खोज विवरणों में इस नाम के दो कवियों का उल्लेख है जो एक दूसरे से भिन्न थे, देखिये खोज विवरण (१९२३-२५; सं० ८ और ९; १९२९-३१; सं० ८; १९०४, सं० ९)। खोज में प्रस्तुत रचना प्रथमबार मिली है।

७ **आनंदघन**—ये हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। इनकी कविताओं के संग्रह और अन्य ग्रंथ पिछले खोज विवरणों में भी उल्लिखित हैं, देखिये खोज विवरण (१९००, सं० ७९; १९०३, सं० ६६; १९०६-०८ सं० १२५; १९१७-१९, सं० ८, १९२३-२५, सं०

१४ ; १९२६-२८, सं० १२)। ये ईसवी सन् १६५८ और १७३९ के बीच में वर्तमान और दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के आश्रित थे। प्रस्तुत खोज में इनकी निम्नलिखित रचनाएँ पहले पहल मिल रही हैं :—

(१) इस्कलता, (२) वृंदावन सत, (३) फुटकर कविताओं के दो संग्रह। संख्या दो वाली रचना संस्कृत का अनुवाद है :—'चैत मास में चतुरवर, भाषा कियो बषान' इसकी रचना संवत् १७०७ (१६५० ई०) में हुई और इसमें रचयिता ने अपना पिछला वृत्त भी दिया है। इसमें इस सर्वविदित बात का भी उल्लेख है कि रचयिता विरक्त होकर अंत में वृंदावन में रहते थे जहाँ वे स्वामी हरिदास जी के शिष्य बने—'श्री गुरु श्री हरिदास दया मैं भाषा कीनो' इनके संबंध में यह भी कहा जाता है कि इन्होंने बहुत से पदों की रचना की। मथुरा जिले में इनके कुछ पदों का एक संग्रह मिला है। 'इस्कलता' की भाषा जिसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९०० (१८४३ ई०) की लिखी हुई है, उर्दू मिश्रित प्राचीन खड़ी बोली का रूप लिए हुए है। इसमें वर्णित प्रेम सांसारिक न होकर आध्यात्मिक है। 'कवित्त संग्रह' अब तक मिले इनकी कविताओं के संग्रहों से सबसे बड़ा है, अतः इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

८ आनंद गिरि—दर्शन विषय पर लिखा हुआ इनका एक विशालकाय ग्रंथ पहली बार मिला है जो गद्य में है और जिसकी प्रस्तुत प्रति सं० १९१८ (१८६१ ई० की लिखी हुई है। इनके गुरू कोई मलूक गिरि थे और आश्रयदाता कोई वंशीधर। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना इन्होंने अपने आश्रयदाता के आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि के लिये की। इसके प्रथम अध्याय में आश्रयदाता की वंशावली वर्णित है।

९ अनंतदास—ये एक संत कवि हैं जिन्होंने प्रसिद्ध संत कबीर, रैदास, नामदेव, और त्रिलोचन की परिचयियाँ लिखी हैं, देखिये खोज विवरण (१९०१, सं० १३३; १९०६-८, सं० १२८; १९०९-११, सं० ५)। इस बार इनकी चार रचनाओं की पाँच प्रतियों के विवरण लिये गए हैं जिनमें से दो प्रतियों का लिपिकाल संवत् १८०४ (१७४७ ई०) है। नामदेव की परिचयी में रचनाकाल भी दिया है जो सं० १६३८ है। "सउसमन की परिचयी' प्रथमबार मिली है।

१० बैजू—ये 'मनमोदिनी' और 'मति बोधिनी' के रचयिता हैं जो खोज में पहले पहल मिली हैं। विशेष के लिये देखिये विवरण का भाग संख्या, ११।

११ बलभद्र—ये पिछली खोज में मिले इस नाम के कवि से, जो केशवदास के भाई थे, अभिन्न जान पड़ते हैं, देखिये खोज विवरण (१९०९-११, सं० ४५; १९२३-२५, सं० २८; १९२६-२८, सं० २९)। इस बार मिली इनकी रचना 'षट्नारी षट् वर्णन' सुप्रसिद्ध रचना 'नखशिख' का दूसरा नाम विदित होता है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं।

१२ बालदास—इनका 'स्वरोदय वेदांत' खोज में प्रथम बार मिला है। खोज विवरण (१९१७-१९, संख्या १४) पर इस नाम के एक रचयिता का उल्लेख है जिसका

खोज विवरण (१९२६–२८, सं० ३१) में कुछ परिचय भी दिया है। उसके अनुसार इन्होंने दर्शन विषयक दो ग्रंथों की रचनाएँ कीं। प्रस्तुत ग्रंथ उक्त दोनों ग्रंथों से भिन्न है।

१३ बलदेव—'हनुमान स्तोत्र' नाम से इनकी एक रचना के विवरण लिए गए हैं। ये खोज विवरण (१९०५, सं० ५८; १९२६–२८, सं० ३२, ३३) में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से भिन्न और संभवतः खोज विवरण (१६२३–२५) में आए रामचंद्र और 'हनुमान की नामावली' के रचयिता हाथरस 'निवासी' बलदेवदास जौहरी से अभिन्न विदित होते हैं। प्रस्तुत रचना की प्रति खंडित है और उसमें रचनाकाल लिपिकाल का उल्लेख भी नहीं दिया गया है।

१४ बलदेव—ये कवि मथुरा के निवासी थे और खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है। पिछले खोज विवरणों में उल्लिखित इस नाम के रचयिताओं से ये भिन्न हैं। इनका समय अज्ञात है। इन्होंने रामपुर के नवाब के कहने से शेखशादी की सुप्रसिद्ध रचना 'करीमा' का पद्यबद्ध अनुवाद किया था जिसके विवरण लिये गए हैं।

उक्त नवाब के विषय में यह उल्लेखनीय है कि वे हिंदी के कवियों के आश्रयदाता भी थेः—

दाता कविकुल के सुखदाई। कहँ लगि तिनकी करौं बड़ाई।

१५ बलदेवप्रसाद—इन्होंने संवत् १९०३ (१८४६ ई०) में दामोदर मिश्र कृत मूल संस्कृत रचना 'विचित्र रामायण' की हिंदी में टीका की। भरतपुर के महाराजा बलवंत सिंह इनके आश्रयदाता थे। इस बार प्रस्तुत रचना के विस्तृत विवरण लिए गए हैं। इसके लिये देखिए खोज विवरण (१६१७–१६, सं० १५)।

१६ बालकृष्ण—इनकी राग-रागिनी विषयक एक रचना के विवरण लिये गए हैं। ये संवत् १७०५ के लगभग वर्तमान थे। इस नाम के एक कवि जो चरण दास के शिष्य थे और जिनकी पिछली खोज में चार रचनाएँ मिली हैं लगभग इसी समय में वर्तमान थे, देखिये खोज विवरण (१९०६–८, सं० ६; १९१७–१९, सं० १६; १९२३–२५, सं० ३३)। इनके अनुसार वे बुंदेलखंड के निवासी थे और उनका उपनाम 'नायक' था। परंतु प्रस्तुत रचयिता यद्यपि उक्त बालकृष्ण 'नायक' के समकालीन थे तौ भी उनसे भिन्न जान पड़ते हैं। इन्होंने अपने आश्रयदाता के निवास स्थान का उपनाम बोरट बतलाया है जहाँ किकांन और ईसनै नदियाँ प्रवाहित होती हैं। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना इन्होंने शाहजहाँ बादशाह के राज्यकाल में 'राइ रनजीतजू' के पुत्र भगवानदास, जो इनके आश्रयदाता थे, के लिये की थीः—

'साहजहाँ तहँ चक्कवै' तपत तेज जसु भान। × × × राइ रनजीत जू केवली भगवानदास हेत रस रीति तिनके कविता रचतु हौं' इनके पिता का नाम गोपी मिश्र था और गाँव का नाम जडिना (?) नगर।

१७ बनमाली—'द्वादश महावाक्य विचार' नाम से इनकी एक रचना मिली है जिसका पता खोज में प्रथम बार लगा है। इसमें ब्रह्म और जीव की एकता सूचक वेदांत

के बारह वाक्यों 'तत्वमसि' आदि का वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचना काल का उल्लेख नहीं किया गया है।

१८ बनारसी—ये संवत् १६५१ (१५९४ ई०) के लगभग वर्तमान थे। इन्होंने हिंदी में प्रचुर मात्रा में रचनाएँ कीं। अपनी काव्य प्रतिभा के कारण ये 'जैन तुलसी दास' कहे जाते हैं। इनकी बहुत सी रचनाएँ पिछले खोज विवरणों में उल्लिखित हैं, देखिए खोज विवरण (१९००, सं० १३२, १०४, १०५, १०६; १९१७–१९, सं० १९; १९२३–२५, सं० ३६; १९२६–२८, सं० ३९) । इस बार इनकी तीन नवीन रचनाएँ और मिली हैं जो काव्य की दृष्टि से साधारण कोटि की हैं। ये सब जैन धर्म विषयक हैं। इनकी प्रस्तुत प्रतियों में रचनाकाल-लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

१९ भागचंद (जैन)—इनका पता प्रस्तुत खोज में प्रथम बार लगा है। 'विनोद' और पिछले खोज विवरणों में इनका कोई उल्लेख नहीं है। इन्होंने बहुत से पदों की रचनाएँ कीं जो काव्य की दृष्टि से साधारण कोटि की हैं। ऐसे पदों के एक संग्रह का इस बार विवरण लिया गया है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं। रचयिता का भी कोई वृत्त नहीं मिलता।

२० भगवत रसिक—ये वृंदावन के रहनेवाले एक वैष्णव थे जिनकी राधाकृष्ण भक्ति संबंधी बहुत सी रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं, देखिये खोज विवरण (१९००, सं० २९, ३१, ३२ और ३३)। ये प्रतिभा-संपन्न कवि थे और संवत् १६१७ के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनकी 'जुगल ध्यान' नाम से एक रचना मिली है जो पिछली खोज में प्राप्त इन्हीं की 'नित्यविहारी जुगल ध्यान' रचना प्रतीत होती है, देखिये खोज विवरण (१९०० सं० ३०)।

२१ भगोतीदास—ये आगरा के रहनेवाले जैन कवि थे जिन्होंने जैन धर्म विषय पर बहुत सी रचनाएँ कीं। पिछले खोज विवरणों में इनकी रचनाओं का उल्लेख है, देखिये खोज विवरण (१९००, सं० १३३; १९२३–२५, सं० ४७, १९२६–२८, सं० ५४)। इस बार खोज में इनके 'ब्रह्मविलास' ग्रंथ की एक प्रति के विवरण पहले पहल लिये गये हैं यद्यपि विनोद (संख्या $\frac{४७४}{१}$) में इसका कुछ उद्धरणों जहित उल्लेख है। उसमें इसका रचनाकाल संवत् १७३१ माना गया है, परंतु प्रस्तुत प्रति में संवत् १७५० स्पष्ट रूप से रचनाकाल दिया गया है :—संवत् सत्रह सै पंचासत। रितु वसंत वैसाख सुहावन ॥ सुकल पक्ष तृतिया रविवार।... ... ...

२२ भाऊ—ये जैन कवि थे। इनके पिता का नाम मलूक था। 'आदित्य कथा' नामक रचना के साथ पिछले एक खोज विवरण में इनका उल्लेख हो चुका है, देखिये खोज विवरण (१९००, सं० ११४)। इस बार 'पुष्पदंत पूजा' नाम से इनकी एक रचना के विवरण लिए गए हैं जिसमें इन्होंने अपना कुछ वृत्त भी दिया है (देखिये विवरण पत्र में उद्धरण)। परंतु इनका समय अभी भी अविदित है।

२३ भेदीराम—'आल्हा' हिंदी का लोक महाकाव्य है जिसकी ख्याति देशभर में है। प्रस्तुत रचयिता ने इसी काव्य-शैली पर रचना की है जिसके एक भाग का विवरण लिया गया है। इसमें मलखान और रूपवती गजमोहिन के विवाह के अवसर पर लड़े गए कसौंदी के युद्ध का ओजस्वी वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९४५ की लिखी हुई है। रचयिता का न तो समय ही विदित है और न उसका वृत्त ही उपलब्ध है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

२४ भीखजन—ये विनोद (सं० १६१६) में उल्लिखित हैं। खोज विवरणों में अभी इनका उल्लेख नहीं हुआ है। संवत् १६८३ वि० में रचे गये इनके ज्ञानोपदेश विषयक ५२ दोहे मिले हैं। इनका लिपिकाल संवत् १९०० वि० है। इनके अनुसार रचयिता ब्राह्मण थे जो पीछे विरक्त होकर साधु हो गए।

२५ भोलागिरि—इनके नाम से 'सन्यासविधि' नामक रचना के विवरण लिये गये हैं जिसमें सन्यासियों के कृत्यों और रहन सहन के विधि-विधानों के विषय में वर्णन है। इसमें रचयिता के नाम का कोई उल्लेख नहीं है। केवल ग्रंथ स्वामी के कथनानुसार ही इसका रचयिता भोलागिरि मान लिया गया है। मंत्रों की भाषा अपरिष्कृत है जिसमें शब्दों का बाहुल्य है यद्यपि संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग यत्र तत्र हुआ है।

२६ भोलानाथ—ये भरतपुर राज्य के निवासी थे। नायिकाभेद विषय पर इन्होंने 'सुमन प्रकाश' नामक रचना की जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। ग्रंथारंभ में इन्होंने अपने आश्रयदाता नाहरसिंह (भरतपुर) नरेश सूरजमल्ल के पुत्र) की वंशावली दी है और उनकी प्रशंसा की है। पुष्पिका में तो उनका उल्लेख रचयिता के रूप में भी किया है। पिछली खोज में इस नाम के दो रचयिताओं का पता चला है, देखिये खोज विवरण (१९०६–८, सं० १६, १९२३–२५, सं० ५४)। परंतु प्रस्तुत रचयिता उन दोनों से भिन्न हैं, अतः नवोपलब्ध हैं।

२७ भोलाराम—इनके रचे 'चौबोलों' के विवरण लिए गए हैं जिसमें संसार का सबसे बड़ा कुंभ मेला का वर्णन है जो हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक (दक्षिण) तीर्थ स्थानों में प्रत्येक बारहवें वर्ष पर होता है। जान पड़ता है रचयिता ने स्वयं यह मेला देखा था जिसका उसने यथातथ्य वर्णन किया है। भाषा को देखते हुए रचयिता आधुनिक काल का जान पड़ता है।

२८ बिहारीदास—इनके 'पदों' का एक संग्रह मिला है। पदों में श्रीकृष्ण के विविध चरित्रों का वर्णन है। इस नाम के दो तीन रचयिता पिछली खोज में मिल चुके हैं; परंतु उनमें से किसी के साथ इनकी एकता स्थापित करने के लिये कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिलता, देखिये खोज विवरण (१९००, सं ११६; १९०२, सं० ४३; १९१७–१९ सं० २८)। विनोद में भी एक बिहारी दास (व्रजवासी) का उल्लेख है, पर उसको इस नाम के जैन कवि के साथ मिला दिया है। प्रस्तुत कवि को तब तक इस नाम के सभी कवियों से भिन्न मानना चाहिये जबतक इनमें से किसी के साथ मिलान करने के लिये उपयुक्त प्रमाण नहीं मिल जाते।

२९ बिहारीलाल—प्रस्तुत रचना में सुप्रसिद्ध कवि बिहारीलाल के कुछ दोहे किसी अज्ञात व्यक्ति ने रख दिए हैं जिसके कारण वही इसके रचयिता मान लिए गए हैं। वास्तव में यह किसी अन्य रचयिता की कृति है जिसका नाम नहीं दिया गया है। रचना भी बहुत साधारण है।

३० बिहारीलाल अग्रवाल—ये कोसी (मथुरा) के रहनेवाले थे। खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है। स्थानीय धारणा के अनुसार इनकी बहुतसी रचनाएँ हैं। इस बार इनके वंशजों के यहाँ इनकी दो रचनाएँ मिली हैं। पहली रचना 'दोष निवारण' है जिसमें काव्य दोषों का वर्णन है और दूसरी 'गंगाशतक' है जिसकी रचना पद्माकर कृत 'गंगालहरी' की शैली पर की गई है। 'दोषनिवारण' की रचना सं० १९२३ (१८६६ ई०) में हुई; परंतु 'गंगा शतक' की प्रति का लिपिकाल इससे पहले का होने से यह संदिग्ध सा जान पड़ता है।

रचयिता के पिता का नाम टंडीराम था जैसा कि इसने 'गंगाशतक' के अंत में लिखा है। स्थानीय लोगों से यह भी पता चला कि इनके ग्रंथ के संबंध में इनके गुरू ने इनको श्राप दिया था जिससे उनका प्रचार रुक गया यद्यपि इन्होंने अपने ग्रंथों में गुरू का गणपति से अधिक आदर के साथ उल्लेख किया है। आशा है प्रस्तुत खोज के द्वारा अब श्राप निवारण हो जायगा और कवि एवं उसकी रचनाएँ साहित्यिकों के सामने आजाएँगी।

३१ बोधाकवि—प्रस्तुत खोज में इनकी निम्नलिखित पाँच रचनाओं के विवरण लिए गए हैं:—

१—बागवर्णन, २ बारहमासी, ३ फूलमाला, ४ पक्षीमंजरी और ५ पशुजाति नायक नायिका कथन। इनमें केवल 'पक्षी मंजरी' में रचनाकाल दिया है जो सं० १६३६ है। शिवसिंह सरोजमें पन्ना के एक बोधा का उल्लेख है जो संवत् १८०४ में वर्तमान बतलाया गया है। अतः यदि सरोज पर विश्वास किया जाय तो प्रस्तुत रचना (पक्षीमंजरी) का रचयिता उसमें उल्लिखित पन्ना के बोधा से भिन्न है। वास्तव में एक पक्ष का तो यह पक्का विश्वाश है कि बोधा नाम के दो व्यक्ति थे, एक पन्ना का और दूसरा फिरोजाबाद (आगरा) का। परंतु सरोज में दिये गए संवत् पर अधिक निर्भर रहना न्याय संगत न होगा। निःसन्देह बोधा दो न होकर एक ही व्यक्ति हो सकते हैं जो दो स्थानों में रहा होगा। यह संभव है कि सुभान, राजवेश्या, के प्रेम में पड़ जाने के कारण पन्ना से बोधा का जो निकाला हुआ तो उसके पश्चात् वह वहाँ से फिरोजाबाद में जाकर बसा होगा। बोधा के वंशज अभी भी फिरोजाबाद में रहते हैं और उनकी संपत्ति का उपभोग करते हैं। उसका वह बाग भी जिसका उसने 'बागवर्णन' में उल्लेख किया है उन्हीं के पास है।

'पशु जाति नायक नायिका कथन' का लिपिकाल संवत् १८३६ वि० है। अन्य रचनाओं की प्रतियों में लिपिकाल नहीं दिये हैं। विशेष के लिये देखिए विवरण का भाग संख्या, १२।

३२ ब्रह्मगुलाम—इनका अबतक खोज में कोई पता नहीं लगा था। जैसा कि निम्नलिखित दोहे से प्रकट है ये संवत् १६७१ (१६१४ ई०) के लगभग वर्तमान थेः—

सोरा सै इकहत्तरि जेठ, तिथिमावस सुमिरि परमेष्ट।
कृष्ण पक्ष शुभ शुक्करवार, साहि सलीम छत्र सिरमार ॥

ऐतिहासिक दृष्टि से यह ठीक है। सलीम (जहाँगीर) अकबर के पश्चात् संवत् १६६२ (१६०५ ई०) में गद्दी पर बैठा और संवत् १६८४ (१६२७ ई०) तक राज्य करता रहा।

रचयिता जैन धर्मानुयायी ज्ञात पड़ता है, जैसा कि इनके प्रस्तुत रचना के मंगलाचरण में प्रयुक्त 'नमः सिद्धेभ्यः' और अंत में दिये 'परमेष्ठी' शब्दों से पता चलता है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति एक जैन साधु के पास है। ग्रंथ का विषय एक सूम बनिया की कहानी है। इसमें रचयिता ने अपना और अपने वंश का पूरा विवरण दिया है। उसने इसकी रचना किसी सुदर्शन के कहने पर की जिसको वह आदर्श जैन बतलाता है। अपने गाँव को वह एक द्वीप लिखता है। जांच करने पर पता चला कि वह आगरा जिले में यमुना के किनारे बसे एक गाँव में रहता था। नदी उस गाँव को तीन ओर से घेरे हुए है। अतः इसीलिये वह उसको द्वीप कहता है, पर जो वास्तव में एक छोटा सा प्रायद्वीप कहा जा सकता है।

३३ बुलाकराम—ये मथुरा के निवासी थे और इन्होंने व्रजभाषा में गरुड़ पुराण का अनुवाद किया जो मृत्यु के पश्चात् दशवें (दशगात्र संस्कार) दिन पढ़ कर सुनाया जाता है।

३४ बुलाकीदास—इन्होंने प्रचुर मात्रा में रचनाएँ कीं हैं। ये जहानाबाद के रहनेवाले थे और इनका एक ग्रंथ 'श्रावकाचार' पहले खोज में मिल चुका है, देखिये खोज विवरण (१९२३–२५, सं० ७१)। प्रस्तुत खोज में इनकी तीन और नई रचनाएँ मिली हैं जिनमें से 'श्रीमन्महाशीलाभरन भूषित' सभा के लिये प्राप्त कर लिया गया है। यह जैन धर्म विषयक एक विशालकाय ग्रंथ है जिसमें अनेक कथाओं के अतिरिक्त बहुतसी ऐतिहासिक सामग्री भी है। रचयिता का घर बयाना (? भरतपुर राज्य) में था पर भाग्यवशात् जहानाबाद चला आया। उसके गुरू का नाम रतन था जो गढ़गोपाचल (ग्वालियर) में रहता था। उसने औरंगजेब का बड़ा अच्छा विवरण प्रस्तुत किया है जो वास्तव में मुसलमानी शासकों में वीर कहा जाता हैः—बतन बुलाकी दासकौ, मूल बयौना जान और रतन गुरुदेवकौ, गढ़गोपाचल थान। अन्नपान संजोग तें नगर जहानाबाद, × × × नगर जहानाबाद में साहिब औरंग साहि; विधिना तिस छत्तर दयो, रहे प्रजा सुख माहि।

इसकी प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल संवत् १८४८ = १७८१ ई० है। दूसरा ग्रंथ 'पांडव पुराण' है। यह भी विशाल ग्रंथ है जिसमें पांडवों की कथा जो महाभारत से बहुत भिन्न है दी हुई है। इसका रचनाकाल संवत् १८२३ = १७६५ ई० जैसा कि प्रस्तुत प्रति में दिया हुआ है, संदिग्ध है। रचयिता ने 'श्रावकाचार' की रचना सं० १७३७ =

१६८० ई० में की, देखिये खोजविवरण (१९२३–२५, सं० ७१)। औरंगजेब का जन्म सं० १६७५ = १६१८ ई० में हुआ था और उसने सं० १७१५–१७६४ (१६५८–१७०७ ई०) तक राज्य किया। इसलिये रचयिता द्वारा 'पांडव पुराण' की रचना संवत् १८२३ (१७६५ ई०) में होने की कल्पना नहीं की जा सकती। इन्होंने औरंगजेब बादशाह का जिस प्रकार उल्लेख किया है उससे रचनाकाल के संबंध का संदेह और भी स्पष्ट हो जाता है:—वंस मुगलाने माहि दिल्लीपति पातसाह, तिमिर लिंग मीर सुत बावर सुत भयो है। ताके हैं हुँमायू सुत ताहि ते अकब्बर है, जहाँगीर ताके धीर साहजहाँ ठयो है। ताज-महल अंगना अंगज उत्तंग महा, बली अवरंगसाह साहब में जयो है। ताही छत्र छाँह पाय सुमति के उदय आय, भारथ रचाय भाषा जैन जस लयो है। तीसरी रचना 'जैन चौबीसी' है जिसमें २४ जैन तीर्थंकरों की स्तुतियाँ हैं।

३५ बुनरिया साहिब—डाक्टर बुनरिया एक अंगरेज थे जो इटावा के सिविल सर्जन थे। ओषधियों की प्रस्तुत छोटी पुस्तक इन्हीं की रची है। ग्रामीणों की हित की दृष्टि से इन्होंने इस ग्रंथ की हाथ से लिखी हुई कई प्रतियाँ उनमें बाँटी थी। इसकी एक पुरानी प्रति के इस बार विवरण लिये गए हैं जिसमें कोई सन्-संवत् नहीं दिया है।

३६ चंद—चंद एक साधारण कोटि के कवि थे। इन्होंने 'कविरारामायण' की रचना की जिसकी संवत् १८६० (१८०३ ई०) की लिखी हुई एक प्रति के इस बार पहले पहल विवरण लिये गये हैं। पिछली खोजविवरणों में इस नाम के जितने कवियों का उल्लेख है, ये उन सबसे भिन्न हैं, देखिये खोज विवरण (१९०६–८, सं० १८; १९१७–१९, सं० ३६; १९२६–२८; सं० ७६)।

३७ चंद्र—इस नाम के कई कवि पिछली खोज विवरणों में उल्लिखित हैं; पर वे सब इस जयपुर वाले कवि से सर्वथा भिन्न हैं। ये एक नये जैन कवि हैं, जिन्होंने संवत् १८०७ (१७५० ई०) में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति संबंधी प्रस्तुत रचना की। इसकी प्रस्तुत प्रति जिसके विवरण लिये गये हैं संवत् १९२५ (१८६८ ई०) की लिखी हुई है। विनोद (संख्या २००३) में जयपुर निवासी एक चंद्र कवि का उल्लेख है जिसने 'महाभारत' की रचना की; परंतु प्रमाणाभाव में उसको प्रस्तुत कवि से भिन्न या अभिन्न मानने का किसी प्रकार निश्चय नहीं किया जा सकता।

३८ चरणदास—ये सुप्रसिद्ध सन्त हैं जिन्होंने अनेक रचनाएँ कीं। लगभग एक दर्जन से ऊपर रचनाएँ इनके नाम पर बतलाई जाती हैं। इनका उल्लेख प्रत्येक खोज विवरण में है, देखिये विशेषकर खोज विवरण (१९२६–२८, सं० ७८; १९२३–२५, सं० ७४; १९२०–२२, सं० २९; १९१७–१९, सं० ३७; १९०६–०८, सं० १४७; १९०५ सं० १७, १८, १६; १९०९–११, सं० ४५ आदि)। इस बार भी इनके बहुत से ग्रंथों की प्रतियों के विवरण लिए गए हैं जिनमें से चार ही ऐसे हैं जिनका उल्लेख पिछले खोजविवरणों में नहीं हुआ है। एक तो बड़ा हस्तलेख है जिसमें बहुत सी रचनाओं का संग्रह किया गया है। यह संग्रह संवत् १७८१ (१७२४ ई०) में हुआ था। इसके संबंध में संग्रहकार का कथन इस प्रकार है:—

चरनदास हित सूँ कियो ग्रंथ अनेक प्रकार। अष्टादश और चारकों काढि लियो तत्सार॥ 'भक्ति पदार्थ' और हंसनाद उपनिषद' नये मिले हैं। खोज विवरण (१९२६–२८, सं० ७८) पर 'पंच उपनिषद' (पाँच उपनिषदों के अनुवाद) का उल्लेख है, अतः हो सकता है प्रस्तुत उपनिषद उनमें से एक हो।

३९ चत्रदास—ये 'शुक संवाद' के रचयिता चतुरदास नामक रचयिता से भिन्न हैं। चतुरदास के गुरु का नाम संत दास था पर इन्होंने अपने गुरु का नाम "मोहन प्रसाद" (गुरु मोहन प्रसाद बुधि) लिखा है। भाषा और रचनाशैली को देखते हुए ये चतुरदास से प्राचीन जान पड़ते हैं।

४० चतुरभुजदास—ये अष्टछाप के कवि हैं। गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के ये अंतरंग शिष्यों में से थे। पदों के प्रत्येक संग्रह में इनके भी छंद मिलते रहते हैं। अबतक इनके स्वतंत्र पदों का कोई संग्रह नहीं मिला था। केवल इस बार की खोज में इस प्रकार के एक संग्रह का विवरण लिया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति बहुत पुरानी जँचती है और यह उस स्थान पर मिली है जहाँ ये और इनके गुरु गो० विट्ठलनाथ रहते थे। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

४१ चतुरदास—ये एकादश स्कंध' भागवत (पद्यबद्ध अनुवाद) के रचयिता के रूप में पिछली खोज-विवरणों में उल्लिखित हैं, देखिये खोज विवरण (१९२३–२५, सं० ७६; १९००, सं० ७१; १९०१, सं० ११०; १९१७–१९, सं० ४०)। इनके गुरू का नाम संतदास था और इन्होंने उक्त ग्रंथ का अनुवाद संवत् (१६३५ ई०) में किया था जिसकी एक प्रति संवत् १८२१ = (१७६४) की लिखी हुई है। इस बार इनकी छोटी छोटी छः रचनाएँ और मिली हैं जो अबतक अज्ञात थीं। इनमें से कुछ तो महत्वहीन हैं, क्योंकि उनमें छंदों की केवल आठ-आठ पंक्तियाँ ही हैं। कुछ ग्रंथों की प्रतियों में रचयिता को सलेमाबाद का निवासी बतलाया गया है, पर 'गोपेश्वराष्टक' में इन्होंने अपना निवास स्थान रतलाम लिखा है:—चतुरदास रतलाम में, जग जननी गुण गाय।

४२ चतुरदास—ये पिंगल विषयक ग्रंथ 'चतुरचंद्रिका पिंगल' के रचयिता हैं। अबतक इनका कोई पता न चला था। पुष्पिका के अनुसार इनके पिता का नाम रामदास था जो निंबार्क संप्रदाय के अनुयायी थे। ये अवंतिका क्षेत्र के रहने वाले थे। प्रस्तुत ग्रंथ विशेष महत्व का नहीं है। इसकी प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही।

४३ छाजुराम—इन्होंने मूल संस्कृत रचयिता नीलकंठ के फलित ज्योषित विषयक सुप्रसिद्ध 'ताजक' ग्रंथ की गद्य टीका की। ये कोटा राज्य के निवासी थे। प्रस्तुत टीका इन्होंने सं० १७६२ वि० (१७३५ ई०) में की थी। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति इन्हीं के हाथ की लिखी हुई है। इनकी भाषा में मारवाड़ी शब्दों और मुहावरों का अधिकांश प्रयोग किया गया है।
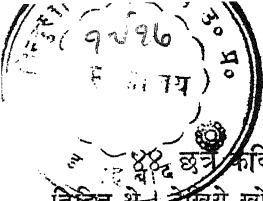
४४ छत्र कवि—ये अब तक 'विजय मुक्तावली' के रचयिता के रूप में ही विदित थे। देखिये खोज विवरण (१९०६–८, सं० २३; १९०९–११, सं० ४८; १९२६–२८ सं० ८३)। परंतु प्रस्तुत शोध में इनका रचा 'विक्रम चरित्र' नामक ग्रंथ और मिला है जो औरंगजेब की मृत्यु (१७०७ ई०) के जिसका कि लेखक ने उल्लेख किया है, ठीक तेरह वर्ष पहले संवत् १७५१ (१६९४ ई०) में रचा गया था। रचयिता ने अपना पूरा परिचय दिया है। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना इन्होंने भदावर नरेश महाराज कल्यान सिंह के आदेश से की जो इनके आश्रयदाता थे। इनके पिता का नाम भागीरथ कायस्थ था और अंटेर (भदावर राज्य) के रहनेवाले थे। प्रस्तुत ग्रंथ की प्रति का लिपिकाल संवत् १८६४ है।

४५ चिंतामनि मनियार सिंह—ये 'हनुमान विजय' के रचयिता हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सन् १८६३ ई० की लिखी हुई है। रचयिता खोज विवरण १६०३, सं० ४७ में उल्लिखित काशी निवासी इस नाम के रचयिता से भिन्न हैं या अभिन्न प्रमाणाभाव के कारण कुछ नहीं कहा जा सकता।

४६ कलक्टर आगरा—आगरा के एक कलक्टर द्वारा लिखा गया एक 'हिदायत नामा' मिला है जिसमें पटवारियों के लिए हिदायतें लिखी हुई हैं और जिसकी भाषा आगरा क्षेत्र की बोली है। इसकी प्रस्तुत प्रति में सन् १८५१ ई० दिया है। उससे पता चलता है कि यह गदर के पाँच वर्ष पहले लिखा गया था। प्रति नागरीप्रचारिणी सभा आगरा में सुरक्षित है। यह एक रोचक उपलब्धि है।

४७ दादू—इनकी रचनाएँ लगभग प्रत्येक खोज विवरण में उल्लिखित हैं, देखिये खोजविवरण (१९१७–१९, सं० ४२; १९२६–२८, सं० ८५; १९२३–२५–सं० ८१ आदि)। इस त्रिवर्षी में इनकी बानियों और 'शब्दों' के दो संग्रह और मिले हैं।

४८ दौलतराम जैन—ये जैन धर्म विषयक अनेक ग्रंथों के रचयिता हैं जिनके विवरण लिए गये हैं, देखिये खोजविवरण (१९२३–२५, सं० ८५)। इस बार इनके दो ग्रंथों के विवरण लिये गये हैं जिनका पता खोज में पहले पहल लगा है। इन दोनों में जैन धार्मिक कृत्यों, सिद्धांतों, विचारों और उपदेशों का वर्णन है। रचयिता ने 'पुरुषार्थ शुद्धोपाय' ग्रंथ की रचना संवत् १७२८ वि० में की जिसकी संवत् १८८३ की लिखी एक प्रति प्रस्तुत खोज में विवृत हुई है।

४९ दौलतराम (जैपुर निवासी)—ये जैन दौलतराम से भिन्न हैं यद्यपि दोनों एक ही स्थान के रहने वाले थे। इनका पता प्रथम बार लगा है। 'रसचंद्रिका' नाम से इनकी एक रचना के विवरण लिए गए हैं जिसमें शृंगार रस और अलंकारों का वर्णन है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं है। रचयिता ने जयपुर राज्य में स्थित गलता स्थान का उल्लेख कर जयपुराधीश राजा जयसिंह और मानसिंह की—जिनके वे आश्रय में ही रहते थे—वंशावली का भी वर्णन किया है।

५० दौलतराम कायस्थ—ये खोज विवरण (१९२०–२२, सं० ३५; १९०२, सं० ३०) में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से भिन्न हैं। सूरजपुर (मैनपुरी जिला)

के ये निवासी थे। जेवनार विषयक गीतों की इनकी एक साधारण रचना के विवरण लिये गए हैं जिसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९०५ की लिखी है। यह रचयिता के हाथ की लिखी जान पड़ती है।

५१ दौलत सिंह—इनका पता खोज में प्रथम बार लगा है। स्त्री जाति विषयक कुछ गीतों की इन्होंने रचना की है जिनकी एक छोटी सी पुस्तक के विवरण लिए गये हैं।

५२ देशराज—खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है। गंगा जमुना के बीच में कहीं पर स्थित हसनपुर के ये निवासी थे। इन्होंने गो० तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' की शैली पर 'रामचंद्र चरित्र' ग्रंथ की रचना की जिसमें मानस का अधिक अनुकरण किया गया है। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८६९ वि० (१८१२ ई०) हैं।

५३ धर्मदास—ये कबीरपंथ के सबसे बड़े प्रचारक थे। इनके नाम पर बहुत सी रचनाएँ मिली हैं, देखिये खोज विवरण (१९०६–८, सं० १५८; १९२३–२५, सं० १००)। कबीर पंथ में आने के पहले धर्मदास का वास्तविक नाम जुड़ावन था। ये जाति के बनिये थे और बाँधवगढ़ (मध्य प्रदेश) में रहते थे। इनकी अमीना नाम की स्त्री थी और नारायणदास एवं चूड़ामन नाम के दो पुत्र थे। ये एक धनाढ्य व्यक्ति थे। मथुरा में अकस्मात् इनकी भेंट कबीर साहबसे हो गई जिसने इनको अपना शिष्य बना लिया। इन्होंने कबीर पंथ के लिये वही काम किया जो कि संतपाल (Saint Paul) ने प्रारंभिक गिरिजाघरों के लिए किया। इनकी गद्दी धमखेड़ा (छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश) में अवस्थित है। प्रस्तुत खोज में इनकी दो रचनाएँ १—शब्द रैदास कौ वादु, और २—स्वांस गुंजार मिली हैं। प्रथम रचना में कबीर रैदास संवाद वर्णन है जिसमें गोपाल नाम का एक व्यक्ति मध्यस्थ था। संवाद का परिणाम यह हुआ कि रैदास और मध्यस्थ दोनों ही कबीर के शिष्य हो गए। दूसरी रचना में कबीर के उपदेशों और सिद्धांतों का वर्णन है।

५४ धरमसिंह—कामशास्त्र विषयक एक रचना के, जो प्रथम बार विवृत हुई है, ये रचयिता माने गए हैं। ग्रंथ की पुष्पिका में यही नाम रचयिता का दिया गया है। ग्रंथ गद्य में हैं और उसमें लिपिकाल और रचनाकाल का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

५५ धोंकलराम मिश्र—इन्होंने संस्कृत के मूल 'शकुंतला नाटक' का हिंदी में पद्यानुवाद किया है। ग्रंथ को देखने से पता चलता है कि यह वास्तव में नाटक का अनुवाद न होकर वर्णनात्मक काव्य है। रचयिता संवत् १८५६ वि० (१७९९ ई०) के लगभग भरतपुर (राज्य, भरतपुर) में रहते थे और प्रस्तुत ग्रंथ को इन्होंने महाराजा तेजसिंह के आदेश से लिखा था। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति उपर्युक्त संवत् में ही लिखी गई थी जिसमें इसकी रचना हुई। रचयिता का पता प्रथम बार लगा है। एक धौंकलसिंह की रचनाएँ खोजविवरण (१९१७–१९, सं० ५०) पर उल्लिखित हैं, पर वह प्रस्तुत रचयिता से भिन्न जान पड़ता है।

५६ दुल्ली चेतसिंह—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। दिल्ली के ये रहनेवाले थे और इन्होंने ग्रामीण शैली में ख्याल गीतों की रचना की। ग्रंथ की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं जिसमें इन्होंने अपने साथी गवैयों और संगीतज्ञों का उल्लेख किया है।

५७ दुर्गादास—इन्हों ने शिव विषयक ख्यालों की रचना की, प्रस्तुत खोज में, जिनके दो ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं।

५८ द्यानतराय जैन (आगरा)—इन्होंने छोटी बड़ी कई रचनाएँ कीं। सन् १६७६ ई० के लगभग ये वर्तमान थे। पिछले खोज विवरण में इनका उल्लेख हो चुका है, देखिए खोजविवरण (१९२६–२८; सं० ११७; १९२३–२५, सं० ११०; १९००, सं० १०१)। प्रस्तुत खोज में जैन धर्म विषयक इनके प्रधान ग्रंथों के ६ छोटे छोटे अंशों के विवरण लिए गए हैं। इनमें जैन धार्मिक कृत्यों और मंदिरों में गाई जानेवाली स्तुतियों का वर्णन है। केवल "बावन अक्षरी छैढाल" नामक रचना में रचनाकाल दिया गया है जो संवत् १७९८ वि० है और "गुटकापूजन" में लिपिकाल संवत् १९२४ वि (१८६७) दिया है।

५९ गहर गोपाल—ये एक प्रौढ़ कवि विदित होते हैं। पिछले खोज विवरणों में उनका कोई उल्लेख नहीं हुआ है। विनोद संख्या $\frac{१३३}{१}$ पर गो० गोकुलनाथ जी की प्रशंसा में लिखी गई इनकी कविता का उल्लेख है। इस बार मथुरा की खोज में इस कवि की रचनाओं के पाँच हस्तलेख मिले हैं जिनमें से तीन तो विभिन्न विषय की छोटी छोटी रचनाएँ हैं और शेष उनकी कविताओं के फुटकर संग्रह हैं। ये कवि वल्लभ संप्रदाय के कट्टर अनुयायी थे। इनकी कविता में गो० गोकुलनाथ और अन्य वंशधरों की प्रशंसा की जाने के कारण एवं यह तथ्य कि उनकी अधिकांश रचनाओं का विवरण गोकुल में लिया गया है, ये अवश्य वहीं के निवासी थे। इसकी पुष्टि उन ग्रंथ स्वामियों में से एक के द्वारा भी होती है जिसके पास इनके प्रस्तुत ग्रंथ हैं।

इनकी कविता के एक संग्रह द्वारा, जो पंडित मयाशंकर जी याज्ञिक के पास है, पता चलता है कि इस कवि ने कोटा के राजा विजय सिंह, अमेठी के बख्तेश, एवं राजा इच्छाराम की प्रशंसा की है। विनोद के अनुसार ये १६ वीं शताब्दी में वर्तमान थे।

६० गजपति—वे साधारण कोटि के कवि हैं। 'गणेश की गुणमाला' नाम से इनकी एक रचना मिली है जिसमें गणेश की स्तुति की गई है। इसका रचनाकाल संवत् १७८९ (१७३२) ई० है।

६१ गनेश दत्त—इन्होंने फलित ज्योतिष विषयक संस्कृत ग्रंथ 'मुहूर्त्त मुक्तावली' की संवत् १८४७ वि० (१७९० ई०) में वृत्ति लिखी। ये राजगढ़ के रहनेवाले थे।

६२ गंग—ये अकबरी दरबार के सुप्रसिद्ध कवि हैं। यद्यपि इनकी कोई पुस्तक नहीं मिली है तो भी उपलब्ध फुटकर कविताओं द्वारा इनकी काव्य प्रतिभा की बड़ी प्रशंसा है। प्रस्तुत खोज में इनकी कविताओं के बहुत पुराने एवं महत्वपूर्ण संग्रह मिले हैं जो हिंदी जगत के लिये बड़े मूल्यवान हैं। एक संग्रह में तो चार सौ के लगभग कवित्त

और सवैया हैं। इसके कुछ छंदों में निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तियों के नामोल्लेख भी हैं—अकबर, दानियाल, जहाँगीर, शाहजहाँ, अब्दुर्रहीम खानखाना, बीरबल, महाराणा प्रताप और रामदास। देखिए, (खोज विवरण (१९२९-३१, सं० ८५)।

६३ **गंगाधर**—ये एक देहाती हकीम थे जिन्होंने औषधियों के संबंध में गद्य में रचना की। इसमें इन्होंने आयुर्वेद के अनुसार नुसखों, प्रक्रियाओं और चिकित्साओं का उल्लेख किया है। इनका एवं इनके प्रस्तुत रचना का समय अज्ञात है। ये इस नाम के रचयिता से जो खोज विवरण (१९२६-२८, सं० १२८) में उल्लिखित हैं, भिन्न हैं।

६४ **गरीबदास**—ये स्वामी दादू दयाल के पुत्र और प्रमुख शिष्य थे। इनके पदों का एक संग्रह और मिला है (१९०२, सं० ९९)। ये खोजविवरण (१९२६-२८, सं० १३०) में आए इस नाम के रचयिता से भिन्न हैं।

६५ **गो० गोकुलनाथ**—ये श्री वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टि मार्ग की सात गद्दियों में से एक के अधिकारी एवं प्रख्यात वैष्णव गुरु थे। पिछले खोजविवरणों में इनका कोई उल्लेख नहीं है। परंतु ये ब्रजभाषा के कई ग्रंथों के रचयिता विदित होते हैं। प्रस्तुत खोज में इनके कई ग्रंथों का पता प्रथम बार लगा है। ये श्री वल्लभाचार्य जी के पौत्र और गो० गोकुलनाथ जी के, जो हिंदी के बड़े लेखक थे (देखिये विनोद संख्या ८४), पुत्र थे। इनका समय सं० १६२५ वि० है। निम्नलिखित पाँच ग्रंथ इनके रचे हुए मिले हैं। ये सब ब्रजभाषा गद्य में लिखे हुए हैं, अतः महत्वपूर्ण हैं:—

ग्रंथ	लिपिकाल
१—पुष्टि मार्ग के वचनामृत	सन् १८४८ ई०
२—रहस्य भावना	,, १८५४ ,,
३—सर्वोत्तम स्तोत्र	×
४—सिद्धांत रहस्य	×
५—वल्लभाष्टक	×

इन सभी ग्रंथों का विषय भक्ति और पुष्टिमार्ग के सिद्धांतों का वर्णन करना है।

६६ **गोविंद दास**—भक्ति और उपदेश विषयक इनकी छोटी छोटी कुछ साधारण रचनाएँ मिली हैं जिनके चार हस्तलिखित प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। ये इस नाम के रचयिता से, जो खोजविवरण (१९२६-२८, सं० १५४; १९२०-२२, सं० ५३) में उल्लिखित हैं, अभिन्न ज्ञात होते हैं।

६७ **गोविंदप्रभु**—यद्यपि ये इस नाम के अष्टछाप कवि से भिन्न हैं तो भी खोजविवरण (१९१२-१४, सं० ६६) पर उल्लिखित रचयिता विदित होते हैं। इस खोज में इनके दो पद संग्रह—'गोविंद प्रभु की वानी' और 'गोविंद स्वामी के पद' मिले हैं जिनमें से प्रथम अपूर्ण है। इन संग्रहों में कोई समय नहीं दिया है।

६८ **गुलाबदास**—ये नवोपलब्ध रचयिता हैं जिन्होंने संस्कृत ज्योतिष ग्रंथ 'शीघ्र बोध' का हिंदी में पद्यबद्ध अनुवाद किया है। इसका रचनाकाल संवत् १८०२ वि० है तथा लिपिकाल संवत् १८३३ वि०।

६९ गुणदेव—इन्होंने संवत् १८९० वि० (१८३२ ई०) में 'कलिजुग कथा' की रचना की जिसमें कलियुग के अत्याचारों और पापों का वर्णन है। ये नवोपलब्ध हैं और इनकी प्रस्तुत रचना की प्रति सभा में सुरक्षित है।

७० गुनधर जैन—ये 'रविव्रत कथा' के रचयिता हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में कोई समय नहीं दिया है।

७१ गुरुदयाल—इन्होंने राग रागिनियों में रामायण की रचना की जिसकी पाँच प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से प्रत्येक में एक एक अध्याय (कांड) लिखा गया है। सभी प्रतियाँ लगभग संवत् १८८९ वि० की लिखी गई हैं। ग्रंथ की रचना गो० तुलसीदास कृत 'रामचरित्र मानस' के आधार पर हुई है। रचयिता जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं रानी कटरा (लखनऊ) के रहने वाले थे।

७२ गोसाईं जी—श्री वल्लभाचार्य जी के पुत्र गो० विट्ठलनाथ जी का यह (गोसाईं जी) उपनाम था। इनके नाम पर पुष्टिमार्ग विषयक तीन रचनाएँ मिली हैं। इनका संवत् १६०७ वि० के लगभग वर्तमान होना कहा जाता है, देखिये खोज विवरण (१९०९–११, सं० ३२; १९०५, सं० ६०)। इन्होंने श्री वल्लभाचार्य जी के पश्चात् उनकी गद्दी प्राप्त की। रचनाओं के नाम नीचे दिए जाते हैं:—

१—यमुनाष्टक
२—सिद्धांत मुक्तावली
३—नवरत्न की टीका (१८५२ ई०)

७३ ग्वालकवि—इनका हिंदी के कवियों में विशिष्ट स्थान है। ये संवत् १८७९ वि० के लगभग मथुरा में वर्तमान थे। प्रस्तुत खोज में इनके निम्नलिखित पाँच ग्रंथों का पता चला है:—

ग्रंथ	रचनाकाल	लिपिकाल
१—अलंकार भ्रमभंजन	×	१८६५ ई०
२—कविता संग्रह	×	×
३—लक्षणा व्यंजना	×	×
४—रस रंग	१८४७	१८६५ "
५—बंसी बीसा	×	×

संख्या १ और ५ नई रचनाएँ हैं, देखिये खोजविवरण (१९२९–३१, सं० १११; १९२६–२८, सं० १६१; १९२३–२५, सं० १४६; १९२०–२२, सं० ५८ आदि)। 'बंसी बीसा' एक छोटी रचना होते हुए भी काव्य की दृष्टि से उत्तम कृति है।

७४—हरचंद—ये आगरा के समीप शाहगंज के निवासी थे। इन्होंने 'रुक्मिणी मंगल' नामक रचना की। अपना उपनाम इन्होंने द्विजदास रखा था जिसका अर्थ ब्राह्मणों का सेवक है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं।

७५ हरलाल चतुर्वेदी—स्थानीय लोगों के कथनानुसार ये मथुरा के गताश्रम टीला में रहते थे जो अभी तक वर्तमान है। इन्होंने संवत् १८०१ वि० में 'भागवत दशम स्कंध' का पद्यबद्ध अनुवाद किया:—

संवत दस वसु सोम सो, आसुनि तिथि अवतार।
सुक्ल पक्ष हरलाल ने, कीनो ग्रंथ विचार॥

'ब्रज विनोद" और "मथुरा परिक्रमा" नामक ग्रंथ भी इनके रचे कहे जाते हैं, पर वे अभीतक नहीं मिले हैं। इनको लोग कृष्णकवि माथुर का वंशज कहते हैं और इनके वंशजों को अबतक विद्यमान बतलाते है। प्रस्तुत खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

७६ हरपाल पारवाले—ये एक जाट क्षत्री थे। ग्रामीण गीतों की ये रचना किया करते और उन्हें हल चलाते समय गाया करते थे, ऐसा इनके गीतों के संग्रह में आए एक गीत से पता चलता है:—"हरपाल पार को वासी; बिन हर जोते जे न गवेंगी, कोई हर जुतवैया गावै रे इनको और न कोई गावैरे।'

७७ हरिदास—इन्हें पिछले खोज विवरणों में भूल से निरंजनी पंथ का प्रवर्तक कहा गया है, देखिए खोज विवरण (१९०२, सं० ६४; १६०५, सं० ४७); परंतु वास्तव में ये निंबार्क संप्रदाय के एक संत थे। प्रस्तुत खोज में इनकी दो रचनाओं 'भागवत दशम' और "गुरुनामावली" के हस्तलेख मिले हैं जिनमें कोई समय नहीं दिया है। दूसरी रचना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें निंबार्क संप्रदाय के गुरुओं का निंबार्काचार्य से लेकर पीतांबर स्वामीतक की परंपरा दी गई है। परंतु खेद है कि अन्वेषक ने विवरण पत्र में परंपरा को उद्धृत नहीं किया है।

७८ हरदास स्वामी—ये ईसवी पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में वृंदावन के रहनेवाले एक सुप्रसिद्ध वैष्णव महात्मा थे। कहा जाता है कि इन्होंने टट्टी संप्रदाय की स्थापना की जिसके अभी तक वहाँ बहुत से अनुयायी हैं। इन्होंने राधाकृष्ण विषयक बहुत से पदों की रचनाएँ कीं जिनके मथुरा जिले की खोज में चार संग्रह मिले हैं जिनमेंसे किसी में भी रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। इनके कुछ पद संग्रह पहले भी मिले हैं; देखिए खोज विवरण (१९००, सं० २९; ६७, ३७) (१९०१, सं० १२; १९०९–११, सं० १०९ ए, बी; १९०५, सं० ६७ और १९२०–२२ सं० ६०)।

७९ हरिदेव—इनका उल्लेख पिछले खोज विवरणों में हुआ है जिनमें इनके ग्रंथों का विवरण पाया जाता है, देखिये खोजविवरण (१९२६–३१, सं० ११५; १९२६–२८, सं० १६८)। प्रस्तुत खोज में 'गुरुशतक' और भूषण भक्ति बिलास' क्रमशः गुरु महिमा और अलंकार विषयक इनकी दो रचनाएँ मिली हैं। केवल 'गुरुशतक' की प्रति में ही लिपिकाल दिया है जो सन् १८४१ ई० है। खोज विवरण १६२९—३१ ई० में इन्हें गोकुल का निवासी लिखा है। प्रस्तुत रचनाओं की एक प्रति भी गोकुल में ही मिली है, पर अभी पूरा विवरण अप्राप्त है।

८० हरिकृष्ण पांडेय—ये धमसारौ के निवासी और 'अनंत चतुर्दशी कथा' एवं 'रत्नत्रय व्रत कथा' नामक रचनाओं के रचयिता हैं। दोनों रचनाएँ जैन धार्मिक ग्रंथांशों के

अनुवाद हैं। रचयिता साधारण कोटि के कवि थे और संवत् १८८५ वि० (१७६८ ई०) के लगभग वर्तमान थे।

८१ **हरिनारायण**—ये कुम्हेर (भरतपुर) के रहने वाले थे। हिंदी पद्य में इन्होंने 'रुक्मिणी मंगल' की रचना की जिसकी एक प्रति प्रस्तुत खोज में पहले पहल मिली है।

८२ **हरिप्रसाद**—इनकी रचना 'बालक राम विनोद नवरस' की शैली और विषय को देखते हुए ये खोज विवरण १९०५ में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से अभिन्न जान पड़ते है। इन्हें पुष्पिका में 'मिश्र' कहा गया है जहाँ कि उक्त खोज विवरण में आए रचयिता कायस्थ बतलाए गए हैं। इस विषय में और प्रमाणों की आवश्यकता है।

८३ **हरिराय**—इन्होंने हिंदी गद्य में प्रचुर रचनाएँ कीं और साथ ही साथ ये एक प्रौढ़ कवि भी थे। स्थानीय लोगों से पूछ ताछ करने पर इस बात का पता चला कि इन्होंने कई उपनामों से रचनाएँ कीं, जैसे रसिक राय, रसिक प्रीतम, रसिक शिरोमणि आदि जिनसे अलग अलग व्यक्तियों के नाम होने का भ्रम पैदा होता है। वस्तुस्थिति के जानकार निश्चित रूप से कहते हैं कि उक्त सब नाम एक ही व्यक्ति (हरिराय) के हैं। ये लगभग १७ वीं शती के मध्य में वर्तमान थे और वल्लभ कुल की मेवाड़ गद्दी के महंत थे। ये स्वयं वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे और उनके संप्रदाय के संबंध में इन्होंने गद्य पद्य में विस्तृत साहित्य का सृजन किया। संक्षिप्त विवरण के पृष्ठ १९६ पर दो हरिराय माने गए हैं; परंतु इसमें संदेह नहीं कि उन दोनों के नाम पर जितने ग्रंथ दिए गए हैं वे वास्तव में एक ही रचयिता के हैं।

हरिराय के बहुत से ग्रंथ पिछले खोज विवरणों में भी उल्लिखित हैं, देखिये खोज विवरण (१९२९-३१, सं० ११८; १९२३-२५, सं० १६०; १९१७-१९, सं० ७४; १९०९-११, सं० ११५ आदि)। प्रस्तुत खोज में इनके निम्नलिखित सात ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं जो गद्य की रचनाओं की दृष्टि से हिंदी को इनकी अच्छी देन हैं:—

ग्रंथ	रचनाकाल	लिपिकाल
१—कृष्ण प्रेमामृत	×	×
२—पुष्टि दृढ़ाव की वार्ता	×	१८५९ ई०
३—पुष्टि प्रवाह मर्यादा	×	×
४—सेवा विधि	×	१८०७ ,,
५—वर्षोत्सव की भावना	×	×
६—वसंत होरी की भावना	×	१८५४ ,,
७—भाव भावना	×	×

८४ **हरिश्चंद्र**—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। इन्होंने याज्ञवल्क्य कृत मिताक्षरा की हिंदी में टीका की जिसकी प्रस्तुत प्रति सन् १८७१ की लिखी है।

८५ हरिवंश—ये 'रामचंद्र वनवास' और 'पांडव गीता' के रचयिता हैं जिनके इस बार विवरण लिए गए हैं। ये संभवतः खोज विवरण (१९२९-३१; सं० १२२; १९२६-२८, सं० १७४) में आए इस नाम के रचयिता से अभिन्न हैं।

८६ हरिव्यास देव—इनकी "महावानी" जिसके इस बार विवरण लिए गए हैं पिछले खोज विवरणों में आ चुकी है, देखिये खोज विवरण (१९२३-२५, सं० १६२; १९०६-८; सं० १२२, २२२)।

८७ हेमराज—ये एक जैन कवि थे जिनकी प्रस्तुत खोज में तीन छोटी छोटी रचनाएँ मिली हैं। इनके नाम निम्नलिखित हैं:—

१—आदिनाथ स्तोत्र, २—भक्तामर भाषा, ३—कर्मकांड। देखिए खोजविवरण (१९२३-२५, सं० १६४; १९००, सं० १०८)।

८८ हीरालाल—ये एक वैद्यक ग्रंथ के साथ पिछले खोज विवरणों में आ चुके हैं, देखिये खोज विवरण (१९२९-३१, सं० १२६; १९२३-२५, सं० १६६)। इस बार उक्त विषय पर लिखा गया इनका 'मदन सुधाकर' नामक ग्रंथ के विवरण लिए गए हैं।

८९ हृदयदास (स्वामी)—इन्होंने संवाद के रूप में दर्शन विषय संबंधी एक ग्रंथ 'धर्म संवाद' की रचना की जिसकी संवत् १९०८ वि० की लिखी एक प्रति के विवरण पहले पहल लिए गए हैं।

९० ईशकवि—इन्होंने सन् १८२२ ई० में "महामहोत्सव" नामक रचना की जिसमें वल्लभ संप्रदाय में मनाए जाने वाले उत्सवों का वर्णन है। जैसा ग्रंथ के प्रारंभ में मंगलाचरण के अंश से प्रकट होता है, ये वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

९१ ईश्वरदास—भगवद्गुणानुवाद विषयक ग्रंथ 'गुण हरिरास' के ये रचयिता हैं। ग्रंथ की दो प्रतियाँ पहले पहल मिली हैं जिनमें कोई समय नहीं दिया है। हो सकता है ये खोज विवरण (१९२६-२८, सं० १८५; १९२३-२५, सं० १७३) में उल्लिखित रचयिता हों पर ऐसा कहने के लिए कोई विशेष प्रमाण भी नहीं है।

९२ ईश्वरी प्रसाद बोहरे- ये खोजविवरण (१९२९-३१, सं० १३३; १९०६-८, सं० १७९) में आए इस नाम के रचयिता से भिन्न जान पड़ते हैं। इन्होंने सन् १८४८ ई० में संस्कृत के दो वैद्यक ग्रंथों—१—मदन पाल निघंटु और २—वैद्य जीवन के अनुवाद किये। धौलपुर (राज्य) के ये रहने वाले थे। खोज विवरण १९०९-११, सं १७६ में "निघंटु भाषा" को मदनपाल कृत लिखा है जो भ्रम उत्पन्न करता है। मदनपाल मूल संस्कृत ग्रंथ के रचयिता हैं न कि उसके अनुवादक।

९३ जगतानंद—ये एक छोटी सी रचना 'तिलशत' के जो बहुत महत्वपूर्ण है, वास्तविक रचयिता हैं। रचना में तिलकी प्रशंसा में लिखे गए शृंगारपूर्ण एक सौ दोहों का संग्रह है। भारत जीवन प्रेस, काशी, ने इसको मुबारक कृत एक दूसरे ग्रंथ के साथ

छापा है जिसमें इसका रचयिता भी मुबारिक को ही माना है। विनोद और संक्षिप्त विवरण में भी यह भूल की गई है। परंतु पं० मयाशंकर जी याज्ञिक ने 'माधुरी' में छपे अपने एक लेख में यह बतलाया है कि 'तिलशत' का रचयिता मुबारक न होकर जगतानंद है। यही बात प्रस्तुत प्रति से विदित होती है। देखिए विनोद सं० १८५।

९४ जगतराम जैन—इन्होंने अष्टछाप कवियों की शैली पर पदों की रचनाएँ कीं जिनका एक संग्रह प्रस्तुत खोज में प्रथम बार उपलब्ध हुआ है।

९५ जनलाल सोती—ये वर्ण के ब्राह्मण थे और सादाबाद (मथुरा) से थोड़ी दूर सीस्ता गाँव में रहते थे। इन्होंने गो० तुलसीदास के रामचरित मानस के बहुत पहले संवत् १५३७ वि० (१४८० ई०) में 'दशम स्कंध भागवत्' का हिंदी में पद्य-बद्ध अनुवाद किया था। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति १८३६ की लिखी हुई है और वह रचयिता के वंशजों के पास है जिनसे पता चला कि रचयिता पहले रुनुकता (गौघाट, आगरा के समीप जहां कुछ दिनों तक सूरदास जी रहे) में रहते थे जहाँ से पीछे वे सीस्ता चले गए। मैं समझता हूँ जनलाल सोती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'दशम स्कंध भागवत' का हिंदी में अनुवाद किया। खोजमें इनका पता प्रथम बार लगा है।

९६—जनराज वैश्य—ये नवोपलब्ध कवि हैं। इन्होंने श्रृंगाररस, अलंकार और हिंदी-काव्य विषयक एक बृहद्-ग्रंथ की रचना की। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सन् १८५२ ई० की लिखी है जिसमें इसका रचनाकाल संवत् १८३३ (१७७५ ई०) दिया है:—

अठारह से तेंतीस भये, सुभ संवत ज्येष्ठ सुमास वषानौ; सेत सुपक्ष तिथि दसमी असवार महावर भौम सुजानौ।

ये जयपुर के महाराज पृथ्वी सिंह के आश्रय में रहते थे। इनके वंशज पहले गढ़वारे में रहते थे जहाँ से वे जयपुर चले गए। अपना और अपने वंश का इन्होंने पूरा विवरण दिया है :—

करैसु जैपुर नग्र में प्रथी सिंघन राज, नितको प्रगट्यो जगत में अैसो तेज समाज। × × × अब मैं अपनो कुल कहौं, उपज्यो तिनमें आनि, अगरवाले वैस हैं सिंगल गोत बषान; गढ़वारे इक ग्राम में, वासी आदि सुजान, हिरानन्द तिनके भये कृपाराम सुखदान, दयाराम तिनके सुवन, आए जैपुर ग्राम; तिनके हौं मति मन्द भौ डेडराज मो नाम।

इनका वंशवृक्ष इस प्रकार है:—

हीरानंद (अग्रवाल वैश्य, सिंगल गोत्र गढ़वारा ग्राम निवासी) > कृपाराम > दयाराम (गढ़वारा ग्राम छोड़कर जयपुर आए) > डेडराज।

इनका वास्तविक नाम डेडराज था पर इनके गुरू ने, जो गलता में रहते थे, इसको बदलकर जनराज कर दिया :—

तब उन मोसों कही भोग कवित में देह; नाम धन्यो जनराज तब, श्री मुष से कर गेह।

इन्होंने जैपुर नगर, अपनी कवि-गोष्ठी, समकालीन कवियों और राजा द्वारा की गई अपनी काव्य-प्रशंसा का बड़ा मनोरंजक वर्णन किया है।

विशेष के लिये देखिए विवरण का अंश संख्या १।

९७ जावाहरलाल जैन—खोज में ये नवोपलब्ध हैं। इन्होंने 'समेदसिखर पूजा' नाम से एक रचना की जिसमें जैन धार्मिक पूजा के विषय का वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८९१ दिया है।

९८ जयकृष्ण—ये विष्णुस्वामी संप्रदाय के अनुयायी थे :—

श्री विष्णु स्वामी संप्रदाय गुरु, जिनकी वर पद्धति प्रगट जयकृष्ण पढत श्रवनन सुनत श्री कृष्ण भक्ति बाढ़त अघट।

इन्होंने 'दशम स्कंध भागवत' की अच्छी टीका की। ये किसी वल्लभ के वंश में किसी बालकृष्ण के वंशज थे :—

श्री वल्लभजू के वंश में वालकृष्ण करुण भवन; × × × वालकृष्ण के बंश में भए प्रगट सुखकारी।

गुरु का नाम पुरुषोत्तम था जिनकी इन्होंने वंदना की है:—

श्री कृष्ण भक्ति उर उदभवन सकल गुवन के धाम, बंदौ मन बच कर्म्म करि, श्री पुरुपोत्तम वर नाम। ये खोजमें नवोपलब्ध हैं। ये खोजविवरण (१९२३–२५, सं०१९) में उल्लिखित इस नाम के रचयिता नहीं विदित होते।

९९ ज्ञानानंद—इन्होंने 'दशमस्कंध भागवत' का हिंदी में पद्यबद्ध अनुवाद किया जिसकी सन् १८४८ की लिखी एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। अनुवादक सुप्रसिद्ध संत चरणदास के शिष्य थे:—

श्री सुक जी के सिष्य जो, चरनदास सष रास, जिनके त्यागी राम हैं, ज्ञानानंद तिन दास।

सुकदेव > चरणदास > त्यागी राम > ज्ञानानंद।

१०० ज्ञानी जी या जसवंत—ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये कबीर के अनुयायी थे, देखिये खोजविवरण (१९२६–२८, सं० २१०)। इन्होंने साखियों की रचना की जिनमें धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों का वर्णन है। इनकी साखियों की दो प्रतियों में किसी जसवंत का भी नामोल्लेख है जो या तो साखियों के संग्रहकार हैं अथवा इन्हीं का दूसरा नाम है। जो कुछ हो, परंतु इसमें संदेह नहीं कि प्रस्तुत 'साखियों' के रचयिता यही ज्ञानी हैं। 'ज्ञानपति' भी इन्हीं की रचना है जो इसबार खोज में मिली है। इनके नाम पर मिली सबसे पुरानी रचना की प्रति सं० १७९७ वि० (१७४० ई०) की लिखी हुई है। जसवंत यदि इनसे भिन्न हैं तो अब तक खोज में मिले उस नाम के रचयिताओं से वे अभिन्न नहीं जान पड़ते।

१०१ जुगलकिशोर—ये खोजविवरण (१९०६–८, सं० २७५ में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से भिन्न हैं। इन्होंने दोहों में राधाकृष्ण की भक्ति विषयक एक साधारणसी रचना की जिसकी संवत् १९०९ की लिखी एक प्रति प्रस्तुत खोज में मिली है।

१०२ ज्वालानाथ—इन्होंने नाभाजी के भक्तमाल की गद्य में टीका लिखी है। भक्तमाल पर की गई यह सर्व प्रथम गद्य टीका है जो केवल प्रस्तुत खोज में मिली है। रचयिता का समय अज्ञात है।

१०३ कबीर—इनका उल्लेख पिछले सब खोजविवरणों में हुआ है, देखिए खोजविवरण (१९२६–२८, सं० २१४; १९२९–३१, सं० ४९; १९२३–२५, सं० १९८, १९१७–१९, सं० ९२ और विवरण पृष्ठ १८, १९)। प्रस्तुत खोज में इनके नाम पर २१ रचनाओं की ३१ प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। यह कहना कठिन है कि इनमेंसे कितनी रचनाएँ पहले आचुकी हैं, क्योंकि इन रचनाओं के नाम हरबार परिवर्तित रूप में मिलते हैं जहाँ कि उनके विषय और पाठ-क्रम एक ही रहते हैं। सबसे पुराना हस्तलेख 'नसीहत नामा' का है जो सन् १६७२ का लिखा हुआ है। 'कबीर की साखी' और स्वरोदय की प्रतियाँ क्रमशः सन् १७४० और १८५१ की लिखी हैं। एक विशेष बात यह है कि इस खोजमें कबीर साहित्य के दो संग्रहों का पता चला है जो प्राचीन बतलाए जाते हैं। इनमें से एक श्री रामचंद्र सैनी, आगरा के पास है और दूसरा मेवती (जिला आगरा) में स्थित मठ में। यह नहीं कहा जा सकता कि प्रस्तुत ग्रंथों में कबीर की वास्तविक रचनाएँ कितनी हैं और अन्य लोगों की रची हुई कितनी। नीचे ग्रंथों के नाम दिए जाते हैं:—

	ग्रंथ	प्रतियों की संख्या	रचनाकाल	लिपिकाल
१	अजब उपदेश	×	×	×
२	अखरावट	२	×	×
३	बारहमासी	२	×	×
४	ब्रह्मज्ञान की गुदरी	×	×	×
५	चेतावनी	३	×	×
६	दोहावली	×	×	×
७	जंजीर	×	×	×
८	ज्ञान बतीसी	×	×	×
९	ज्ञानतिलक	×	×	×
१०	कबीर बारी	×	×	×
११	कबीर के पद	×	×	×
१२	कबीर की साखी	×	×	१७४० ई०
१३	कबीर स्वरोदय	२	×	१८५१ ई०
१४	मंत्र	×	×	×
१५	नसीहतनामा	×	×	१६७२ ई०
१६	रामरक्षा	×	×	×
१७	रामसागर	×	×	×
१८	शब्द	४	×	×
१९	साखी कबीर	२	×	×

१०४ कालू—इनका पता प्रथम बार लगा है। इन्होंने रहस्यवाद विषयक उत्तम दोहों की रचनाएँ कीं जिनके एक संग्रह का मेवली (जिला आगरा) स्थित कबीर पंथी मठमें विवरण लिए गए हैं। संग्रह का समय एवं लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं। रचयिता का

कोई वृत्त उपलब्ध नहीं। कोंड़े, कमसल, गिबड़, खाबड़ जैसे शब्दों के प्रयोगों द्वारा ये बुंदेलखंडी जान पड़ते हैं। ये संभवतः उन संतो की श्रेणी में थे जिनकी विचारधारा और विवेचन-शैली कबीर का अनुगमन करती हैं।

१८५ कमाल—ये कबीर के पुत्र थे। निम्न लिखित दोहा इस संबंध में प्रसिद्ध है:—'बूड़ा बंस कबीर का उपजा पूत कमाल।' अबतक इनके नामसे कोई रचना नहीं मिली थी, परंतु आगरे की प्रस्तुत खोजमें इनकी कविताओं का जिनमें स्पष्ट रूप से इनका नामोल्लेख पाया जाता है एक महत्वपूर्ण हस्तलेख प्राप्त हुआ है:—

इन पाँचन मिलि करी ठगोरी, ताही माँझ समाना; कहै कमाल मेरी गई ठगोरी जब मैं ठग पहिचाना। × × × गंगा जमण के अन्तरे निर्मल जल पाणी, कबीर को पूत कमाल है जिन यह'गत जाणी।

इनकी कविता सुंदर और प्रभावोत्पादक है। इनका सन् १५०७ ई० के लगभग वर्तमान होना कहा जाता है।

१०६ कन्हैयालाल जी (लाल)—इन्होंने 'वैद्यसुधासागर' नामक एक बृहद् ग्रंथ का संकलन किया जिसमें, रोग परीक्षा, ओषधियों और रोगोपचारों का वर्णन है। यह एक तरह से आयुर्वेद विषय का विश्वकोप है। रचयिता जाति के अग्रवाल वैश्य थे और साउपुर (मैनपुरी) के निवासी थे। खोजमें ये नवोपलब्ध हैं।

१०७ कन्हर कवि या 'कान्ह'—कन्हर कवि और कान्ह एक ही विदित होते हैं, देखिए खोजविवरण (१९२६–२८, सं० १५४; १९०३, सं० ९०; १९०६–८, सं० २७७)। इन्होंने 'रस रंग' की रचना की जो नायिका भेद विषयक ग्रंथ है। रचनाकाल संवत् १८०२ वि० (१७४५ ई०) है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति जिसमें इनका 'नखशिख' भी लिपिबद्ध है १८४१ की लिखी हुई है।

१०८ काशीगिरि—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। पिछली खोज में मिले इस नाम के रचयिता से ये भिन्न हैं, देखिए खोज विवरण (१९२६–२८, सं० २२७; १९२९–३१, सं० १५८)। ये संवत् १७९१ वि० (१७३४ ई०) के लगभग वर्तमान थे और इन्होंने भगवद्गीता का अनुवाद किया जिसकी सन् १७३४ ई० की लिखी प्रति मिली है। अनुवादक के विषय में कुछ अस्पष्टता लक्षित होती है पर सूक्ष्म अध्ययन और परीक्षण से यही पता चलता है कि काशिगिरि ही अनुवादक है:—

काशी गिरि भाषा करी, गुरु प्रसाद से तारि।

किसी गंगाधर ने एक तुलाराम के लिए प्रस्तुत प्रतिलिपि की थी:—

गीतापाठ पुनीत है, लिखिवौ करी कुरखेत; गंगाधर यह प्रति लिखी, तुलराम के हेत।

रचयिता के गुरु का नाम हरिदास विदित होता है जिनकी आशीष की इन्होंने इच्छा प्रकट की है:—

भगवत गीता जो कोऊ पढ़े सुने चित लाय; पावें भगत असीष सो; श्री हरिदास सहाय।

१०६ काशीनाथ—ये 'भृतहरि चरित्र' (भर्तृहरि चरित्र) के रचयिता हैं। ग्रंथ पहले भी मिल चुका है, देखिए खोज विवरण (१९२९-३१, सं० १५९; १९२६—२८, सं० २२९) । ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं।

११० काशीराम—ये खोज विवरण १९०३, सं ७ में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से भिन्न हैं। इनकी प्रस्तुत रचना 'लग्न सुंदरी' के अनुसार—जिसकी १९७१ वि० की लिखी प्रति के विवरण लिए गए हैं—ये संवत् १६७० वि० के लगभग वर्तमान थे। इन्होंने 'जैमिनी सूत्रों' का भी संस्कृत से हिंदी में अनुवाद किया जिसकी एक प्रति का प्रस्तुत खोज में विवरण लिया गया है।

१११ कटारमल्ल—इन्होंने आयुर्वेद-ओषधियों विषयक संस्कृत ग्रंथ 'हारीत निघंटु' का अनुवाद किया। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल और लिपिकाल ही दिये हैं और न इसके द्वारा रचयिता के विषय में ही कुछ पता चलता है।

११२ केशवदास—इन्होंने कबीर की शैली पर 'साखियों' की रचना की जिनके एक संग्रह का प्रस्तुत खोज में प्रथमबार पता चला है। इस नाम के कवि पहले भी मिले हैं, देखिये खोजविवरण (१९२९-३१, सं० १६३; १९२६-२८, सं० २३१, २३२, २३३)। परंतु प्रस्तुत रचयिता इनमें से कोई नहीं जान पड़ता। ये ओड़छा के प्रसिद्ध कवि केशवदास से भिन्न हैं और संभव है यारी साहब के शिष्य केशवदास से अभिन्न हों।

११३ केशवदास—ये ओड़छा के सुप्रसिद्ध महाकवि थे जिन्होंने हिंदी में काव्य, रस, नायिकाभेद और अलंकारों पर उच्च कोटि की रचनाएँ कीं। संक्षिप्त विवरण पृष्ठ ३० पर 'जहाँगीर चंद्रिका' नामक ग्रंथ के रचयिता इनसे भिन्न एक दूसरे केशव मिश्र माने गए हैं जिन्होंने इस ग्रंथ की रचना सं० १६६९ वि० में की। परंतु यह नितांत अशुद्ध है। प्रस्तुत खोज में मिली इस ग्रंथ की सन् १७२९ ई० की लिखी प्रति से वस्तु स्थिति स्पष्ट हो जाती है। इस ग्रंथ की रचना खान खाना एलिच बहादुर के आदेश से हुई थी और ऐतिहासिक दृष्टि से यह बड़ा महत्व का है। इसमें १४ से अधिक समसामयिक राजाओं और राज्यों का उल्लेख है। 'रामचंद्रिका' के अनेक छंद भी इसमें दिए हुए हैं जो प्रस्तुत महाकवि के इसके रचयिता होने के प्रमाण हैं। इसका रचनाकाल भी वही है जो प्रस्तुत कवि का समय है।

११४ केवलराम—इन्होंने राधा कृष्ण के प्रेम कलह विषयक पदों की रचनाएँ कीं जिनका एक संग्रह प्रस्तुत खोज में मिला है। इसमें कोई समय नहीं दिया है। ये मिश्र बंधु विनोद में संख्या १३८०।१ और ५३३।२ पर उल्लिखित कवि जान पड़ते हैं।

११५ खंगदास—ये खोजविवरण (१९२३-२५, सं० २०८ और विनोद सं० १२३७.१ और ६२५।१) में उल्लिखित इस नाम के कवि से भिन्न हैं। इन्होंने कुछ शब्दों और मंत्रों की रचनाएँ कीं जिनमें कबीर और उसके अनुयायियों का अनुकरण किया गया है। इन रचनाओं की तीन प्रतियों के इस खोज में प्रथमबार विवरण लिए गए हैं। रचयिता, जैसा इनकी कविता से पता चलता है, कबीरपंथी विदित होते हैं।

११६ खर्ग कवि—इन्होंने 'दशम स्कंध भागवत' की रचना की जिसकी इसबार एक प्रति मिली है। प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। रचयिता का भी कोई वृत्त उपलब्ध नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

११७ खेम—ये दादू पंथी एक साधु विदित होते हैं। इनका 'सुक संवाद' ग्रंथ का उल्लेख पिछले खोज विवरणों में हो चुका है, देखिए खोज विवरण (१९०१, सं० १३४; १९०२, सं० ९४; १९२३–२५ सं० २०९)। इस बार इनकी साखियों के एक महत्वपूर्ण संग्रह का 'ज्ञानोपदेश' नाम से विवरण लिया गया है।

११८ खुस्यालजन—खोज में इनका पता प्रथम बार चला है। ये जाति के कायस्थ और भलोर्यापुर (आगरा जिला) के रहनेवाले थे। कानूनगो के पद पर ये काम करते थे और बागवानी के प्रति रुचि रखते थे। इन्होंने संवत् १८९२ वि० (१८३५ ई०) में 'विपिन विनोद' नामक मूल संस्कृत ग्रंथ का हिंदी में पद्यानुवाद किया। विषय की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। इसकी प्रस्तुत प्रति सन् १८७५ ई० की लिखी है। विशेष के लिए देखिए विवरण का अंश संख्या २।

११९ किशन सिंह—ये सांगानेर के रहनेवाले जैन कवि थे। इन्होंने संवत् १७८४ (१७२७ ई०) में 'क्रिया कोश' नामक एक जैन धर्म विषयक ग्रंथ की टीका की। प्रस्तुत खोज में इसकी चार प्रतियों के प्रथमबार विवरण लिए गए हैं।

१२० किशोरी अली—इनकी 'सार चंद्रिका' नामक रचना का उल्लेख खोज-विवरण १९०९–११, सं० १५१ में हो चुका है। प्रस्तुत खोज में इनके चार निम्नलिखित ग्रंथों का पता और लगा है:—

रचना	रचनाकाल
१—भागवत महिमा	१७८० ई०
२—भक्ति महिमा	१७८१ ,,
३—सार चंद्रिका	१७८० ,,
४—सतसंग महिमा	१७८१ ,,

लिपिकाल केवल अंतिम ग्रंथ की प्रति में दिया है जो सन् १७८२ ई० है। संख्या ३ को छोड़ शेष ग्रंथ इसी खोज में मिले हैं।

रचयिता निंबार्क संप्रदाय के वैष्णव थे और संवत् १८३७ (१७८० ई०) के लगभग वर्तमान थे।

१२१ किशोरीदास—प्रस्तुत खोज में इनके पदों का एक बड़ा संग्रह मिला है जिसके विवरण लिए गए हैं। काव्य की दृष्टि से ये पद उत्तम हैं। रचयिता खोज विवरण (१९००, सं० ५९; १९०९–११, सं० १५२) में उल्लिखित हैं। ये राधावल्लभ संप्रदाय के वैष्णव थे।

१२२ कृष्णदास—ये राधा वल्लभी संप्रदाय के वैष्णव थे और इन्होंने 'सेवक की बानी' की रचना की जिसके प्रस्तुत खोज में प्रथम बार विवरण लिये गए है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं।

१२३ कृष्णदास गिरधर—ये इस नाम के सभी रचयिताओं से भिन्न प्रतीत होते हैं। इनकी रची 'रुक्मिणी ब्याहलो' की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं जिसमें लिपिकाल संवत् १६९२ वि० दिया है।

१२४ कृष्ण जू मिश्र—इनकी ज्योतिष विषयक दो छोटी छोटी रचनाएँ 'जोगिनी विचार' और 'प्रश्न विचार' नाम से मिली हैं जो एक ही रचना के अंश जान पड़ते हैं। इनमें से एक में लिपिकाल सं० १८४४ वि० दिया है।

१२५ कृष्णानंद—इन्होंने भारतीय संगीत पर एक महत्वपूर्ण रचना की। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में न तो कोई समय ही दिया है और न उसमें रचयिता का ही वृत्त मिलता है। संभवतः ये खोजविवरण १९०९–११, सं० ३४ में उल्लिखित रचयिता हैं।

१२६ कृष्णसिंह—इन्होंने आध्यात्मिक विषयक रचना 'आनंद लहरी' की रचना की जिसकी प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल संवत् १७९४ वि० दिया है। ये खोज विवरण १९००, सं ६२ में आए इस नाम के रचयिता से—जिन्होंने कर्नल टाड को रासो पढ़ाया था—भिन्न हैं। संभवतः ये खोज विवरण (१९२३–२५ सं० २२४) में उल्लिखित रचयिता हैं यद्यपि इस संबंध में भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

१२७ कुलपति मिश्र—ये आगरे के प्रसिद्ध कवि थे और संवत् १७२७ वि० के लगभग वर्तमान थे। इन्होंने अनेक रचनाएँ कीं। प्रस्तुत खोज में इनकी दो रचनाओं—'संग्राम सार' और 'द्रोण पर्व' की क्रमशः सन् १७८५ ई० और १८६९ ई० की लिखी हुई प्रतियाँ मिली हैं जिनके विवरण लिए गए हैं। 'द्रोणपर्व' की रचना संवत् १७३३ वि० (१६८६ ई०) में हुई, देखिये खोजविवरण (१९२३–२५, सं २२८; १६२६–२८, सं० २५०)।

१२८ कुंभनदास—ये अष्टछाप के कवियों में से हैं। प्रस्तुत खोज में इनके पदों के एक महत्वपूर्ण संग्रह के विवरण लिए गए हैं जिसमें इनके निवास स्थान और वंशजों का उल्लेख किया गया है। ये गोवर्द्धन और पारसौली (मथुरा) के समीप जमना मतो नामक स्थान के निवासी थे जहाँ खोज अन्वेषक ने जाकर इनके संबंध में महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त कीं। इनके वंशज अभी भी वहाँ रहते हैं। यद्यपि ये जाति के क्षत्रिय हैं परंतु अपने इस प्रसिद्ध पुरखे के कारण इनका वही सम्मान होता है जैसा ब्राह्मणों का।

१२९ लक्ष्मण—ये फतहपुर सिकरी (आगरा) के रहनेवाले थे और इन्होंने कई छोटे छोटे ग्रंथों की रचनाएँ कीं जिनमें ग्राम्यगीतों का संग्रह है, देखिए खोज विवरण (१९२९–३१, सं १८१; १९२६–२८, सं० २५५)। इस बार इनकी 'नरसीलो' नामक एक छोटी सी रचना मिली है।

१३० लक्ष्मीदास जैन—ये सांगानेर के निवासी थे और खोज में इनका पता अबतक न चला था। इन्होंने दो संस्कृत जैन रचनाओं (१) यशोधर राजा का चरित्र और (२) श्रेणिक चरित्र का हिंदी में अनुवाद किया। मूल संस्कृत ग्रंथों के रचयिता क्रमशः भट्टारक देवेंद्र और शुभ चंद्राचार्य थे। इनमें उन राजाओं की कथाएँ दी हुई हैं जो जैन धर्म में दीक्षित होकर विशुद्ध धार्मिक जीवन बितानेवाले हुए। 'यशोधर चरित्र' का रचनाकाल संवत् १७८१ वि० (१७२४ ई०) है और दूसरे ग्रंथ का संवत् १७३३ वि० (१६७६ ई०)। इनकी प्रस्तुत प्रतियों का लिपिकाल क्रमशः सं० १८२५ वि० और और १९१९ वि० है। रचयिता उत्तम कवि विदित होते हैं।

१३१ लालचंद या लब्धोदय—ये एक जैन कवि थे जो मेवाड़ के राजा जगतसिंह (राज्यकाल सं० १६८५–१७०६ वि०) के आश्रय में रहते थे। प्रस्तुत खोज में सं० १७०७ वि० की रची इनकी 'पद्मिनी चरित्र' नामक रचना के विवरण लिए गए हैं। कुछ थोड़े से परिवर्तनों को छोड़कर प्रस्तुत ग्रंथ की कथा जायसी कृत 'पद्मावत' की कथा से मिलती जुलती है। अन्वेषक ने प्राप्त हस्त लेख में रचयिता का नाम लक्ष्योदय पढ़ा, पर श्रीयुत अगरचंद नाहटा ने मुझे सूचित किया है कि रचयिता का नाम 'लब्धोदय' है। इसका दूसरा नाम लालचंद भी है, परंतु ये लालचंद 'लीलावती चौपई' और 'राजुल पच्चीसी' के रचयिताओं से भिन्न हैं।

१३२ लालचंद विनोदी जैन—ये पिछले खोज विवरण (१९१७–१९, सं १०६ १९२६–२८, सं० २६०) में आ चुके हैं जिनमें इनके ग्रंथों का उल्लेख हुआ है। इस बार इनके दो और ग्रंथों—'राजुल पच्चीसी' और 'रत्नमाला' के विवरण लिए गए हैं। 'रत्नमाला' संवत् १८१८ वि० में रची गई।

१३३ लालदास—ये 'इतिहास 'समुच्चय' नामक ग्रंथ के रचयिता हैं जिसका उल्लेख खोज विवरण (१९२६–२८, सं० २६३; १९०१ और १९०२) में हो चुका है। ये आगरा के रहनेवाले थे और लगभग संवत् १६४३ वि० में वर्तमान थे। ये या तो किसी उधोदास के पुत्र अथवा शिष्य थे। कोई तुरसीदास इनके शिष्य थे जिसने इनके प्रस्तुत ग्रंथ की इनके जीवनकाल संवत् १७४५ वि० (१६८८ ई०) में नकल की। अतः इस दृष्टि से इसकी प्रस्तुत प्रति महत्वपूर्ण है।

१३४ ललित किशोरी शाह—ये संवत् १९२५ वि० के लगभग वृंदावन में रहते थे और सुप्रसिद्ध भक्त कवि थे। गो० राधागोविंद के शिष्य थे और इन्होंने राधाकृष्ण के प्रेम विषयक बहुत से पदों की रचनाएँ कीं, देखिए (विनोद सं १८२१ और १८२२ इनमें इनका विस्तृत विवरण दिया हुआ है)। इनके पास धन की प्रचुरता थी अतः इन्होंने 'शाहजी का मंदिर' बनवाया जो वृंदावन के श्रेष्ठ मंदिरों में गिना जाता है। प्रस्तुत खोज में इनके पदों के चार संग्रह मिले हैं जिनमेंसे किसी में भी संग्रहकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं, देखिये खोज विवरण (१९२९-३१, सं० १८८)।

१३५ लेखराज सिंह ठाकुर—खोज विवरण (१९२६–२८, सं० २६८) में ये अपने एक ग्रंथ के साथ उल्लिखित हैं जिसमें विविध महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन है। इस

बार इनका 'अमृत सागर' नाम से एक ग्रंथ के विवरण लिए गए हैं। यह आयुर्वेद विषयक एक वृहद् रचना है जिसमें काय और शल्य दोनों चिकित्साओं का वर्णन किया गया है।

१३६ माधोदास—ये खोज विवरण १९००, सं ३२ में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से अभिन्न हैं। इस बार भक्ति विषय पर रचे गए इनके कुछ पदों का एक संग्रह मिला है जिसमें २९ अन्य कवियों और भक्तों के भी पद हैं।

१३७ माधुरीदास—ये विशिष्ट कवियों में से हैं। इनकी बहुत सी छोटी-छोटी रचनाएँ पिछली खोज में मिल चुकी है, देखिए खोजविवरण (१९०२, सं० १०४; १९०६ ८, सं० १६३; १९०९–११ सं० १८०)। अबतक इनके संबंध में कुछ पता नहीं था; परंतु प्रस्तुत खोज में मिले इनकी छोटी २ छः रचनाओं के एक संग्रह के अनुसार ये गौड़ीय संप्रदाय के प्रसिद्ध अनुयायी श्री रूप गोस्वामी के, जो चैतन्य महाप्रभु के संपर्क में रहते थे शिष्य थे। संग्रह की पुष्पिका इस प्रकार है:—

'श्री मन्माध्व मत मार्तण्ड कलियुग पावनावतार श्री श्री भगवत् कृष्ण चैतन्य चरणानुचर श्री रूप गोस्वामी शिष्य माधुरीदास कृत माधुरी सम्पूर्ण'।

रचयिता माधुरी कुंड (मथुरा, जिला) में रहते थे जहाँ इनकी कुटी के भग्नावशेष अभी तक दिखाई देते हैं। स्थान का नामकरण इन्हीं के नाम पर हुआ है। ये सन् १६३० ई० के लगभग वर्तमान थे।

१३८ मलूकदास—पिछले कतिपय खोज विवरणों में इनका उल्लेख हो गया है, देखिए खोज विवरण (१९२६–२८, सं० २९७; १९१७–१९; सं० १०९; १९०४, सं ८० १९०९–११, सं० १८५ ए)।

इस बार इनके नाम पर मिले निम्नलिखित ग्रंथों के चार हस्तलेखों के विवरण लिए गए हैं:—

ग्रंथ		प्रतियाँ
१—विष्णु सत्यनाम		१
२—मलूक जस	एक ही हैं	१
२—भक्त बच्छल		२

प्रथम रचना नवीन जान पड़ती है।

१३९ मानकदास—'कवित्त प्रबंध' नामक दार्शनिक ग्रंथ (गद्य टीका युक्त) के साथ ये खोजविवरण (१९०१, सं० १३२) में उल्लिखित हैं। इस बार इनका इसी विषय से संबंधित एक अन्य ग्रंथ, 'संतोष सुरतरु' नाम से मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति सं० १९१६ वि० (१८५९ ई०) की लिखी है।

१४० मानकवि—इनके कुछ ग्रंथ पिछले खोज विवरणों में आ चुके हैं, देखिए खोजविवरण (१९२०–२२, सं० १००; १९०६–८, सं० ७०; १९०५, सं० ८६)। प्रस्तुत खोज में इनके निम्नलिखित चार ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं जिनमें 'नख शिख'

का पता पहली बार लगा है। इनकी प्रस्तुत प्रति में कोई समय नहीं दिया है:—१—लक्ष्मण चरित्र, २—नरसिंह चरित्र, ३—नखशिख, ४—हनुमान पचासा।

१४१ मंगीलाल—इनकी जिकरियों (एक प्रकार के ग्राम्यगीतों) का एक संग्रह प्रस्तुत खोज में पहली बार मिला है जिसके विवरण लिए गए हैं।

१४२ मानिक कवि—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। इन्होंने ही गढ़ग्वालीय के एक बनिए सिंघई खेमल के कहने पर संवत् १५४६ वि० (१४८९ ई०) में संस्कृत ग्रंथ 'बैताल पच्चीसी' का सर्वप्रथम पद्यबद्ध अनुवाद किया। गढ़ग्वालीय, अब का ग्वालियर विदित होता है जहाँ उस समय राजा मानसिंह राज्य करता था। रचयिता तुलसी के पहले के हैं इसलिए महत्वपूर्ण हैं। ये अयोध्या के एक कायस्थ थे। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति संवत् १७६३ वि० (१७०६ ई०) की लिखी हुई है। विशेष के लिए देखिए विवरण का अंश सं० ३।

१४३ मस्तराम—ये 'रामाश्वमेध' के रचयिता हैं जिसकी प्रस्तुत खोज में दो प्रतियाँ, जिनमें कोई समय नहीं दिया है, प्राप्त हुई हैं। अपने को ये गोस्वामी तुलसीदास का शिष्य बतलाते हैं जिनके आदेश से इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की :—

"तुलसी गुरु विमल कर, आग्या सिष्यहिं दीन।
मस्तराम अस नाम तिहि यथा बुद्धि समकीन।
तुलसीदास कर प्रेरेऊ, ताते कहा बुझाय।
भूल चूक सज्जन सकल, सोधि लेहु मिटाय।"

इन्होंने ग्रंथ में रामचरित मानस की बहुतसी चौपाइयाँ भी उद्धृत की हैं जिनके संबंध में ये स्वयं इस प्रकार कहते हैं:—

"राम सिया पद नाय सिर, कहूँ चरित समझाय,
तुलसीदास के कवित सुभ तिनमें दियो मिलाय।"

इनका उल्लेख पिछले किसी खोजविवरण में नहीं हुआ है तथा साहित्य के किसी इतिहास ग्रंथ में भी इनका नाम नहीं मिलता।

१४४ मयाराम—ये निंबार्क संप्रदाय के एक वैष्णव थे। 'हरिचरचा विलास' नाम से इनके एक ग्रंथ के विवरण लिए गए हैं जिसमें भगवान के कुछ अवतारों की कुछ कथाएँ दी गई हैं और साथ ही साथ निंबार्क संप्रदाय, उसके अनुयायी एवं उसकी प्रसिद्ध गद्दियों के विषय में भी उल्लेख किया गया है। इसी प्रसंग में कुछ मुसलमानी बादशाहों के वैष्णवों पर किए गए अत्याचारों का भी वर्णन है, जिनको, ऐसा विदित होता है इन्होंने स्वयं अपने आँखों से देखा था।

१४५ मीराबाई—ये सुप्रसिद्ध कवयित्री सन् १५७३ ई० के लगभग वर्तमान थीं। इनके रचे पदों से इनकी उत्कृष्ट भगवद्भक्ति का पता चलता है। प्रस्तुत खोज में इनके पदों का एक संग्रह मिला है जो सन् १८३१ ई० में लिखा गया था, देखिए खोजविवरण (१९२६-२८, सं० ३०३)। इसमें कुछ पद ऐसे हैं जो अभी तक अप्राप्त थे। सुविधा के लिए विवरण पत्र में पदों की अनुक्रमणिका दे दी गई है।

१४६ मोतीराम—खोजविवरण (१९१७-१९, सं० ११४) में इनके 'बृजेंद्र विनोद' का उल्लेख हो चुका है। ये भरतपुर के महाराजा बलवंत सिंह के आश्रित कवि थे। संवत् १९२७ से १९५७ वि० तक उनके दरबार में थे। इस बार इनके फुटकर कवित्तों के एक संग्रह का विवरण लिया गया है जिसमें अन्य प्राचीन कवियों की भी कविताएँ संगृहीत हैं। इन्होंने महाराजा बलवंत सिंह, जसवंत सिंह और जवाहर सिंह की प्रशंसा की है।

१४७ मुरलीधर—इनकी रचना 'बरसाना वर्णन' के विवरण लिए गए हैं। ये पिछले खोजविवरणों (१९२३–२५, सं० २८८ और १९२९–३१, सं० २३० में आए इस नामके रचयिताओं में से कोई नहीं हैं। बरसाना (मथुरा, जिला) के ये निवासी थे जो राधा का जन्मस्थल माना जाता है एवं जिसका इन्होंने प्रस्तुत रचना में उल्लेख किया है।

१४८ मुरलीधर मिश्र—ये मथुरा के रहनेवाले बहुत से ग्रंथों के प्रणेता विदित होते हैं। इनकी नवीन रचना 'रामचरित' मिली है। पिछले खोजविवरण (१९२९-३१, सं० २३० और १९२३-२५, सं० २८८) में इनका उल्लेख हो चुका है। ये सन् १७६१ ई० के लगभग वर्तमान थे। प्रस्तुत ग्रंथ में इन्होंने अपनी माथुर जाति का विशद वर्णन किया है जिसके अनुसार रामकृष्ण, अकबर बादशाह और राणाओं ने इनका बड़ा संमान किया था।

१४९ नागरीदास (सुप्रसिद्ध महाराजा सावंत सिंह)—इनका उल्लेख पिछले खोजविवरणों में हो चुका है, देखिए खोजविवरण (१९०१, सं० ११२ से १२९; १९२६-२८, सं० ३१३)। इस बार इनकी वर्तमान रचना बानी की तीन प्रतियों के विवरण लिए गए हैं जिनके अनुसार ये बरसाना के पास 'मोरकुटी' में रहते थे जिसको इन्होंने स्वयं अपने लिए बनवाया था और जो अभीतक वर्तमान है।

१५० नल्हूकवि—इन्होंने 'उरगानों' नाम से एक रचना की जिसमें प्रेमी दंपति के संवाद के रूप में श्रृंगार विषय का वर्णन किया गया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सं० १७७२ वि० की लिखी है। ये संभवतः 'बीसलदेवरासो' के रचयिता नरपति नाल्ह विदित होते हैं। प्रस्तुत ग्रंथ की भाव, भाषा, और शैली से भी इसकी पुष्टि होती है।

१५१ नानक—प्रस्तुत खोज में सिख धर्म के प्रवर्त्तक गुरु नानक के दोहों का एक संग्रह 'गुरुनानक वचन' नाम से मिला है जिसके विवरण लिए गए हैं। गुरुनानक का उल्लेख पिछले कई खोजविवरणोंमें हुआ है; देखिए खोजविवरण (१९०२, सं० २१८; १९०६–८, सं० १६९; १९०९–११, सं० २०५ और २०७; १९२३–२५, सं० २९३; १९२६–२८, सं०३१५; १९२९–३१, सं० २३६)।

१५२ नंददास—इनकी मंजरी नामक कुछ रचनाएँ पिछली खोज में मिल चुकी हैं, देखिए खोजविवरण (१९२६–२८, सं० ३१६; १९२३–२५, और १९१७–२०)। इसबार निम्नलिखित रचनाएँ और मिली हैं जिनके विवरण लिए गए हैं:—

१—नंदग्रंथावली (इसमें कवि के चार ग्रंथ हैं)।
२—नंदग्रंथावली (इसमें कविके ३ ग्रंथ हैं)।

३—पदों की बानी (पद संग्रह) ।
४—सनेह लीला ।

१५३ नरहरिदास—प्रस्तुत खोज में इनके दो ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं जिनमें से 'वशिष्ठ संहिता', जो मूल संस्कृत ग्रंथ से अनुवादित हुई है, नवीन प्राप्ति है। इसकी शैली से पता चलता है कि ये जोधपुर के नरहरिदास हैं। इनका दूसरा ग्रंथ 'अवतार चरित्र है' जिसकी रचना इन्होंने सं० १७३३ में की। इसकी प्रस्तुत प्रति सं० १७६६ वि० की लिखी है। देखिए खोजविवरण (१९०२, सं० ४८, ५०, ८८; १९०९-११, सं० २१०)।

१५४ नारायण प्रसाद—ये 'कान्यकुब्ज वंशावली' के रचयिता हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल नहीं दिया है। विनोद सं० २५३६ में इनके और भी ग्रंथों का उल्लेख है। प्रस्तुत ग्रंथ में, जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की वंशावली नहीं दी है वरन् शास्त्र विहित उन धार्मिक बातों का उल्लेख है जिनका उक्त ब्राह्मणों को पालन करना चाहिए। पुस्तक में प्रचुर मात्रा में शास्त्रों के उद्धरण दिए गए हैं।

१५५ नरोत्तमदास—ये गौड़ीय संप्रदाय के वैष्णव थे। 'नाम संकीर्तन' नामक इनकी रचना प्रथम बार मिली है। इसमें कृष्णचैतन्य की प्रार्थना के पश्चात् भगवान के अवतारों एवं उसके कुछ भक्तों का नामोल्लेख है। इससे रचयिता के संबंध में ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता है कि ये सुदामा चरित्र के प्रसिद्ध रचयिता नरोत्तमदास हैं या नहीं।

१५६ नजीर—(अकबरावादी) ये ख्यातिलब्ध मुसलमान कवि थे। इनके दोहों का एक संग्रह मिला है जिसके विवरण लिए गए हैं। संग्रह की प्रस्तुत प्रति सं० १९०६ की लिखी है।

१५७ नेतिदास—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। इनकी 'ब्रह्म विध्वंश मन रंजन' नामक रचना के विवरण लिए गए हैं जिसमें अध्यात्म के साथ साथ अन्य विषयों का भी वर्णन है। ये कबीर के अनुयायी थे और गिगला (मथुरा) में रहते थे। इनके वंशज अभी भी उक्त स्थान में रहते हैं जिनके पास इनका प्रस्तुत ग्रंथ विद्यमान है। अन्य वृत्त इनका अनुपलब्ध है।

१५८ नितानंद—इनके पदों का एक संग्रह पहले-पहल मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति सन् १८४७ ई० में लिखी गई थी। पदों का विषय निर्गुण सिद्धांत और भक्ति का प्रतिपादन करना है। रचयिता संभवतः खोज विवरण (१९०५, सं० ४१) में उल्लिखित नितानंद हैं जो चरणदास की परंपरा में थे।

१५९ पद्मनाभ—इनके पदों का एक संग्रह प्रस्तुत खोज में पहली बार मिला है। ये विनोद संख्या १५७ पर उल्लिखित कवि विदित होते हैं जिसमें इनका समय संवत् १६३२ दिया है। क्योंकि इनके पदों में वल्लभाचार्य जी के अनुयायी और उनके संप्रदाय की जहाँ तहाँ प्रशंसा की गई है, अतः विदित होता है कि ये इस संप्रदाय के मानने वाले थे। इनकी पदों की भाषा में गुजराती का भी मिश्रण है।

१६० पन्नालाल—ये आगरा के रहने वाले थे। इनके ग्राम्य गीतों का एक संग्रह प्रस्तुत खोज में प्रथम बार मिला है। समय इनका अज्ञात है।

१६१ पन्नालाल वैश्य—ये सनातनी कृत मूल संस्कृत ग्रंथ "हंस दूत" के टीकाकार हैं जिसकी प्रस्तुत प्रति में कोई समय नहीं दिया है। प्रस्तुत टीका खोज में प्रथम बार मिली है।

१६२ परमानंद—निम्नलिखित पद संग्रहों में आए विविध कवियों के पदों में इनके पदों की संख्या अधिक है, जिसके कारण इन संग्रहों का विवरण इनके नाम से लिया गया है:—

१—बृजलीला के पद।

२—लालजी को जनम चरित्र

३—नित्य पद संग्रह

इनमें से किसी में भी समय का उल्लेख नहीं किया गया है। रचयिता के लिये देखिए खोज विवरण (१९०२ सं० ९२, १४२)।

१६३ परशुराम—प्रस्तुत खोजमें परशुराम नामक एक रचयिता की निम्नलिखित तीन रचनाएँ मिली हैं:—

१—अमर बोध शास्त्र (चौदह लीलाओं का एक संग्रह जिसकी कविता में रहस्यवाद पाया जाता है)।

२—जोड़ा (विविध विषयों पर रची गई बृहद्रचना)।

३—राग सागर (पद संग्रह)।

खोजविरण (१९००, सं० ७२, ७५; १९०९—११, सं० २०७) में भी इस नाम के रचयिता आए हैं। अब तक चार परशुरामों का पता चला है जो इस प्रकार हैं:—

१—परशुराम—ये सेनापति के पितामह थे।

२—परशुराम—ये श्री भट्ट और हरिव्यास के शिष्य तथा सं० १६६० वि० में विद्यमान थे।

३—परशुराम—ये आगरा के निवासी और कुलपति मिश्र के पिता थे।

४—परशुराम—ये 'उषाचरित्र' के रचयिता हैं जो खोजविवरण (१९२९-३१, सं० २५७; १९२६-२८, सं० ३४४; १९२३-२५, सं० ३११ और १९१२-१४, सं० १२७) में उल्लिखित हैं।

प्रस्तुत रचयिता इनमें से कोई एक हैं या नहीं, इस संबंध में कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता।

१६४ पातीराम—इनका उल्लेख 'रणसागर' और 'पदसंग्रह' नामक दो रचयिताओं के साथ खोज विवरण (१९२९-३१, सं० २५९) पर हो चुका है। इस बार भी इनके दो ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं जिनमें से एक इनके गीतों का संग्रह है और दूसरे का नाम 'गूढ़लीला' है। इनकी प्राप्त प्रतियों में कोई समय नहीं दिया है।

१६५ पीतांबरदास—इनका उल्लेख खोजविवरण (१९०५, सं० ४७) में हो चुका है जिसमें इनकी बानियों के एक संग्रह का विवरण दिया हुआ है। प्रस्तुत खोजमें इनकी दो रचनाएँ मिली हैं जिनमें से एक तो इनके पदों का 'संग्रह' है और दूसरा हरिदास—जो इनके गुरू थे—की बानियों पर की गई इनकी पद्य-बद्ध व्याख्या है।

१६६ प्रभूदयाल—ये सिरसागंज (मैनपुरी) के एक कलवार थे जो खोज में नवोपलब्ध हैं। ये अच्छे कवि थे और इनकी रचनाओं का परिमाण भी बहुत है। संगीत से इनका बड़ा प्रेम था और सितार बजाना अच्छा जानते थे। संवत् १९३७ वि० (१८८० ई०) के लगभग ये वर्तमान थे। पहले ये शिवोपासक कट्टर हिंदू थे और राम एवं अन्य देवताओं की स्तुति संबंधी इन्होंने अनेक गीतों की रचनाएँ कीं। परंतु पीछे ये आर्यसमाजी हो गए जिसका यद्यपि अबतक मिली इनकी रचनाओं से कोई प्रमाण नहीं मिलता। ये सत्तर-अस्सी वर्ष की अवस्था में निस्संतान होकर मरे।

प्रस्तुत खोजमें इनकी निम्नलिखित रचनाएँ मिली हैं:—

१—बारह खड़ी (रचनाकाल सं० १९३७ वि०)
२—बारहमासी।
३—बारहमासी (लावनी)।
४—बारहमासी (पूर्बी)
५—बारहमासी (भरतजी की)
६—डंडक संग्रह।
७—होली गजल।
८—ज्ञानदर्पण।
९—पावस (दो प्रतियाँ)।
१०—ज्ञान सतसई।
११—प्रभुदयाल के कवित्त।
१२—पद।
१३—प्रभुदयाल के कवित्त।

१६७ प्रागदास—खोज में ये नवोपलब्ध हैं। विनोद के संख्या ११९५/१ और ११९६ पर आए रचयिता ये नहीं जान पड़ते। जैसा कि इनकी इस बार मिली दो रचनाओं से पता चलता है, इनके कबीर पंथी होने की अधिक संभावना है। उक्त दो ग्रंथों के नाम "शब्द कामना बंद" और 'कबीर स्वरोदय' हैं। प्रथम में रहस्यवाद विषयक पद हैं और दूसरे का विषय श्वास प्रश्वासों द्वारा शुभाशुभ फल वर्णन करना है। दूसरा ग्रंथ जैसा कि इसके नामसे जान पड़ता है कबीर का नहीं है। इसकी प्राप्त प्रति से यह स्पष्ट है। उक्त दोनों ग्रंथों की प्रतियों में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं एवं उनसे रचयिता के संबंध में भी कुछ पता नहीं चलता।

१६८ प्राणनाथ—रस और श्रृंगार विषय पर लिखे गए 'रसतरंगिणी' नामक ग्रंथ के ये रचयिता धामी पंथ के प्रवर्तक स्वामी प्राणनाथ से नितांत भिन्न हैं। इन्होंने

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना किसी गोविंद दास के वंशज अनिरुद्ध नामक एक महंत के आदेश से की थी। ग्रंथ खोज में नया मिला है और इसकी प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल संवत् १८६५ दिया है। रचनाकाल एवं कवि का समय अज्ञात है। समय ज्ञात न होने के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि ये खोजविवरण (१९२३-२५, सं० ३१९ और ३२०) में आए रचयिता ही हैं या नहीं।

१६९ प्रेम—इन्होंने 'उत्पत्ति अगाध बोध' नामक ग्रंथ की रचना की जिसकी सन् १७९५ ई० की लिखी एक प्रति के प्रथमबार विवरण लिए गए हैं। ग्रंथ में धर्म, ईश्वर और वैराग्य आदि विषयों का वर्णन है। रचयिता के विषय में कुछ विशेष पता नहीं चलता। ग्रंथारंभ में गुरुगोविंद सिंह की स्तुति करने के कारण ये उनके अनुयायी विदित होते हैं।

१७० पृथ्वीलालकायस्थ—ये भिंड (भदावर) के रहनेवाले एक अच्छे कवि थे। इनकी निम्नलिखित तीन रचनाएँ खोज में मिली हैं जिनके विवरण लिए गए हैं:—

१—पंच करण मनबोध (लिपिकाल, सं० १९१४ वि० विषय ज्ञानोपदेश)।

२—वंश विख्यात (रचनाकाल—लिपिकाल, सं० १९१७ वि०; विषय, भदावर राज्य के राजाओं और महाराजाओं की वंशावली)।

३—वृत्तरत्नाकर (रचनाकाल, सं० १८७६ वि०; लिपिकाल, संवत् १९१४ वि०; विषय, पिंगल)।

रचयिता जाति के कायस्थ और किसी सहजानंद के शिष्य थे तथा भदावर के महाराजा महेंद्रसिंह के आश्रय में रहते थे।

१७१ पूरन कवि—इस नाम के कुछ कवि पिछले खोज विवरणों (१९०४, सं० ४२, ४३; १९२६-२८, सं० ३६२) में आए हैं, पर प्रमाणाभाव के कारण नहीं कहा जा सकता कि ये उनमें से कोई एक हैं या नहीं। इन्होंने संवत् १६७९ वि० में 'जैमिनी पुराण' का हिंदी में पद्यबद्ध अनुवाद किया जिसकी प्राप्त प्रति में लिपिकाल संवत् १९०० वि० है।

१७२ पूरणब्रह्म—ये प्राचीन रचयिता विदित होते हैं। स्त्रियों से संबंधित सामुद्रिक शास्त्र विषयक 'चिन्हचिंतामणि' नामक ग्रंथ की इन्होंने रचना की जिसकी संवत् १७६९ वि० (१७१२ ई०) की लिखी एक प्रति के पहले पहल विवरण लिए गए हैं। इनके पिता का नाम नागेश था। ग्रंथ की भाषा मारवाड़ी मिश्रित है।

१७३ राघोदास—ये साधारण कोटि के कोई जैन रचयिता थे। इन्होंने ज्योतिष विषयक संस्कृत ग्रंथ का हिंदी में पद्यानुवाद किया। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१७४ रामचंद्र मुमुक्षु—ये एक जैन रचयिता थे जिन्होंने 'पुन्याश्रव कथाकोश भाषा' और 'चौबीसों महाराज की पूजा' नामक दो रचनाएँ कीं। दूसरे ग्रंथ की रचना सन् १८०२ ई० में हुई। दोनों ग्रंथों का विषय जैन धर्म और उसके कृत्यों से संबंध रखता है। रचयिता खोज में नवोपलब्ध है।

१७५ रामचरण—ये शाहपुरा (राजपूताना) के रहनेवाले रामसनेही पंथ के प्रवर्तक थे। प्रस्तुत खोज में इनके निम्नलिखित ११ ग्रंथों की ३० प्रतियों के विवरण लिए गए हैं जिनमें से किसी में भी रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं किया गया है। इनमें से बहुत से तो इनकी बानियों के अंश मात्र विदित होते हैं:—

ग्रंथ	प्रतियों की संख्या
१—चंद्राइणा	१
२—चेतावनी	४
३—गुरुमहिमा	३
४—मान खंडन	३
५—कवित्त	३
६—कुंडलिया	१
७—नाम प्रताप	३
८—रामचरन के शब्द	६
९—रेखता	१
१०—साखी	४
११—सवैया	१
११ ग्रंथ	३० प्रतियाँ

संख्या २ 'चेतावनी' का उल्लेख खोजविवरण (१९२०-२२, सं० १४८) पर हो चुका है।

१७६ रामदास—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। इनकी निम्नलिखित तीन रचनाओं के विवरण लिए गए हैं:—

१—अद्भुत ग्रंथ (दर्शन विषयक रचना)।

२—रामायन।

३—सूक्ष्मवेदांत।

इनकी प्रस्तुत प्रतियों में रचनाकाल नहीं दिए हैं। पिछले खोज विवरणों (१९२६ २८ सं० ३७९, ३८०; १९०६-८, सं० २१२) में कई रामदासों का उल्लेख है पर प्रस्तुत रामदास उनमें से कोई एक है या नहीं, कुछ नहीं कहा जा सकता।

१७७ रामदयाल—ये चंदननगर (जिला इटावा) के कान्यकुब्ज पाण्डेय ब्राह्मण थे। वृद्धावस्था में ये सन्यासी हो गए और अपना नाम रामानंद रख लिया। प्रस्तुत खोज में इनकी कविताओं का एक संग्रह मिला है जिनमें से एक में वनखंडी महादेव की स्तुति की गई है जिसके कुछ उद्धरण विवरण पत्र में दिए गए हैं। उक्त वनखंडी महादेव की मूर्ति अभी भी सिरसागंज (मैनपुरी) में विद्यमान है।

१७८ रामदयाल चतुर्वेदी—ये होलीपुरा (आगरा) के रहनेवाले थे। 'रघुनाथ विजय' नामक ग्रंथ की इन्होंने रचना की जिसमें हनुमान द्वारा सीता की खोज करने का और राम द्वारा रावण को मारने का वर्णन है।

ग्रंथ का रचनाकाल सन् १८५५ ई० है। रचयिता, उसकी जन्मकुंडली के अनुसार, संवत् १८८१ वि० में उत्पन्न और संवत् १९६४ वि० में स्वर्गस्थ हुए थे।

१७९ रामकृष्ण—ये मथुरा के निवासी थे। इन्होंने वैद्यक विषय पर 'सुखसमूह' नामक ग्रंथ की रचना की जिसकी प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही।

१८० रामानंद—इनके नामसे "रामरक्षा स्तोत्र" नामक रचना मिली है जिसकी पाँच प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल और लिपिकाल किसी प्रति में नहीं दिए हैं। इनके पाठों में थोड़ा बहुत अंतर पाया जाता है। मथुरा में पाई जानेवाली प्रति में विशेषता यह है कि उसकी पुष्पिका में स्वा० रामानंद को 'गुसाई' कहा गया है। यह देखने में पुरानी प्रति जान पड़ती है और मथुरा में एक निजी प्राचीन संग्रह में विद्यमान है। पुस्तक के लिये देखिए खोजविवरण (१९२९-३१, सं० २८७; १९००, सं० ७६; १९२६–२८, सं० १८२, १९२९–३१, सं० २८६)।

१८१ रामानंद—इनकी 'शनि कथा' नामक रचना मिली है जिसमें राजा दशरथ पर शनिग्रह के प्रभाव की कथा वर्णित है। ये उत्तर मुसलमानी काल के स्वा० रामानंद से नितांत भिन्न हैं। खोजविवरण (१९०९–११, सं० २५१) में आए अयोध्या के रामानंद भी, जो संवत् १९३३ से सं० १९६४ वि० तक वर्तमान थे, ये नहीं हैं; क्योंकि इनके उपर्युक्त रचना की दो प्राप्त प्रतियों में से एक में लिपिकाल संवत् १९१५ वि० (१८५८ ई०) दिया है। संभवतः ये 'रसमंजरी' के रचयिता हैं जो १८ वीं शताब्दी में वर्तमान थे और जिनके नाम पर भूल से 'रामरक्षा' का विवरण लिया गया है, देखिए खोजविवरण (१९०९–११, सं० २५०)।

१८२ रामनाथ—इनके द्वारा मूल संस्कृत से हिंदी में अनुवादित ज्योतिष विषयक ग्रंथ 'लग्नसुंदरी' के प्रथम बार विवरण लिए गए हैं। अन्य वृत्त इनका अप्राप्त है।

१८३ रामप्रसाद गूजर—इन्होंने 'सत्यनारायण की कथा' का मूल संस्कृत से हिंदी में पद्यबद्ध अनुवाद किया। इस कथा को पुरोहित लोग सामान्यतया पूर्णमासी और संक्रांति के अवसरों पर हिंदू घरों में संस्कृत में पढ़ कर सुनाते हैं।

१८४ रामेश्वर—ये ज्योतिष विषय संबंधी ग्रंथ 'भाग्यबोधिनी' के रचयिता हैं जिसकी संवत् १९३१ वि० की लिखी एक प्रति के प्रथम बार विवरण लिए गए हैं।

१८५ रसखान—ये ख्याति प्राप्त मुसलमान कृष्ण भक्त थे जिनके कवित्त, सवैया, दोहा और पदों के एक महत्वपूर्ण संग्रह के विवरण लिए गए हैं। इनमें बहुत से कवित्त सवैये ऐसे हैं जो अभी तक अज्ञात थे। अतः इस दृष्टि से भी इसका महत्व बढ़ गया है। रचयिता के लिये देखिए (१९२३–२५, सं० ३५५)।

१८६ रसिकदास—ये वृंदावन के रहने वाले थे। नरहरिदास के ये शिष्य थे और संवत् १७५१ वि० के लगभग वर्तमान थे। पिछली खोज में इनके बहुत से ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं, देखिए खोजविवरण (१९०६–८, सं० २१८; १९०२, सं० ९९; १९०९–११,

सं० २६३)। प्रस्तुत खोज में इनकी कविताओं के दो संग्रह मिले हैं जिनमें 'कुंजलीला' और 'भक्ति सिद्धांत मनि' नामक इनकी दो रचनाएँ भी लिपिबद्ध हैं जिनका उल्लेख उपर्युक्त खोजविवरणों में हो चुका है। संग्रहों की प्रस्तुत प्रतियों में कोई समय नहीं दिया है।

१८७ **रसिकदास**—ये जतीपुरा के रहनेवाले इस नाम के सभी रचयिताओं से भिन्न हैं। वल्लभ संप्रदाय के ये अनुयायी थे और राधाकृष्ण की भक्ति संबंधी पदों की इन्होंने रचनाएँ कीं जिनके एक संग्रह का प्रस्तुत खोज में प्रथम बार विवरण लिया गया है। ये संवत् १९२७ के लगभग वर्तमान थे जैसा निम्न लिखित छंद से पता चलता है:—

"संवत उनवीस ता ऊपर सतावीस प्रमाना जू।
मधु सद तिथि द्वादशीवार बुध सुभ अति गणिक बखाना जू॥"

१८८ **रसिकगोविंद**—इनकी रची 'गोबिंदानंदघन' की एक महत्वपूर्ण प्रति मिली है। यह जैसा कि इसकी पुष्पिका से विदित होता है स्वयं इनके हाथ की लिखी है:—

"चिरंजीव लाला श्री नारायण पठनार्थ लिपतं श्रीमतवृंदाबने लेषक स्वयम्"।

इसका रचनाकाल सन् १८०१ ई० है और लिपिकाल सन् १८१३ ई०। इसमें रचयिता का कुछ वृत्त दिया हुआ है जिसके अनुसार ये पहले जैपुर में रहते थे; परंतु पीछे विपत्ति पड़ने पर विरक्त होकर वृंदाबन में रहने लगे:—

"संपति विनासी तब चित्त में उदासी भई सुमति प्रकासी याते ब्रज को सिधायो है।"

नवीन स्थिति में इन्होंने वास्तविक सुख-शांति उपलब्ध की:—

"निंदत है सो तो वंदत है प्रतिकूल करै अनुकूल की वातें;
जाहि जुहारतौ हौं घर जाय सो आइकैं पाँव परैं तजि घातें;
दुःख अनेक हुते पहले अब है अति आनन्द गोविन्द यातें;
रीत सबै सुधरी है हमारी पियारी विहारी तिहारी कृपातें।"

'गोविंद आनंद घन' अलंकार और शृंगार विषयक उत्तम ग्रंथ है, देखिए खोजविवरण (१९१७–१९, सं० १६१; १९२३–२५, सं० ३५८)।

१८९ **राम सिंह**—इन्होंने संवत् १७१५ वि० (१६५८ ई०) में जैन दर्शन विषयक ग्रंथ 'गुणमाला' की रचना की। खोजविवरण (१९२३–२५, सं० ३६२) पर उल्लिखित इस नाम के रचयिता यही जान पड़ते हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति के अनुसार पता चलता है कि इन्होंने इस ग्रंथ को किसी उपाध्याय को सुनाया था और अनुवाद कर लेने के पश्चात् ये इसे प्रमोद (किसी जैन साधु) के पास ले गए जिसने इसमें आवश्यक संशोधन किये।

१९० **ऋषिकेश**—इस नाम के दो रचयिताओं का उल्लेख पिछले खोज विवरणों में हो चुका है; देखिए खोजविवरण (१९०६–८, सं० २२१; १९१७–१९)। इनमें से एक संवत् १८०८ वि० के लगभग वर्तमान था जिसने स्वरोदय की रचना की और दूसरा जिसने

'भाषा साधन योग' की रचना की, संवत् १७५१ में वर्तमान था। प्रस्तुत खोज में ऋषिकेश के दो ग्रंथों—'ऋतुमंजरी' और 'शनि कथा' के विवरण लिए गए हैं। दूसरे ग्रंथ की प्रति में लिपिकाल सन् १८५९ ई० दिया है। 'ऋतु मंजरी' में छः ऋतुओं का वर्णन है और 'शनि कथा' में शनि ग्रह के प्रभाव की कथा दी गई है। दोनों ग्रंथों का काव्य साधारण श्रेणी का है।

१९१ रूपकिशोर—इन्होंने प्रचुर मात्रा में ख्याल गीतों की रचनाएँ कीं। इनका ज्ञान विस्तृत था। इनका उल्लेख पिछले एक खोज विवरण में हो चुका है, देखिए खोज विवरण (१९२९-३१; सं० ४१९)। प्रस्तुत खोज में इनकी दस रचनाओं के विवरण लिए गए हैं जिनसे विदित होता है कि ये हिंदी, उर्दू और अरबी अच्छी तरह जानते थे जिनमें से प्रत्येक में ये ख्यालों की सुंदर रचना करते थे। इन रचनाओं से पता चलता है कि आगरा भी ख्यालबाजों का केंद्र था जिसके सदस्यों का उल्लेख इनमें किया गया है। अब तक पाई गई किसी भी रचना में रचयिता का विवरण नहीं पाया गया। फिर भी ये आधुनिक काल के रचयिता विदित होते हैं।

१९२ रूपकिशोर—ये कागरोल आगरा के रहनेवाले थे और उस क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध थे। इन्होंने सन् १८६८ ई० में वैद्यक विषय पर एक छंदोबद्ध रचना की जिसकी प्रस्तुत प्रति इन्हीं के पुत्र के पास सुरक्षित है।

१९३ रूपरसिक—ये वृंदावनके निवासी और राधावल्लभी संप्रदाय के अनुयायी थे। इनके नाम के साथ कहीं २ 'हित' शब्द जुड़ा होने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये हित हरिवंश जी के अनुयायियों में से थे। ये उच्चकोटि के कवि थे। इनकी 'वृंदावन माधुरी' का उल्लेख खोजविवरण (१९०६-०८, सं० २२२) पर हो चुका है। इसबार इनके 'पदों' का एक संग्रह मिला है जिसमें हिंदी और उर्दू दोनों में रचना की गई है।

१९४ सहजानंद—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। गोकुल इनका निवास स्थान था। संवत् १८८२ (१८२५ ई०) की रची इनकी 'शिक्षा पत्री' नामक रचना के विवरण लिए गए हैं जिसमें इनके सपरिवार तीर्थयात्रा करने का वर्णन है। इन्होंने अपने ग्राम के सुखद जीवन का बड़ा अच्छा वर्णन किया है। इनके रामप्रसाद और इच्छाराम नाम के दो भाई थे। दूसरे भाई के पुत्र रघुबीर को इन्होंने गोद ले लिया था।

१९५ शंकर—ये अच्छे कवि, थे इन्होंने एक काव्य ग्रंथ की रचना की जिसमें भमर राज्य के अधिपति चिम्मन सिंह—जो इनके आश्रयदाता थे—के द्वारा किए गए एक यज्ञ का वर्णन है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१९६ सेनापति—ये हिंदी के सुप्रसिद्ध कवियों में से हैं। पिछले खोजविवरणों में इनका उल्लेख हुआ है, देखिए खोजविवरण (१९२६-२८, सं० ४३२; १९२०-२२, सं० १७६)। प्रस्तुत खोज में इनकी तीन रचनाएँ मिली हैं जिनमें से दो 'कवित्त रामायण और रसायन' के विवरण प्रथमबार लिए गए हैं जो संभवतः इनकी प्रधानकृति 'कवित्त रत्नाकर'

के अंश विदित होते हैं। इनका जन्म संवत् १६८४ में हुआ था और संवत् १७०६ वि० तक ये वर्तमान थे। ग्रंथों की प्रस्तुत प्रतियों में कोई समय नहीं दिया गया है।

१९७ सेवादास—ये अच्छे कवि थे और इनके प्रस्तुत खोज में पाँच ग्रंथों के प्रथमबार विवरण लिए गए हैं। अब तक खोज में कई सेवादासों का पता चला है पर वे सब इनसे भिन्न हैं। साथ ही साथ ये उनसे कहीं श्रेष्ठ कवि हैं। इन्होंने अपने उक्त पाँच ग्रंथ एक ही वर्ष संवत् १८४० वि० (१७८३ ई०) के भीतर रचे हैं।

१—अलबेला लाल के छप्पय—इसमें राधाकृष्ण के सौंदर्य का अच्छा वर्णन किया है।

२—अलंकार—अलंकारों का वर्णन।

३—नखशिख वर्णन—नायिका का नख से लेकर शिर तक प्रत्येक अंग के सौंदर्य का वर्णन।

४—रस दर्पण—नव रसों का वर्णन।

अन्य सेवादासों के लिये देखिए खोजविवरण (१९०६—८, सं० ३२७; १९२३-२५, सं० ३८०, ३८१, ३८२; १९२६–२८, सं० ४३३)। रचयिता के विशेष विवरण के लिये देखिए विवरण का अंश सं० ४।

१९८ सेवादास (सेवाराम)—ये सेवादास भी अबतक की खोज में मिले इस नाम के सभी रचयिताओं से भिन्न हैं। इनके तीन ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं जिनके नाम अधोलिखित हैं:—

१—भागवत दशम (दशम स्कंध भागवत का हिंदी अनुवाद)

२—श्री मद्भागवत (ब्रजभाषा गद्य में किया गया अनुवाद) रचनाकाल सं० १८८४ वि० (१८२७ ई०)।

३—गीता माहात्म्य का पद्यानुवाद।

रचयिता के संबंध में अन्य विवरण अप्राप्त है।

१९९ सेवकहित—ये राधावल्लभी संप्रदाय के प्रवर्तक हित हरिवंश जी के अनुयायी थे। इनकी रची 'बानी' के विवरण लिए गए हैं जिसमें हित हरिवंश जी का गुणगान एवं उनके जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन किया गया है। खोजविवरण (१९०६–८, सं० २३२) में इनका उल्लेख हो चुका है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति संवत् १८१० वि० की लिखी हुई है।

२०० शिरोमणि (जैन)—ये 'धर्मसार' के रचयिता हैं जिसमें जैन धर्म और उसके सिद्धांतों का वर्णन किया गया है। रचनाकाल संवत् १७५१ वि० (१६७४ ई०) है। एक शिरोमणि मिश्र का उल्लेख नाम माला ग्रंथ के साथ खोजविवरण (१९२०–२२, सं० १७८) पर भी है, पर प्रस्तुत जैन रचयिता उससे भिन्न जान पड़ते हैं।

२०१ शिवभोग—अब तक ये अज्ञात थे। इन्होंने 'लोग तारिका' नाम से 'गीता माहात्म्य' का हिंदी पद्यानुवाद किया।

२०२ शिवदत्त सनाढ्य—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। इन्होंने वैद्यक ग्रंथ 'सर्वसंग्रह वैद्यक भाषा' का संपादन किया। ये काशी के निवासी थे, परंतु पीछे सादाबाद (मथुरा) चले गए जहाँ इनके पौत्रादि अभी तक विद्यमान हैं। इन्हीं लोगों के पास इनके प्रस्तुत ग्रंथ की प्रति मिली है।

२०३ शिवलाल—खोज में इनका पता प्रथमबार लगा है। 'कर्मविपाक' नामक मूल संस्कृत ग्रंथ का इन्होंने अनुवाद किया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सन् १९५३ ई० में लिखी गई थी।

२०४ श्री भट्ट—इनका समय संवत् १६०१ वि० के लगभग बतलाया जाता है, देखिए खोजविवरण (१९००, सं० ३६; १९०६-८, सं० २३७)। इस बार मिले इनके तीन ग्रंथों का उल्लेख नीचे किया जाता है। जिनमें एक संग्रह सन् १७५४ ई० का लिखा है:—

१ पदमाला—पदों का संग्रह, रचयिता के वल्लभ नामक एक वंशज के पुत्र ने इसकी कुछ प्रतियाँ लिखी हैं।

२ जुगलसत—रचयिता की यह प्रसिद्ध कृति है जो पिछली खोज में भी मिल चुकी है। परंतु इसबार रूप रसिक की इस पर व्याख्या है जो अबतक अज्ञात थी। इसकी प्राप्त प्रति संवत् १८४९ वि० (१७९२ ई०) की लिखी है। प्रस्तुत ग्रंथ निंबार्क संप्रदाय में बाइबिल की तरह मान्य है।

३ पद—पद संग्रह है।

२०५ श्री धरानंद—ये भरतपुर के रहनेवाले थे और इन्होंने अलंकार विषय पर 'साहित्यसार चिंतामणि' नामक ग्रंथ की रचना की जो आकार प्रकार में काफी बड़ा है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल नहीं है। इसका विवरण पहले पहल लिया गया है। इन्होंने कुछ राजाओं और महाराजाओं का अपने आश्रयदाता के रूप में उल्लेख किया है। पिछले खोज विवरणों में उल्लिखित इस नाम के रचयिताओं से ये भिन्न विदित होते हैं।

२०६ श्री कृष्णभट्ट—ये एक अच्छे कवि थे। श्रृंगार विषयक इनकी 'श्रृंगार माधुरी' नामक रचना की एक प्रति के प्रस्तुत खोज में विवरण लिए गए हैं। उक्त प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। प्रस्तुत ग्रंथ इन्होंने राजा बुद्ध सिंह के आश्रय में रहकर रचा था जिनकी इन्होंने बड़ी प्रशंसा की है। खोज विवरण (१९०९—११, सं० ३०१) में 'संभर युद्ध' नामक ग्रंथ के रचयिता एक कृष्ण भट्ट का उल्लेख है जो जयपुर के महाराजा जयसिंह द्वितीय के आश्रय में रहते थे। पता नहीं वे प्रस्तुत रचयिता ही हैं या कोई अन्य।

२०७ श्री लालजी—ये खोजमें नवोपलब्ध हैं। ये संवत् १६०८ वि० में पंजाब में सिंधु नदी के तट पर बसे एक स्थान में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने वैष्णव संप्रदाय के अंतर्गत अपने एक संप्रदाय का प्रचार किया था जिसके बहुत से अनुयायी पंजाब क्षेत्र में रहते हैं।

प्रस्तुत खोज में इनके द्वारा संवत् १६७४ वि० (१६१७ ई०) में किया गया 'भागवत दशम स्कंध' का पद्यबद्ध अनुवाद उपलब्ध हुआ है। रचनाकाल से इनके जन्मकाल की पुष्टि होती है जो दूसरे सूत्र से ज्ञात हुआ।

२०८ सुखलाल—इन्होंने साधारण कोटि के कुछ 'ग्राम्यगीतों' की रचनाएँ कीं जिनके दो संग्रहों के विवरण लिए गए हैं। इनका एक हस्तलेख दिल्ली खोज विवरण (संख्या ८५) पर भी उल्लिखित है।

२०९ सुखरामदास—ये रतलाम के रहनेवाले थे और इन्होंने 'बूटी संग्रह वैद्यक' की रचना की जिसमें रोगोपचार के काम में आनेवाली अनेक प्रकार की जड़ी बूटियों का प्रयोग और परीक्षणों का वर्णन है। रचनाकाल सन् १८४३ ई० है। रचयिता खोजमें नवोपलब्ध हैं।

२१० सुंदरदास—ये अबतक खोज में मिले इस नामके रचयिताओं से भिन्न हैं, अतः खोजमें नवोपलब्ध हैं। प्रस्तुत खोज में 'त्रियाभोग' नाम से काम शास्त्र विषयक इनकी एक रचना मिली है जिसके विवरण लिए गए हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचना-काल और लिपिकाल नहीं दिए हैं।

२११ सुंदरदास—ये स्वा० दादूदयाल जी के शिष्य और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि थे। लगभग सभी पिछले खोजविवरणों में इनका उल्लेख हुआ है, देखिए खोजविवरण (१९००, सं० २७; १९०६-८, सं० २४२; १९०२, सं० २५)। प्रस्तुत खोज में इनकी निम्नलिखित रचनाएँ और मिली हैं:—

१—हरिबोल।
२—सांख्य ज्ञान।
३—विवेक चेतावनी।
४—तारक चिंतामनि।

२१२ सूरदास—प्रस्तुत त्रिवर्षी में इनकी निम्न लिखित रचनाएँ मिली हैं:—

रचना	प्रतियाँ	लिपिकाल	रचनाकाल
१—सूरसागर	४	१७६३ ई०	×
२—बंसी लीला	१	×	×
३—पद संग्रह	५	×	×
४—बारहमासा	१	×	×
५—बारहखड़ी	१	१८३० ई०	×

सूरदास का उल्लेख प्रायः सभी खोजविवरणों में हो चुका है।

२१३ सूरति मिश्र—ये आगरा के निवासी एवं सुप्रसिद्ध कवि थे। संवत् १७६८ वि० के लगभग ये वर्तमान थे। इनके कुछ ग्रंथों का उल्लेख खोजविवरण (१९०६-८, सं० २४३; १९०३, सं० १०४ आदि) में हो चुका है। आगरा की प्रस्तुत खोज में इनका श्रृंगार विषयक एक नवीन एवं उत्तम ग्रंथ 'श्रृंगार सार' नाम से मिला है जो सं० १७८५ वि० (१७२८ ई०) में रचा गया था। इसमें इन्होंने अपना पूरा वृत्त दिया है जिसके

अनुसार इनके पिता का नाम सिंह मणि था। इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें इन्होंने अपने रचे ग्रंथों का उल्लेख किया है जिनकी संख्या ग्यारह है। इनका विवरण न तो खोजविवरणों में ही पाया जाता है और न विनोद एवं अन्य हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में ही। ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं:—

१—श्रीनाथविलास
२—नवीन प्रकाश
३—कृष्ण चरित्र
४—भक्तविनोद
५—भक्तमाला
६—नख शिख
७—छंदसार
८—कवि सिद्धांत
९—अलंकार माला
१०—रसरत्न
११—शृंगारसार

विशेष के लिए देखिए विवरण का अंश संख्या १६।

२१४ ताराचंद—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। इन्होंने अपने को कान्यकुब्ज ब्राह्मण लिखा है। पिता का नाम गोपीनाथ खुरहा पांडे था। ये चार भाई थे जिनमें से ये सबसे छोटे थे। अन्य तीन भाइयों के नाम क्रमशः इंद्रजीत, लछमन और जदुराय थे। आश्रयदाता का नाम ये महाराज कुशल सिंह लिखते हैं। प्रस्तुत खोज में इनकी रची "शालीहोत्र" नामक रचना मिली है जिसमें अश्व चिकित्सा एवं उसके पालनादि के विषय में वर्णन किया गया है। रचनाकाल संवत् १६१६ वि० (१५५९ ई०) है। ग्रंथ की प्राप्त प्रतियों में से सबसे पुरानी प्रति १८४३ की लिखी है। विशेष के लिए देखिए विवरण का अंश संख्या १८।

२१५ टेकचंद—ये जैन रचयिता हैं। 'पंच परमेष्ठी' नामक इनकी रचना के इसबार विवरण लिए गए हैं जिसमें जैन धार्मिक कृत्यों का वर्णन है। इसकी प्राप्त प्रति संवत् १९२५ वि० की लिखी है।

२१६ ठाकुर—ये हिंदी के प्रख्यात कवि हैं और लगभग पिछले सभी खोज विवरणों में उल्लिखित हैं। इस त्रिवर्षी में इनकी कविताओं के एक संग्रह के विवरण लिए गए हैं। खोजविवरण (१९०९–११, सं० २८९) पर आए इस नाम के रचयिता से भी ये अभिन्न जान पड़ते हैं।

२१७ टोडाराम—ये पुरुसोत्ती गढ़ी मथुरा के निवासी थे और खोज में नवोपलब्ध हैं। इन्होंने 'पदों' की रचनाएँ कीं जिनका एक संग्रह मिला है। संग्रह की प्राप्त प्रति में कोई समय नहीं दिया है। रचयिता के प्रस्तुत गीत अभी भी उसके निवासस्थान की ओर गाए जाते हैं।

२१८ टोडरमल—(मृत्युकाल संवत् १६४६ वि०)—अकबर बादशाह के ये सुप्रसिद्ध कृषि मंत्री हिंदी कविता के भी प्रेमी थे। प्रस्तुत खोज में इनकी कविताओं का एक महत्वपूर्ण संग्रह मिला है जिसमें बहुत सी कविताएँ ऐसी हैं जो अबतक अज्ञात थीं।

२१९ तोष निधि—ये कालपी के रहनेवाले कान्यकुब्ज शुक्ल ब्राह्मण थे और संवत् १८३० वि० में उत्पन्न हुए थे। इनके रचे बहुत से ग्रंथ कहे जाते हैं, देखिए विनोद संख्या ६८४/१। 'दीनव्यंगसत नामक इनके एक ग्रंथ के प्रस्तुत खोज में विवरण लिए गए हैं जिसमें भगवत् प्रार्थना विषयक एक सौ दोहे हैं। ये एक यथार्थवादी कवि थे।

२२० तोताराम—ये ग्रामीण जनता के लिये सुबोध गीतों की रचना करते थे। इनकी रची हुई 'दंगराजा की कथा' नाम से एक रचना के विवरण लिए गए हैं। अन्य वृत्त इनका अनुपलब्ध है।

२२१ तुलसीदास—'रामचरित मानस' के अतिरिक्त इनके नाम से निम्नलिखित तीन ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं:—

१—सप्त शतक (सात सौ दोहों का संग्रह)

२—बजरंग चालीसा (संभवतः हनुमान चालीसा का दूसरा नाम)

३—शिवरी मंगल (शवरी की भक्ति और रामचंद्र से उसकी भेंट का वर्णन)

अंतिम रचना शायद ही प्रस्तुत महाकवि की कही जा सकती हो।

२२२ तुलसी साहब—आपापंथ मत के ये प्रवर्तक थे जिसके उत्तरी भारत में हजारों की संख्या में अनुयायी हैं। ये हाथरस के निवासी थे जहाँ इनकी गद्दी और मंदिर अभी तक विद्यमान हैं। यहाँ प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को विड़ा उत्सव मनाया जाता है जिसमें अनुयायियों द्वारा गुरुके नाम पर अनेक प्रकार की मूल्यवान् भेंटें चढ़ाई जाती हैं। इस समय यहाँ के महंत का नाम ध्यानदास है। अबतक के महंतों के नाम इस प्रकार हैं:—"तुलसी साहब > सूरस्वामी महंत > दरशन दास > मथुरा दास > ध्यान दास (वर्तमान महंत)"। इस पंथ का मूल सिद्धांत इस प्रकार है:—

"अलख झोरी खलक खजाना। भूख लगे तब मांगे खाना।"

इनकी शिक्षामें भी उसी प्रकार आध्यात्मिक रहस्य वाद पाया जाता है जैसे कबीर और दादू की शिक्षा में। काव्य यद्यपि इनका अपरिष्कृत है पर चमत्कार और व्यंग्य में वह कबीर के काव्य का अनुगमन करता है। इनके 'घट रामायण' का उल्लेख खोजविवरण (१९२९-३१, संख्या ३३१) पर हो चुका है। प्रस्तुत खोज में इनकी निम्न लिखित रचनाएँ और मिली हैं जिनकी प्राप्त प्रतियों में कोई समय नहीं दिया है:—

१—रत्नसागर २ प्रतियाँ

२—सतगुरु साहिब की साखी १ प्रति

३—सवैया तुलसी

४—तुलसी कुंडलिया

५—बानी

२२३ उदय—प्रस्तुत त्रिवर्षी में इनके १३ ग्रंथों की १५ प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। ये सुप्रसिद्ध कवि दूलह के पिता उदयनाथ कवींद्र से भिन्न हैं, देखिए कवि दूलह के लिए खोजविवरण (१९०५, सं० ३; १९०६–८, सं० २४६)। ये अच्छे कवि थे और इनकी रचनाएँ प्रचुर मात्रा में हैं। इनका काव्य नंददास की काव्य शैली को लिए हुए उससे भी बढ़कर माना जाता है। पं० मायाशंकर जी याज्ञिक जिनके पास इनकी रचनाएँ प्रचुरमात्रा में एकत्रित हैं, इनके संबंध में इस प्रकार कहते हैं:—

"और कविगढ़िया नंददास जड़िया तो उदय पालशिया"

याज्ञिक जी के कथनानुसार ये मथुरा और भरतपुर राज्य की सीमा पर बसे किसी ग्राम के निवासी थे तथा इन्होंने ४० रचनाएँ कीं। इनके प्रस्तुत ग्रंथों के नाम नीचे दिए जाते हैं जिनमें से सबसे पुराना ग्रंथ सन् १७८८ ई० का है: —

ग्रंथ	प्रतियाँ	रचनाकाल	लिपिकाल
१ – अघासुर मारन लीला	१	×	×
२—चीरचिंतामणि	१	×	×
३ – दानलीला	१	×	×
४—गिरवरधर लीला	१	१७९५ ई०	×
५—गिरवर विलास	१	१७८८ ई०	×
६—जोग लीला	१	×	×
७—जुगल गीत	१	×	×
८—मोहिनी माला	१	×	×
९—रामकरुणा	३	×	१८२९ ई० (एकप्रतिमें)
१०—सुमरन मंगल	१	×	×
११—सुमरन श्रृंगार	१	×	×
१२—स्यामसगाई	१	×	१८३० ई०
१३—वंशी विलास	१	×	×

विशेष के लिये देखिए विवरण का अंश संख्या ८।

२२४ उजियारेलाल—ये सनाढ्य ब्राह्मण और वृंदावन निवासी थे। इनके अलंकार और श्रृंगार विषयक ग्रंथ 'जुगल प्रकाश' के विवरण लिए गए हैं। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८३७ वि० (१७८० ई०) है तथा लिपिकाल संवत् १८९६ वि० (१८३९ ई०)। रचयिता के पिता का नाम नवलशाह था और पितामह का नाम नंदलाल। ये सन् १७८० ई० के लगभग वर्तमान थे। इस नाम के एक रचयिता का उल्लेख खोजविवरण (१९१७–१९, सं० १९९) पर हुआ है, पर नहीं कहा जा सकता कि ये प्रस्तुत रचयिता ही हैं। विशेष के लिए देखिए विवरण का अंश संख्या ७।

२२५ उमराय सिंह—इन्होंने अनेक कवियों की फुटकर कविताओं का संग्रह तैयार किया था जिसकी एक प्रति का इस बार विवरण लिया गया है। ये अपना निवास-स्थान पेगू (जिला, मैनपुरी) बतलाते हैं:—

'बारहकोस मैनागढ़ सोरहकोस इटायो है ,
आठ कोस करहल पाँच सकूराबाद है ।
पच्चीसकोस आगरो और चार कोस थानो है ,
ताके वीच पैगू दलदलापुरी जामें सातों जाति बसति है ।
जमीदार लभौआ वारो शहर सकूराबाद है ,
मंडी तो सिरसागंज तीनों मुल्क जाहिर है ।
गाँव तो पैगू गाँव जामैं रजपूत की निवासी है ,
ताकै वीच सिहमगढ़ छत्रिन को वासो है ।
उमराय सिंह यह ऊँचो दरवाजो तीन ,
चौक भीतर हमारो पुरवाई ओर को मकान है ॥'

२२६ वैष्णव कवि—इस त्रिवर्षी में बहुत से संग्रह ग्रंथ ऐसे मिले हैं जिनमें अनेक वैष्णव कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं। इन वैष्णव कवियों में बहुत से वैष्णव कवि ऐसे हैं जिनका पता आज तक न था, अतः इस दृष्टि से ये संग्रह ग्रंथ बड़े महत्व के हैं। कवियों की सूची विवरण पत्र में देदी गई है ।

२२७ वाजिद या बाजिद—ये दादू दयाल जी के शिष्य थे और संवत् १६५७ वि० (१६०० ई०) के लगभग वर्तमान थे। इनकी 'राजकीर्तन' नामक रचना खोजविवरण (१९०२, सं० ७९) पर उल्लिखित है। इसबार आगरा जिले की खोज में इनके तीन ग्रंथों १—नैननामो, २—गुण निरंजननामा और ३—गुण राजकृत का पता चला है जिसके विवरण लिए गए हैं।

२२८ वल्लभाचार्य—(सं० १५३५-१५८७ वि०) प्रस्तुत त्रैवार्षिक खोज में निम्नलिखित तीन ग्रंथ ऐसे मिले हैं जो वल्लभाचार्य जी के रचे कहे जाते हैं:—

१—बीस ग्रंथ टीका (वल्लभ संप्रदाय विषयक बीस संस्कृत ग्रंथों पर हिंदी टीका)
२—वल्लभवानी (हिंदी पदों का संग्रह)
३—बन यात्रा (इसमें ब्रज के तीर्थों का वर्णन है जिनकी भाद्रपद में यात्रा करते हैं)

दूसरी रचना छोड़कर शेष रचनाएँ वल्लभाचार्य कृत शायद ही संभव हों। प्रथम रचना का मूल जो संस्कृत में है अवश्य ही वल्लभाचार्य कृत हो सकता है; परंतु इसकी टीका करनेवाला कोई दूसरा ही जान पड़ता है। देखिए खोजविवरण (१९००, सं० ३८; १९०२, सं० ५८; १९०९-११, सं० ११५)।

२२९ विश्वभूषण जैन—इन्होंने पद्य में 'सुगंध दशमी व्रत कथा' की रचना की। ये शहर गहेली के रहनेवाले थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है।

२३० वीतरागदेव—जैन सिद्धांत विषयक रचना 'ग्रंथ सुभाषित'' के ये रचयिता खोज में नवोपलब्ध हैं। ग्रंथ की रचना संवत् १७९४ वि० (१७४७ ई०) में हुई थी जिसकी प्राप्त प्रति सन् १७९९ ई० की लिखी हुई है।

२३१ वृजाधीश—इन्होंने पदों की रचनाएँ कीं जिनके एक संग्रह के विवरण लिए गए हैं। संग्रह में कुछ अन्य कवियों के भी पद हैं। मथुरा जिले में पदों के बहुत से संग्रह ऐसे मिले हैं जिनमें 'वृजपति' और 'वृजाधीश के पद मिलते हैं ये दोनों कवि एक ही विदित होते हैं। वृजपति का उल्लेख विनोद में संख्या (२७४) पर हुआ है।

२३२ वृंदावन हित—ये चाचा वृंदावनहित नाम से भी प्रसिद्ध हैं। ये एक प्रौढ़ कवि थे जिनकी बहुत सी रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। राधावल्लभी संप्रदाय के ये वैष्णव थे और जीवन पर्यंत उसके उत्थान एवं प्रचार के लिए काम करते रहे जिसमें लिखते लिखते उनकी आँखें थक गई थीं और बाल सफेद हो गए थेः—

"लिषत लिषत आँषें थकी सेत भये सितबार"।

जैसा कि इनके ग्रंथों से पता चलता है, ये हित हरिवंश जी के शिष्य थे और सन् १७५५ ई० के लगभग वर्तमान थे। संप्रदाय में ये बड़े संमान की दृष्टि से देखे जाते थे। खोजविवरण (१९०६–८, सं० २२२) पर इनके कुछ ग्रंथों के उल्लेख हैं, जो किसी प्रकार अपनी ओर हिंदी के विद्वानों को आकृष्ट न कर सके। प्रस्तुत खोज में मथुरा जिले से इनके १६ ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं। कुछ ग्रंथ तो बहुत बड़े हैं जिनमें से एक-एक का विस्तार दश हजार अनुष्टुप् श्लोकों तक है। इनकी 'बानी' की रचना आठ वर्षों तक होती रही। संवत् १८२० वि० में यह समाप्त हुई। प्राप्त ग्रंथों के नाम नीचे दिए जाते हैंः—

ग्रंथ	रचनाकाल	लिपिकाल
१—उपदेशवेलि	×	×
२—दीक्षा मंगल	×	१८२५ वि० (१७६८ ई०)
३—हरि धमार	×	×
४—पद	×	×
५—पद	×	×
६—पद संग्रह	×	१८८६ वि० (१८२९ ई०)
७—पद संग्रह	×	×
८—पदावली	×	×
९—पदावली	×	×
१०—पद्यावली	×	×
११—जन्मोत्सव कवित्त	१८१२ वि० (१७५५ ई०)	×
१२—रसिक अनन्य प्रचावली	×	×
१३—समाज के पद	×	×
१४—संतों की बानी	×	×
१५—विवेक लच्छन वेलि	×	×
१६—बानी	संवत् १८१२ वि० से १८२० वि० तक	×

संख्या ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० और १३ की रचनाएँ केवल रचयिता के पदों के संग्रह हैं। संख्या १२ की रचना भक्तमाल के रूप में है जिसमें २०० भक्तों का वर्णन है।

१६ वीं रचना को, जो बहुत बड़ी है, राधा वल्लभ संप्रदाय का विश्वकोष समझना चाहिए जिसमें संप्रदाय एवं कवि के संबंध की सभी बातें दी गई हैं। सभी ग्रंथों का विषय भक्ति है।

२३३ यादव राय—ये खोज में नवोपलब्ध हैं। 'ढोला मारवणी' नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ के ये रचयिता हैं। इनका निवासस्थान जैसलमेर था और इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना किसी यादव राज हरिराज के लिए की थी:—

"यादवराज श्रीहरिराज ; जोडा तासु कौतुहल काज।
जोड़ी जैसलमेर मझार।"

ग्रंथ में 'ढोला और मारवणी' की कथा का वर्णन है जो राजस्थान में सब जगह प्रचलित है। रचयिता के राजस्थानी होने के कारण इसकी भाषा में अधिकतर राजस्थानी शब्दों एवं मुहावरों का बाहुल्य है।

द्वितीय परिशिष्ट

प्रथम परिशिष्ट में वर्णित रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

द्वितीय परिशिष्ट

रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

संख्या १. विषैपहार स्तोत्र, रचयिता—आचार्य अचलकीर्त्ति, पत्र—२; आकार—११ X ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१५१७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर (नया), स्थान—पड़ैथ, डाकघर—मुस्तफाबाद, जिला—मैनपुरी।

आदि—अथ श्री जिनदेवाय नमः ॥ अथ श्री विषैपहार स्तोत्र लिष्यते ॥ चौपही ॥ विश्वनाथ विमल गुन ईस। विहर मांन वंदौं जिन वीस ॥ ब्रह्मा विस्नु गनपति सुंदरी। वरदीजो मोहि वागेसुरी ॥ १ ॥ सिद्ध साध सतगुरु आधार। कहौ कविरा आतमा उपगार ॥ विषैपहार स्तविनहु उदार। सर्व ओंपदैंइ मृत सार ॥ २ ॥ मेरे मंत्र तुमारौ नांमु। तुमही गुरु वौ गरुड़ समांन ॥ तुम सव वेदन के सिरदार। तुम स्यानै तिहूं लोक मझार ॥ ३ ॥ तुम विप हरन करन जग संत। नमो नमो नित देव अनंत ॥ तुम गुन महिमा अगिम अपार। सर गुर सर्व लहौ नहिं पार ॥ ४ ॥ तुम परमातमा परमानन्द। कल्प व्रछ सव सुप के कंद ॥ मुदित मेर महिमंडल धीर। विद्यासागर गुन गंभीर ॥ ५ ॥

अंत—धंन्नि नेत्र देषे भगवांन। आज धन्य मेरो अवतार ॥ प्रभुके चरन कमलकौ नयो। जन्म कृतारथ मेरो भयो ॥ ३८ ॥ कर पंजर कर नायौं सीस। मो अपराध छिमाजहौ धीर पंद्रा सै सत्रा सुभ थांन। वरनौ फागुन सुदि चौदसि जांन ॥ ३९ ॥ पढै सुनैं तहँ परमानंद। कल्प व्रछ सब सुप के कंद ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्ध कौ लहै। अचलकीर्ति आचार कहै ॥ ४० ॥ दोहरा ॥ भय भंजन रंजन जगत। विषैपहार अभिराम। संसय तजि सुमिरै सदा। श्री सांत जिनेश्वर नाम ॥ ४१ ॥ इति श्री विषैपहार स्तोत्रा भाषा संपूरनं ॥

विषय—जिन भगवान का स्तोत्र।

रचनाकाल—पंद्रा सै सत्रा सुभ थांन। वरनौ फागुन सुदि चौदसि जांन ॥ ३९ ॥

संख्या २. अहमदी बारहमासी, रचयिता—अहमद, कागज—बाँसी, पत्र—२४, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मायाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी मंदिर, गोकुल (मथुरा)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ अहमद कृत वारहमासी लिष्यते ॥ प्रथम आसाढ़ महीना वरननं ॥ दोहा ॥ रितु असाढ़ पिय दरस विन, काया भई अचेत। प्रीति पुरानन कंथ की, क्यों हूँ चैन न देत ॥ सोरठा चढ्यो दल साजि असाढ़, हौ पापिन किंत भाजि हौं। विरह कियो अति गाढ़, सुधि भूली व्याकुल भई ॥

अंत—॥ दोहा ॥ सुष्य सिज्या सीतल महल सनमुष पिय वतराय। अहमद अब वैकुंण्ठ की, आसा करै वलाय ॥ सवैया ॥ आज भले ही उदोत भयो दिन नारि के नाह विदेस ते आए। हौं मग जोइ थकी बहु चावनि, भागि बड़े घर बैठे ही पाए ॥ नैन सिराय हियो भयो सीतल कोटिक भावनि मंगल गाए। अहमद सेज सिंगार साजिके आनन्द सौ पिय गोविन्द गाए ॥ इति श्री अहमद कृत वारहमासी

विषय—बारह महिनों के अलग अलग महिनें में विरहिणी की अवस्था और मिलन का हृदयग्राही वर्णन है।

संख्या ३. अकबरसंग्रह, रचयिता—अकबर बादशाह (दिल्ली), कागज—साधारण, पत्र—७, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२१, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि —॥ दोहा ॥ जाको जस है जगत में जगत सराहे जाहि। ताको जीवन सफल है, कहत अकव्वर साहि ॥ केलि करैं विपरीत रमै सु अकव्वर क्यों न हतो सुख पावै। कामिनि की कटि किंकिन कान किधौं गनि पीतम के गुन गावै ॥ बिन्दु छुटी मन में सुललाटते यों लटमें लटको लगि आवै। साहि मनोज मनौ चित्त में छवि चंद लिये चकडोर खिलावै ॥ साहि अकव्वर वाल की बाँह अचिंत गही चलि भीतर भौने। सुंदरि द्वारहि दीठि लगाय कै, भागिबो को भ्रम पावत गौने ॥ चौंकत सी चहुँ ओर विलोकत संक सकोच रही मुख मौने। यों छवि नैन छवीली के छाजत मानो विछोह परे मृग छौने ॥

अंत—साहि अकव्वर एक समै चले कान्ह विनोद बिलोकत वालहिं। आहट ते अवला निरख्यो चकि चौंकि चली करि आसुर चालहिं। त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सु भई छवि यों ललना अरु लालहिं। चम्पक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिए अहि बालहि। *पीपल से मजलिस गई, तानसेन को राग। हँसबो रमबो खेलबो, गयो वीरवल साथ। चन्द्र वदन मुख मध्यमें, भाषा देत जवाब। साह अकव्वर पूत ही, कहत न आवत आव।

विषय—फुटकल सवैयों तथा दोहों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—यह पं० मयाशंकर जी याज्ञिक का किया हुआ अकवर बादशाह की कविताओं का संग्रह है जिसका किसी ऐतिहासिक घटना विशेष से सम्बन्ध है।

संख्या ४ ए. स्वरोदय, रचयिता—अखैराम, कागज—बाँसी, पत्र—१७, आकार—५×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९०१ वि० = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गिरधर मिश्र, मु० गढ़ीचन्द्रमन, डाकघर—अछनेरा, तहसील—किरावली, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश)।

---

*यह बीकानेर के राम सिंह के छोटे भाई थे। अकवर ने गागरौन का इलाका जागीर में इन्हे दिया था।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ सरोदय लिख्यते ॥ कवित्त ॥ सकल गुण सागर उजागर जगत माहिं, नरन माहिं नागर अगम अभिलाषा है। तीन्यों काल एक एक जाके भेष है अनेक भाँति, कहत अवेष जासों द्वीत जगा नाषा है ॥ अनंहद आठो जाम घन घोर जाये। निराकार जीवमाया जाके साषा है ॥ ऐसे अभिराम को प्रणाम करि हिये माँहि। अषैराम गावन स्वरोदय की भाषा है ॥

अंत—ज्ञान गुण गायवें कूँ ध्यान उर धारिबे कूँ, तामस बढ़ाइबे कूँ निशिदिन गाइकैं ॥ भक्ति निधि जोरिबै कूँ आठो सिद्धि मोरिवे कूँ, मदन मरोरिबेंकूँ, चित्त में चिताय लैं ॥ हौनहार जानिबे कूँ जोतिष बषानिबे कूँ। काल के पहचानि वे कूँ सिच पाइलै ॥ स्वर को विचार चार यों वेदन को सार उर, हार अषै राम सिच पाइलैं ॥ इति रुद्रदमिलें उमा महेश्वर संवादे स्वरोदय सम्पूर्ण ॥ मिति फाल्गुन कृष्ण ३० श० संवत् १९०१।

विषय—स्वरोदय का ज्ञान।

संख्या ४ बी. विक्रम बत्तीसी, रचयिता—अषैराम (भरतपुर), कागज—बाँसी, पत्र—३२, आकार—८ X ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८१२ वि० = १७२५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ चौसठि कला कवित्त, मीठी तान गावै औ वजावै केले वाजिन को, नाचि के रिझावै षेले नट की कलान में। गृन्थन को लिखे अस वस्त्र वड़ी काढ़िबे को, फलन विकार धोवे वुद्धि की छलान में ॥ फूलनि विछावै अंग अंवर बनावै तन सोधो लगावै हेम रचना चवानि में ॥ सेज चुनि जानें ओसु काय के भिजाय जाने, चित्र लिषि लावै सवै छवि की छलान में ॥

अंत—प्रजा अठारह भाँति के, अकर कीये सरसाय। जो तुम रासे भोज नृप, चढ़ो सिंहासन जाय ॥ हरिगीत छन्द ॥ वदनेस श्री जदुवंस भूपति सकल गुण निधि जानिए। तिहि अरिन के वल खंड कीये कृष्ण भक्ति बखानिए ॥ तिहि सुवन लाल सुजान सिंध बिलास कीरति छाइयो। कवि अषैराम सनेह सो पुतरी सिंघासन गाइयो ॥ इति श्री सिंघासन वत्तीसी कवि अषैराम कृत तृतीयोध्याय ॥

विषय—कवि-परिचय—अठारे से वारे गिनो, संवत सर घन सूर। श्रावण वदि की तीज को, ग्रंथ कियो परिपूर ॥ भूतनाग जमना निकट मथुरा मंडल माँझ। तहाँ भये भीपम जुकवि कृष्ण भक्ति दिन साँझि ॥ ताके मिश्र मलूक पुनि अति सुन्दर सब अंग। खोजत वेद पुरान में, कियो नहिं चित भंग ॥ तिहि घर गोविन्द मिश्र जू, परस राम सम तेज। तेज त्याग अनुराग में नवहिं सदा मदतेज ॥ दामोदर ताको प्रगट जो तिस अधिक प्रवीन। नवत रहें निज छत्रपति, विविध सुखासन दीन ॥ तिहि घर नाथूराम जू, प्रगटे दीन दयाल। जाचक जन सब देस के, धन दे किए निहाल ॥ मिश्र जगत मनि अवतरे, तिहि घर अधिक प्रवीन। व्रज मण्डल विख्यात जस, विद्याभूषण कीन ॥ अखैराम ताके

भये, सहसु कवितु अनुसार । जो कछु चुको होयसो, लीजो ग्रन्थ सुधार ॥ इसमें राजा विक्रमाजीत की सिंहासन बत्तीसी की कहानियों का अनुवाद पद्य में कवि ने किया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता प्रसिद्ध कवि भीषम, जिन्होंने समस्त भागवत का अनुवाद किया है, के वंशज हैं:—

भीषम > मलूक > गोविन्द मिश्र > दामोदर > नाथूराम > जगतमणि > अपैराम

संख्या ४ सी. विन्द्रावन सत, रचयिता—अपैराम, कागज—मूँजी, पत्र—६, आकार १० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)– ८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पूर्णचन्द्र पंडित, मुकाम—पनवारी, डाकघर—रुनकुता, तहसील–किरावली, जिला—आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—अथ विन्द्राबन सत लिष्यते ॥ स्वामी कार्तिक उवाच ॥दोहा॥ जहाँ काल की गति नहीं, रवि ससि सकै न जाय ॥ अग्नि प्रवेश करे नहीं, अैसो देश बताय ॥ श्री महादेव उवाच ॥ चौपाई ॥ अैसो देस याहि घट माही ॥ काल जंजाल जहाँ व्यापक नाहीं ॥ सात किवार द्वार है सही ॥ पिरकी एक द्वार है सही ॥ तिनकी अब सुनि कै सब कथा ॥ सातों भूमि विराजै जथा ॥

विषय—(१) वृन्दावन का माहात्म्य तथा शोभा जो महादेवजी ने स्वामी कार्तिकेय से वर्णन की है । (२) सखियों के श्रृंगार का वर्णन (३) रासक्रीड़ा का वर्णन ।

संख्या ५ ए. अष्ट दृष्टि भेद, रचयिता—अखंडानन्द, कागज—स्यालकोटी, पत्र—४, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डूँगर पंडित, मु० पनवारी, डाकघर—रुनकुता, तह०–किरावली, जिला—आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अष्ट दृष्टी भेद कथनं ॥ दोहा करि प्रनाम गुरु चरन कूँ, अगनित वारम्वार ॥ तिह प्रताप उर होत है, प्रगट विवेक विचार ॥ राम दास गुरु चरन कौ, महत न वरन्यौं जाय ॥ सदा ध्यान तिनकौ करौं, अन्तर वृत्ति लगाय ॥ तिन चरनन प्रताप तें, कहूँ अए अव दृष्टि ॥ तिन आवांतर जानीयैं, उदै भई सब श्रृष्टि ॥

अंत—अत्यल्प सोई जह्नु जौन कोई ॥ सर्वैमूल भूतं जसर्वातु सूतं ॥ दोहा ॥ यह ! अष्ट दृष्टी कही, उदै अन्त कौ भाय ॥ श्रष्टि सवैया ते उदै याही मध्य समाय ॥ राम दास गुरु कृपा तें, सबै भेद कहि दीन ॥ सदा अखंडानन्द जो, तिन चरणन आधीन ॥ इति श्री अष्ट दृष्टी भेदः समाप्तम् ॥

संख्या ५ बी. अष्ट्रावक गीता, रचयिता—अखंडानन्द, कागज—स्यालकोटी, पत्र—३६, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७८, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८९३ वि० = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री डूँगर पंडित, मु० पनवारी, डाकघर—रुनकुता, तह० किरावली, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश)।

आदि—अथ अष्ट्रावक्र भाषा लिष्यते ।। दोहा ॥ जनक उवाच ॥ ज्ञान मुक्ति वैराग्य सो कैसे प्राप्ति होइ ।। दीजै भेद वनाय अव संशय रहै न कोइ ।। ऋषि उवाच तात मुक्ति जो चाहिये, विष ज्यौं विषै विसार ॥ क्षमा दया सन्तोष, सत आर्जिवता उर धार ॥ चौपाई ॥ भून भनीर अग्नी अरु बात ॥ यै तो तून होय सुनि तात ॥

अंत--संवत् अठारै सै नवै, तीन अधिक पुनि जानि ॥ पौष शुक्ल तिथि चौथि है, भौमवार सुभ जानि ॥ लिष्यौ अखंडानन्द यह, करि विचार वलदेव ॥ श्री रामदास गुरु चरण की, सरण अभय सुष लेव ॥ छप्पय ।। यह मुनि अष्ट्रावक्र ग्रंथ उपदेश कियौ तब ॥ महाराज वैदेहि आपनौ आय कह्यौ जब ॥ भर्म नष्ट जब भयौ भूल अर ज्ञान बसायौ ॥ द्वैत दृष्टि गत भई सकल जग आप वषायौ ।। कृत कृत्य भयौ तिनकी कृपा अचल सिंधु ज्यों ह्वै रह्यौ ॥ गुरु के प्रताप निज पुण्य बल जगत बीज सवही दह्यौ ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रन्थ में राजा जनक एवं अष्टावक्र का वार्तालाप हुआ है ।

आत्मानुभव, गुरु उक्ति	पृ०	१--३
अनुभव तथा उल्लास शिष्य की युक्ति वर्णन	पृ०	३--६
गुरु का उपदेश	पृ०	६--८
चार संकल्प, तथा निराकार वर्णन, बंध-मोक्ष वर्णन	पृ०	८--१४
ज्ञान, सुसम्पत्ति शान्ति वर्णन	पृ०	१४--१८
गुरु तत्वोपदेश, विशेष उपदेश, तत्वज्ञस्वरूप वर्णन	पृ०	१८—२६
विश्राम, जीवन्मुक्ति वर्णन	पृ०	२६--३३

विशेष ज्ञातव्य--स्वामी अखंडानन्द ने प्रस्तुत ग्रंथ का संस्कृत से पद्यानुवाद किया है । साहित्यिक दृष्टि से ग्रंथ कोई विशेष महत्व का नहीं है । 'विवरण' में अखंडानन्द का नाम नहीं आया है । रचनाकाल निम्नलिखित दोहे में दिया है । दोहा ॥ संवत अठारै सै नैव तीन अधिक पुनि जानि ॥ पौष शुक्ल निधि चौथ है, भौमवार सुभ जानि ॥

संख्या ६. स्याम सनेही, रचयिता—आलम कवि, पत्र—२४, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—९३६, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० सियाराम जी शर्मा, स्थान—करहरा, डाकघर—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—लगु जीजमानहिं ॥ टीकालगन लाग है भले । निज वेगि चँदेली चले ।। पाती में लिषि विविध जनाई । संग सेन्या वहुत बुलाई ॥ चले वेगि जिय आनंदुमानै । नगर चंदेली ते नियराने ॥ सुनि राजा आनन्दित भारी । सिंघासन अरु सभा संभारी ॥ मंदिर तार वजावत आये । आगेहि लोग चहलै धाए ।। षिनु वाहिर षिनु भीतर आवै । भीति भूमि सब मन्दिर बतावै ।। आनन्द उमँग्यो उर न समाई । अन अन पाट पहिरत जाई ॥ कनक मुकट मनिगन उर माला । राजसिंगार सजे ससिपाला ।। दोहरा ।। तप किनिहि निधि दीजीयहि, मद्द सेवहि जिहि चाहि । विन उद्दिम ते पावही, सषन कि संपति आहि ॥२६ ॥ चौपही ॥ सिंघासन पर बैठ्यौ आई । राज वरेकी लयौ बुलाई ॥ आइ बेरेकि

न टीका कीन्ह । लग्न काढ़ि कागरु कर लीन्ह ॥ मंगल गीत बधाये बाजहिं । अनघन वसन देत सुष साजहिं ॥ पाटंवर जो जेहि मन भावहि । अपने लोग सबै पहिरावहि ॥ दंत वक्र कहँ न्यौति बुलायन्ह । कटक साजि तुम वेगिहि आइन्ह ॥ जरासिंध को चंदन पान । पठए संग पानित परधान ॥ पत्री लिषी बेगि पगु धारहु । राइ आइ मम काज सँवारहु ॥

अंत—हुलसहिं गावहिं मंगल नारी । मिलि मिलि देहिं भावती गारी ॥ वासुदेव बड़ौ काजु यह कीनै । पूतहि पिता दूसरौ दीनै ॥ विदित नंदसुत सब जग गायो । यह सुनि लाज अधिक जिय आयो ॥ तुम्हरी माया विदित तिहुँ लोई । हितु सब जात साथ लै सोई ॥ सोई सोई रमै जाहि जिउ भावै । तोहि कान कछु लाज न आवै ॥ फूफी जहै सील वतु लीनै । वारी वैस अलिंगनु दीनै ॥ मन भावत कौने हितकारी । व्याही गई पंच की नारी ॥ जो यह रीति अभै तुम कीनी । सषी सुभद्रा सौं पढ़ि लीन्हीं ॥ चोरि चोरि जाकौ पय पीजै । ताही कान्ह अलिंगनु दीजै ॥ रीति जहै तुम्हरै चलि आई । विदित वात जहँ वेदनि गाई ॥ सबहि बात अंतर नहिं भाई । तजि ब्रजु लै द्वारिका वसाई ॥ गारी सुनत कि मन मुसिकाये । और जलाजन ······· ॥ × × ×
कै गनि आक अरथ वहि मोती । कथा मांझ पोइन्ह सब जोती ॥ प्रेमरु भक्ति ताहि मन भायो । करै कंठ जग सोभा पावै ॥ प्रीथी सब अंग सुन्दर देही । नाम धर्‍यौ तिहिं स्याम सनेही ॥ कीन्ही आपु समुझिकैं कारन । प्रगट भये जग के निस्तारन ॥ दोहरा ॥ आलम जीवहु जो पलक । इहि चंचल संसारु । दै अधारु पोषहु मनहिं । प्रेम भक्ति आधारु ॥ ८७ ॥ इति कवि आलमु विरचितं स्यामसनेही संपूर्न समापता ॥ छ ॥

विषय—कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का वर्णन ।

संख्या ७ ए. इश्कलता, रचयिता—आनन्दघन, कागज—बाँसी, पत्र—६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० वि = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्रसैनी, बेलनगंज, आगरा ।

आदि—श्री कृष्णायनमः ॥ अथ इश्कलता लिख्यते ॥ छैल छबीलो साँवरो, गोर बधू चित चोर ॥ "आनंदघन" वन्दन करै, जै जै नन्द किशोर ॥ लगा इश्क बृज चन्द सौं, अधर अधिक अनूप ॥ तबही इश्कलता रची, आनन्द घन सुख रूप ॥ स्याम सुजान बिना लषै, लगे विरह के शूल ॥ तामै इश्कलता भई, घन आनन्द को मूल ॥ संयोगी सें इश्क सैं, इश्क वियोगी खूब ॥ आनँद घन चस्मो सदा, लग्या रहै महवूव ॥

अंत—दोहा ॥ आनन्द के घन छैल की, छबि निरषैं धरि ध्यान ॥ इश्कलता के अरथ कौं, समुझैं चतुर सुजान ॥ आँनन्द के घन छैल सौं, करले चित को चाव ॥ इश्क लता जो चाहिये, तौ वृन्दावन आव ॥ इश्क लता ब्रजचन्द की, जो बाँधै दै चित्त ॥ वृन्दावन सुषधाम सौ, लहौ नित ही नित्त ॥ इति श्री इश्कलता सम्पूर्ण संवत् १९०० अषाढ़ वदी ॥ ६ ॥

विषय—उपस्थित ग्रन्थ अरिल्ल छन्दों में है। इसमें श्री कृष्ण के वियोग की वेदना का वर्णन बड़ी ही मार्मिक कविता में किया गया है।

छन्द गोपिकाओं के रोदन पर भी घट जाते हैं और प्रेम विह्वल भक्त भी इसी प्रकार रो सकता है। अंत में कृष्ण से अपनी दुःख गाथा तथा विरह की जलन सुना कर कहा गया है कि वृन्दावन में आ जाओ और हम तड़फते हुओं के प्राण, दर्शनदेकर बचालो।

संख्या ७ बी. कवित्त संग्रह, रचयिता—आनन्दघन, कागज—बाँसी, पत्र—२०, आकार—१२ × १० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ कवित्त घन आनँद कृत लिख्यते ॥ मन मेरो घनेरो भयो अब कौन के आगे पुकार करौ ॥ सुख कन्द अहो व्रज चन्द सुनौ जिय आवति है तुम ही ते लरौं ॥ अन मोह भए जन मोहत हौ मन मोहन या विधि-याहि भरौ ॥ घन आनन्द ह्वै दुष ताप नचावत नाँव हि नाव धरौं ॥

अंत—गोर भय स्याम गोरी साँवरी ह्वै रही देषो। रुप की निकाई आजु औरे पेषयतु है। बदलि परी है प्रीति रीति परतीति नीति, निपट अचम्भे की समीति लेषियति है। दोषैं भूलियतु कछू कहत न आवै सषी, इनकी हिलग नई नई देषियति है। चिरजीयो जोरी घन आनन्द बरस यह, व्रज वृन्दावन ही में यौं विसेपयति है ॥ इति सम्पूर्णम्।

विषय—राधा कृष्ण शोभा अथवा उनके विचित्र शृंगार आदि के वर्णन के सवैया या कवित्त इसमें संकलित हैं।

संख्या ७ सी. स्फुट कवित्त, रचयिता—घन आनन्द, कागज—मूँजी, पत्र—१८, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४८, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जमनादास कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—सपने की सम्पति लौं भई हेम लोलें मई, मीन को मिलन सो तो जानू न कहा गयो। दीहा यथा की हौ जड़ताई जागि पागि पीर, धर धीर मन सोधन झरा गयो ॥ हाइ हाइ आगनि बढ़ी हीनता कहाँ लैहों। गए न लगे ई संग रंग हू जहाँ गयो। राषे आय ऊपर सुजान घन आनंद पै, योंह के फटत क्यों रे हीया फटन गयो ॥

अंत—घे-यो घट आय अन्तराय पट निपट पै, तामधि उज्यारे प्यारे पानुस के दीप हौ। लोचन पतंग संग तजे नतुऊ सुजान, प्रानहंस राषिवे कों धरे ध्यान सीय हौ ॥ अैसे कहो कैसे घनआनंद बताऊ दूर, मन सिंगासन वैठे सुरति महीम हौं ॥ झीठ आगे झोलों जो न बोलों तो कहा बसाइ, मोहितो वियोग हू मैं दीसत समीप है ॥

विषय—घनानन्द के वियोग, शृंगार और राधा कृष्ण के गुणानुवाद के स्फुट कवित्त इसमें हैं।

संख्या ७ डी. कवित्त संग्रह, रचयिता—घन आनन्द, कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—४३/४ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री श्रवणलाल हकीम, मु०—बसई, डाकघर—ताँतपुर, तह० खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—सवैया, देषिधौ आरसी लै बलि ने कुलसी है गुराई में कैसी ललाई। मानो उदोत दिवाकर की दुति दरसन चन्दहिं भेंट नशाई॥ फूलत कंजक कमोद लषै घन आनन्द रूप अनूप निकाई॥ तो मुष लाल गुलालहि लायकैं कैसो तिनके हिय होरी लगाई॥ रूप धरैं धुनि लौ घन आनंद सूझनि की दीठि सुतानौ। लोयन लेन लगाय के संग अनंग अचम्भे की मूरति मानौ॥ हौं किधौं नाहीं लगी अलगी सी लषी न परै कवि क्यों कु प्रमानौं॥ तों कटि भेद हैं किकनी जानत तेरी सौं राधे सुजान हों जानौ॥ रुप कै भारन होति है सों ही लजौ हाए मीचि सुप्यारी यों झूली॥ लागिये जातन लागी कहू निस यागिन होयल कौं गनि भूली॥ बैठिय छै जूहिय पैवन आजु कहा उपमा कहिये सम भूली॥ आय हो भोर भये घन आनन्द आपिन माझ तो सांगली फूली॥

अन्त—श्री मन मेरे कहा करी मैं तजि दीन चल्यो जू प्रवीन ह्वै तोसों। ल्याईन काहू बै औषि तरेहों कहे कब हूँ करि तेरो भरोसो॥ स्याम सुजान मिल्यो सुभली भई वावरे मों सो भरयो कितरोसौ॥ सोचत हों जीयमें अपने सपनैं नही घन आनन्द दौ सौ॥ कवित्त। विकल विषाद भरे नाही की नरफन किस मिनि हू लहकि बहकि यों जन्यो करै॥ जीवन अधीर पन मूरति पुकार सुनि आरन पपीहानि कूकनि कन्यो करै॥ अधिर उदेग गति देषिकै आनन्दघन पान विकस्यौ सौ वन वीथिवचसौ करै॥ बूँदन परत मेरे जान प्यारी तेरे बिरही को हेरि मेघ औसु निकस्यों करैं॥ तपनि उसास औघ रूंधी मैं कहाँ लौं दई बान वूझे सेननि ही उतर विचारियै॥ उकि चल्यो रंग खैसे राषीये कुल का मुष आन लेषैं कहौ कौन घूंघट उघारिये॥ जरि वर छार ह्वै न जाय हाथ अैसी बैस चित चढ़ी मूरति सुजान क्यों उतारिये॥ कठिन कुदान आय घिरी हौ आनन्दघन रावरी बसाय मो बसाइन उजारिये॥

विषय—श्रृंगाररस तथा भक्ति रसके स्फुट सवैया और कवित्त हैं।

संख्या ७ ई. वृन्दावन सत, रचयिता—आनन्द घन, कागज—मूँजी; पत्र—२८, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२३, खंडित, रूप—प्राचीन और जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७०७ वि० = १६५० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण, मु० व पो० कोसी कलाँ, जिला—मथुरा।

आदि—सकल जय लोक अवलोक वंदित सदा, प्रेम को सिंधु गति प्रीति अैसी। श्रवत मकरंद आनन्द उन्मत्त रस, अमल कल नवल छवि प्रिया जैसी॥ श्री राधा कारवन को केलि सुष, देत है हित लियै हरषि वृन्दादि तैसी। परम रस-धाम वृन्दा⋯⋯मम करो उदोत,⋯⋯⋯दुति तरन कैसी॥

अंत—कुण्डलिया। यह विनती भगवन्त की सुनहु रसिक दे चित्त। अपनो मों को जानिके दया करहुँगे नित॥ दया करहुँगे नित्त कहो यह भृत्य हमारे। जिहि तिहि भाँति निरन्तर यह रहो वन में डारो॥ श्री वृन्दावन आनन्द घन अति रस में रसवत। ......
.........जिय डरत हों यह विनती भगवन्त॥ १४५॥ दोहा॥ संवत दस सै सात सै औ सात वरष है जानि। चैत मास में चतुरवर भाषा कियो बखानि॥ १४६॥ इति श्री वृन्दावन सत सम्पूर्न॥

विषय— (१)

१—वृन्दावन की शोभा का वर्णन।
२—राधा और कृष्ण का यहाँ की कुन्जों में विहार।
३—वृन्दावन में देवताओं का वास श्रुति स्मृति धर्म्मशास्त्रों में वृन्दावन का माहात्म्य।
४—राधा कृष्ण की वृन्दावन में लीलाएँ।
५—यहाँ के वायु-स्पर्श मात्र से पाप मोचन।
६—वृन्दा तुलसी को कहते हैं, राधा और वृन्दा का एक स्वरूप (Oneness)
७—वृन्दावन की भौतिक श्री, ऋद्धि और सिद्धि का वास।
८—वृन्दावन के फूल, पत्ते, पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों की महिमा।
९—कवि परिचय (अस्पष्ट) और समाप्ति।

(२)

प्रथम दया पर मोद मोद जिहि मन को दीनो। श्री गुरु दया श्री हरिदास दया में भाषा कीनो॥ श्री माधो मुदित प्रसंस हंस जिन रति रस गायो। तिनको हौं निज अंस रहसि रस तिनते पायो॥ इष्ट चन्द्र गोविन्द वर श्री राधा जीवन प्रान धन। हित संगी रंगी भजन सुकहत सुनत कल्यान वन॥ × × × भाष्या साखा सोह वचन कोउ दीरघ कोउ नून। तामे दूष न दीजिए, होइ भक्ति करि सून॥

विशेष ज्ञातव्य—संस्कृत में महाप्रभु चैतन्य अथवा उनके किसी शिष्य का लिखा हुआ वृन्दावन शतक है। वैष्णव लोग इसका बहुत सम्मान करते हैं। यह उनकी दूसरी भागवत समझिये। इसका वाचन वृन्दावन तथा महाप्रभु के अनुयायियों में बड़ी धूम धाम से होता है। इसी विचार को लेकर ध्रुवदास तथा रसिक प्रीतम आदि ने वृन्दावन सत लिखे हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ आनन्द घन का है जो शायद खोज में सर्व प्रथम आया है। मालूम होता है यह संस्कृत ग्रंथ का भाषान्तर है जैसा कि कवि लिखता है "चैत मास में चतुर वर भाषा कियो बखानि"। आनन्द घन का नाम ग्रंथ की अन्तिम कुण्डलिया में तो आया ही है। बीच में भी एक दो जगह आया है। अतः रचयिता के नाम में कोई सन्देह नहीं रह जाता। इनके गुरू श्री हरिदास थे। उन्होंने इन्हें भक्ति का रसपान कराया था। लिपि बहुत ही अपठनीय है, अतः कठिनता से पढ़कर नोटिस लिया गया।

संख्या ८. आनन्दामृत वर्षिणी, रचयिता—आनन्द गिरि, कागज—मूँजी, पत्र—२४५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—

३८११, पूर्ण, रूप—अत्यंत प्राचीन जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९१५ वि०, लिपिकाल—सं० १९१७ वि०=१८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ओंकारनाथ शर्मा वैद्य, मु०—अवैधोंपुरा, डाकघर—किरावली, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम नमो। श्री सचदानन्द स्वरुप जो इन्द्रेश्वर टीका लक्ष्मी और शोभा और माया कूँ कहते हैं तीनौ करके अर्थ लगता है सच्चिदानन्द लक्ष्मीपति शोभावान याया के स्वामी माया करके युक्त परन्तु विशेष यो हें सच्चिदानन्द माया के स्वामी सच्चिदानन्द में तीनि पद हें सत् चित आनन्द अब यों। देखना चाहिये कि तीनि पद क्यौ कहे इसका यों कारण है जो केवल सत कहते है तो न्याय शास्त्रवाले आकाश कूँ भी सत् कहते है सो वह जड़ है इस लिए चित भी कहा वह दुःख रूप वा आनन्द रूप है।

अंत—जिसकी देवता में परम भक्ति और जैसी देवता में वैसी गुरु में है उस महात्मा कूँ कहे हुए ये अर्थ प्रकाश हौंगे अन्य कूँ नहीं होवें यो श्रुति का अर्थ है। श्री मत्प-रंहस परिव्राज स्वामी मलूक गिरि जी महाराज उनके चरणों कमलों का पूजने वाला अनुचर शिष्य आनन्द गिरि नामा ने यो ग्रन्थ आनन्दामृत वर्षिणी मुन्सी वनसी धर जो जिनके किंचित गुण प्रथम अध्याय में लिखे हैं। × × × मिती द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दोयज रविवार सं० १९१५ में विनिर्मित करके समाप्ता।

विषय—स्तुति—१—२

विद्वानों से प्रार्थना—२—८

ग्रन्थों के नाम जिनका विश्लेषण इसमें किया गया है—९—१३

गीता और वेद से तुलनात्मक ज्ञान का उपदेश—१३-१८

शेष ग्रन्थ में जीन, ब्रह्म, आत्मा आदि गहन विषयों का विस्तार पूर्वक विवेचन है।

विशेष ज्ञातव्य—वेदान्त विषय का इतना बड़ा ग्रंथ आनन्द गिरि नामक किसी गोस्वामी का लिखा हुआ है। इनके गुरु का नाम स्वामी मलूक गिरि था और आश्रयदाता कोई मुंशी वंशीधर बतलाए गए हैं। निर्माणकाल तथा लिपिकाल का निर्णय नहीं हो सकता। ग्रन्थ का गद्य रोचक है।

संख्या—९. सेऊ समन की परिचई, रचयिता—अनंतदास, पत्र—४, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० श्यामलाल जी, स्थान—आरौंज, डाकघर—शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ सेऊ समन जी की परची लिष्यते॥ दोहा॥ साधू आए अगम तैं, पुरमें कीयौ गौन। ठौर ठौर बूझत फिरै, संमन का घर कौन॥ १॥ आइ द्वार ठाढ़े भए, तव तिय कीन्हो सैन। जब संमन मुख मोड़िकैं, देष्या अपने नैन॥ २॥ संमन सेरी सांकड़ी, क्यू करि टलिए जाई। साधू आये प्रीति करि, मिलिए उज्जल भाई॥ ३॥ संमन उठि सनेह करि, दरसन का फल लेह। मुष छप यानी वमैं,

सन मुख होई सिर देह ॥ ४ ॥ संमन पर दछना दई , मिले जु अंग लगाइ । बहुत उमँग मनमें भयौ, सो कंत न छाड़ो जाय ॥ ५ ॥ सेऊ आए दौड़ि करि, परस न हुवौ संमन । हू बलिहारी साधु की, तपति मोहि तंन ॥ ६ ॥

अंत—सेऊव वाच ॥

ए उठत ही यूं कह्यौ , सांधा लीयौ मुव जान ।
राम कह्यां सबदिन भलो , षरौ भलौ दिन आज ॥ ६१ ॥
बात नग्र जाइ पर वरी , सब नै जाराणै भाव ।
सुनि करि चौड़्या देषनै, कहा रंक कह राव ॥ ६२ ॥
सकल आइ चरणां पऱ्या , महिमा बँधी अपार ।
मंगल जस इक राम कौ , गावत है नर नारि ॥ ६३ ॥
तव रामराय क्रपा करी , दूरि कीया सब दूष ।
तव राजा आइ चरणां पऱ्यो , भयो समन की सीष ॥ ६४ ॥
पुर पाटण मैं नीय ज्या , दोन्यों हरि का संत ।
सेऊ संमन की कथा , वरणी दास अनंत ॥ ६५ ॥
संमन सब जग मंत्रकरि , वैरन करि इक ठाम ।
सब जग मंत्र न करि सकै , तो एक मंत्र एक गांय ॥ ६६ ॥

॥ इती सेऊ समन जी की परची संपूरण ॥

विषय—संमन के घर साधुओं का आगमन, घर में कुछ न होने पर उसके पुत्र का चोरी करना, राजदंड स्वरूप सूली पर चढ़ना और साधुप्रताप से उसका जीवित होना तथा रहस्योद्घाटनोपरान्त समस्त नगरमें प्रसन्नता के साथ ईश्वर की महिमा का प्रचार ।

संख्या १० ए. मदनमोदनी, रचयिता—बैजू (ग्वालियर), कागज—काल्पी, पत्र—३७, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६०, पूर्ण, रूप—अत्यन्त प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ वि० = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बिहारीलाल जैन, मु० पो०—रुनकुता, तह०—किरावली, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—श्री गनेशाय नमः ॥ श्री पोथी मनमोदनी लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति हरि गुरु साध पद, प्रनऊँ पान जुग जोर ॥ मन मोदनी वानी मधुर, सुफल होय जिय मोर ॥ बिनती सिष्य सुदेश करत है कर जोरे लव सनमुष देखै ॥ गुरु मुष मनहु मयंक लव, न्याचित चकोर निजु सुच रुचि लेषै ॥ उर उदसौ सन्देह समन हित पूछत प्रीति पढाय विसैषै ॥ महा दुष्ट षल पाँचके आँचै नहीं वाँचत मन जर तनि मेवै ॥ काम कहै कर कामिन कौ संग क्रोज कहै पर गरदन मारौ ॥ मदसर कहै मति माधौ जानौ लोभ कहै धन गहिसत डारौ ॥ मोह कहै जग साचौं सदा सुष अवर नहीं कहुँ ठौर तिहारौ ॥ 'बैजू' जन यह पाँच पंच असत हये कमन कह करै विचारौ ॥

अंत—दोहा ॥ माया ब्रह्म को जोग जुग, करै निजूयन कोय ॥ सो प्रानी यह जगत

में, जीवन मुकता होय ॥ जो नर कैहै सुन है, समझ है मन चित लाय ॥ इति श्री मन मोदिनी ग्रंथ सम्पूरण सम्वत् मिती वैसाष बदि ५ संवत् १८८७ ।

विषय—पाँच शत्रु अर्थात् काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि के विषय में शिष्य

संख्या १० बी. मति बोधिनी, रचयिता—बैजू (ग्वालियर ?), कागज—काल्पी, पत्र—५०, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण, रूप—अत्यन्त प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८७ वि० = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बिहारीलाल जैन, मु० व पो०—रुनकुता, तह०—किरावली, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—श्री रामाय नमः ॥ अथ पोथी श्री मतिबोधिनी की लिष्यते ॥ दोहा ॥ "बैजू" जन की वीनती, सुनिये श्रीपति सोय ॥ चरन सरन छूटै नहीं, मरन जुरन वर होय ॥ बैजू विनती राम सौं, करिये बारम्बार ॥ राम सो साहिब सन्त हित, मुक्त सवारन हार ॥ सर्व देव कौं सेव सुष, लेव राम पद वन्द ॥ भेव भूर भुवजा सुजस, बैजू जन वद छन्द ॥ पार ब्रह्म परचै बिना, प्रस्न देव नहि होय ॥ जर तजि साषा सींचि जे, नीच कहावति सोय ॥

अंत—भक्त ग्यान वैराग्य को रूप विलग विलगाय ॥ तातैं यह मन बोधिनी, नाम सो कथा धराय ॥ कहै वहै मन मोद अति, सुनै सुध्य उपजाय ॥ बैजू जथा मुकर मुष जब, देषैं तव पाय ॥ श्रोता वक्ता जुगल जग, परम विवेकी चार ॥ अक्षर अनमिल भूल मम, लेहो सोधि सम्हार ॥ कहै सुन है जो कोई ते हुय है सुष षान ॥ बैजू जन सब दिन करत भक्त पक्ष भगवान ॥ इति श्री मतिबोधिनी सम्पूरन समाप्त बैसाष वदि २ संवत् १८८७ लिषतं नारायण दास पठनार्थं श्री वालकदास जी के ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में 'बैजू' के ३७२ दोहे आये हैं और इनका विषय परब्रह्म, ज्ञान, वैराग्य, योग-भक्ति, जीव-माया, दुखः-सुख, सत्संगति, गुरुसेवा, संत महिमा, सत्य,

संशय, हानिलाभ, स्वार्थ, परमार्थ आदि सम्बन्धी उपदेशात्मक है। इन विषयों का कोई क्रम नहीं है।

संख्या ११. षड्नारी षट वर्णन, रचयिता—बलभद्र, कागज—मूँजी, पत्र—१६, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, खंडित, रूप—अत्यन्त प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र वकील, ग्राम—ढोलपुर, तह० फीरोजाबाद, जिला—आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—षड़ नारी षट वर्णनं ॥ दोहा ॥ कन्या गौरी समझ के बाला रुनी जानि ॥ प्रोढ़ा वृद्धा भामिनी, ए षट वेस बषानि ॥ कन्या वर्णन ॥ विधानक छन्द ॥ सात बरस परजंत सु कन्या जानियै ॥ तासौ काम कलोल कभी नहीं मानीयै ॥ बालापन कौ षेलु सदा तिह भावई ॥ फानि हा कछू कछूक लोल महि आवई ॥

अंत—अथ पीड़री वर्णन ॥ किधौं वैस वेलिकै कौ वेवनु वट नायो विधि, सोभा घर सुघर सकल सुष दाई की ॥ कोमल अमल दल केतुकी कलिका की, केशरि कलाई मानौ मनमथराई की ॥ किधौं बलिभद्र सोधीक सकल सुहाग गुन, सुचिर रुचिर रचि पीड़े दै बनाई की ॥ आभा पंड सौतिन की श्रेप्पन सौ माड़ी तानें, कैधों पैजिनीय तेरी पीड़री सुभाई की।

विषय—कन्या, गौरी, बाला, तरुनी, प्रौढ़ा और वृद्धा वर्णन १—२

व्यभिचारिणी, विरक्ता, अनुरागिणी और कामवंती, कामकला वर्णन २—३

लिंग आदि स्थूल करण की औषधि और स्तम्भन ३—५

नारी दूषण ४—५

दूतियों के भेद ५—६

बाजीकरण ६—८

पुष्टीकरण एवं गुटिका ८—१०

वाणी, हास, वीरा, मुख, सुगन्ध और चिबुक का वर्णन १०—१२

भुज, हथेली, अँगुली मेंहदी, रोम राजी, कुच, कुच अग्रलाली, कुच अग्र स्यामता, कुच संधि, कंचुकी रोम राजी वर्णन पृ० १२—१३

रोम, त्रिवली, नाभि, कटि, जंघ, पीड़री आदि का वर्णन १३—१६

संख्या १२. स्वरोदय व वेदान्त, रचयिता—बालदास, आकार—८ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२८, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रघुनाथप्रसाद जी, स्थान—रुधैनी, डाकघर—सिरसागज, जिला—मैनपुरी।

आदि—चौपाई ॥ चैत परीवाला गत केरी। ता दिन श्वांस वैठिकैं हेरी ॥ प्रात छित वामेश्वर वहई। परिजा सुषी साल भरि रहई ॥ जो जल चलै इन्दु के स्वांसा। तौ जग आनंद मोद हुलासा ॥ प्रातहि छिति दहिने श्वर वहई। तब संवत जग मद्धिम अहई ॥ जो प्रातह सुषमनी विशाला। क्षत्र भंग व्याकुल महिपाला ॥ जो सुषमनी मपवक चलई। प्रातः काल दुषी जग लहई ॥ दोहा ॥ काग ब्योहरौ बाटिका, बैठव सुनव पुरान। अस्थिर कारज जगत के, चंन्द्र जोग परधान ॥ १५ ॥

अंत—काम क्रोध भय मोह वपानी। छद्वा क्रिया चक्र को जानी॥ माया लोभ नींद जमुहाई। कफ पित वात छींक चतुराई॥ ऐ सव ऐक अनेक निकाया। ते सव शाहिं कही गिरिराया॥ प्रथमहिं इन्द्री पाँच उदारा। तिन्हौं कहो केहिं मेटन हारा॥ जिह्वा स्वाद सकल कापावै। जुदा जुदा तेहि भेद वतावै॥ नयनो लोक भरि रूप अहारा। प्रथक् प्रथक् करि दृत्त विचारा॥ नाशा वास सकल को पावै। जुदा जुदा तेहि भेद वहावै॥ श्रवन करै रव भछन नीके। तेहिते यक यक रश ठीके॥ मदनांकुश रति करै अहारु। ते जग जन्म वनावन हारू॥ तेहि तेई दिन मेटिन जाती। शंकर कहो यहि केहि भाँती॥ [शेष लुप्त]

विषय—स्वरोदय विचार, कर्ता व कर्म वर्णन एवम् मीमांसादिक मतों द्वारा कर्मादि निर्णय।

संख्या १३. हनुमानस्तोत्र (अनु०), रचयिता—बलदेव, कागज—सादा, पत्र—१०, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० तुलसीराम वैद्य, मु० व डाकघर—माट, जिला—मथुरा।

आदि—जाको नाम लीन्हे ताल दीन्हे फट स्वाहा कहै, कांपै भूत प्रेम यक्ष राक्षस बैताल है। देवी देव दानव पिशाच तन सहत आंच, भागैं ठौर छोड़ यम काल मृत्यु व्याल है। राम सिय प्यारो औ प्रभंजन दुलारो, धीर वीर पीर भंजन जो अंजनी को लाल है। सोई लाल मूरति को ध्यावै बलदेव बाल, दीन न दयाल रूप दुष्टन को काल है।

अंत—पवन सुत संकट कसन हरै। सुमरण नाम अमंगल भाजत, मंगल भवन भरै। जो जन भजन करत कौनि हु विधि, तेहि यम दूत डरैं॥ ताके पाँउ परत इच्छित फल, जो नित पाँऊ परै॥ जन बल्देव रहै शरणागत, निर्भय ताहि करै।

विषय—हनुमान जी की स्तुति।

संख्या १४. उल्था करीमा की नीति प्रकास, रचयिता—माथुर बल्देव कवि (रामपुर), कागज—स्यालकोटी, पत्र—२७, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र वकील, ग्राम—ढोलपुरा, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—अथ उल्था करीमा की नीति प्रकास लिष्यते॥ चौपाई॥ ए हरि हम पर कीजे दाया। हौ फँसौ लोभ मद माया। तुम बिन को दुख जाने मेरो। तुम पापिन को पाप निबेरो॥ खोटे मग से हमें बचावो। पाप क्षमा करि धर्म्म दिखावौ॥ दोहा॥ अम्बर धरती जिहि रच्यो, रचे चन्द्र और सूर॥ ताको हौं बन्दन करौं, जो व्यापक भरपूर॥

अंत—छप्पै॥ सादी शेख प्रवीन नीति नीकी गाई॥ कही पारसी माह स्वच्छ सुन्दर कविताई॥ भाव अर्थ को समुझि यथा मति हरिने दीनी॥ माथुर कवि बल्देव दास वृज भाषा कीनी × × × सो नवाब साहिब मन भाई। यह अज्ञा कहि मोहि सुनाई॥ जाको व्रज भाषा करि दीजै। छन्द चौपई जग जसलीजै॥ शहर रामपुर राज सु राजै। जिनको जस देसन में छाजै॥ अरबी पढ़ै पारसी बानी।

संस्कृति भाषा सुख दानी ॥ सब के ग्रन्थन पढ़ै पढ़ावै । कवित दोहरा आदि बनावै ॥
× × × दाता कवि कुल के सुख दाई । कहँ लगि तिनकी करौं बड़ाई ॥

विषय—१—परमात्मा की स्तुति २—चेतावनी आपको ३—बड़ाई दया की
४—दान की प्रशंसा ५—कृपण की निन्दा ६—विद्या की बड़ाई
७—निन्दा मूर्ख की ८—बड़ाई न्याय की ९—अन्याय की निन्दा
१०—बड़ाई संतोष की ११—निन्दा लोभ की १२—बड़ाई भक्ति की
१३—निन्दा कलियुग की १४—बड़ाई प्रेम की १५—भलाई की प्रशंसा
१६—धन्यवाद की बड़ाई १७—धीरज का महत्तम १८—सत्य की महिमा
१९—निन्दा झूठ की २०—रचना ईश्वर की २१—वैराग्य वर्णन
२२—कवि परिचय तथा उसके आश्रयदाता का वर्णन ।

संख्या १५. विचित्ररामायण, रचयिता—बल्देवप्रसाद वैश्य (भरतपुर), कागज—स्यालकोटी, पत्र—१५३, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३=१८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अयोध्याप्रसाद पाठक, वकील, गुड़ की मण्डी, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ विनय करत हौं प्रथम ही, गणपति पद सिर नाय ॥ जिनके सुमरण ध्यान तें, उर अज्ञान विलाय ॥ कवित्त-मंगल करन औ हरन अमंगल सब, दारिद विदारन हैं टारन कलेस के ॥ असुर संघारन हैं सारन सकल काज, वारन वदन धाम आनन्द विसेस के ॥ सोभित परस पानि सेवक सुष निधान । हारन कौं अथ तम सम हैं दिनेस के ॥ विपति निवारन है तिहूँ ताप जारन हैं, विघन विडारन हैं सुवन महेस के ॥

अंत—पुनि मिश्र दामोदरहि नै क्रम सहत विरच्यो आनिकैं ॥ यह महा नाटक विश्व की रक्षा करौ सुष ठानिकैं ॥ छन्द पद्धरी-पुनि ताँते यह नाटक महान । तिहु लोकन को पावन प्रमान ॥ वरचन्द्र वंस मैं प्रकट चन्द्र । बलमन्त सिंह वृज अवनि इन्द्र ॥ जग जाको जस जाहर अपार । गुन सागर दाता मति उदार ॥

\+ + + +

तिनकी अनुसासन लहि उदार । कुल विदित वैस्य षंडेलवार ॥ बलदेव नाम कवि ने विचित्र । यह राम चरित भाषा पवित्र ॥ दोहा (रचनाकाल) त्रय नभ नव ससि समय में माघ पंचमी स्वेत ॥ पूरण कीनौं रामजस, गुरु दिन हर्ष समेत ॥ यह सकल अवनि उदार तिहि मधि विदित वृज अवनी भली ॥ तिहिं कौ आधी सम दीप मणि बलमन्त सिंह महावली ॥ तिन हेत कवि वलदेव नै सुविचित्र रामायण कृतं ॥ श्री राम संगर विजय विसद चतुर्दर्शीक समाप्तम् ॥ लिखितं ब्राह्मण गिरधर ॥

विषय—वंदना तथा भरतपुर नगर का वर्णन—पृ० १—२ तक । राम का विश्वामित्र के संग जाकर उनके यज्ञ की रक्षा करना, मिथिला पुरी में जाकर सीता स्वयंवर में सम्मिलित होना, धनुष भंग करना, परशुराम का आग बबूला होकर वहां आना, राम का

उन्हें शान्त करना, विवाह होना—पृ० २—१६ तक। राम-सीता का विलास वर्णन—पृ० १६—१९। दशरथ का आखेट के लिये जाना, धोखे से अन्धे-अन्धी के पुत्र श्रवण का वध हो जाना, राजा का प्रायश्चित करना। अन्धे-अन्धी का श्राप देना, रानी कैकेयी द्वारा सीता का आगमन अवध में अमंगलकारी बतला कर रामवनवास तथा भरत का राजसिंहासन ग्रहण करने का वर माँगना, राम का बन चले जाना, भरत का विलाप करना और राम को लौटाने के लिये वन जाना। राजा दशरथ का देहावसान होना, भरत का निराश होकर लौटना। पृ० १६—२९ तक। पंचवटी में सूपर्नखा के नाक कान का काटना। पृ० २९—३६ तक। राम विलाप. जटायु-मरण, रामचन्द्र की हनुमान से भेंट होना, हनुमान का बहुत आदर करना, सुग्रीव से मैत्री होना, वालिबध, सीता की खोज के लिये राम का व्याकुल होना, हनुमान का समुद्र लाँघकर लंका जाना, सीता को आश्वासन देना, अहिरावण का हनुमान को पकड़ना, हनुमान का लंका में आग लगाना एवं लौटकर राम को सन्देश देना—पृ० ३६—६४ तक। रामचन्द्र का सेना संघटन करना, लंका के लिये कूच, समुद्र से लक्ष्मण की खरी-खोटी बात चीत, सेतु बांधना, बानरों का उत्साह पृ० ६४—६९ तक। अंगद का राम का दूत बनकर रावण के पास जाना और रावण को राम से समझौता करने के लिये समझाना, रावण का क्रुद्ध होना और दूत को मारने के लिये उद्यत होना पर अन्त में छोड़ देना। पृ० ६९ से पृ० ८३ तक। मन्दोदरी का रावण को समझाना, रावण का मन्त्रियों से परामर्श करना, पृ० ८३ से ९२ तक। दशमुख का माया रूप धरना पृ० ९२ से ९८। घनघोर युद्ध होना, कुम्भकर्ण बध- पृ० ९८—१११ तक। मेघनाद बध वर्णन—पृ० १११—११६ तक। लक्ष्मण का शक्ति से घायल होना, हनुमान का वैद्य को लंका से उठाकर लाना, संजीवनी बूटी के लिये हिमालय जाना, लक्ष्मण का पुनर्जीवित हो उठना, राम का फिर संग्राम करना, रावण बध और राम का विजयी होना। ११६ से १५२ तक।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ दामोदर मिश्र कृत संस्कृत के हनुमन्नाटक का पद्यानुवाद है जिसे महाराज भरतपुर बलवन्त सिंह के आश्रित श्री बलदेव कवि ने किया है। अनुवाद अत्यधिक स्वतंत्र है। काल संवत् वि० १९०३ है। कविता इस ग्रंथ की इतनी अच्छी है कि कवि की गणना अच्छे कवियों में होनी चाहिये। खोज में यह ग्रंथ उल्लेखनीय है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है यह अभी तक नहीं प्राप्त हुआ। निम्नलिखित छंदों में बड़ी ही मधुर कविता की गई है।

"मालिनी मधुमार छन्द चामर, अनुगीत, नाराच, प्रमाणिका, मुक्तादाम, रोला, पद्धरी तोमर, कवित्त, सवैया, कुंडलिया, दुपई निसानी त्रोटक, चाँवर स्त्रग्विनी, त्रिभंगी, कन्द, झूलना, मृत ध्वनि, हरिनाम, चर्चरी, दुर्मिला, पावकुलक, लीलावती, मोहिनी, भुजंग प्रयात, छप्पै सोरठा, दोहा, चौपाई, श्रंग विजयी आदि"

संख्या १६. रागरूप माला, रचयिता—बालकृष्ण कवि (स्थान-बोरटा), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०५ वि०, प्राप्ति-स्थान—पं० सीतारामजी पचौरी, स्थान—आमरी, पो० शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी।

आदि—सिधि श्री गणेशायनमः ॥ अथ रागरूप माला लिष्यते ॥ भैरव आदि परिवार वरनन कवितु, चरन गणेश गौरि सारदा महेश जू के, सुमिरिकैं राग रूपमाल कौ सचतु हौ । राग रागिनी की विधि अति जा निवें कौ, छन्दनिवचतु हौ ॥ जाके कंठ आभरण कीनै ते आनि भूप सभा, विच सोभै जनु जाही तै पिचतु हौ ॥ राइ रन जीत जू के वली भगवान दास हेत, रस रीति तिनके कवितानि रचतु हौ १॥दोहा॥ जाहि नामु जहिता नगरु । कहा भूमि छवि गांउ ॥ वापुर गोपी मिश्र सुत । बालकृष्ण कवि नांउ ॥ २ ॥ रहत वसत सो सदा । सुभ विद्या निजु धामु । अस वली तिहि देस सौ । वरनत है कवि नामु ॥ ३ ॥ चौहानी कुल दीप की । रजधानी कौ ठांउ । वस्तु वौ हौतु विस्तार सौं । नगर वोरटा नांउ ॥ ४ ॥ किभांनई सनै दुहु नदी । सकल कला सुष धांमु । वन उपवन जहां वहु घनै, यौं हाथ वाटिका तांमु । × × × × संवतु सत्रह सै वरष, ताहि आगरी पाँच । राग रूप माला रची, सकल महामत साँच ॥ १६ ॥ साहि जहाँ जहँ चक्कवै, तपतु तेज जसु भांन । सप्त दीप नव खंड कैं, कय वरनो ससि आंन ॥ १७ ॥ तिहि संवत तिहि राज तिहि, राग रूप की माल । भौईमा श्री भगवान कैं, हेत रची कवि वाल ॥ १८ ॥ कार्तिक वदि भ्रगु सप्तमी, नपत वरवस नाम । कीनी सकल रसिकनि हित, वालकिस्न सुपधाम ॥ १९ ॥

अंत—॥ अथ कानर राग कौं सवैया ॥ हाटकते तनु राजत है वहु वातक हैं वहु प्रेम सौं भीनौं । वस्तर पीत जु वारिज माल सु माथै क्रीडु वन्यौं जु नवीनौं ॥ तूंन तरंग निरंतर मैं सम कारनौ गावत संत प्रवीनौ । तार दुहूं करवालु कहै कवि ऐसो निरंतर कौतुक कीनौं ॥ इति श्री मेघ मल्लार परिवार वरननं पष्टमो-प्रभद ॥ इति श्री रुपमाल संपूरण ॥ श्री राम ॥

विषय—राग रागनियों का वर्णन और उनके गायन का समयादि निरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में रागों के स्वरूप और उनके विस्तार का वर्णन है । रागों की भार्या और पुत्रों का विवरण भी दिया गया है । प्रत्येक राग का वर्णन प्रायः सवैयों में किया गया है । यह ग्रंथ गोपी मिश्र के पुत्र बालकृष्ण का रचा हुआ है । इन्होंने चक्कवै-मुगल सम्राट शाहजहाँ के राज्य में अपना अवस्थित होना इस ग्रंथ में प्रकट किया है । अपना निवास स्थान इन्होंने वोरटा चौहानी कुलदीप की राजधानी बताया है । वहाँ किकान और ईसन दो नदियों का होना वे कथन करते हैं । यह ग्रंथ इन्होंने राय रणजीत जू के वली भगवान दास के लिये रचा । रचना संवत् १७०५ में हुई ।

संख्या १७. द्वादश महावाक्य विचार, रचयिता—वनमाली, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{3}{4}$ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौधरी रुस्तम सिंह, स्थान—धमौआ, जिला—मैनपुरी ।

आदि—श्री किसारी रमने जयति ॥ षट्शास्त्र वेद द्वादश महावाक्य विचार ॥ परमात्मा को कीजै परनाम । जाकी महिमा चिदघनराम ॥ चारि वेद षट शास्त्र कहे । अपनी

महिमा में निर्मये ॥ मीमांसा वैसिक कहिये । पुंन्य न्याय पातंजलि लहिये ॥ सांख्य और वेदान्त वखाने । षट शास्त्र पठ दर्शन जाने ॥ शक्ति अनंत मंत्र अविनासी । वन माली सोयं परकासी [प्रथम मीमांसा भेद] मीमांसा प्रति पादय कर्म्म ॥ विन करनी सव वातें भर्म्म ॥ देही वीच करैं सो पावै । मीमांसा ऐसे ठहरावै ॥ विनवोए फल कैसे पाइ । विन पाए कोई न अघाई ॥ सुभ कर्म्मन को सुभ फल लागै । जे नर मूढ़ते कर्मंहु त्यागे ॥ जे नर असुभ कर्म लपटाइ । जै मनि कहै अंत पछिताइ ॥ [द्वितीय वैशेषिक भेद] :— वैशेषिक शुभ समय बतावै । समय विना कछु हाथ न आवै ॥ जैसे कछु वोवै किरसान । समय विना होवे फलआनि ॥

अंत—हिम जाने अजाने पानी । सार विचार सार मति ज्ञानी ॥ ज्ञान अभिमान उतारे धोई । सहजानंद दे ज्ञानी होइ ॥ जोरि कहै अज्ञानी दुखी । तो ज्ञानी काहे का सुखी ॥ एक येन ने अद्वैत वषाने । यह नीतो नाहीं कछु माने ॥ केवल अज अक्रिय अविनासी । सोहं वली सर्व परकासी ॥ दोय सो एक चौपई करी । अर्थ विवेक जानियो सही ॥ ॥ इति श्री चारिवेद षट शास्त्र सारा सार ॥ विचार द्वादश महावाक्य ॥ समाप्तम् ॥

विषय—मीमांसादिक षट् शास्त्र का विषय सिद्धान्त, वेदों का पृथक्-पृथक कथन, अद्वैत मत सिद्धांत, अज्ञान, ब्रह्म, अस्मि, तत्वमसि, तत्पद, त्वं आदि का अर्थ, अद्वय, अज और अक्रिय कथन । अहम् का अर्थ । ज्ञान अज्ञान और अद्वैत प्रकाश का वर्णन ।

संख्या १८ ए. अथ पंद्रह पात्र की चौपाई, रचयिता—बनारसी, कागज—बाँसी, पत्र—५, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिरजी, मुकाम—कठवारी, पो०—रुनकुता, तह०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—अथ पंद्रह पात्र की चौपाई लिष्यते ॥ नम दव अरहन्त कौं, नमो सिद्ध शिवराय ॥ भगवत वन्दौ सीस दै, भवदधि पार लगाय ॥ पात्र कुपात्र अपत्र के, पन्द्रह भेद विचारि ॥ ताकी हूँ रचना कहूँ, जिन आगम अनुसार ॥ तीन पात्र उत्तम महा, अधम तीन बषान ॥ तीन पात्र पुनि जैन हैं, ते लीजै पहिचानि ॥ तीन कुपात्र प्रसिद्ध हैं, अरु अपात्र पुनि तीन । ए सव पन्द्रह भेद, जानो ग्यान प्रवीन ॥

अंत—॥ दोहा ॥ ज्यो बूटी संयोग तैं, पारां मूर्छित होय ॥ त्यों पुदगल सौं तुम मिले, आतम संगनि समोय ॥ ये लिषवाई में दिये । पारा परगट रूप ॥ सुकल ध्यान अभ्यास तें, दरसन ग्यान अनूप ॥ कहै उपदेश बनारसी, चेतन अव कछु चेति ॥ आप बुझावन आपकौ, उदे कर्म्म के हेत ॥ इति श्री ग्यान पचीसी लिष्यते ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में १५ पात्र, कुपात्र और ज्ञान आदि का वर्णन है ।

संख्या १८ बी. दीतवार की कथा, रचयिता—बनारसी (स्थान—आगरा), कागज—मूँजी, पत्र—५, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान—अछनेरा, तह०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—अथ दीतवार की कथा लिष्यते ॥ प्रथम बन्दौ सब जिनवर पाँय ॥ बन्दौ गुरु धारन अति मनलाय ॥ रवि व्रत कथा कहूँ कर भाव ॥ पूरब देश बनारस गाँव ॥ तिहि मैं पालराव तिहि गाँय ॥ बणिक सागर मति-सागर नाव ॥

अंत —दोहा वामा नन्दन पास जिन, सेवों निसि लोय ॥ इन्द्र तणा सुख भोगवे, संकट रहे न कोय ॥ इति दीतवार की कथा सम्पूर्ण ॥ शुभंभूयात् ॥ श्री मस्तु ॥ मंगलं लेषकानांच, पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलां सर्व लोकानां, भूमौ भवति मंगलं ॥

विषय—पूर्व देश बनारस में एक सेठ रहता था । समय के चक्र में पड़ वे अत्यंत ही दरिद्र हो गये । खाने तक की उन्हें दो दो पड़ती थी । देवी देवताओं की मानता की परन्तु निष्कर्ष कुछ न निकला । फलतः दिन रात चिन्ता मग्न और आर्त होकर वे रहते थे । अन्त में गुजर का कोई वसीला न देख वे घास काट कूट कर ले आते और उसी से रोते-गाते अपना पापी पेट पालते । उनकी एक भावज थी जो बड़ी कर्कशा तथा दुष्टा थी । वह उनसे रोज ताने-कशा करती । कहती कमाई न धमाई बैठे सूकर की पेट भरते रहते हो । एक दो दिन की बात होती तो दूसरी थी । उन्हे बात लग गई अतः जिनेन्द्र सेवियों की उपासना में लग गये और उन्हीं के आदेशानुसार सेठ साहिब रविवार का व्रत जैन धर्म के विधि के अनुसार करने लगे । होते होते व्रत के फल से वे नामी-ग्रामी धनी हो गये । यही कथा इस ग्रंथ में वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—कविता की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ कोई महत्वपूर्ण नहीं है । बनारसी दास के और भी कई जैन ग्रंथ बनाये हुए हैं । उनका समय तथा ग्रंथ-रचनाकाल नहीं मिला । 'विवरण' में इनका समय सं० १६५३ दिया गया है ।

संख्या १९. पद, रचयिता—भागचन्द, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—११ × ७½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—९३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर (नया), सिरसागंज —मैनपुरी ।

आदि—अथ पद भाग चंद्रकृत लिष्यते ॥ पदराग हजूरी ॥ जिन राज सुहित काज आज अरज यह करूँ ॥ टेक ॥ चिद्रुप सुद्ध में स्व बुद्धि अनुसरु । चैतन्य शक्ति रिक्त पर गंटू न पर हरुं ॥ टेक ॥ भवकरण राग परण मन विभावतें डरूं । आचरण राग हरण निज स्वरूप आचरूं ॥ टेक ॥ सुख दुखमें तमासगीर भाव आदरूं । नहिं कर्त कर्म क्रिया भेद भ्राँत उर भरूं ॥ टेक ॥ सम सुधा सिंधु मरूं निज समाधि विस्तरु ॥ नहिं विषय चाह अरुण ज्वाल जाल में जरूं ॥ टेक ॥ विधि द्वंद को निकंद फेरि फंद नाय परूं । सुष कंद भाग चंद मुक्ति इंद रावरूं ॥

अंत—हे जिन तेरो सुजस उजागर गावत यौं मुनिजन ग्यानी ॥ टेक ॥ दुर्जय मोह महा भट जानैं निज वसि कीनौं जग प्राणी सो तुम ध्यान कृपान पान नाहिं ततषिन ता कीति भानी ॥हेजि० ॥ १ ॥ सप्त अनादि अविद्या निद्रा जिन जन निज सुधि विसरानी । है सचेत तिन निज निधि पाई श्रवण सुनी जव तुम वानी ॥ २ ॥ × × × तुम्हरे पंच कल्याणक माहीं त्रिभुवन मोद दसा ठानी । विधु विंदावर जिध्यु दिगंवर बुध

सिव कहि ध्यावत ध्यानी ॥ हे० ॥ ४ ॥ सख दख गुण परजय परणति तुम सुवोध मनही छानी । तातै दौल दास उर आसा प्रगट करौ निज रस सानी । टेक ॥ ५ ॥ इति श्री भाग· चन्द्र कृत पद संपूर्ण ॥

विषय—जैन धर्म संबंधी कुछ पदों का संग्रह ।

संख्या २०. जुगल ध्यान, रचयिता—भगवत रसिक, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ X ६ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बोहरे नन्दलाल जी, मु०—अकबरपुर, डाकघर—सुरीर, जि०—मथुरा ।

आदि—कुंडलिया नैनन देपो और नहिं, श्रवन सुनो नहि और । घ्रान न सूंघौ और कछू, रसना कहौ न और । रसना कह्यौ न और त्वचा परस्यो नहिं औरे । कुंज बिहारी केलि केलि इन्द्रिन सब ठौरे । भगवत रसिक अनन्य कोक उपदेस्यो सैनन । बैनन मैंन जगाइ रैन दिन देपो नैनन ।

अंत—ज्ञानहु को यह ज्ञान है, ध्या नर सिज न आन । पान करै जो कान यह. सो न छुवै कछु आन । श्री वृन्दावन नाम धाम रुचि स्यामा स्याम सु अंग । जन्म जन्म वृन्दाबन हि दीजो निज जन संग ।

विषय—१—राधा कृष्ण का रूप और श्रृंगार, २—उनका प्रेम और भक्ति ।

संख्या २१. ब्रह्म विलास, रचयिता—भगौती दास (स्थान आगरा), कागज—मूँजी, पत्र—१३०, आकार—११ X ७ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५५०, पूर्ण, रूप—बहुत प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७५०, लिपिकाल—१९०२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जेन मंदिर जी, स्थान—रायभा, डाकघर—अछनेरा, तह०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥ अथ ब्रह्म विलास लिष्यते । अथ पुण्य पचीसी लिष्यते ॥ प्रथम प्रणामि अरिहन्न बहुरि श्री सिद्धण मिडै ॥ अचारज उवज्ञाय तास पद वन्दन किडै ॥ साध सकल गुणवन्त सेन मुडा लषि वन्दौ ॥ श्रावक प्रतिभा धरण चरण नमि पापनि कन्दौ । सम्यक वंत सभाव धरि जीव जगत में होहि जिन ॥ तिन तिन त्रिकाल वन्नत भविक भाव सहित सिर नाय नित ॥ श्री जिनेश्वर जी की स्तुति

अंत—संवत सत्रह सै पंचासन, रितु वसंत वैसाख सुहावन ॥ सुकल पक्ष त्रितिया रविवार संघ चतुनिर्धि कौं जयकार ॥ पढ़त सुनन सबको कल्यान । प्रगट होय निज आतम ज्ञान ॥ अतीत अनागम अस व्रतमान । वन्दन करौ देत भगवान ॥ भैया नाम भगौतीदास । प्रगट होहु तिहि ब्रह्म निवास ॥ बहुत बात कहिये कहा घणी । यहै जीव त्रिभुवन को धणी ॥ प्रगट होय जब केवल ज्ञान । सुद्ध स्वरुप बहै भगवान ॥ इति श्री ब्रह्म विलास संपूर्ण भवती ॥ संवत् १९०२ वर्षे चैत्र सुदी ५ शनि वासरे लिखितं मिश्र हुकुम चन्द पठनार्थ हरदेव गंदरक मनालाल शुभ भवतु ॥

विषय—आत्मज्ञान का विषय बहुत ही विस्तारपूर्वक समझाकर वर्णित है ।

संख्या २२. पुष्पदन्त पूजा, रचयिता—भाऊ कवि, कागज—बाँसी, पत्र—५६, आकार—६ X ४ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान व डाक-घर—किरावली, जि० आगरा।

आदि—अगर अवर धूप चन्दन षेवो भवि जन लाय ॥ देषै सुर षग आनि कौ तिग पाप धूम डाय मेरु सुदर्शन ॥ ७ ॥ धूपं नालिकेर दाम पिस्ता पूगी फल दे आदि ॥ चढ़ाइयै जिन चरन आगें मोषक लउत पादि ॥ मेरु सुदर्शन ॥ ८ ॥ फलं ॥ अरघ वस्ता विधर कट्ठ आरती कनक थाल ॥ आवागमन विनासवे कौ चरण जिनके चढ़ाय ॥ मेरु सुदर्शन चैत्य षोडश इन्द्र पूज कराय ॥

अंत—अजर अमर सोउ जिल भयौ ॥ सो जिन देव सभा कौ जयौ ॥ दीनी दीख्यो रच्यो पुरान ॥ ओछी बुधि मैं कियो बषान ॥ हीन अधिक जो अछिस होय ॥ ताहि संवारो गुनियर लोय ॥ उत्तम नगर तिहुन पुर जानि । तहाँ कथा को भयो बषान ॥ गगर गोत मल्ल को पूत । भाऊ कवियन भक्ति संजूत ॥ दया राखियो गुनियर लोग । पढ़ै सुने न रहे जिय रोग ॥ कर्म विपन लगि यह मति भई । ते अस धर्म्म कथा ठई ॥ इति सम्पूर्ण

विषय—प्रस्तुत ग्रन्थ में पुष्पदन्त की पूजा की विधि वर्णित है। यह जैनियों के चौबीस तीर्थङ्करों में से एक है।

संख्या २३. कसौंदी की लड़ाई, रचयिता—पं० भेदीराम, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—९½ X ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९९, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४५ वि०, प्राप्तिस्थान—लाला रामस्वरूपजी, स्थान—आमरी, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—···तोप खजाना माल बहुत है, सोरह सामंत अति वलकार। सौक सूर धवल हैं आठों, जिनकी धाक परी संसार ॥ पाती लिख दो जो मैं कहता, वारह कोस की झाड़ी जान। सेर दहाड़े वा जंगल में। हाथी घोड़े छोड़े नाहिं ॥ दुसरी झाड़ी में दलदल है। उसका कछू न परै सुमार ॥ हाथी डूबि जाति तामहिं। अँवरी सुद्धां गढ़ि जाइ ॥ घोड़न की तौ क्या गिनती है, ऐसी लिखी बात सब जाइ ॥ तीजी झाड़ी है सर्पों की। मलयागिर की वहँ राह ॥ उड़ने सर्प वहाँ भारी हैं। जो देखत सब को डसि जाहिं ॥ आगे झाड़ी में पत्थर हैं। जिसमें मेख गड़ैगी नाहिं ॥ पहली लड़ाई है वव्वर की। औनौ पहर गहै तरवारि ॥ वारे कोस तक दल को मारै। दूजा सूर अकब्बर आय ॥ सात पहर वह तेग चलाता, छोड़ै नहीं जीवता काहि ॥ लोहा गढ़ में भारी राव है, उसपै कठिन चलैं तरवारि ॥ सत्तर बाँस किले की खाई, तातर कलस दिये टँगवाइ ॥ तोरन मोरजा उसपर, जाइ घोड़े के ऊपर असवार ॥ तो वह ब्याह करै जग संसार ॥ माल खजाना इतना दूंगा, चाहे छकड़ा भर लै जाउ ॥

अंत—कह तक शोभा वरनूं उनकी। नख शिख सें सिंगार कराइ। कपड़े सुन्दर हैं रेशम के। जिनमें रत नारी हैं कोर ॥ झालर टकि रही है चौफेरा, उसमें रतनन का

उजियार ॥ नख शिख सजे आभरन सवही, गज मोतिन सम दीखै न नारि ॥ पट्टा डारि दिया इक लंग को, उसपै बैठी राजकुमारि ॥ दुसरे पट्टे मल से ठाकुर, टिहुना नगन धरे तलवार ॥ चारों तरफ को राजा के बेटे, जोग लिखे के सारे लागी ॥ पीछे एक तरफ को ऊदल, दूजी तरफ ब्रह्मा सरदार ॥ पहली भौंरी के पड़ते ही, मोती सिंह दई तरवारि ॥ किया जड़ाका जव खुपड़ी पै, वामें उठी गैंड़ की ढाल ॥ ढाल अड़ाई दई उदल नै, दूजी भौंरी परने लाग ॥ दुजो तेगा छोटे कुवर ने । सो ब्रह्मा ने रोका आय ॥ इसी तेरे से सातौं भौंरी । सों डर गई लग्न मलपान ॥ डोला सजाया गज मोतिन का, वहुतक दिये दाइजे आय ॥ ब्याह कराइ सजाई फौजें, अब महुवे में पहूंचे जाइ ॥ इति पं० भेदीराम कृत कसौंदी की लड़ाई मलखान का ब्याह पूर्वी चाल में संपूर्ण ॥ शुभम् ॥ संवत् १९४५ ॥ शाके १८१० ॥

विषय--गज मोतिन व मलखान के विवाहान्तर्गत कसौंदी की लड़ाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ के आदि के दो पन्ने नष्ट हो गये हैं। रचयिता का नाम ग्रंथ का अन्त करते हुए लिखा गया है । ग्रंथ में उसका कुछ भी जिक्र नहीं है । ग्रंथ पूर्वी भाषा में लिखा गया है । कविता में वीर रस की प्रधानता है और वह साधारण श्रेणी की है ।

ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रंथकारने अपने ग्रंथ की शुद्धता पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया है । आल्हा ऊदल का भारत के सुप्रसिद्ध राजा चौहान पृथ्वीराज (दिल्ली) एवम् जयचन्द राठौर (कन्नौज) का समकालीन होना प्रसिद्ध है । ऐसी अवस्था में गज मोतिन के पिता को अपनी पुत्री के विवाह सम्बन्धी-पत्र में, अनेक कठिनाइयों पर प्रकाश डालते हुए, बाबर और अकबर (जो मुगल सम्राट थे एवं पृथ्वीराज से बहुत पीछे हुए) जैसे प्रबल युद्ध वीरों से भी मुकाबला करने वाली बात कहना, उसकी ऐतिहासिक अनभिज्ञता का प्रबल प्रमाण है ।

संख्या २४. सर्वज्ञ वावनी, रचयिता का नाम--भीषजन, कागज--देशी, पत्र--१६, आकार--८ × ६ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)-- २४, परिमाण (अनुष्टुप्)--२४०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, निर्माणकाल--संवत् १६८३ वि०, लिपिकाल--१९०० वि०, प्राप्तिस्थान--चौधरी गंगासिंह, स्थान--विशुनपुर, पो० आ०--कुसुमरा, जि०--मैनपुरी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ सर्वंग्य वावनी भीषजन कृत लिख्यते ॥ ॐकार अपार आदि अनादि जगत गुरु । अति आनंद सुप कंद द्वंद दुष हरण सेव सुर ॥ सकल राग सर्वंग्य अंगनि अंग अमित अति । दीनवंधु सुप सिंधु ग्रंथ कर प्रेम विमल मति ॥ सुव नाइक नाइक तिमपुर वुद्धि वांक वरनन करन । वदत भीषजन जगविदित नमो देव असरन सरन ॥ नमो परम गुरु चरन सरन तिहि करन वुद्धिवर। अति प्रवीन गुन लीन दीन पर परम दया कर॥ गति गुनग्य वुधि पग्य अग्य मत्ति कहा वपानं । दधि अथाह को थाह तिर पावै गहि जानं ॥ वह अति उप्पम अगम कहि उप्पम उपजै त्रिया कछु वपानत भीष जन संतदास सतगुरु क्रिया ॥

अंत—संवत् सोलह सै वरप जब हुते तियासी। पूष मास पष सेत हेत दिन पूरन मासी ॥ सुभ नक्षत्र गुन कह्यो धरयो अक्षर जो आरिज। कथ्यो भीष जन ग्याति जाति दुज कुल आचारिज ॥ सव संतन सन वीनती औगुन मोह निवारि एहु। मिलते सुमिलते रहौ अनमिल अंक सवांरिएहु। हरिगुन सकल संजुक्त अगम अति उक्ति वषानू। सर्व अंग गुनद कथी वावनी विविध परि ॥ संतदास सतगुरु प्रसाद भाष्यो रसना ग्यान करि परम पानि जोरै जुगुल सुजन भीष विनती कही ॥ इति श्री भीष जन की सर्वज्ञ वावनी संपूर्ण सुभ मस्तु लिषतं रामदीन मृगसि वुदि सप्तमी संवत् १९०० वि० राम राम राम राम ॥

विषय—ईश्वर गुरु की भक्ति से भवसागर पार होने का उपदेश किया है।

विशेष ज्ञातव्य—इस सर्वज्ञ ग्रंथ के रचयिता भीष जन साधू थे। निर्माणकाल सं० १६८३ वि० है। इसको इस प्रकार वर्णन किया है:—"संवत् सोलह से वर्ष जब हुते तियासी। पौष मास पष सेत हेत दिन पूरन मासी ॥ सुभ नक्षत्र गुन कह्यो धऱ्यौ अक्षर जो आरिज। कथ्यो भीष जन ज्ञाति जाति दुजकुल आचारिज ॥" ये जाति के ब्राह्मण आचार्य थे। लिपिकाल सं० १९०० वि० है।

संख्या २५. संन्यास विधि, रचयिता—महन्त भोलागिरिजी (स्थान—पैगू जि०—मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१५, आकार-प्रकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, अपूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—गोस्वामी पातीराम जी, स्थान—पैगू, डाकघर—भारौल, जि०—मैनपुरी।

आदि—ओं ॥ श्री गणेशायनमः ॥ आतापी भक्षी तो जेन् ॥ बातापी च महावलः ॥ समुद्रः सोखितो जेन् ॥ संगाऽगस्त प्रसिद्धती ॥ मंत्र जोतिका वाला सुन्दरी ॥ आँगन छोड़ो मूचड़ी, देहरी करौ जुहार। मैं माई को बालका, खोलो धर्म द्वार ॥ आसन पूरि सिंगासन पूरौ आपनी काया। पाँहेस की आज्ञा होय तो वैठो जोति कलस की छाया ॥ मंत्र ठौमर का ॥ ॐ गुरुजी ॐ सो अकल सकल हंस परम हंस हंसा वोले अमिरत वानी राजा राय-चन्द्र आगैं लालू जसराज अगुआ हंसा आया चंद्र कूप जानि करा अघोर के घाट जानि करा कन्येंरि कुड़ कपाट जहाँ चौरीसी सिद्धौ का वास सरनिमें निकले सिद्ध चड़े चौरासी नाये अलील निरमल हुआ सरीर नीचै धरती ऊपर आकास जहाँ हुआ आठौ परकास चन्द्रा सूर्ज भरे धर्म की साखि परम हंस पूर्ण हुआ गादी पै वैठि कै पीर प्रसाद गिरि ने कहा वोलौ सिद्धौ सर्न हिंगलाज ॥

अंत—मंत्र आसन का—ॐ गुरु जी आसन वृह्मा आसन इन्द्र आसन वैठे गुरु निरंजन आसन वैठे गुरु की छाया पाँच तत्व लै आसन पै वैठे खाखंवार भागंम वार पीतांवार चीतांवार मृग छाल गेरु आइति इतने में साधू आसन वैठे सो साधू अमिरत फल पावै विना मंत्र साधू आसन पै बैठे पिंड परै परलोकै जाय इतना मंत्र आसन का संपूर्ण हुआ ॥ × × चारि अवस्था ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया जाग्रत को विश्नु स्वप्नतेजस सुषुप्ति के प्रज्ञा तुरिया के ब्रह्मा ज्ञान विज्ञान आत्मज्ञान तत्वज्ञान ब्रह्मज्ञान ॥ ययन याजन अध्येन, अध्यापन दान परिग्रहा ॥ आसन प्रत्याहार प्राणायाम ॥ ध्यान धारणा समाधी। पट कर्म ब्राह्मणेशेयां ॥ द्वादसो सन्यास च ॥ ......शेष लुप्त ॥

विषय—बाला सुन्दरी आदि मंत्र, गोस्वामियों की संक्षिप्त वंशावली, गर्भगायत्री आदि साधुओं की नित्य कृति सम्बन्धी वार्ताओं का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता ने अपना नाम उसमें अंकित नहीं किया। इस कोष्ट की पूर्ति ग्रंथ के स्वामी के कथन पर ही की गई है । उनका कथन है कि यह ग्रंथ भोलागिरि जी ने, जो हमारे ही पूर्वजों में थे, अपने शिष्यों के नित्य कार्य के लिये लिखा है। इसमें गोसाँई उपजाति की गिरि शाखा की उत्पत्ति और कुछ अन्य दो एक बात ऐसी ही देखकर उनका कथन सत्य जान पड़ता है ।

संख्या २६. सुमन प्रकास, रचयिता—भोलानाथ (स्थान भरतपुर), कागज—मूँजी, पत्र—४४, आकार—९ × ५ इंचों में, पंक्ति—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)–८६२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक स्थान व डाकघर—गोकुल, जि० मथुरा ।

आदि—अथ सुमन प्रकास लिख्यते ॥ एमन मधुकर रसिक तूँ, जो चाहे सुप मित । तो बिहार करि कृष्ण के, चरण सरोरुह नित ।। ब्रह्मादिक कीनी विनय, क्षीरोदधि दधि के तीर । जदुकुल में अवतार मो ह्वै है परह पीर ॥ तँह लीनो अवतार प्रभु करै सवै सुर काज । ब्रज लीला कीनी प्रथम, लीने सुख के साज ॥ प्रगट भयो तिहि वंस में श्री वदनेश नरेश ॥ मथुरा रजधानी लई, कीनो राज सुदेस ॥ तिनकौ पुत्र प्रसिद्ध भौ, सूरज मल्ल महीप । सूरज लौं परताप तिह, सबही जम्बू द्वीप ।

अंत—गई निस जात निस हसि बतराई उठो, पान पाव पानी पियो सोईये न कवहीं । देपि देपि मुप चन्द पीजिए पियूप रस, भरि भरि लोचन चपक चारु अबहीं ॥ अति अरसाय अगराय के जमाय पिय, हिय सौं लगाई लेइ सोइ रहे जबही । सोइ रहे जानि जिय निसरि उसारि बैठि, चहुटी गाय के जगाय देत तबहीं ।। श्री हाव क्रिया विदग्धा ते जायै ॥ श्री महाराज कुमार नाहरसिंह विरचिते सुमन प्रकास संयोग श्रृंगार वर्णनं ।।

विषय—नायक नायिकाभेद सविस्तृत वर्णन हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—यह कवि भरतपुर का है । सूरजमल महाराज के पुत्र नाहिरसिंह के आश्रित था, जैसा कि ग्रन्थ की पुष्पिका से प्रकट है । अपने आश्रयदाताओं की वंशावली भी इसने दी है और उनकी प्रशंसा की है । रचनाकाल आदि का पता नहीं चलता । खोज में यह कवि प्रथम ही आया है । विनोद आदि में इनका कोई वर्णन नहीं है, किन्तु कविता के पर्य्यवेक्षण से ज्ञात होता है कि कवि प्रतिभा सम्पन्न है ।

संख्या २७. हरद्वार कुंभ के चौबोला, रचयिता—भोलाराम, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण, रूप—पुराना (जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जाहर सिंह, स्थान—गढ़िया, डाकघर—भदान, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हरद्वार के मेले के चौबोले भोलाराम कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ गंगे माता तू वड़ी । धरते तेरा ध्यान । जगन्नाथ तिरशूली ने, महिमा

करी बषान ॥ चौवोला ॥ अब महिमा करी वषान मातु तुम होगी दुःख निवारन । पापी चंडाल तार दीने आई हो जन के कारन ॥ भागीरथ वावा ॥ भागीरथी बाबा लाये हैं लाये हैं कुल को तारन । आप तरे अरु दुनिया तारी उनका कुटुम्ब उवारन ॥ भव सागर जाल दुःख सागर तुम होगी पार उतारन ॥ और शिव शंकर के ॥ और शिव शंकर के शीश विराजो जटाजूट में हो धारन ॥ करो महर जी ॥ करो महर अपनी माता देखा है सो जतलाऊं । बारह वरस में कुम्भ पड़ा है उसका हाल सुनाऊं ॥ राम राम राम भज राधेश्याम ॥ १ ॥

अंत—मेले को सारा देख लिया रस्ता में मकतव देखा आन । वहाँ मदरसा प्राचीन है माता के रस्ते दरम्यान ॥ १३५ ॥ देहली में मसजिद देखलई और देख लिये सारे मक्कान । कुतुव लाठ वहँ सात कोस पै वेला का है स्थान ॥ १३६ ॥ माया जोग है पास हाल सब कहे पार दिल्ली के । छै बजे सुबे के चले रेल हाल मैं कहूँ सुनो दसमी के ॥१३७॥

\+ \+ \+ \+

मैं अज्ञान ज्ञान नहिं जानूं चूक माफ मेरी कीजै । स्थान आगरे रहूँ पता ये कहा हाल सुन लीजै ॥ राजभरत पुर घाट वहाँ पर अपना करूँ गुजारा । घन श्याम दास हैं गुरु मेरे है भोला नाम हमारा ॥ इति ॥ हरिद्वार के चौबोले समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—हरिद्वार में पड़नेवाले कुंभ का संक्षिप्त वर्णन ।

संख्या २८. कृष्ण-व्रजलीला, (अनुवाद), रचयिता—बिहारीदास, कागज—बाँसी, पत्र—३३, आकार—६ × ५ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामधन वैद्य, स्थान—वैद्यरामदत्त गली, रावतपाड़ा, आगरा ।

आदि—× × बैठिनन्द उपनन्द बोल व्रख भान पठाए ॥ सुरपति पूजा निति तहाँ गोविंद जू आए ॥ वार वार हा हा कहै कहि बाबा सों बात ॥ घर घर गोरस सींचिये कौन देव की जात ॥ स्याम तुम्हारी कुसल जानि इक मंत्र उपायो ॥ वहुविधि विंजन साज चढ़हौ (चढ़ायो) ॥ नन्द कह्यो सुन करिके सुनो दमोह रसोई ॥ वरस दिसा कोंदौ सहै, सुरपति को आज महा महोछो होइ ॥ × × ×

अंत—विलावल—मेरे स्वामी जी प्रसन्न वदन साँवलो सुष रासी ॥ इनही गाऊ अनु दिनु छिनु छिनु लहौ सवासी ॥ फलीयै फूली करौ कृत्य मन को मन हुलासी ॥ अन्ननि श्री बिहारीदास विपुल वल विहारी निदासी ॥

विषय—ग्रंथ का विषय क्रमहीन है तो भी निम्नलिखित विषयों पर इसमें पद्य हैं:—

१—कृष्ण की बाल-लीलाएँ, माटी खाना, माखन चोरी, ऊधम करना । २—सखाओं के साथ खेलना, यशोदा का प्रेम । ३—गाएँ चराने वन को जाना, वहाँ नाना प्रकार के खेल करना, कंस के भेजे हुये राक्षसों का बध करना । ४—काली नाग को यमुना में कूदकर नाथना । ५—गोपियों के साथ छेड़ छाड़ करना । ६—गोवर्द्धन पूजा व्रज वासियों से कराना, इन्द्र का कुपित होना, मेघ से सब की रक्षा करना । ७—चीर की चोरी, रास लीला आदि के पद ।

संख्या २९. गजेन्द्र मोक्ष कथा, रचयिता—बिहारीलाल, कागज—देशी, पत्र – ६, आकार—११¾ × ५½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६९, प्राप्तिस्थान—पं० दौलत राम जी मटेले, स्थान—कुतकपुर, डाकघर—मदनपुर, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यौन्मः श्री सरस्वतीन्मः श्री नारायणन्मः श्री शिवाय नमः ॥ दो० ॥ गुण गोविंद के निर्मल आम्रत केर समुद्र। शिव सनकादिक नारदा पियत अघाने रुद्र ॥ १ ॥ कछ मछ बामन भऐ, प्रिथी उधारन भार। नृसिंह रुप धरि नाथ जू, बहु विधिजस विस्तार ॥ २ ॥ धरौ रुप वाराह कौ, परसराम हरिराम। जगंनाथ गोविन्द प्रभु, वृंद्रावन सुपधाम ॥ ३ ॥ चौ० ॥ सुमिरहु गुरु गोविंद गोपाला। आनंद कंद नंद के लाला ॥ मोर मुकुट मुर्ली कर राजै। कट किंकिनि पट प्रीति विराजै ॥ कुंडल कलिपत ललित मन मोती। महातमाल दिपति रति जोती ॥ लटकति शुभ्र ग्रीव वनमाला। चलत चालि चित हरत मराला ॥ म्रग मद तिलक अलक घुंघरारी। निरपत ता कोटि काम छवि हारी ॥ भृकुटी कुटिल नैन वस रारे। सुंदर वसन दसन रतनारे ॥ धरनी धर दल संग सोहै। सेत स्यामलाधर वहु मोहै ॥ रुकमिन रमण रसिक रस रंगी। आदि अंत संतनु के संगी ॥ नारदादि सनकादि मुनीसा। धरत ध्याण सुमिरत गौरीसा ॥ वसहु सदा जण के घट स्वामी। सम दरसी उर अंतर जामी ॥ दो० ॥ अनंत कृष्न कर मुरलिका, मोर मुकुट उरमाल। इह वानिक मोमन वसहु, सदा विहारीलाल ॥ ४ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ जो जाको सुमिरन करै, मिटै तासु जम त्रास। जवहीं हरि गुरु के सरन, पावै हरि पुरवास ॥ लेहु सुजस तिहुँ लोक मैं, कहा राम गोपाल ॥ देहु विहारी लाल को, दरस विहारी लाल ॥ जैसे गज की गर्ज सुनि, करी कृपा उहि बार। तैसे ही मो दीन की, सुनियौ ईस पुकार ॥ १३ ॥ चौ० ॥ गज ग्राह की कथा अति है गी पर्म पुनीत ॥ कहै सुनै ताको सर्व सुख, है है प्रभु पुनीत इति श्री गजेन्द्र मोक्ष कथा संपूर्ण समापता सुभमस्तु भूयात् संवत् १८६९ साके १७३४ मिती भादौं सुदी पंचमी ५ गुरु वासरे श्री संभू प्रसाद जू श्रीः लिपतं गुसाईं रंजीत गिरि पठनार्थं ॥

विषय—गजेन्द्र मोक्ष की कथा का वर्णन।

संख्या ३० ए. दोष निवारन, रचयिता—बिहारीलाल अग्रवाल (स्थान–कोसी कलाँ, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—२६. आकार—९ × ६½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९८, रूप—प्राचीन (उखड़ी जिल्द), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ वि० सन् १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मदन लाल वल्द पन्ना लाल हवेलिया अग्रवाल, स्थान व डाकघर—कोसी कलाँ, जि० मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दोष निवारण लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री राधा हरि पद सुपद विघन हरन सब ठाम ॥ सुकवि बिहारी प्रेम करि, तिनकौं करत प्रनाम ॥ श्री गुरु श्री गजबदन अरु, श्री वानी गुन ग्राम ॥ तिनके पद मंगल करन, पुनि वन्दत इहि ठाम ॥ श्री दरवारी जू सुकवि, ते हरि हैं नर रुप ॥ पुनि वन्दत तिन वरद, छवि हद

परम अनूप ॥ श्री हरि की द्वारामती, कुशस्थली त्या मान ॥ तहाँ बिहारी कवि बसै, कविता माँहि सुजान ॥ अगरवार कुल के विषै, विदित बिहारी लाल ॥ ताहि काव्य की गति दई, श्री दरबारी लाल ॥

अंत—अथ वृत प्रतिकूल लक्षण । जारस जोगी छन्द जो तारस मैं नहिं होइ ॥ ताहि वृत्त प्रतिकूल ही कहैं सयाने लोइ ॥ वार्ता । याही सौं रस विरुद्ध वृत भी अरु रस अनुकूल वृत हत भी कहत हैं ॥ उदाहरण पद्धरी छन्द ॥ राधा गुविंद उर धारी अनन्द । आसन सु एक राजै सुछन्द ॥ सन मुष बिलोकि तिन दृग छकैंन ॥ छवि कै समीप कछु-रतिनमैंन ॥ वार्ता ॥ इहाँ सिंगार रसके अनुकूल पद्धरी छंद नहीं याते वृत्त प्रतिकूल दोष भयौ ॥ रौद्रादि के अनुकूल ॥ पद्धरी अमृत ध्वनि, झूलना, त्रिभंगी, छप्पै इत्यादि होत है ॥ ताते रौद्रादि मैं कहैं तो दोष नहीं ॥ × × ×

विषय— प्रस्तुत ग्रंथ में छन्दों के दूषण छन्द शास्त्र के नियमों के अनुसार बतलाए गए हैं । तुक दोष, अति व्याप्ति के तीन दोष, दूषण लक्षण, पदादि लक्षण, पद-दोष, श्रुति कटु-दोष, संस्कार हत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहतार्थ, निरर्थक, अनुचितार्थ, त्रिविध अश्लीलता, अवाचक, ग्राम्य, अप्रतीत आदि दोष । पत्र १–९ तक । संदिग्ध, समास लक्षण, क्लिष्ट, उद्देशविधाय, विरुद्ध मति, पदांस दोष, पृष्ठ १० से १८ तक । वाक्य दोष, उनके भेद लक्षण और उदाहरण—पृ० १९–२२ तक । जातिभंग, वृतहत, प्रतिकूल वर्णन, मात्राहत, वर्णवृतहत, आदि दोष (अपूर्ण), ग्रंथ प्रयोजन तथा निर्माणकालः—दोहा ॥ साहित दरपन आदि जे तिनके पंथ निहार । दोष निवारन ग्रंथ यह, रचत सुमति अनुसार ॥ उदाहरन दूषनन के तें या मांहि दिषाय ॥ दोष दोष के अन्त में दैंगे दोष मिटाय ॥ संवत शशि[1] निधि[9] अयन[2] गुन[3], कातिक शुकला जानि ॥ अषै (अक्षय) नवमि शुक्र कौं प्रगट, दोष निबारन मानि ॥

विशेष ज्ञातव्य—बिहारीलाल खोज में सर्व प्रथम आये है । यह "कुशस्थली" कोसी कलाँ मथुरा के निवासी थे । जाति के अग्रवाल वैश्य थे । वैद्यक से अपना गुजर बसर करते थे । इन्हें कविता से बड़ा प्रेम था और जनुश्रुति से पता चलता है कि इन्होंने कई-ग्रंथ लिखे थे । कुछ तो नष्ट हो गये हैं और कुछ यहाँ के कई लोगों ने (कवि के कुटुम्बियों तक ने) लेकर दबा लिए और बतलाने से इन्कार करते हैं । बिहारीलाल में काफी कवित्व शक्ति है । लोगों का कहना है, इनके गुरु दरबारीलाल ने इन्हें यह श्राप दे दिया था कि तुम्हारी प्रसिद्धि न होगी, इससे इनकी ख्याति नहीं हुई । काव्य शास्त्र का कवि को च्छा ज्ञान था । ग्रंथ का रचनाकाल विक्रम १९२३ के लगभग है, अतः इसी समय में यह निश्चय रूपेण रहे होंगे ।

संख्या ३० बी. गंगा शतक, रचयिता—बिहारीलाल अग्रवाल (स्थान—कोसीकलाँ), कागज—मूँजी, पत्र—१०८, आकार—७ × ५½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९१६ वि० (१८५९ ई०), प्राप्तिस्थान—श्रीयुत मदनलाल वल्द पन्नालालजी वैश्य, स्थान व डाकघर—कोसीकलाँ, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गंगा ग्रन्थ लिष्यते ॥ सोरठा ॥ श्री गुरु अंघ्री वन्द, दरवारी जू पद सुमिर। सुमिरौ न गजानन्द, जपौ बाक बरदे उबर ॥ दोहा ॥ श्री गंगा शत कहि कथैं सुकवि बिहारी वाम। पाप हरन पूरन करन सकल काम अभिराम ॥ कवित्त ॥ गंगा जू खण्ड ब्रह्माण्ड परसि वामन पद विधि के कमंडल द्वैवाम जटा रही है। जगमें जन्हुँ की जानु परसी "बिहारी" फेरि भागीरथी आदि तीनौं पथ सही है। भूधर विदारी पुंज पारावार फारि चली पारब्रह्म माँहि मिली बे अघकै मही हैं। जहाँ लौ प्रकासैं सीस सूखा प्रकासै नहीं तहाँ लौ अनन्तन के अर्धंन की सही है।

मध्य—अथ भयानक रस ॥ अवै गंग पापी एक तारो उतंग तेज, ताके बल आगे कौन धीरज समारेगो। इन्द्रादिक वृन्द ताहि वन्दत विलोकित ही, धारैं आनन्द सो मुकुन्द पुर सिधारेगो ॥ या विधि बिहारी यम क्रम्य कहै दूतन सौं, ताकौं लैन जिन जाओ गये तो पछारेगो ॥ धूर करि नरकन चूरकर पाता वही। धूरि करि राज मोहि चूर करि डारेगो ॥

अंत—दोहा ॥ श्री हरि की विचरन थली कुशस्थली तिहि नाम। तहाँ बिहारी कवि बसै कविता मैं गुन धाम ॥ वैस्य वंस ताको विदित, गरग सुगोत विसाल। सो श्री ठेड़ी-राम को सुवन विहारीलाल ॥ ताने बहु ग्रन्थनहि के हेरि हेरि बर पंथ ॥ रच्यो सुमति अनुसार यहि, गंगा शतक सुग्रन्थ ॥ ते श्री गंगा शतक कौ कहैं, सुनै करि प्रीति। श्री गंगा जू चारि फल देत उनैं करि प्रीत ॥ निर्माणकाल—संवत मिथुन सहश्र में शत तजि लेउ सिंगार। भादौं शुकला द्वादशी शतक जन्म गुरुवार ॥ इति श्री राधाकृष्ण चरित्र गाना नंदित श्री टंडीराम सुत विहारीलाल कवि विरचिते श्री गंगाशतक ग्रंथ समाप्तं ॥

विषय—संस्कृत की गंगालहरी के आधार पर गंगाजी की स्तुति। षट ऋतुओं में गंगा जी की शोभा, पत्र १ से ७२ तक।

गंगाजी में नवों रसों का वर्णन—पत्र ७३–९९ तक।

विभिन्न छन्दों में गंगा जी का वर्णन तथा कवि परिचय १००—१०८ तक।

संख्या ३१ ए. बाग वर्णन, रचयिता—बोधा कवि (स्थान-उसायनी, फीरोजाबाद, आगरा), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रप्तिस्थान—मुं० शंकरलाल जी कुलश्रेष्ठ, स्थान व डाकघर—खैरागढ़, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ पेमी पिय के वाग में, देषों जाइ बहार। भरी हरी इमी-रत भरी, बादाम कागदी डार ॥ १ ॥ पेमी पिय वा वाग में, वसे महा सुपु पाइ। नैंन तपत वा दरस कों। किसि मिसि परसो पाइ ॥ २ ॥ अंबा वौरे ए सषी, पेमी पिय के बाग। पीय पीय रटत पपीहरा, मोहि पिय विनु वैराग ॥ ३ ॥ संगतरा गुरु के वही, वेला सिंधु अपार। जाने गुरु के ध्यान में, डान्यो आपु विसार ॥ ४ ॥ डारी सीप टपका चुएँ, पावस धायो मारि। पेमी पिय प्रतिपाल विनु, लागें कोनु गुहारि ॥ ५ ॥ पेम पंथ जो चाहिए।

सेधों पेमी पाइ । विन अगवा कठिन सुष, कैसें वूझों जाइ ॥ ६ ॥ जा मुनि उपजे प्रेम वृछ, जामन जागे सोइ । वर्षे सींचे द्रगनि जल, ताइ प्रेम फलु होइ ॥ ७ ॥

अंत—जो मैं पाऊँ सेज सम, कटहर वहिया डार । आपुन वाँधू पीउ सें, लें फूलन के हार ॥ २८ ॥ कहें को तु लें वीज तें, जाकर पालकीईद । जो देष्यों में वेल पर, सो तरवूज सईद ॥ २९ ॥ लसत करौंदा वाग के, लाल सुपेद हरे । मीना वृक्ष वनाइके, हीरालाल जरे ॥ ३० ॥ कमला गहि दरगाह कों, रषियें धरियें शीश । करिहै दर्श अजान कौ, पेमी पिय वकशीस ॥ ३१ ॥ इति वाग समाप्तं सुभमस्तु ॥

विषय—बागका वर्णन ।

संख्या ३१ बी. बारहमासी, रचयिता—बोधा कवि (स्थान, उसायनी फीरोजाबाद, आगरा), कागज—देशी, पत्र—२½, आकार—६ × ४ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मु० शंकरलाल जी कुलश्रेष्ठ, स्थान व डाकघर—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ बारहमासी लिष्यते ॥ दोहरा ॥ श्री गुरु गोविंद सुष कर्ण, जग तारन जदुवंस ॥ दीनन के प्रतिपाल हें, काटे दुख के फंस ॥ १ ॥ अवधि आस पूरन भई, पाव करित सरसात । मदन जगाई कामिनी, उठी निहारति गात ॥ २ ॥ द्रग अंजन भूषन वसन, पहरति सुंदर अंग । सुरप चूनरी कुचन पर, लसत चुवत रस रंग ॥ ३ ॥ मन भामन के दर्शको, माधो अधिक हुलास । फरकति भुज हरि कत हियो, वरनें वान्यो मास ॥ ४ ॥ मास असाढ़ आयो सषी, पीय कों कहें संदेस । प्रेम प्रीति पाली लिषी वांची विरह नरेस ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ आमन असाढ़ उमगा मनि विरह आली, स्याम सुधि पामन विदेस छाये जबतें ॥ पाती लें आमन तन तपति मिटावन, नैन सुष उपजामन वेंन श्रवन सुने तवतें ॥ उठनि घटानि वीज चमकि ठठानि प्यारी, ठाढ़ी अटानि सुष जोन्हैं प्रेम पट सवतें । जीमन जियामन मोहिं मदन जगावन केधों । आमन मन भामन प्रेम प्रीति छाई जवतें ॥

अंत—दोहा—एवैं साप पुनीत तुम, पूरन तुम पर ताप । चरन कमल पिय परसिकें, मेटें तनके ताप ॥ ११ ॥ वैसाष वनवारी मोपै कृपा कीनी रावरे जू, हों तो वलिहारी ऐसें अंतर के जामी की । हेत हितकारी दीनी सम्पति सुदामा कों, लीला अपार कान्ह कारे काम धामी की ॥ पूरन परताप की महिमा मोपें कही न जात, क्रपा निधाने कधों करुना सिंधु स्वामी की । मेटे तन ताप मेरी पूजा है अवधि आस, प्रेम प्रीति साँची वा गुपाल गरुड़गामी की ॥ ११ ॥ दोहा ॥ जेठ सदा जुग जुग जियो, पूरन परमानन्द । सुष दाइक नाइक जगत, श्री पति श्री व्रज चन्द ॥ १२ ॥ जेठ जगदीस जगतारन जगनाथ कीनी । हों सनाथ विरह भारी तेज वाउसों । पूजी मन काम गुन जाऊँ आगें सषीनु, कीनों तन स्याम छूटी कठिन कुदाउसों । ऐसें वीर वामन मन भामन रसिक दास, सुष कों निवास सरस परसों पग चाउसों । माषन अहारी मोहि सिरसें सरस करी, प्रेम प्रीति मेरी लगनि लगी भले दाउसों ॥ १२ ॥ बारहमासी संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥

विषय—बारह महीनों में विरहिणी के विरह और संयोग श्रृंगार का वर्णन ।

संख्या ३१ सी. फूलमाला, रचयिता—बोधा कवि (स्थान, उसायनी, फीरोजाबाद, आगरा), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुं० शङ्करलाल जी, कुलश्रेष्ठ, स्थान व डाकघर—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ फूल माला लिष्यते ॥ दोहा ॥ प्रीतम विनु कल पल नहीं, कहा करों किन जाउँ । भरि भरि आवत मोगरा लेलेषिय को नाउँ ॥ १ ॥ मारग जोहत द्दग थके, अजहूँ न आये पीउ । ऐंसी सो सन ए सषी, अंत जाइगो जीउ ॥ २ ॥ सूनो मंदिर देषिकें, मुरझानी विनु कंथ । लाला पुद तेरे दरस कूँ, पाये प्रान अनंत ॥ ३ ॥ रीति विकट रचनी गई, पीठि निहारति नाहिं । मानो वोरीए अली, सुदौरि वितायें जाहिं ॥ ४ ॥ तोहि मनावत पिय अली, कितकी घाई ठाढ़ि । अव सयानी कचनारि ज्यों मानु दियों को छाढ़ि ॥ ५ ॥ पीतम रस वस कीजिये, कवहुँ न कीजै मानु । मेते सों जु जुही कही, अव तो समझि निदानु ॥ ६ ॥ चम्मेली की पाँखुरी, रही उलझि लिपटाइ ॥ मानों विरहिन घाउ पर, फाहा देति चढ़ाइ ॥ ७ ॥

अंतः—प्रीतम विनु अवहीं दियो, विरह दुःख संताप । लपत सुदर्शन पीयकें, गये दुःख अरु ताप ॥ २७ ॥ फूल लषत तिरसूल जग, नैंननि वाढ़ी लाज । रूप मंजरी कव वनी, पहिचानी हौं आज ॥ २८ ॥ अधर सधर मुष देषि कें । कहिवेकों छवि कोट । कुंदन सो नष देषिकें नैंननि वाढ़ी जोट ॥ २९ ॥ प्रीतम कों नित सेवती, मन अरु चित्त लगाइ । पीउ भये वस सेवती कैसें मनों मनाइ ॥ ३० ॥ एक वार केसरि करों, चोया तेल लगाइ । सूही सारी पहरि करि, परसों पीय के पाइ ॥ ३१ ॥ फूल माला समाप्तम् ॥

विषय—श्लिष्ट-पदों द्वारा श्रृंगार वर्णन में फूलों का वर्णन ।

संख्या ३१ डी. पक्षी मंजरी, रचयिता—बोधा कवि (स्थान, उसायनी, फिरोजाबाद, आगरा), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप-प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६३६ वि०, प्राप्तिस्थान—मुं० शंकरलाल, कुलश्रेष्ठ, स्थान व डाकघर—खैरगढ़ ? जि० मैनपुरी ।

आदि—अथ पक्षी मंजरी वोधाकृत लिष्यते ॥ दोहा ॥ गिनत पेड़ इकतीस हैं, कोठा हैं जे तीस । कर जोरे तोसों कहौं, सरसुति देवकसीस ॥ १ ॥ संवत् सोरह सै सही, जानो तुम छत्तीस । तेरस शुक्ल असाढ़ की, वार कुंभ को ईस ॥ २ ॥ सुनों सषी मानी नहीं, ननदी वरजी सासु । वौरी किन हूँ पाइइयों, चील घोंसुआ मासु ॥ ३ ॥ कौआ बोले ए सषी, मेरे आगन मांझ । निश्चै मोही मन वसी, पति आयेंगे साँझ ॥ ४ ॥ तन मन व्याकुल ह्वै रहौं, धीरजु धरौ न जाइ । वोधा आनंद होंहिगे, गल गल लागों पांइ ॥ ५ ॥ तोता हौं साची कहौं, भजिले सीताराम । बोधा मन फूले कहें, सबसे फीको काम ॥ ६ ॥ सुनि है सषा जु कृष्ण के, तो सो कहों निदान । उन मो सों ऐसें कहों, में नाही में प्रान ॥ ७ ॥

अंत—हरी चूनरी सिरसजी, हरी जु केसर भाल। हरियल बोलें सुष बढ़ौ, हरी बनी है बाल ॥ २८ ॥ पातन पातन हौं फिरी, स्वांसा चढ़ी अकास। पता दीवली हौं भई, भरि भरि लेती स्वांस ।। २९ ।। बोधा हँसि हसिकें हियें तुट्टी तुट्टी करि दीन। कुही कहूँ दौरन लगी, झपटि ज्ञान भरि लीन ।। ३० ।। प्यारे बिष्क बनाइयो, बाजे बाज अनंत। बरनत राधा कृष्ण को, पंछी मंजरि अंत ।। ३१ ।। इति बोधसेनि क्रत पंछी मंजरी समाप्तं ।।

हाथी

घोड़ा	ऊँट	बैल	भैसा	बकरा	नोरा
मेढ़ा	बिलैया	मूसो	गिलहरी	ल्यारी	सेही
सिंह	चीतो	रीछ	कुत्ता	पाड़ी	लीलगाह
गधा	गाइ	हरिन	स्यार	चरष	बिज्ज
गोरषर	बंदर	लंगूर	सुअर	षरगोस	गैंडा

ब्रह्मा १

हाथी	ऊंट	भैंसा	नोरा
बिलैया	गिलहरी	सेही	चीतो
कुत्ता	लीलगाह	गाइ	स्यार
बिज्जू	बंदर	सुअर	गैंडा

विषय—श्लिष्ट पदों द्वारा नायिका एवं पक्षियों पर कहे गये दोहों का संग्रह।

संख्या ३१ ई. पशुजाति नायिका नायक मथन, रचयिता—बोधा कवि, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८३६, प्राप्तिस्थान—मु० शंकरलाल जी कुलश्रेष्ठ, स्थान व डाकघर—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी।

आदि—..या भेस ॥ ८ ॥ ताके रस करि बस भयो, रहें जुवा आधीन। बोधा कवि स्वाधीन पति, पतिहि बिलैया

कीन ।। ९ ।। मूसों रति का सेज सजि, श्रृंगारनि करि हाल । निहचें मेरी सेज पर, वासक सज्या वाल ॥ १० ॥ कमल गंध मुष चंद सौं, चंपक सो तन हेम । क्षुधा जू थोरी सेत पत, पद्मिनि लहरी प्रेम ॥ ११ ॥ कविता गीत सुहाइ नित, वार वक्ष हरि वान । सब उपमा चित्रनि लसैं, ल्याई मेरे पान ॥ १२ ॥ मोटी लांवी देह छिन, अरुन झूरि भगकाम । केस जू भूरे दसन वहु, संविनि से ही वाम ॥ १३ ॥ देह होठ मोटे मदन, गोरी ना भरि पेट । केस सूर टेढ़े पगनि, हस्तिनि सिंह झपेट ॥ १४ ॥ संपति विपति जुतन तजन, तन मन पतिसों हेत । बोधा सुकीया कहत हैं, पति चीतो करि देत ॥ १५ ॥ प्रीति करें पर पुरुष सों, ननदी सासु रिसाइ । सेन वेंन चीठी लिषें, रीछ परकीया ताहि ॥ १६ ॥

अंत—आजु हमारे वाछरु, लीजो कृष्ण धिराइ । वचन विदग्धा पिय गये, विज्जु घटा घहराइ ॥ २५ ॥ चली सषिन के साथ में, सुनि पाछे गोपाल । दौरि अगारी फिरि गई, क्रिया गौर वर वाल ॥ २६ ॥ अंबर हरि हमकों दयो, लहिंगा गर्व जु कीट । भूपन गर्वित सो भई, वंदर की है छींट ॥ २७ ॥ नारि एक सों रति करें, और नारि नहिं लीन । लंगूरनि अनुकूल हैं, साधमतें आधीन ॥ २८ ॥ सबकों सम देषें सही, सुःख एक सो मानि । सुअर सहित दूना चलै, वोधा दछिन जानि ॥ २९ ॥ मुष सों मीठे वचन कहि, कपट भरी सब देह । टरत नहीं अपराध सौं, सठ परगोसहि लेह ॥ ३० ॥ मारे गारी लाज नहिं, सब रासनि तजि दीन । त्रन समान मानत जगें, धृष्ट जुगें डालीन ॥ ३१ ॥ पशुज्ञात नाइ नाइका मथन ॥ सम्वत् १८३६ श्रावण वदि दोज ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—नायक नायिका भेद वर्णन ।

संख्या ३२. कृपन जगवानिक कथा, रचयिता—ब्रह्मगुलाल (स्थान – रपरीचन्द-वार, समीपस्थ टापू नामक स्थान), पत्र—२३, आकार—६½ × ४¼ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) – ७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७१, लिपिकाल—सं० १९२२, प्राप्तिस्थान—श्री सुखचंद जी, जैन साधु, स्थान—नहटौली, डाकघर—चन्द्रपुर, जि०—आगरा ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्योः ॥ अथ कृपन जग वानिक कथा लिखवै ॥ छप्पै ॥ छंद ॥ सुमति महा परसिद्ध सुमति बहु कारण सिकई । सुमति सर्व महि एक सुमति अप्पायरु वुझई ॥ सुमति सुकर्महि करै सुमति गुरु कुगुरु विचारि । सुमति कर्मींन गहि डारै जाहि सुमति सिद्ध गणधर भए ॥ तुम धरहु सुमति छुदहित ही जण गुलाल वंदन करण । सुमति नाथ सम कोई नहीं·········॥ १ ॥ दोहा ॥ कुमति विभंजन सुमति कर, दुरति दलन गुण माल । सुमति नाथ जिन चर्ण कौं, सेवक ब्रह्म गुलाल ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सुमिरि सुमति जिन मंगल धाम । विघटन विघण करन सुख नाम ॥ वाढ़ें सुमति कवित रसकाज ध्यावहु कविजन सव जिन राज ॥ जिन मुख वचन सरस्वति नाम । तिहि सुमिरन जन केवल धाम ॥ गौतम गुणधर अघहर वैन । गुरनिरग्रंथ सुमिरि जव जैन ॥

अंत—सुनहु कथा तुम भव्नि पहान । जाहि सुनत मन वाढ़ै ज्ञान ॥ कृपन जय वानि मानौ नाउ । पढै गुनै कुल उत्तिम ठाउ ॥ ९२ ॥ जग दू पण भदारण पाय ।

करौ ध्यान अंतर गति आय । वाकौ सेवक ब्रह्म गुलाल । कीनी कथा क्रपन उरसाल ।।९३।। मध्यदेश रपरी छंदवारि । ता समीप टापू सुपकार ।। कीरतिसिंह तहाँ धुर धरै । ताहि जंग को सम सरि कहै ।। ९४ ।। वहि मंडल कीनी गोह धीर । कुलदीपक उपजौ महवीर । अति उदार कीनौं जगदीस । जी जह कुल कर कोरव रीस ।। ९५ ।। मथुरा मल्ल भतीजौ और । धरमदास कुलकौ सिरमौर ।। अति पुणीत सरु मानहुचयौ, कलि में सेठि सुदर्शन भयौ ।। ९६ ।। ता उपदेश कथा कवि करी । वंध चौपही साँचें ढरी ।। ब्रह्म गुलाल पुरानें की छांह । पूरन भई जारखी माह ।। ९७ ।। सो रासै इकहत्तरि जेठ । तिथि मावस सुमिरि परमेष्ठ ।। कृष्ण पक्ष शुभ सुक्कर वार, साहि सलैम छत्र सिर भार ।।९८।।दोहा।। सज्जन सील समान सुभ, दान मान सिरी अंस । मथुरा मल्ल जु चौधरी, काकलि भरत सुवंस ।। ९९ ।। ब्रह्म गुलाल तन मन रहै, कामिनि भीति समान । गुलाल ब्रह्म तन मन वसै, कोटिक मध्य सुध्यान ।। ३०० ।। इति क्रपन जगवान कथा समाप्तं लिखतं मुन्नालाल वेटा ठाकुर दास पोदार हतिकांत के मिति कार्तिक वदि ५ चन्द्रवार ।। सम्वत्— १६२२ ।।

विषय — क्रपण जगवानिक की कथा का वर्णन ।

संख्या ३३. गरुड़ पुराण, रचयिता—बुलाकराम (मथुरावासी), कागज—स्यालकोटी, पत्र—१०४, आकार—१२ × ६½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, बहुत जीर्ण; गद्य, लिपि—नागरी, लिपि-काल—१८२६ वि० = १७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० मटोली राम जी मिश्र, डाकघर—अछनेरा, तह० — किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः धर्मदूतोवाच ।। मूलो वेद स्कन्ध पुराण पटाकृता ।। कुश मोक्ष फलो मद सूदन पाद्यो जयत्रिः ।। गरुड़जी श्री भगवान से पूछते भये कि श्री भगवत के प्रसाद करिकै तीनों लोग वैकुन्ठ आदि सब चराचर जीव सम्पूर्ण देखे । उत्तम स्थान मध्यम स्थान ये मैंने सम्पूर्ण देखे कछु देखन कौ अभिलाषा रही नहीं ।

अंत—भगवान कहे हैं हे गरुड़ शरीर स्थिर नहीं है और मृत्यु या प्राणी के निकट बसै है । यह शरीर क्षणभंगु है । ताते धर्म्म को संग्रह कीजे ।। स्याम वरन अथवा पांडु वरन गौ अलंकृत संयुक्त ब्राह्मन कूँ देय सो वैतरिणी में ते आनन्द ते पार पहुँचै ।। × ×

विषय—मर जाने पर जीव कहाँ जाता है, उसका क्या क्या होता है, इसी का इसमें वर्णन है ।

संख्या ३४ ए. जैन चौबीसी, रचयिता—बुलाखीदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—१० × ६ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गासिंह राजपूत, स्थान—माँगरोल गुजर (मझली पाटी), डाकघर—रुनकुता, तह०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—अथ जिन चौबीसी लिष्यते ।। दोहरा बन्दौ प्रथम जिनेस को, दोष अठारह चुरि ।। वेद नक्षत्र ग्रह औरष, गुन अनन्त भरी पुरी ।। नमो करि फेरि सिद्धि को अस्ट करम कीए छार ।। सहत आठ गुन सो भई, करै भगत उधार ।। आचारज के पद फेरिणमो, दूरी अन्तर गति भाउ ।। पंच अचरजा सिद्धिते, भारे जगति के राउ ।।

अंत--दोहा अस्तुति जिन चौबीस की, वरनी कविता हीन ॥ लघु दीरघ की चुक कौ, पायो चतुर प्रवीन ॥ अस्तुति जिन चौबीस की, कही बुलाषी चन्द ॥ जो नर पढ़ै सुभाव सो, कटै करम के फन्द ॥ सोरठा पूरण मल के चन्द, वास वाल राजा रषे, प्रगट कविता को अंस, जिन मारग शिव सदा ॥ सम्पूर्ण ॥

विषय--इसमें अजितनाथ, सुमतिनाथ, ऋद्धनाथ, ऋषभनाथ, पारसनाथ आदि चौबीस तीर्थकरों की स्तुतियाँ की गई है।

संख्या ३४ बी. श्री मन्महासीला भरणभूषित, रचयिता—बुलाकी दास, (स्थान—जहांनाबाद), कागज—बाँसी, पत्र—१३१, आकार—१२ × ५ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२४२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४८, सन्—१७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—दोहा ॥ नन्दलाल गृह गेहनी, जैनलदे सुभ नाम ॥ ते दोऊ सुष सौ रमें, ज्यों रुकमनि स्याम ॥ धर्म्म पुत्र तिनके भये, बूलचन्द सुष पान ॥ अरु नर तन पंडित महा, शास्त्र कला परवीन ॥ बूल चन्द तिनपै पढ्यौ, ज्ञान अंस तह लीन ॥

अंत—दोहा ॥ ऐसी विधि यह ग्रन्थ सुभ, रच्यो बुलाकी दास ॥ सो जब जैनलदे सुन्यो, धार्यो परम उल्हास ॥ व्रत विधान वरने विविध, अपनी मति अनुसार ॥ वरनत भूल परी जहाँ, कवि कुल लेहु संवार ॥ वतन बुलाकी दास कौ, मूल बयान जान ॥ अरु रतन गुरुदेव कौ, गढ़ गोपाचल थान ॥ अन्नदान सजोग ते, नगर जहानाबाद ॥ मात पुत्र जिन धर्म्म को, भजै तजै परमाद ॥ नगर जहानावाद में, साहिब औरंग साहि ॥ विधिना तिस छत्तर दयो, रहे प्रजा सुष माहिं ॥ × × × इति श्री मन्महासीला भरण भूषित जैनी सुनुलाल बुलाकी दास विरचितं भाषा ग्रन्थ ॥ संवत् १८४८ श्रावण सुदी ७ शुक्रवासरे ॥

विषय—व्रत निरूपण—१-५ पत्र तक। अजितनाथ की स्तुति, जीव और तत्वों का विचार, नवपदार्थों का निरूपण—६–११। देव, धर्म्म, गुरुओं का निरूपण—११–१६। जैन साधुओं के आचार, अष्टांग सम्य दर्शन—१७–१९। आचार, गुणवर्णन, अंजन नमस्कार कथा—२०–२६। गुणवर्णन अनन्त मती की कथा—२७–३०। निर्बि चिकित्सा, मूढ़त्व गुणवर्णन—३१-३३। जिनेन्द्र भक्त श्रेष्टा वारिषे मुनि कथा—३४–३७। वात्सल्य गुण वर्णन, विष्णुकुमारी की कथा—३७–४०। प्रभावनाङ्ग गुण वर्णन, श्री मनाहा मुनिराज वज कुमार चरित्र—४१–४५ तक। सम्यक महात्म—४६–५०। अष्ट मूल गुण, शशि-व्यसन, अहिंसा—५१–५६। असत्य विरत वर्णन, धनदेव और सत्य घोष की कथा—५७–६१। दानवर्णन महाराज कुमार श्री वारषेण तापस की कथा—६२–६४। ब्रह्मचर्यव्रत, नीली रक्षक की कथा—६५–६८। परिग्रह प्रमाण व्रत, श्री मन्महाराजा जय कुमार नव नीत की कथा—६९–७२। व्रत निरूपण तथा जिनेन्द्र-स्तुति—७३–७७। धार्मिक प्रश्नोत्तर—७८–८४। मल्लिनाथ की स्तुति, प्रोषध उपवास, ८५–८८। चतुर्विध दान—८९–९५। जन पूजा कथा, दानाधिकारी, श्री षेणवृषभसेन की कथा—९६–११६। पार्श्व-

नाथ की स्तुति, ब्रह्मचर्य्य—११७-१२५ तक। ग्रन्थ रचयिता के सम्बन्ध में—१२६-१३० तक।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता ने औरंगजेब का राज्य अपने समय में बतलाया है। यह ग्रन्थ जैनियों का धर्म्म शास्त्र है।

संख्या ३४ सी. पांडव पुराण, रचयिता—लाला बुलाकीदास, कागज—स्यालकोटी, पत्र—१७९, आकार—१२×७ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ वि० (१७६६ ई०), लिपिकाल—वि० १८७४ = सन् १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान व डाकघर—अछनेरा, जि० आगरा।

आदि—श्री जिनाय न्मः॥ ॐ नमः सिद्धिभ्यः॥ अथ श्री पांडव पुरान लिष्यते॥ प्रथम सरवज्ञ नमस्कार॥ छप्पै छन्द॥ सेवत सत सुर राय स्वयं सिद्धिशिव सिद्धिमय॥ सिद्धारथ सरवंस नय प्रमाण सो सिद्धि जय॥ करम कदन करतार करन हरन कारन चरन॥ असरन सरन अम्वार मदन दहन साधन सदन॥ इहि विधि अनेक गुण गन सहित, जग भूषण दूषण रहित॥ तिहि नन्द लाल नन्दन नमत, सिद्धि हेत सरवज्ञ नित॥

अंत—अथ संवत दोहा॥ संवत अठारह सै तेईस, वदि असाढ़ तिथि दोज। मूल नक्षत्र रविवार को, कीनो भारथ चोज॥ इति श्री मन्महासीलाभरण भूषित जैनी नामा किताया भारत भाषाया लाला बुलाकी दास विरचिताया पांडवोप सर्ग सहतोत्रय॥ संवत १८७४ मिती बैसाप सुदी ५ सोमवार पूरणं भई॥

विषय—इसमें जैन धर्मानुसार महाभारत के नायक पांडवों का चरित्र लिखा गया है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रन्थ अत्यन्त रोचक है। कविता अच्छी है। एक जगह रचयिता ने अपने समकालीन बादशाह का परिचय निम्नलिखित कवित्त में दिया है—

"अथवादशाह वर्णन" वंस मुगलाने माँहि दिली पति पातसाह, तिमिर लिंग मीर सुत वावर सुत भयो है। ताके हैं हुमाउ सुत ताही ते अकवर है। जहागीर ताके धीर साहि जहाँ ठयो है॥ ताज महल आसां अंगन उमंग महा, वली अवरंग साह साहेन में जयो है॥ ताही क्षत्र छाँह पाय सुमति के उदय आय, भारथ रचाय भाषा जैनी जस क्यो है।

संख्या ३५. दवाओं की किताब, रचयिता—डा० वुनिविया साहव (स्थान—सिवलसर्जन इटावा), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८½ × ६½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९७, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० जनक सिंह व० खुशहाली, स्थान—करहरा, डाकघर—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी।

आदि—किताव घर की दवाओं के वास्ते इस्त अमाल वाशिन्दगान देह ज़िलभ् इटावा मुअ़ल्लिफ़ा डाक्टर वुनिविया साहब सिविलसर्जन इटावा। अखीर मौसम में वर-

सात में खुसूसन जिस साल की मेंहलगातार और बहुत बरसता है। बहुत सी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, जो फस्ली कहलाती हैं। यह बीमारियाँ वसवव मरतूव होने जमीन पैदा होती हैं। दिन को ऐसी ही सख्त गर्मी पड़ती है। और रात को ओस की कसरत से सर्दी रहती है। अस्ली हाल सवव इन फस्ली अमराज् बुखार इस हाल पेचिश हैजा और खांसी का ग्रह है, माह सितम्बर और अक्टूवर में दिन को सख्त गर्मी और रात को सख्त शर्दी रतूवत आमेज् पड़ती है। बहुत से आदमी इन अमराज् की वजह मर जाते हैं। क्योंकि वे उनके अस्ली हाल से नावाकिफ होते हैं।

अंत—याद रक्खो ! कि जिस कदर जल्द इलाज शुरू करोगे उसी कदर जल्द आराम होगा। बीमारी में अगर इलाज मे देरी करोगे तो अन्देश की बात है। कोई बीमारी हो खाना न छोड़ना चाहिए मगर खाना हलका और जल्दी हज़म होने वाला हो। मसलन ओटा हुआ दूध चपाती के दूध में छोटे २ टुकड़े उबालो। और खाओ। मगर आटा साफ छना हो। भूसी न हो। आटा दूध में पकाओ और खीर खाओ। दही खाओ। चूना २ रत्ती दूध में मिला दिया जावे। वह बहुत जल्द पच जाता है। यह याद हो कि अफयून के नुसखे मज् के शुरूअ होते ही छोड़ देना चाहिये ॥ फक्त् तमाम सुद ॥

विषय—नुस्खा बुखार, खाँसी, जाति इस् हाल-जाति पेचिश मय खून के नम्बर-जाति हैजे के नम्बर।

विशेष ज्ञातव्य—डाक्र बुनेबिया साहब किसी समय, इटावा जिले के गवर्नमैण्ट हास्पीटल में सिविलसर्जन के पदपर विभूषित थे। इन्होंने अपने जिले के ग्रामों को साधारण रोगों से बचते रहने के लिये देशी भाषा में इस ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ से निश्चय पता नहीं लगता कि उक्त डाक्टर साहब ने यह ग्रंथ हिन्दी ही में लिखा था अथवा स्वयम् उसकी रचना अंगरेजी में कर उसका हिन्दी अनुवाद किसी से करा लिया था। ग्रंथ को देखते हुये यही विदित होता है, कि उक्त ग्रंथ ठीक इसी रूप में उन्होंने स्वयं बनाया है। यदि ऐसा न होता तो वे अपने ग्रंथ में अनुवादक का जिक्र अवश्य कर देते। ग्रंथ के आदि में भी स्पष्ट शब्दों में यही लिखा है—'मुजल्लिफा डाक्टर बुनेविया साहव'।

संख्या ३६. कवित्त रामायण, रचयिता—चंदकवि, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८×५ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)–२४, परिमाण (अनुष्टुप्)–५२४, खंडित, रूप—पुस्तक की भाँति, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—बाबा रघुबर दास, स्थान—मानपुर, डाकघर—बेवर, जि० मैनपुरी।

आदि—पहिले भयो राज रिषि पाछे भयो ब्रह्म रिपि विश्वामित्र वाकों नाम जानत हैं सबही ॥ उन कह्यो आय मेरी राक्षस बुझावै आगि राजा तेरे पुत्र विनु काहूसों न दवहीं ॥ जिनके खिलौना लिए खेलत हू खवा संग ऐसे प्यारे न्यारे होत नाहिं कवहीं ॥ करि उपगार कौन कीन्हों है विलंव चंदते उगेही वाय दिन मागे मौन जबहीं ॥ २ ॥ आगे आगे रिषि जांय हिय हरष माहिं पाछे पाछे सुंदर कुंवर रघुवीर हैं ॥ सुपेहैं ताकी वाय पूंछत हैं ताहि पाय

चलो निकट राम जहां तेरे घर हैं। मारग में भयो सोर राक्षस उठे घोर हंसत हंसत राम लियो एकसर है ॥ देखोरे या नीच की जु आई है सुकृत वीच ऐसी मीच पाय पुन नीच सो निडर है ॥

अंत—राम जी के पायक सो पायो है पवन पूत धन हो विधाता तोप ऐतो बल दयो ॥ रावन की वाड़ी छिन एक में उजारी लंका पर जारी दशकंध हेतु वैरयो ॥ तो तोपै सवारौं तोपै आरती उतारौं आछे लछिमन जिवायकौ मूल ही को गयो ॥ कौशिल्या मातु कहैं है विचार जेसे मेरे चार जैसे पांच मोहीते भयो ॥ दो० सीता लछिमन रामहित शत्रुघन मिले अनंद। कियो राज श्री रामजी जहं सेवक कविचंद ॥ जाही हाथ धनुष चढ़ाय भये सीतापति ताही हाथ रावन संघारो लंक जारी है। जाही हाथ तार्‍यो ये उबार्‍यो हाथी हाथ गहि जाही हाथ हेम मथि लछिमी निकारी है। जाही हाथ गिरवर धारी भये प्राणनाथ ताही हाथ नंद कहा नाथ्यो नाग कारी है ॥ हौं तौ अनाथ प्रभु जोड़ दोऊ हाथ अव तौ श्रीनाथ हाथ गहिवे की वारी है। दो० ॥ ए चरित्र रघुनाथ के वरने हैं कविचंद नागर नन्दा पठनलो ठाकुर श्याम लिपंत ॥ मुपते जुवाहरचंदके जैसे निकसे वर्ण। तैसे ही शामा लिख्यो सुन्यो जु अपने कर्ण ॥ जो कोई याको वांचि है गुरु पंडित कवि यार। सवद सबै सुध कीजियो मोपै ताना न मार ॥ इति श्री चंदविरचितायां कवित्त रामायण संपूर्ण श्री रामजी आश्विनमासे सित पक्षे एकादश्यांम संवत् १८५६ वि०।

विषय—कवित्तों में सातों कांड रामायण का संक्षेप में वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता चंद कवि थे और संवत् १८६० वि० में वर्तमान थे जो इस दोहे से स्पष्ट है:—

"ए चरित्र रघुनाथ के वरने हैं कविचंद। नागर नन्दा पठन को ठाकुर श्याम लिपंत। मुखते जुवाहर चन्द के जैसे निकसे वर्ण। तैसे ही श्यामा लिष्यो सुने जु अपने कर्ण।"

अर्थात् चन्द कवि के मुष से निकले अक्षरों को ही श्यामा ठाकुर ने संवत् १८६० वि० में लिखा है ॥

संख्या ३७. चौबीस महाराज की बिनती, कागज—मूँजी, पत्र—२६, आकार—१०×६ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० ०१८०७ वि०, लिपिकाल—सं० १९२५ (१८६८ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर जी, स्थान—रायभा, डा०—अछनेरा, तह०—किरावली, जिला—आगरा।

आदि—ॐ नमः ॥ सिद्धेभ्या ॥ अथै चौबीस म्हाराज की बिनती ॥ हरचंद संग ही की करी ढाल वंध ॥ संवत १८०७ ॥ मैं की सवाई जैपुर मध्ये बणी। अथ आदिनाथ जी की बिनती ढाल माली की मैं। श्री अरिहन्त जी ने बिनऊँ ॥ हूँ तो सीरद कै लागूँ पाय जी प्रसु जी गुर निर ग्रन्थ मनाइकैं। हूँ तो करु हे भववति मन लाय जी प्रभु जी प्रभु जी ॥ × × × प्रभुजी ॥ सरणें आया ते सही ॥ तिनको कियो निरवारो जी। प्रभु जी ॥ चंद तणी या बीनती ॥ माहरौ आवा गमण ॥ निवारौ जी ॥ प्रभुजी ॥

अंत—चन्द कहै करि जोड़कै ॥ कोई सुन ज्यों करुणा धार ॥ भव भव के दुष मैंटिकै हो प्रभु जी ॥ दीज्यो सिवपुर वास ॥ जो नर नारी गावसी कोई मनधर निर्मल भाव ॥ सो संकट कवहू न लहै प्रभु जी ॥ निहचै सिवपुर जाय ॥ सपूर्ण ॥ इति श्री चौबीस महाराज्य की विनती समा सास्युन ॥ मिती जेठ सुदी ५ सम्वत १९२५ लिपतं बलदेव छीपी श्रावग (गृहस्थ) भरतपुर मध्ये ॥ पठनारथ सुषदेव जी ॥ कसोदावारे ॥

विषय—इसमें जैनियों के २४ तीर्थङ्करों (अवतारों) की स्तुति जयपुर के स्थानी "ढ़ालमाली" की धुन में की गई है। इसे ग्राम्य गीतों की रचना कह सकते हैं।

१—आदिनाथ २ (अजितनाथ की विनती)—पृ० ३ तक। २—सम्भवनाथ की विनती—पृ० ४ तक। ३—अभिनन्दन जी—पृ० ५ तक। ४—सुमतिनाथ जी—पृ० ६ तक। ५—पद्मनाथ जी पृ० ७ तक। ६—पारसनाथ पृ० ८ तक। ७—चन्द्र प्रभु पृ० ९तक। ८—देदोपनन्द पृ० १० तक। ९—सीतलनाथ जी—पृ० ११ तक। १०—श्री पारसनाथ जी—पृ० ११ तक। ११—अथ वारापूज्य जी—पृ० १२ तक। १२—विमल नाथ—पृ० १३ तक। १३—अनंत नाथ—पृ० १४ तक। १४—धर्म्मनाथ—पृ० १५ तक। १५—सान्तनाथ—पृ० १६ तक। १६—कूपनाथ—पृ० १७ तक। १७—अरहनाथ—पृ० १८ तक। १८—अथमल्लनाथ—पृ० १६ तक। १९—मनसुव्रतनाथ पृ० २० तक। २०—नम्मनाथ—पृ७ २१ तक। २१—नैमनाथ पृ० २२ तक। २२—पारसनाथ (?)—पृ० २३ तक। २३—वर्धमान—पृ० २४ तक। अथ चौबीसों अवतारों की इकट्ठी स्तुति पृ० २६ तक।

विशेष ज्ञातव्य—कवि ने एक जगह ग्रंथ में अपना नाम यों दिया है:—सरनै आयो चंद तिहारी ॥ मेरो आवागमन निवारी ॥ ये जाति के कोई जैन प्रतीत होते हैं। निवासस्थान जयपुर है पर पक्का नहीं।

संख्या ३८. हंसनाद उपनिषत, रचयिता—चरणदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१०½ × ७ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० जाहर सिंह जी, स्थान व डाकघर—बरनाहल, जि०—मैनपुरी।

आदि—··· हिरदे कवल के वीच जवै मनआवै जभी ॥ दांनकरजार है ॥ उपजै त्याग विराग जतन जग कूं कहे ॥ हिरदे कवल के छेद। वाहरमन फिरत ही। आसे पासे जान होय जाग्रत ही ॥ हिरदे कवलके घरके मध जानही। जब आवत है सुपन जहाँ बहु भाँतिही ॥ धान वरावर छेद ताहिं में मन जात है। होंहिं सबै गुन लीन सुषोपत अन्त है। हिरदे कमल कूं छोड़ि होत जब न्यारही। तुरिया में मन जात तुम तजता अपार यौं जीव आत्म जांनत अनहद हीन हो। सो परत महोग्रह जीवता जायही ॥ २६ ॥ दोहा ॥ अजपा ही के जाप इं, सिद्ध भयो जब जांन। पहुचै या स्थान ही, रहै न दूजा ज्ञान ॥२७॥

अंत—अष्टपदी ॥ दसवी षुलै जव नाद परे सूहे परैं। पार ब्रह्म हाय जाय ध्यान ताको करै। ध्यानी को मन लीन होय अनहद सुनैं। आय अनाहद होय वासनां सब भुनैं ॥ पाप पुन्य छुट जायँ दोऊ फलनां रहैं। होय परम कल्यान जुति गुन नां रहैं ॥ होवै वोद्ध

सरुप तेज होय जात है । अठक रहै नहिं कोय सवै न समात है ॥ अज अविनासी शुद्ध पवित्तर सतही होवै आनंद और निवीन हीं ॥ आनंद सब कूं देत आप कूं जानइ । या ध्यानी को नांव जु ओंकार है—सव नामन में बड़ा किया जु विचार है ॥ याकूँ ऐसें मानैं कि वह जो मैं ही हूं ॥ रूप नाम गुण जानै कि यह सब वाही सूँ ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ करते अनहद ध्यान ही, ब्रह्म रूप हो जाय । चरन दास यौं कहत हैं, व्याधा सव मिटि जाय ॥ ३३ ॥ इति श्री हंसनाद उपनिषत संपूर्णम् ॥ १ ॥

विषय—ब्रह्म ज्ञान वर्णन ।

संख्या ३९. सुकसंवाद, रचयिता—चत्रदास, कागज—मूँजी, पत्र—८, आकार—८ × ५ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्) –३३७, पूर्ण, रूप – प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा ।

आदि—अथ ग्रंथ सुक संवाद लिष्यते ॥ साषी । पारासिर परसिद्ध मुनि, सुत उपजो सोई भाण ॥ द्वापर अंत उदय भए, विविध वेद विधि जाण ॥ चार वेद मुष पाट जिहि, नौने नौ मुष पाट ॥ पट् पट् पट जिभ्या अगरि, उप नप धौ गमि थाट ॥ बुधि सागर सागर घटहि, अघट अकलि सोई व्यास ॥ ग्यानि किरनि ससि केवलनी, विद्याधर वहु पास ॥ ग्याता गुण विस्तार वहु, षट् क्रम धारण धीर ॥ विद्याधर पासे रहैं, मंडली मंडल भीर ॥

अंत—दोहा ॥ अचल वचन सुकदेव का, अचल जोग की चाल ॥ बेहद में वपु रहित रत, नहीं हमारा ताल ॥ गुरु मोहन प्रसाद बुधि, सुक की कही समाधि ॥ चत्रदास वैराग विधि, सुलप अलप मति आधि ॥ ऐक मुष कीरति किसी, सुक कथा अगाध ॥ सिध साधक जोगी जती, जजै वेद गुरु साध ॥ इति शुक संवाद समाप्तः ॥

विषय—शुकदेव मुनिका जंगल में घोर तप करना तथा रम्भा अप्सरा का आना और उन्हें मोहित करने के अर्थ बहुत प्रयत्न करना । शुकदेव और रम्भा का आपस में वाद विवाद होना, रम्भा का सांसारिक विलासों की वकालत करना तथा शुकदेव का वैराग्य की पुष्टि करना ।

संख्या ४०. चत्रभुजदास का कीर्तन, रचयिता—चतुर्भुजदास, कागज—मूंजी, पत्र—६४, आकार—६ × ५½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जमनादास जी, नवा मंदिर गुजरातियों का, गोकुल, मथुरा ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः अथ जन्म समय ॥ रागदेव गंधार ॥ नयन भरि देखहु नंद कुमार । जसुमति कूख चन्द्रमा प्रगट्यो, या ब्रज को उजियार ॥ बन जिन जाहु आज ही कोऊ गो सुत गाय गवार ॥ अपनें अपनें भेख सबें धरि लावहु विविध सिंगार ॥ हरद दूब अछत दधि कुम कुम मंडित करहुँ द्वार पूरहु चोक विविध मुक्त मनि गावहु मंगल चार ॥ चहुँ वेद धुनि करत महामुनि होतन छत्र विचार ॥ उदयो पुन्यको पुंज सांवरो सकल सिद्धि दातार ॥ गोकुल बधू निरखि आनंदित सुन्दरता अति सार ॥ दास चतुर्भुज प्रभु चिरजीवहु गिरिधर प्रान अधार ॥

अंत—राग सारंग। नव वसन्त आगमन नव नागरि, गिरिधर संग खेलति ॥ चोवा चन्दन अगर कुम कुमा, ताकि ताकि पिय सनमुख मेलति ॥ पदुम अंजुली जब भरत महोहर, वदन ढाँपि घृत पेलति ॥ चतुर्भुज प्रभु रस रसिक रासकौं, कोंरि झेरि झे सुख सागर झेलति ॥

विषय—राधाकृष्ण के प्रेम और भक्ति से ओत प्रोत उनके शृंगारपूर्ण विविध लीलाओं तथा भावों का चित्ताकर्षक वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रन्थ में ब्रजभाषा के इस भक्त कवि के ६ पद आए हैं। पद बहुत बड़े बड़े हैं। कविके संबंध में कुछ कहना अनावश्यक है। वल्लभाचार्य द्वारा वह पहले अष्टमणियों में सम्मिलित कर लिया गया है।

अष्ट छाप के कवियों की रचनाओं के इस प्रकार के संग्रह प्रायः अप्राप्य हैं। उनके पद वैसे स्फुट संग्रहों में तो बहुत मिलते हैं पर एक कवि वा भक्त की कृति एक ही जगह संकलित रूपमें नहीं मिलती। अतः ग्रन्थ उपयोगी है।

संख्या ४१ ए. गोपेश्वरअष्टक, रचयिता- चतुरदास (चेतन दास), स्थान—रतलाम, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—ठाकुर देवी सिंह जी, स्थान—अहमदपुर, डाकघर—तिलियानी, जि० मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गोपेश्वरअष्टक लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री मोहन मन हरण की, चरण कमल की चाय। चतुरदास रतलाम में, जग जननी गुण गाय ॥ भजो विश्वनाथ जोगी जुगादी। कैलाश शिखरे संग सोभद्रं। सुरदैत्य माने हैं देव आदी, नमो गोपिकेश्वर धरे सीसचंद्रं ॥ त्रिनेन तिरसूल डवरु विशालं, सैलं सुता संग महाकाल जालं। सदारुद्र रूपं मनावे सो इंद्रं, नमो गोपिकेश्वर धरे सीस चंद्रं ॥ १ ॥

अंत—चतुरदास गावे मनावे विधाता। मोरा भवानी पति ईस दाता ॥ सुणी नाथ विनती चढ़ावो गजीद्रं। नमो गोपकेश्वर धरे सीस चंद्रं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बार बार प्रणाम करि। गोपेश्वर सिरनाय। हरि रीझे हरि दरसदें। चतुरा चैन मनाय ॥ ३ ॥ इति श्री गोपेश्वरअष्टक समाप्तम्।

विषय—श्री गोपेश्वर महादेव की विनती।

संख्या ४१ बी. कूर्माष्टक, रचयिता—स्वा० चतुरदास (स्थान—सलेमाबाद), कागज - देशी, पत्र—१, आकार—६ × ४½ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० चक्रपाणी मिश्र 'विशारद', स्थान—सेनावली, डा०—सिरसागंज, जि० मैनपुरी।

आदि—श्री कूर्माष्टक ॥ वैशाख शुक्ल पक्ष में। तिथि पुनं प्रदक्ष में ॥ आदि स्वरूप भूपको। नमस्ते कूर्म रूपको ॥ १ ॥ पहाड़ मंदराजतें। जहाँ हरीं विराजते। मथ्यो है सिन्धु कूपको, नमस्ते कू० ॥ २ ॥ कमठ रूप मंडलं। समस्त पाप खंडनं ॥ प्रणामहे अनूप को। नमस्ते कू० ॥ ३ ॥ सदेव देव को दियो। कछूक आपने लियो। देव सो देव

धूपको । नमस्ते कू० ॥ ४ ॥ गरल पानते भये । भये सलिल कंठ ये ॥ जोगी नयेले मून को । नमस्ते कू० ॥ ५ ॥

अंत—सोले कला प्रकाश ये । रचे हरी विलास ये । भजो हमेश भूपको । नमस्ते कू० ॥ ६ ॥ सर्वदेव कू तहां अचल्लकर दिये वहा ॥ भजे सवी अनूप को । नमस्ते कू० ॥७॥ चतुर दास गावता । तुझे सदाई चाहता ॥ सदेव वंद नूर को । नमस्ते कू० ॥ ८ ॥

विषय—श्री कूर्मदेव की स्तुति ।

संख्या ४१ सी. रामाष्टक, रचयिता—चतुरजन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८ × ५ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लभौआ, डा०—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री रामाष्टक ॥ पवन मंद सुगंध सीतल, अवधपुर अति सुन्दरं । निकट सरयू बहत निर्मल, श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ १ ॥ इन्द्र चन्द्र कुवेर नारद, शेष सारद संकरं । सिद्ध मुनिजन करत सेवा, श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ २ ॥ यक्ष गंधर्व करत कौतुक, अपसरा टाडिव धरे । संत मुनि जन करत जै जै, श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥३॥ मधुर वोल विसाल लोचन, कीट मुकुट विराजते । मातु कौशल्या करत पालन, श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ ४ ॥

अंत—भरत लक्ष्मण चँवर डोरत, शत्रुहन छत्तर धरं । चरनपद हनुमंत सेवै, श्रीरामचंद्र विस्वंभरं ॥ ५ ॥ रावण मार कृपा करता, काज स्वासो मुनिवरं । सिद्ध जोगी जपत निसदिन, श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ ६ ॥ कनक मंडप अवध पुरी, जहँ रामरूप विराजिते । राम सुत जनचतुर गावै, श्रीरामचन्द विस्वंभरं ॥ ७ ॥ रामाष्टक पढ़त निसदिन, रामलोक सुगच्छितं । भक्तजनके प्राण दाता, श्री रामचद्रं विस्वंभरं ॥ ८ ॥ इति श्री रामाष्टक सम्पूर्णम् ॥

विषय—श्री रामचन्द्रजी की स्तुति ।

संख्या ४१ डी. सत्यनारायणअष्टक, रचयिता—स्वामी चतुरदास—(स्थान-पुष्करतीर सलेमावाद), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४$\frac{3}{4}$ इंचों में, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी में, रचनाकाल—सं० १९३९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० चक्रपाणि मिश्र 'विशारद', अध्यापक—सेनावली, डा० बीरागंज, जि० मैनपुरी ।

आदि—सत्यनारायणअष्टक लिष्यते ॥ श्रीनाथ नाथं बैकुंठ वासी । श्रीभूर लीलं करती खवासी ॥ कली पाप हरणं सृष्टं सदा मत्तुः श्री वृह्म यतीं नारायणं सत्त ॥ १ ॥ श्री सतानंद ने नाथ टूठे । अध्यंतारिये इसके ही झठे ॥ श्री काशी से संत चाल्यो सदाव्रत श्री ब्रह्ममूर्तीं ॥ २ ॥ ये ही नाम जपतं दुख रोग नासे ॥ धरनीधर नित्य ये ही नाम भासे ॥ इन्द्रादि सनकादि सेवे सदानत् ॥ श्री ब्रह्म मू० ॥ ३ ॥ तुही सत्य सत्यं सत स्वरूपं, तुही सत्यनारायणं सर्व भूपं । करवृत पुनं पावे पदारत् । श्री ब्रह्ममू० ॥ ४ ॥ तुंग ध्वाजादि अपमान कीनं, ताते सदा केक्षस पायो प्रवीनं ॥ करि वहुत भक्ती लिये राज एक

छत् । श्री ब्रह्ममू० ॥ ५ ॥ बनि भक्त साधू तारे अनेकं । दृढ़ प्रेम केके व्रतं नेम टेकं । गावो सदा जीव येई ससागृत । श्री ब्रह्ममूर्तीं० ॥ ६ ॥

अंत—अनधनं पूतं ये ही नाम देते । धर ध्यान आकीन सोहि जीव लेते ॥ सत् सत् गावै सो मौज पावत् । श्री बह्म मूर्तीं० ॥ ७ ॥ चतुरदास स्वामी गावै दयालं । सब वीच सृष्ट ये वृतलालं ॥ चतुरवेद उपनीस दो माही येतत् । श्री बृह्म मूर्तीं० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरतखंड पावन परम, पुरी अवंती देस । रतन पुरी में ये रचे, चतुरा बालक वेस ॥ १ ॥ संमत् ससि निधि जातिये, तीन लोक ग्रहमान । माघकृष्ण की अष्टमी, चतुरभजा भगवान ॥ २ ॥ पिता हमारे राम हे, मातु हमारी गंग । निम्बार्क गुरुदेवका, चतुर लिया रुतसंग ॥ ३ ॥ पुरी अवंती निकटमें, षट योजन ये मीत । रतन शहर रतलाम ये, भूपा श्री शुभजीत ॥ ४ ॥ इष्टदेव सर्वेश्वरा, नगर सलेमा देस । पुष्कर तीर निवास है, श्री घनश्याम दिनेश ॥ ५ ॥ इति ॥ श्री मतेरामानुजाय नमः ॥

विषय—सत्यनारायण की स्तुति ।

संख्या ४१ ई. सर्वेश्वरजी का अष्टक, रचयिता—स्वा० चतुरदास (स्थान—पुष्करतीर, सलेमाबाद), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंचों में, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप - प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० चक्रपाणि मिश्र 'विशारद' अध्यापक, सेनावली, डा० सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—श्री सर्वेश्वरजी का अष्टक लिख्यते ॥ श्री लोकनाथ अलखेय मूर्तीं । निराकार साकार सर्वत्र पूर्ती ॥ निर्गुण श्री रघुनन्दन आत्मरूपं । सर्वेस्वराईस देवाधि भूपं ॥१॥ सुर शंभु गावै चिदानंद स्वामी । आदं अनादी है देव नामी ॥ रहे ब्रह्म संगी माया अनूपं ॥ सर्वेश्वरा० ॥ २ ॥ विश्वंभरं वेद अक्षर अतीतं ॥ सदा निर्विकारं निर्वाण नीतं ॥ तुही भार हर्ता धर्ता चे रूपं । सर्वेश्वरा० ॥ ३ ॥ प्रथम श्री प्रगटे मानसरोवर । ब्रह्मांड चौदा छिन में सो रचकर धरा नाम जंबू अंबू सोकूये ॥ सर्वेश्वरा० ॥ ४ ॥ रचे आव तारा रचे चाँद ब्रह्मा । तुही खेल करता वनाया सो धर्मा ॥ सब देव आई धरते सो भूपं ॥ सर्वेश्वरा० ॥ ५ ॥

अंत—तुही पुरुष पुरुषोत्तम पुर समाई । विना तेरे होके हिलती न राई ॥ तुही चैन करता हरे मर्म कूपं । सर्वेश्वरा० ॥ ६ ॥ घनश्याम सरनं देवं दयालं । नगर सलेमा विराजै सालं ॥ ये ब्रह्म मूर्तीं तीरे अनूपं । ॥ सर्वेश्वरा० ॥ ७ ॥ चतुर्दास गावै धरि ध्यान भारी । श्री राधिका मातु माधव विहारी ॥ निर्वाणादि श्री जी अनूपं । सर्वेश्वरा० ॥ ८ ॥

विषय—सर्वेश्वरजी की स्तुति ।

संख्या ४१ एफ. गुरुअष्टक, रचयिता—महंत चेतनदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच , पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मुंशीलालजी, स्थान—नन्दपुर, डा०—खैरगढ़, जि० मैनपुरी ।

आदि—अथ श्री महंत चेतनदास रत कृत गुरुअष्टक समाप्तम् ॥ नमो सिद्धि बोधं सिद्धांत वाणी । सदा ध्यान धरेत वो चक्रांग पाणी ॥ करो साध साद कृतिहू वार सेवं ।

नमो सत्य निम्बार्क सीधावोंदेवं ॥ १ ॥ जप जोग सिद्धं निर्लोभ ज्ञानी । दिव्यं स्वरूपं सदा संत मानी । राग न रोसं न देवं नलेवं । नमो० ॥ २ ॥ मुद्रा तिलक भाल दिना त्रिसालं । कमलाक्ष तुलसी हृदे लोक पालं । तेज स्वरूपं पर सिंध भेवं ॥ ३ ॥ जोगेश्वरं जोग मूर्ती अनूपं । चक्र सुदर्शन वपुरूपं रूपं ॥ गुरुदेव दाना सदा मुक्ति नमेव नमो० ॥ ४ ॥ परमं पवित्रं सदा ब्रह्म रूपं । ब्रह्मांड घीसं दयालं अनूपं । पुरुष देदिप्त क्रसि आदि सेवं । नमो० ॥ ५ ॥

अंत—गुरुदेव विष्णु अज भानु रुद्रा । कोई सीतलं लेत कोई तेज उद्रा । मुमुक्ष देवं अधमेरु देवं । नमो० ॥ ६ ॥ धर्मश्व पालं साकार स्वामी । निराकार निरलेप है अंत्र जाम्मी ॥ ब्रह्मादि रुद्रादि वरताय केवं । नमो० ॥ ७ ॥ चतुर बिनती नित्य करता नराधी । तेही कर्न रूपी करु सेत बाँधी ॥ तुम पाँव पंकज सुरदेव सेवं । नमो० ॥ दोहा ॥ निंबार्क, अष्टक पढ़े, छिनमें पाप विलाय । हेम दाव गज दान सम, चतुराचैन मनाय । ६ ॥ इति श्री गुरु ः ष्टक समाप्तम् ॥

विपय—गुरु की स्तुति का वर्णन ।

संख्या ४१ जी. जनकनंदिनी अष्टक, रचयिता—महंत चेतन दास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्) २०, पूर्णरूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मुंशीलाल जी, स्थान—नंदपुर, डा०—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी ॥

आदि—श्री जनक नंदिनी अष्टक महंत चेतन दास कृत लिख्यते ॥ श्री जक्तजननी प्रगटी वैंदेही ॥ रघुनाथ जिनके परम सनेही ॥ जनक सुता सत आनंदकारी । नमो कौशलीद्रं सदा प्राण धारी ॥ १ ॥ श्री बुद्धि दाता करती प्रमोद्रं । सदा संत सेवें सिया नाम सोदं ॥ पिशाच हननी गर्वः अहारी । नमो० कौ० ॥ २ ॥ श्री रामवामाऽग विराजतः । गुण वेद गावे सोचेन पावतः ॥ अनादि देवं हित दैत्य गारी । नमो कौ० ॥ ३ ॥ श्री जानकी पाद सेवे मुनिंद्रंः । पूजा करे नित्य सुरदेवइंद्र ॥ भक्ति सदा प्रेम लेते अवारी । नमो० कौ ॥४॥

अंत—श्री मातु शक्तिः सदा संत मानी । हरे रोग पीड़ा सीता भवानी ॥ सुख देन वारी रटे बेद चारी । नमो० ॥ ५ ॥ श्रीमातु जीते अहिरावणादिः । पुष्कर दिये धरो रूप आदिः ॥ करी बिनती देव तेरी पुकारी । नमो० ॥ ६ ॥ श्री मातु महिमा सुरईस गावे । जोगी जती नित्य ब्रह्मादि ध्यावे ॥ कोटानुं भानू जप तेज भारी । नमो० ॥ ७ ॥ श्री मातु सीता सतवंत रूपं ॥ चतुर्जन गावे महिमा अनूपं ॥ करजोरि अरजी शरण तिहारी । नमो० ॥ ८ ॥ इति श्री जनकनंदिनी अष्टक समाप्तम् ॥

विपय—सीता जी की स्तुति ।

संख्या ४१ यच्. रामाष्टक, रचयिता—महंत चेतनदासरत, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मुंशीलालजी, स्थान—नन्दपुर, डा० खैरगढ़, जि० मैनपुरी ।

आदि—अथ महंथ चेतनदास कृत रामाष्टक लिख्यते ॥ पवन मंद सुगन्ध शीतल अवधपुर अति सुंदरं ॥ निकट सरयू बहत निर्मल श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र कुबेर नारद, सेस सारद संकरं । सिद्ध मुनि जन करत सेवा श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ २ ॥ यक्ष गंधर्व करत कौतुक अपसरा टाडिव धरं । संत मुनिजन करत जै जै श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ ३ ॥ मधुर बोल बिसाल लोचन कटि मुकुट विराजितं । मातु कौसल्या करत पालन श्रीरामचंद्र विस्वंभरं ॥ ४ ॥

अंत—भरत-लक्ष्मण चँवर ढोरत शत्रुहन छत्तर धरं । चरन पद हनुमंत सेवे श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ ५ ॥ रावण मार कृपा करता काज स्वासो मुनिवरं । सिद्ध जोगी जपत निसदिन, श्रीरामचंद्र विस्वंभरं । ६ ॥ कनक मंडप अवधपुरी जहाँ रामरूप विराजितं । राम सुत जन चतुर गावे श्री रामचन्द्र विस्वंभरं ॥ ७ ॥ रामाष्टक पढ़त निसदिन रामलोक सुगच्छितं । भक्त जन के प्राण दाता श्री रामचंद्र विस्वंभरं ॥ ८ ॥ इति श्री रामाष्टक समाप्तम् ॥

विषय—श्री रामचन्द्रजी की स्तुति ।

संख्या ४१ आई. वृन्दावनअष्टक, रचयिता—महंत चेतनदास रत, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मुंशीलालजी, स्थान—नन्दपुर, डा० खैरगढ़, जि० मैनपुरी ।

आदि—॥ अथ महंत चेतनदास रत कृत श्री वृन्दावन अष्टक लिख्यते ॥ हीरा जटित भोम दमके विशालं । रती इवैव मुक्ता धरे सिद्ध भालं ॥ सुमिरं न मृतकार मे नंद नंदं । नमो धन्य वृंन्दावनो भोमचंदं ॥ १ ॥ कल सरू झुंड आनंद सघनं । शोभाय मानं ऊंचे सो गगनं । पवन इवलपटा उड़ती सुगंधं । नमो० ॥ २ ॥ सदा बाटिके पुष्प फूले अनंतं । गूंजे सो भौंरा खेले सोकंतं ॥ ब्रज की लता देख वदे सुरींदं । नमो० ॥ ३ ॥ धर रुप बानर दिनमे सो देवं । निज रूप रात्री करे पाद सेवं ॥ निधि वन दरसे प्यारा मुकुंदं । नमो ॥ ४ ॥

अंत - वंसी बट पास निकटे यमुना, रच्यो रास गोविंद राधा सेरमुना ॥ कर जोर तेहि पादं सुरदेव वंदं । नमो० ॥ ५ ॥ करे कीरतं देवले प्रेम धर्म्मा । स्यामा सखी संभु ललिता सोबर्मा ॥ धरे मोहिनी रूप गावे सो छंदं । नमो० ॥ ६ ॥ सब देव इच्छा करते सो पाकी । प्रगटे सो जगमें करते सो झांकी ॥ श्रीवंनमामो मुक्तीस नंदं । नमो० ॥ ७ ॥ चतुरदास गावे गऊ लोक रूपं । सब गेर दरसे जगजीव भूपं ॥ सुर अंस चावे व्रंदा अनूपं । नमो० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वृंदावन सा वन नहीं, नहीं जक्त के माय । रमन धाम परब्रह्म की, चतुर कही सिरनाय ॥ इति श्री वृन्द्रावन अष्टक समाप्तम् ॥

संख्या. ४२. चतुर चंद्रिका पिङ्गल, रचयिता—चतुरदास, कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)

१०१४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बाबू रामजी नंबरदार, स्थान—नटावली, डा० करहल, जि० मैनपुरी ।

आदि— × × ×

॥ अथ गण स्वरूप टीका चक्र ॥

नंबर	गणनाम	गणस्वरूप	गणमात्र	अक्षरगण	शुभा शुभ
१	मगण	SSS	६	श्रीराधा	अच्छा गण मंगलीक
२	यगण	ISS	५	अनंदी	शुभ गण मंगलीक है
३	रगण	SIS	५	केशवा	सामान्य गण है ।
४	सगण	IIS	४	सजनी	अशुभ गण है
५	तगण	SSI	५	गोविंद	सामान्य गण है ।
६	जगण	ISI	४	नरेश	अशुभ
७	भगण	SII	४	भावत	अच्छा गण है
८	नगण	III	३	सरस	शुभ गण मंगलीक है

॥ अथ गण देवत वर्णन ॥ चौपाई ॥ मगण, भोमत्रिये, गुरु हैं स्वामी । कवला देव देव घरमवामा ॥ १ ॥ यगण आदि लहूं स्वामी जानो । जल वृद्धि सुता सत्य करमानो ॥२॥ रगण मध्य कविजम गावे । आनि देव फल मृत्यू चावे ॥ ३ ॥ सगण अन्य गुरु पवन पतीये । देशाटन बहूत करत जतीये ॥ ४ ॥ तगण अंत लघु स्वर्ग वियत वखाना । धन खोवै आदी नहीं लाया ।

× × ×

अंत--श्री नारायण कृपाते चतुर चंद्रिका ग्रंथ । रामात्मज चतुरारची, सत पिंगल का पंथ ॥ १०५ ॥ चतुरचंद्रिका चंद्र सी, छंद मनोहर गंग । भीतर गुण गोविंद के, भाव भक्ति सत संग ॥ १०६ ॥ पिंगल है निज कल्पतरु, शाखा छंद प्रवंद । फूल वृत्त में छा रह्मा, दामोदर गोविंद ॥ १०७ ॥ पिंगल उदधि अपार है, किन हींन पायोपार । वृत मुक्तामणि रत्न है, चतुर किया विस्तार ॥ १०८ ॥ चतुरदास पिंगल रचौ, अरपण कियो गोविंद । प्रसिद्ध करे अष्टोदिशा, चतुरागोकुल चंद ॥ १०९ ॥ पिंगल मत सर्वोपर, सर्व धर्म का जीव । शेष गरुड़ गनपति गिरा, गुरु पांचों निज जीव ॥ ११० ॥ राधा रमण रमापति, श्री बृज

वल्लभ गाव । सकल मनोर्थ सिद्धि होय, केशव केशव चाव ॥ १११ ॥ श्रीरस्तु कल्याण भवति ॥ इति श्री जंबू द्वीपे भारत वर्षे मालव देशे । अवंतिका महाक्षेत्रे ॥ श्री निंबार्क महानुयायी वैष्णव हरि कासी महंत ॥ श्री रामदासात्मज कवि चतुरदास ॥ विरचिते ग्रंथ की चतुर चंद्रिका ॥ समाप्तम् शुभम् ॥ श्री गोपाला ॥ पूर्णम् ॥

विषय--गण विचार, लघुगुरु, दग्धाक्षर, प्रस्तार, तथा छंदों के भेदोपभेद तथा उनके उदाहरण ।

विशेष ज्ञातव्य-प्रस्तुत ग्रंथ मालवा देशान्तर्गत अवंतिका क्षेत्र के निंबार्क मतानुयायी वैष्णव हरिव्यासी महंत राम दासजी के पुत्र चतुरदास जी का रचा हुआ पिङ्गल ग्रंथ है। इसमें संक्षेप में पिंगल के समस्त अंगों पर विचार किया गया है । गण विचार, द्विगणविचार, लघु गुरु एवं संयोगी अक्षरों का वर्णन तथा प्रस्तारादि का भी आवश्यक वर्णन किया गया है ।

संख्या ४३. ताजिक सारभाषा, रचयिता—छाजुराम द्विवेदी (स्थान—कोटा ग्राम), कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—१३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९२ वि० (१७३५ ई०), लिपिकाल—सं० १७९२ वि० (१७३५ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री राधेश्याम जी द्विवेदी, स्वामीघाट, मथुरा ।

आदि—॥ अथ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ तजिक सारनी वारता लिष्यते ॥ इष्टेश को जन्म शके नहीं ॥ वर्तमान शक मथी जन्मशाकही न कीजे ॥ शेष गताब्द कहिये ते गताब्द च्यार ठोडी माडीजे एक ठामे ३६५ गुणा कीजे दूजी ठामे १५ गुणा कीजे त्रिजि ठामै ३१ गुणा कीजे चौथे ठामे ३० गुणा कीजे हेठे थी ६० भाग दीजे लब्ध उपरि जोड़ि जे उपरि ६० भाग दीजे लब्ध उपरि जोड़िजे ६७ भाग लब्ध ऊपरि जोड़िजै पाछे इण आकामा है जन्म को हर्गण जोड़िजै जन्म घटी पल जोड़ी जे वर्ष प्रवेश को समय डहर्मर्ण होइ ॥

अंत—अथ दिना नयनं ॥ जो वर्ष प्रवेश सो प्रथम दिन प्रवेशः द्वितीय दिन प्रवेश की जोति वारैं सूर्य स्पष्ट रा × × माहे १ अंश जोड़ि जे कला पिंड करी भाग ८०० त्रीस्थ फल लीजे ते सूर्य्य नक्षत्र वारादि माहे जोड़ि जे इम दिन प्रते १ ऽश सूर्य्यस्य छ माहे जोड़ी दिन प्रवेश कीजे ॥ इति दिन प्रवेश नयनं ॥ इति श्री ताजिक-सारे भाषा-टिप्पणि का समाप्त ॥ संवत १७९२ प्रवर्त्तमाने शके १६५७ आश्वन शुक्ल ४ भौमे लीषीतं चिरंजीव छाजु राम स्व पठनार्थे कोटा ग्राम मध्ये, दुर्ज्जन शल्यराज्ये ॥

विषय—ज्योतिष का ताजिक शास्त्र जिसमें गणित और लग्न द्वारा वर्ष का फलाफल एवं समय समय कुसमय आदि बातों का बोध कराया जाता है ।

विशेषज्ञातव्य—प्रायः दो सौ वर्ष का गद्य इस ग्रंथ में मिलता है । इसकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव यत्र तत्र दीख पड़ता है । संस्कृत के प्रयोगों की भी अधिकता है ।

संख्या ४४. विक्रमचरित्र, रचयिता—छत्रकवि (स्थान—अटेर, भदावर), कागज--देशी, पत्र—१२५, आकार--१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२४, परि-

माण (अनुष्टुप्)--२७५०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७५१, लिपिकाल--सं० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री पं० छोटेलाल जी शर्मा, स्थान--उमरैठा, डाकघर--विनाहट, आगरा ।

आदि--श्री गणेशाय नमः श्रीरामायनमः ॥ अथ पोथी विक्रम चरित्र की लिख्यते ॥ छप्पै ॥ गिरिवर धरन हरन अघ अमित अनंतनि । दुष्ट दपटि दल मलनि करन दीरघ दुष अजा मेल दुष दलन दनुज उदधि अवगाहन । मधु मुरकेसीहतन तमहि निज भुजवर संतनि ॥ दाहन ॥ कवि छत्र रमित जलथल विषै दीनवंधु असरन सरन । नंद नंद जग वंदि हरि । भूमि विदित जग उद्धरन ॥ १ ॥ त्रिभंगी ॥ जै त्रिभुवन नाइक असुर विनाइक रिपु-कुल घाइक रघुनाइक । जै मुनिजन वंदन दुष्ट निकंदन जादव नंदन संत सहाइक ॥ जै विपिन धारी सुषकारी सव लाइक । जे सुरमुनि रोचन पंकज लोचन दुष मोचन सुष दाइक ॥ २ ॥ विहारी गिरवर जै गजआनन पंचानन सुत विघन विनासन भारी । चतुरानन सहसानन जोवत गन नाइक सुपकारी ॥ जै रिपुदल पंडन दुष्ट विहंडन गुन मंडन अधिकारी । जै मूषक वाहन दूषक दाहन व्रत्तु निवाहन जन भयहारी ॥ दोहा ॥ दुप पंडन कौं पर्ग सौ, सकल सुष्ष को धाम । सागर जगत जिहाजु है, वानी जू को नाम ॥ ४ ॥ करौ सुमति गति सारदा, उपजै उक्ति असेप । आछे आछे अछरनि, बरनौ ग्रंथ विसेप ॥ ५ ॥

अंत--दारिद की आधि व्याधि, दाहन धनंतरिसौ, सूरसो उदोत जग जाकौ अरविंदसौ । कुंजर से पुंज अरिगंजन कौ गंजन कौ के हरिसो, छत्र भने सज्जन चकोरनिकौ चंद सौ ॥ नाकपति पुर्ज त्ररोप गिरिवरकर, रछिवे को हुनी गोप को गोविंद सौ । भोज नरनाह सोहै भूमि भार भुजा धरै, जुद्ध भूमि मध्य रुद्र ग्यारहो कपिंद सौ ॥ २३ ॥ ॥ श्री सिव सोरठा ॥ सुनि गिरिजा सुप पाइ, पौरिष विक्रम वीर कौ । सकै कौनु नर गाइ, ताके अमित चरित्र कौ ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ पसुपति गिरजा सौं यह कह्यौ । सुनि सुनि परम हिये सुख लह्यौ ॥ विक्रम कथा सुनैं सुप पाइ । ताकौ कष्टु दुष्ष मिटि जाई ॥ २५ ॥ दारिद कवहूँ लपै न नैन । आव सकल भरि रहै सुपेन ॥ परम धीर मति बढ़ै अपार । दया करौ ताको करतार ॥ २६ ॥ इति श्री नृपति विक्रमादित्य चरित्रे ॥ कवि छत्र विरचिते पार्वती श्री सिव-संवादे विक्रम चरित्र ॥ समाप्तं संपूर्ण संवतु १८६८ ॥ असुन शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां १५ गुरुवासरे लिषितं ॥ भगवानदास ॥

विषय—(१)-मंगलाचरण, कवि के समसामयिक बादशाह का वर्णनः—दिल्लीपुर अमरावती, सुरपति औरंग शाहि । गिरवरगन अरि वस किये, अरु सम दीजै कहिं ॥ ६ ॥ कवि परिचय या आश्रय दाता—लसहु तासुकी तरहटी, मुलक भदावर नाम ।............ ॥ ७ ॥ मेर महासिंघ वंस अंस श्री उदोत सिंह भूपनिके अवतंसगुनी गुन गायो है । अस-रन सरन हरन ओरोर दीननि के मोज के करन को करनते सवायो है ॥ तेज को निदान जैसे ग्रीषम को भानु भूमि हनुमान तिनके समान वरु पायो है । छत्र जंबू दीप दीप मैं प्रसिद्धि नृपति कल्यान सिंघ जू कौ जसु छायो है ॥ ११ ॥ उत्तिम जाति भदौरिया आदि सुकुल चौहान, ताकें द्विज सुरभीन कौ भक्ति महासनमान ॥ १२ ॥ कविवर्णन—श्रीवास्तव-

काइस्थ है, अमरदास के वंस । गोविंददास भए प्रगट, निजकुल के अवतंस ॥ १४ ॥ तिनके भागीरथ भए, कुल दीपक गुनग्राम । तिनके प्रगटे निज तनय, छत्र सिंह इहिनाम ॥ १५ ॥ वसत भदावरि माहिं पुनि, पुर अटेर सुषधाम ॥ १६ ॥ भई सुमति अति चाहसों, विक्रम सरिस चरित्र । वरन्यौ विदित वनाइकैं, रीझै सुनत चरित्र ॥ १७ ॥ ग्रंथ निर्माण काल— संवत् सत्रह सै क्यावन । मारग सुदि पून्यौ मन भावन ॥ विधु सुत वास सदा सुभकारी, तादिन कीनौ ग्रंथ विचारी ॥ विक्रम चरित्र नाम सुभराष्यौ । छत्र सुघटिका सुष मुष माष्षे (पृ० १—२) । (२) गधर्वसेन को इन्द्रका शाप, उसका भूलोक पर गंधर्व होकर आना, मल्लव देश के नृप की कन्या से विवाह होना, भरथरी तथा विक्रम का जन्म, उज्जैन में भरथरी का राज्य करना और अनुज का मन्त्रीत्व पद पर कार्य करना, विक्रम का देश निकाला, भरथरी का योग साधन, पुनः चौदह विद्या विधान होकर विक्रम का राज्य करना तथा उसकी बुद्धि के कुछ कौतुकादि का वर्णन [२—१४] । (३) भोज का राजा विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठने का इरादा और क्रमशः ३२ पुतलियों का कहानी कथन, भोजके पूछने पर वत्तीसों पुतलियों का अपनी पूर्व कथा सुनाना, अभिशाप, उसका कारण तथा मोचन और उसका इन्द्रलोक को जाना, भोज महीप का सिंहासनासीन होकर राज्य कार्य में संलग्न होना (१५—१२५) ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ "विजय मुक्तावली" के लेखक सुप्रसिद्ध 'छत्र' कवि का लिखा हुआ है । यह ग्रंथ उन्होंने संवत् १७५१ वि० (१६९४ ई०) में रचा है और इसमें तत्कालीन दिल्ली पति मुगल सम्राट औरंगजेब का नामोल्लेख किया है । औरंगजेब की मृत्यु सं० १७०७ ई० में हुई । अतः उससे १३ वर्ष पूर्व इसकी रचना हुई है जो ऐतिहासिक दृष्टि से भी शुद्ध है । ग्रंथकार जाति के श्रीवास्तव कायस्थ, अमरदास के वंशज, गोविन्द दास के पौत्र एवम् भागीरथ के पुत्र थे । वह अपना आदिस्थान बांगर मऊ बतलाते हैं और निवासस्थान अटेर (भदावर) । इन्होंने अपने आश्रयदाता भदौरिया के महाराजा कल्याण सिंह का भी वर्णन किया है जो चौहान वंश के थे और जो महाराज महासिंह तथा महाराज उदोत सिंह के वंश में हुए थे । इन्हीं के वंश ने अन्त में भदौरिया क्षत्रिय के नाम से ख्याति प्राप्त की ।

संख्या ४५. हनुमान विजय, रचयिता—मनियार सिंह, कागज—मोटा बाँसी, पत्र—१९, आकार—१० × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, खुले पन्ना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९२० वि० (सन् १८६३ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वर जी, मु०—डाकघर—कोसी कलाँ, जि० मथुरा ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ हनुमान विजय लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री लंबोदर के चरन मंगल करन मनाए ॥ सुत प्रद मारुत सुत कथा कहौं जथा मति गाए ॥ दोहा ॥ सत जुग संकर सिवा संग, बालमीक भै ताहि । द्वापर कृष्ण कहो जथा, तुलसिदास कलि-माहि ॥ चारों जुग गुरु चारि में, हनुमत चरित उदार । वरन्यौ हैत्यौ बरनि हौं, मैं निज

मति अनुसार ॥ चरन कामना कलप तनु, कथा काम······रूप । चिन्तामनि मनियार के, हनुमान कपि भूप ॥

अंत—छप्पय रघुकुल मनि मनि हाथ लिये गहि हाथ लिये कपि । तबते त्रिभुवन नाथ हृदय ते साथ लिये कपि ॥ कह्यो उरिन हम नाहिं सदा तुम पाहिं सुनो कपि । अनुज लक्ष्मन सरिस तुम्हैं मन माँहि गुनो कवि ॥ यहि भाँति आपु भगवन्त जू हनू सुजस निज मुष कह्यो । अंजनि कुमार के पद कमल "मनियार सिंघ" विचारि कै हिय कह्यो ॥ हनुमत चरित उदार पढ़ै जो सुनै सुरति कर, सुत सम्पति परिवार लहै वैभव विभूति भर ॥ × × (छूटा हुआ है) × सुन्दर काण्ड कथा अमित कवित बंध जे जन जपै । "मनियार सिंह" मारुत सुअन मूरति ताउर थिर थपै ॥ इति श्री हनुमत विजय कवित्त बन्धनो नाम पूर्ण ॥ सम्वत् १९२० आश्वनि मासे कृष्णपक्षे दशम्याँ बुधवासरे ॥

विषय—रामायण सुन्दर कान्ड का यह सुन्दर एवं भावात्मक प्रतिरूप है । रामचन्द्र की मुद्रिका लेकर सीता की खोज में हनुमान का समुद्र पार कर लंका जाना, सुरसा नाम राक्षसी का बध करना, अशोक वाटिका में पहुँच कर जगन्माता को राम का सन्देश और उनकी ओर से सांत्वना देना, वाटिका के फलों का हनुमान का तोड़ २ कर खाना एवं अन्यान्य उपद्रव करना । रावण को यह समाचार मिलना और राक्षसों को हनुमान के बध के लिए भेजना । अन्त में मेघनाद का हनुमान को पाश में बाँध कर रावण के सम्मुख ले आना वहाँ दोनों की बातचीत होना, पूँछ जला कर रावण का हनुमान को छोड़ देना, हनुमान द्वारा लंका दहन और अंत में उसका लौट कर राम के पास जाना आदि वर्णन ।

संख्या ४६. हिदायतनामा, रचयिता—कलेक्टर, आगरा, कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—६ × ६ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८५२ ई०, लिपिकाल—सन् १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, गोकुलपुरा, आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ पटवारियों के रोजनामचा और षाता लिषने का हिदायतनामा माफक मतलब सबकारी साहिब कलक्टर बहादुर जिले आगरे लिषी हुई ॥ तारीष २६ मई सन् १८५२ ईस्वी ॥ दफै पैहिली १ ॥ साल के बहीषाता व रोजनामचा तारीष १ जून तक तहसीलदार की कचहरी में पटवारियों को मिलि जायगा ॥ पटवारियों को चाहिये की हर साल बिना बुलाये आपुसें आपु उसी दिन तक तहसीलदारी की कचहरी में आयकर बही षाता ले जाँय ॥ और उसी दिन तहसीलदार कूँ दे जाइं ॥

अंत—॥ दफै पचीसमी २५ ॥ पटवारीयों को चाहिये कि बही रोजनामचा व षाता जो उनको मिला है साल आषरि होने से ये हे लेषेतम होने पर आवै याने वरष कमी हो जाइ तौ सात दिन पहलै से तहसीलदार को इत्तलाह करिदेइ कि जरूरत्ति के माफक दूसरी बही मिलि जाइगी ॥ दफै छब्वीसमी २६ ॥ हरि एक पटवारी की हाजुरी वास्ते माहवारी तारीख य मुकर्रर हुआ ॥ × × ×

विषय—पटवारियों के लिये भिन्न भिन्न हिदायतों का, यथा किस तरह उनको रोज-नामचा अथवा खाता लिखना चाहिये, वर्णन किया गया है ।

संख्या ४७ ए. दादूदयाल की बानी, रचयिता—दादू , कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—५ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्) — २६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीराधागोविन्द जी का मन्दिर, प्रेम-सरोवर, डाकघर—बरसाना, मथुरा ।

आदि—श्री स्वामी दादूदयाल जी सहाय ॥ अथ सुमरण को अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं, नमसकार गुरुदेव तै । वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंग तै ॥ एकै अक्षर पीव का, सोइ सत्यकर जाणि । राम नाम सतगुरु कहा, दादू सो परमाण ॥ पहिली श्रवण दुती रसन, तृतिये हिरदै गाय । चतुर्दशी चेतन भया, तव रोम रोम ल्यो जाय ॥ दादू नीका ना बहै, तीन लोक तत्सार ॥ रात दिवस रखो करी, रे मन येह विचार ॥

अंत—मुझ भावै सो मैं किया, उझ भावै सो नांहि । दादू गुनहगार है, मैं देपा मन माहिं ॥ पुसी तुम्हारी त्यूं करौ, हम तो मानी हारि । भावैं बन्दा बकसिये, भावैं गहि करि मारि ॥ जे साहिब लेपा लिया । ते सीस काटि सूली दिया ॥ महरि मया करि फिल किया । तौ जीये जीये करि जीया ॥ इति श्री बीनती कौ अंग पूर्णम ॥

विषय—१—सुमरण का अंग । २—विनती का अंग ।

संख्या ४७ बी. दादू सबद, रचयिता—दादू , कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—५ × २⅓ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राधागोविन्द चन्द्र का मन्दिर, स्थान—प्रेमसरोवर, डा० बरसाना, मथुरा ।

आदि—अथ सबद लिखतं ॥ राम नाम नहिं छाड़ौं भाई ॥ प्राण तजौं निकट जीव जाई ॥ टेक ॥ रत्ती रत्ती करि मारै मोहि ॥ साईं संग न छाड़ौं तोहि ॥ भावै ले सिर करवत दे ॥ जीवन मूरी न छाँड़ौ ते ॥ पावक मैले मारे मोहिं ॥ जरै सरीर न छाड़ौं तोहि ॥ अव दादू अैसी बनि आई ॥ मिलौ गोपाल निसान बजाई ॥ राम नाम जिन छाड़ै कोई ॥ राम कहत जन निरमल होई ॥

अंत—भाव भगति सौ आरति कीजे । इहि विधि दादू जुग जुग जीजे ॥ अविचल आरती देव तुम्हारी । जुग जुग जीवत राम हमारी ॥ मरन मीच जम काल न लागै । आवागमन सकल भर्म भागै ॥ जोनी जीव जनम नहिं आवै ॥ निरभै नाम अमर पद पावै ॥ कलि विष कुस्मल बंधन कापे । पारि पहुँचे थिर कर थापे ॥ अनेक उधारे तै जन तारे ॥ दादू आरती नरक निवारे ॥ × × ×

विषय—१—रामनाम महिमा । २—नाम विश्वास । ३—नाम महिमा । ४—उपदेशचिन्तामणि । ५—गुरु ज्ञान । ६—परमेश्वर महात्म्य । ७—मंगलाचरण । ८—चेतावनी । ९—काया वेली । १०—गुरु नाम महिमा । ११—समर्थ लीला । १२—आत्मा परमात्मा राम । १३—अमिट अविनाशी का रंग । १४—आरती गीत ।

संख्या ४८ ए. पुरुषार्थ शुद्धोपाय, रचयिता—दौलत राम, कागज—देशी, पत्र—११३, आकार—१३१/२ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३९०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२८ (१६७१ ई०), लिपिकाल—सं० १८८३ (१८२६ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री सुखचन्द जी 'जैन-साधु', स्थान—वहलौली, डाकघर—चन्द्रपुर, जि० आगरा।

आदि—।। ६० ॥ श्री वीतरागायेन्मः ॥ अथा श्री पुरिषारथं सुद्धो उपाइ लिखतेः।। परम पुरिष निज अर्थ कौ, सा······भये गुण विंद। आनंदा म्रत चंद कौ, वंदत होइ सुखकंद ।। १ ॥ वांनी विणु वैन न वनै, वैंण विण विनु नैण। नैन विणाना वन वनै, नमो वानि वण वैन ॥ २ ॥ गुरु चरु भावै आप पर, तारक वारक पाय। सुरुगु गावै आप पर, हारक वाचक लाय ॥ ३ ॥ जैन वैंण गुण जान निज, ज्ञाण ध्यान धण लीण। मैन माण विण दान घण, रान हीण तन छीन ॥ ४ ॥ सवैया ३१ ॥ के ऊनयनिहचै करि आतमा कौ सुद्ध मानि माहे सुछंद न पिछानै मिज सुधता। केऊ विव्यहार दांण सील तप भावही कौ आतम कौ हिता जानि छाँड़त न मुद्धता ।। केऊ विवहार नयनिहचै के मारग कौ भिन्न जानि पहचांनि करैं निज उद्धता। अव जानैं निहचै के भेद व्यवहार सव कारण कौ उपचार मानै तव वुद्धता ॥ ५ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु परम दयाल है, दयौ सत्य उपदेस। ज्ञानी मानैं जांति कैं; ठाणैं मूढ़ कलेस ।। ६ ॥

अंत—वस्त्रैः कृतानि चिद्रापदानि तु पदैः ।। क्रतानि वाक्यैः कृतं पवित्रं ॥ शास्त्र मिदंन पुरा नर स्माभि ॥ २२९ ।। टीकार्थ ॥ इहां ग्रंथ कर्त्ता श्री अम्रत चंद्र आचार्य्या अपनी लघुताई करै है ॥ जो इदं कही ये यह पुरुपार्थ सिध्ये पापुनामा ।। सास्त्रं पवित्रं कही ये महा पवित्र ।। अस्माभि कहीये हमने कृतं कहिये न की यातव सिष्य प्रष्ण कीया यह ग्रंथ किनिनै कीया तव आचार्य कहिये चित्रैवर्णै क हीये नाना प्रकार के जे अक्षर तिन करि पदानि कहियें छंदनिके चरण कृतानि कहिये कीये पुनः कहीये वहुरि पदै कहीये चरण करि वाक्यानि कहिये छंद कृतानि कहीये कीये पुनः अरु वाक्य कहिये छंदनि करि शास्त्र कहिये ॥ शास्त्र कृत्यं कहिये कीया ॥ तातै हमारा कर्तव्य नाही ॥ भावार्थ ॥ वावन अक्षर अनादि काल कै हैं ;; तिन करि छंदनि के चरण भये ॥ औरु छे चरण करि छंद भए ।। औरु छंदनि करि ग्रंथ भए ॥ अक्षर औरु पद छंद ए कर्त्तम नाही अक्रतम है ॥ काहू करि कीया नाहीं ॥ असा जानना योग्य है ॥ २२९ ॥ दोहा ॥ अमृत चन्द्र मुंनि प्रकृत, ग्रंथ श्रावकाचारि। अध्यात्म रुपी महा आर्य्या छंद जु सारि ।। १ ॥ पुरुषार्थ की सिद्धि कै तामैं परम उपाय। जाहि सुनत भव भ्रम मिटै आत्म तत्व लषाय ।। २ ॥ भाषा टीका ता ऊपरि कीनो टोडर मल्ल। मुनिवर व्रति वाकी रही ताके मांहि अचुल्ल ॥ ३ ॥ वे तो परम भव कूँ गये। जयपुर नगर मझारि ॥ सव साधन मिलि तव कीयो मन में यहै विचारि ।। ४ ॥ ग्रंथ महा उपदेस मम पर्म धर्म कौ मूल। टीका पूर्ण होय तौ मिटै जीवकी भूल। ५ ॥ साधर्म्मनि मै मुष्य हे रतन चंद्र दीवान। पिरथी चंद नरेसकौ, श्रद्धावान सुधाक ॥ ६ ॥ तिनकैं अभिरुचि धर्म सौं। साधर्म निसौ प्रीति। देव सास्त्र गुरुकी सदा उरमें महा प्रतीति ॥७॥

अनंदसुत तिनकौ सषा। नाम जु दौलतिराम ॥ मृत्यं भूप कौ कलि कुलि वणिक जाके वसवै धाम ॥ ८ ॥ कछु इक गुरु परताप तैं, कीन्यौ ग्रंथ अभ्यास ॥ लगन लगी जिनि धर्म सू ॥ जिन दासिन कौ दास ॥ ९ ॥ तासौं रत्न दीवान नैं ॥ कही प्रीति करि एह। करिये टीका पूर्ण उरधरि धर्म्म सनेह ॥ १० ॥ तव टीका पूर्णकरी भाषारूप निधान। कुशल होय चहु⋯⋯कौं ॥ लहौ जीत निज ज्ञान ॥ ११ ॥ सुषी होय राजा प्रजा होइ धर्म की वुद्धि। मिटैं दोष दुष जगत कैं पावौभव जन सिद्धि ॥ १२ ॥ अठ हाँसे उपरा संवत सत्र-वीस। मास मार्ग ससिर रितु सुदी २ द्वैज रजनीस ॥ १३ ॥ संवत् १८८१ ॥ मिती मार्ग सुदी १२ रवऊ संवत् १८८३ की प्रति के पत्र दुवै मिती काति सुदी परिवा रविवासरे कौ नवीन गाथं ग्रंथ के शुभश्यशुभ के प्रवेस श्री साहुनंद रामजू के नाती चि० मथुरा प्रसाद के पर्म प्रीति पाठार्थ हेतू ॥ लिषितं लाला स्यौलाल कस्वा अदे (? अटैर) निवासिनः ॥ सर्वार्थ सिधिः ॥

विषय—भूत निश्चय और व्यवहार रूप जो मोक्ष मार्ग है उसकी एकता का उप-देश। पदार्थ निर्णय स्यादवाद सिद्धान्त की सम्यक् मीमांसा, ग्रंथ चतुष्टय; व्यवहार नय, वर्ण रसादि प्रकार, विषय परियाय, संसार का मूल कारण पुरुषार्थ की सिद्धि का उपाय, उपदेश देने का अनुक्रम। आचार्य श्रावक धर्म का व्याख्यान धर्मात्मा पुरुष के कर्तव्य, हिंसा का स्वरूप, उसका निबंध तथा मांस के दोषादि का वर्णन। इसी प्रकार अन्य त्याज्य वस्तुएँ यथा, मधु आदि का वर्णन। क्रोधादि के त्याग का वर्णन। अपघातादि दोषों का वर्णन। अतिचार, अंतरंग तप के छ भेदों का वर्णन, अनर्थदंड के अतिचारादि का वर्णन, तीन जुक्ति छ सम्यक् (पृ० १—८६) (५) मुनीश्वरों का आचरण जो श्रावकों को भी यथा योग्य ग्रहण करने योग्य है (खड़ावश्य क्रियादि), मोक्षाभिलाषी रत्नत्रय के सेवन आदि के विधान का वर्णन ॥ ग्रंथकर्ता की लघुताई तथा ग्रंथ निर्माण कालादि का वर्णन (८९—११३)।

संख्या ४८ बी. छैढालौ, रचयिता—दौलत राम, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—११ X ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैनमन्दिर (नया), सिरसा-गंज, मैनपुरी।

आदि—अथ छै ढालौ दौलतराम जी कृत लिख्यते। तीन भुवंन मैं सार वीत राग विग्यांनता शिवस्वरूप सिवकार। नमौ त्रियो जस हमररकै ॥ चौपाई ॥ जो त्रिभुवन में जीव अनंत। सुष चाहैं दुषते भयवंत ॥ ताते दुषहारी सुषकार। कहै सीष गुरुकर्णधार ॥१॥ ताहि सुनें भवि मन थिर आंन। जो चाहौं अपनों कल्याण ॥ मोह महामद पियो अनादी। भूलि आपको भरमत वादी ॥ २ ॥ तासु भ्रमन की है बहु कथा। पै कछू कहौं कही मनि यथा ॥ ३ ॥ काल अनंत निजो दमशर। वीत्यो ऐकेन्द्रिय तनधार ॥ ३ ॥ एक स्वांस में अठ दसवार। जन मौ मर्‍यौ भयौ दुष भार ॥ निकसि भूमि जल पावक भयौ। पवन प्रत्येक वनास्पति थयौ ॥ ४ ॥

अंत—भला नर्क का वास, सहत जो सम्यक पाता। बुरे वनै जो दिव नृपति मिथ्या मदमाता ॥ १६ ॥ नहीं पस्यै धन होय नहीं काहूसौं लरना ॥ नही दीनता होय नहीं घर कै पर हरना ॥ १७ ॥ समकित सहज स्वभाव आपका अनभव करना। या विन जप तप वृथा कष्ट में मांही परना ॥ १८ ॥ कोटि वात की वात अरे बुध जन उरधरना। मन वच तन सुध होय जहौ जिनमत का सरना ॥ १९ ॥ ठारसै पंचास अधिक नव संवत् जानूं। तीज सुकुल वैसाष ढाल षट सुभ उपजानूं ॥ २० ॥ इति छठीं ढाल संपूर्ण ॥

विषय—जैनधर्म संबंधी उपदेश और भक्ति के कुछ पद्य।

संख्या ४९. रस चन्द्रिका, रचयिता—दौलत राम, कागज—मूँजी; पत्र—३१, आकार—९ × ६ इंच,पंक्ति (प्रति पृष्ठ)-२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी, प्राप्तिस्थान-मयाशंकर जी याज्ञिक; स्थान व डा० गोकुल, मथुरा।

आदि—अथरसचन्द्रिका लिख्यते। शिवजी को कवित्त ॥ बायैं दायैं गिरजा गनेस नन्दी बन्दत हैं, बन्दी विप्र वीच के बगर मैं, फूल माल मंडित जटा मुकुट छत्र छवि, छीवतु नछत्र पति मन्दिर डगर मैं। उजियारे वेद धुनि घटाघन कारेनाद। नौवति नगारे धूम धूपनि अगर में। कासी में मुकति देत भुगति समेत येई, हेत करि विश्वेसुर नाथ जै नगर में।

अंत—सीतहि लाइ महा सुखपाइ किये चित्त चाई मनोरथ भारे। सुन्दर मन्दिर वास प्रकासित सुन्दर भूपन भेद समारे। अंग सुवास तं(?रं)गनि सौं अंग अंग अनंग उमंग सुधारे। राम लौ रामन कै उर काम नै तानि कै वान हजारक मारे। इहा रागन कै रतिसीता कै नाहीं हैं। × × ×

विषय—कृष्ण और शिवस्तुति—१-२। मानसिंह, जयसिंह और दिल्लीपति का वर्णन, जयनगर और गलता का वर्णन। १—श्रृंगाररस, विभावादि वर्णन। २—संयोग श्रृंगार, हावभाव, विप्रलम्भ, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत आदि रसों का वर्णन। ३—रसांगी भाव।

विशेष ज्ञातव्य—यह रीति ग्रंथ खोज में सर्वथा नवीन है। दुःख है प्रति इतनी पुरानी और जीर्ण है कि ग्रन्थकर्ता तथा अन्य बातों का विवरण नहीं मिलता। तौभी जीर्ण पत्रों से प्रकट होता है कि कवि ने स्पष्टतः राजा मान और जय सिंह का वर्णन किया है। यथा—जग मगात सब जगत में, जम्बू द्वीप सुथान। ....प्रगट्यो राजामान। दिल्लपति के हेत.....................जग जाहर जय सिंह। जयनगर और गलता का वर्णन भी आया है इससे प्रकट होता है कि कवि जयपुर राज्य का निवासी है। ग्रंथकर्ता दौलतराम हैं जिनका नाम ग्रन्थ के अध्यायों के अन्त में तथा कविता में आया है।

संख्या ५०. ज्योंनार, रचयिता—दौलतराम कायस्थ (स्थान—सूरजपुर, जि० मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१०½ × ६इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४९, पूर्ण, रूप—अत्यंत जर्जर, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-काल—सं० १९०५ वि०, लिपिकाल—१९०५ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० नारंगीलाल जी मिश्र, स्थान—भदेसरा, डाकघर—सिरसागंज, जि० मैनपुरी।

आदि—अथ जौंहनार लिषते ॥ सुनौजू ॥ श्री गणिपति के सुमिरन करिके सिवके ध्यान लगाय ॥ सुनौजू ॥ तीनि लोक के करतम करता जनक पुर ब्याहन आय ॥ सु० ॥ तैतीस कोटि दसौ द्रगपाला चौंसठि तीरथ आये ॥ सु० ॥ राम लक्षिन औरु भरथ सत्रघन पुरवासी सब आय ॥ सु० ॥ हय गयंद रथ औरु पालिकी रघुकुल के सब आय ॥ सु० ॥ ऐसें सजी है बरात नगरतें इन्द्र घटा घेराये ॥ सु० ॥ पीछे तें नृप दसरथ आये ढाढ़ी बोलत आये ॥ सु० ॥ मंजिलन मंजिलन चली है बरायत जनक ग्राम ढिंग आये ॥ सु० ॥ यौं अगिमानी लई है रामकी जन मासै लै आये ॥ सु० ॥ ९ ॥ बिछति बिछौननि पै घनसारी तापर गिलम बिछाये ॥ सु० ॥ १० ॥ राजा जनक ने नेगी बोले भरि सरबत पठवाये ॥ सु० ॥ ११ ॥ नेगी समधे नृप दसरथ नै आसिष दै कर आये ॥१२॥ सुनौजू ॥

अंत—रानी कुसिल्या नै प्रभु देषे आनंद उरन समांये ॥ सुनौजू० ॥ जिह मंगलु सीआराम लक्षिन कौ कहत सुनत फलु होये ॥ सुनौजू० ॥ बालमीक रामायनि मैं तौ दौलत बाँचि सुनायौ ॥ सुनौजू० ॥ सीषै कहै सुनै जो गावै कोटि जज्ञ फल होये ॥ सु० ॥ चतुरा होइ सो बाँचि सुनावै मूरिष कौ समुझाये ॥ सु० ॥ सजननु को मेरी राम राम है जैसी सुनी तैसी गाई ॥ सु० ॥ पंडित होय सो अरथ विचारै जथा जोग मति गाई ॥सु०॥ चीता जिहि अगम अपार है पारु न बरनौ जाई ॥ सु० ॥ इति श्री रामचन्द्र विवाह जौहनार संपूरन भई समाप्रति ॥ संवतु १९०५ ॥ सनि ॥ १२५५ ॥ मिति चैत्र सुदी ११ भूमवासर कौ लिखा ॥ लिपितं दौलति राम मम ॥ सूरजपुरा के कायस्थ कुलश्रेष्ठ गैत्र सै ॥ जो बाँचै देषे सुनै ताकौं हमारी राम राम पौंहँ । पठनार्थ । लाला मिठन लाल मौ० ऊजरई के । लिपी राज अंगरेज कौ ॥ अनंको भाउ ॥ वेझरि तो० प० १) गैहूँ तोल कच्ची १॥) (साहू के बत लिख चुके । सूर्य के अस्थ भये उपरान्त । × × ×

विषय—राम और जानकी के विवाह के समय पर ज्यौन्यार का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ एवं इसके रचयिता दौलत राम हिन्दी साहित्य जगत के समक्ष नवीन ही प्रकाश में आये हैं । वह जाति के कुलश्रेष्ठ कायस्थ, जिला मैनपुरी—तहसील–शिकोहाबाद के अन्तर्गत प्रसिद्ध कस्बा सिरसागंज के निकटस्थ सूरतपुर ग्रामके अधिवासी थे । आश्चर्य की बात है कि उनके उत्तराधिकारियों के यहाँ उनका रचा कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं हुआ यद्यपि अन्य रचयिताओं के कुछ ग्रंथ प्राप्त हुए थे । इन्ही के वंश के कुछ लोग, इसी ग्राम से कुछ फासिले पर ही अवस्थित उजरई नामक ग्राम में भी रहते हैं, संभवतः उन्हीं के वंशज लाला मिट्ठनलाल होंगे, जिनके पठनार्थ यह ग्रंथ लिखा गया है । यह ग्रंथ स्वयम् रचयिता की लेखनी से ही लिखा गया है ।

संख्या ५१. ख्याल त्रियाचरित्र, रचयिता—दौलत सिंह, कागज—देशी, पत्र—१$\frac{1}{2}$, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० सुखवासीलाल जी, प्रधानाध्यापक, प्राईमरी स्कूल—टूँडला, स्थान—बड़ा टुँडला, जि० आगरा ।

आदि—॥ ख्याल त्रियाचरित्र ॥ पास करै तिरिया का तू तिरिया चरित्र को क्या जानै । काट पती का सीस सती हो जाती नार पल दरम्याने ॥ साहूकारवचा साहूकार

सची को छोड़ गया अजी परदेसे। चन्द्र वदन रही झूम परी सूरज की किरन चमके जेसे ।। आधीरात के वक्त महल पै खड़ी छोड़ रुष पर सेसे ।। सुनी वीन जोगी की मोह लई उतरी व्हां से जैसे तैसे ।। झड़ी ।। जोगी के पास चली आईं । जोगी से यों वतलाई ।। तैनै वैरिन वीन वजाई । तन मन की सुध विसराई ।। लीनी थाम जोगी के वीन लगी नारी व्याकुल हो जाने ।।काट पतीका सीस सती हो जाती नार पल दरम्याने ।। १ ।।

अंत—ले के लाश वैठ गई सर पै करके नार सोलह श्रृङ्गार । दौलत सिंह यों कहे हीवे लगी सती खड़ा देखे संसार ।। जल वल हो गई ढेर कहै गिरधारी राँड़ का क्या इतवार । क्यों कर सत्य चढ़ा इसको वतलाओ नहीं कलँगी लेउं उतार ।। झड़ी ।। खड़ा ख्याल कहैं मुकंदे । हैं रामकिशन के छंदे ।। यहाँ सदा रहें आनन्दे । ले हरफ हरफू कड़ी वन्दे ।। वहादुर अन्धा लगा चंगपै निशान तुर्रा झलकाने ।। काट पती का सीस सती हो जाती नार पल दरम्यांने ।।

विषय—त्रियाचरित्र का एक उदाहरण ।

संख्या ५२. रामचन्द्र स्वामी परार्द्ध चरित्र, रचयिता—देशराज चौहान (स्थान—हसनपुर), कागज—देशी, पत्र—२०८, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८६९ वि० (१८१२ ई०), प्राप्तिस्थान—मु० शङ्करलालजी, कुलश्रेष्ठ, स्थान व डाकघर—खैरगढ़, जि० मैनपुरी ।

आदि—सिवधाम गयौ तकि सरन सोइ ।। निज कही तिन्यानिनि अधिक रोइ ।। अपराधी प्रभु को ताहि चीनि ।। बोले सरोष संकर प्रवीन ।। सिव यथा सुनि मूढ़ कहाते कमुं कीन ।। मै लोक नाथ को यंमुलीन ।। निज इष्टदेव श्री रामचन्द्र ।। लिन साथ कस्यौ अपराध मंद ।।

अंत—छोटै नग्र निवास निज तातैं लघु मति होहि ।। प्रथम जार पुत्रि निकरि कै वस्यौ हसनपुर सोहि ।। × × × ....स्यिष्ट मानौ ।। बीते नवरस अष्ट चन्द्र ससि वा मथि चानौ ।| सा कोऊ पुनि कहौ सालिवाहन को कहियै ।। युग जुग सागर ये क काय जे ऊगनि लहिं ।। अषाढ़ मास सित्त पक्षि तिथि सप्तमि जुत बुधवार जानि । तिहि दिन सुग्रन्थ रचि पूरकि पक्षे सराज चहवानवि ।। दोहा—जाके उर अति विमल रति राम चरन जालजात ।। देसराज कहि भनित निज सो सुनि सनिन अंवात ।। सदा अभक्त प्रपंच रत लंपट जुत पाखंड ।। तिन हित स्रवन सुहाइ जह कीरति राम अखंड ।। धर्म विवेकी धीर मीर जिन उर ज्ञान अभंग ।। ते भाषा भनि ता क्षेटे राम विमल जस से० ।। इति श्री राम रामचन्द्र स्वामी परार्ध चरित्र भाषा यथा मति देशराज चहवान विरचिते श्री राम विमल जस पृतापन रमनो नाम द्वै-त्रियो ध्याय ।।

विषय—१—जयन्त मानमर्दन, अनुसूया की शिक्षा का वर्णन (प्र० अ०) १—६ । २—रामका अगस्त मुनि के स्थान पर प्रवेश (द्वि० अ०) ७—१२ । ३—शूर्पनखा का अंग भंग तथा दूषण-वध (तृ० अ०) १३—२१ । ४—सीताहरण (च० अ०) २२—२८ । ५—रावण-युद्ध, राज युद्ध और जटायु वध (प० अ०) २८—३२ । ६—कबन्ध

बध, शवरी का आतिथ्य, पंपापुर गमन नारदादि मुनियों से भेंट तथा राम द्वारा संतों के लक्षण का कथन (ष० अ०) ३२—३९। ७—पवनसुत-मिलाप, सुग्रीव से मित्रता, बालिवध और संन्धि (सप्तम अ०) ४०—४६। ८—रामचन्द्र लक्ष्मण फटिकशिला आसीन वर्णन (अ० अ० ४६—५१। ९—राम द्वारा वर्षाऋतु आदि का वर्णन तथा सीता की सोध (न० अ०) ५२—५८। १०—लंका दहन वर्णन (दशम अध्याय) ५९—६३। ११—हनूमान-सीता मिलाप तथा सन्देश (ए० अ०) ६४—७०। १२—लंका-दहन (द्वा० अ०) ७०—७४। १३—राम विभीषण-मिलाप (त्र० द० अ०) ७४—८३। १४—समुद्रसेतु बंधन (च० द० अ०) ८३—८९। १५—अंगद लङ्का-प्रवेश (पं० द० अ०) ८९—९७। १६—रावण-अंगद-संवाद (ष० द० अ०) ९७—१०६। १७ लङ्का का पहला युद्ध वर्णन (स० द० अ०) १०६—११२। १८—लक्ष्मण-सम्मोहन वर्णन (अ० द० अ०) ११२—१२२। १९—कुंभकरण-वध (उन्नीसवाँ अ०) १२२—१२८। २०—मेघनाद-वध (वी० अ०) १२८—१३४। २१—रावण की चमू का वर्णन (इ० अ०) १३४—१४५। २२—रावण का मूर्छित होना (बा० अ०) १४१—१४८। २३—रावण वध-वर्णन (ते० अ०) १४९—१५४। २४—शिवकी स्तुति (चौ० अ०) १५४—१६२। २५—भरत की वियोगावस्था (प० अ०) १६२—१६७। २६—रामचन्द्र के राज्य का वर्णन (छ० अ०) १६७—१७६। २७—कपीस विभीषण सहित निषाद-ग्रह विदा (स० अ०) १७६—१८२। २८—वशिष्ट स्तुति वर्णन (अट्टा० अ०) १८२—१९०। २९—स्वान-न्यायवर्णन (उन्तीस अ०) १९०—१९५। ३०—लवणासुर वध वर्णन, (तीसवा अ०) १९५—१९८। ३१—सर्वधर्म वर्णन, (इक० अ०) १९८—२०५। ३२—रामचन्द्र के विमल यश-प्रताप वर्णन (व० अ०) २०५—२०८।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ महात्मा तुलसीदास जी के रामचरित मानस के आधार पर लिखा गया है। यह रामायण का उत्तरार्द्धमात्र है और इसमें राम के चित्रकूट निवास से लेकर रावण वध और राम अयोध्या गमन तक का समस्त वर्णन आ जाता है। ग्रंथ के अध्ययन से ऐसा पता चलता है, कि रचयिता ने अपनी रचना करते समय भावों के लेने में तुलसीदास को तथा छन्द रचना करते समय महाकवि केशव को अपने लक्ष्य में रक्खा है। यह ग्रंथ विविध छन्दों में रचा गया है—कहीं कहीं तो तुलसीदास जी की रचना का अत्यन्त भोंड़ा और भद्दा अनुकरण किया गया है और कहीं कहीं उनकी पंक्तियों की पंक्तियों का यथावत् अनुवाद कर डाला है। इस कवि के कितने ही छंद पढ़ने में बड़े ललित हैं। परन्तु उसने उसमें लालित्य लाने के अभिप्राय से शब्दों को मनमाना तोड़ा है। इस ग्रंथ की रचना आषाढ़ शुक्ला सप्तमी, बुधवार सं० १८६९ वि० को हुई है। कवि अपने निवास स्थान के संबंध में लिखता है कि वह एक छोटे नगर का निवासी है। पहले 'जार' में रहता था फिर वहाँ से निकलकर हसनपुर में बसा जिसे वह गंगा यमुना के मध्य में नापकर बसाया गया मानता है। ये दोनों नदियाँ इस नगर से पाँच पाँच योजन दूर हैं। गंगा उत्तर की ओर है और यमुना दक्षिण दिशा में। 'जारा' एक स्थान गवालियर स्टेट में है। संभवतः 'जार' उसी का नाम लिखा गया है।

संख्या ५३. शब्द रैदास कौ वादु, रचयिता—धर्मदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७½ × ६ इंच, पंक्ति—(प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण—(अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बालाप्रसादजी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसा गंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ सवद रैदास कौ वादु ॥ वावा कवीर कहतु है कुमति तन्यै तन वादरु फाट्यौ । कुमति तनै प्रगासा । हृदै ज्ञानु ध्यानु करि देषौ सति भाषै रैदासा ॥ ब्रह्म ज्ञान विनु ब्रह्म तंत विनु हृदय सुःख नहि होई । एकै ब्रह्म सकलघट पूरा औरु न दूजा कोई ॥ रैदासु कहतु है एकै एक कहा कहौ सुवांमी दूजी प्रिकृति कहँ जाई ॥ जाकारन त्रिभुवन रूप करो हो संतनु सदा सहाई । वावा कवीर कहतु है जेते फूल हैं तेती वासुना को हो पंकज कहँ धांनी । को कहि उतपति प्रलय करतु है कोभ्यौ प्रकृति संमानी ॥ रैदासु कहतु है प्रकृति समानी प्रान पुरुष मैं सो वृन्दावन आयो । गोपिनु के सँग ग्वालन के सँग दै दै चुकटि नचायो ॥ वावा कवीर कहतु है नहिं युह नांचै कहिं वुह गावें—नहिं वहतान वजावै । पूरन ब्रह्म सकलते न्यारौ वुहु ज्योनी नहि आवै ॥

अंत—गोपाल कह्यौ तुम सत्यपुरुष सतपुर के वासी । हम कालरूप तुमहौ अविनासी ॥ दया करी मथुरा पगु धारौ । दास जानिवें गेह पधारौ ॥ वदी छोर तम्हरौ नांऊं । चरन छोरि कहुँ अंत न जाऊँ ॥ कै रहि हौ कै चलिहौ संगा । गुरु के चरन सरंगहिरंगा ॥ कवीर तुम साहिव हम सेवक धरमदास निजुदासु । मेकति दानुं मोहि दीजिये । मूल कमल की आस ।

विषय—कबीर और रैदास के संवाद के मिस आत्मज्ञान का वर्णन ।

संख्या ५४. कोक संवाद, रचयिता—कविधरम सिंघ, कागज—घोंटा काश्मीरी, पत्र—५०, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री लढ़ैतीलाल जी, मु० डाकघर—सैपऊँ, जि०—मथुरा ।

आदि— × × × राजोवाच हे पुत्र तु कहु ॥ जो यह कन्या कौन है ॥ अरु तिसका सरूप भी बड़ा है ॥ कैसा है ॥ कोकवाच ॥ हे राजन यहु कन्या बहुत सुन्दर है ॥ अरु मस्तक इसका चन्द्रमे जैसा है ॥ अरु छब कैसी है ॥ जो इसको देषकै काम भील जामान होता है ॥ इसते उपरंत क्या कहियै ॥ सो हे राजन् जो यह सास्त्र में तुझको सुनावता हो ॥ इह जो सास्त्र है सो भोगी पुरुष को सुष देता है ॥

अंत—स्त्री संग करने की विधि ॥ जब इस्त्री वारह वरसा की होती है ॥ ता कवल षुल आवती है ॥ जब फुल आवै ता मरदनू भी भला है ॥ आगै भोग करना भी भला है । नहीं जद इस्त्री नू फुल आवै ता तीसरे दिन पीछे इस्त्री इस्नान कर बैठे ॥ ता चोथे दिन तिस को मरद मिले ॥ अरु विंद इस्त्री के कंवल में थंमें ता पुत्र होई ॥ पहिले दिन मिलि ता बेटा होवै ॥ × ×

विषय—काम शास्त्र का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—'इति कोकसार विरचिते कवि धर्म सिंघ कृत त्रयोदशोध्यायः ॥' अध्याय की प्रत्येक समाप्ति इसी प्रकार हुई है। इससे इसके अनुवादकर्ता धर्म्म सिंघ हुए। रचना तथा लिपिकाल प्रकट नहीं दिए हैं। पर ग्रन्थ की प्राचीनता उसकी जीर्णशीर्ण दशा और लिखावट से पुष्ट होती है। समस्त ग्रंथ गद्य में है इससे यह प्राप्ति अवश्यमेव महत्व पूर्ण है। मूल ग्रन्थ संस्कृत में कोका का बनाया है उसीका यह गद्यानुवाद है।

संख्या ५५. शकुंतला नाटक, रचयिता—धौंकलराम मिश्र (स्थान—भरतपुर), कागज—देसी, पत्र—१५८, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००२, पूर्ण, रूप—स्वच्छ, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५६ वि०, लिपिकाल—सं० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर याज्ञिक, स्थान व डाकघर—गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री महागणाधिपतये नमः॥ नंदन शिव आनंद करन जग वंदन चंदन। बुध विलर्द गन इडं विघनवर वृंद मुदंदन॥ गन मुनिंद सुर इंद यजत भवपाल सुनंदन॥ मुष गयंद झमकत चंद भगन सुप स्पंदन। जय एकदंत दमकंत दुति सिर नवाय वंदहु चरन। सुंदर सकुंतल ग्रंथ भाषा छंद रचि धरिहौं वरन॥ मुरली मुष अरविंद मंजु कुंजन में गावत। व्रज नारिन के पुंज बैठि बहु भूम मचावत। भूषन झमकत अंग नयन रंग्रन बरसावत। तड़ितपति छविवंत पीत अंबर फहरावत। जय नंद सूनु आनंद निधि कोटि इंदु छवि मंद किय। व्रज चंद चंद तिहु भवन तुव चरन वंदि मैं सरन लिय॥ पाव कुलक छंद॥ सूत्रधार कै सुनि कै वानी। नटी उचरित बहुत सयानी॥ हे आरज तुमने जो विचारी। भली भांति मैंने उरधारी॥ सकुंतला नाटक सुपकारी। नाम अपूरब है गुण भारी॥ तेहि चरित्र की तुम सुधिधारी। सुधि करिये याको अधिकारी॥ सूत्रधार बोल्यो अतुराई। तैने हमको सुधि दिवाई॥ भूलि रह्यो अपने मन माहीं। सुनि तों गीत करुन सुखदाई। मन मेरो गयो राम के पाछे सो नहिं वगदत वहं ते पाछे। ज्यों कुरंग पीछे नृप नंदा। यों दुष्यंत पर्‍यो मन चंदा। वेगवंत मृग पीछे सरो। धयो फिर्‍यो आनदन पूर्‍यो॥ इही भाँति दोऊ वतराये। पुनि पट भीतर दूर सोहाये॥

अंत—सवैया—भूपति राज करौ नितही हित सो परजा सुष पालहु आयके। सेकर दूरी करौ जु अमंगल देव, अदेव सदा बहु भायके॥ और विरंचि हमैं नित देउ मनोरथ जो चहिये सुष पायके॥ आनंद सों विहरौ सुवरंग सभा परसन्न रहौ हित छायके॥ दो० नमन करत सव कविन को जे मतिमंद उदार। सकल भूलि मेरी सवै लेव सुधारि सुचार॥ ठारे सै छप्पन वरष संवत् आश्विन मास। सित तेरस कवि वार कौ ग्रंथ भयो उज्जास॥ हरिगीत छंद॥ श्री तेज सिंह नरिन्द्र सुंदर कामगुन गनधाम है। राज सभा के मध्य पूरन इंदु मन अभिराम है॥ ताकी अनुग्रह मिश्र धौंकल ग्रंथ रचि मन भावनो॥ नाटक सकुंतल को भयो मुनि अंक अतिहि सुहावनो॥ इति श्री महाराज पुहुपसिंह सुव श्री तेजसिंह आज्ञा मिश्र धौंकलराम विरचिते सकुंतला नाम नाटक भाषा सप्तम अंक समाप्तः शुभ लिखतं मिश्र जगन्नाथ पठनार्थ राजा श्री तेजसिंह जी संवत् १८५६ वि०॥

विषय—संस्कृत ग्रंथ शकुंतला नाटक का हिन्दी में अनुवाद किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता धौंकल राम मिश्र थे। ये भरतपुर (राजपूताना) निवासी थे। महाराजा तेजसिंह की आज्ञा से यह रचा गया है। रचना सं० १८५६ वि० है तथा लिपिकाल भी यही है। महाराज तेजसिंह की आज्ञानुसार पं० धौंकल मिश्र ने संवत् १८५६ में इस ग्रंथ को रचा और जगन्नाथ मिश्र ने महाराजा तेज सिंह पुत्र पुहुप सिंह के पठनार्थ लिखा ॥ दो० ॥ निर्माणकाल संवत् काः—ठारै से छप्पन वरष संवत् आश्विन मास। सित तेरस कविवार कौ ग्रंथ भयो उज्जास ॥

संख्या ५६. बारहमासी, रचयिता—दुल्ली चेतसिंह (स्थान—दिल्ली), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—५$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० बाबूराम जी शर्मा, स्थान—हविलिया, डाकघर—करहल, जि०—मैनपुरी।

आदि—...दरे ॥ कहि वोले वैरी दादुर। मैं पिया विना वे आदर ॥ रोय रोय भींजै हमारी चादर। चहुँ ओर बोलते मोर ॥ घटा घन घोर सूझै अम्बर ना। मेरे दिल ऐसी आवै जहर खाय मरना ॥ यों कहती सुन्दर नार सुनो भरतार सेज तैयार सुक्ख कछु घरना ॥ पिया हमकूं छोड़ परदेश गमन नहिं करना ॥ १ ॥ सखी दूसरा महीना सावन छुरती कामिनि घर नहिं भावन अजीज अपना। मुजे अपने पिया की सेज होय गई सुपना ॥ पपीया ने पीपी किया धरकता हीया ॥ सखी विना पिया के मैं जीऊँगी अबना ॥ जिस दिन से लाया व्याहि पाया कुछ सुखना ॥ हिंडोल झूलती नारी तीज कौं गावैं मल्हारी ॥ सब सखियाँ कर सिंगारे। हम बैठि रहीं मन मारे ॥ पी विना जीव अनमना। दमकै दामिनी कहती कामिनी पिया मेरे घरना ॥ मेरे दिल में ऐसी आवै जहर खाय मरना। यों कहती सुंदर नार सुनो भरतार सेज तैयार दुःख कछु घरना। पिया हमकूँ छाँड़ि परदेश गमन नहिं करना ॥ २ ॥

अंत—कि लौंदलगी में दसन भई जद मगन पिया मैंने पाया। लैगई लाल पलगों पै खूब रंग छाया ॥ सब तनके किये श्रृंगार बनवाके हार पहर के हार गले लगाया ॥ चेत सिंग दुल्ली ने बारे मासा गाया ॥ हैं सरदार खाँके छंदे हरफ हरफ कड़ी वंदे ॥ हैं दिल दलेल फर फंदो। हैं वह लाल आनंदे ॥ है परमानंद की कथना ॥ जरद कुछ रतन करो कुछ जतन तुरा चंग रखना ॥ मेरे दिलमें ऐसी आवै जहर खाय मरना ॥ १३ ॥ इति श्री दुल्ली चेतसिंह कृत बारामासी ॥ सम्पूर्णम् सं० १९२४ ॥

विषय—बारहमहीने की (लौंदसहित) नायिका की विरह-दशा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत बारहमासी ख्यालबाजों की शैली पर लिखी गई है। ग्रंथ के अंत में ख्यालबाजों की रूढ़ि-परम्परा के अनुसार कवि ने अपने कई साथी कवियों-सरदार खाँ, बहलाल, तथा परमानन्द का नामोल्लेख भी किया है।

संख्या ५७ ए. ख्याल शिव जी का, रचयिता—दुर्गादास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुं० सुखवासीलाल जी, प्रधानाध्यापक, प्रायमरी स्कूल-टूँडला, स्थान व डाकघर—टूँडला, जिला०—आगरा।

आदि—॥ १ ॥ ख्याल शिव जी का ॥ कुंद इंदु दुति शोभित वदनम् दहित प्राक्षत अमित अकामम् ॥ आदि अनादि अगाध अगम गत सहज सलिल सम करुणाधामम् ॥ नमो नमामी समीसान निरवान सदाशिव शिव सुख रुपम् ॥ विभुम् व्यापकम् ब्रह्म स्वरूपम् वेद भनंतम् जै सुर भूपम् ॥ क्षिदाकाश आकाश वाश कहो निराकाश हरी हरी भव कुपम् ॥ तुरीय मूलम् हर भव शूलम् कपाल माला गुणवर नूपम् ॥ त्रिपुरारी मायापती विधिवत कामारी शिव अनन्त नामम् ॥ आदि अनादि अगाध अगत गत सहज सलिल सम करुणा धामम् ॥

अंत—शोभा अद्भुत अपार गाथा सैल सुतापति कहत शासतर ॥ आनंद देवाकर मुनी सेवा आनना भेवा ये मूल मंतर ॥ देव दनुज मुनी मनुज मकर जोगी जन ले गये नाम तर ॥ उदेगीर गुरु प्रभूलाल ते संत सनेही शंकर का अंतर ॥ ये दास दुरगा सरन तिहारी कृपा करो लो सकल व्याधहर ॥ त्रिनैने शोभित त्रिशुल पारगी गिरीश जै शिवशम्भू हर हर ॥ ४ ॥

विषय—शिवजी की महिमा व विनय ।

संख्या ५७ बी. ख्याल वहर खड़ी, रचयिता—दुर्गादास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४, पूण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुं० सुखवासीलाल जी, प्रथम अध्यापक, प्राइमरी स्कूल, टूँडला, स्थान व डाकघर—टूँडला, आगरा ।

आदि—ख्याल वहरखड़ी ॥ प्रथम सर्व उच्चारण में क्या ओंकार निकाला शब्द । घर से निकल जब जवाँ पर आया हुआ ये सबसे आला शब्द ॥ ओंग आदि षट चार अष्ट दस हर अक्षर से चला शब्द ॥ ॐ अंत अक्षर है वेद का जिसने ख़ूब सँभाला शब्द ॥ हुई जोत से अनेक उतपत कहूँ मैं क्या क्या निराला शब्द ॥ गरज घोर से अन्धा धुन्ध जल वरस करै मेघ माला शब्द ॥ घटसे निकल जव जवाँ पै आया हुवा ये सबसे आला शब्द ॥ १ ॥

अंत—शोभा अद्भुत फिरैं साथ लिये करैं भूत वेताला शब्द । नंदीगण पै चलै लाद शंक्र करे खड़ खड़ाक मिर्गछाला शब्द ॥ उदेगीर गढ़वासी प्रभू जहाँ करै गंगा और नाला शब्द । दुरगादास हर ज्ञान के दिल में समाया ध्यान शिवाला शब्द ॥ घर से निकल जव जवाँपै आया हुवा सवसे आला शब्द ॥ ४ ॥

विषय—ओंकार की उत्पत्ति पर कुछ उक्तियाँ ।

संख्या ५८ ए. अढाई पर्व पूजा भाषा, रचयिता—द्यानतराय , कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ९$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, दिहुली, डाकघर—वरनाहल, जि० मैनपुरी ।

आदि—अथ अढ़ाई की पूजा लिष्यते ॥ अडिल्ल । सव परवन मैं वड़ा अढ़ाई पर्व है । नंदी सुर सुर जाँयले वहु दख है ॥ हमें शक्ति सो नांह यहाँ कर थापना । पुजौ जिन

ग्रह प्रतमां है हित आपना ।। १ ॥ ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर दीपे वावन जिनालयेभ्यो । एक अंजन गिर चारिदधि मुषआठरतिकर त्रयोदश जिनेभ्यो अत्रावत्रा वतरसंवै पट् इत्याह्वाननं ॥ अत्र तिष्ट तिष्ट स्थापनं ॥ अत्रमसन्नि हिलोभव भव वषट सन्निधी करणं ॥ अथाष्टकं ॥छंद॥ कँचाण मणि मम शृंगार तीर्थ नीर भरा तिहूँ धारदई निरवार जन्म मरनहरा ॥ नंदीस्वर हरीजिन धांम वांवन पूज्य करौ ॥ वसुदिन प्रतिमां अभिरामं आनंद भावधरैं ।।

अंत—लाल नख मुष नयन स्यांम अरु स्वेत है । स्यांम रंग भौंह सिर केस छवि-देत है ॥ वचन वोलत मनोहर सत कालुष हरं । भौन वावन प्रतमान मौ सुपकरं॥ १८ ॥ कोट ससिभानं दुत तेज छिपि जात है । महा वैराग्य परनाम ठहरात है ॥ वैंन नहीं कहे लष होत संम्यक धरं । भौनवावन प्रतमानं मौं सुपकरं ।। १९ ।। सोरठा ।। नंदीस्वर जिन धामं । प्रतिमां महिमा को कहे । द्यानत लीनौ नांम । यहे भगत सब सुखकरै ॥ २० ।। इति श्री अढाई पूजा भापा संपूर्ण ॥

विपय—अढ़ाई पर्व पूजा का वर्णन ।।

संख्या ५८ बी. अध्यात्म पंचासिका, रचयिता—द्यानतराय, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला बाबूराम जैन, स्थान व डाकघर—करहल, जि० मैनपुरी ।

आदि—अध्यात्म पंचासिका दोहा ॥ आठ कर्म के बन्ध में वँधे जीव भव वास । कर्म हरे सब गुण भरे, नमो सिद्धि सुखरास ॥ १ ॥ जगत माहिं चहुँ गति विषैं, जनम मरण वस जीव । मुक्ति माहिं तिहुँकाल में, चेतन अमर सदीव ॥ २ ॥ मोक्ष माहि सेती कभी, जगमें आवै नाहीं । जगके जीव सदीवही, कर्म कारि सिव जाहिं ॥ ३ ॥ पूर्व कर्म उद्योगते, जीव करै परनाम । जैसे मदिरा पानते, करैं गहल नरकाम ।। ४ ॥ ताते वाधि कर्म को आठ भेद दुख दाम । जैसे चिकने गातमें, धूलि पुंज सम जाँय ।। ५ ।।

अंत—वहिरातम के भाव तजि, अन्तर आतम होय। परमातम ध्यावै सदा, परमातम सोइ होय ॥ बुन्द उदधि मिलि होति दधि, बीती फरस प्रकास। त्यों पर मातम होत है, परमातम आयास ।। सब आगम को सार ज्यों सब साधन को देव। जाको पूजें इन्द्र सम, सो हम पायो देव ॥ सोहं सोहं नित जपै, पूजा आगम सार। सत्संगति में वैठना, यही करै व्यौहार ॥ अध्यातम पंचासिका, मांहि कह्यो जो सार। द्यानत ताहि लगे रह्यो, सब संसार असार ।। इति ॥

विपय—आत्म विचार संबंधी वर्णन ।

संख्या ५८ सी. वावन अक्षरी छैढाल्यौ, रचयिता—द्यानतराय (स्थान—आगरा), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—११ X ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर (नया), सिरसा गंज, मैनपुरी ।

आदि—अथ वावन अक्षरी छैढाल्यौ लिष्यते ।। सोरठा ॥ ऊंकार मझार, पंच परम पद वस्तु है । तीन भवन में सार, वंदौ मनवच काम सौं ॥ १ ॥ अक्षिर ज्ञान न मोहि,

छंद भेद समझूँ नहीं। बुधि थोड़ी किमि होय, भाषा अक्षर बावनी ॥ २ ॥ आतम कठिन उपाय, पायो नर भव क्यों तजे। राई उदधि समाय, फिरि ढूढे नहिं पाइयै ॥ ३ ॥ इहि विधि नर भव कोप, पास विषै सुपसौं रमै। सो सठ अमृत खोय, हालाहल विष आचरै ॥ ४ ॥ ईसूर भाष्यौ ऐहे, नरभव मति पोवै वृथा। फिरि न मिले यह देह, पिछ तावो वहु होयगो ॥ ५ ॥

अंत--वह गुरु है मम संजमी, देव जैन है सार। साधर्मी संगति मिलौ, जवलौं है भव पार ॥ ४६ ॥ शिव मारग जिन भाषियो, किंचित जारोगे सोय। अंत समादि मरण करै, चहुँ गति दुष षय होय ॥ ४७ ॥ षट विधि संजमजे कहै, जिन वाणी रुचि जासु। सोधन सोंधन वान है, जग मैं जीव न तासु ॥ ४८ ॥ श्रद्धा हिरदै जो धरै, पढ़ै सुनै दै कान। पाप कर्म सब नासि कै, पावै पद निर्माण ॥ ४९ ॥ हितसू अर्थ वताइयौ, सुवर विहारीदास। सतरासै अट्टानवै, वदि तेरस कातिक मास ॥ ५० ॥ ज्ञान वान जैनी वसै, वसै आगरा माहिं आतम ज्ञानी वहु मिलै, मूरष कोई नाहिं ॥ ५१ ॥ षय उपसम वलि मैं कहे, द्यानति अक्षर एह। देषि संबाधे पंचासिका, बुधजन सुध करि लेहु ॥ ५२ ॥ इति संबोध पंचासिका को छटनालौ ॥ सम्पूर्ण ॥

विषय--उपदेश के दोहे।

संख्या ५८ डी. देवपूजा, रचयिता—द्यानतराम, कागज—देशी, पत्र-६, आकार—६ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ला० बाबूराम जैन, स्थान व डाकघर—करहल, जि०—मैनपुरी।

आदि—अथ देव पूजा भाषा लिख्यते ॥ अडिल्ल छन्द ॥ प्रथमदेव अरहंत सुश्रुत सिद्धान्त जी। गुरु निरग्रंथ महान मुकति पुर पन्थ जी ॥ तीन रतन जग माहिं सो एभव ध्याइये। तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद पाइए ॥ १ ॥ दोहा ॥ पूजौं पद अरहंत के, पुजौं गुरु पद सार। पूजौं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार ॥ २ ॥

अंत—गुण छत्तीस पचीस आठ वीस। भव तारन तरन जहाज ईस ॥ गुरु की महिमा बरनी न जाय। गुरु नाम जपौं मन वचन काय ॥ सोरठा कीजै शक्ति प्रमाण, शक्ति विना श्रद्धा धरै। द्यानत श्रद्धावान, अजर अमर पद भोगवै ॥ ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो महार्घं ॥ इति श्री देव पूजा भाषा सम्पूर्णम् ॥

विषय—जिन देव, शास्त्र और गुरू की संक्षिप्त पूजा वर्णन।

संख्या ५८ ई. गुटका पूजन, रचयिता—भिन्न जैन कवि (द्यानत राम कुन्दनलाल आदि), कागज—स्यालकोटी, पत्र—४८, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि० (१८६७ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर, स्थान—रायभा, डाकघर—अछनेरा, तहसील, किरावली, जि० आगरा।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ पंचमंगल प्रारभ्यते ॥ × × × सादर और गुर गौतम सुमति प्रकासियौ ॥ मंगल करहिं चौ संग सुपायः प्रणासियौ ॥ पाप प्रसासन गुण हम सरो होय अष्टादस रहे ॥ धरि ध्यान कर्म्म विनासिके बल ग्याण अविचल जिण रहे ॥ प्रभु पंच कल्याण विराजन सकल सुरनर ध्यावई ॥ त्रैलोक नाथ सुदेव जगत मंगल गावई ॥ जिनजीकें गरभ कल्याणक धरण पति आइयो ॥ अवधिज्ञाणं परिमाण सुइन्द्र पठाइयो ॥

अंत—छन्द अडिल्ल । जो वंदे मन लाय अचल गिरनार ही ॥ रिद्ध सिद्ध वहु बृद्ध कहै सुष सार ही ॥ शक्र चक्री पद योग्य सुजस जगधार ही ॥ इत्याशीर्बाद ॥ संवत स उगणीस उरि भय वीस है ॥ तिथि अष्टमी पोष मास सितपक्ष सुपरम जारीस है ॥ तिथि अष्टमी रविवार अमल उघरंग ही ॥ तादिन वंदे अचल राज सब संघ ही ॥ × × ×

विषय—१ अथ जन्म कल्याण । २—तप कल्याण । ३—ज्ञान कल्याण । ४—निर्वाण कल्याण । ५—श्रुतिरूप । ६—द्वादश श्रुति ज्ञान । ७—गुरु जैमाल । ८—विदेह पूजा । ९—सिद्ध पूजा । १०—शान्तिपाठ । ११—सोलह कारण पूजा । १२—दसलक्षण पूजा । १३—पंच मेरू भाषा । १४—आरती । १५—पार्श्वनाथ पूजा । १६—जम्बूस्वामी पूजा १७—नंदीश्वर पूजा (द्यानतराय कृत) । १८—नेमनाथ पंचकल्याण वर्णन १९—गिरनार पूजा । २०—पद (कुन्दनलाल कृत) ।

संख्या ५८ एफ. पंचमेरू पूजाभाषा, रचयिता—द्यानत राय, कागज—देशी, पत्र—१½, आकार—१०½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्रा० दिहुली, डाकघर—बरनाहल, जि० मैनपुरी ।

आदि—अथ पंचमेरु पूजा लिख्यते ॥ गीतका छंद ॥ तीर्थंकरों के न्हांन जलतें भए तीरथ सर्वदा । तातैं प्रदक्षणांदेत सुरगन पंचमेरुन की सदां ॥ दो जलधिढाई द्वीप मैं सब गनित मूल विराज ही । पूजौं असी निजधाम प्रतमां होंहि सुष दुष भाज ही ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री पंच मेरोस्थजिनालय असी चैत्यालेभ्यो अत्र वला वतरस वौषट इत्याह्वाननं ॥ अत्रतिष्ठ तिष्ठतः स्थापनं ॥ अत्र ममसन्निहतो भवभव वषट संन्निधीकरणं ॥

संख्या ५६ ए. कवित्त चयन (अनुवाद), रचयिता—गहर गोपाल (स्थान—गोकुल), कागज—मूँजी, पत्र—२१, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२, खंडित, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल ।

आदि—शेष अवतारी है ब्रजेस सुषकारी प्रभु–धेस भयहारी अमरेस ताप टारी हैं । दुविध प्रहारी प्रलम्बासुर विदारी रुक, मैया प्रानहारी कउरव गर्व जारी है ॥ गहर बिहारी जदु कुलहिं पठारी भाँति, भाँति रखवारी करि आपदा निवारी है ॥ गिरिवर धारी भ्राता भक्तनरनारी त्राता । सीर कर धारी सम दाता नहिं भारी है ॥

अंत—नोटः—शीघ्रता में अन्त का लिखना रह गया है । फिर भी कवि की प्रतिभा के प्रमाण के लिए एक ही कवित्त पर्य्याप्त होगा ।

विषय--१--वल्लभ कुल गुसाइयों का वर्णन। २--कोटा के राजा विजय सिंह तथा भीम का वर्णन। ३--जोधपुर नरेश की प्रशंसा। ४-अमेठी नरेश बखतेस का वर्णन। ५--राणाराजा, इच्छाराम का वर्णन। ६--इच्छाराम की भक्ति की प्रशंसा। ७--अन्योक्ति के कवित्त ८--राजनीति के कवित्त इत्यादि।

संख्या ५६ बी. श्रृंगार मन्दार, रचयिता--गहर गुपाल (स्थान-गोकुल), कागज--मूँजी, पत्र--१०६, आकार--७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--११६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० मया शंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल।

आदि--श्री गोकुलाधीशो जयति माम्। अथ श्री नन्दकुमार श्रृंगार मन्दार ग्रन्थ कवि गहर गुपाल कृत लिख्यते॥ तत्रादौ मंगलाचरण॥ दोहा गोवरधन कर पर धरे, प्रिय जूथ के इष्ट। मंगल परमानन्द मय, तिन चरनन धरि दृष्टि॥ जय जय गोवरधन धरन, ब्रज कुल कमल दिनेश। जकु जय यदु कुल कमलिनी, आनन्द राकेश॥ मंगल करन अमंगलहि हरन, सरनागत भक्त। मंगल करन सरुप ब्रज भूप मंगला सक्त॥

अंत--विट्ठलनाथ के गोकुलनाथ जू, रूप तिहारो कहाँ लो वपानो। धोती सुहावत है कटि पे पटपीत उपर्ना धरे मोती कानो॥ कंचन के कर राजे करा उरमाल सुभाल पें टीको सुहानो॥ श्री गिरधारी कौं सीस नमावत आरती वारि मनमथ मानो॥ इति श्री मन्नंद कुँवार सिंगार मन्दाराष्य ग्रंथे सुकवि हर गोपाल विरचिते श्री गोवर्धननाथ आदि अष्ट स्वरूप प्रति वर्षोत्सव वर्ननो नाम द्वादशस्कन्धः॥

विषय--१-वल्लभाचार्य्य तथा उनके उत्तराधिकारियों की प्रार्थना। २-गोकुलनाथ की वंदना। ३-मंगलाचरण। ४-इस ग्रंथ में कृष्ण जन्माष्टमी से लेकर वल्लभ कुल सम्प्रदाय में जितने भी छोटे बड़े त्योहार एवं वर्षोत्सव मनाए जाते हैं और भगवान का जो अलग २ श्रृंगार किया जाता है, उसका सम्पूर्ण वर्णन इसमें हैं। एक महिने के उत्सवों का वर्णन एक अध्याय में है। अतः १२ महीनों के उत्सव १२ अध्यायों में समाप्त हुए हैं।

विशेष ज्ञातव्य--गहर गोपाल गोकुल के प्रसिद्ध कवि बतलाए जाते हैं। उनके कुछ ग्रंथ पहिले विवरण में आ चुके हैं। गोकुल की जन श्रुति से पता चलता है यह स्थानीय गोसाँइयों के शिष्य थे और अच्छी कविता करते थे। ग्रंथ मालिक भी इसका समर्थन करते हैं। यह ग्रंथ उन्होंने यहीं किसी से प्राप्त किया है।

संख्या ५९ सी. मन प्रबोध, रचयिता--गोपालदास, कागज--देशी, पत्र--१६, आकार--७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२४, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री जौहरी मल जी वाजपेयी, मु० डाकघर--बटेश्वर, जि० आगरा।

आदि--कवित-कवित गुनी गन ग्यानी कवि पंडित विचारि देखो, सुनो सीख मेरी मेरो वचन निदान है॥ गोकुल के नाथ गुन गाथ जो प्रसिध जाकी, आदि मधि सिध सदा

अेक वान है ॥ आदि तें आदि जो अनादि जासों कहियत हैं; सोई अैस रुप उपमान कोऊ आन है ॥ उपमा अभूत अदभूतन कूँ भावी भूत, अैन काहू समान न कोई न की समान है ॥

अंत--उत्तम मध्यम अधमादि भगवदी श्रिष्ठ के समान अंगीकार भेद कियो है ॥ जोग्यता वरन अधिकार भेद भाव भेद, रस भेद जुत ते सो दान दीयो है ॥ जेही जैसी भाँति को सो तैसी पाँति परयो आप, और न सुहाय वाको वेई मन लाग्यो है ॥ जेनें चाखी माधुरी मधुर गोकुलेस जी की, रुप अरुझानों उन अेही रस पायो है !

× × ×

विषय--१-गोकुलेश जी की अराधना और वन्दना । २-गोकुलेश के भजन का माहात्म्य । ३-गोकुलेश नाम महिमा ।

संख्या ५९ डी. अष्ठोत्तर वैष्णव धौल, रचयिता—गोपालदास, कागज –बाँसी, पत्र—३, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--कीरतराम हलवाई, स्थान व डाकघर--शमशाबाद, जि०--आगरा ।

आदि--श्री गोकुलेश जयति ॥ अथ श्री गोकुलेश वैष्णव, अष्टोत्तर तिनकी धौल लिषीयें छें ॥ श्री गोकुलेश जीना अंग वद अंगीकृत विरही भाव जन पुष्टि रस रसिक भगवदी जेणें प्रभूता विप्र योगार तें साहगमन करयाछें । ते हना नामनी सूच वन का करीछे । अेगा वानो रसिक रस महा मांगलत्री जानी जात छें जे पहली महालसी करी महारस भक्त राधा वधाई अें जातें गवासें ॥ राग धोल श्री गोकुल पतिना भक्ति ॥ स्वरुप रसें जे हवा अति अनुरक्त ॥ करया साह गमन प्रभू जी साथ । तेहनें चरनें मा नामी माथ ॥ तेहनी नाम वली अेह समाज ॥ कहू छु सुमरण करवा काज ॥ संक्षेप सूचन का करु ॥ नाम अेहना उर में धरु ॥

अंत—पणेंती वाई भाव मन धरी ॥ प्राण प्रभू ने पद अनुसरी ॥ ३४ अेमई ठोरत वैष्णव अे निज सेह ॥ गमन करया धरी नेंह ॥ ३५ ॥ श्रेऊप्र भावी विरही समाज ॥ अेह नू सुमरण करवा काज ॥ ३६ ॥ अेव तिनसें मन वशें ॥ स्वरुप दान अेह थी थस्यें ॥ ३७ भक्त भावली अें महानिधि ॥ पाट करें अे कारज सिधी ॥ ३८ ॥ अेहुनी चरण रेणु धारी माल ॥ विवर्ण की धू दास गोपाल ॥ ३९

विषय--वल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टि मार्ग) के १०८ भक्त जनों का भक्तमाल के सदृश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--यद्यपि यह ग्रंथ छोटा है पर महत्वपूर्ण है । कवि का परिचय तथा काल का पता नहीं लगा ।

संख्या ५९ ई. संगीत पचीसी, रचयिता—गहर गोपाल (स्थान—गोकुल), कागज--मूँजी, पत्र—१०, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० मयाशंकरजी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल ।

आदि--अथ संगीत पच्चीसी गहर गुपाल कृत ॥ दोहा × × × व्रज में श्री व्रजराज सुत, व्रज जुवतिन की आस। पूरी रास निवास करि, सो वरनत अब दास ॥ कवित्त तेसीये अलौकिक सरद रेनि राकापून्यो, तैसोई प्रकास आस पास हिमकर कौ। तेसो जमुना को तीर त्रिविध समीर बहे; रति रणधीर वीर वपु गिरधर कौ ॥ तैसोई सिंगार कटि काछिनी मुकुट चारु, प्रमदा अपार गावैं गान तान सुर कौं ॥ तैसी सुख साधिका श्री राधिका रसाल लाल; गहर गुपाल ही उंछाह पंच सर कौ ॥

अंत--सुकवि कला निधि लाल सुत, कवि जगदीस दयाल। पाइ कृपा वर्णन कियो, यह कवि गहर गुपाल ॥ जो कछु कविता रीति में, न्यूनाधिक जु अवोधि। भूल चूक गोपाल की, सुकवि लीजियो सोधि ॥ कविता धर्म न जानहीं, जान वुझक्कर कूर। भूषन को दूपन करें, तिनके सुख में धूर ॥ इति श्री संगीत पच्चीसी कवि गहर गुपाल कृत।

विषय—शरद पूर्णिमा का रास वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--कविता बड़ी चोखी है। छोटे २ कई ग्रंथ मिलने से सिद्ध होता है कि इन्होंने अनेक ग्रंथ लिखे हैं।

संख्या ६०. गुनमाला श्री गनेस जी की, रचयिता--गजपति, कागज--देशी, पत्र--९, आकार—८३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८९, प्राप्तिस्थान--श्री पं० वदन सिंह जी शर्मा, स्थान—खाँड़ा, डाकघर-वरहन, जि०-आगरा।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ सिधि होत कारज जगत, सुमिरत प्रथम गनेस। पारब्रह्म स्वश्रिस्टि को, निज दीनौ उपदेस ॥ १ ॥ वाहि वरन धनपाल जसु, सुमिलु करत सुरेस। सहसो फन कीरति सुजस, गावत सेस गनेस ॥ २ ॥ करि करि मन में कामनां, जो चाहत मन काम। तो मनु मेरे ध्यान धरि, सुमिरौ गनपति नाम ॥ ३ ॥ सुमुष सुभाना नग वरिसुत, लंवोदर गुन ग्राम। कपि लिंगन कर विघन हर, सकल सिद्धि कर नाम ॥ ४ ॥ सील समुद्र सुभद्र के, शुद्ध अंस सुखधाम। सकट विकट कल्याण कर, गननायक गुन ग्राम ॥ ५ ॥ सुकलांवर ससि भाल धरि, विवुध सुमति सुष धाम। वक्रतुंड सरवग्य सुभ, पंचानन सुत नाम ॥ ६ ॥

अंत—मैदा घृत अरु सर्करा, लाडू रचौ बनाई। भोगु चढ़ाऔ विधिनिसौ, श्री गनपति कौं ल्याइ ॥ १०८ ॥ धूप दीप कर आरती, दे प्रदछिना दान। सोम अर्घ दे कै व्रती भोजन करि पकवान ॥ १०९ ॥ सिधिनिधि संपति वढ़ै, होइ सकल कल्यान। करै व्रतु परतीति करि, गनपति धरि धरि ध्यान ॥ ११० ॥ गजपति असि चिंता ग्रसित, सुमिरन कह्यो सुदेश। विघन काटि चिंताहरी, सुमिरत श्री गनेश ॥ १११ ॥ संवत सोरह सै असी, अरु नो बाढ़ि सुजान। गुनमाला गनेस की, गनपति करै विधान ॥ ११२ ॥ कह्यौ मास वैसाष मै, गहि गनपति को पंथु। गुनमाला गनेस की, नाम धन्यो यह ग्रिंथु ॥ ११३ ॥ इति श्री गुनमाला श्री गनेस जी की समासं शुभं ॥

विषय—श्री गणेश जी महाराज के गुण तथा नाम वर्णन।

संख्या ६१. महूर्त मुक्तावली, रचयिता—गणेशदत्त (स्थान-राजगढ़), कागज—मूँजी, पत्र—२०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४७ वि० (सन् १७९० ई०), लिपिकाल—सं० १८४७ वि०, प्राप्तिस्थान—सर्वोपकारक नागरी पुस्तकालय, स्थान व डाकघर-अछनेरा, तह०-किरावली, जि०-आगरा।

आदि—ऋषि गण कहिये अठासी सहश्र तिनके नाम कहे ग्रंथ वढ़ि जाय यातैं नाम नहैं के सोयन कौ अपने हृदे में श्रेष्ठ भाव लायकें आठ ही अंगनि तें पृथ्वी पर दंडवत परि के नमस्कार करो हों तिनकों नमस्कार करेंते अज्ञान कर प्रलय होय ज्ञान को उदय होय ता उदय तैं ग्रन्थ जो कहिये ॥

अंत—श्लोक-हस्त, पुष्प, शतविषा, धनिष्ठा, अनुराधा, मघा, उत्तरा, तीनो रोहिणी, एतौ नक्षत्र और शुभवार, तिथि, लग्न देखि के कूप खोदिवै को आँरभ करणै ॥ इति महूर्त मुक्तावली टीकायां गणेश दत्तेन कृता अष्ट पंचानमो श्लोकः ग्रथः ॥ लिखितं ब्राह्मण गणेश दत्तेन पठणार्थे चिरंजीव लक्ष्मीनारायणदु ॥ मालव देशेनेवज सहिन्तटे राज राज्ये क्षत्रयाधिनाथ उमट हमीर सिंह जीतत्पुत्र राज श्री रावत प्रताप सिंह जी राज्ये गतमास ४ दिवस १९ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ १३ रविवासरे सं० १८४७ राजगढ़ ॥

विषय—ज्योतिष के अनुसार हर एक काम करने का मुहूर्त बतलाया गया है।

संख्या ६२ ए. गंगा पदावली, रचयिता—गंग, कागज-मूँजी, पत्र—२२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२१, खंडित, जीर्ण, प्राप्तिस्थान—पं० देवदत्तजी चेयरमैन, स्थान और डाकघर—सादाबाद, मथुरा।

आदि—वेदा होत फूहर कल्प तरु थूहर होत परमहंस चूहर की होत परपाटी कौ। भूपति मँगैया होत ठोठ कामधेनु होत गैय्यार चरत मद चेरो होत चेंटी कौ। कहे कवि गंग पुनि पुण्य किए पाप होत बैरी निज बाप होत साँप होत साँटी कौ ॥ निर्धन कुबेर होत स्यार सम·सेर होत, दिनन के फेर से सुमेर होत माटी कौ ॥

अंत—सुनो अकब्बर साह छत्रपति रंग महल मंजन करि। ठडी सलिल बुन्द चुचाति × × कुचन पर। मणिक बुन्द सागर से कढ़ी विभाकर ॥ अचर ग्रह सीर उपर मन भामन उपमा एक बढी। मणि भामनि देषं भ महाछवि साह गिर्दा मनमथ कढ़ी ॥ करजु सिंगार अटा पै चढ़ी जिय, लालनु देषनु कुलेह की। तब अंग से गंध सुगंध लगाय वास चहुँ वोर कु महिको। कर से जव छुटि गयो कंगना सीढ़ियन भीतर वेहको। कवि गंग कहैं एक शब्द भयो ठन् ठन् ठन् ठह को ॥

विषय—विभिन्न विषय और समस्या पूर्तियाँ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ फटे हुए पत्रों में है। इसमें केवल गंग की ही कविता नहीं है, अन्यान्य कवियों की भी हैं। कुछ कविता ब्रह्म कवि की भी है। लिपि अशुद्ध है।

संख्या ६२ बी. गंग रत्नावली, रचयिता—गंग कवि (स्थान-इकनौर, इटावा), कागज—देशी, पत्र—२५७, आकार—६ X ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर याज्ञिक, अधिकारी गोकुल नाथ का मंदिर, गोकुल ।

आदि—गगन गंग गुंजरत्त दसो दिसि होत सुपूरन । हलत धरन कलमलत सेस संकर विष चूरन ।। असुर संग सपकपत धीर धकपकत धमक सुनि ।। भजत भीर भहरात खम्भ खहरात फंटत पुनि ।। अति निकट दंत कट कट करत चढ़ चढ़ात नख निकरि तप ।। जिह लफलपात दुर्जन दलन जय जय जय नरसिंह वप ।। सवैया इकवार केन्हात पुजायन सों लिए जात जहाँ मन की गमना ।। सुनिकैं दुख दंद मिटै जियके सनकादिक नारद हू समना ।। याते वहै व्रतधार बहै कवि गंग कहै सुनिरे ममना ।। जमुना जल नैन निहारत ही जमना जमना जमना ।।

अंत—पढ्यो गुन्यो कीरन कुलीन कहूँ हँस कुल, छूँगी छुनि हान छाती छाय दई थी । तारे हू अजामिल से परम पुनीत पापी सदा को सरापी चरनोदक न लई थी । गंग कहें ता रस की आस ते मुकत कियो, काली नाग कहाँ की तिलक मुद्रा दई थी । धाए हरि लोक तें हंकार एक पाइक ज्यों; हाथी कहाँ हाथ तुरसो की माला लई थी ।

विषय—१-देव स्तुति और विनय । २-राजाओं की प्रशंसा और यश वर्णन (इसमें अकबर, दानियाल, जहाँगीर, शाहजहाँ, अब्दुल रहीम खान खाना, बीरबल, महाराणा प्रताप, रामदास, उदावंत आदि की प्रशंसा है) । ३-शृंगारिक वर्णन । ४-राजनीति । ५-समस्या ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ खोज में अत्यन्त महत्वपूर्ण है । अभी तक गंग कवि की एक जगह बहुत रचनाएँ नहीं मिली थीं । प्रस्तुत ग्रंथ का किसी ने बड़े उद्योग और परिश्रम से संग्रह किया है । इसमें गंग के प्रायः ४०० कवित्त सवैया और छप्पयों का चयन है । जिसके पास यह ग्रंथ है वह उसे नकल कर रहे हैं और शीघ्र ही छपवाने का प्रबन्ध कर रहे हैं । ग्रंथ गंग कवि के जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से कोई प्रकाश नहीं डालता, किन्तु इसमें ऐसे बहुत से कवित्त और सवैया हैं जो असली घटनाओं से संबंध रखते हैं ।

संख्या ६३. राजयोग भाषा, रचयिता—गंगाधर (स्थान-मथुरा), कागज—बाँसी, पत्र—५२, आकार—८ X ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राधेश्याम द्विवेदी, स्थान—स्वामीघाट, मथुरा ।

आदि—श्री धन्वन्तरे नमः ।। अथ राजजोगवार्ता लिष्यते ।। गंगाधर नमस्कृत्ये गात्र नैरोग्य हेतवे । राजयोग प्रवक्ष्यामि मत्सु देस प्रभाषया ।। अथ गंगाधर श्री महादेव तिन्हकौं प्रणाम करि निरोग कहते ग्रन्थ सुदेस भाषा वर्तिकलिष्य जे है तहाँ प्रथम ही बंध के लक्षण सुणो ।। वैद्य ऐसो चाहि जो जुसमस्त वैद्यक शास्त्र प्रगामी होय सर्व क्रिया में कला प्रवीण होय सत्य वचन बोले उदिमी साह दयावन्त होई ।। सुवह वैद्य जसवंत कहिये ।।

अंत--अथ संष सीप कौड़ी का सोधन छाँछि सौ नीबू के रससौं सोधिए और सात धात उपधात इस ही विधि सर्व जाणिय गुरुकी कृपासौं सर्व सिध होइ ॥ जगन्नाथस्य पुत्रेण गंगारामेण धीमता ॥ शास्त्रमालोक्य सुधिया राज योग सुभाषया ।। आयुर्वेदा गनि सुणौ वैद्य विद्याविशारद तेन संरचिते ग्रंथ राजयोग सुभाषया ।। इति श्री गंगारामेण कृते राजयोग वैद्यक ग्रन्थे ज्वरनिदान लक्षण चिकित्सा वर्णन नाम प्रवोधः लिखतं ब्राह्मण छाजूराम मथुराजी रामघाटमध्ये ।। शुभं भूयात् ।।

विषय—१—स्त्री पुरुषों के रोगों का उपचार । २—विभिन्न दवाएँ । ३—रसादिक बनाने की प्रक्रिया । ४-विष शोधन ।

संख्या ६४. रागसंग्रह, रचयिता--गरीबदास, कागज—देशी, पत्र--६, आकार--५ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--७८, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री रामचन्द्र सैनी, वेलनगंज, आगरा ।

आदि— X X X जेवन को बैठी वरात सब विंजन बहुत कराए ॥ नारी गारी सरस सुहाई देत सबै मन भाए ॥ बहुत भाँति की करी मिठाई बूँदी और जलेबी ।। घुरमे बाड़े सरस बनाए अन्नपूरना देबी ।। मेवा बहुत भाँति की परसी दाष वदाम छुहारे ।। पिस्ता अरु अपरोट कागदी बहु विधि खुले पिटारे ॥ बहुत भाँति दाइज तब दीन्हो है गज रथ अरु चीरा ॥ हाथ जोरि बिनती तव कीन्ही भई परम पर भीरा ॥

अंत—काफी ॥ ए हरे हरे—रसना रटत रहौ ॥ साधु संग मिलि मन परमोधो, मनमें मनै गहौ ॥ टेक ॥ दुति आभा उसवै तुम त्यागो, दुष सुष सबै सहौ ।। यह मति प्रगट होइ प्रानी के, तिनकौ मुकति कहौ ।। स्त्रीधर गाय व कुँच विहारी, कहि सव दोष दहौ ।। दास गरीब आस चरनन की, साँझ संग निबहौ ।। X X X

विषय—सीता स्वयंवर, रामविवाह, तथा श्री कृष्णजी की विविध लीलाओं का भिन्न भिन्न राग रागिनियों में वर्णन किया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता कोई 'गरीबदास' हैं, क्योंकि प्रत्येक पद के अंत में यह नाम आया है । जैसेः—साँझ साँझ सब मिलि पूजी करि आरति उपचारा । गोवर्धनधारी बलिहारी, कहत गरीब पुकारा ।।' कविता की दृष्टि से पद उच्च कोटि का प्रतीत होता है ।

संख्या ६५ ए. पुष्टिमार्ग के वचनामृत, रचयिता—गोकुलनाथ, कागज—बाँसी, पत्र—५५, अकार—७ X ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०५ (सन् १८४८ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री राधेश्याम पुजारी, स्थान—चौकी गोबर, डाकघर-ऐतमातपुर, जि०आगरा ।

आदि—श्री गोकुलेशो जयति ।। अव श्री गोकुलनाथ जी के पुष्टि मार्ग के वचनामृत लिख्यते ।। एक समें श्री पुष्टि मार्गीय सिद्धान्त श्री गोकुल नाथ जी श्री गुसाई सू पूछें ॥ तब श्री गुसाई जी चाचा हरिवंश नाग जी भाई आदि भगवदीय के अर्थ श्री श्री गोकुलनाथ जी प्रति अपने पुष्टि मार्ग को सिद्धान्त श्री मुखते कहें ।। सो सुनि के चाचा

हरिवंश नाग जी भाई आदि अन्त रंग भगवदीय अपने मन में बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें श्री गोकुलनाथ जी अपनी बैठक में पधारे ॥ श्री गोसाई जी के वचनामृत को अनुभव अपने मन में करत हते ॥

अंत—तैसेई वैष्णव साक्षात् पुरुषोतम को अपने प्रति जानि ईनहि का सेवा स्मरण में तन, मन धन समर्पन करें तो प्रभु प्रभु होई जाई या प्रकार करि के श्री गोकुलनाथ जी कल्याण भट प्रति कहैं। पाछे वह आज्ञा दिये ॥ यह पुष्टि मार्ग को सिद्धान्त काहू के आगे मति कहियो ॥ केवल अनन्य भगवदि होय तिनसों कहियें ॥ २४ ॥ इति श्री चौबीस मो प्रसंग सम्पूर्ण ॥ ऐसे श्री गोकुलनाथ जी सो श्री गुसाई जी कहे सों श्री गोकुलनाथ जी सो कल्याण भट प्रति आप कृपा करिके को ॥ श्री गोकुलनाथ जी के चौवीस वचनामृत सम्पूर्ण ॥

विषय—१—ईश्वरीय सत्ता तथा प्राणी मात्र को उस पर निर्भर रहना। २—दया करना, उसकी महिमा। ३—वैष्णवों का तीसरा लक्षण, सुख दुख में एक-सा रहना। ४—क्रोध का प्रतिकार। इसी प्रकार अन्यान्य बातों का प्रतिपादन कर वैष्णवों के लक्षण बतलाए गए हैं। ग्रन्थ वल्लभकुल सम्प्रदाय का है।

संख्या ६५ बी. रहस्य भावना, रचयिता—गोकुलनाथ जी, कागज—स्यालकोटी, पत्र—२११, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य-गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ (१८५४ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० चतुर्भुज जी, स्थान व डाकघर—नन्दग्राम, जि० मथुरा।

आदि—श्री विट्ठलेशो जयति। अथ श्रीमद्गोकुलनाथ जी कृत रहस्य भावना लिख्यते। पुष्टिमारग में जितनी क्रिया है सो सब श्री स्वामिन जी के भावते हैं तातें मंगलाचार गावैं प्रथम श्री स्वामिन के चरनन में नमस्कार करत हों ॥ इनकी उपमा देने को मन दसो दिसा दोन्यो परन्तु पायो नाहीं ॥ पाछें श्री स्वामिन जी के चरन कमल को आश्रय मन कीयो है।

अंत—और दोऊ बैठक पर मेवा मिश्री पेड़ा वासों घी दूध की सामग्री और ऊपर की बैठक में मुष्य पालना की साँम श्री ठकुरानी जी घाट पर महारानी जी को श्रृंगार ॥ गोपी वल्लभ को सामग्री ॥ इत्यादिक भाव सहित स्थल सामग्री है। इति श्री वल्लभ जी कामवनस्थ कृत वन यात्रा सम्पूर्ण।

विषय—श्री चरन चिन्ह की भाव भावना, १–८ तक। नित्य कृत्य की सेवा श्रृंगार की भावना, ९–३९ तक। जप, तप, पूजा भोग आदि का वर्णन ४०–२१० तक।

संख्या ६५ सी. सर्वोत्तमस्तोत्र, रचयिता—श्री गोकुलनाथ जी (स्थान—गोकुल), कागज—बाँसी, पत्र—३२, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित हरेकृष्ण, स्थान—काँवर, डाकघर—कोसी, जि० मथुरा।

आदि—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ सर्वोत्तम जी की टीका। श्री आचार्य्य जी के अष्टोत्तर सतनाम जा भीतर हैं। एसो जो सर्वोत्तम ग्रन्थ ताको श्री गुसाईं जी

आपनि रूपण कीए ताकी टीका श्री गोकुलनाथ जी करत हैं तहाँ मंगलाचरण को श्लोक कहते हैं ॥ नत्वा पितृ पदां भोज सर्वाभीष्ट प्रदायकं ॥ तत्प्रोक्ता चार्य्यनामानि विवरिष्ये यथामती ॥

अंत—याको अर्थ श्री गोकुलनाथ जी कहत है श्री गुसाईं जी सो कदाचित् बुद्धिके दोष करि के या टीका में हम कहूँ अन्यथा कीये होय तो श्री आचार्य्य जी के चरणारविन्द हम पर कृपा करो। हम सेवक है ॥ यह जानि के कृपा करो। इतने ग्रंथ की समाप्ति ॥ इति श्री मदग्नि कुमार प्रोक्तं सर्वोत्तम स्तोत्र की टीका श्री गोकुलनाथ जी कृत भाषा सम्पूर्ण ॥

विषय—भगवान की स्तुति।

संख्या ६५ डी. सिद्धान्त रहस्य, रचयिता—श्री गोकुलनाथ जी, कागज बाँसी, पत्र—६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान - श्री पं० तोताराम जी, ग्राम—करहैला, डाकघर—बरसाना, जि० मथुरा।

आदि—अथ सिद्धान्त रहस्य। यह मूल ग्रन्थ श्री आचार्य जी ने कीयो और ताकी टीका श्री गोकुलनाथ जी कीए है। सो ताकी भाषा लिषत हैं। त्वापित्र पदां भोज सर्वाभीष्ट प्रदायकं। कृष्ण वांमलंकाचार्य वचो व्याख्यातु मुत। सर्व वस्तु देवे कोऊ घत एसे जो पित्र श्री गोसाईं जी सो तिनके चरण कमल को नमस्कार करि जिनकी कृपाते वानी को प्रकास होय।

अंत—ऐसे जो आचार्य्य जी सो हम पै प्रसन्न होय के निसाधन होयके अपनो करो। या भाँति श्री गोकुलनाथ जी टीका प्रदीप प्रगट करि के सेवार्थ सेवकन कूँ जनाए। सम्पूर्ण

विषय—वल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को समझाया गया है। साथ ही साथ किस पर वह आधारित है, यह विस्तृत रूप से बतलाया है।

संख्या ६५ ई. वल्लभाष्टक, रचयिता—श्री गोकुलनाथ जी (स्थान–गोकुल), कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुली-चन्द जी, ग्राम—गिडोह, डाकघर—नन्दग्राम, जि० मथुरा।

आदि—अथ वल्लभाष्टक की टीका लिख्यते। श्री वल्लभाष्टक श्री गुसाईं जी की ताकी टीका श्री गोकुलनाथ जी करत हैं ॥ तहाँ पहिले ग्रन्थ समाप्त के लिए मंगलाचरण करत हैं। श्लोक मत्पादरज सागत्यमनो मेवं चली कृतं। तत्कृताचार्य्य पद्यांति विवृतौ मत्प्रवर्तये ॥

अंत—और जो मे यह टीका कीयो हूँ सो श्री गुसाईं जी के चरण कमल कीजे पराग ॥ ताँसो रंग्यो है चित जासो एसो में होय के टीका कीयो हू ॥ तासो यह टीका बहोत भली भाँति सो सम्पूर्ण भई ॥ इति श्री विट्ठलेश्वर विरचितं श्री वल्लभाष्टक ताकी टीका श्री गोकुलनाथ जी कृत भाषा में सम्पूर्ण ॥

विषय—वल्लभ भगवान की स्तुति ।

विशेष ज्ञातव्य—मूल संस्कृत रचयिता विट्ठलेश्वर जी हैं और भाषाकर्ता गोकुलनाथ जी ।

संख्या ६६ ए. वत्तीस अक्षरी, रचयिता—गोविन्ददास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, पूर्ण, रूप—अति जर्जर, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रुस्तम सिंह जी वर्मा, स्थान—असवाई, डाकघर—सिरसा गंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—लिषते वतीस अछरी ॥ कका कासौं कहौं पुकारी, कह्यौ कोऊ नहिं मानैं । इम्रतु तजि विषु पियैं, साँचु तजि झूंठ वषानैं ॥ करत रहैं वकवादु, आदि की वस्तु न जानैं ॥ जो कोउ साँची कहै, ताहि मिथ्या करि मानैं ॥ १ ॥ पपा पासे सेवक संत, अंत मनु जाइ न जिनकौ । भगति करैं चितु ल्याइ,………… ॥ एकु घरी विसरैं नाहीं, पोलै सवद रसाल । अस्ट पहर झगरौ करैं, वे साहिव के लाल ॥ २ ॥ गगा गरव वसै रै हतौ, तहाँ तव तेरो कोतौ । तहाँ तेरी सुधि लई, सत्य साहव बिनु कोतौ ॥ ताहि विसारैं फिरैं, करै धरै अपनैं मन भाई । कहदैतू ज्वावु जवै, प्रभु सनमुष जाई ॥ ३ ॥

अंत—लाला लालु लालु सबकोऊ कहैं, कैसी सूरति लालु । अंधाते वैहरा भलौ द्रग भरि देषै प्यालु ॥ सदामीन जल मैं रहै, घरु है वाकौ वारि ॥ जैसे सतगुरु आपु मैं, चलतै लेइ उवारि ॥ ३१ ॥ ऐसे एरेमन वटमार, समझि प्रभुके गुन गाउ । जो मारग गहि लेइ, परमपद जा कर परउ ॥ कारजु करितू वावरे, अब जिनि रहै अचेत । वे सर्वस क्रपाल है, जन कौ उरमें लेत ॥ गोविंद दास गरीव की, लागी प्रीति निवास । सदा वसौ मम अजिर मैं, उर मैं कीजै वास ॥ ३२ ॥ इति वतीस अछिरी समपति ॥

विषयः—अक्षरक्रम से भक्ति एवम् उपदेश सम्बन्धी पद्यों का संग्रह ।

संख्या ६६ बी. धमारि व चरचरी, रचयिता—गोविन्ददास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ठा० रुस्तमसिंह वर्मा, स्थान—असवाई, डाकघर—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—धमारि लिषते रागु गौरी ॥ तेरे हित सौं परम अधार आये आजुरी । एरी सषी तूं सावधान हो नवसत साज सम्हारिरी ॥ सीस फूल श्रवान नितांटक मौतिन भरति तूँ मागरी ॥ माथैं विदुवनौ दधिसुत कै विसरिना सावलिरी ॥ वैनी सरस सुगंध वनी है विच विच मनिकी क्रांतिरी ॥ कुंतिल केस वे ससरचि गुंधे चुटि वधु करतु विहाररी ॥ भाल विसाल षौरि केसरिकी भौंहैं वनी हैं सुढारिरी ॥ द्रग चंचल पंजन सम प्यारी अंजन रेप सुधारीरी ॥ कंठ श्री दुलरी छविन्यारी हिरदै हंस हमेलरी ॥ चंपकली सरि हारु हिये कौ मोहन माल जोररी ॥ तिमनी तीनि गुननिकी पहिरैं चौकी चतुर सुजानरी ॥ ष श्रैवरा वाजू वंद सोहै कर कंकन सुभ साजुरी ॥ चचरि चुरी मोतिन के गजरा पौंहची अति छवि देइरी ॥ दसउ उँगरियन मुंदरी राजै मैंहदी जरद सुरंगरी ॥ कटि किंकन छुद्रावलि देषैं ज्यौ उडगन की पांति री ॥

अंत--विनती श्री कृष्णदेव मेरी सुनि लीजै। क्रीट मुकुट दृग विसाल देषै छवि पीजै ।। सर्वन कुंडिलरिसाल झूलकारी दुति अपार प्रेमधार प्रगटी प्रभुयामैं मन दीयै। चंदन चर्चित अंग मानौं अनंग वहै गंग ठटे प्रभु उर मझार दरसन सुभदीयै ।। नासा छवि अति अनूप सोंहू वलै सनीप राजा मै रवि ससि प्रगास मारग सो दीजै। दारौ विथसिन कपोल बोलत पीय सरस बोल, रसना दामिन प्रवान रामु रामु लीयै ।। चंबुक राजै सुदेस ग्रीवा छवि मुनि महेस इम्रित प्याला प्रवेस है यही सुपीयै ।। सोभा ज्यौं दधि सुमेर फूले कमल घनेर, आनंद प्रभु आदि अंत सरन राषि लीयै ।। दोहरा ।। गुपित रही नँदलाल की, मूरति उरहि समाई। जगमग जगमग ह्वै रही, ज्यौ सरिता धरै प्रवाह ।। इति शुभम् ।।

विषयः—कृष्ण राधिका की होली एवम् रूप सौन्दर्य्य वर्णन।

संख्या ६६ सी. ज्यौंनार, रचयिता—गोविन्ददास, कागज—देशी, पत्र - ४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रुस्तम सिंह जी वर्मा, स्थान—असवाई, डाकघर--सिरसागंज, जिला—मैनपुरी।

आदि—ज्यौंनारि लिष्यते ।। चेतन चौका सरस बनायौ ।। विवेक वैठका धारौ प्रभुजू ।। ग्यान कौ गडुआ अचवनु लीनौं प्रेम पातरैं डारी प्रभुजू ।। साधु संत मिलि जेंवन बैठे निरमलु भातु परोसौ प्रभुजू ।। भजन के भटा सील की सैमैं करनी किंदुरी आई प्रभुजू। तत्तु तुरैया त्रिविधि बनाई भाउभगति सौं तारी प्रभुजू ।। ढैंड़स परिमल और चचेंड़ा सत गुर नै हैं बघारे प्रभुजू ।। करार कचरिया रुचिर बनाई कोमल करी सुहाई प्रभुजू ।। प्रीति पकौरी सुगम करी है दया दहौरी आई प्रभुजू ।। षड़ई चौकी औरु सिंघारे त्रिगुन ततसौं तारे प्रभुजू ।। दारि दरौना उरदमूंग की धीरजु धरिकै घोई प्रभुजू ।। मनसा मैथी मिरच नौनियाँ निरभै सौंपु समारी प्रभुजू ।। रसा गुचना कौ चाँवर अलनु निरगुन रुचिर निघौंना प्रभुजू ।। पालक पोइसुचि की कीनी सालन सघन सलौना प्रभुजू ।।

अंत—आदौं आदि वस्तु है तनमैं सूरन औरु करौंदा प्रभुजू ।। अमित अथानै कहलौं वरनौ छूछिम मति है मेरी प्रभुजू ।। पावत पात अघात न सुरजन साम सत्ति निहारी प्रभुजू। कामधैनु पिय सुर्ति सौं सोष्यो षोवा सरस वनायौ प्रभुजू ।। मैहरि मनोरथ दही तुरत कौ झीने पटसौं छान्यो प्रभुजू ।। मिसुरी मिलाइ गारिमा वीनी डारि सुगंध वनाई प्रभुजू ।। पाँच पचीस सषी जहँ सुरजन गावति व्रह्म वधाये प्रभुजू ।। अवलौं मनीराम भरमत भरे हे अवर भये गुर ग्यान प्रभुजू ।। सुमति तिहारी निजु घर बैठी सेज अलष अनुसार प्रभुजू ।। सुरति सुहागिनि चरन पलोटै निसुदिन करति विहार प्रभुजू ।। निरति नीति ऐक विधि सौं राषौ यह संत तन व्यौहार प्रभुजू ।। गोविंदास के ठाकुर घटघट सुरति की बलिहारी प्रभुजू ।। इति ज्यौंनार

विषय--ब्रह्मज्ञान का वर्णन।

संख्या ६६ डी. विष्णुपद तथा होरीआदिका संग्रह, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, अपूर्ण,

रूप—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी में, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रुस्तम सिंह जी, ग्राम—असवाई, डाकघर—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—विसुन पद ॥ प्रभुजानी रहसि तुम्हारी ॥ कस निठुहरि हौ पीर हमारी ॥ प्रभुजन सौं कह निठुराई ॥ अव करिवै स्याम सहाई ॥ कछु चहियतु नाहीं मेरैं ॥ प्रभु तुम सी संपति पाई । तुम करि दीनी मन भाई ॥ सव काया माया तेरी ॥ तुम सन है प्रीति घनेरी ॥ जव जानौं तव हरौ ॥ जनकौं सुनि तुम नष धरि उदरु विदारी ॥ तुम जन रक्षक हौ सांई ॥ गोविंददास चरन वलि जाई ॥ विसुन पद राग विहागरौ ॥ नामुएक हीरा अदग अमोलौ ॥ निरषि परषि रापौदिल अंदिर गुपित तौलि मन मोलौ ॥ सव संसार फिरै माया वस जानतु एकु अकैलौ ॥ जा घट साँचु निमासु गुरनि कौ तासौं सूछिमपोलौ ॥ अैरुसफल से काजु कहा है प्रेम मगन दिल डोलौ ॥ जैसी परष जौहरी जानै अैसौ कौनु दहेलौ ॥ गोविंद दासु दयासतगुरुकी आपु आपु सौं पेलौ ॥

अंत—रेपता पस्तो मैं ॥ दिवाना हो रहा दिलमैं तुम्हारा हाल न्यारा है । कहीं सुरग्यान हो बैठा कहीं वे होस फिरता है, सभी घट घट पसारा है ॥ हमारा प्रानप्यारा है ॥ तुही आसिक भयौ डोलै ॥ तुही महवूव हो बोलै ॥ तुही जग मोह साना है ॥ तुही पापंड ठाना है ॥ भुलग्या काम क्रोध सैं, जुमग्नगर्व आना है ॥ विवके हैसही······

विषय—नाम माहात्म्य, प्रभु विनय, उपालंभ तथा भक्ति सम्बन्धी विष्णु पद एवम् होरी आदि का संग्रह ॥

संख्या ६७ ए. गोविन्द प्रभुकी वानी, रचयिता—गोविन्द प्रभू , कागज—बाँसी, पत्र—१५८, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जमनादास कीर्तनिया, नवामंदिर, गोकुल, मथुरा ।

आदि—आसावरी । स्यामसुन्दर बन खेलत सखन संग विविध केलि । कलिन्द नन्दिनी तट बाँधि पीत पट कर्त युध भुज जूपरस्पर पेलि ॥ काहू की मुरली चोरत काहूकी श्रृंग पे प्रष्टिता , का कोहूछींको माँड़ो काहू की चोरत सेलि । गोविन्द प्रभु पीये रसभरे निर्तत, प्रिय सखाके भुज मेलि ॥

अंत—रागमलार । दम्पति झूलत सुरंग हिडोरे ॥ गौरस्याम तन अति छवि राजत, मनो घनदामिन जात भोरे ॥ विद्रुम खझ जटित नग पटुली, कनक डांड़ी सोभा देत चहुँ ओरें ॥ गोविन्द प्रभू को देत ललिता दिन, निर्विहसत बन नवल किशोरे ॥ × × ×

विषय—कृष्ण की बाल लीला, राक्षस बध, ब्रजरक्षा, कंसबध, सखाओं समेत ब्रज नारियों के साथ रासविलास, प्रेम लीलाएँ, वर्षके त्योहार मनाना, होरी, फाग, वसन्त आदि सम्बन्धी पद ।

संख्या ६७ बी. गोविन्द स्वामी के पद, रचयिता—गोविन्द प्रभू, कागज—मूंजी, पत्र—७७, आकार—१०½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत जमनादास जी कीर्तनिया, नयामंदिर, मथुरा ।

आदि—श्री गोकुलेशो जयति ॥ राग विभास तू आजु देखरी देखरी बलबीर मोहन राजें । मदन मोहन पीयमणि मंदिर ते बैठे, वनिकसि आपछाजें ॥ लटपटी पाग ओर माल मरग जी लपटात मधुप मधुकाजें ॥ गोविन्द प्रभूके सिथल अरुन द्दग, देखते कोटि मदन लाजें ॥

अंत—नन्दरायके लाडले बाल, ऐसो खेलन वारि। मनमें आनंदभरि रह्यो, मुख जुवती सकल व्रज नारि ॥ अरगजा कुंभ छोरि कें धारी लीनों कर लपटाइ ॥ अचकाँ अचकाँ आइके भाजी गिरधर गाल लगाई ॥ यहविधि होरी खेलहीं, व्रज वासिन संग लगाइ ॥ गोवर्द्धन धर रुप पै जन गोविन्द बलि जाइ ॥ इति श्री गोविन्द स्वामी की बानी सम्पूर्ण

विषय—राधाकृष्ण की शोभा, विहार, लीलाएँ और प्रेमआदि का वर्णन। बीच बीच में होली, वधाई, वसन्त आदि उत्सवों के पद भी हैं।

संख्या ६८. शीघ्रबोध (टीका), रचयिता—गुलाबदास, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि-नागरी, रचनाकाल—सं० १८०२ वि०, लिपिकाल—सं० १८२३ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० लोकमान सिंह, स्थान—अकबरपुर, डाकघर—मुस्तफाबाद, मैनपुरी।

आदि—॥ श्री गणेशायनमः ॥ भाश यत्तं जग द्भाशा नत्वा भाशंतमेव्ययं । क्रियते काशिनाथेन शीघ्र वोधायसंग्रहं ॥ १ ॥ टीका ॥ अव्यय पुरुष के ध्यान तें पातक तिमिर निसाइ । जैसें सूर प्रकासतें निसा तिमिर मिटि जाइ ॥ १ ॥ रोहिरायुत्तर रेवत्यो मूलं स्वाति मृगो मघा ॥ अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगल प्रदा ॥ २ ॥ टीका ॥ रोहिनि उत्रा तीनि, रेवे, हस्तअरु स्वाँति मृग । मघ अनुराधा लीन, पानि ग्रहन गनि मूल में ॥ २ ॥ आवागमन्विवाह श्च, कंन्या वरण में वच । ववंते सर्वं वीजं च सुंण्य ग्राम वसायते ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ रोहिणी तीनो उत्तरा, रेवती मूल स्वाति म्रग सिर । मघा अनुराधा...नक्षत्र ग्यारह ११ ॥ विवाह में उत्तिम लए हैं ॥ ओरु कार्यं कीजिये और कन्या कोंवर प्राप्त कीजे ॥ औरु षेत में बीजु ववाईए ॥ सुन्य ग्राम बसाइये ॥ ३ ॥ इति विवाह नक्षत्राणि ॥

अंत—जो पंडित संसार में, सबसों विनती ऐह । छिमा कीजो चूक मो, ज्यो पिता पुत्र जानेह ॥ काशीनाथ अगाधकृत, कौन लहै तापार । गुलाबदास भाषा रची, बुधि सारयो विसतार ॥ १ ॥ अठारसै दुहोरारा, माघ मास रविवार ॥ कृष्ण पक्ष की दसैकूँ, कियौ समापित सार ॥ २ ॥ मोमे चूक परी जहाँ, पंडित लेहु सुधारि । संस्कृत समझ्यो नहीं, बुधि सारयौ उरधारि ॥ ३ ॥ संस्कृतकी सक्ति न होइ । जो पंडित सीषो सब कोइ ॥ पर उपगार जानि ज्यो ऐह । सूधौ अर्थ जानियो तेह ॥ ४ ॥ इति श्री भाषा शीघ्रबोध समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् ॥ १८२३ ॥ वर्षे चैत्र द्वैतीया मास मैं ॥ वदी १३ तेरसि ॥ सोम वासरे लिखितं गोपालदास वा प्रेमदास ॥ पठतव्य पाँडे धर्मदास ब्राह्मण ॥ दोहा । स्वारथ सों राच्यो रहै, साधन देषि उदास । ताकौ आषिर होतु है, क्रम माझ परकास ॥ १ ॥ साधन संत संगति भए, कटत सकल जंजाल । पाप पहार बिलात ज्यौं, उदित सूर ततकाल ॥ २ ॥

पंडित पढ़त मर्म नहिं जानै, अर्थ विना सब जाइ। दी सतुजल जुप्यास नहीं जाति, कूवा लषि झाई ॥ ३ ॥ राम जू है ॥

विषय—काशीनाथ मिश्र विरचित शीघ्रबोध का हिन्दी भाषा में पद्यमयअनु एवम् गद्य मय टीका।

संख्या ६९. कलियुग कथा, रचयिता—गुनदेव, कागज—स्यालकोटी, पत्र—आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३२, खंडि रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० वि० (सन् १८ ई०), प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—बादसाह अलप नाह जिन परिषल की छोरी ॥ देत इजारे मुलुक आ अमल करत जँह लोरी ॥ ताहद दैके साहिब सूबे चले उहाँते जबहीं ॥ भये जो परगने पापिल कर्‌यौ तरु दुत तबहीं ॥ पहिलेहि अमल कियो सुरकन फिर वनियन प मँगावै ॥ कहि गुनदेव कहाँ लौं बरनौ ये कलि धर्म्म कहावै ॥ हफत हाजीरी साहिब नौबत बहुत वजावै ॥ देत इजारानपि सिंदतु जह आपुहि अमल न पावै ॥

अंत—भयो महीना आठ रुपैया परिच साठ को कीन्हो ॥ माला मुँदरी हाथ पहुँची पान सुराही पीन्हो ॥ दूनी बिभौ साहु सौं करिके सबको तरे दबायो ॥ आठ प चोरी के धंधा कागद कतर बनायो ॥ जाको लोन पाइ ताही को बारा बाट बहावै ॥ क गुनदेव कहाँ लौं बरनौ ये कलि धर्म्म कहावैं ॥ दोहा वलि चरित्र सबही कहे सुनियो स सुजान ॥ ता पाछे गुनदेव ने, कीन्हों बुध अनुमान ॥ इति कलि चरित्र समाप्तः सं० १८

विषय—माता पिताका कहना न मानना, गुरु की सेवा न करना, किसी का सान न मानना, अपने पूर्वजों का धर्म न मानना, विधवा स्त्रियों का शृंगार, जार क करना, सौभाग्यवती स्त्रियों का अपने पति का कहना न मानना, समय पर रुपया न पटा साहुकारों तथा असामियों का पारस्परिक दुर्व्यवहार, राज्य के कर्मचारियों की धूर्त उनका घूँस लेना, झूठ मूठ लोगों को फँसाना, पुलिस के अत्याचार. हाकिमों की बेरह आदि अपने समय की सामाजिक बुराइयों का वर्णन किया है।

संख्या ७०. रविव्रत कथा, रचयिता—गुणधर जैन (स्थान—बनारस), कागज स्यालकोटी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिम (अनुष्टुप्)—७५, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डालच जैन, स्थान—मुड़ियापुरा, डाकघर—किरावली, जि० आगरा।

आदि—प्रथम सुमिर जिनवर चौबीस। चौदह सहस तिरे जु मुनीस। सुमि सारद भविक अनन्त। गुरु वाचार जु बड़े महन्त। मेरे मन एक उपज्यो भाव। रवि कथा कहन को चाव। मैं जु कही जु अच्छित करों। तुम गुणधर कवि नीके धरौ। न बनारस उत्तम थान। पारस नाथ जनम कल्यान।

अंत—कहत मुनिराज जी मात पिता घर वार कुटुम भरि भेंट जु करियो। व विधि सीख जु दई कुमरि मन माहीं धरियो। सास ननद के वचन सदा तुम तिन

करियो । तुमते जेठी होइ भूलि उत्तर नहिं दइयो । दोहा मैं राजा सब देश को, वे स
सिरदार । याते तुम को कहत हूँ, जो मन में आवेगार । × × ×

विषय—ग्रंथ जैन धर्म्म से संबंध रखता है । रविवार के व्रत का माहात्म्य वा
है । पुष्टि के लिए एक आख्यायिका दे दी गई है ।

संख्या ७१ ए. श्री रामायण (बालकांड), रचयिता—गुरूदयाल काय
कागज—देशी, पत्र—१२७, आकार—६¾ × ५¾ इंचों में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, ९
माण (अनुष्टुप्)—२८५८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल
सं० १८८९, प्राप्तिस्थान—पं० शालिग्राम जी, स्थान—करहरा, डाक०—सिरसा
जिला—मैनपुरी ।

आदि—···पृ० ११ तक लुप्त, पृ० १२ वें में से उद्धृत...वालमीकके बंदो रि
रामायन प्रथम अनुसारि के ॥ ७ ॥ जग में प्रगट की देव वानी में अमित अथाह गुण f
रघुवर के ॥ ८ ॥ फिरि पद बंदौं तुलसीदास के जिन संसक्रत की भाषा सुधारि के ॥ '
अैसी करीकव होय काहू तें वैतो परम भक्त हे हरि के ॥ १० ॥ मैं भाषा की भाषा करत
तुलसीदास के पायन परिके ॥ ११ ॥ गुरुदयाल की भूल चूक सव छिमौ समुझि अपने
करिके ॥ १२ ॥ × × × × रागनी पर्जतालजत ॥ चरन कमल विप्रनि
वंदि के श्री चित्र गुप्त के पद सिर नाऊं ॥ १ ॥ जिनके वंश में आइके जन्म लियो निजु f
न को क्यों न मनाऊं ॥ २ ॥ स्याम गात कर सोहै लेषनी शंष चक्र गदाधरैं मन भाऊं ।
करि प्रनाम वहुभाँति फिरि उनकी सुछम कथा सो सवै सुनाऊं ॥४॥ जग में विदित कुछु
नहीं है पुनि मोहि उचित चाहिए गाऊं ॥ ५ ॥ सब जानत चौवीस अवतार में दत्तात्र
विदित जग नाऊं ॥ ६ ॥ दिव्य दृष्टि देषत त्रिभुवन को छिपो न तिनसों कौनेहु ठाऊं ॥ ७
ऋषिन समाज में तिनयों वूझी उत्पत्ति कायथ की किमि सुनु पाऊं ॥८॥ सुरनर मुनि के व
के वंस में हैं कायथ सो काहि बुझाऊँ ॥ ९ ॥ निगम की नीति, धर्म रीति वर्तत हैं चा
वरन के अति सुष दाउं ॥ १० ॥ अवस्य द्विजन को मानत हित करि पूजत मनवच कर्म
पाउं ॥ ११ ॥ गुरुदयाल के वोले तव पुलिस्त भलो प्रश्न कियो सुष उपजाऊं ॥ १२ ॥

अंत—॥रागनी देस जल्द तिताला ॥ कौशिल्यादि राम महतारी ॥१॥ सुनिके मु
मन अति हरषानी प्रेम विवस तन दसा विसारी ॥२॥ दीने दान बुलाय विप्रन को पूजे ग
महेश पुरारी ॥ ३ ॥ प्रमुदित परम दरिद्री जैसे मानो पाए पदारथ चारी ॥ ४ ॥ राम द
हित अति अनुरागी पर छीन साज सजे सुभकारी ॥ ५ ॥ विविधि विधान के वाजन व
मंगल सुमित्रा सजे संवारी ॥ ६ ॥ हर्द दूब पान फूल मिठाई अछित रोरी धूप गंध सुप
॥ ७ ॥ कनक थार में आरति सजि के रत्न जटित सोने की झारी ॥ ८ ॥ कर कंजन f
मातु मुदित मन परछन चली साजि सज सारी ॥ ९ ॥ दुंदुभी धुनि घन गरजे घोर अ
सुर सुगंध सुचि वरषैं वारी ॥ १० ॥ समय जानि गुरु आयसु दीनी तव प्रवेस कियो न
मझारी ॥ ११ ॥ सुमिरि संभु गिरिजा गन नायक मुदित अगाड़ी वढ़ी सवारी ॥ १२
होहिं सगुन मंगल विधि नाना मागद गावैं पुकारि पुकारी ॥ १३ ॥ पुरवासिन तव राव

हारे रामहि देषि के भए सुषारी ॥ १४ ॥ आरती करहिं नगर की जुवती हरषैं निरषि कुँवरिं-वर चारी ॥ १५ ॥ गुरुदयाल वहु पुरजन वालक देषें दुलहिनि न उहार उघारी ॥ १६ ॥

× × ×

विषय—बालकांड रामायण का राग रागिनियों में वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ गुरदयाल कायस्थ का रचा हुआ है । यह तुलसी कृत रामायण के आधार पर रागरागिनियों में लिखा गया है । इसके आदि के ११ पृष्ठ और मध्य तथा अन्त के भी कई पृष्ठ लुप्त हो गये हैं । इस काव्य में रचयिता ने अपने वंश की उत्पत्ति आदि पर भी प्रकाश डाला है । वह अपने को चित्र गुप्त का वंशज बतलाता है । कवि परिचय सम्बन्धी पूर्ण विवरण प्रस्तुत ग्रंथ में उपलब्ध नहीं है; क्योंकि उसका अधिक वृत्त उसी समय प्रकट हो सकता था, जब ग्रंथ आद्यंत लिखा हुआ मिल जाता । अस्तु ।

संख्या ७१ बी. रामायण (अयोध्याकाण्ड), रचयिता—गुरदयाल कायस्थ, कागज—देशी; पत्र—१६८, आकार—९३/४ × ५१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६८८, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८९ वि०, प्राप्तिस्थान - पं० शालिग्राम जी, स्थान—करहरा, पो०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—पहला पृष्ठ लुप्त, दूसरे पृष्ठ से उद्धृत···पि काम ॥ ३ ॥ शंष चक्र गदा पद्म लिए प्रभु करौ सुमम उर धाम । जैसे क्षीर सागर में विलसत श्री सहित अष्टजाम ॥ ५ ॥ तवतो भ्रमता मिटै मो मनकी सव तजि भजों तव नाम ॥ ६ ॥ जा विधि मोह माया न ग्रसै करौसो प्रभु गुन ग्राम ॥ ७ ॥ गुर दयाल तन हेरोरमापति अपनो जानि गुलाम ॥ ८ ॥ ॥ रागनी ए मन तलजत ॥ महिमा अमित श्री जी तोरी तुही सरस्वती तुही जनक किशोरी ॥ १ ॥ तु ही राधा तुही रुक्मिणी रानी तुही काली को रुप धरोरी ॥ २ ॥ तुही गिरजा तुही दुरगा माता जिन महिषासुर नाश करोरी ॥ ३ ॥ विधि हर सारद सेस वीनधर वेद न जाको पार पायोरी ॥ ४ ॥ आदि शक्ति तिहूँ लोक उजागर गुन सागर अति सुंदरि गोरी ॥ ५ ॥ दुष्ट दलनि सहस सीस विनासनि जन दुष हरनि नाम जाकोरी ॥ ६ ॥ मंगल करनि जग जननि समन अघ प्रियारामकी मैयामोरी ॥ ७ ॥ विनय करत गुरदयाल दास अव करिके कृपा हेरु ममओरी ॥ ८ ॥

अंत—··········मित अपारा ॥ ३ ॥ जोन भर्थ जन्म जग विच होतो को व्रतनेम करत सचारा ॥ ४ ॥ दुष दारिद दूषन अघ औगुन हरिजगको करतो निस्तारा ॥ ५ ॥ सियाराम पदको दिखरातो हमसे अधमको कहां गुजारा ॥ ६ ॥ भर्थ चरित करि नेम सुनै जो छल तजि असमंजस परिहारा ॥ ७ ॥ गुरदयाल श्री रामचरन में अवसि प्रेम होकटै भ्रमजारा ॥८॥ इति श्री रामचरित्रे मानसे सकलकलुष विध्वंसिनो नाम अजोध्याकाण्ड द्वितीयो सौपान समाप्तम् ॥ शुभं मस्तु ॥ रामसीया ॥ रामसीया ॥ सीयाराम माघ सुदी ७ संवत् १८८९ ॥

विषय—अयोध्याकांड रामायण का रागरागिनियों में वर्णन ।

संख्या ७१ सी. रामायण (आरण्य-काण्ड), कागज –देशी, पत्र—३४, आकार — ९३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) – ८, परिमाण (अनुष्टुप्)– ५४४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८९८ संवत् , प्राप्ति स्थान पं० शालिग्राम जी, स्थान...करहरा, डाकघर—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—आदि के ४ पृष्ठ लुप्त ५ वें पृष्ठ से उद्धृतः—······तिय अधम निपट नीचेरे ।। ५ । पति वंचक सों प्रीति अति करई रो रो न नरक कल्पसत परेरे ।। ६ ।। छिन सुष हित सतकोटि जनम दुष समुझे न ता समको कठिनेरे ।। ७ ।। विन श्रम नारि परम गति पावै छल तजि पतिवृत धर्म गहेरे ।। ८ ।। पति प्रतकूल जहां जन्मै जाई विधवां होय तरुनाई पाऐरे ।। ९ ।। सहजअपावन तियपति सेवत सुभगति सब सुषमूलि लहेरे ।। १० ।। जसगावैं श्रुति चारौं अजहूँ मिटे नहीं मनके संशेरे ।। ११ ।। सुनु सीता सुमिरत नाम तेरो जग नारिन पति वृत धरेरे ।। १२ ।। तोहितो प्रान प्रिय रामधाम सुषमैं ये वचन जगहेत कहेरे ।। १३ ।। सुनि जान परम सुष पायो सादर, चरनन सीस धरेरे ।। १४ ।। तव मुनि सों कही कृपा निधाना आयसु होय जाउँ वन दूसरेरे ।। १५ ।। गुरदयाल मोपै संत कृपा करो सेवक लषिके न सुधि विसरेरे ।। १६ ।।

अंत—।। रागनी सोहनी जल्द तिताला ।। लछमन देषो विपिन की सोभा देषतकाको मन न लुभाई ।। १ ।। नारि सहित सब षग मृग जेते मानो करत मेरी निदराई ।।२।। मोहि देषि मृगा नगर तति भाजें मृगी कहैं तुम डरो किहि भाई ।। ३ ।। कंचन मृग ये पोजत फिरहीं तुम आनंद करौ मृग जाई ।। ४ ।। संग लगाय करी करि लीन्हीं मानो मोको सीष लगाई ।। ५ ।। शस्तर शुचित ते फिर फिरि देषै भूप सो सीत विषसन लषाई ।। ६ ।। राखे नारि जद्यपि उरमाहीं जुवती शस्तर नृप वस नही भाई ।। ७ ।। देषौ तात वसंत सुहायो विन सीता मेरो हियरो हराई ।। ८ ।। विटप विशाल लता उरझानी विविध वितान देव जानो छाई ।। ९ ।। कदली तरवर ध्वजा पताका कहो कि हम न कोन धीरज जाई ।। १० ।। लक्ष्मन देषौ काम अनीका वड़े धीर जिन मन न डुलाई ।। ११ ।। याके एक·········श्री रामचरित मानसे सकल कलषु विध्वंसनो नाम ।। आरुनिकांड त्रतीयो सौपान समाप्तं शुभंमस्तु ।। जेठ सुदी ५ संवत् १८९८ ।। मुकाम लषनौ ।। रानी कटरा ।।

विषय—आरण्ड काण्ड रामायण का रागरागिनियों में वर्णन ।

विशेषज्ञातव्य—इस कांडके आदि के चार, मध्य तथा अन्त के कई पत्रे लुप्त हो गये हैं । अंतिम पत्र इस कांड का उपलब्ध है । उसमें उसका लिपिकाल ज्येष्ठ सुदी ५ सं० १८९८ वि० लिखा है । इससे पहलाकांड १८८९ वि० लिखा हुआ था । लिखावट के अन्तर को देखते हुए ऐसा विदित होता है कि उक्त दोनोंकाण्डों के लिपिकार भिन्न-भिन्न थे ।

संख्या ७१ डी. रामायण (लंकाकाण्ड), कागज—देशी, पत्र—९४, आकार—९३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६४४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शालिग्राम जी, स्थान—करहरा, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि--आदि के १२ पृष्ठ लुप्त, १३ वें पृष्ठ से उद्धृतः--······कहाँ है विहँसि वचन अंगद बोलारी ॥ ८ ॥ दिन दस गए वालि पै जाई मिलिके कुसल पूछियो सारी ॥९॥ राम विरोध कुसल होय जैसी सो सब तोहि सुनाय दि यारी ॥ १० ॥ सुनु सठ होय भेद मन जाके ताके उरन राम धनुधारी ॥ ११ ॥ सांचु कहाए हम कुलघालक तुम कुल पालक दससीस ॥ १२ ॥ नयन कान हैं वीस तुम्हारे अैसेई होत अंधवहिरारी ॥ १३ ॥ शिव विरंच सुर मुनि समुदाई चाहत जासु चरन सेवारी ॥ १४ ॥ तासु दूते हय हम कुल वोरा औ हूं मति तोहिय न फटारी ॥ १५ ॥ गुरदयाल सुनि कपि की वानी कहत दसानन हो तिरछारी ॥ १६ ॥

अंत--रागिनी गौरी ताल छपका ॥ आए तीर जहाँ रघुराई प्रवेसे सव निषंग में जाई ॥ १ ॥ देखि सुरन दुदुंभी बजाई फूलनि की माला वरषाई ॥ २ ॥ तासु तेज प्रभु मुषमें समायो विधि हर निरषि हरष अधिकायो ॥ ३ ॥ जय जय शब्द ब्रह्मांड में छायो जय रघुपति जिन सोक मिटायो ॥ ४ ॥ जय जय राम कृपा के कंदर जय जिन नासिकियो दसकंधर ॥ ५ ॥ जय जय मुकुन्द दुंद हरना जय सुष सागर कृपादिवाकर ॥ ६ ॥ जय षल दल नासन पर कारन कारुनीक प्रभु सव सुषदायक ॥ ७ ॥ सुर मुनि सिधि हरषे गंधर्वा वजन लगी दुंदभी बहु भायक ॥ ८ ॥ संग्राम अगंनराम अंग में कोटि अनंग की सोभा छाई ॥ ९ ॥ सिरजटा मुकट विच विच प्रसून की अति ही मनोहर छबि अधिकाई ॥ १० ॥ × × ×

विषय--लंकाकांड रामायण का रागरागनियों में वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--इस कांड के वारह और मध्य तथा अन्त के कई पन्ने लुप्त हो गए हैं अतएव इसका लिपिकाल भी अविदित है ।

संख्या ७१ ई. रामायण (उत्तरकाण्ड), रचयिता--गुरदयाल कायस्थ, कागज--देशी, पत्र--६०, आकार--९$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५००, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० शालिग्राम जी, स्थान--करहरा, डाक०--सिरसागंज, जि०--मैनपुरी ।

आदि--ओं ॥ श्री गणेशायनमः ॥ ओं जानुकी बल्लभाय नमः ॥ राग श्री ताल-कव्वाली ॥ एक दिन रहो जब अवधि को वाकी अति आरति पुर लोग लुगाई ॥ १ ॥ सोचैं जहाँ तहाँ सब नारी नर कृसतन राम बयोग अकुलाई ॥ २ ॥ सकल सगुन सुभ सुन्दर होन लगे मन में हरष सबके अधिकाई ॥ ३ ॥ मनो जनावत प्रभु आगवना पुरी रस्मि चहूँ ओर दिखाई ॥ ४ ॥ कौसि लादि मायके मन होई उरआनंद तिनके न समाई ॥ ५ ॥ प्रभु आए सियलषन समेता कहव चहत है अव कोउ आई ॥ ६ ॥ भर्थ की आँषि और भुज दाहिनी वारहि वार उठत फरकाई ॥ ७ ॥ सगुन जानि मन हरष भांति बहु करत विचार लोग समुदाई ॥ ८ ॥ जव एकहि दिन अवधि कोरहि गयो समुझि भर्थ मन अति बिकलाई ॥९॥ नाथ न आए सो कारन काहै जानि कुटिल दियो विसराई ॥ १० ॥ अहो धन्य लक्ष्मण वड़ भागी प्रभु के चरन पंकज लौलाई ॥ ११ ॥ कपटी कुटिल जानि प्रभु मोको तातें न संग लीनो रघुराई ॥ १२ ॥ जो प्रभु समुझें × × ×

अंत---॥ रागनी कान्ह डाश हाना ॥ कलिमल सकल मनो मल धोय के विन श्रम धाम सो जावै ॥ १ ॥ जो या रामायण को एक पद प्रेम सहित निइचै करि गावै ॥ २ ॥ दारुन अविद्या मोह विकार सब श्री रघुवीर हरैं ता नर को ॥ ३ ॥ सुंदर सुजान कृपा निधि जानी जो करि प्रीति भजै रघुवर को ४ ॥ राम समान नहीं प्रभु दूजा भ्रमत फिरैं क्यों न कोई भूलिके ॥ ५ ॥ डार पात में रहै उरझायो गहे न पद प्रभु सबकी मूलिके ॥ ६ ॥ जिन मोसे अवगुनी को अपनायो पावन अपनो चरित गवायौ ॥ ७ ॥ कहाँ मैं अपावन शूद्र के मुषतें राम कृपाकरि पुःन कहायौ ॥ ८ ॥ राम प्रताप सोई जानत है जो कोई भजन करत रघुपति को ॥ ९ ॥ राम कृपाकरि सुमति दई मोहि तब मैं समुझो हित अनहित को ॥ १० ॥ राम चाहैं करैं राई तें परवत परवत तें राई करैं चाहैं ॥ ११ ॥ मोसे अधम लोभी कामी को रामहि से दयाल जो निवाहैं ॥ १२ ॥ कहालौं कहौं प्रभुकी प्रभुताई हो प्रभु अपनो दास कहाई ॥ १३ ॥ संवत् अठारह सै निन्यानवे अगहन सुदि सातैं सुष दायन ॥ १५ ॥ गुरदयाल श्री रामकृपातें पूरन भई श्रीपति रामायन ॥ १६ ॥ इति श्री रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने ॥ उत्तर काण्ड सप्तमो सोपान समाप्तं शुभं ॥ भूयात् मुकाम श्री लक्ष्मण पुरी ॥ रानीकटरा ॥

विषय---उत्तरकाण्ड रामायण का रागरागिनियों में वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत कांड के आद्यंत के दोनों पत्रे यथावत् हैं किन्तु मध्यभाग के सब पन्ने उपलब्ध नहीं हैं । काण्ड तथा ग्रंथ की समाप्ति पर-ग्रंथ निर्माण संबंधी जो दोहा दिया गया है उससे उसका रचनाकाल संवत् १८९९ वि० ज्ञात होता है, किन्तु इससे पहले के काण्डों में अयोध्याकांड एवम् आरण्यकाण्ड क्रमसे सं० १८८९ वि० तथा १८९८ वि० के लिखे हुए बताये गये हैं । अब यदि हम उत्तरकाण्ड में दिये हुए दोहे को समस्त ग्रंथ का रचनाकाल समझें तो उसका लिपिकाल पहले काण्ड के अनुसार १० वर्ष और दूसरे काण्ड के अनुसार एक वर्ष पूर्व निश्चित होता है, जो स्पष्ट असंभव है । इस पर विचार करने से यह विदित होता है कि प्रत्येककाण्ड भिन्न भिन्न कालों में रचा और लिखा गया है । ग्रंथ के अधिक समय तक अनियमित रूप से पड़े रहने के कारण उसके बहुत से पत्रे नष्ट हो गये हैं । अतएव उन्हीं के साथ उक्त ग्रंथ के विषय की अनेक ज्ञातव्य बातें भी लुप्त हो गई हैं । बहुत संभव है जब उसने बालकाण्ड में अपने वंशकी उत्पत्ति तक लिखी है तो अपने विषय में भी अवश्य ही कुछ अधिक प्रकाश डाला होगा । समस्त ग्रंथ राग रागिनियों में लिखा है । प्रायः तुलसीदास की चौपाईयों के शब्द ज्यों के त्यों उद्धृत कर दिए हैं । कहीं कहीं उलटफेर करके अपना काम ले लिया है । कहीं कहीं उनमें थोड़ी घटा बढ़ी कर दी है और कहीं उनका भावापहरण करके अपना अभिप्राय सिद्ध कर लिया है । ग्रंथकार तुलसीकृत रामायण को वाल्मीकि संस्कृत रामायण का भाषानुवाद बतलाता है और अपने ग्रंथ को भाषा का अनुवाद भाषा में किया बतलाता है । वस्तुतः यह दोनों ही बातें नितान्त शुद्ध नहीं कही जा सकतीं । तुलसी दास ने वाल्मीकिरामायण का अनुवाद करके अपनी रामायण नहीं रची है । ग्रंथकारने ही तुलसीकृत रामायण का

अनुवाद किया है। उसने उनके दोहों और चौपाइयों को रागरागिनियों में परिवर्तित कर दिया है। इससे वह संगीत संबंधी एक पृथक ग्रंथ बन गया है। यही इसकी विशेषता है।

संख्या ७२ ए. यमुनाष्टक, रचयिता--श्री गोसाईं जी, कागज--देशी, पत्र--९, आकार--६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२७०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री प्रेमविहारी जी, स्थान--प्रेमसरोवर, डाकघर--बरसाना, मथुरा।

आदि--श्री आचार्य जी आठ श्लोकन करि श्री यमुनाजी की स्तुति करत हैं। ताकी टीका श्री गोसाईं जी कहत हैं। तहाँ मंगलाचरण में श्लोक कहत हैं। विश्वोद्धारार्थ मेव विर्भूत विन्द्रावन प्रिया। कृपयं तु सदा तात चरणा मयि विट्ठले। श्री गुसाईं जी कहत है। ऐसे जे श्री आचार्य जी ते हमारे ऊपर कृपा करो श्री आचार्य जी कैसे हैं। सम्पूर्ण विश्व के उद्धार के लिये प्रगट भये हैं।

अंत--ताही ते श्री जमुना जी को जेसो स्वरुपहतो। तेसोई आप निरूपण कीये और प्रतिज्ञा हू कीये। ताते या बात में कछू सन्देह न करनो। और या ग्रन्थ को पाठ हू नित्य करनो। इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं श्री यमुनाष्टक ताकी टीका श्री गुसाईं जी कृत भाषा में सम्पूर्णं।

विषय--यमुना जी की स्तुति।

संख्या ७२ बी. सिद्धान्त मुक्तावली, रचयिता--श्री गोसाईं जी, कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--६ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२१०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, प्राप्तिस्थान—पं० राधेश्याम, स्थान--पासिया, डाकघर—गोवर्धन, मथुरा।

आदि—प्रणम्य पितृ पादाम्बुज पराग मनुरागत। कृपया विष दी कूर्म स्तद्वाङ्मुक्ता धुलावली। याको अर्थ। अब श्री आचार्य जी के चरण कमल को जो पराग सो ताको हम सनेह सो नमस्कार करत हैं। सो श्री आचार्य जी के कृपा करि श्री आचार्य जी के वचनरूपी मोतिन की माला सो ताकी हम टीका करि उजलि पहिरबे योग्य।

अंत--सो ये श्री आचार्य्य जी के सिद्धान्त वचन रुपी जो माला ता कहँ हृदय में पहिरयो भली भाँति हृदय में राषो। इतने ग्रंथ की समाप्त। श्री वल्लभाचार्य विरचित सिद्धान्त मुक्तावली ग्रंथ ताकी टीका श्री गुसाईं जी कृत भाषा में सम्पूर्ण॥

विषय—वल्लभकुल सम्प्रदाय के स्फुट एवं मुख्य मुख्य सिद्धान्तों का वर्णन है।

संख्या—७२ सी. नवरत्न की टीका, रचयिता—श्री गुसाँईं जी, कागज—बाँसी, पत्र--५, आकार--८½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--३४१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि– नागरी, लिपिकाल--संवत् १९०९ वि० (१८५२ ई०), प्राप्तिस्थान– पं० तोथाराम जी, स्थान--करहेला, डाकघर--बरसाना, जि०--मथुरा।

आदि--अथ नवरत्न की टीका लिख्यते। चिंता संतान हंतारो, यत्पादा-

म्बुज रेणुवः ॥ स्वीयानां तानिजाचार्य्यं प्रणमामि महुर्मुहुः ॥ याको अर्थ श्री गुसाईं कहते हैं। जिनके चरणारविन्द को रेणु हैं। सोते सेवकन की जो परम्परा तिनकी दूरि करनवारी है। ऐसे जे श्री आचार्य जी तिनकूँ हम बारम्बार नमस्कार करत हैं।

अंत--जिनको भजन कीयेते जो बाजीब कँहन छोड़ेगे। ताते अ हो वैश्नव हो यह रत्न अपने हृदय में पहरि के सब कोई श्री ठाकुर जी को भजन स्मरण करो। यह हम उपदेश देत हैं। श्री वल्लभाचार्य्य विरचितं नवरत्न टीका। सम्पूर्ण।

विषय—महाप्रभू तथा भगवान कृष्ण की स्तुति।

संख्या ७३ ए. अलंकार भ्रम भंजन, रचयिता--ग्वालकवि (स्थान--मथुरा), कागज--देशी, पत्र--३७, आकार--१० X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२१, परिमाण (अनुष्टुप्)--७७७, पूर्ण,रूप--नवीन, गद्य-पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९२२ (१८६५ ई०), प्राप्तिस्थान--श्री रामनिवास जी पोद्दार, स्वामीघाट, मथुरा।

आदि--श्री जगदम्बायै नमः। दोहा। ब्रजभूषन भूषन भलौ, भूषन भूषन नाँहि। अघट अदूषन यह सदा वह घट दूषन आहि ॥ अलंकार कविता भूषन कहत हैं, अलंकार बहु जानि। अलं भाषियत पूर्व कौ, पूरि रह्यो अवरानि ॥ हेमादिक भूषनन कौ, ग्रहन उतारन होत। ये भूषन तन मय दिपत, होय न जुदो उदोत ॥ अथ अलंकार लक्षण रस आदिक ते व्यंग ते, होय भिन्नता जाहि। शब्दारथ तैं भिन्न ह्वै, सब्दारथ के माहि ॥

अन्त--श्री राधागोविन्द जू, मौ विनती सुनि लेहु। अपने पद-पदमनन की सदा भक्ति मुँहि देहु ॥ तारक विरद विचारि निज, तारे पतित विशाल। यही भरोसो 'ग्वाल-कवि' गहे चरन नँदलाल ॥ इति श्री अलंकार भ्रम भंजन समाप्तं ॥ शुभं भूयात् ॥ मिती माघ बदी ७ संवत् १९२२ आदित्यवार ग्रंथ बिहारी लाल ने लिष्यो मथुरा जी में निज दुकान पै ॥

विषय--सूची अकारादिक क्रमसेः--

परि करांकुर, १२ । प्रस्तुतांकुर, १२ । पर्य्यायोक्ति, १७ । पर्य्याय, २३ । प्रत्यनीक, २४ । प्रौढ़ोक्ति, २५ । प्रहर्षन, २५ । पूर्वरूप, २६ । विहित, २८ । प्रतिरोध, २९ । प्रेयस, ३० । प्रतिक्षा, ३२ । प्रश्नोत्तर, ३५ । वृत्त्यानुप्रास, २ । व्यतिरेक, ११ । विनोक्ति, ११ । व्याजस्तुति, १७ । व्याजनिन्दा, १७ । विरोधाभास १९ । विभावना, १९ । विसेषोक्ति, २० । विषम, २० । विचित्र, २१ । विशेष, २१ । व्याघात, २२ । विकल्प २३ । विकश्वर, २४ । विषाद, २५ । विशेष, २७ । व्याजोक्ति, २८ । विव्रतोक्ति, २८ । विधि, २९ । भ्रम, ६ । भ्रान्तापह्नुति ६ । भेदकाति शयोक्ति ९ । भाविक, २९ । मालोपमा, ४ । मालादीपक, २२ । मिथ्याध्वसित, २५ । मुद्रा, २६ । मीलित, २१ । यथासंख्य, २३ । रसनोपमा, ४ । रूपक, ४ । रूपकातिशयोक्ति, ८ । रतनावली, २६ । रसवत, ३० । लाटानुसास, २ । लुप्तोपमा, ३ । ललित, २५ । लेसा २६ । लोकोक्ति, २८ । सुमिरन, ६ । सन्देह, ६ । शुद्धापन्हुति ६ । सायन्हव रुपकातिशयोक्ति, ८ । सम्बन्धातिशयोक्ति, ९ । सहोक्ति, ११ । श्लेष, १२ । समा २१ । सार २२ । समुच्चय, २३ । समाधि २४ । संभावना, २५ । सामान्य २७ । सूक्ष्म, २८ । स्वभावोक्ति, २९ । समाहित, ३१ । शब्दा, ३२ । संभव, ३३ । संश्लिष्ट, ३४ । संकर ३४ । हेतापह्नुति, ६ । हेतु २९ ।

सेवाराम के पुत्र, ब्रह्मभट्टवंशीय मथुरा निवासी ग्वाल कवि ब्रजकी विभूतियों में से हैं । पिछली खोज में इनके कई ग्रंथों का पता लगा था, पर यह ग्रंथ भ्रम भंजन तब भी नहीं प्राप्त हुआ था । एक महाशय की कृपा से यह देखने को मिल गया जो बहुत ही महत्वपूर्ण है । ग्वाल कवि की रचनाएँ यहाँ बहुत लोगों के पास हैं, पर अज्ञानतावश वह एबाए बैठे हैं । न वही उनका कुछ उपयोग करते हैं और न दूसरों को कुछ लाभ उठाने देते हैं । फिर भी मैं प्रयत्न कर रहा हूँ कि किसी तरह यथा सम्भव इनके ग्रंथ खोज में आ जाएँ ।

संख्या ७३ बी. कवित्त संग्रह, रचयिता—ग्वालकवि, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० गंगाराम जी शर्मा, स्थान—उरावर, जिला—मैनपुरी ।

आदि—अथ ग्वाल कवि कृत कवित्तों की संग्रह लिख्यते ॥ श्री कृष्ण जू के कवित्त ॥ पानिप परम मंजु, मुक्ता सरमखाय, उर्वे सिन्धु अगम अदम गम कोरके । तारे तेज वारे तेन कारे निशि तारे परे दिवस उरारे रहे डरि मुख मोरके ॥ ग्वाल कवि फवि-फवि छटा जो छपाकरकी, दबि दवि दूवरै कुमुद जिमि भोंरके, याते जग पष नष मष मैन पचि सष, चष लष पद नष नवल किशोर के ॥ १ ॥ कोहर में विंव में वधू कन में विद्रुम मैं, जावक जपामें वट किशलै अमंद के । लाल में गुलाल में गहर गुल लाल नमें, लाली गुन येक सो न तूल है सु छंद के ॥ ग्वाल कवि ललित लुनाई कोमलाई जैसी, तैसी है न कंज वीच औ गुलाब फंद के ॥ नंद के करन दुख दुंद के हरन घन, असरन-सरन चरन नँद नंद के ॥ २ ॥

अंत—॥ कवित्त कुचके ॥ रसिक शिरोमणि पिया के पानि जान कन, आनंद की खानि दान देइवेकों भोज हैं। अजब अनूठे विधि किले हैं वनाये हैं सो, ऊचे होत आवत हैं न जिमी दोज हैं ॥ ग्वाल कवि लाल उर सीतल सुगंधकारी, भारी रुप ताल के मुदे भये सरोज हैं। सौतिनको रोजकर आलिनकों चोजकर, प्यारे को मनोज ओजकर ये उरोज हैं ॥ पेखे न परीके गधरव की लली के कहूँ, नगी के न ऐसे हरवैया मन ठीके हैं। मंत्र हैं वसी के गोत्र जंत्र सरसीके नर, ही के सिदौरा मैन तीके हैं ॥ ग्वाल कवि जी के ही के दायक अनंद ही के, उपमा सभी के करवैया कमी के हैं। ढांके श्याम कामिनी के हेरे करैं कामिनी के, मिले कामिनी के कुच कुंभ नीके हैं ॥ इति कवित्त समाप्तम् ॥

विषय—कृष्ण, राम, गजोद्धार, शान्त-रस, ब्रजभाषा, पूरबीभाषा, गुजराती, पंजाबी भाषा के कवित्त, कलियुग के कवित्त, प्रस्तावक, नेत्र तथा कुच सम्बन्धी छन्दों का संग्रह।

संख्या ७३ सी. लक्षना व्यंजना, रचयिता—ग्वाल कवि (स्थान—मथुरा), कागज-बाँसी, पत्र—३१, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४१, खंडित, रूप—नवीन, बंधे हुए पत्रे, गद्य पद्य, लिपि नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री श्यामलाल हवेलिया, स्थान व डाकघर—कोसी कलाँ, मथुरा।

आदि—श्री जगदम्बायै नमः ॥ अथ लक्षणा व्यंजना लिख्यते ॥ दोहा बाँके बिहारी लाल की, सेस हु वरनि सकैन। बाँकी झाँकी मे सदा, लगे रहे मौ नैन। सब्द लक्षन श्रोत्र ग्राह्य नभ भव सबद, सो द्वेविधि पहिचान। ध्वन्यात्मक इक जानियै, बरनात्मक लक्षण। वरन भाव सु होत ध्वनि, संबादिक तै जानि। स्वर बरगादिक जोगतें वरनात्मक उर आन ॥ बरनात्मक जो शब्द है, सोहे तीन प्रकार। रूढ़ रूढ़ जोगिक द्वतीय, जोगिक तृतीय विचार ॥

मध्यः—पृष्ठ २६ की समाप्ति (पुष्पिका) इति श्री साहित्तानन्दे ग्वाल कवि विरचिते रूढ़ादि शब्द अभिधा, लक्षना व्यंजना वर्णनं नाम एकादशमोस्कंद ॥

अंत—॥ वस्तुतै वस्तु लक्षण ॥ दिन दिन दुति दूनी बढ़े, नवल बधू के अंग। लषि लषि विलषति सौत सब होत जात वतरंग ॥ वार्ता इहाँ दिन दिन दुति बढ़िबो स्वतः समावी वस्तु ताते प्रीतम याके अब आधीन हो यगो यह व्यंग्य ताते हम सब सब तिरस्कार कौं पावेंगी ॥ इत्यादि वस्तु ध्वनि ॥ × × × × अपूर्ण

विषय—शब्दों के लक्षण और उदाहरण, अभिधा, लक्षणा, उपादान, रूढ़ि प्रयोजन उपादान गौनी, लक्षण लक्षणा गौनी विपरीत लक्षण सारोपा गौनी और शुद्ध इत्यादि—पत्र १-१२ तक। साध्यवसान गौनी लक्षण सुद्धा आदि वाक्य में लक्षणा संक्षेप में लक्षणा के नाम और लक्षण, ८० भेद, व्यंजना, अभिधामूल, संयोग वियोग, उनके लक्षण, वियोग, साहचर्य्य, विरोध आदि, १३-१९ तक। अर्थ, प्रकर्ण, चिन्ह शब्द सामर्थ्य, औचित्य, देश, समय व्यक्ति आदि के लक्षण, लक्षणामूल, व्यंग्य लक्षण, व्यंग्य गूढ़, अगूढ़ लक्षण, शाब्दिक व्यंजना, आर्थी व्यंजना, वक्ता के प्रभाव से व्यंग्य वोधक वैशिष्ट्य, काकु वचन वाच्य

अन्य सन्निधि, प्रसंग वैशिष्ट्य, देश समय चेष्टा व्यंग्य-लक्षण, आर्थिक व्यंजना, पत्र—१०-२६ तक। काव्य निरूपण, उसका लक्षण स्वरूप कारण प्रयोजना, व्यंग्य लक्षण, ध्वनि। अविवांक्षित-वाच्य ध्वनि, आदि, शब्द शक्ति, वस्तु अलंकार, अर्थ, सक्स्युद्भव, स्वतः सम्भवी आदि··· २७-३१ तक। (अपूर्ण)

संख्या ७३ डी. रसरंग, रचयिता—ग्वालकवि (स्थान-मथुरा), कागज—बाँसी, पत्र—१५३, आकार—१०×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९०४ वि० (१८४७ ई०), लिपिकाल—सं० १९२२ वि० (१८६५ ई०), प्राप्तिस्थान—सेठ कन्हैयालाल जी पोद्दार, मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री जगदंबाय नमः ॥ अथ रसरंग ग्रन्थ लिख्यते ॥ कवित्त ॥ येरे मन मेरे तेरे काज सब सिद्ध होंय, सिद्धि निद्धि साज होंय सो इलाज करियै। कोटि कोटि चन्द जाकी दुति के समान हैं। न पिता वृषभानजा के ऐसो ध्यान धरियै। ग्वाल कवि त्रिभुवन पति की परम प्रिया, विधि विधि ब्रज लीला हेतु उर भरियै। महिमा अगाधा पल आधा दून वाधा रषै, ऐसी श्री राधा श्री राधा श्री राधा जू ररियै ॥ दोहा नव रस मैं श्रृंगार की, पदवी राज विसाल। सो सिंगार रसके प्रभु, है श्री कृष्ण रसाल ॥

अंत—दोहा श्री राधा पद पदम कौं, प्रणामि प्रणामि कविग्वाल। छमवत है अपराध को, कियो जो कथन रसाल। श्री राधा जगदीशुरी, यह विनती है मोर। निज पद पदमन के विषै, लीजे मो मन जोर। जो गो लोक निवासिनी सो वृन्दावन आई। उमा रमा सीतादि सब, श्री राधामय ध्याई ॥ इति श्री रसरंगे ग्वाल कवि विरचिते हास्यादि अष्ट रस वर्नंनं अष्टम उमंग ॥ संवत् १९२२ चैत्र शुक्ल १३ शनि दिने।

विषय—भाव अनुभाव, विभाव, सात्विक संचारी आदि वर्णन, १—३८। नायिका भेद, ३९—५७। परकिया नायिकाओं का वर्णन, ५८—७१। स्वकीया, तथा पंचदश नायिकाओं के भेद—७२—९६। सखी, दूती, दर्शन और श्रृंगाररस, ९७—१०३। संयोग, वियोग, श्रृंगार, हावदशा १०४—११६। नायक सखा, उद्दीपन, षटऋतुवर्णन, ११७—१३९। हास्यादि अष्टरस १४०—१५३।

संख्या ७३ ई. बंसी बीसी, रचयिता—ग्वाल कवि, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—५×३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान पं० जवाहरलाल जी चतुर्वेदी, स्थान—कुआँ वाली गली, मथुरा।

आदि—बंसी बीसा। दोहा ॥ वदत विहारी लाल को, बंसी बीसा बेस। विदुषन बन विकसावहीं, बुधि बल करे विशेस ॥ कवित्त और विष जेते तेते प्रान के हरैया होत, वंसी के कढ़े की कभूँ जाम न लहर है। सुनत ही एक संग रोम रोम रीझ जाय, जोम जार डारै पारै वेकली गहर है। ग्वाल कवि लाल तों सों जोर कर पूछति हौं, साँच कह दीजे

जोपै मो पै महर है। बाँस में कि वेध में कि होंठ में फूक में, कि आँगुरी दाब में कि धुनि जहर है।

मध्यः—गोधन के पूजिबे कूँ गोपी चली जात हुती, छाकन तें थार भरें गहे जात सिरके, पायजेब झांझन की होत झनकारै जैसी, तैसी किलकारै गीत पीत पुंज छिरकें॥ ग्वाल कवि त्योंहीं कान्ह बाँसुरी बजाई सुनि, आँसुरी उमँग चले अंग अंग थिरके॥ फिर परी चिर परी भिर परीं गिर परीं, ऊँचे परी बीचें परी नीचे परी गिरके॥

अंत—कान्ह तैने कामरु की करामात सीखी कब, कबसों जगायी जोरि जन्त्रन की जोत है। कौन कन्दरा में बैठिकरै करतूत कला, कौन से पर्व सिद्ध कियो मंत्र गोत है। ग्वाल कवि गोपिन के चैंचि लैवे के लिए, बंसी एक नाली ताकी हरित उदोत है। दस नाली चम्मन कौ उचाटिवै को संतनाली मोहिबे कूँ अजब हजार नाली होत है। इति ग्वाल कवि कृत बंसी बीसा समाप्तः।

विषय—श्री कृष्ण जी की बाँसुरी के करिश्में बड़ी ओज पूर्ण कविता में वर्णित हैं।

संख्या ७४. रुक्मणी मंगल, रचयिता—हरचन्द द्विजदास (?) (स्थान—साहगंज, जि० आगरा), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सर्वोपकारक नागरी पुस्तकालय, स्थान व डाकघर—अंछनेरा, तह०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। दोहा। गोविन्द गिरा गणेश भजि, तजिमन विषय विषाद॥ सुफल होहु कारज सवैं, जिनके चरन अराद॥ सोरठा॥ मन उपज्यौ अभिलाष, अत मंगल रुकमिनि करन॥ तीनदेव कर साषि, ब्रह्मा विष्णु महेस जुत॥ दोहा मम हरचन्द निज नाम है, पुनि दुजदास बखान॥ साहगंज वासी सदा, करै कृष्ण को ध्यान॥

अंत—छन्द–भ्राजै रुचिर मनि कंठ कौस्तुभ भाल तिलक विराजही॥ रतिराज रूप अनूप छवि ससि वदन जन मन भावहीं॥ राजीव लोचन भव विमोचन पलक की पैनी अनी॥ कहि दास द्विज भजनन्द नन्दन गाइये रुकमिनी धनी॥ दोहा मुक्त माल गोपाल कैं, राजत रूप अपार॥ मानो गिरि गुह शिविर तें, चली सुरसरी धार॥ × × ×

विषय—रुक्मिणी मंगल में, रुक्मिणी का कृष्ण पर मोहित होना, उनके विवाह की तैयारी, दोनों में प्रेम पत्रों का आदान प्रदान, रुक्म का बाधा डालना और शिशुपाल के साथ उसके विवाह की तैयारी करना, अन्त में रुक्मिणी का आकुल होकर कृष्ण को संदेशा भेजना, कृष्ण का दल-बल सहित आना और देवी-पूजा करते हुए रुक्मिणी को हरण कर ले जाना पीछे वैदिक विधि से उसके साथ विवाह कर लेना आदि वर्णन।

संख्या ७५. दशम स्कन्ध भाषा, रचयिता—हरलाल चतुर्वेदी (स्थान—मथुरा), कागज—साधारण, पत्र—४३२, आकार—१३×८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४८०, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नटवरलाल जी वैद्य, स्थान—गुजर हट्टा, मथुरा।

आदि--अथ दशम स्कन्धपूर्वार्ध लिख्यते ।। निगम कल्प तरोर्गलितफलं, शुक मुखादमृतद्भव संमुतं ॥ पिवत भागवतं रस मालयं, मुहुर हो रसिका भुविभावुकः ॥ दोहा प्रगट सुधा सर ब्रह्म ते, सुक समाधि धरि ध्यान ॥ जग नृपहित श्रीमत कह्यो, जय जय कृपानिधान ।। कल अहिग्रसत लखो जगत, श्री गुरु करुणामान ॥ सकल जीव उद्धार को कियो भागवत गान ॥ सोरठा नारद सारद ऐन, ब्रह्मा सनक सनंद मुनि ॥ बंदै पद की रैन, ता हरि को वन्दन करौं ॥

अंत--दोहा पहिले मल्ल पछारिके, मान्यो कंस कराल ॥ देव फूल वरसा करैं, गुन गावे नन्दलाल ।। कीनो ताको कर्म सव, नारिन को सम्बोध ॥ बैरी मान्यो अतिवली, कारी तिन सव सोध ।। चारि और चालीस में, लीला करी रसाल ।। जयति जयति श्री कृष्णवलि, चरन सरन हरि लाल ।।

विषय-भगवान कृष्ण का जीवन चरित्र ।

विशेष ज्ञातव्य--यह कवि खोज में नवीन है । इन्होंने भागवत दशम स्कन्ध का बहुत ही सुन्दर पद्यात्मक अनुवाद किया है । पर है सिर्फ कंस वध तक ही । रचयिता गताश्रमटीला, मथुरा के रहनेवाले थे । इनके वंशज अभी वर्तमान हैं । रचनाकाल इस प्रकार दिया है:--संवत दसवसु सोम तो आसुनि तिथि अतवार । सुकल पच्छ हर लाल ने, कीनों ग्रंथ विचार ॥ पद्य रचना बड़ी अच्छी है । इनके और भी ग्रंथ जैसे, बृज विनोद, मथुरापरिक्रमा आदि बनाये कहे जाते हैं । ये माथुर ब्राह्मण थे । अनुमान से कृष्ण कवि के वंशज थे ।

संख्या ७६. धनुष-पैज, रचयिता—हरपाल पारवाले, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौ० मातादीन जी, स्थान—बाँक, डाकघर—कुचेला, जि०--मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ धनुष पैज ॥ रामचन्द्र का व्याह भजनों में लि० ॥ तोरो धनुष भोर भई भारी ।। जाने भारी कीयो जोर सवरे राजा हारिगये ।। वे गये सभा कूँ छोरि ॥ धनुष टूट्यौ काहू पै नाऐ सव हारे अपने मन में ।। धनु तोरो रघुवर जी ने ।। सव हारी मानी मनमें ॥ कोई सव राजा झक मारि रहे वे चले गये सचरे घरको ॥ रामचंद्र धनुष उठायकें धरि दीयो कीयो तरको ॥ राजा जनक खुशी भये मनमें कही फिरि लछिमन जी ॥ धनु० ॥ ऐसे सवने हारी मानी ।। और कही के मेरे समान नहीं कोई रघुवर जी को देखत सवरे खुसी भये तवही ॥ राजा जनक प्रेम वस है कैं खुसी भये जी मनमें ॥ धनु० ॥ सो ऐसी तरह से भयी व्याह सो सुनियो चातुर ध्यानी जी ॥ सो हरि भजना कहै पार कौ व्याह सुनो तुम जैसें जी ॥ धनु० ॥ १ ॥

अंत—गाहौ ॥ एजी जे लीला हरिपाल बनाई पार धाम के वासी ने ॥ हर जोतै और कथतु है जिकरी हंसी आबै गवैयाननै ॥ यामें पढ़े लिखे को काम न भाई जिकरी जे गावे की ॥ भजन ॥ हरपाल पार को वासी ॥ अनेक भजन कथे भाई वाने ॥ कोई खेत

करै और जात को क्षत्री जाट कहैं भाई मेरि जाति ॥ ऐसी जिकड़ी कोई न बनावै नई २ में करूँ त्यार ॥ जो कोई जिकड़ी गावै भाई हर पै सही होवैजी ॥ विन हर जोतें जेन गबैंगीं ॥ कोई हर जुतवैया इनकौं गावैं और न कोई गावैरे ॥ धनि २ लोग कहैं यालीलाकूँ सीता जी की व्याह की जिकरी पूरी भई जी ॥ मैं गमार कुछ जानत नाहीं जे परसंग कथाको है ॥ ११ ॥ इति धनुष पैज की लीला जिकरी के ॥ भजनों में हरपाल पारवाले कृत ॥ सम्पूर्णम् ॥ शुभम् ॥

विषय—सीता जी के विवाह का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ का रचयिता ग्राम्य- कविता का नामी कवि है । वह अपने को जाट जाति का क्षत्री बतलाता है और कहता है कि इन भजनों का गाना विना हल जोते आनन्द नहीं देता । न यह किसी पढ़े लिखे व्यक्ति का ही कार्य्य है । मैं तो मजे से खेती करता हूँ और ऐसी ऐसी नई जिकड़ियाँ तैयार करता हूँ जैसा अन्य कोई नहीं कर सकता । एक ओर तो कवि की अपनी यह दर्पोक्ति है और दूसरी ओर बिलकुल इसके विपरीत ही, उसने पूर्णतया अपना दैन्य भी प्रदर्शित कर दिखाया है—"मैं गमार कछु जानत नाहीं यह पर संग कथा को है ।"

संख्या ७७ ए. भागवत दशम, रचयिता—हरिदास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान-सर्वोपकारक पुस्तकालय, स्थान व डाकघर—अछनेरा, तह०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राधावल्लभाय नमः ॥ दोहा—रसिक रुप हरि रुप पुनि, इति चैतन्य समारूप ॥ हृदै कूर अनूप सक झूल्यौ बहौ अनूप ॥ कंस कृष्ण ते मीच सुनि हते तास छह भ्रात ॥ ध्याय प्रथम ही दसम के, यही कथा व्याख्यान ॥ चौपाई—चन्द सूर कौ वंस हो जितौ ॥ हे मुनि तुमने वरन्यो तितौ ॥

अंत—चौपाई ॥ विप्रनि कौ तौं अन्नसुधारे ॥ द्रव्यनि को पुनि दान उधारे ॥ गर्भहि सोधो वै संस्कार जो ॥ अन्यहि धोवे आत्म ज्ञान सो ॥ चहुँ दिसि सिद्धिज करै वेद धुनि ॥ सूत पुरान पठन लागो पुनि ॥ मागध कहत नन्द की माषै ॥ वन्दी जन कवी सुरी भाषै ॥ × × ×

विषय—भागवत के दसम स्कन्ध का अनुवाद है । इसमें कृष्ण जन्म उनकी बृज लीलाएँ, कंस बध तथा अन्य दुष्टों का मारना, रुक्मिणी से विवाह करना, द्वारका जाकर रहना आदि बातें वर्णित हैं ।

संख्या ७७ बी. गुरुनामावली तथा वाणी, रचयिता—स्वामी हरिदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१६, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बा० रामस्वरूप भटनागर, स्थान—आमरी, डाकघर व रेलवेस्टैशन—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गुरुनामावली लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरन परमपद, विधि हरि शिव सनकादि । सेवत सहचर भावनित, नित्य विहार अनादि ॥ १ ॥ दिव्य धाम वृंद्रा विपिन, दिव्य गौर तन स्याम । दिवाकेलि क्रीड़त सदां, दिव्य उपासक वास ॥ २ ॥ चौपाई—स्वयं प्रकास करि धाम, सनत्कुमार जानि निहकाम ॥ महल टहलिनी धर्म दृढ़ायौ । सो नारदवड़ भागिन पायौ ॥ ३ ॥ आचारज नारद वायुधान्यौ, पंच रात्रि करिमत विस्तान्यौ ॥ तामैं गुरु पद राधास्याम । दिव्य रुप तस वन अभिराम ॥४॥ सेवत श्री निवांरदित्य गह्यौ । श्री निवास नें सोई लह्यौ ॥ विश्वाचारज जो मत धान्यौ । पुरुषोत्तम विलास विस्तान्यौ ॥ ५ ॥ सरुपा चारज वड़े सुग्याता, श्री माधव कर मत विख्याता ॥ आचारज वलभद्र प्रचंड, पद्माचारज पावन पंड ॥ ६ ॥

अंत—काहे को मान करत मोहि वकत दुपदेत । वासे कीसी दृष्टि लियें रहौं तेरी जीवनि तोहि समेत ॥ ऐसो अव कछू करौ भौंहनि ठाढी जिन देहु कहत इति नेति । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी छलके गरे लगाइ भए रमेति ॥ ३९ ॥ रोम रोम जो रसना होती तौ हूँ तेरे गुनन वषाने जात । कहा कहौं एक जीभ सपीरी वात की नातत वात ॥ मान श्रमित भयें ओर सखिहू श्रमित भये जुवती जात । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज............ ॥

विषय—गुरु वंशावली तथा स्यामा स्याम के गुणानुवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के आरंभ में गुरुनामावली नामक छोटासा ग्रंथ संयुक्त है, इसमें श्री निम्वार्क स्वामी से लेकर श्री पीताम्बर स्वामी तक गुरु परम्परा का वर्णन हुआ है । यह क्रम स्वामी हरिदासजी के पश्चात् की कई पीढ़ियों तक चला जाता है । इससे स्पष्ट है कि इसका संग्रहकर्ता स्वामी हरिदास से इधर कोई अन्य व्यक्ति है, जिसने अपना परिचय इसमें नहीं दिया है । उसीने स्वामी हरिदास के कुछ शब्द एकत्रित कर दिये हैं । वाणी में संगृहीत पद बहुत अच्छे हैं । वह भाषा और भाव दोनों ही दृष्टियों से उच्चकोटि के हैं । लिपिकर्ताने नकल करते समय कुछ त्रुटियाँ की हैं जिनके कारण मूल लेखक की सुन्दर पदावली कहीं कहीं कुछ बिगड़ जाती है ।

संख्या ७८ ए. हदिास जी की वानी, रचयिता—हरिदास स्वामी, कागज—काल्पी, पत्र—२४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९४७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हरिदत्तजी, स्थान—मानपुर, डाकघर—बरसाना, जि० मथुरा ।

आदि—अथ परम उज्वल सिंगाररस के पद राग कानरा,. माई सहज जोरी प्रगट भई जो रंग की गौर स्याम घन दामिनि जैसे । प्रथम हु हुती अब हूँ आगे हूँ । रहि हैं न टरि हैं तैंसे अंग अंग क़ी उजराई सुघराई, सुन्दरता अैसे ॥ श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सम वयस वैंसे ॥

अंत—मोहन गहर गंभीर वदत, पिक वानी उपजत, मानौ प्रिया के वचननतें । श्री हरिदास के स्वामी, स्याम कुंजबिहारी अैसो को जाको मन लागै अनत सें ॥ इति श्री स्वामी हरिदास जी की बानी ॥

विषय—राधा-कृष्ण की भक्ति एवं श्रृंगार वर्णन ।

संख्या ७८ बी. केलिमाला, रचयिता—स्वामी हरिदास, कागज—देशी, पत्र—९२, आकार—६३/४ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शुकदेव जी ब्रह्मभट्ट, स्थान—वासुदेवमई, डाकघर—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी ।

आदि—श्री कृष्ण कुंजविहारिणे नमः ॥ श्री स्वामी जी की रहस्यवाणी केलिमाला लिष्यते ॥ रागकाह्नरौ ॥ माई सहज जोरी प्रगट भई , रंगकी गौर श्यामघन दामिनी जैसें । प्रथम हूँ हुती अवहूँ आगे हूं रहि हैं न टर हैं तैसें । अङ्ग अङ्ग की उजराई सुघराई सुन्दरता ऐसें ॥ श्री हरिदासके स्वामी स्यामा कुंज विहारी सम वैस वैसें ॥ १ ॥ रुचि के प्रकाश परस पर खेल न लागे । राग रागिनी अलौकिक उपासन नृत्य संगीत अलग अलग लागे । रागही में रंग रह्यौ रंग समुद्र में दोऊ झागे । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी, पै रंग रह्यौ रस हीमें पागे ॥ २ ॥ ऐसें हीं देखत रहों जनम सुफल करि मानौ । प्यारे की भाँवती के प्यारे जुगल किसोरै जानौ ॥ छिनु न टरौ पलुवन होउ इतउत रहौं एकतानौ । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी मनरानौ ॥ ३ ॥

अंत—कौन प्रकृति तिहारी छीया तुमही मिलत वेगी भोर है जात । अथवन निमेष होइ यह फाटी, देखियत पहिले सहमात हैं जात । आवत जात भारौ परै पीतो मरि जात ॥ श्री हरिदासके स्वामी तुम्हारे, माथे त्रन के तौक सुख जात ॥ १०९ ॥ रागिनी नट ॥ जुग कवनी वैस किशोर दोऊ, निकस ठाढ़े सघन वनतें, तन तन में बसत मन मन में लसत शोभा वाढ़ी दुहू , दिशि मानों प्रघट भई दामिनि घन घनतें ॥ मोहन गहर गंभीर विदित पिकवानी, उपजत प्रीयाके वचनतें । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी, ऐसो कोमल जाकौ लगे अनतमतें ॥ ११० ॥ इति ॥

विषय—श्री युगलकिशोर के रूप-सौन्दर्यादि का वर्णन ।

संख्या ७८ सी. पदसंग्रह, रचयिता—हरिदास आदि (विषय का खानादेखिए), कागज—मूँजी, पत्र—८५, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राम दत्त जी, स्थान व डाकघर—सुरीर, जि०—मथुरा ।

आदि—दोहा ॥ राग गौरी ॥ प्रथम जथामति प्रनऊँ श्री वृन्दावन अति रम्य । श्री राधिका कृपा विन सवके मननि अगम्य ॥ वरजमुना जल सींजन, दिन ही सरद वसंत । विविध भाँति सुमन सके, सौरभ अलि कुलमंत ॥ अरुन नूत पल्लव पर, कूजित कोकिल कीर । नृत्य निकरति सिषी कुल, अति आनन्द अधीर ॥ वहति पवन रुचि दाइक, सीतल मन्द सुगंध ॥ अरुन नील सित मुकलित, जहाँ तहाँ पूषन बन्ध ॥

अंत—राग कल्यान डोल झूलत हैं विहारी विहरिणि राग रमि रह्यौ । काहू के हाथ अधौटी काहू के वीन काहू के मृदंग । कोउ गहे तार काहू के अरगजा छिरकत रंग रह्यौ ॥ डोडी छांड़ि षेल मच्यौ जु परस्पर नाहीं जानियत-षग क्यों रह्यौ ॥ श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी कौ षेलत षेलत काहू न लह्यौ ॥ × × ×

विषय—निम्नलिखित भक्तकवियों के पदों का संग्रह

हित हरिवंश । २—कृष्णदास । ३—कुम्भन दास । ४—घासीराम । ५—श्री हरिदास । ६—अग्र स्वामी ७—व्यास । ८—परमानन्द । ९—सूरदास । १०—गोविन्द प्रभु । ११—गदाधर । १२—कल्याण । १३—नन्ददास । १४—माधवदास । १५—राघवदास । १६—लछिराम । १७—कुंजलाल । १८—रामराई । १९—श्री कमलनैन । २०—विहारिन दास २१—जगन्नाथ कवि राइ । विषय मुख्यतया राधाकृष्ण का श्रृंगार और भक्ति है ।

विशेषज्ञातव्य—इसमें २१ पद रचयिताओं के पदों का संग्रह है। जिनमें से कई बहुत प्रसिद्ध हैं ।

संख्या ७९ ए. गुरुशतक, रचयिता—हरिदेव, कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९८ वि० (१८४१ ई०), प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल ।

आदि—अथ गुरुसत लिख्यते ॥ दोहा ॥ गुरुपद पंकज में बसो, मो मन अलिब-सुजाम । जा प्रसाद बिन विश्व में, सरे न एको काम ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु है, शिव समान गुरुजान ॥ गुरु ही पूरण ब्रह्म है, नमो जोरि जुग पानि ॥

अंत—गुरु पद पंकज की कृपा, अचल रहौ यह ग्रन्थ । पढि सुनि हरि चरणनिरमौ, तजौ कुमति कौ पंथ ॥ अंक नाग वसु चन्द्रयुत, सेवत कियो प्रमान । सुदि षष्ठी आसाढ़ की, रच्यो ग्रन्थ शुभ थान ॥ राम लछन सीता सहित, भरत शत्रुहन भाइ । हनू विभीषण आदि हैं, कृपा करो सुखपाई ॥ हरिदेव मिश्र कृत गुरुशतक सम्पूर्णम् मिति जेठ बदि ४ संवत् १८९८

विषय—गुरुदेव की महिमा ।

संख्या ७९ बी. भूषण भक्ति विलास, रचयिता—हरिदेव जू , कागज—मूँजी, पत्र—३५, आकार—७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)–४९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लाल देशी जिल्द; पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मदनलाल वल्द पन्नालाल हवेलिया, बल्देव गंज, स्थान व डाकघर—कोसी, जि० मथुरा ।

आदि श्री राधारमणो जयति ॥ सुमर प्रथम गुर पद कमल, भवरुज सुमन सुमूल । कवि मन रंजन कवि कहत, भूषन भक्त अतूल ॥ यदि पसु जात सुलक्षनी । सुबरन सरसि सुनृत्य ॥ भूषन विन न विराजहीं कविता बनिता मित्त ॥ अलंकार इकठोर में ज्यो अनेक दरसाय ॥ कवि को आसे है तहाँ, जे प्रधान तिन मांहि ॥ रस हू तै अरुविंग तैं, भिन्न उक्त है सोय ॥ शब्दारथ भूषित करै, अलंकार है सोय ॥ विविध भात भूषन नमें, उपमा जासु प्रधान । तासों कवि 'हरिदेव' यह प्रथमहि कहत वषान ॥

अंत—भाग जगे पोहमी के छुवै पद कोमल कंज लगै किम तातें । रूपकी रासि अनूप रची विधि ओप सचीकी लजाति है जातें ॥ हेरति मै रति सी हरिदेव जू जानत काम कलान की घातें ॥ जानि बड़ी है बड़े कुलकी अरुनैन बड़े है बड़ी २ वातें ॥ दोहा—वेद४

इन्दु[१] नभ[०] निधि[९] विशद, ब्रह्म अंक मधुमास ॥ हरिदेव जू कीनो विशद भूषन भक्ति बिलास ॥ इति भूषन भक्ति बिलास ग्रंथ सम्पूर्ण ॥

विषय—पूर्णोपमा, लुप्तोपमा, मालोपमा, रसनोपमा, उपमानोपमेयअनुन्वै उपमा प्रतीपालंकार रूपक अधिक तद्रूप, नूनतद्रूप, तद्रूपभेद, अधिक अभेद रूपक, नून, सम-अभेद रुपक, प्रणाम लक्षण स्मरण भ्रम, सन्देह, शुद्धा, हेत पर्य्यस्ता, भ्राता, छेका उत्प्रेक्षा फलोत्प्रेक्षा, रूपकातिशयोक्ति आदि, उनके भेद त्रिविधि तुल्ययोगिता, दीपक, दीपकावृत दृष्टान्त, त्रिविधि निदर्शन, व्यतिरेक, शयोक्ति, समासयोक्त, परिकर, परिकर अंकुर, श्लेषालंकार अप्रस्तुति प्रसंशा, प्रस्तुतांकुर, १ पत्र से–१२ तक। पर्यायोक्त दुविधि, व्याज स्तुति, निन्दास्तुति, अभेद विषया त्रिविधि आक्षेप, विरोधाभास, छै प्रकार विभावना के, विशेषोक्त त्रिविध असंगत, त्रिविधिसम, विचित्र, अधिक दुविधि, अल्पाल्प, अन्योन्यै त्रिविधि विशेष, द्विविधि व्याघात, गुम्फ, एकावलीमाला दीपक, सार द्विविधि पर्य्याय, परिवृत, परिसंख्या, द्विविधि समुच्चय विकल्प, कारक दीपक, समाधिक्य, समाहित, प्रत्यानीक, काव्यार्थपति, काव्य लिंग, १३ से २२। अर्थान्तरन्यास विकश्वर, प्रोढ़ोक्त सम्भावना, मिथ्याधिवसित, ललित, त्रिविधिप्रहर्षन, विषाद, उल्लास, अवज्ञा, अनुज्ञा, मुद्राप्रस्तुत, रत्नावली, तद्गुन, पूर्वरूप, अनगुन, मीलत, सामान्य, उन्मीलत विशेष, गुढोत्तर, चित्र, वहिर्लापिका, अन्तर्लापिका, सूक्ष्म, व्याजोक्त, गुढ़ोक्त विवृतोक्त, युक्ति, लोकोक्ति, छेकोक्ति, वक्रोक्ति, सुभावोक्त, भावक, उदात, श्लाध्य चरित रिद्धिवन्त, अत्युक्त, निरुक्त द्विविधि हेत, अनुमान, अनुप्रास छेकानुप्रास, लाटानुप्रास, यमक, वृत्यानुप्रास, उपनागरिका, कोमलावृत, २३ से—३५ तक।

संख्या ८० ए. अनन्त चतुर्दशी की कथा, रचयिता—हरिकृष्ण पाँडेय (स्थान—धमसारा), कागज–देशी, पत्र—५, आकार—८१/२ × ११/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि–नागरी, रचनाकाल—सं० १८५५ वि०, लिपिकाल–१९८२ वि०, प्राप्तिस्थान–श्री सुखचन्द जी जैन, स्थान–नहरौली, डाकघर—चन्द्रपुर, जिला—आगरा।

आदि—अथ अनन्तचतुर्दशी कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ अनंत देव वंदौं सदा। मनमें करि वहु भाऊ। सुर असुर सेवत सदां। होइ मुकति परभाउ ॥ १ ॥ चौपही ॥ जंवू दीप दीप मैं सार। भरत छेत्र तहा कहौ अपार ॥ मगध देस देसनि में सार। राजग्रह नगरी अति वनी ॥ २ ॥ श्रेनिक राउ महा गुनवंत। रानी चेलना कही महंत ॥ धर्मवंत गुण तेज अपार। राजे राउ महा गुण शार ॥ ३ ॥ एक दिवस विपुलाचल तीर। जिनवर आए गुणगंभीर ॥ चारि ज्ञान के धारक कहे, गौतमादि गुणाधर जोल है ॥ ४ ॥ छह ऋतु के फल देखे नैन, वनमाली सब बोलौवैन ॥ हर्षवंतवन माली भए। फूल सहित राजा पर गए ॥ ५ ॥

अंत—तहाँ तौ सुख भुगते मनुल्याय। तेतो मोपर कहे न जायँ ॥ राज ऋद्धिषाय सुभ सार। तहाँ तौ कर्म भए सब छार ॥ ३२ ॥ तहाँ ते सो मुक्तिहि कौं गयौ, ऐसौ जिनवर वृत फल लयौ ॥ ऐसो वृत जो पालै कोई, ताकौं मुकति कही तव लोइ ॥ ३३ ॥

सरधर भूधर मही सो जोइ, श्रावन शुक्क आठे दिन होय ।। विनय सागर अज्ञाकरी । हरिकृष्ण पांड़े चित धरी ॥ ३४ ॥ तव यह कथा करी चितलाय । तैसी सास्त्रमें कही वनाइ ॥ विधिपूरव बाले जो कोइ । ताकौं मुक्ति निश्चै करि होइ ॥ ३५ ॥ इति अनंत चतुर्दसी कथा संपूरन ॥ मिती भादौं सुदी ८ गुरुवार ॥ संवत् १९८२ ॥ श्री श्री श्री श्री ॥

विषय—अनंतचतुर्दशी की कथा वर्णन ।

संख्या ८० बी. रत्नत्रय वृत कथा, रचयिता—हरिकृष्ण (स्थान—धमसारा), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८३/४ X ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५५ वि०, लिपिकाल—सं० १९८२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सुखचन्द जी जैन साध, स्थान—नहटौली, डाकघर—चन्द्रपुर, जिला—आगरा ।

आदि—अथ रत्नत्रय वृत कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ अरहनाथ जिनवर चरन, जुग वंदो मन वचकाय । बानी वंदौं सुमति मति, गुरुके लागौं पाँय ॥१॥ रत्नत्रय उर ल्यायकैं । केवल ज्ञान उपाय । रत्नत्रय वृत की कथा, सुनौं भव्य चितलयाय ॥ २ ॥ चौपई ॥ मगध देश महा शुभ देस । राजग्रह पुर वसै असेस ॥ राजा श्रेनिक ताको नाम, रानि चेलना है अभिराम ॥ ३ ॥ एक समय बैठी नरदेव । वनमाली फल लायौ सेव ॥ षट रितुके फल देखे राय । राजा पूछै कौन प्रभाव ॥ ४ ॥ सत्य कहौ ए आए कहाँ । धन्य भूमि जहाँ उपजे तहाँ ॥ सो माली विनवै करि सेव । विपुलाचल आए जिनदेव ॥ ५ ॥

अंत—वैराग्य उपजाई गये तुरंत । केवल ज्ञान भयो जु महंत ॥ भवि जीवन को उपजो चाव । तवै मुकति गये जिन राज ॥३८॥ जो कोई जु करै वृत येव । ताकौं मुकति कही जिनदेव ॥ श्रेणि कष्टतलीनौ करि भाइ । तातैं तीर्थ कर पदवी पाइ ॥ ३९ ॥ सम्वत सर सी भूधर मही । श्रावण शुक्ल सातैं रविसही ॥ विनयसागर की अज्ञा भई । तव यह कथा हरिकृष्ण निरमई ॥ ४० ॥ धमसारौ नगर गंभीर । श्रावग लोग हरैं पर पीर ॥ सुनै पढ़ै ताकौं सुख होय । पालै ताकौं मुक्ति संयोग ॥ ४१ ॥ इति रत्नत्रय व्रत कथा संपूरन भादौं सुदी ॥ ८ ॥ संवत् १९८२ ॥

विषय—रत्नत्रय व्रत की कथा का वर्णन ।

संख्या ८१. रुकमनी मंगल, रचयिता—हरिनारायण (ब्राह्मण, स्थान—कुम्हेर, भरतपुर), कागज—बाँसी, पत्र—२८, आकार—११ X ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) -२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९२५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० मदनमोहन जमीदार, स्थान—चिकसौली, डाकघर—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—अथ हरनराइन कृति रुकमनी मंगल ॥ श्री गनेस गुन गाय हो , मंगल कारज हेत । सिन्धुर्वदन निधान गुन, संतति कृपा निकेत । रागकाफी—प्रथम सुमिरि गणपति गुन गाऊँ ॥ एक रदन गज वदन सिधि सदन, घन ज्ञान मनाऊँ ॥ मोदक माल अंकुस कर चरन चारु छवि लखि हरिषाऊँ ॥ हर नारायन सिव सबन अनुग्रह संतत प्रेम भक्ति वर पाऊँ ॥

अंत--विनती करि सुर सिद्ध नृप, न्योतारी घर जाय। कृष्ण विदा कर सबन कूँ, अदभुत भेष वनाय। छन्दगीतिका—हरिभक्ति श्री नामी नृपति वदनेश के कुल जन्म है। हरिनन्दनउर वृज निकट गढ़ वैर को वासी कहै। सम्मत सगुनरस सुभग सोल्हे सुकातिक न्हायकै॥ शुक्ला सुभग तिथि त्रियोदशी सुखपाय ग्रन्थ बनायकै॥ इति श्री रुकमनी मंगल निर्मल भक्ति सुफल॥ मिति श्रावन बदी ३० रविवार सम्मत् १६२५ पोथी लिखी नग्रगोपालगढ़ मध्ये॥

विषय—कृष्ण का रुक्मिणी हरण।

विशेष ज्ञातव्य—एक वृद्ध महाशय ने बतलाया रचयिता हरिनारायण कुम्हेर (भरतपुर) रियासत के निवासी थे।

संख्या ८२. बालकराम विनोद नवरस, रचयिता—हरिप्रसाद, कागज—मूँजी, पत्र—४०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—९३५, खंडित, रूप—प्राचीन; जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, स्थान व डाकघर—गोकुल, मथुरा।

आदि— × × × अथ आलंबन विभाव रतिरूप सिंगार रसको नाइका नाइक तिनकै अलंकार तत्र नाइका त्रिविध स्वकीया परकीया सामान्या स्वरुप भेद। दोहा—जोनाइक की प्रीति काँपकरि करै आधीन। सो सिंगार पुर उननकी, कविनु नाइका कीन। तीनि भाँति की नाइका, स्वकीया अपनी नारि। पर कीया है और की, सामान्यारु विचारि।

अंत--दोहा संचारी संचरण तै, याते है परतंत्र। भावनाव ताको नहीं, रस बिनु लख्यो स्वतंत्र। इही भांति सब रसनिमैं, भावलीजियो जानि। उत्तम कवि की चातुरी, कछू बतावै बानि। इतनों रसको भेद हूँ, छिपे दिपाई देइ। उत्तम कविताई तहाँ, सुकवि तहाँ करिलेइ॥

विषय--नवरसों का वर्णन।

संख्या ८३ ए. कृष्णप्रेमामृत, रचयिता—हरिराय, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कारेलाल गुँसाँई, स्थान—संकेत, डाकघर—नन्दग्राम, जि०—मथुरा।

आदि--अथ कृष्ण प्रेमामृत तहाँ प्रथम श्री हरिराय जी श्री आचार्य जी गुसाईं जी सो सो प्रार्थना करत हैं॥ सो काहेते॥ जो मोको प्रेमामृत कहिबे में जोग्यता देउ॥ सो काहते॥ जो प्रेमामृत ग्रन्थ श्री श्री आचार्य्य जी की कृपाते गुसाईं जी वर्णन किये हैं। तामें श्री आचार्य जी को पूर्ण पुरुषोत्तम धर्म्म सहित जैसे श्री कृष्ण हैं।

अंत—जो अपने मार्ग है सो गोप्य मार्ग है। सो तातें ग्रन्थ हू फल रूप हैं। सो तातें गोप्य रापनो। या प्रकार प्रेमामृत की टीका समाप्त भई॥ इति श्री विट्ठलेश्वर विरचितं कृष्ण प्रेमामृत ताकी टीका श्री हरिराय जी कृत भाषा में॥

विषय—कृष्ण की भक्ति के नियम और प्रेम व्रत पालन करने का मार्ग।

संख्या ८३ बी. पुष्टिदृढ़ावनी वार्त्ता, रचयिता-हरिराइजी (? स्थान—गोकुल), कागज—बाँसी, पत्र—२६, आकार—८ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ वि० (१८५९ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री कृष्णाय नमः। अथ पुष्टिदृढ़ाव की वार्ता लिख्यते ॥ जाको पुष्टी अंगीकृत होइगो सो जानेगो ॥ जीव को उत्तम करनो ॥ उत्तम भक्त की संगति माननो ॥ और वाके कहे को विस्तार राखनो ॥ जब विश्वास राषनो तब विश्वास उपजे तब जानिए के श्री जी ने कृपा करी ॥ अपनो कियो ॥ उत्तम भगत की संगति ते श्री जी प्रसन्न होइ ॥ आपनो आनन्द देही ॥ तब स्वरुपनिष्ठा उपजे ॥

अंत—दोऊ भले बैष्णव भए। ताते वैष्णव ही को दृढ़ भरोसो राखनो सत्य बोलनो तादृशी वैष्णव सो सतसंग करनो ॥ चित कोमल राखनो प्राणी मात्र ऊपर दया राखनी ॥ श्री आचार्य जी श्री नाथ जी श्री गुसाईं जी एक रूप हैं यामें सन्देह कदाचित नाईं हे है असमर्पित लेनो ॥ अन्याश्रयन करनो ॥ इति श्री पुष्ट दृढ़ समाप्तम् संवत् १९१६ मिती ज्येष्ठ सुदि १ प्रतिपदा गुरौ लिपि कृतं रंगीलदास ॥

विषय—पुष्टि मार्ग के सिद्धान्तों पर किस प्रकार विश्वास रखना चाहिए, यह विस्तारपूर्वक बताया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रन्थ गद्य में है। इसका रचयिता स्थानीय वैष्णवों तथा ग्रन्थ स्वामी ने आचार्य्य हरिराय को बतलाया है जो सत्य प्रतीत होता है। इन्होंने इसी विषय के और भी कई गद्य के ग्रन्थ लिखे हैं जो प्राप्त होते हैं। इसे पढ़कर इसाइयों का स्मरण होता है। जब कोई बपतिस्मा लेकर ईसाई बन जाता है तो कुछ काल आचरण और विश्वास की दृढ़ता को लक्ष्य में रखकर दृढ़ी करण संस्कार किया जाता है। इसी प्रकार जो वल्लभ कुल में दीक्षित होता है उसके दृढ़ विश्वास के नियम इस ग्रंथ में वर्णित हैं।

संख्या ८३ सी. पुष्टिप्रवाह मर्य्यादा, रचयिता—श्री हरिराय, कागज—देशी, पत्र—५४, आकार—८ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प्रेमबिहारी जी का मंदिर, प्रेमसरोवर, डाकघर—बरसाना, जि० मथुरा।

आदि—श्री मदाचार्य भावेन चरण रेणु महा शुभं। विकृतै पुष्टि प्रवाह मर्यादा भेद विचित्रतां। क्रिया देह तथा जीव प्रवाह लक्षणं। अब कहत हैं ॥ जो श्री आचार्य्य जी के चरण कमल की रेणु है सो में भाव सहित अपने मस्तक पर धरत हो। सो भाव सहित क्यों कहे जो जहाँ ताईं भावन होय तहाँ ताईं भावन होय।

अंत—सो यह पुष्टि प्रवाह मर्यादाग्रंथ सुनिके सब अन्याश्रयते निवर्त्त होयगे। अपने पुष्टिमार्ग में प्रवृत होंयगे। ताते पुष्टि प्रवाह मर्यादा ग्रन्थ कह्यो है। श्रीवल्लभाचार्य्य रचित पुष्टि प्रवाह मर्यादा की टीका श्री हरिराय जी कृत भाषा में सम्पूर्ण।

विषय—वल्लभ कुल सम्प्रदाय के उपदेशों एवं सिद्धान्तों का वर्णन है।

संख्या ८३ डी. सेवाविधि, रचयिता—हरिराय (स्थान—गोकुल), कागज—मूँजी, पत्र७६, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६४ वि० (१८०७ ई०), प्राप्तिस्थान - बोहरे जमना प्रसाद जी, स्थान—भदौरा, डाकघर—माट, मथुरा।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः॥ अथ सेवा श्री विधि श्री वल्लभाचार्य जी महाप्रभु के मार्ग की लिखि है। × × × श्लोक अथ पुष्टिमार्गीय सेवा को प्रकार लिखत है। यहि दिना सेवा की चिंता राखिके दूसरे दिना प्रातःकाल सेवा के लिये उठनो प्रथम कंठ की माला सम्हालनी। पाछे श्री प्रभुजी को नाम लेनो पाछे श्री आचार्य्य जी महाप्रभु को नाम लेनो तदनन्तर अपने निज गुरुन को नामदेके दंडोत करनो॥ पाछे देह कृति करि हाथ पाव शुद्धि करि दंत धावन करनो॥

अंत—भाद्रपद बदी ७॥ लाल पिछोड़ा लाल पाग लाल साड़ी भीतर दोउ वस्त्र केसरी श्री बालकृष्ण जी सवन कों वैसई वस्त्र धरावने। यह सेवा की विधि लिखी श्री गुसाईं जी के पुष्टि मार्गीय की सेवा विधि सम्पूर्ण समाप्तः संवत् १८६४ मिती पौसबदी २ बुध वार।

विषय—इसमें वैष्णव धर्म्म के पुष्टि मार्ग के सिद्धान्तों के अनुसार गोकुलनाथ जी की सेवा की सम्पूर्ण विधि श्रृंगार, भोग, शयन, आरती आदि वर्णित है। गोकुल के प्रसिद्ध मंदिर गोकुलनाथ जी की सेवा इसी विधि से आज तक की जाती है। पश्चात् सालभरके उत्सवों को किस प्रकार मानना चाहिए, यह भी सविस्तृत वर्णित है।

संख्या ८३ ई. वर्षोत्सव की भावना, रचयिता—श्री हरिराय जी, कागज—स्यालकोटी, पत्र—६०, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डूंगर सिंह जाट, स्थान—तँतरोटा, डाकघर—बल्देव, जि०—मथुरा।

आदि—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः॥ अथ वर्षोत्सव की भावना लिष्यते। श्री जन्माष्टमी उत्सब की रीत लिष्यते। भादों वदी ७॥ सप्तमी कों पाग पिछोरा कसूंभल धरीए॥ सो याते जो अनुराग सूचन है। जनम के पहिले ही तथा सप्तमी को श्रृंगार॥ अष्टमी के मंगलाताई रहे। सोक सूँ भल सुभ को सूचक है।

अंत—राग सारंग। राषी बांधत लाल विहारी। अति सुरंग विचित्र नाना रंग, ललना सु हाथ सवारी। जैसी प्रेमप्रवाह बिहारी न ललिता ले सनकारी। कुन्दन सहित जगमगे बांधत, जाइ के प्रीतम प्यारी। अति अनुराग परस्पर दोऊ जन रहे विहारिन हारी। कृष्णदास दम्पति छवि निरषत, अपनो तनमन वारी। इति श्री वर्ष उत्सव की भावना श्री हरिराय जी कृत।

विषय—जन्माष्टमी से लेकर वर्ष के जितने भी त्योहार होते हैं, उन सबका समारोह वैष्णव धर्म के अनुसार वर्णित है। बीच में अवसर के पद भी दिए गए हैं।

संख्या ८३ यफ. वसन्त होरी की भावना, रचयिता—हरिराय जी, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ वि० (१८४५ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० नत्थीलाल गोसाईं, स्थान व डाकघर—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—श्री गोवर्द्धनोद्धरण धीराय नमः। अब प्रथम बसन्त पंचमी के दिन काम को जन्म भयो है ताते तहाँ कामदेव आपुस में परम मित्रता है। तहाँ कामदेव प्रथम मोहिवे को जात है। तहां प्रथम वसन्त ऋतु को प्रकास करत हैं ताते वसन्त पंचमी तें खेल द्वारा काम को प्रगट्यो।

अंत—लौकिक जोगिनी अग्नि उवारत है भयानक रुप हास्य रुप सक अलौकिक जोगिनी दोऊ स्वरूप कूंजन में क्रीड़ा करें तामें प्रतिबन्ध रुप मर्यादा गोप गुरु जन को भयानक अग्निरुप दिखाइ रस को गोपन करावत है। इत्यादिक रास में मसालरुप हैं अनेक भावना के प्रकार हैं। इति श्री हरिराय जी कृत भावना। सं० १९०२।

विषय—वल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के अनुसार गोकुलनाथ की पूजा-अर्चना किस प्रकार करनी चाहिए एवं होरी-बसन्त आदि का उत्सव किस प्रकार मनाना चाहिए तथा किस क्रिया से सेवक को रहना चाहिए, इसका रोचक वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ व्रजभाषा गद्य में है अतएव उपयोगी है। ऐसा प्रतीत होता है कि वैष्णवों में जितने गद्य ग्रन्थ हरिराय जी ने लिखे हैं उतने शायद ही किसी ने लिखे हों। प्राचीन व्रजभाषा अथवा हिन्दी में गद्य ग्रंथों का एक प्रकार का अभाव बतलाया जाता है। खोज में इन ग्रंथों के आने से एक कमी की पूर्ति हो रही है। ग्रंथ काफी बड़ा है।

संख्या ८३ जी. भावभावना, रचयिता—हरिराय जी (स्थान—गोकुल), कागज—देशी, पत्र—१७४, आकार—१५ × ९ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७८६, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल।

आदि—अथ श्री हरिराय जी कृत भाव भावना लिख्यते। सो पुष्टि मार्ग में जितनी क्रिया हैं। सो सब स्वामिनी जी के भावते हैं। ताते मंगलाचरण गावें। प्रथम श्री स्वामिनी जी के चरण कमल कों नमस्कार करत हैं। तिनकी उपमा देवेकों मन दसो दिसा दोऱ्यो॥ परन्तु कहूँ पायो नहीं। पाछे श्री स्वामिनी जी के चरण कमल को आश्रय कीयो है। तब उपमा देवे कूँ हृदय में स्फूर्ति भई। जेसे श्रीठाकुर जी कों अधर बिम्ब आरक्त है रसरूप। तेसेई श्री स्वामिनी जी के चरण आरक्त है। सो ताते श्री स्वामिनी जी के चरण कमल को नमस्कार करत हैं। तिनमें अनवट विछुआ नुपुर आदि आभूषण है।

अंत—तव श्री यसोदा जी श्रीदामा आदि सखानकों सोंपि देत हैं। सो तब श्री ठाकुर जी द्वार पर पधारिकें अनेक भक्तन कों दरसन देत हैं। काहू को वीरी देत हैं। काहू को फूलन की माला देत हैं। काहू को बानी सों समाधान करत हैं। इतने व्रजभक्तन के भाव सो मिल्यो सो ग्वाल आइके श्री ठाकुर जी सों प्रार्थना करत हैं। × × ×

विषय—१—राधा जी के चरण चिन्हों की भावना मूल संस्कृत में गोकुलनाथ जी की मिली है, हरिराय जी ने उसकी भाषा की है। २—नित्य की सेवा संबंधी भावनाएँ जिनसे भगवत् पूजन एवं आराधना वल्लभ सम्प्रदाय में होती है, पृष्ठ १ से–३६ तक। ३—वर्षोत्सवों की वह भावनाएँ जिनके द्वारा भगवान की पूजा, अर्चा विभिन्न त्योहारों तथा तिथियों को होती है। भाद्रवदी सप्तमी अष्टमी, राधाष्टमी, दान एकादशी, वामन द्वादशी, वामनोत्सव, साँझभावना, भादो १५ से १५ दिन ताई साँझी, नवरात्रि, विजय दशमी, शरदपूर्णिमा, धनतेरस, रूपचौदस, दीपमालिका, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट का भाव, गोपाष्टमी, अक्षयनौमी, देवप्रबोधिनी, गोसाईं जी का उत्सव, बसन्त होरी की भावना, ३७–११६। डोल उत्सव की भावना, पाटकी भावना, फूल मंडली, राम नौमी, यह प्रभूजी का उत्सव, १२०-१३१। छप्पन भोग की रीति, अक्षय तृतीया, नरसिंह चौदसि, यमुना जी का उत्सव, गंगा जी का भाव, स्नान यात्रा, देव सयनी का भाव, डिडोरा की भावना, पवित्रा एकादशी, उसकी भावना, रक्षाबन्धन की भावना, ग्रहण का भाव, १३२–१५१। ४—सातों स्वरूप की भावना—नवनीत प्रिया, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारिकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा, मदनमोहन के स्वरूप की भावना, पंजीरी तथा सामग्री का भाव, षट् ऋतुवर्णन, १५२–१६७। ५—सामग्री करने की विधिः—पंजीरी, बूंदी, घेवर, बावा, जलेबी, गूझा, मेवा, बाटी, पावड़ी, फेनी, सखोरी, दही बड़ा, खीरवड़ा, चन्द्रकला, उपरेठा, मनोहरके लडुवा, इन्दरसा, पूवा, सिखरन वड़ी, देह बड़ी, मालपुआ, तवापूरी, तिलगुड़ चकुली, तिलसांकरी, तिलवड़ी, मनका खीर, हुलास के लडुवा धाँयके लुचई, दूधपूरी, साठा मठरी, बरफी, कढ़ी, मेथीकूँठ इत्यादि।

संख्या ८४. मिताक्षरा अथवा व्यवहार चन्द्रिका, रचयिता—हरिश्चन्द्र, कागज—मूँजी, पत्र—८४, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४८, खंडित, रूप—प्राचीन, बंधा हुआ; गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१६२८ वि० (सन् १८७१ ई०), प्राप्तिस्थान—स्कूल लायब्रेरी, चम्पाअग्रवाल हाईस्कूल, मथुरा।

आदि—× × × तहाँ कात्यायन जी ने ब्राह्मण और सभासदों का स्पष्ट भेद कहा है तिनका वाक्य यह है। स प्राड् विवाकः सामान्यः स ब्राह्मण पुरोहितः स सभ्यः प्रेक्षको राजा स्वर्गे तिष्ठति धर्म्मतः॥ सो ब्राह्मण तो नियुक्त होता है। और सभासद अभियुक्त होते हैं। सो नियुक्तों का तो काम यह हैं। कि राजा को धर्म सुनावै। और राजा धर्म्म को सुनि के उसकी राह में न चले तो राजा को वरजै। और जो न वरजै तो दोष होता है।

अंत—व्याख्या। कि जिन साक्षियों के रुबरु दिया होय उन्हीं के सन्मुख दे देय। ओर जो वे गवाह न हौय तो दूसरे साक्षियौं के सन्मुख देय। यही सब लिखितौ की रीति हौं। इति श्री हरिश्चन्द्र कृत व्यवहार चन्द्रिकायां लेख्य प्रकरणं समाप्तम्॥ लिखतं दयाकृष्ण ब्राह्मण श्री मथुरा जी स्थले गऊघाटपै॥ संवत् १९२८ आसाढ़मासे एकादस्या।

विषय—इसका विषय न्याय से संबंध रखता है। हारीतक, कात्यायन, आदि

ऋषियों के दिए हुए प्रमाणों पर विस्तृत व्याख्या की गई है । गौतम, नारद, प्रभृति स्मृतियों की बहुत सी बातों का समावेश है ।

संख्या ८५ ए. पाण्डव गीता की टीका, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—१० x ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९३२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० सभाराम जी शर्मा, स्थान—विरथुआ, डाकघर—बरनाहल, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री रामानुजाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ पाँडव उवाच ॥ प्रह्लाद नारद पराशर पुंडरीक व्यासां वरीक शुक शौनक भीष्म काद्याः । रुक्मांगदार्जुन वसिष्ट विभीषणाद्या नेतानहं परम भ.गवतांनमामि ॥ टीका ॥ पाण्डव कहत भये ॥ प्रह्लाद नारद परासर पुंडरीक व्यास अंवरीक शुकदेव ॥ शौनक भीष्म इनकूं आदि दे ॥ रुक्मांगद अर्जुन वसिष्ट विभीषण इनकूं आदि दे इतने परम भगवान के भक्त कूँ नमस्कार करत हूँ ॥ १ ॥ ॥ लोम हर्षण उवाच ॥ धर्मों विवर्द्धिति युधिष्ठिर कीर्तनेन पापं प्रणस्यति वृकोदर कीर्त्तनेन । शत्रुर्विनश्यति धनंजय कीर्तनेन, माद्री सुतो कथयतां न भवंति रोगाः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ लोम हर्षण जी ने ऐसैं कह्यो ॥ जे युधिष्ठिर की कथा कहैं तिनिकों धर्म की वृद्धि होय ॥ जे भीमसेन की कथा कहे तिनके पापको नास होये ॥ जो अर्जुन की कथा कहें तिनके शत्रुको नाश होये ॥ जे नकुल सहदेव की कथा कहें तिनकुं रोग न होये ॥ २ ॥

अंत— शौनक उवाच ॥ भोजने छाजने चिंता वृथा कुर्वीति वैष्णवाः ॥ यो सौ विश्वंभरो देवा किं भक्तनुपेक्षते ॥ ९३ ॥ शौनक कहत भये ॥ विष्णु भक्त जो पुरुष हैं तो वे अन्न वस्त्र की चिंताव्यर्थ करत हैं ॥ जिनको विश्वंभर नाम कहियें ॥ संसार को पालों ऐसो जे देव भगवान तुवे अपने देंगे ॥ ९३ ॥ इति श्री पांडवी गीता हरिवंश की टीका भाषा सम्पूर्ण ॥ संवत १९३२ वर्षे भाद्रवासुद ॥ १० ॥ भाईली ग्राम बड़ोदाराप्रगणे यथा प्रत्य तथा लिषितं ॥ वैष्णव मंगलदास मीठा भाईनो ॥ भणे सुणेतीमने जय श्री राम राम हे ॥ श्रीकृष्ण ॥

विषय—पाण्डव गीता की टीका ।

संख्या ८५ बी. रामचन्द्रवनवास, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ x ४१/२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० बाबू रामजी शर्मा, स्थान—वीरई, डाकघर—उरावर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री रामजी सहाई ॥ श्री रामचन्द्र वनोवास के दोहरा लिष्यते ॥ अंचरी वोलति कैकई सो, वरनौ आज ही तुमसों सुनि आई । होतु है राम को राजु, महीपत आनंद भूअ में छबि छाई ॥ गुरु आए है, देव सुरपति से, जिन सहित सुये विचार वताई । हरिवंश कही, लगी बुधि तथा, सो थारु सँजोवति कौसिल्या माई ॥ १ ॥ जुआवु केकई को ॥ जाकों कहावहि कैं वरनों, नृपराय सुता, वे तो चारों हैं भाई । राम लछि औरु भरत महावन, इंद्र कृपा करि जोति सवाई । काहुने राजकरौ मथुलापुर को,

कोटि कीरति की रघुवंस बड़ाई ॥ हरिवंस कही, लगी बुधि तथा, सो कैकइ ने अँचरी समुझाई ॥ २ ॥

अंत—जुआबु केकई कौ । इतनी सुनि कैकई कंठ रामुरी दुरबुधि विद्यासों महाछवि छाई । मेरे चरत भर्त घरेना भाई, तब हीं नृप राज भली ठहराई ॥ दीजी कों राम को राजु जबै मुहे दैन कहो सो दीयौ राई । हरिवंस कहाँ लगि बुद्धि तथा सो कैकई कोप परीति सुहाई ॥ ६ ॥ कैकई क्रूर कुमति की औ, जस कौं तपि औजस कौं मन कीनों । वर माँगति विव ताहि सों निपराज गिरौधरि मूरछ साथ विहूनो ॥ सुच केस गिरो रघुनाइक, जरि गामिनी पिरानहू तजि दीनों । हरिवंश कही लघु बुद्धि तथा, भनुझांत सीता वनौ वासो दीनौं ॥ ७ ॥ × × ×

विषय—रामवनोवास वर्णन ।

संख्या ८६. पद विलासनिकुंज, रचयिता—हरिव्यास देव, कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित चतुर्भुज पुरोहित, स्थान व डाकघर—नन्दग्राम, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ विलास निकुंज रहस्य श्री महादिव्य महाराजेश्वर प्रवर परमहंस वंशाचार्य्य श्री मद्धरि व्यासदेव कृत महावाणी पंच रत्न लिख्यते ॥ दोहा जय जय श्री हितु सहचरी, भरी प्रेम रस रंग । प्यारी प्रीतम के सदा रहति जु अनुदिन अंग । अष्ट काल वरनन करौं, तिनकी कृपा बनाय । महाबानी सेवा जु सुख, अनुक्रम ते दर्शाय ।

अंत—विचित्र शोभा में चारि, एक कन्दर्प कामा में । खंजनाक्षी षट कहे, षटहु सुन्दर सुष्ठामें । चौरासी पद इहि प्रकार, सेवा सुख लहिये । पन्द्रह अनुरागिनि में सम्पूरन सहिये ।

विषय—राधा कृष्ण का प्रेम ।

संख्या ८७ ए. आदिनाथ स्तोत्र, रचयिता—हेमराज, कागज—स्यालकोटी, पत्र—४२, आकार—५ × ३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४, खंडित, रूप—नवीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर, स्थान—कठवारी, डाकघर—अछनेरा, आगरा ।

आदि— × × × यं सस्तुतः सकल वाङ्मयं तत्व बोधा, दुद्भूत बुद्धि पटुभिस्सुर लोक नाथैः स्तोत्रे जंगत्रितय चित्त हरे रुदारैः स्तोष्ये किलाहम पितं प्रथमं जिनेन्द्रे आदि पुरुष आदि सजन, आदि बुद्धि करतार । धर्म्म धुरंधर परम गुरु, नमो आदि अवतार ॥ चौपाई सुरनत मुकुट रतन छवि करैं । अन्तर पाप तिमिर सब हरैं । जिनपद बन्दौ मन वच काय । भव जल पतित उधारण सहाय ।

अंत—इह गुण माल विशाल नाथ तुम गुण निसि भारी । विविध भाँति के पुष्प गूँथि मैं भक्ति विथारी । जे नर पहरै कंठ पीठि भावना मन माहिं भावै । मान तुंग ते

निजाधीन शिव लक्ष्मी पावैं। भाषा भक्ता मर किया, हेमराज हितहेत। जे नर पढ़ै सुभाव सों, ते पावै शिव खेत।

विषय — जिनेंद्रदेव की स्तुति।

संख्या ८७ बी. कर्मकाण्ड, रचयिता-टीकाकार-पं० हेमराज, कागज—देशी, पत्र—७७, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्) — २१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान – श्री सुखचन्द्रजी जैन साधु, स्थान—नहटौली, डाकघर—चन्द्रपुर, जि० आगरा।

आदि — ॐ नमः परमात्मने नमः ॥ ६० ॥ पणमिय सिर माणेमिं ॥ गुण रयण विहसणं महावीर ॥ सम्मसरयण निलयं ॥ पयडिसमुक्कित्तणं चोछं ॥ १ ॥ अहं नेमिचंद्राचार्यः ॥ प्रकृति समुकीर्तनं लक्ष्ये अहं हूं जहाँ नेमिचंद्र ऐसे नाम आचार्य सो प्रकृति समुत्कीर्तनं ॥ प्रकृति हूँ काहैं सनुत्कीर्तन कथन जिस विषै ऐसा जु ग्रंथ कर्मकांड नाम ॥ तिसहि वक्ष्ये कहूँगा ॥ नि कृत्वा ॥ कहाकरि ॥ सिरसा नेमि प्रणम्य ॥ सिर करि श्री नेमिनाथ कौं नमस्कार करिकै ॥ कै सोहे नेमिनाथ गुण रत्न विभूषणं ॥ अनंत ज्ञानादिक जुगुण तेई हुए रत्न ॥ तेई है विभूषण आभरण जिसके ॥ बहुरि कैसे हैं ॥ महावीर महा सुभट हैं कर्म के नास करणे कों ॥ बहुरि कैसे हैं ॥ सम्यक्तक रत्न निलयं सम्यक्त रूप जो हैं रत्न तिसके निलय स्थानक हैं ॥ इस गाथामा है ॥ महावीर कों भी नमस्कार जाणना ॥ जिस पक्ष महावीर कों नमस्कार करिऐ तिस पक्षनेमि यह पद विशेषण जाणना ॥ और इस गाथा मैं ग्रंथकर्ता श्री नेमिचंद्र सिद्धांती कौं नमस्कार है। मेम इस पद करि ॥ जो कोई पूछै कि नेमिचंद्र तौ इस ग्रंथ के कर्ता ही हैं। ते आपको नमस्कार क्यों करेंगे। तिसको उत्तर ॥ जे इस कर्मकांड को पढ़णवाले पुरुष हैं। ते नमस्कार करे हैं यातैं नेमचंद्र सिद्धांती कौं भी नमस्कार जाणना।

अंत — इस अनादि अनंत संसार विषैं ··· नादि मोह संतान वसतैं ॥ रागद्वेषादिक ······णाम करै हैं ॥ तिस रागद्वेषादि पर ······सतै ॥ समय समय सातं आठ कर्म्मकांड लिख्यति ॥ अनुभाग की जघन्यताकरि···अरु जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक आदि क्रिया विषैं प्रवर्त्तै ॥ तब जैसी कुछ···ध्यम जघन्य भान्डा भान्डा क्रियाहारे॥ तिस माफिक कर्म हुँ का बंध करै ॥ स्थिति······की विशेषता करि तिसतै ··य समय बंध जु करैं सुतो स्थिति भाग की हीनता ·····जु प्रत्यावीक आदिक······क्रिया करि करै ॥ सु स्थिति अनुभाग की विशे···सिद्धान्त जाणता ॥ इयं···टीका पंडित हेम राजेन कृता ॥ स्व बुद्धयानुसारेण···कांड टीका संपूर्ण ॥ शु···भूयात् ॥ लिपितं तिवारी भोलानाथ जी ॥

विषय — प्रकृति का विस्तृत वर्णन। कर्मों के भेदादि कथन। जीव के दर्शनादि गुण, स्यात् नास्ति स्यात् कथं चित्प्रकाशसप्त प्रभंजी काणी का व्याख्यान। प्रकृति के भेद, अर्थ भेद और उनमें से प्रत्येक के स्वरूप का वर्णन। षट संहनन और उनके स्वरूप का वर्णन। आतप उद्योग का स्वरूप। थावर दशक वर्णन कषाय वर्णन। जीवों के प्रति धर्म। अंतराय कर्म के कारणादि का वर्णन।

संख्या ८८. मदनसुधाकर, रचयिता—हीरालाल, कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१० × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-१३, परिमाण (अनुष्टुप्)-१२४८, खण्डित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, प्राप्तिस्थान—पं० उमराव सिंह जी, स्थान—खेरिया, डाकघर—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी ।

आदि— × × × अथ नाडी परीक्षा ॥ कर अंगुष्ठ के मूल थित, धमनी जीवन सार । दुख सुख बरनै जीवकी, जस कवि मति उजियार ॥ बात पित्त कफ त्रिगुण सम, घट विकार गति दोय । नाग जलौका पवन गति, भेक पित्तला तोय ॥ मुरगा मोर कपोत कफ, मिलि मिश्रित गुनकेर । सन्निपात के दोषते, तित्तर भृंग बटेर ॥ ज्वर चंचल मति सुष्णता, रस चंचल गुरताप । क्षुधा चपल धमनी चलै, थिरा तृप्ति लखि जाय ॥ सुखी दीप्त बलवत सदा, उष्ण रक्त पित जान । अग्नि धातु प्रति मंदता, आंउ गभीर बखान ॥ महा मन्दिता वेग अति, उभय दोष मृत दीस । क्षोण दाह ज्वर विकल मति, मृतक याम चौबीस ॥

अंत—अथ विजैभैरव तैल ॥ पारद गंधक ताल मैनसिल पेखिये । दधि के सुजल विसाय वस्त्र सो लेखिये ॥ घृत युक्त क्रिमि-तैल अधोमुख जारिये । परि हां हां जी अयो वसन तल धरै सकल गदहारिये ॥ दोहा ॥ त्रिगुन तैल वा तैलतें, स्याम तिलन को धीर । जंघ बाहु कटि गृध्रसी, मर्दन हरत समीर ॥ अथ वार्तिक विधि ॥ वस्त्र को पहिले मंदार के दूध सों भिजोइ लेना पुट तीन फिर सेहुंड़ के दूध सों भिजोई लेना पुट तीन तैल लेने को होय तो रेंडीका तेल लेना ॥ अथ रेंडी पाक ॥ सवैया ॥ रेंड के बीज लिये पल षोड़ष क्षीर अठीगुन माह पचावे । × × ×

विषय—नाड़ी आदि परीक्षाएँ, परिभाषाएँ, वातादि लक्षण, औषधि जाँच, ज्वरादि-लक्षण, चौरासी रोगकथन, चिकित्सा, रस, तैल, पाक, गुटका, चुर्ण व शर्वतादि के बनाने के नियम तथा अनेक नुसखों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के आदि का एक पन्ना और कुछ अंत के पन्ने लुप्त हो गये हैं । यह वैद्यक संबंधी ग्रंथ कुंजों (अध्यायों) में है । प्रस्तुत ग्रंथ में सात कुंज है । आठवें कुंज के थोड़े से पत्रे हैं । प्रत्येक कुंज के अंत में—"इति श्री रामप्रसादात्मज हीरालाल विरचिते मदन सुधाकरे प्रथमो कुंजः आदि इस प्रकार लिखा गया है । इससे ही ग्रंथ एवम् ग्रंथकार का पता चलता है । ग्रंथ प्रायः पद्य में है । कहीं कहीं आवश्यकतानुसार कुछ वर्णन वार्तिक में भी कर दिया गया है । इसमें प्रायः उपयोगी विषयों का समावेश हुआ है ।

संख्या ८९. धर्म संवाद (धर्म समाधि), रचयिता—स्वामी हृदयदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार— ७ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल —सं० १९०८ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री पं० शिव कुमार जी, अर्जीनवीस, स्थान व डाकघर—बाह, जि० आगरा ।

आदि—षोमै ॥ तुरसी कौ हीराडारी जवै काठ मै पोमै ॥ वह तुरसी वह काठ है ॥ वाकौ अंग मिलै हत नांही ॥ सत्य वचन हौं कहूँ भीमजो । चींडाल वेई नल जानी ॥ कहै गुण धर्म जी ॥ २२ ॥ साह बौहरे ठगै कुटम अपने कूँ पाटैं । घर मै धरै जमाय ॥ द्वार वाके

नहीं डारै ॥ री नहत्या सिर पै रही ॥ वचन गयौ है खाय ॥ सत्य वचन हूँ कहूँ भीम जी ॥ चंडाल वेई नल जानी ॥ कहत गुण धर्म जी ॥ २३ ॥ वहवे क्यौ मुरझांय ॥ यानै मुसुंक है सीकीनी ॥ घर बाहर की जोरि जीवका बांकू दीनी ॥ वह जानै दूने भये ॥ एक मिल्यौ इत नाहीं ॥ सत्य वचन कहूँ भीम जी ॥ चिंडार वेई नल जानी ॥ कहैं गुण धर्मजी ॥२४॥

अंत—जो गुरु आमैं ग्रेह बैठि चिरनामृत लीजै सेवा विनती कीजियै भाव प्रीति कहेत ॥ सत के वचन मैं कहूँ पाँऊँ गुरु गोविंद दोऊ—एक कहे गुन धरम जी ॥ ६५ ॥ धर्म समाद के वचन सुनत पाप नियरै नहिं आवैं। धर्म समाद सुनै सीषैं और गावैं ॥ नर लोक नहिं जाय पांडौ जस प्रघट भयौ। स्वामी हृदय दास बलि जाय, कहै गुण धर्म जी ॥ ६६ ॥ इति श्री धर्म समाधि संपूरणम् : समाप्तं : मिती फागुन सुदी ८ सनिवासरे लिषितं मिसुर जी सालिग्राम पठनारथ लाला रामनरायन जी : संवत् १९०८ राम—राम राम—राम—राम—राम।

विषय—धर्म की वास्तविकता का वर्णन।

संख्या ९०. महामहोत्सव, रचयिता—ईस कवि, स्थान—गोकुल, कागज—बाँसी, पत्र—२२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८७९ (१८२२ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर याज्ञिक, मु० व डाकघर—गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ महामहोत्सव बरनन लिख्यैते ॥ मोहिनी छन्द ॥ कमल चरन श्री वल्लभ सीस नवाय। ईसु सुकवि कह वन्दत धरि दृढ़भाय ॥ नंद नन्दन के पद जुगतिहिं धरि ध्यान। भजहु निरन्तर नित प्रति करि कल्यान ॥

अंत—अगहन सुदि तेरस गुरु लीला पूरित कीन। संवत कुण्डलिया कह्यो, समुझै परम प्रवीन ॥ कुंडलिया ॥ निधि वारिधि सिधि ससि जहाँ संवत सुपद सलाग। अन्नकोट उत्सवरच्यो, श्री राऊ वड़ भाग ॥ श्री दाऊ बड़ भग्ग आघकरि सबन समाजे। सातो निधि नट सहित लाल गिरधर सुविराजें ॥ वल्लभ कुल कहँ ईस रहे कर जोर विवुध विधि। सम्पति सकल सकल दिपति द्रुति विधि सो नवनिधि ॥

विषय—(१) मंगलाचरण। (२) वल्लभकुल का वंश। (३) भोग श्रृंगारादि का वर्णन। (४) उत्सव आदि।

विशेष ज्ञातव्य—जन श्रुति से पता चला है कि यह कवि गोकुल का था। विवरण में इसका नाम नहीं है। वल्लभ कुल सम्प्रदाय के यह अनुयायी था जैसा, कि मंगलाचरण आदि से प्रकट होता है। ग्रंथ में अन्नकूट आदि उत्सवों की विधि वर्णित है। रचनाकाल विक्रम सं० १८७९ है।

संख्या ९१ ए. गुणहरी रस, रचयिता—गढ़वी ईश्वरदास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—पं० सीताराम जी, डाकघर—शिकोहाबाद, मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री सुरसतीये नमः ।। श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ गुण हरी रस लिष्यते ।। गढ़वी ईसरदास जी रो कह्यो ।। १ ।। इहाः ॥ लागहुँ पहले लोभु लै, पीतंवर गुर पांयः । भेद महारस भागवत, स्रवगन दियौ सुणायः ॥ १ ॥ जाङ्ट वैंमंन क्रंम गलेः, नरमल थापे देहः । भाग होये तो भागवत, सामल जे अबणेह ॥ २ ॥ भगत वछल मोदे भगतः, भांजे सहो भ्रमंः । मुड्डु तण क्रम मेटया, कथी स तुहांरा क्रंमः ॥ ३ ॥ पीठ घरण पुर पाटली, हैर थया चीत रणहारः । तो ही तोरां चीरतां भणो प्रमंनं लभुं पारः ।। ४ ।। तोरा हू युरातवे कांके मन्मथः, चुत्रभुज सही थाराचीरतः नगमनं जणु-नथः ।। ५ ॥ कथुं केम ईसर कहेः, षड़े सकल प्रथी वेदः ॥ वांणी सामल मन वसी, न तूं अगोचर वेस ॥ ६ ॥

अंत—छंद मोती दांमंः ॥ ब्रह्मा रुद्र विचारः ब्रह्मं न जाणे तोरावारन गंभंः ।। प्रमे सुर तोरो पार प्रलोपः ।। कुरांण पुरांणं न जाणे कोय ।। ८१ ॥ अदोष ज अपर तुरु अभैवः ॥ दनं कर सध्नंनं जाणे देवः ।। ८२ ॥ चणे गुणं तद्गुनं जाणे तंतः अमादस वदनं जाणे श्रंतः ॥ ८३ ॥ त्रड़ा तंत तुऊल हेनं विचारः ॥ पुरंदर तुझन पावेंपारः ।। ८४ ॥ भलामुनं तुझ वूझे भेदः ॥ विचित्र तु न जाणे वेदः ।। ८५ ।। दामोदर तुझ दीसे दगपालः ॥ के तापेक पारमं जाणेकालः ।। ८६ ।। अंममंतुपारः अगंमं अलेषः ।। लषमीं तुझ न जाणे लेषः ॥ ८७ ॥ महातंतं मुलनं बुझे माहः ॥ कीयो तूं कैनः आयो तुंकहः ॥ ८८ ॥ × × ×

विषय—प्रभुके गुणानुवाद सहित कुछ विनय के पद ।

संख्या ९१ बी. गुणहरीरस, रचयिता—गढ़वी ईश्वरदास, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला निन्नू मल जी अर्जी नवीस, स्थान व डाकघर—शिकोहाबाद, मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ।। अथ श्री गुणहरी रस लिष्यते ।। गढ़वी ईसरदास जी रो कह्यो ॥ १ ॥ दोहा ॥ लागहुँ पहलें भले, पीतम्वर गुरु पांय । भेद महारस भागवत, श्रवणन दियो सुणाय ॥ १ ॥ जाड़ टलें मन क्रम गए, निरमल थापे देह । भाग होय तो भागवत, सामल जे आवणेह ।। २ ।। भगत वछल मोदे भगत, भांने साहो भ्रंम । मुझ तण क्रम मेटवाः, कथीस तुम्हारा क्रम ॥ ३ ॥ पीठ घरण पुर पाटली, हरथयाची तरंणहार । तोहि तो रांची एताँ भणें, प्रमन लाभूं पार ॥ ४ ।। तो रालूं पुरात वेः स कांके मन मथः । चतुर्भुज सहि थारा चरित नगमनं जाणूं नथः ॥ ५ ॥ कछु केम ईसर कहै, पढ़े सकल प्रथिवेद । वाणी सांमल मन वसी, नं तु आगोचरनेस ॥ ६ ।।

अंत—अजपा तोरा स्रव आधीसः ॥ अजपा तोरा आतम ईस ।। गाजे ग्रहे माझुल वैठो गज ।। पूजारा पाँच चढ़ातै पूज ॥ सबां ते तंम हमाते सव ॥ उपजे जिमि उकासे अव ॥ अहेहर तुही आपौ आप ॥ वूझूं तो तौ भेवी हुंनाप ॥ दीठो तोहि···बूझूं देव ॥ अंत तो हाला कोय अभेव ॥ जाणूं तोहि तुझ न जाणूं जाण ॥ सो विसंनं तो हरलाला-षविदांण ।। लषूं तोहि तुझ न लषु लषः ।। नवे षंडमांह देषावे नषः ।। मकुंद लहे कूंण तौरा

मरम ।। अंणू मे दाष व कोट अलंक ।। गुणों मे ष्यात मो सारे मतः । ······दनं जौणु तोरीगतः ।। ······

विषय—भगवान के गुणों के सहित उनकी महिमा का वर्णन तथा आत्मज्ञान और भक्ति के उपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मारवाड़ी हिन्दी में रचा हुआ है । इसके रचयिता गढ़वी ईसर दास किन्हीं पीताम्बर दास को अपना गुरु बतलाते हैं । ग्रंथारंभ में इन्होंने उन्हीं की वन्दना की है । मारवाड़ी बोली के अनुसार साहित्यिक हिन्दी के अनेक शब्दों का स्वरूप बदल गया है । 'न' कार के स्थान पर 'ण' कार का प्रयोग तो साधारण सी बात है । इसके अतिरिक्त वीदांण (विद्वान), कुणं (कौन), म्रमः (मरम), प्रमेसुर (परमेश्वर), घणां (घना = बहुत), त्रभवंनं सामी (त्रिभुवन स्वामी,) एवम् चुत्रभुज (चतुर्भुज) आदि अनेक शब्द मारवाड़ी हिन्दी के रूप में व्यवहृत हुए हैं । कहीं कहीं कुछ क्रियाएं तथा विभक्तियाँ भी ठेठ मारवाड़ी की प्रयोग में आगई हैं । ग्रंथ बहुत जर्जर है और कहीं कहीं उसके अक्षर भी दीमक ने चाट लिए हैं । इसके अतिरिक्त वह कैथी लिपि में लिखा गया है । अतएव उसका पढ़ना कठिन हो गया है । ग्रंथ का विषय उत्तम है, किन्तु काव्य साधारण है ।

संख्या ९२ ए. मदन विनोद निर्घंटु, अनुवादक—ईश्वरीप्रसाद बोहरे (स्थान—धोलपुर), कागज—स्यालकोटी, पत्र—१२०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ (१८४९ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० नारायण, स्थान—हँसेला, डाकघर—अछनेरा, जि०—आगरा ।

आदि—अथ निघंट लिख्यते ॥ प्रथम हर्रनाम लिषते ॥ शिवा, हरीतकी, पथ्या, प्रपथा, विजया, जपा, चेतकी, प्रमथा, मोघा, कायस्था, प्रानदेनी, जीवनी, हेमवती, पूतन, प्रतन, अभया, वयस्था, नंदिनी, श्रेयसी, रोहिणी, हरिराया, चरस है । नौन कौ पटौ करवौ रुषौ चिरपिरौ स्वादिल, रसवन्त, आँषि कौ ज्योति करनी, पांसी, स्वांस, प्रमेह ववासीर को हरै ।

अंत—अथ षीरा ॥ त्रपुसं, कंट किलता, सुधावास, परंकटु, छर्दि, परणी पूत्र-फला तिक्ता, हस्तपर्णनी, मूत्रलसी रौ है । रुषो है ॥ पित्त, पथरी, मूत्रकृच्छ गरम पित्त कफ वाइ हरै ॥ इति श्री मदनपाल कृते मदन विनोद निघंटु कूष्माडादि सप्तमो वर्गं ॥ श्री ॥ लिषितं धौलपुर शुभस्थान नरसिंह जी के मंदिर मध्य ॥ ईश्वरी प्रसाद बोहरे पठनार्थं लाला माषन लाल ।। मिती श्रावण कृष्णा ।। ९ ॥ संवत् १९०६ ॥

विषय—निघंटु वैद्यक की समस्त ओषधियों का कोष है । इसमें प्रायः सभी जड़ी बूटियों के नाम तथा गुण वर्णित हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—उपर्युक्त मूलग्रन्थ संस्कृत में है जिसका मदन विनोद नाम है । उसका रचयिता मदनपाल हैं । उसीका भाषानुवाद यह ग्रंथ है । विवरण में मदनपाल को

ही हिन्दी अनुवाद का भी रचयिता मान लिया गया है जो भूल है। किसी अन्य व्यक्ति ने (संभवतः ईश्वरी प्रसाद बोहरे ने) मदनपाल निघंटु का भाषानुवाद किया है।

संख्या ९२ बी. वैद्य जीवन, अनुवादक—बोहरे ईश्वरी प्रसाद (स्थान-धौलपुर), कागज—स्यालकोटी, पत्र—५२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि०, १९०५ = सन् १८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० नारायण, स्थान—हँसेला, डाकघर—अछनेरा, आगरा।

आदि—श्री राधाकृष्णाय नमः ॥ सूरज के प्रसाद ते रोगी नींकौ होइ ॥ ताते सुन्दर वैद्यजीवन ग्रंथ करतौ ॥ तौ वी (?) ग्रंथ करत दुर्जननिते डरपतौ ॥ जाको चित्त इस्त्रिन में नहीं लग्यो ॥ और समाज में नहीं लग्यो सो उया ग्रन्थ कौ कहा जाने जैसे अंधो विस्वा (वेश्या) के श्रृंगार कौ कहा जानै ॥ और आजारी कुपढ़ वैद की औषदि कैसें छोड़े ॥ जैसे भले आदमी अपनी इस्त्री औ पराए पुरुस सौं देषि के छोड़े ॥

अंत—इस्त्री रत्नकला की बुद्धि ते लोलिम्बराज ने यह वैद जीवन ग्रन्थ कऱ्यो है। काएते कऱ्यो है चर्क की छायालैं के धन्वंतर के वचन कौ ॥ कैसे धन्वन्तरि मति के समुद्र हैं ॥ तिनके वचन करिके मैंने वैद्यजीवन कऱ्यो है ॥ कैसो है वैद्यजीवन राज सभा सिंगार है ॥ इति श्रीमद् ल्लोलम्बराज कृतै वैद्यजीवने पंचमो विलास ॥ ५ ॥ लिषितं बोहरे ईश्वरी प्रसाद पठनार्थ लाला माषनलाल चिरायरस्तु ॥ शुभंमस्तु ॥ मिती आषाढ़ कृष्णा ॥७॥ मंगलवार लिषी धालेपुर सुभस्थान नरसिंह जी के मंदिर में ॥ सं० १९०५(६)।

विषय - बड़े ही मनोरंजक ढंग से रोगों के निदान, लक्षण, ओषधि एवं पथ्य वर्णित है। वैद्यक और श्रृंगार का मधुर समिश्रण है।

विशेष ज्ञातव्य—मूल ग्रंथ संस्कृत में लोलिम्बराज कृत है। उसीका भाषानुवाद धौलपुर निवासी बोहरे (महाजन) ईश्वरीप्रसाद ने किया है। ग्रंथ की भाषा रोचक है। संस्कृत साहित्य में उक्त ग्रंथ पर्याप्त प्रसिद्ध है। लिपिकाल सं० १९०५ अथवा १९०६ है। पिछला अंक संदिग्ध है।

संख्या ९३. तिलसत, रचयिता—जगतनन्द, कागज—बाँसी, पत्र—५, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गोस्वामी श्री देवकीनन्दनाचार्य्य, पुस्तकालय कामवन, मथुरा।

आदि—अथ जगतनन्द कृत तिलसत लिष्यते ॥ दोहे ॥ गोरे मुष पर तिल लसत ताहि करों परनाम। मानो चन्द बिछाइकै, बैठ्यो सालिगराम ॥ छत्र तरोना लट चवर, गाल सिंघासन साज। सोहत तिल महराज जों, अंग देस रसराज ॥ बयो बीज सिंगार तिल, तिय कपोल छबिषेत। लखि समाँच अंकुर उठ्यो, पिय तन में किहि हेत ॥

अंत—तिल कपोल लष ऊनके, आन उक्त भई बाँझ। मेचक चकी किरच मनु, पुसी के कंचन माँझ ॥ गौर वदन तिल स्याम सो, दरस भकी मद जाइ। केसर में चिरमी गिरी,

जनु मुष तनक दिषाइ ॥ बाल दयाल विसाल छबि, तिल कपोल परताप। जगत कहत जनुकर दई, जगत विजय की छाप ॥ इति श्री जगत कृत तिलसत समाप्तं।

विषय--पृथक पृथक अंगों में तिल की शोभा का वर्णन।

संख्या ९४. जैनपदावली (अनु०), रचयिता--जगतराम, कागज--सनी, पत्र--६, आकार--८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप् --२३३, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री जैन मन्दिर, स्थान व डाकघर--किरावली, जि० आगरा।

आदि-- × × × धूलिया मलार ॥ दूसरो नाम मसूर की मलार ।। प्रभुविन कौन हमारौ सहाई। और सवै स्वारथ के साथी, तुम परमारथ भाई ।। भूल हमारी ही हमको इह, भयी महा दुखदाई ॥ विषय कषाय सस्य संग सेयो, तुम्हरी सुधि विसराई ॥ उन डसियो विष जोर भयो तब, मोह लहरि चढ़ि आई ॥ भक्ति जड़ी ताके हरिबे कूँ, गुर गारड़ बताई ॥ याते चरन सरन आये हैं, मन परतीति उपाई ॥ अब जगराम सहायकी येही, साहिब सेवगताई ॥ प्रभुविन कौन हमार सहाई ॥

अंत--॥ रागिणी देव गंधार ॥ ताल तेवरा ॥ अबमेरो जिनमत सों हित लागो ॥ जामें जीवादिक तत्वनि को कथन सुनत भ्रम भागो। एहो बीतराग सौं देव जासमें, गुरु सरुप जहाँ भागो धर्म्म केवली भाषित जामें, जीव दया रस पागो। एहो श्रुत उपदेश होत सुभ जामे श्रवन धरत जिय जागो। जगतराम सब काम सरे मन निज गुण सौ अनुरागो। अब मेरो जिन मत सौं हित लागो। इति।

विषय--जैन धर्म की प्रियता, उस मत के तीर्थंङ्करों की स्तुतियाँ आदि सुन्दर पदों में वर्णन की गई हैं।

संख्या ९५. भागवत दसमस्कन्ध, रचयिता--जनलाल (? जन लालच), कागज--मूँजी, पत्र--१२३, आकार--११३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४९२०, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १५३७ वि० (१४८० ई०), लिपिकाल--सं० १८८३ (१८२६ ई०), प्राप्तिस्थान--पं० कन्हैराम सोती, स्थान--सीस्ता, डाकघर--सैमरा, जि० मथुरा।

आदि--श्री भागवत दशम लिष्यते ।। प्रथम पितामह सृष्ट ऊपाई ॥ ता प्रसाद गुननाथ गुसाईं ।। संकर सुमिरि दंडवत कीन्हा ॥ भसम चढ़ाय चेत मन कीन्हा ॥ जट मुकुट सिर सदा उदासी ॥ तव प्रसाद पायो अविनासी ॥ × × × भक्ति हेत जनलाल चह, हरषित बन्दौ पाइ ॥ श्री गुपाल गुण गावौ, बुधि दे सारद माइ ॥ सम्मत पन्द्रह सै सैतीसा ॥ .... मास अखाढ़ कथा अनुसारी ॥ हरिवासर रजनी उजियारी ॥ × × × तिहुँ लोक कौ ठाकुर, सो विधि गोकुल आव ॥ बुधजन संग रंग वश, जनलालच गुन गाव × × × अमृत कथा श्री भागवत, प्रगटी यह संसार ॥ चरन सरन जन लालच, गावै गुन विस्तार ॥

अंत--दोहा। गोविन्द सुमरन जो करै, सो नहिं नर्क सिराइ ॥ लाल च प्रभु सुख दाता, अरु बैकुण्ठ नसाइ ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसम स्कन्धे भागवत महापुराणे दसम

कन्धे ॥ राजा परीक्षत मरनो ॥ जदुबंस छप्पन कोटि राजा ॥ जन्मेजय सर्प हुतनो नाम ॥ इक्यानवो ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८८३ शाके १७४८ बर्षे फाल्गुन मासे सप्तमी रविवासरे पुस्तक लिषते मिसुर किसुन-दास सोती गाम सीसतों ॥ श्री सीताराम सहाइ ॥

विषय—कृष्ण की लीलाएँ तथा समस्त चरित्र।

टिप्पणी—श्री जनलाल सनाढ्य ब्राह्मण सीसता गाँव सादाबाद, जिला मथुरा के निवासी थे। ये प्रस्तुत ग्रंथ-मालिक के पूर्वज थे। इन्होंने ही भागवत का यह पद्यात्मक अनुवाद किया है। रचनाकाल "पन्द्रह सै सैंतीसा" है। इन्होंने अपना परिचय सिवाय नाम के और कुछ नहीं दिया; पर पुस्तक मालिक से निश्चय पूर्वक ज्ञात हुआ कि वे इनके पुरखा थे। पहले वे रुनकुता (रेणुका) में रहते थे, फिर सीस्ता में आकर रहने लगे। कहा जाता है ये सौ से ऊपर की आयु पाकर मरे। कविता अच्छी है। इनके नाम के पीछे हरबार 'च' अक्षर आता है जिसका मतलब समझ में नहीं आता।

टिप्पणी– यह रचना लालचदास (हलवाई) की है इसके लिये देखिए खोज-विवरण (१९२६–२८, सं० २६१ ए)—दौलतराम जुयाल 'साहित्यान्वेषक'।

संख्या ९६. कविता रसविनोद, रचयिता—जनराज वैस (स्थान—जयपुर रियासत), कागज—बाँसी, पत्र—३०५, आकार—११ X ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्) –५१८५, पूर्ण, रूप - प्राचीन, जिल्द बंधा हुआ; गद्य-पद्य, लिपि-नागरी, रचनाकाल—सं० १८३३ वि० (सन् १७७६ ई०), लिपिकाल-वि० १९०९ (१८५८ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री मयाशंकर जी याज्ञिक, स्थान व डाकघर—गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री गुरुभ्यो नमः। अथ कविता रस विनोद जनराज वैस कृत लिष्यते ॥ मंगलाचरण ॥ दोहा—गवरि नंद जग वंद कौ वंदत हौ करि हेत। बुद्धि प्रकासन विविधि विधि, ग्रन्थ उक्त वरदेत। छपय छन्द ॥ वदन मत्त मातंग संग सिंदूर पूरियल ॥ कनक जटित मनि मुकट भाल झलकित चंद कल। कुंडल करण उमंडि गंड मंडल मद वरसत। लोचन कंज विसाल दन्त उज्जल इक दरसत। बल प्रचंड भुजदंड करि बल अषंड षंडन करन जन रज्जि सदा नवषंड के बुद्धि हेत वंदत चरन।

अंत—कविता रसहिं विनोद यह, पढ़ै सुनै कवि लोग। सभा मद्धि सोभा लहै, चहै सुंछित भोग। कविता रस यह ग्रन्थ में, कियो जु मति अनुसार। वरनत भूल परै जिहाँ, लीज्यौ सुकवि सुधार। कहू न जाचन कौ कियो, कियो भजन में गाय। अपने प्रेम प्रभाव तैं, रच्यो ग्रन्थ सुषदाय। इति श्री विविध विधि कविता रसविनोद जन राज वैसे विरचितायां ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥ चतुर विंशो विनोद ॥ मीती मार्गसिर कृष्ण ॥ १२ ॥ संवत् १९०९।

विषय—(१) गणपति सरस्वती वन्दना, काव्य के लक्षण, छन्द षट कर्म वर्णन। पृ० १—१४। सममात्रावृति छन्दों के भेद, १५—३४। असमान कला वार्तिक छन्द, ३५—४३। वर्णिक छन्दों का वर्णन, ४४—६१। व्यंग भेद, ६२—७०। उत्तम काव्य लक्षण, ७१—७६। मध्यम तथा अधम काव्य लक्षण, ७७—१०२। काव्य के गुण दोष, १०३—१२४। नवरस विभावादि के भेद, १२५—१३३। नायक नायिका भेद, स्वकीया,

परकीया, सामान्या, अष्टनायिका, १३४—१८६ । षट् नायिका, समस्त नायिका भेद, हावभाव, १८७—१९८ । सखियों को मिलाइवो पोडस विनोद, १९९—२०५ । नायिका श्रृंगार वर्णन, २०६—२२४ । नायक श्रृंगार, २२५—२३० । षट् ऋतुओं का वर्णन, २३७—२४२ । विप्रलम्भ श्रृंगार, २४३—२६० । नवरस वर्णन, २६१—२७३ । चित्रालंकार, २७४—२८५ । चित्रआदि, २८६—३०१ । राजवंश वर्णन, ३०१—३०३ । (२) दोहा ॥ करै सुजैपुर नग्र में, प्रथीसिंघव राज । तिनको प्रगट्यो जगत में अैसो तेज समाज । × × × नगर वर्णन, मित्र वर्णन, राजा का बकसीस के लिए कवि को बुलाना तथा मित्रों आदि का वर्णन, ३०४—३०६ ।

संख्या ९७. संमेद शिखा पूजा, रचयिता—जवाहरलाल, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—७ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९९१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर (नया), सिरसागंज, मैनपुरी ।

आदि—श्री वीतराग जी ॥ अथ श्री संमेद सिषिर सिद्धक्षेत्र विधान् जवाहरलाल कृत लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उतिकृष्ट सुथांन । सिपिर समेद सदांन मौ, होय पाप की हान ॥ १ ॥ अगिनित मुनि जहँ सैठाए, लोक सिपिर के तीर । तिनके पदपंकज नमौ, नाशै भव की पीर ॥ २ ॥ अरिल्ल छंद ॥ है उज्जिल वह क्षेत्र सुअति निर्मल सही । परम पुनीत सुठौर महा गुण की गली ॥ सकल सिद्धि दातार महा रमनीक है । वंदौं निज सुष हेत अचल पद देत है । ३ ॥ सोरठा ॥ सिपिर समेद महान । जग मैं तीरथ प्रधान है । महिमा अद्भुत जान । अलप मती मैं किमि कहौं ॥ ४ ॥

अंत—सरधा सों थोरी करै, लेय बहुत कर जांन । प्रापत हू है पुन्य की । पद पावै निर्वान ॥ १२ ॥ अरिल्ल ॥ अब वैसाप वदी नवमी सुभ जानियै । सुक्रवार के दिन समापत मानियै ॥ इक वसुनव कौ अंक अब एक फिरि सिपौ समइ यही प्रमान सरस मन मैं दियौ ॥ १३ ॥ दोहा ॥ तुक्ष बुद्धि मेरी सही पंडित करौ विचार । भूल चूक होय सो लीजौ चतुर सुधार ॥ १४ ॥ इति श्री संमेद सिखिर सिद्ध क्षेत्र विधान सम्पूर्ण ॥ शुभंमस्तु

विषय—संमेद शिखिर, सिद्धक्षेत्र की पूजा का विधान ।

संख्या ९८. भागवत दशम स्कन्ध, रचयिता—जयकृष्ण, कागज—छोटा कागज, पत्र—३२०, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६८०, पूर्ण, रूप - जीर्ण, प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२२ वि०, (१७६५ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० भजन राम जी, स्थान व डाकघर—वृन्दावन, मथुरा ।

आदि—श्री मोहनजी सहाय ॥ बन्दौ श्री गुरु के चरण सब सिद्धिन के अैन । विघन हरन सब सुख करन परमानन्द के दैन ॥ अथ सम्पद्राय गुरुस्तुति ॥ छप्पय । वन्दौ श्री त्रिपुरारि मोह में तिमिर विनाशक परम प्रभाकर रूप हृदै हरि भक्ति प्रकासक ॥ करुणा सिन्धु कृपाल करन मंगल मंगल मय । भक्त राज भय हरन रहत हरि पद लागी लय ॥ श्री विष्णु स्वामी सम्प्रदाय गुरू जिन की वर पद्धति प्रगट जै कृष्ण पठत श्रवनन सुनत श्री कृष्ण भक्ति बाढ़त अघट ॥

अंत—श्री कृष्णचन्द्र स्वछन्दचन्द्रिका कीर्ति सुहाई। अति निर्मल परकास रह्यो सब ठौरनि छाई॥ मोह तिमिर कौ हरनि भक्ति कुमुदिनी प्रकासनि। पोषनि पेमोषधी त्रिगुन त्रैताप विनासनि॥ रही जगत जग मगि महा नहिंन होत पंडित कदा। जै कृष्ण मनो वच कर्म्म करि ह्वै चकोर सेवहु सदा॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धो जै कृष्णदास कृते उनचासमो अध्याय॥

संवत् १८२२ आषाढ़ कृष्ण द्वितीया बुधवासरे प्रति लिखी नगर शुभस्थाने। सिरथरा वृजमंडले॥

विषय—(१) श्री विष्णु स्वामी, आचार्य, विट्ठलेश, बालकृष्ण, गुरूपुरुषोत्तम की स्तुति, व्रजवासियों, सरस्वती, भागवत, भाषाके कवियों की स्तुति। (२) प्रस्तावना। (३) भागवत दशमस्कन्ध का कथानक जिसमें सम्पूर्ण कृष्ण जनम चरित्र वर्णित है।

संख्या ९९. भागवत दशम, रचयिता—ज्ञानानन्द, कागज—मूँजी, पत्र—१६०, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०५ वि० (१८४८ ई०), प्राप्तिस्थान—पंडित चोखेलाल जी, स्थान—परसोती गढ़ी, डाकघर—सुरीर, जि० मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ दस्मलिख्यते॥ छप्पै॥ नमो वृह्म भगवान अलष अवरति अविनासी॥ अचल अखंड अभेद सुयंपूर्ण प्रकासी॥ सत चेतन आनन्द द्वैत छन्द रहत निरंतर आदि अति मध्य सार सदां नित आप सुतंतर। निराकार निरगुन अजरनि रउपाँध अविक्तजू॥ ज्योको त्यों वरनन करें ज्ञानानन्द काशिक्तजू॥ १॥ दोहा॥ व्यासपुत्र कौ हाथ ही चरनदास को सीस। जिनके त्यागी राम हैं ज्ञानानन्द के ईस॥ २॥ भक्त-वत्सल भगवान जो घरने होत ओतार जो हैं अति विख्यात ही तिनको करूँ उपचार॥ ३॥

अंत—मेट पापन धर्म थापे ध्यरिस्त्य मनंतरं॥ हो धनंतर धर निऊपर सर्वजन रोगाहरं॥ १०॥ परशराम-बलंतकारी सकल क्षत्री क्षेकरं हत्यो रावन लंक जारी रामचन्द्र उज्यागरं॥ १०॥ कीये व्यास ही वेद परगट जीवन हित वऊ विस्तरं॥ वोध हों पाषंड धारे कलंकी हो कलिमल हरं॥ १२॥ भये कृष्ण औतार पूर्ण देवकी वसुदेव सुतं कियेरास विलास वऊने कंस असुरादिक हतं॥ १३॥ और अस औतार सवही कृष्ण आपु ही ईश्वरं॥ वरनै जस भागोति जाके श्री सुकदेव मुनीश्वरं॥ ४॥ मिटे पाप ही सुनत सारे कृष्ण जय इमृतरसं॥ ज्ञानानन्द नन्द सरन दीजिए भक्तोवरं॥ १५॥ इति श्री भागवति दस्म सम्पूर्ण॥ संवत् १९०५ फागुन कृष्ण अष्टम्यां ८ गुरवारानां लिख्यते पंडित टोडर मल्ल शुभं पुस्तक लिखी दस्मकी परसोती की गढ़ी माघशुभं मंगलं मस्क० श्री रस्क० कल्यानं स्क०।

विषय—कृष्ण जन्म, उनकी बाललीलाएँ और कंस वध आदि वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रीक्षत सो सुक न कही, सौनकादि संसूत। ज्ञाना नन्द भाषा करी, ना अपनी करतूत॥ श्री शुक जी के शिष्य जो परणदास सुषरास। जिनके त्यागीराम हैं ग्यानानन्द तिन दास। × × × उपर्युक्त दोहों से प्रकट होता है कि इनकी शिष्य परम्परा इस प्रकार हैः—

शुकदेव > चरण दास > तयागी राम > ज्ञानानन्द । विशेष विवरण कविने अपने सम्बन्ध में नहीं दिया है । रचनाकाल आदि का भी कुछ पता नहीं ।

संख्या १०० ए. ज्ञानपाती, रचयिता—ज्ञानीजी, कागज—बाँसी, पत्र—३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र जी सैनी, बेलनगंज, आगरा, उत्तरप्रदेश ।

आदि—अथ ज्ञानी जी की ज्ञान पाती ग्रंथ लिखतं ॥ दोहा ॥ पाती ज्ञानी गुरु लिषी, बाँचि सुणावों सब कोइ ॥ वेद पुराण पढ़ै हैं गुनै, सहजै सब गमिहोइ ॥ बिना सासत्र सुमिरत बिना, जोग जागि बिन ध्यान ॥ जग ग्यानी गुर गमि कहै, उपजै ब्रह्म ज्ञयान ॥ जप तप तीरथ न कीया न कीया पवन अभ्यास ॥ सुन सहज की आद है, सहज सुनका मूल ॥ ज्ञानी गुरुकी दया तें सहजि भया परकास ॥ ज्ञानी अब गति अलेष है, जहाँ नहिं संसा सूल ॥

अंत—दोहा एक अकेला ब्रह्म है, और न दूजी भास । ग्यानी निहचल ब्रह्म है, सहज सुन परगास ॥ ताकी आदि न अन्त है, मध न जाइ ॥ ग्यानी निहचल ब्रह्म है, कहिये कहा सुनाई ॥ अथाह सरवर ब्रह्म जल, नाँ कहूँ वार न पार ॥ ज्ञानी निहचल ब्रह्म है, नाँ काहू अधार ॥ साइर मेरा साँइया, लहरि सकल संसार ॥ ताही में उपजे षपै, जनप ज्ञानन देषनहार ॥ ताघर ते सब ऊपजै, सोघर सकल समाइ ॥ सो घर ज्ञानी अगय है, गुरुबिन लिष्या न जाइ ॥ पाती ग्रन्थ सम्पूरण ॥

विषय—(१) ॐकार की महिमा और उसके रूप का वर्णन । (२) निरंजन का विराट् रूप । (३) निरंजन के अंगो का वर्णन । (४) ईड़ा, पिंगला, सुष्मणा स्वर-वाहिनी नाड़ियों की गति । (५) आत्मा का स्वरूप । (६) माया की व्यापकता ।

संख्या १०० बी. ज्ञानी जी की साखी, रचयिता—जसवंत (संभवतः ज्ञानी), कागज—देशी, पत्र—९, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३, पूर्ण, रूप—प्राचीन—पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चक्रपाणि मिश्र 'विशारद', स्थान—लाखनमऊ, डाकघर—वरनाहल, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री रामायनमः ॥ पाप ताप सब कल्पना । सत संगति ते जाय । ज्ञानी दुख सहजें मेटे, सुख में रहै समाय ॥ १ ॥ तीरथ वरत जप तप भया, जब साधू संगति होय । ज्ञानी सब सुकृत किया, साधन रहा न कोय ॥ २ ॥ राम जपै नित साधकों, साध-जपै नितराम । ज्ञानी पलकन वीसरे, आभा सामा नाम ॥ ३ ॥ ना हरि वैकुंठ मैं वसै, ना कहुँ जोगी मांहि । ज्ञानी हरिजन जहाँ हरी, दूजा ठाम जो नाहिं ॥ ४ ॥ स्वामी सेवक में वसै, सेवक स्वामी माहिं । ज्ञानी दोऊ मिलि रहे, पलभर विछुरे नाहिं ॥ ५ ॥

अंत—गहवर वनमें ढूंढ़िया देस विदेस । ज्ञानी राम न पाइया, बिनुसत गुरु उपदेस ॥ ९१ ॥ प्रेम प्रकासी गुरु मिले, जैसे सूर प्रकास । सब अन्धेरा मिट गया, ज्ञानी पाया राम निवास । ९२ ॥ विरही जनकी पारषा, बोलै मीठे वैन । निर्मल जाको आतमा, निर्मल जाके नैन ॥ ९३ ॥ जसवंत को चित चल्यो, सुनि ज्ञानी को ज्ञान । रहनी करनी

तिल भर नहीं, कथनी मेरु समान ॥ ९४ ॥ जसवंत गर्व न कीजिये, साहव सों अभिमान। भट पंडित वैठे रहें, गनिका चढ़ी विमान । ९५ ॥ इति श्री ज्ञानी जी की साषी । लाक्षते । साधुमहातम । संपूर्ण ॥ सुभमसु ॥ कल्यर्णः ॥

विषय--कुछ ज्ञान विषयक दोहों का संग्रह ।

संख्या १०० सी. साखी, रचयिता—जसवन्त, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मुंशी लाल जी, स्थान नन्दपुर, डाकघर—खैरगढ़, जि०—मैनपुरो ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्ञानी जी की साखी लिष्यते ॥ पाप ताप सब कल्पना, सत संगत तें जाय । ज्ञानी दुख सहजें मिटे, सुष में रहे समाय ॥ १ ॥ तीरथ वरत जप तप भया, जब साधू संगत होय । ज्ञानी सब सुक्रत किया, साधन रहा न कोय ॥ २ ॥ राम जपे नित साधकों, साध जपे नित राम । ज्ञानी पलकन वीसरे, आमा सामा नाम ॥ ३ ॥ ना हरि वैकुंठ में वसैं, ना कहुँ जोगी मांहिं । ज्ञानी हरिजन न जहाँ हरी, दूजा वाय जो नाहिं ॥ ४ ॥ स्वामी सेवक में वसे, सेवक स्वामी मांहिं । ज्ञानी दोऊ मिलि रहे, पल भर विछुरे नाहिं ॥ ५ ॥

अंत—राजस तामस सात्वकी, ये तीनों के मेल । सत गुरु की कृपा भया, तव किया अगमका पेल ॥ गहवर वन में ढूढिया, ढुंन्या देस विदेस । ज्ञानी राम न पाइया, विन सत गुरु उपदेस ॥ ८१ ॥ प्रेम प्रकासी गुरु मिले, जैसें सूर प्रकास । सव अंधेरा मिट गया, ज्ञानी पाया राम निवास ॥ ८२ ॥ वृही जनकी पारषा, वोलैं मीठी वैंन । निर्मल जाको आतमा, निर्मल जाके नैंन ॥ ८३ ॥ जसवंत को चित चल्यो, सुनि ज्ञानी को ज्ञान । रहनी करनी तिल भर नहीं, कथनी मेरु समान ॥ ८४ ॥ जसवंत गर्व न कीजिये, साहव सों अभिमान । भर पंडित वैठे रहे, गनिका चढ़ी विमान ॥ ८५ ॥ इति श्री ज्ञानी जीकी साषी लक्षते ॥ साधु महात्म संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ कल्यर्णः ॥

विषय—साधु महात्म्य वर्णन, गुरुमहिमा, ज्ञान तथा भक्ति का उपदेश ।

संख्या १०१. लाड़िली लाल की विहार पाती, रचयिता—जुगल किशोर, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१०३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)-७६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० राजाराम जी शर्मा, स्थान व डाकघर—वरहज, जि०—आगरा ।

आदि—श्री गणेशायन्मः ॥ अथ लाड़िली लाल की विहार पाती लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि श्री शंकर प्रिया । देवनि कीं सुषदानि । भय हरनी तूं जगत की । वन माली के प्रान ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हे पारवती तूं सिधि कों देनवारी है लछिमी को देनवारी है शंकर की प्रिया है देवनि कौ सुष देति है जग कौ भय हरति है कृष्ण के तूं प्रान है ॥ १ ॥ दोहा—कै अंबा कै इन्दरा । सषी मैनका आनि । हेम सिंघासन जग मगे । शंकर प्रिया महरानि ॥ २ ॥ अर्थ हे पारवती हे शंकरी प्रिया महरानी तूं अंवा है इन्दरा है मेंनका है सो सुवरन के सिंहासन विराजी है ॥ २ ॥

अंत--दोहा—बाईस नाम विचारि कैं, आदि अन्त कौ जानि । रस विलास अपनौ सदां, लिषत रहौ रसषानि ॥ २२२ ॥ अर्थ ॥ हे राधे रस विलास कौ कागद अपनौ सदाँ लिषत रहै । दोहा ॥ जह राधै लिषी कृष्ण जी कौ पठई ॥ अब कवि लिषत है ॥ दोहा ॥ बुध जन सौं विनती करौं, इक इक दोहा जोरि । उत्तर दीजों समझि करि, लिषी सु जुगल किशोर ॥२२३॥ अर्थ॥ कवि कहत है कै बुधिमान सौं विनती है के दोहा जो लिषे है सो सुधारियौ जुगल किसोर कहत है ॥ दोहा लीला राधारमन की, आगम धर्म पयूष । सज्जन श्रवन दुरघट भरहिं, परसें ब्रह्म पियूष ॥ २२४ ॥ अर्थ ॥ लीला राधा कृष्ण की धर्म कौ अमृत है सो सुजन कानन के घड़ा भरत है ब्रह्म पयूष सौ ॥ इति श्री राधाकृष्ण विहार पाती पर जुवात्र संपूरन शुभं ॥ मिती श्रावन शुक्ला ११ चंद्रवासरे संवतु ॥ १९०९ ॥

विषय—राधाकृष्ण की चिट्ठी पत्री संबंधी २२३ दोहों और उनके अर्थ का संग्रह ।

संख्या १०२. भक्त चरित्रावली (अनु०), रचयिता—ज्वालानाथ, कागज—देशी, पत्र—३४६, आकार—११ × ९ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री नारायण सिंह ठाकुर, स्थान व डाकघर—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—× × × कथा ब्रह्मा जी की ॥ ब्रह्मा जी जगत के पिता वो भगवान भक्तों वो धर्म्म प्रचार में श्रेष्ठ हैं वो भगवत विभूति स्वरुप हैं जब नाभ कमल में उनका जन्म हुआ वो तप करने के पश्चात् अपनी वो संसार की उत्पत्ति करने के ज्ञान वो सामर्थ पाई तो भगवत धर्म्मों को संसार में प्रवृत्त किया और अब तक ब्रह्मा जी का उपदेश चला जाता है ।

अंत—श्री यमुना जी के किनारे पै शोभायमान चौरासी कोस ब्रजमंडल बारह बन बारह उपबन करिकै मंडित जिसकी रज को ब्रह्मादिक अपने मस्तक का तिलक बना कर वो चौरासी कोस की परिक्रमा करिकै सुद्धता वो सिद्धता को पहुँचते हैं । वो एक बेर दरसन जिसका असंख्य जन्मों के पातकों को दूर कर देता है ।

विषय—भूमिका, ईश्वर तथा विद्या की विवेचना और भक्ति की महिमा पृ० १—३६ । कथा ब्रह्मा जी की, शिव जी की, अगस्त्य, रामानुज स्वामी, स्वामी रामानन्द, कृष्णदास पयहारी, माध्वाचार्य्य, विष्णु स्वामी, गोविन्ददास, हरिव्यास सोभूराम, हरिव्यास जी का गुरु वंशवृक्ष, शंकर स्वामी, उनकी गुरू गद्दी के अधिकारी गण, विदुरजी, एक राजा और रानी, हरीराम, हरि पालन स्कंचनि मन सुखदास, रसिकमुरारी, लाखाभक्त, गणेश देई रानी, गोपाल, विष्णुदास, गोपाल, ग्वालजी, केवल कूबा की कथा, सदाव्रती, सेन भक्त, सन्तभक्त, जस्सू स्वामी, रामदास, तिलोचन देव, तिलोक जी, वारमुखी, भगवानदास ३७-८९ । एक राजा की लड़की की कथा, नीवाजी, कृष्णदास, राजानाई, नन्ददास हरिदास, कान्हड़जी, माधो ग्वाल, गोपाली, नारदजी, गरुड़ जी, राजापरीक्षित, लालदास, वालमीकि जी, शुकदेव जी, जयदेव जी, तुलसीदास जी सूरदास जी नन्ददास, चतुर्भुजदास, मथुरादास, सुखानन्द, श्री भट्ट जी, पृ० ९०-११८ । वर्द्धमान मंगल, कृष्णदास,

नारायण मिश्र, कमलाकर, परमानन्द, रसखानदास, भगवानदास, चतुर्भुज, गिरिधर ग्वाल, लालाचार्य, विष्णुपुरी राजा पृथीराज, तत्वाजीवा, खोजी, गुरुनिष्ट, घाटम् , नरवाहन, गतपति, चतुरदास, राघवदास, राजाचन्द्र हास्य नामदेव जी, अल्ह जी, पृथ्वीराज, धनाभक्त, कथा देवा की, सन्त दास, साखो गोपाल, सीवा, सदन, कर्म्मानन्द, कूल्ह अल्ह, जगन्नाथ, रामदास, अलीभगवान, विपुल विट्ठल, रामराय खङ्गसेन, वल्लभ, नाथ भट्ट, राजाशिवर, मयूरध्वज, भवन, राँका, केवलराम, हरिव्यास अम्बरार्ष, रुक्मांगद अंगद पुरुषोत्तमपुरी का राजा, सुरेश्वरानन्द, श्वेत दीप के निवासी भक्तों की कथाएँ, कागभुसुंड, भगवन्त, हरिदास, मधुगोसाईं, भूगर्भ, काशीश्वर, प्रवोधानन्द, लालमती, अजामील, कथा एक राजा की, कथा एक ब्राह्मण की, कवीर, पद्मनाभ, वशिष्ट, विश्वामित्र, राजा भरत, अलर्क मंदालसासुवाहु, श्रुतिदेव, बहुलाश्विकी, उद्धव, बालिमकी, स्वपच, ज्ञानदेव, लड्डुस्वामी, नारायणदास, किन्हरदास, पूर्णदास, रन्तदेव, परशुराम, रांकोवांका, रघुनाथ गो: की, श्रीधरस्वामी, कामध्वज, गदाधरदास, माधवदास, नारायण दास, शींव गोसाईं, सुरसुरी जी, द्वारिकादास, राघव दास, हरिवंश पृ० ११९-२७६ तक। लक्ष्मी जी की कथा, शेष जी, हनुमान जी, जगत सिंह, कुँवर किशोर, नरहरि आनन्द, प्रेमतिथि, जयमल, आसकरन, कृष्णदास, गोकुलनाथ, राजाजनक, वृषभान कीर्ति जी, उग्रसेन, कुन्ती जी, युधिष्ठरादि, द्रौपदी, अक्रूर, विध्यावती, विभीषण, गजराज, ध्रुव, जटायू , मान्धाता, राघवानन्द, जगन्नाथ, लक्ष्मण भट्ट, पृ० २७७-३७८ तक । अर्जुन, सुदामा, ग्वालवालों की कथा, गोविंद स्वामी, गंगावाल, स्वरूप मुक्ति तथा निर्गुन से भक्ति मार्ग में क्या विशेषता है व्रज गोपीका की कथा, मीराबाई जी, करमेती जी, बिल्वमंगल सूरदास मदनमोहन, अग्रदास, स्वामी कील्हदास, गोपालभट्ट, केशवभट्ट, वनवारी जी, जसवन्त जी, कल्यानदास, कर्ण हरिदेव, विख्यात कन्हर दास, लोकनाथ, मानदास, कृष्णदास अम्वरीषकी रानी, सुतीक्षण, शवरी, विदुरकी स्त्री, भक्तदास, विश्वदास, कृष्ण दास, कात्यायनी, माधव दास, नारायण दास, लीलानुकरन, मुरारिदास, गदाधर भट्ट, रतवन्ती, जरूरधर, कृष्ण दास, पृ० ३७९-४८२ तक। भगवत भजनके वर्णन में वर्तमान लोगों का वृतान्त । कुसंग और सत्संगति का फल । पृ० ४८३—५२० ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ उपयोगी प्रतीत होता है । भक्तमाल की यह टीका ही नहीं है बल्कि अन्य भक्त एवं कवि गण भी इसमें सम्मिलित कर दिए गए हैं । टीकाकारके विषय में कुछ ज्ञात नहीं होता ।

संख्या १०३ ए. अजब उपदेश, रचयिता--कबीर साहिब, कागज--बाँसी, पत्र--३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री राम चन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा, (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—॥ लिषतं अजब उपदेश ॥ सुनो अजब उपदेश फकीरी ॥ रिज मालो गहें जहीरी ॥ अजब एक प्रसंग सुणांऊं ॥ गुरु पोरान मिहर जो पाऊँ ॥ बीबी खुदा वन्द इक जसरे ॥

तिसका नाँव बखानौ वशरे ॥ दुनिया तर्क दीन ल्यौ लाई ॥ दाना अकल इल्म औ गाई ॥ दिल मन पाक पाक कौ धावै ॥ जो पूछै तिहि कहि समझावै ॥

अंत--दारु अजब गरीबी लीजे ॥ दुनिया में दिल कबी न दीजे ॥ रोग रहे तो पीर दुहाई ॥ सोइ सुनै मैं दई सुनाई ॥ गुरबत बीबी सेप सौ भई ॥ गुरु प्रसाद ते मों को कही ॥ जो कोइ करै सन्त मन लाय ॥ ताको आवा गमन नसाय ॥ अब्ब उपदेश समाप्त ।

विषय—इसका कथानक है कि एक बार कुछ पीर खुदावन्द की बीबी के साथ बैठे हुए थे । इतने में एक दरवेश आया तो उसने अपना आना बहुत दूर का बतलाया तथा अपना रोजगार खेती पाती बागवानी बतलाया । अपने बागों के वर्णन में उसने संसार की समस्त मायावी बातों को कह डाला और अन्त में आत्मोद्धार का उपाय उसने संसार का त्याग तथा सत गुरु का चिन्तवन बतलाया ।

संख्या १०३ बी. अषरावत, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—४८, आकार ६ X ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामलाल शर्मा, स्थान व डाकघर—उरावर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री ग्रंथ अषरावती लिप्यते ॥ दोहा ॥ सत्यनाम निज सार है, सतगुरु के उपदेश । सुनहुँ संत सत भावते, इहै मुक्ति संदेश ॥ सोरठा ॥ काग कुमति गति परिहरो, नाम सनेही होय । हंस होय सत गुरु मिले, कुल का कर्म सब धोय ॥ चौपाई ॥ सत्यलोक की अकथ कहानी । सोई निज सतगुरु सहदानी ॥ रुपवरन नाहीं देसा तिनके अचरज सुनहु सनेसा ॥ नाहीं तहँ पाँच तत्वकी काया । नहिं तहँ तीनि पुरुष निरमाया ॥ नहीं प्रकृति पचीसो होइ । जरा मरन जानै नहिं कोइ ॥ दश इन्द्री नहिं षट करमा । बरन भेद नहिं कुल धर्मा ॥ दिवस रजनि चाँद न सूरा । विमल प्रगास सकल विधि पूरा ॥ सरगुन निरगुन दोनों होइ । शबद सरूप सकल है सोई ॥

अंत—सोरठा ॥ सत्य नाम है एक (जो ?), सतगुरु मति भावही । करहु एक की टेक, मुकति नही परतीत विनु ॥ चौपाई ॥ अकथ कथा अषरावति सारा । बावन अछर को विस्तारा ॥ नव उपदेस भेद दस भाषा । तिनते तीस के ऊपर राखा ॥ एक एक अछर सह दानी, वेद की मूल कथा बहुबानी ॥ सत्य लोक का अगम सँदेसा । जानत कोऊ संत अनैसा ॥ अकथ कथा अपरावति भाषी । वेद किताब के ऊपर राषी ॥ अपरावति पढ़ि भेद बपानै । सत्यकाम महिमा तब जानै ॥ साषी ॥ बिनुअक्षर सब झूठ है, नहिं अक्षर माहिं समाय । अक्षर भेद जो पावही । सोहं सम रंग होय ॥ सोरठा ॥ कहै कबीर गुरु नाहिं, संत वचन परतीति करु । गहु हंस राज की बाहिं, निश्चै जग भौ जल तरै ॥ इति श्री अषरावति ग्रंथ संपूर्ण ॥ श्री मुषबानी ॥

विषय—सतगुरु की प्रशंसा, शब्द का महत्व, अनहदवाणी, सबकी शिक्षाओं को निराधार ठहराना, सतगुरु की शिक्षा ही में सारवर्णन, आत्मज्ञान की आवश्यकता, अषरा-

वति का उद्देश्य, सत्यनाम का लाभ, अजपाजाप, जंत्र मंत्रादि निषेध, अनुभव, ज्ञान, मन-स्थिर, शिष्य की परिभाषा, सन्त की पहचान तथा सत्यलोकादि का वर्णन ।

संख्या १०३ सी. अखरावती, रचयिता—कबीरदास (स्थान - काशी), कागज—देशी, पत्र - ४०, आकार— ६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीकान्त जी मूढ़ैत, स्थान—नन्दपुर, डाकघर—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी ।

अंत—॥ सोरठा ॥ सत्य नाम है एक जो, सतगुरू मति भावही । करहु एक की टेक, मुक्ती नहिं परतीति विनु ॥ चौपाई ॥ अकथ कथा अषरावति सारा । वावन अक्षर की विस्तारा ॥ नव उपदेस भेद दस भाषा । तीनों ते तीस के ऊपर राषा ॥ एक एक अक्षर सहि दानी । वेद के मुलुक कथा वहु वानी ॥ कथा अपरा वीरा भाषी । वेद किताब के ऊपर राषी ॥ अषरावति पढ़ि भेद वषानै । सत्य की महिमा सो तव जानै ॥ साषी ॥ विनु अक्षर सव झूठ है, नहिं अक्षर माहिं समाय । अक्षर भेद जो पावही, सोहं सम रंग होय ॥ सोरठा ॥ कहै कवीर गुरू नाहिं, सन्त वचन परतीति करु । गहु हंसराज की वाँह, निश्चै जग भौजल तरै ॥ इति श्री अषरावती ग्रंथ संपूर्ण ॥

विषय—नाम माहात्म्य, अक्षर की महत्ता एवम् आत्मज्ञान वर्णन ।

संख्या १०३ डी. बारहमासी, रचयिता—कबीर दास (स्थान—काशी), पत्र–२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० रामनरायण जी, स्थान—नगला मुकुन्द, डाकघर—मदान, जि० मैनपुरी ।

आदि—बारह मासी सुनौ हो संतौ । एक सुरतिल्यौ ल्याइये पार ब्रह्म कौ ध्यानु-धरिये सत गुर माथौ नाइयै ॥ असहाड़ा आसा आगम वाढ़ी मुनिजन पार न पावई ॥ काम कोटि मिटाइ सतगुरु गम्य आगम लखावई ॥ सामन साँस उसाँस फैरौ ॥ त्रिकुटी महल सजामई ॥ उलटि सालिहा सिध मिल्री औ जह गति काहि सुनामई ॥ भादौं जौ मन कौ भ्रंमु म्यैटौ मैगई निरभै भई ॥ दसौ दिन साँगुर वाट गहियै विष्नुके घर तब गई ॥ कुवर करनी षोजि आग्यैं सुंनि के ऊपर भई ॥ एक अलषुपायो लै सषी डेरनु गई ॥

अंत—फागुन छबीली फिरति साथिनु मैं संग पायौ आपन्यौ ॥ भूमि कौ छवि घांमु देषौ सोभा कहाँ ल्यौं गामई ॥ चेतु चितु निहारि प्यास्यौ अंत न चितु डुलाइये । ब्रह्म अषंडी नाहु पाए आवागमननु रहाइये ॥ वैसाष विरहिनि विरहु वाढ़्यो संग बालम क्यै गई ॥ गाय धाम मनाय सषि सषि सुहागिल तव भई ॥ जेठ जेठी सुरति प्यारी पूरन ब्रह्म मिलाइअै । साधु संत सव सुन्नौ सुष पाइ संत कवीर लषाइअै ॥ इति वारहमासी ॥

विषय—चित्त का भ्रम निवारण कर पार ब्रह्म का ध्यान करने का उपदेश ।

संख्या १०३ ई. बारहमासी, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—७ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बालाप्रसाद जी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—बारहमासी ॥ सुन्यो हो संतौ एक सुरति लौ ल्याइअै। पारब्रह्म कौ ध्यानु धारए सत गुरु माथै नाइअै ॥ अषाढ़ आसा आगम वाढ़ी मुनि जन पारुन पागई । काम कोटि मिटाइ सतगुरु, गम्य अगंम्य लषामई ॥ सामन साँस उसास फेरौ, त्रिकुटी महल सजामई । उलटि सरिता सिंधु मिली है, जह गति काहि सुनामई । भादौं जौ मनकौ भ्रंमु म्यैटौ भै गई निरभै गई ॥ दसौ दिसा गुसवाट गहि कै विसन के घर तव गई ॥

अंत—चैत चितु निहरि पिअ सौं अंते न चितु डुलाइयै । ब्रह्म अषंडी नाहु पाए आवामनु रहाइयै । वैसाष विरहनि विरहु वाढ़ौ संग वालमके भई । गाइ धाइ-मनाइ सविआँ सषी सषि सुहागिल तव भई ॥ जेठ जेठी सुरति फिरि पूरन ब्रह्म मिलाइअै । साधु-संत सव सुन्यौ सुष पाइ संत कवीर लषाइअै ॥

विषय—ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी बारहमासी ।

संख्या १०३ एफ. ब्रह्मज्ञान की गुदरी, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बालाप्रसाद जी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—सवदु विग्यांन की गुदरी आठई संधि की ॥ यद्यपि सुषमन किया विचारा । लष चौरासी धोमा डारा ॥ पाँच तंत की गुदरी कीनां तीनि गुजनु स्यौ गंठी कीनाँ ॥ ताम्यैं जीव विरह और माया । साहिव ऐसौ क्या सु बनाया ॥ पाँच पचीस जीव क्यौं लागा । काम क्रोध मोह मद पागा ॥ कामा नगरी को विसतारा । देषौ संतो अगम अपारा ॥ चौदा सूरज दोऊ पिरौधा लागा । गुरु कृपातैं सोवत जागा ॥ सत्य की सुई सूरति कौ धागा । ग्यांन कये मनु सुरजन लागा ॥ इस गुदरी की करु हुसियारी । दागुन लागै देषु विचारी ॥ सुमति के सावन जत जनु धोई । कुमति मैल कौं डारौ षोई ॥ जिन गुदरी का किया विचारा, तिन्हैं अैसे सिरजनहारा ॥

अंत—अनहद नांद नांम की पूजा । ब्रह्म वैराग देव नहिं दूजा ॥ सिरधा और प्रीति करु भूपा । नित कांमु साहिव को रुपा ॥ गुदरी पहिरैं आपु अलेषा । जिननैं प्रगट वनायौ भेषा ॥ साहिव कवीर वकसिकैं दीना । सुरनर मुनि तव गुदरी लीना ॥ ज्ञान की गुदरी पढ़ै प्रभाता, जनम जनम के पातिक जाता ॥ ज्ञानकी गुदरी पढ़ै मध्यान्नं । सोलषि पावै पदु निर्वाना ॥ संझा सुमिरनु करै जु कोई । आवा गमनु थकित होइ सोई ॥ जो गुदरी का सुमिरनु करै । कहैं कवीर भौ सागर तरै ॥

विषय—ब्रह्मज्ञान वर्णन ।

संख्या—१०३ जी. कवीर साहिब की चेतावनी, रचयिता—कबीर साहब (स्थान काशी), कागज—मूँजी, पत्र—२, आकार—२६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—राम चन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा ।

आदि—प्रतसाहिब ॥ सत सुकृत कबीर ॥ धनी धर्म्मदास की दया ॥ अथ कबीर सा० की चितावणी लिषतं । दोहा—मानुष देहीकुल भये ही, मोक्ष मुक्ति का षेत ॥ दास कबीर कहै इह औसर, चेति सकै तो चेत ॥ तजि जंजाल गऐ सो काला, आए सिर परि सैत ॥ दास कबीर कहै इह अवसर, चेत सकै तो चेत ॥ कहत कहानी औधि बिहानी, हरि सो किया न हेत ॥ दास कबीर कहैं इस औसर, चेत सकै तो चेत ॥

अंत—दोहा—तोरा आशी पकड़ चलाशी, कछू न करि है हेत ॥ दास कबीर कहै इह औसर, चेति सकै तो चेत ॥ कोई न रहासी सबही जासी, आए जगमें जग जेत ॥ दास कबीर कहै इह औसर, चेत सकै तो चेत ॥ जुग जुग रहिशी जो गुरु गहिशी, जो हो शीतल केत ॥ दास कबीर कहै इह औसर, चेत सकै तो चेत ॥

विषय—कबीर के उपदेशात्मक दोहे संगृहीत हैं ।

संख्या १०६ यच. चेतावनी, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—मूँजी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री दाताराम महंथ, कबीरी गद्दी, मौजा—मेवली, डाकघर—जगनो, जिला—आगरा ।

आदि—॥ अथ "हरि स्यंघ" जी की चेतावनी लिषतं ॥ यह उपदेश सुणि मन मिरं ॥ वच चेतावणी करि लेक्यतं ॥ जापर गुसे है जम-राइ ॥ ताकौ नींद कैसे आइ ॥ मारग चलना है तोहिं ॥ अंधे क्यूँ न चेतना होहि ॥ पयाना दूरिं है तेरा ॥ सघन वन बहुत दर-केरा ॥ जामें बहुत औघट घाट ॥ अधिकी विषम कठिन बाट ॥

अंत—असो को नहीं वलवन्त ॥ जम सौ जीव राषै जन्त ॥ स्वारथ के सगे सब लोइ ॥ संकट निकट नाहिन कोई ॥ बहुविध कह्यो मैं समझाइ ॥ औसर जपि हरि हित लाइ ॥ सुणि सौ बात की एक बात ॥ "कबिरा" सुमुरि त्रिभुवन-तात ॥ स्यतावणी सतगुरू की सम्पूर्ण ।

विषय—विरक्त के लिये भिन्न २ प्रकार के उपदेश, जीवन को अस्थायी बतलाते हुए दिए गए हैं ।

संख्या १०३ आई. कबीर दोहावली, रचयिता—कबीर (काशी), कागज—मूँजी, पत्र—२०, आकार—६ × ५ इंचों में, पंक्ति (प्रतिपृष्ट)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि– नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राधेश्याम द्विवेदी, स्थान—स्वामीघाट, मथुरा ।

ग्रंथ अंत से खंडित है और इसमें कोई समय नहीं दिया है ।

संख्या १०३ जे. जंजीरा, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बाला प्रसाद जी, स्थान—कोठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ सबदु जजीरा ॥ एकु सबदु संसारै आयो । सब भूतनि कौ गर्व लचायौ । कबीर गुसाई वैठे अथाई । एक चक्र तै वानक लै मारयो । भूत रष देरयौ जमतैं लेउ उबारि ॥

कपर कधारी गरजिओ रही सकल घट पूरि । धुविआ धोवै मनधन ऐवै चोलिआ राग्पै पाटौ । कह्यौ कबीर सुनौ भई साधो जम को कागद फारयो ॥

अंत—॥ मंत्र सर्व विष दूरि करीवे को ॥ कंकर कौ लोटा वज्जुर की सिला विषु वाँटे । ब्रह्मा की वेटी विषु वाँटे विषु खाइ सब सेर विपु मेटी ह्वै जाइ विपु चाटे विपु चूमई विष के बाँटौ थ्यैन कहत कबीर धर्मदास स्यौ विषै हरै दोऊ न्यैना ऐसे गुरकौ ग्यानु विचारयौ तारयौ विषु अम्रत करि डारयौ रोम रोम विषु ऊतरै चंदन अगर सरीरा ॥ जरि हंसा वैठे समुद्र के तीरा ॥ सेस नाग प्रमोधि आस न अतेई बचन धरि माना संतौ लै गरिल भऐ सब दुनियां ॥ मई विष भोइ कलि नै कवीरु प्रघटी औ सबु विषु लयो निचोरि ॥

विषय—हंस की दृढ़ता, संसार का काल ग्रसित होना और इस जंजाल से निकलने का मार्ग आदि वर्णन ।

संख्या १०३ के. ज्ञान बत्तीसी, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४३/४ इंच , पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान - पं० कोकाराम जी, स्थान—साहूपुर, डा० — शिकोहाबाद, जि० —मैनपुरी ।

आदि—अथै ग्रंथ ग्यांन वतीसी लषते ॥ छंद झंपाल ॥ अवधू मेरा नाम कवीरा ॥ अदभूत अजर पियाला पीया ॥ सतगुरु महरि करि मो उपरि ॥ अहनसिक थूं गँभीरा ॥१॥ अगमि भोमि सूंचलि करि आया । मैं अवगति का अैधी ॥ प्राण मै तलब करुं तलवाना ॥ वोहोरि न राषूं वाधी ॥२॥ लोक वेद मुरजाद न मानूं । उलटी राह चलाऊं ॥ उलटि पतालि वसूं अकासा । जल मैं अगनि जलाऊं ॥३॥ चारि सिला सै है जैंही छेकी । म्हा वजर वो हो वंकी । राम सवद की उदवद महिमा । केवल जोग असंवी ॥४॥ जैकोई चाहै परम धामकूं सुंण ज्यौं ग्यान हमारा । दो इपर सूं करो दोसती । तव उतरो नज पारा ॥५॥ अरथा का अनरथ होवैगा । कलयुग वीज छपासी । सुधा सूँ असुध कहै कहै । कथि आप आप कह कासी ॥६॥

अंत—संहस वात की ऐही बात है, आदि अंत विचारी । भजि रंमतीतराम भए पारा, काहा पुरुष काहा नारी ॥३०॥ काजी पिंडित मरम न जासौं, हम हैं ब्रह्म बिलासी । मेरै दोऊ एक समांनि हैं, काहा मगहर काहा कासी ॥३१॥ कह कवीरा मस्त फकीरा, लीया सार फटकाई । निरभै भय डारि भो भूषण, सिंधि सिंधि मिलाई ॥३२॥ इति ग्रंथ ग्यांन वत्तीसी संपूर्ण ॥ इति कबीर जी महाराज का ग्रंथ संपूर्ण ॥

विषय—महात्मा कबीर दास विरचित ज्ञान सम्बन्धी ३२ पद्यों का संग्रह ।

संख्या १०३ एल. ज्ञानतिलक, रचयिता —कबीरदास (स्थान—काशी), कागज— देशी, पत्र—१०, आकार - ७ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) —८, परिमाण (अनुष्टुप्)— १२०, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि– नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामावतार शर्मा, स्थान—चँदीकरा, डाकघर—बरनाहल, जि०— मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ अथ पोथी ज्ञानतिलक लि० ॥ ॐ आदि जुगादि पवन और पानी ब्रह्मा विष्णु महादेव जानी ॥ पाँच तत्त्व का करो निशेष । उलटि दृष्टि आपै में देषि ॥ आप तेज धरिणी आकाशा । सकल पसारा पौन की लाया ॥ पौनै आव पौने जाये । पौननाद धुनि गरजत रहै ॥ सूरा होय सो खडकी गहै । खडकी लागी पार गहिया ॥ ररंकार का चरन गहेया । झँहां राति धौस नहिं सूर ॥ नहीं सूर तहाँ उजियाराहं भरपूर ॥ धरती धीरन कामन थीर ॥ महादेव नहिं ब्रह्मा बीरा । ज्योतिषसरुप, कृपानिधाना । तिहिं न लोक मत वहि जाना ॥ मारग माहिं मडि गया सूरा । ताकूं सत गुरु मिल गया पूरा ॥ पाँच पकडि एक धरि ल्यावा । चीतक चौहट न्याव चुकावै ॥

अंत—जप कर तप करं तप करं कोटितिरथ भ्रम आवै । कहैं कवीर सुनों गुरु रामानंद जी जुगति विना जोगेस्वर कसंकरि परमपद पावैं ॥ सिद्ध काया नगरी अलेष राजा सिल संतोष उजीरं । वीज मंत्र विषेष पायक चित्त चेतन कोटवालं । नौ नौ घाटिले समझावो जीतल्यो जमकालं ॥ काया हमारा तषत विना हम न पवन दोउ घोड़ा । गुरु का सवद पडतल का षांडा किया जम सों मिवेड़ा ॥ आगि महमारा वा जावा जंमुल मस्त पर हाथी । जीवका संताप सतगुरु तोंड़ पंच पुरुष मिलि साथी ॥ जोग जुगति जहाँ छत्र सिंहासन महा सकति रणवासं ॥ जहाँ वलंमं पौन पुरुष वाघर रहन हमारी । काट्या कटै न जाल्या सुकैउति पति परलै नाहिं ॥ सुनमं.........

विषय—तत्व निर्णय, सृष्टि निर्माण, आत्मज्ञान, अनहद शब्द तथा शून्य विवेचन के सहित पाखण्ड खण्डन और मुख्य तत्त्व निरूपण वर्णन ।

संख्या १०३ एम. कबीर जी की वाणी, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज - बाँसी, पत्र—४६, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य-गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दाताराम महन्त, कबीरी गद्दी, स्थान—मेवली, डाकघर—जगनेर, जि०—आगरा ।

आदि—सन्त साहिव ॥ अथ कवीर जी की वाणी लिषतं ॥ प्रथम गुरुदेव को अंग लिषतं ॥ साषी ॥ कवीर डंडोत गोविन्द गुरु, बन्दन अव जन सोइ ॥ पहिले भये प्रणाम तिन, नयो जो आगे होइ ॥ कवीर सतगुरु सवान को, सगा सोधी सेईन दाति (?) । हरि जी सवान को हितू , हरि जन सई न जाति ॥ कवीर वलिहारी गुरु अपण, धौ हांडी के बार ॥ जान माने थे देव, करत न लागीं बार ॥ सत गुरु की महिमा अनत, अनत किया उपकार ॥ लोचन अनन्त उघाड़िया, अनत दिषावण हार ॥

अंत—कवीर सिरजन हार विन, मेरा हितू न कोइ ॥ गुण अवगुण विहड़ै भई, स्वारथ बंधी लोइ ॥ आदिमध्य अरु अन्त लौ, अविहड़ सदा अभंग ॥ कबीर उस करतार का, सेवग तजै न संग ॥ कवीर अविहड़ अषंडित राम है, ताका नृभै-दास ॥ तीनि गुण को मेटिके, चौथे किया निवास ॥ अंग ६१ ॥ साषी ॥ १०१८ ॥ इति कवीर जी के अंग संपूर्ण भवेत् ॥

विषय—प्रत्येक अंग में विषय को खूब प्रतिपादित किया गया है और उसकी

महत्ता प्रकट की गई है। गुरुदेव का अंग, पृ० १-४। सुमरण का पृ० ४—६। आत्मा और ईश्वर का विरह पृ० ६—११। ज्ञान विरह का अंग पृ० ११—१३। परिचय पृ० १३—१७। राम तथा प्रेमरस पृ० १७—१८। लंवि, जरण, हैरान, निस्कर्म्मी, पतिव्रता के अंग, पृ० १८—२०। चेतावनी पृ० २०—२३। मनका अंग, पृ० २३—२७। सूक्ष्म-मार्ग, सूक्ष्म जन्म, माया, चाणक के अंग वर्णन, पृ० २७—३४। करणी विना कथनी, कथनी बिना करणी, कामी मनुष्य, पृ० ३४—३७। सहज, सत्य, भ्रमनिवारण, भेष, कुसंगति, भूत के अंग, पृ० ३७—४०। साधु महिमा मध्य, सार ग्रहण, विचार, उपदेश, विश्वास, पृ० ४०—५२, पियपहचान, विकताई, सामर्थ्य, कुशब्द, शब्द, जीवित मृतक पृ० ५२—६०। चित्तकपटी, गुरुशिक्षा, हेत प्रीति, शूर, काल, संजीवन, अपारखी, पारखी, अमल, अहारी के अंग, पृ० ६०—७२ तक। माँस अहारी, दया निर्वैर सुन्दरि, कस्तूरिया मृग, निन्दा निर्गुण, विनती, भूतबेली, बीहड़ आदि के विषय, पृ० ७२—९०।

संख्या १०३ यन. कवीर जी के पद, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य और पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दाताराम महन्त, कबीरी गद्दी, स्थान—मेवली, डाकघर—जगनैर, आगरा।

आदि—अथ कबीर जी के पद लिषते॥ प्रथम राग गौड़ी॥ माड़ी॥ सन्त नाम॥ दुलहनी गावहु मंगलचार॥ हमघर आये राजा राम भरतार॥ टेक अर्थ॥ दुलहनी आत्मा घरहि रहा। अथ कली॥ तन रत करि मैं मन रत करि हौं, पंच तत्व बरियाती॥ रामदेव मोरे पहुने आये मैं जोवन मैं माती॥ अर्थ॥ तन मन तासीर॥ पमेसुर सूरति करी॥ पाँच तत्त तिनकी तासीर॥ उलटि ब्रह्मसों लागी॥ तातें वरावती बणें॥ जोरि प्रेम सोई जोवन॥

अंत—तेज की आरती तेजके आगे॥ तेजका भोग तेज कौं लागे॥ टेक॥ तेज पषावज तेज बजावे, तेज ही नाचै तेज ही गावै॥ तेज की थाली तेज की वाजी, तेज के पहुप तेज की पाती॥ तेज के आगे तेज बिराजै, तेज 'कवीरा' आरती साजै॥ इति गौड़ी सपूरण भवेत्।

विषय—आत्मा परमात्मा, माया, पंचतत्वों आदि का सविस्तृत वर्णन रोचक पदों में किया गया है।

संख्या १०३ ओ. कवीर जी की साषी सबद, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—मूँजी, पत्र—१०३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ (सन् १७४० ई०), प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (यू० पी०)।

आदि—॥ अथ सवद॥ रागमाली॥ पंडित मन रंजिता॥ भगतिहि तत्यौ लाइरे॥ प्रेम प्रीति गोपाल भजिनर॥ और कारण जाइरे॥ अर्थ—पंडित मन में पुसी जो होइ रहा है॥ विद्या वल करि कुल अभिमान करि॥ सुचि अचार इन करि॥ और कारण

माया ॥ सो झूठ कारण जाता रहेगा ॥ ताते भगति हेत करि ॥ प्रेम प्रीति सों गोविन्द भजि ॥ सबद ॥ दाम छै पणि काम नाही, ज्ञान हैं पणि धंधरे ॥ श्रवण छै पणि सुरति नाही, नैन छै पणि अंधरे ॥

अंत --कहैं सबन सों त्यागहु भाई, बधिक बोट धरि आगे ॥ स्वारथ लागै फिरे स्वान ज्यूँ, काम कला सो पागे ॥ कहैं 'कबीर' मैं रहूँ अलग ह्वै, देष जगत की रीति ॥ ये सब कपट विषै में लागे, मैं करि नाम सों प्रीति ॥ राग २६ ॥ सब्द ४००९ ॥ इति श्री श्रव साषी सबद कबीर जी की सम्पूर्ण भवेत ॥ लिखतं दादू पंथी अतीत सुखराम ॥ कबीर पंथी निरति दास पठनार्थं ॥ पढ़ै विचारे बाँचे कोइ ॥ सुधि बुधि ग्यान विवेकी होइ ॥ जथारथ लिखि सम्पूर्णकरी ॥ भूलचूक माफ करणी ॥ संवत् १७९७ ॥ वैसाष वदि द्वादशी गुरुवार तादिन सम्पूर्ण भवेत् ॥ जो कोई याको पढ़ै विचारो ॥ राम राम ॥

विषय—माया की शक्ति, ब्रह्म का एकान्तज्ञान, भक्तिवाद, भिन्न २ सम्प्रदायों की भूलें, राम नाम महिमा, अलख का ध्यान आदि कबीरी ज्ञान का विस्तार पूर्वक वर्णन है ।

संख्या १०३ पी. कबीर स्वरोदय, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज-- मूँजी, पत्र--२९, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--२३५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० गोपाल, स्थान--बन्दी, डाकघर--दाऊजी, जि०—मथुरा ।

आदि—श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ अथ संत कबीर धरमदासजी हेत ॥ स्वरोदय लिख्यते । ॐ निसवासर काए ही वीस तारा ॥ छसे आंगुली एक विस हजारा ॥ अंजो भेद रहो लो लाई ॥ सतगुरु मिले तो देह वताई ॥ पाँच तत्त आव अस जाई ॥ घटिका भेद कहो समझाई ॥

अंत—आसन पद्म लगाइ करि, एक व्रत मन साध । बेटे डोले सोवता, औसे ही आराध ॥ भेद स्वरोदय कहत हुँ, सूक्ष्म कह्यो बनाइ । ता कुसुम विचारयो, अपने मन चित लाइ ॥ धरती टले गिरवर टले, घाव टले सुसमीत । वचन स्वरोदय न टले, मूरल सुर तन जीत । इति सत कबीर कृत ।

विषय—इसमें स्वर साधन योग वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—विवरण पुस्तक-मालिक की धैर्य्य-हीनता के कारण जल्दी में लिया गया है । फिर भी कोई महत्व पूर्ण बात छूटने नहीं पायी । ग्रंथ पहिले विवरण में आ चुका है ।

संख्या १०३ क्यू. मंत्र, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र-२, आकार—७½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन; पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बाला प्रसाद, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ मंत्र प्रात उठिबे कौ ॥ धरुमन धीर भ्रती षगु धनाँ दरसन दयै । इकवहि घाटै वाटै, औघट घटै यतो छयौ ॥ कह्यों कबीर ज दिनाँ मुकाना मुजग वहिआं । कबीर नाम रसु प्रित वहिआं ॥ धन्य धर्मदासु अमी सरोवरं ज नांच पाँच नाम ठेका के

जान्यौ जाही नाम ज्यौ होइ उवाह जो जांन्यै सोऊ, तरै पार ॥ कहै कबीर सुनौं धर्मदास अजर अमर हंसके पास ॥

अंत—॥ मंत्र तिलकानि कौ ॥ अषै फनिअ फनि तिलकुहै अछै विरछ फला चारि हमरौ महातमु जांन आयौ करौ तिलकु ततसार ॥ अग्रत्रिकुटी मूल है त्रिकुटी मधि निसांन। अग्रही पाऐकु ब्रह्म है करौ तिलकु निरवांन ॥ तंत तिलकु त्रैलोक मैं वरत गुफा असथिर। षम्भ लिलाटै सोहई तंत तिलकु गंभीरा। जोग संतनि षांनि है सोभा है विनुनांम की ॥ देषौ तंत विचारि साहिब कबीर मस्ति कही अबि जु अगम अपारं कंठैकिंठी विराजई उगिल हंस सर्घानदु दिया उज्जिल वाहिर उज्जिल भीतर उज्जिल जौ होइ कहै कबीर संति वोलिक्यै कालुन झंपै आइ ॥

विषय – कुछ संतों की नित्य कृत्य के मंत्रों का संग्रह।

संख्या १०३ आर. नसीहतनामा, रचयिता—कबीर साहिब, कागज—बाँसी, पत्र—३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७२९ वि० (सन्—१६७२ ई०), प्राप्तिस्थान—श्रीरामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—नसीहत नामा लिषते ॥ कबीर ॥ एक फकीर अलह का प्यारा ॥ गल्त रहै दुनिया ते न्यारा ॥ दरद वन्द पक्का दरवेसा ॥ बूझै बहुरि न रहै सन्देसा ॥ एक अतीत दरस को आया ॥ आदर करिकै है बैठाया ॥ सखत वचन मुख सों कह्या काजी ॥ काफिर का क्या कीजै राजी ॥

अंत—औगद दोष जींव के जाने ॥ बाहर जाता भीतर आनै ॥ मतलब एक धनी सों राषे ॥ दूजे अगो आन न भाषै ॥ आप देव औरन पै घावै ॥ सो मोमन साहिब को भावै ॥ ॥ दोहा ॥ ए मो मन हजरत कहै, हरिदास कर प्यार ॥ ऐही तालिब अंप के, ऐही अलाह के यार ॥ नसीहत नावाँ समाप्ता ॥

विषय—इसमें कबीर साहिब ने काफिर कौन है? इसकी व्याख्या की है। पाखण्डी मुसलमानों को बहुत फटकारा है तथा अन्यान्य नीति सम्बन्धी उपदेश दिये हैं।

संख्या १०३ एस. रामरक्षा, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राममूर्ति शर्मा, स्थान—वल्टीगढ़, डाकघर—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—ओं राम की रक्षा ॥ ओं रोम की रक्षा रोम रिषि जी करैं। चाम की रक्षा रामजी करैं ॥ मास की रक्षा महादेवजी करैं। हाड़ की रक्षा राजा भूजी करैं ॥ कपाल की रक्षा कपिल मुनिजी करैं। करण की रक्षा करणजी करैं ॥ नेत्रों की रक्षा निरंजनजी करैं। नाक वाल की रक्षा लछिमनजी करैं ॥ होठनि की रक्षा हनुमानजी करैं। दाँतन की तेतीस कोटि देवताजी करैं ॥ जिह्वा की रक्षा माता सरस्वतीजी करैं। गरे की रक्षा गोपालजी करैं ॥ गुदी की रक्षा चतुरभुजजी करैं। बय की रक्षा बण देवजी करैं ॥ बाँह की रक्षा वाराहजी

करैं । हृदय की रक्षा हरिजी करैं ॥ छाती की रक्षा छप्पन कोटि देवता करैं ॥ नाभि की रक्षा ब्रह्माजी करैं । एन्द्री की रक्षा इन्द्र देवताजी करैं ॥ कमरि की रक्षा कमलापतिजी करैं । मूल की रक्षा पृथिमीजी करैं ॥ जाँघ की रक्षा जनार्दनजी करैं । घोंटू की रक्षा गोरखनाथजी करैं ॥ पीड़ी की रक्षा परसुरामजी करैं । एड़ी की रक्षा रघुवीरजी करैं ॥ तरवा की रक्षा वलिवावन बीरजी करैं । नखों की रक्षा नरसिंहजी करैं ॥

अंत—उछल करै छल कौं मारौं । वल करै वल कौं मारौं ॥ दिष्टि करै दिष्टि को मारौं । मुष्टि करै मुष्टि कौं मारौं ॥ छल नहीं चलै वल नाहिं चलै । दिष्टि नहीं चलै मुष्टि नहीं चलै ॥ दीठि जरि राषि सरीर । ब्रंजि मांहि दै गए ब्रह्मा विष्णु महेस ॥ ऊपर चढ़े थल उतरैं हनुमान हंकारै ॥ टोढ हाथ कापा तामें सब समाया ॥ चौकी फिरती रहै वल वावन वीर की । सत्य राम रक्षा भनैदास कवीर ॥१॥ संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ राम राम ॥

विषय—राम रक्षा मंत्र ।

संख्या १०३ टी. रामसागर, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गो० रघुवरदासजी, स्थान—ठा० खुशहाली, डाकघर—सिरसागंज, जि० मैनपुरी ।

आदि—अथ ग्रंथ रामसागर लिषते ॥ चौपई ॥ नेमषार तीरथ मैं करि सनान । रिष ब्रिंदा सोनक प्रधांन ॥ करि सिनान मिलै बैठे आई । हरि पावन का करो उपाई ॥१॥ रिषि सव बूझै आपस माहीं । उत्तर किनहूं आवै नाहीं । तीस मैई तांहां नारद आऐ । करि जोड़ि रिष मांन वधाऐ ॥२॥ वंदन करै वीनतील्यावै । कहौ मूनि हरि कैसें पावै । सकल पाप कैसी विधि जाई । कहीऐ रिषजी हमसूं संमझाई ॥३॥ दांन विनां तप साधै नाहीं । तीरथ हमकूं हूँ नहीं जाहीं । जिग जोग साधन नही करैं । अरु विधि विन कीऐ उधरैं ॥४॥ नाना व्रत हम करैं न कोई । इंद्री निग्रह हम पै नहीं होई ॥ करा न कोई देव अधारन । ध्यांन मुनि को करां न साधन ॥५॥ सुनां न सास्त्र पढ़ां नहीं वेद । हरि पावन का कहिये भेद । भौ सागर सैं उतरैं पारा । अर सहजै पावैं मोषि दुवारा ॥६॥ करिहौ क्रिपा नारद मुनि देवा । रिषि सब करैं तुम्हारी सेवा ।

अंत—गुरू रामानद के प्रताप । अन्त्र हरिजी प्रगटे आप ॥ कहै कवीर ऐभेद अगाध । इंन मैं समझे विरलासाध ॥७६॥ पूरण ग्यांन कह्या मजि सार । हरि हरि की वानी निरधारि ॥ सुनैं सीषै समझै कोई । ताकूं अपै अमर गति होई ॥७७॥ सूरज उदै ज्यूंतिमिर निसाई । भ्रम करंम यूं जाइ बिलाई ॥ पारवती सूं भाष्यो ईस । मनसा वाचा विसवावीस ॥७८॥ सोई नारद सोनक समझाई । सब रिषन के भ्रम गुसाई ॥ निभया रांम ल्यौ लावै । आनँद मंगन प्रेम विधावै ॥७९॥ एह ग्रंथ सुरिग भ्रम निवारै । अपनौं मनहरि चरणांधारै ॥ हरि तंतू प्रेम बंध्यो मनधीर । ग्यांना का गुरु कहै कबीर ॥८०॥ इति ग्रंथ रामसागर संपूरण ।

विषय—राम राम रटने का महत्व वर्णन ।

संख्या १०३ यू. शब्द कहरा, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—लाला बालाप्रसादजी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि० मैनपुरी ।

आदि—॥ सवद कहरा ॥ साषी ग्यांन ग्रंथ साही किअ सापी पदु ब्यौहारु । अपनौ वंसु डिढ़ाइऐ, चूरामनि वितु जो सास ॥१॥ साषी साँची सोइ जांनियौ । जो कछु कही कवीर । और कियौ जो कहत हैं । ते ह्वै है दामन गीर ॥२॥ साषी ॥ आछिर के ॥ वारपार मै निइचैं होय, आछर रह्यौ समाइ । दोइ अछर के वीच में, सत गुरु दिया लषाइ ॥३॥ साषी ॥ छर ॥ अक्षिर निहचैं अक्षिरा, अंछिरा निजु नाम । तीनि समुझलै जोनी षेलै, सो पांवै पदु निर्वान ॥४॥

अंत—गूंगा कों ऐकु वैहरा मिलि गयो सैनहि सैन लषावै हो । जौ लगि मारगु वूझा हो ॥ सूझ के अगमैं वूझहि रांनी सरिता सिंधु समांनी हो ॥ वीच नगर जव परौचि गया है साहजाँई मारगु भूला हो ॥ फिरि वूझै वास्यौ कहिऔ वावरो वाकों कछू न सूझा हो ॥ टूटि अभूषन कंचन है गऐ हीरा कौ नामु हिराना हो ॥ कोटिक सागर भरे नीरस्यौ वाहिर भीतर पाँनी हो । फूटि कुंम्ह जल जलहि समांन्यौ जाइगति काहि सुनाऊं हो ॥ यदि अंत संमझैं नहीं भाई तौल्यौ चरचा कीजै हो ॥ कहै कवीर सुन्यौ ध्रमदास जांनि मौनता हूजै हो ॥७०॥

विषय—आत्मज्ञान, कबीर का धर्मदास को अग्रम दिखाई देने का वरदान, आवागमन से छूटने का विधान । अवगति का विचार । ब्रह्म विचार, भक्ति और ज्ञान-ध्यान का वर्णन ।

संख्या १०३ व्ही. शब्द प्रथम मंगलादि, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बाला प्रसादजी, स्थान—कीठौत, डाकघर—करहल, जि० मैनपुरी ।

अंत—॥ सवद अजपा सुमिरन ॥ वंदि छुड़ाए नांम तुम्हारा ॥ तुमहीं वंदि छुड़ावन हारा ॥ धर्मदास विन मैं करजोरी । वंदि छोरि सुनु विनती मोरी ॥ अजपा सुमिरन देउ लषाई । जामैं सुरति जो रहै समाई हंग सो हंग सो हंगम सोई । नैहचै आदि नामु पीषै जो कोई ॥ ताकौ आवा गमनु न होई । ... ... ॥ चौरासी तें छूटि कैं. जीव पहुँच्यै पुरुष के पास ॥ ... ... । ... ... ॥ अरध ऊरध की करौ । सुमिरनु की करि अजपा कौ जापु । अनहद में धुनि ऊपजै । सौहंगम आपु ही आप सौहंग सबदु लै हंसा लोक समान । कहै कबोर सुनों हो धर्मदास, सोहंगम सबद है सार । सोहं गम सवद कौ भेदुजो पावै । हंसा सो आवै लोक हमार ।

विषय—सृष्टि निरूपण, नाम माहात्म्य, अजपाजाप, संसार की निस्सारता, सुमिरन, तथा गुरू की महत्तादि का वर्णन ।

संख्या १०३ डब्ल्यू. शब्द राछरौ, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण

(अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, प्राप्तिस्थान—ला० बालाप्रसाद जी, स्थान—कीठौत, डा०—सिरसागंज,—जि० मैनपुरी ।

अंत—भाउ भगति नहिं सघर रे बाज पौ नहिं सांतिज्ञ पुरे चौरासी के जीवहु इहौ कही हमरी मानुरें । कही हमारी झूंठ मांन्यो समझि बीतालेउरे किसन जाकी । सषि बोल्यौ हमैं दो सुमति देउरे ॥ कहै कबीर सति नांमु चींन्यौं कवहुँन हौ हैं तेरी हानि रे ॥ जनम जनम के करम काटौ कही हमारी मानुरें ॥ साषी ॥ परदा रहती पद्मिनी सुनन गुर मुष वात । ते सतगुरु कुतिआ करी, रीतें फिरे उघारे गात ॥

विषय—काल की प्रबलता, अनामति का स्थान, मुक्तिका साधन, हंसों की विशुद्धता और पुरुष मिलन, संसार की निस्सारता तथा किये का फल कथन एवम् स्तुतियों का कथन ।

संख्या १०३ यक्स. शब्द रमैनी, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—७ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ला० बालाप्रसाद जी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ सवदु रमैनी ॥ अमर लोक ते हम चलि आए । तीनि लोक जम लूटत पाए ॥ जम लूटैं जीवन कौं नास्यैं । दसौ दिसा जम सवकौं फांस्यौ ॥ भेष अधारि धारि सवु जगुनांचा ।············ ॥ नैऊंनाथ चौरासी सिधा । लूटि लूटि जम सवकौं गिधा ॥ × × × लूटे ब्रह्मा विश्नु मुरारी । अरु लूटे शंकर त्रिपुरारी ॥ ब्रह्मा के सुत कोटि अगासी । ते लूटे निरकाल विसासी ॥ जासों कहौ नंद कौ लाला । सोर भयो सवहुन को काला ॥ छल वल करि कोरौं सँघारे । पंडु बड़ाई हि मारे ॥ पंडनुतैं को भगतु कहाया । ते क्यौं गरै हिमन्यौ पठाया ॥ दसरथ सुत कहियै श्री रामा । उनहुँन जान्यौं काम अकामा ॥ जान्यैं तीनि प्रपंची देवा । उनहुँ न जान्यों जम कौ भेवा ॥ गर्व आपने रहो भुलाई । अगम पंथु सूझ नहिं भाई ॥

अंत—सुषदेऊ गुरु किए जनक विदेही । वे भी उनके परम सनेही ॥ काग भुसुंड सिंभु गुरु कीन्हां । अगम अगोचर सब कहि दीन्हां ॥ ब्रह्मा गुरु अगिनि कौं कीन्हां । होम मंत्र तव पूरन दीन्हां ॥ वशिष्ट गुरु कीन्है रघुनाथां । पाइ भगति तव भये सनांथा ॥ किसन गये दुरवासा सरनां । पाइ भक्ति तव तारन तरना ॥ नारदु गुरु बलिअै करि आए । लष चौरासी तुरत वचाये ॥ साषी ॥ राम किसन तंको वदौ, तिनहूँ तौ गुरु कीन । तीनि लोक के वे धनी, ते गुरु आगे आधीन ॥ साषी ॥ गुरु सेवा जुग चारि है । गुरु सेवा फलु एक । वाकी सखरिना करै, संतनु कीन्ह विवेक ॥

विषय—आत्म ज्ञान सम्बन्धी कुछ पदों का संग्रह ।

संख्या १०३ वाई. साखी कबीर, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० द्वारिका प्रसाद, स्थान व डाकघर—एत्मादपुर, आगरा ।

आदि—राधास्वामी दयाल की दया राधा स्वामी सहाय ।। साखी कबीर साहिब । जहिया जन्म मुकुते होता । तहिया होता न कोए ॥ छठी तुम्हारी हौ जगा ॥ तै कहाँ चला विगोए ॥ जाय छठीलो आपनी, बात न पूछे कोय ॥ जिन्ह यह भार लदाइया, निरवाहे पुनि सोय ।। शब्द शब्द बहु अन्तर, सार शब्द मत लीजे । कहहिं कबीर जेहि सार नहि दरसे ॥

अंत—चली जात देखी इक नारी ॥ तर गागर ऊपर पनिहारी ।। चली जात वोह वाटहिं वाटा ।। सो अनिहार के ऊपर षाटा ।। जाइन्हि मरे सपेदी सवरी ।। षसम न चीन्हौ घरनी भई वोरी ।। साँझ सकारे अलि वारे ।। षसमहिं छोड़ रहे लबावारे ।। वाही के संग निस दिन राँची ।। पिया सों वात कहें नहिं साँची ।। × × ×

विषय—ब्रह्म ज्ञान तथा रहस्य वाद ।

संख्या १०३ जेड. साखी, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सुन्दरलाल, स्थान—बरचावली, डाकघर—कोसी कलाँ, जि०—मथुरा ।

संख्या १०३ ए[२]. शब्द सुमिरु, रचयिता—कबीरदास (स्थान—काशी), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—७½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बाला प्रसाद जी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

संख्या १०३ बी[२]. तत्वस्वरोदय, रचयिता—कबीर (स्थान—काशी), कागज—स्यालकोटी, पत्र—१२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८ वि० सन् १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जानकी प्रसाद पंडा, स्थान—पृथ्वीपुरा, डाकघर—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—॥ सत्तनाम दया गुरू की ॥ अथ लिखते कबीर साहिब का त्तत्तसरोदय ।। सरब सहश्र को सहश्र है, चारिवेद को जीव ।। वे मता सम विचारिये है, ताको भी है पीव ।। पवन चले पानी चले औ पृथ्वी चलि जाय ।। वचन सरोदा न चले, सन्त लेय अर्थाय ।। सनिवार, भुमवासरे, दहिनी वारी कृष्ण पक्ष विशेष ।। बुध गुरु सोम वासरे, बाईं नारी सुकल पक्ष विशेष ।।

अंत—।। शब्द परीक्षा ।। सहीर तीव रस चारी ।। संकट ।। स्वाँग ।। जाय चन्द्र देवता पायकें ।। गुन सब रास ।। दोक शब्द दो स्थान तत्तन पंच आस्थान ।। जापु रहु देवता पायके ।। गुन सव रास एक सब्द दोई भोहे ।। असिथ गज आकास फागुन सुन छप्पर स्थान ।। इती कबीर सा० का ग्रन्थ सम्पूरन मिती भादौं सुक्ल एकादशी ।।

विषय—स्वर द्वारा भविष्य की बातें जानने का विज्ञान वर्णित है ।

संख्या १०३ सी[२]. उपदेश चितावनी, रचयिता—कबीरदास (स्थान—बनारस), कागज—बाँसी, पत्र—३, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामचंद्र सैनी, स्थान—बेलनगंज, आगरा ।

आदि—॥ अथ उपदेश चिंतावणी लिषतं ॥ सतगुर कही अनाहद वाणी ॥ सो दास कबीर बषाणी ॥ अन्तौ चित मोह समाया ॥ सतगुरु कीन्ही कछु दाया ॥ परतीति भई ते पाया ॥ तब सिष्टि माहि प्रगटाया ॥ इह जीव सनातन आही ॥ कछु हरष सोग नही ताही ॥ जब इच्छा-रुपी आया । अनौ विधि ले भरमाया ॥ ले टूका टूका काँटा ॥ सत कुटुम्ब कबीले बाँटा ॥

अंत—जब भरा कुम्भ मनमाना ॥ तब घर २ कीन्ह पयाना ॥ बिछुरा संग साथ सुहेला ॥ फिर मिलना भया दुहेला ॥ इहि विधि जीव चल्या अकेला ॥ ले मरघट घाट धकेला ॥ उहाँ पर्‍यो धनी सौं कामा ॥ जीय पावै नहीं विश्रामा ॥ ए मूरष मन सुनि लीजे ॥ अवरांम रसाइन पीजे ॥ ते देष्या जग व्यौहारा ॥ है झूठा संग पखारा ॥ मनमें मन कीजे धीरा ॥ कहिया उपदेश "कबीरा" तीन लोक जो आही । तहाँ विमष एक सुष नाहीं ॥ उपदेस चितावणी समाप्तः ॥

विषय—इसमें भौतिक शरीर का नश्वर-नाटक बतलाकर उसे निःसार सिद्ध किया है और राम का नाम भजने के लिए प्रेरित किया है ।

संख्या १०४. काल्‌ की साखी, रचयिता—काल्‌, कागज—बाँसी, पत्र—४, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६१, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दाताराम महन्त, स्थान व डाकघर—मेवली, जि० आगरा ।

आदि—॥ काल्‌ की साखी लिषते ॥ दोहा चूक मती औसर भलौ, अपणी आदि संभाल ॥ बांध लेव काल्‌ कहै, पाणी पहिली काल ॥ पहिले पालिजु बांधिए, आइ नीर ठहराइ ॥ पुनि बाँधे काल्‌ कहै, कोटि जीव विवसाइ ॥ साधु अमर संसार में, जिन्ह का पूरा मन्त ॥ काल्‌ कीरत की धुजा, दूरोही दीसन्त ॥ कहे काल्‌ कीजै नहीं, उभय ठौर उपगार ॥ स्यंघ (संग) सांप कूवै पड़े*, काटे सोई गँवार ॥

अंत—दोहा निवड़ पिवड़ वहु दीनता, सब सौं आदर भाव ॥ कहै काल्‌ तेई बड़ी, जामे वड़ा सभाव ॥ पड़दै पाणी ढाकिया, सन्तो करो बिचार ॥ सामा सामी पचि मुवा, काल्‌ यह संसार ॥ (कोड़े—अग्नि स्थान) आठ पहर ओटाँइए, काल्‌ कैंड़े* लागि ॥ अति बाणी तत्ता भया, तऊ बुझावै आगि ॥ अति ठंठा काल्‌ कहै, पड़े अगिनि में तेल ॥ काल काल ह्वै नीकसे, यह कसमक का खेल ॥

विषय—नीति संबंधी उपदेशात्मक दोहों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—काल्‌ का नाम विवरण के प्रथम भाग में नहीं आया है ।

---

* वैपरे = करै ॥

यह बुन्देलखंडी मालूम होते हैं। इनके, 'कोड़े', 'कमसल', 'पिवड़', 'घावड़' आदि शब्द इसके द्योतक हैं, परंतु निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

संख्या १०५. कमालजी की वाणी, रचयिता—कमाल (स्थान—काशी), कागज—मूँजी, पत्र—३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, स्थान—बेलनगंज, जि० आगरा।

आदि—॥ कमालजी की वाणी लिख्यते ॥ राग विलावल ॥ गुरु शत्तजंय अंम्रत वाणी ॥ गुर बिन मुकत न ह्वै है प्राणी ॥ टेक ॥ गुरु है आद अन्त के दाता ॥ गुरु है मोक्ष पदारथ आता ॥२॥ गुरु गंगा काशी धाना ॥ चार वेद गुरु गम सौ जाना ॥ गुरु को बाढ़ि भजै जो आना॥ तिन्ह पसुवन को फोकट ज्ञाना॥ अठ सठ तीरथ जो भर्म आवै ॥ सो फल गुरु के सीत्र सो पावै ॥

अंत—॥ राग पूरवी ॥ जो जन जाके हाथ बिकाना ॥ जाको मन ताही सो लाग्यो, कहा रंक कहा राना ॥ टेक इन्ह पाँचन मिलि करी ठगौरी, ताही माझ समाना ॥ कहै कमाल मेरी गई ठगौरी जब मैं ठग पहिचाना ॥ इति कमाल के पद सम्पूर्ण।

विषय—(१) गुरु महिमा। (२) आत्म-पूजा। (३) निर्गुण ज्ञान। (४) भक्ति।

संख्या १०६. वैद्यसुधासागर, रचयिता—लालाकन्हैया लाल जी (स्थान—साद्दूपुर मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—६७०, आकार—१०¾ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०२००, पूर्ण, रूप—नवीन, सजिल्द, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला गैंदालाल जी गोपाल, स्थान—शिकोहाबाद, कटरा बाजार, मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ मंगलाचरणम् ॥ यस्यागाध दभोद धेणुकलसत्रैलोक्य सौख्यालये। यद्वात्सल्य मनल्पकल्पजनताधिव्याधि सद्भेषजम् ॥ यल्लीलांगमनेक कोटि गणित ब्रह्मांडकोद्घाटनं। शंदक्ष्यात्यकृपा निधिः परमिषालोकेश्वरः केशवः ॥ १ ॥ दोहा ॥ जयति गजानन शुभकरन, लम्बोदर गुण खान। जिनके सुमिरण से कटें, भव वाधा अज्ञान ॥ १ ॥ रुज संकट संसार में, रोग ग्रसत नरनार। तिनहित वैद्यक ग्रंथ बहु, रचे मुनीस अपार ॥ २ ॥ उनको सार निदान कछु, संग्रह करि व्रज-बोल। विरचों वैद्यक सुधा निधि, जो रुज निधन अमोल ॥ ३ ॥ शशिधर शिव कैलाश पति, मृत्युंजय शुभ जान। संकट मोचन नाम प्रभु, भजहुँ होय कल्यान ॥ ४ ॥ प्रथम नागार्जुन ब्रह्मा दक्षप्रजापति अश्वनी कुमार इन्द्र धन्नंतरि और महर्षि सुश्रुत आदि को प्रणाम करता हूँ कि जिनकी कृपा से इस संसार में आयुर्वेद वैद्यक शास्त्र का आगमन हुआ अर्थात् जिसमें अवस्था के हित अहित पदार्थ रोगों का निदान व्याधियों की चिकित्सा कही हो उसको आयुर्वेदक कहते हैं। प्रथम ब्रह्मा जी ने अथर्व वेद का सारांश लेकर आयुर्वेद का प्रकाश किया और बृह्म संहिता नामक एक ग्रंथ निर्माण किया तदनन्तर ब्रह्मा जी ने दक्ष प्रजापति को सांगोपांग आयुर्वेद का उपदेश किया और उसके ८ भाग कर दिये वे इस प्रकार हैं, शल्यतंत्र १ शालास्यतंत्र २ काया चिकित्सा ३ भूत विधता ४ कौमारभृत्य ५ अगदतंत्र ६ रसायनतंत्र

७ वाजीकरणतंत्र ८। इनके लक्षण आगे कहूँगा। तदनंतरदक्ष प्रजापति से स्वर्ण वैद्य अश्विनी कुमारों ने आयुर्वेद को पढ़ा और अश्विनी कुमार नामक संहिता निर्मित की तदनन्तर से क्रोधातुर भैरव ने ब्रह्माजी का शिरच्छेदन किया तव इन्हीं दोनों अश्विनी कुमारों ने अनेक उपचारों से उनका मस्तक जोड़ा था। यह आश्चर्यजनक इन कार्यों को देखकर परमोद्यमी शचीपति इन्द्र ने उनसे इन परमअद्भुत आयुर्वेद को पढ़ा तत्पश्चात् वही चिकित्सा शास्त्र आत्रेय आदि बहुत से मुनियों को अध्ययन कराया फिर मुनि श्रेष्ठ भगवान् करुणा निधि आत्रेय मुनि ने मनुष्यों पर अनुग्रह एक अत्रेय संहिता रची फिर वही अत्रेय संहिता अग्नि-वेश भेदजात् करम पराशर क्षीण पाणि हरीत इनके व इनके शिष्यों को पढ़ाई। तदनन्तर देवराज इन्द्र ने मृत्यु लोक निवासी मनुष्य व्याधियों परिपीड़ित देखकर इन्द्र का हृदय पिघला और धन्वंतरजी से प्रार्थना की × × ×

अंत—एपरमचर्ण (८) पात्थर के खरल में खपरिन्मा को पीस पानी में भली भाँति भिजो देवैं फिर उसके ऊपर कंजल को नितार लेवे फिर नीचे कूड़ों को फैंक दे इसको सुखाकर पपड़ी की समान जब हो जावे तब उसका चूर्ण करे फिर त्रिफला के रस को तीनि भावना देवे फिर दसवाँ भाग कपूर का चूर्ण मिलावे यह चूर्ण आँजै तो सम्पूर्ण दोषों की शांति होती है और नेत्र के सब विकार दूर होते हैं॥ स्नेहन चूर्ण (९) सफेद सुरमे को अग्नि में तपाकर सात बार त्रिफले के रस में डालकर बुझावे फिर तपाकर सात वार स्त्री के दूध में बुझावै फिर इस सुरमे का चूर्ण करके नित्य नेत्रों में आँजै तो नेत्रों के सव रोग जायँ॥ नयनामृत अंजन (१०) शोधे हुए सीसे को पिघलाकर उसमें उसके वरावर ही शुद्ध पारा डालै और दोनों के वरावर काला सुरमा डालै फिर इन सबको इकट्ठा कर चूर्ण कर उसमें दशवाँ भाग कपूर डालै फिर नेत्रों में आँजै तो नेत्रों के रोग निश्चय जायँ इसका नाम नयनामृत है॥ दृष्टि को साफ करने वाली सलाई॥ शोधे हुए सीसे कौ वार वार तपाकर त्रिफला के रस में—घी में—गोमूत्र में—शहद में—वकरी के दूध में वुझावै फिर इसकी सलाई बनाकर नेत्रों में फेरै तो इससे नेत्रों के सर्व रोग दूर होते हैं। इति॥

विषय—१—मंगलाचरण, आयुर्वेदागमन, ग्रंथारंभ, सृष्टि के उपजाने का कथन, इन्द्रियों के नाम विषय, पंचतन्मात्रा का स्वरूप, महाभूतों के गुण अष्टप्रकृति, समप्रकृति, सोलह विकार, शरीर उत्पत्ति, रजस्वलादि स्त्रियों तथा नपुंसक मर्द का वर्णन और गर्भाधान, गर्भ के अंगोपाङ्गो का वर्णन पेशी, उनके कर्म, भेद, अस्थि, मज्जा वीर्योत्पत्ति, आहार गति, आमा शय स्थान, वायु स्थान और नाम, दोष-शब्द की निरुक्ति, वायु का स्वरूप, पित्त का स्वरूप, पित्त के नाम व कर्म, कफ, धातु, रस, रुधिर, मांस, आशय, कला, त्वचा, गर्भ स्थान, संधि, शिरा, स्नायु, धमनी' कंडरा रंध्राणि, स्रोतांसि, जालानि, कूची, रज्जन, सेवन्य, रोमकूप, संघात, सीमंतामंत्र, गर्भ के अंग व कोणाधि, नख, केश गर्भवती के कार्य्यादि सब बातें यकृत्यादि की उत्पत्ति। दाइयां तथा उनके कार्य, प्रकृतियों के लक्षण, दिन चर्य्या, ऋतुओं के नाम गुणों तथा निद्रागुण—नियम वर्णन [पृ० १–५५] (२) औषधियों का विधान, स्वरस बनाने की विधि, हिम, मंथ,फाँट,कल्के, चूर्ण उष्णोदक, क्षीरपाक, क्वाथ, अवलेह, गोली, घृत, तेल, पाक, संधान आदि बनाने की विधि [५६–७०] ३—औषधियों

का कोष—अतीस से लेकर बूँदी के लड्डू तक नाम तथा गुणादि सहित [७०–४३०] ४—सोना चाँदी मारना तथा अन्य धातुओं के शोधने की विधि [४३१–४४८] ५—सुदर्शनादि ४७ प्रकार के चूर्ण बनाने की विधि गुण तथा प्रयोग का वर्णन [४४९–४५७] ६—तोल प्रमाण तथा वालुकादि १४ यन्त्रों की विधि पारिभाषिक संज्ञा [४५८–४६६] ७—मल, आखा, कोष्ट, त्रिजाति, चतुर्जाति, चतुर्भद्रक, पंचकोल, चतुरअम्ल, पंचअम्ल, पंचचिरा, क्षीरवृत। लवणादि वर्ग, मूल, गरम, कषाय, बजखाखनामा, नाड़ी आदि ११ प्रकार की परीक्षाएँ, सात प्रकार के ज्वरों के लक्षण, निमोनिया, वात ज्वर चिकित्सा, दशमूलादि ७ क्वाथ, कल्पतरु व ज्वर धूमकेतु महाज्वरांकुश (रस) वटिका, भस्म, स्वाँस कुठार, ज्वरांकुश और त्रिपुर भैरवादि रस, स्वेद, कुछ क्वाथ तथा अवलेहादि के नुसखे। इसी प्रकार पित्त कफ ज्वरादि की चिकित्साएँ। सन्निपातादि चिकित्सा, मलयांक के लक्षण, अनेक प्रकार के ज्वरों की चिकित्सा (धूप) तेल, चरनी, चूर्ण, रायता, रसादि। ज्वर में मूर्च्छा की तथा हिचकी व खांसी आदि की चिकित्सा। अतीसार चिकित्सा, संग्रहणी, ववासीर, भगंदर, पथ्यापथ्य, जठराग्नि तथा मंदाग्नि आदि। भस्मरोग अजीर्ण विशाचिकाद्व विशेषद्रव्य के अजीर्ण, कृमि रोग, पाण्डु-कामला-हलीमक का निदान, लक्षण तथा चिकित्सा, रक्त पित्त, अम्लपित्तादि [४६७–६३८] ८—यक्ष्मादि शब्दों की निरुक्ति, क्षय रोग के पूर्वरूप, लक्षण और चिकित्सादि शोक शोष, उरक्षत, हिचकी, काश, खांसी, स्वाँस, स्वर भेद अरोचक छर्दि, मूर्च्छा, तंद्रा, सन्यासभ्रम, मदात्य, दाह, उन्माद, अपस्मार, मृगी अर्दित, शूल, अर्पित, वखात प्रत्याध्यान, धनुर्वादकु आदि निद्रानास, अनेक प्रकार की वात, उदावत, अफरा, गुल्म, प्लीहा यकृति रोग, हृदय रोग, मूत्रकृछ, पथरी, प्रमेह, उदर रोग, मेघकृश, शोथ, अंडवृद्धि गलगंड, व्रण शोथ, उपदंश; शुक्र दोष, कुष्ट, दाद [६३८–१०५४] ९—आर्द्रक खंड, पित्त, विसर्प, विसोदक, स्नायु (नहरुआरोग, फिरंग, मसूरिका, मसूरिका भेद, क्षुद्र-रोग, जवानी में सिर पर सफेद वालादि, शिररोग, नेत्ररोग, वर्त्मवंधन, निमेष, यक्ष, संधिज रोग, अम्लाति वासव, नेत्र रोगों की चिकित्सा, कर्ण रोगों के लक्षण तथा चिकित्सादि, माशिका रोग, मुख रोग, दंतादि, जिह्वारोग, गल रोगादि लक्षण तथा समस्त मुख रोगों की चिकित्सा [१०५५–११९४] (वैद्य सुधासागर नामक ग्रंथ सम्बन्धी) १०—विषाधिकार, विष के भेद, कार्य्य, परीक्षा, गुण तथा चिकित्साएँ। विच्छू इत्यादि के काटने तथा अन्य औषधिरूप में आये विषों का पूरा-पूरा वर्णन। स्त्री रोगाधिकार [प्रदर-प्रदर के भेद और उनके लक्षण] सोम रोगाधिकार [सोम रोग के लक्षण, चिकित्सा योनि रोग, योनि कन्द, वन्ध्या स्त्री की चिकित्सा, वन्ध्या के पुत्र होने की चिकित्सा, गर्भिणी के रोगों की चिकित्सा, प्रसव का समय, प्रसव पर मंत्र, मूढ़गर्भनिदान सुश्रुतोक्त आठ प्रकार की असाध्य मूढ़गर्भिणी, योनि संवरण व्याधि, मूढ़गर्भ चिकित्सा, गर्भच्छेदन प्रकार, सूतिका समस्त रोगों की चिकित्सा प्रसूता के पथ्य की अवधि, स्तन रोग की चिकित्सा] [११९५–१२४५] ११—बालक रोगाधिकार [बालग्रहों के नाम, उत्पत्ति, बालकों को पकड़ने का कारण, बाल ग्रह ग्रसितलक्षण, स्कंदापस्मार ग्रहादि के लक्षण, उपभेद तथा चिकित्सा, उतारे के मंत्र-जंत्र तथा उनकी विधि, बालकों के निदान, तालुकंटक, महापदम, कुकुरा,

तुंडी तथा गुदा, अग्निपूत, अजगल्ली, परिगर्भ, बालक के रोगों की चिकित्सा, ज्वरादि की चि० [१२४६–१२७६] १२—वास्तिकरण अधिकार—नपुंसक के ल०, असाध्य क्लैव्य, क्लैब्य-चिकित्सा, वाजीकरण रति वर्द्धक गोक्षीरादि मोदक मदन मंजरी वटी, तथा कुछ पाकादि वर्णन [१२७६–१२८६] १३—रसायनाधिकार—रसायन का फल तथा विधि, रसायन का उदाहरण, लोह गूगल पंच कर्मो के नाम, वमन विधि, विरेचन, दस्तबंद होने की अवधि स्नेह वास्त की विधि, नस्य ग्रहण, इसके भेद तथा लक्षण, रेचन और स्नेहननस्य का उपयोग तथा चिकित्सा, धुआँ पीने की नली की नाप, विधि, धूम्रपान में औषधियों का कल्क, घर में देने की धूनी, अपराजित धूप, माहेश्वर धूप, धुम्रपान में वर्जित काम, कुल्ले करने की रीति, कुल्लों के भेद उनकी औषधियों की मर्यादा, कुल्ले और कवल में उनकी तादाद, कवल विधि, मूर्हा तेल की विधि, कान में तेल डालने की विधि, लेप विधि, फस्त की विधि, शुद्ध-रुधिर का स्वरूप, बिगड़े रुधिर का स्वरूप, वायु आदि से बिगड़े रुधिर का ल० तथा उनके पारस्परिक मिश्रण से बिगड़े रक्त के लक्षण, इतने रोगों में रुधिर बढ़ाया जाता है और इतने में निकालना योग्य है, रुधिर बहुत निकले उसका निकलना बंद करना, रुधिर अधिक निकले तो यह रोग होय, रुधिर छुड़ाने का कुपथ्य, दुखती आँखों का उपाय, सेक विधि, आर चोतन की विधि पिंडी की विधि, विहाल की विधि, तर्पण विधि, पुटपाक, अंजन विधि, लेखन करने वाली बत्ती, रोपण करने वाली रस क्रिया, लेखन चूर्ण, रोपण चूर्ण, स्नेहन चूर्ण, नयनामृत, दृष्टि को साफ करने वाली सलाई।

संख्या १०७ ए. रसरंग, रचयिता—कान्ह कवि, कागज—मूँजी, पत्र—६०, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०२ (१७४५ ई०), लिपि-काल—सं० १८९८ (१८४१ ई०), प्राप्तिस्थान - पं० मयाशंकर जी, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ रस रंग लिष्यते ॥ छप्पे ॥ कमल सुंडि पर चारु मुन्डि पर चन्द कला इक। एक दन्त मतिवन्त सन्त सन्तत सुष दाइक ॥ अंकुस मस्तक हाथ साथ सिधि अष्ट विराजै ॥ लम्बोदर मुनि ईस सीस मुड असुर निवाजै ॥ भव भय विघन विनाश कर वानी अगम अपार तुव ॥ गन नाइक जगदीस सिंधव सुष दायक जय सम्भु सुव ॥

मध्य—सील दया सागर है सम्पति उजागर है, रुप गुन आगर है सुन्दर सुघर है। छिमा धर्म धारी सव जग अधिकारी, सुचि रुचिरता भारी भव्य विक्रम कौ घर है। दानी औ दयाल तीन लोक प्रतिपाल कान्ह, करै प्रतिपाल रानी राधिका को बर है। नैन सियरावतु है सुधा वरसावतु है, मन्द गति आवतु है नन्द को कुँवर है।

अंत—कवित्त जादिन विछोह कै विदेस को पधारे तुम तादिन वियोग आगि डारी बहु भून है। काहू न पिछानै आँषि आगे किन ठाढ़ी रहौ बूझत न वैन टेरो कान पर दून दून है। हलति न चलति न मुष ते कहत कछू दुष सुष एक करि खैंचि रही घून है। कान्ह

चलि देषो वाके प्रान है कि नाहीं पंच बान तन कीनो पंच बानन कौ तून है ॥ दोहा जाकी रचना देषिके, वाढ़े प्रेम तरंग। मन में अति सुष पाइके, कियो कान्ह रस रंग ॥ संवत धृति सत जुग बरस, कान्हा सुकवि प्रसंग। क्वार सुदी तेरसि ससी, रच्यो ग्रंथ रस रंग ॥ इति श्री कान्हर कवि रचिते रस रंग ग्रन्थ नाइका भेद सम्पूर्ण संवत् १८९८ मिती आसाढ़ १२ गुरुवासरे लिष्य कृतं व्रज बल्लभ भरथपुर मध्ये ॥

विषय--नायका नायक भेद।

संख्या १०७ बी. नष सिष, रचयिता--कान्ह कवि, कागज--मूँजी, पत्र--१२, आकार--९½×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२५२, खंडित, रूप--प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल।

आदि--अथ हास्य वर्णन ॥ कोकिन के थो॰ पर्‌यो विरह के सोक औ चकोरनि को औक घरी सुष की विहात है। मुदित कमल भयो सूरज सिराय गयो, जोति द्विजराजन की ज्यों ज्यों निपराति है ॥ दम्पति सिंगारै पर जंक कौ परस पर, अंक भरि केलि को सुमति परसाति है। नैक मुष हासिकें उदोत को छिपावो •प्यारी चान्दिनी की ज्योति ही तो होति दिनराति है ॥

अंत--डोरे लाल लसै अति काजर। पैनी डाढि नैन छवि हाजर ॥ भृकुटी टेढ़ी बेंदा गोल। भाल बन्दिनी जटित अमोल। कर्ण फूल अवलि का कान्ह। सिरसि फूल मांग मुकतान। पाटी बैनी बार विराजै। अंग सुवास बसन छवि छाजैं ॥ इति श्री कवि कान्ह विरचितायां नषसिष सिंगार सम्पूर्ण ॥

विषय--नख से शिख तक अंगों की शोभा का वर्णन।

संख्या १०८. भगवद्‌गीता, रचयिता—काशी गिरि, कागज—मूँजी, पत्र—४८, आकार—७×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६४, खंडित, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९१ वि० (सन् १७३४ ई०), लिपिकाल—वि० १७९१—१७३४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बुद्धप्रकाश वैद्य, स्थान व डाकघर—होलीपुरा, जि० आगरा।

आदि—××× दोहा तेरे अरि सब कहेंगे, जो अन कहनी वात ॥ तुव बल की निन्दा करैं, बहु दुष लागें तात ॥ लरत मरै लहियो स्वरग, जीतो पुहुमी भोग ॥ उठ अरजुन तू युद्ध करि, यही जो तुमको जोग ॥ लाभ हानि और सुष दुष, जीतो हारि समान ॥ तातें अरजुन जुद्ध करि, पाप लेहु जिनि मान ॥ सिष बुध तोसों कहीं, कहत जोग विधि तोहिं ॥ ता विधि के संयोग ते, रहै करम न मोह ॥ करम करै विन कामना, ताको होय न वास ॥ अल्प करेहूँ धर्म्म यह, काटत भव भय बास ॥

अंत—संसकृत गीता हुतो, भवन स्यानि को आहि ॥ काशी गिरि भाषा करैं, गुरु प्रसाद सेताहि ॥ सत्रह सै इकानवे, विक्रम शाक विहाय ॥ सारग वदि नौमी भृगौ, सुभग

सुदिर वरताय ॥ गीता पाठ पुनीत है, लिषिवौ करि कुरुषेत ॥ गंगाधर यह प्रति लिषी, तुलराम हित हेत ॥ संवत् १७९१ मारग (अगहन) बदि ९ शुक्रे शुभं भूयात् ॥

विषय—सुप्रसिद्ध भगवद्गीता का यह अनुवाद है ।

संख्या १०९. भरथरी चरित्र, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप – प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ऊँकारनाथ जैन, स्थान व डाकघर – रुनकुता, आगरा ।

आदि—॥ अथ भरतरी चरित्र लिष्यते ॥ इन्दर के नाती भए, गंधर्व सेन के पुत्र ॥ भाई विकरमा जीत से, मैनावन्ती बहन ॥ जादिन जन्मे राजा भर्त्तरी, बाजे तबक निशान ॥ हरे हरे गोबर मंगायके, अंगना वेदी लिपाय ॥ मोतियन चौक पुरायके, कंचन कलश धराय ॥ सुघर सहेली बुलाइकें, गांवैं मंगल चार ॥ काशी से पंडित बुलाइकें, चन्दन चौकी विछाय ॥ ब्रह्मा बाँचत वेद को, मुल्ला हर्फ किताब ॥

अंत—बोले बाबा गोरखनाथजी सुन बच्चा मेरी बात ॥ चेला बच्चा तुमकों न करैं तुम हो राज कुमार ॥ पान फूल के भोगिया सधै न तुमसे जोग ॥ पान फूल मैं सब तजा सुन गुरु गोरखनाथ ॥ छोड़ा उँचै का बैठना, छोड़ा भइयों का साथ ॥ जोग भला जोंहर बुरा, आठ पहर संग राम ॥ आठ पहर के बीच में जिसै राखे भगवान ॥ चुटिया काटि चेला भये, कान दीने फूंकि ॥ पीठी ठोकि दीन्ही गोरख ने, जोग अमर हो जाय ॥ इति श्री 'काशीनाथ' विरचित भृत हरि चरित ॥

विषय—इसमें राजा भर्तृहरि का जीवन देहाती कविता में अत्यंत मार्मिक ढंग से बर्णित है । भर्तृहरि ज्योंही पैदा हुये, खूब धूमधाम हुई । दान पुण्य किया गया । मंगलगान हुआ । पाँच वर्ष की अवस्था में उन्हें पढ़ने बैठाया गया । उनके बाल्यावस्था में ही तीन विवाह हुए । किशोर वय में एकबार उनकी स्त्री श्यामा ने उन्हें शिकार खेलने के लिए भेजा । सिंहलद्वीप में राजा गये और कहां पर एक मृग को गांसा से मारा । मृगी अत्यन्त दुःख से कातर हुई और मृग के ऊपर दौड़ २ कर गिरने लगी । राजा ने उसे मादा जाति के कारण नहीं मारा, क्योंकि ऐसा करना क्षत्रिय धर्म्म के प्रतिकूल था । मृगी ने राजा को श्राप दिया कि जैसी पति वियोग से मैं तड़प रही हूँ वैसी ही तेरी रानियाँ भी तड़पेंगी । हुआ भी यही, राजा राजधानी को लौट ही रहे थे कि मार्ग में गोरखनाथ मिले, उनके चरण छूने को ज्योंही वे आगे बढ़े कि गुरु गोरखनाथ ने उन्हें फटकार दिया । कहा, ऐसे पापी हत्यारी राजा का प्रणाम मैं स्वीकार नहीं करता । राजा को अत्यन्त मानसिक वेदना हुई । यहाँ तक कि वे गोरखनाथ के शिष्य बनने को तैयार हो गये । गुरु ने बहुत कुछ समझाया, जब राजा न माने तो कहा अच्छा जाओ अपनी रानी से, माता कहकर; भीख मांग लाओ । राजा योगी का भेष रख, महलों के द्वार पर भिक्षा-पात्र लेकर पहुचे तो वहाँ हड़-कम्प मच गया । रानियाँ बाँदियां पछाड़ खा-खाकर गिर पड़ीं । विशेष आग्रह से राजा ने रानी को समझाया और भिक्षा डाल देने को कहा पर वह फूट २ कर रोने लगी । अन्त में दोनों के बीच बड़ी

दुःख पूर्ण बातें हुईं और रानी को बाध्य होकर राजा को भिक्षा देनी पड़ी। भिक्षा ले जाकर राजा ने गुरु गोरखनाथ के अर्पण की और पूर्ण-योग धारण कर लिया।

विशेष ज्ञातव्य—इसकी कविता अतुकान्त है किन्तु बड़ी ही हृदय-ग्राही है।

संख्या ११० ए. लग्न सुंदरी, रचयिता—काशीराम (काशी), कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—७½ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७० वि०, लिपिकाल—सं० १९७१ वि०, प्राप्तिस्थान—लाला मुकुट विहारीलाल गुप्ता, कटराबाजार, शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ लग्न सुन्दरी प्रारंभ ॥ श्रीगणेश सुमिरन करूं, सर सुति तोय मनाय। गुरुके चरण न बंदि के, लग्न सुन्दरी गाय ॥१॥ श्री धरनी धर सुत कहि नीह सुखरम्भ प्रवीन। कासी राम तिहि वंदि तिहि मति अनुसार प्रवीन ॥२॥ कासी नगर में वासु सुभ, सुभ धामन का धाम। सुन्दर बाग तड़ाग है, कासीराम चहु ग्राम ॥३॥ सोले से सत्तर दौज फागुन वदि गुरवार। कासीराम तब वर्ष ओ, लग्न सुन्दरी सार ॥४॥ एक सहस सत्तर कहे, दोहा छन्द कवित्त। तिमिर हरन को भानु है, पढ़े गुणे दे चित्त ॥५॥ मकरंद आदि ज्योतिष सबै, सुच्छिम कथा प्रकास। पढ़हिं बुद्धि अधिकार है, हृदय कपाट खुलास ॥६॥ बालक जन्म विचार ॥ बालक जन्म के भेद सब, कहत सकल समझाइ। जैसो जाको ग्रह परे, तैसो देत बताइ ॥७॥ राहु परे जाई दिसा, सिर हानो तग्ज्ञान। मंगल दिस पायो फटो, भूमिदग्ध पहिचान ॥८॥

अंत—॥ श्लोक ॥ तुलसी सौरी भौमंच बुद्धं श्रंबुज द्रस्यते। सहज स्थानें भवे सौरी ऋष्मपुष्मं च मुष्टिकं ॥३९॥ दोहा ॥ जीव पंच में भवन में, कमल मुष्टि में भुक्त। भोम फूल कांटे सहित वांस पकरें जुभुक्त ॥४०॥ राहु परैं जो केन्द्र में, पदुप अरु में जान। कपूर गंध कासीराम कहि, जीव दृष्टि पहिचान ॥४१॥ चंदारविकों देखई, शुक्र अवीर बताइ। चंद जीव की नजरि है, हरौ रंग कर लाइ ॥४२॥ लग्न मध्य ग्रह देखिकें, पंडित करहु विचार। हाथ प्रसन्न कासीराम कहि, जांनु नाम निजस्वार ॥४३॥ इते श्री कासीराम क्रत लग्न सुंदरी दशमोऽध्याइ ॥१०॥ सम्पूर्णम् समाप्तम् ॥ ऽश्लोक ॥ इद्रष्य पुस्तकं द्दष्टा तद्रसं लिखतं मया ॥ यदि शुद्धम् शुद्धंवा मम दोषो न दीयते ॥ श्री ॥ मिती भादौं कृष्ण ॥५॥ चन्द्रवासरे ॥ सम्वत् १९७१ ॥ मौ० अतुर वि० वेनीराम काइस्थ मौजे सिहुडाका ॥ दोहा ॥ नारायण या जगत में, सीखि भजन की रीति। काम क्रोध मदलोभ में, गई आरवल वीति ॥

विषय—(१) राजयोग वर्णन प्रथम अध्याय, १—४। (२) शुभाशुभयोग दू० अध्याय ४—७। (३) एक ग्रह का फल ती० अध्याय, ७—१०। (४) पट् ग्रह का फल चौ० अध्याय, ११—१४ (५) जन्म पत्र के फल कथन का वर्णन पाँ० अध्याय १४—१९। (६) वर्ष निकालने का वर्णन छ० अध्याय, १९—२०। (७) विवाह छाँटने आदि का वर्णन सा० अध्याय, २०—२४। (८) मुहूर्त विधि वर्णन आ० अध्याय, २४—२९। (९) द्विरागमन, स्त्री स्नान तथा पंचागादि वर्णन न० अ०, २९—३३। (१०) मुट्टी की वस्तु बताने का वर्णन द० अ०, ३३—३५।

संख्या ११० बी. जैमिनीय सूत्राणि (सटीक), रचयिता—काशीराम पाठक, कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमान् पं० गणेशप्रसाद जी व्यास, स्थान—टोंड्सी, डाकघर—भदान, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्रीपरमात्मने नमः॥ अथ भाषा टीका सहित जैमिनीय सूत्र लिष्यते॥ यो हत्वा ध्वान्त मुस्त्रैः सुरमद्यति जनान्यौ जयन्कर्म मार्गे चा ब्रह्मादेर्वं यांसि क्षिपति स विभजन्नार्तवान्सर्वधर्मान्॥ यत्पन्थाने ह्युपेत्य व्रजतियति गणो ब्रह्म निर्वाणधाम। तंध्यात्वा हृत्सरोजे तमिह विरचये जैमिनेः सूत्र भाषाम्॥ १॥ पूर्वजन्मार्जित ज्ञानसे अनुष्ठान किए हुए काशी वासादि निज वृत्त से जगत् के उद्धार करने की इच्छा वाले करुणा समुद्र जैमिनि मुनि इस प्रारिप्सित ग्रंथ के रोकने वाले विघ्न की शान्ति के लिए श्री शंकर भगवानको प्रणाम कर समस्त जनों के शुभ अशुभ जताने वाले जातक शास्त्र की रचना करने को प्रतिज्ञा करैंहैं॥ उपदेशं व्याख्यास्यामः॥ १॥ उकारे इस अक्षर के स्वामी जो कि शंकर भगवान हैं तिनकों प्रणाम करते हैं अथवा जिस करके पूर्वजन्मार्जित शुभ अशुभ कर्मों का फल प्रगट किया जाता है ऐसे उपदेश नाम जातक शास्त्र विशेषको कहे हैं॥ १॥ इस शास्त्रमें अन्य शास्त्रवत् ही दृष्टिविचार है अथवा अन्य शास्त्रसे विलक्षण है इस संशय को दूरि करते भये कहें है॥ अभि पश्यन्त्यृक्षाणि॥ २॥ पार्श्वमेव॥ ३॥

अंत—इसके अनन्तर दशाफल विशेष कहते हैं। शुभादशा शुभयुतेधाम्न्युच्चेवा॥३५॥ जोकि राशि शुभ ग्रह से युक्त होवे अथवा उच्च ग्रहसे युक्त होवे अथवा जिसका स्वामी उच्च राशि में होवै तो उसराशि की दशा शुभ होवै है॥ ३५॥ अन्यथान्यथा॥ ३६॥ और जो कि राशि न शुभ ग्रह से न मित्र ग्रह से व उच्च ग्रह से युक्त होवै तो उस राशि की दशा सम होवै है और जो कि राशि नीचादि ग्रहों से युक्त होवै इसकी दशा अशुभ होवै है॥३६॥ सिद्धमन्यत्॥ ३७॥ जो विषय इस ग्रंथ में नहीं कहा है और अन्य शास्त्र में प्रसिद्ध है वह अन्य शास्त्र से ही लेना चाहिये॥ ३७॥ इति श्री जैमिनीय सूत्र द्वितीयाध्याये श्रीनील कंठीयतिलकानुसृत भाषा टीकायां श्रीपाठक मंगल सेनात्मज काशीराम कृतायां चतुर्थ पादः समाप्तः॥

विषय—ज्योतिष विचार। ग्रहों तथा राशियों की दशादि और उनके फलाफल पर विचार।

संख्या १११. निघंटुहारीत, रचयिता—कटार मल्ल, कागज—देशी, पत्र—१९०६, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० मिट्ठनलाल जी शर्मा, वैद्य, पुराना शहर—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी।

आदि—अथातो निघंट सूची पत्र प्रकारे कथ्यंते॥ अरिथ श्रृंखला॥ हरि श्रृंगार॥ अभया॥ हरर॥ अमृता॥ हरा गिलोइ॥ अलमला॥ अंजुर गिलोइरण॥ आमेट॥ पानी केला जात॥ मद्य॥ फटकरी॥ अमृत फल॥ १०॥ अक्ष॥ वहेरा॥ अलर्क॥ आर्क॥

१ ॥ अग्नि जिह्वा करहारी १ ॥ अग्नि ॥ चीता अमफल ॥ हौवेर ॥ अफला ॥ अमरे ॥ १ ॥ अग्नि सिषा ॥ केसर १ ॥ अग्नि वल्ली ॥ चीता ॥ अम्रात ॥ वहेरा ॥ आमरे ॥ आटरुषक ॥ अरुसा ॥ अग्निमंथ ॥ आरणी ॥ १ ॥ आर्द्र सिंह ॥ माषपर्णी १ ॥ अनंदो ॥ अंड १ ॥ अति पिछला ॥ ग्वार ॥ आफूकं ॥ अफीम १ अहिफेन ॥ अफीम अन्यर्थ चिरायता ॥ आदा ॥ अद्रक १ ॥ अपरिभव्यं ॥ कूट १ ॥ अजाजी ॥ जीरा १ ॥ अजा श्रृंगी ॥ काकरासिंही ।.१॥ अंगारवल्ली ॥ भारंगी करंजी ॥ घमरा ॥ गुंजा रक्त ४ ॥ अर्वाव पुथी ॥ सोंफ १ ॥ अस्मभेद ॥ पाषान भेद ॥ अहिस्यो ॥ वन मेथी १ ॥ अतिविघा ॥ अतीस १ ॥ अश्वत्थ ॥ हपुषा ॥ १ ॥

अंत——१——प्रथम वर्ग अभिषादि श्लोक ३०८० ॥ औषद ॥ १०४९ ॥ १ ॥ २—— द्वितीय वर्ग सुकंठारि श्लोक ८३ औषध ॥ ५० ॥ तृतीयवर्ग कर्पूरादि श्लोक १०२४ औषधि ९५॥ चतुर्थवर्ग सुवर्णादि श्लोक ५९ औ० ॥ ९५ पंचम वर्ग वटादि श्लो ५९ औ० ४३ ॥ पंचम वर्ग वरादि श्लोक ७३ औ० ॥ ४७ ॥ षष्टमवर्ग दाक्षादि श्लो० १०१५ औ ॥ ५१ ॥ सप्तम वर्गा कूष्मांडादि श्लो ९० औ० ॥ ६२ ॥ ८ अष्टमवर्गक्षीरादि ॥ श्लोक २०३४ औ० १० ॥ ९ नवम वर्गा मधुर श्लो० ३४ औ० ११७ ॥ × × × द्वादशवर्गा मांसं श्रो १०४१ औ० १०० ॥ १३ त्रयोदश वर्ग मिश्रक श्लोक १०५ औ० ॥ ६० ॥ चतुर्दशवर्ग प्रशास्ति श्लोक १०३ औ० । १००५० पद्रह सै श्लोक औषधी सवट० ५४ ॥ योटाङ्गो मुश्वतिलकः कटार-मल्ल स्तेन श्री मदननृपेण निर्मितेत्र ग्रंथे भून्मदन विनोद लाला मदन पाल विरचिते मदन विनोदे निघंटो प्रशांस्ति वर्गाः श्चतुर्दशः ॥ १४ ॥ समाप्तः ॥ इति श्री हारीत मुनि विरचिते चिकित्सा रहस्ये ॥

विषय——अनेक औषधियों के परियायवाची शब्दों की सूची एवं उनके गुणों का वर्णन ।

संख्या ११२. साषी केसोदास, रचयिता—केसौदास, कागज——बाँसी, पत्र——१२, आकार——६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१६, परिमाण (अनुष्टुप्)——२१६, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री गोस्वामी कुंजीलाल जी, स्थान व डाकघर——वरसाना, जि०——मथुरा ।

आदि——श्री गुरुभ्योनमः अथ साषी केसोदास कृत गुरुदेवकौ अंग । केसव सतगुरु है सगा, और सगा नहिं कोय । जासु सुत पाइयै, दिलमें दीपक जोय । केसव सतगुरु मुष ग्यान गहि, वे दुष दूर रहाय । गुरु मुष कुंतो हरि मिले, वे मुप कूँ हरि नांय । केसव गुरु मुष ग्यान गहि, रहे एकन्त असथान । निस दिन हरि हरि कीजिए, तजिए मान गुमान ॥

अंत——केसो गुरू माया अंसी, चेतन अंसी नाँह । चेला ही पै ज्या मिल्या, दोनों भूला जाँह । केसो भूले कुँचे द्वै मिल्या, मारग दिया बनाय । गुर सिष कीए पारषा, समरण लागा धाय ।

विषय——सतगुरु की महानता ।

संख्या ११३. जहांगीर जस चन्द्रिका, रचयिता—केशवदास (स्थान—ओरछा), कागज—मूँजी, पत्र—१८, आकार—९½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) – २४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १६७९ (१६२२ ई०), लिपिकाल—वि० १७८६ (१७२९ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० मया शंकरजी, अधिकारी, गोकुल नाथ जी मंदिर, गोकुल, जि०—मथुरा।

आदि—अथ जहाँगीर जस चन्द्रिका लिष्यते ॥ सुनहु गणेश दिनेश देश परदेस क्षेमकर। अम्बरेस प्राणेश शेष नषतेश वेशवर ॥ पन्नगेश प्रेतेश बुद्ध सिद्धेश देखि अब। बिहंगेश स्वाहेश देव देवेश सेश सब ॥ प्रभुवर्षतेश लोकेश मिलि कलि कलेश केशव हरहु। जहाँगीर सकसाहि कौं, बल पलु पलु रक्षा करहु ॥ दोहा सोरह से उनहत्तरा, माधव मास विचारु। जहाँगीर जस चन्द्र की, करी चन्द्रिका चारु ॥

अंत—यद्यपि हरि जू माँगिवो दियो हमें उपजाइ। हौं मागौ जगदीश पै, सुनो साह सुष पाइ ॥ भागीरथी तट स्यों कुल केशव दान दै देइ दरिद्रनि दाहे ॥ वेद पुराननि शोधि पुराण प्रमाण निके गुण पूरण गाहे ॥ निर्गुण नित्य निरीह निरंजन आनो हिए जग-जानि वृथा है ॥ ज्यो नहीं होत कवै वह फेरि शरीर को संग अनंग कथा है ॥ जहाँगीर जू जगति पति, देस गरोसष साजु ॥ केशव राई जहाँन मैं, कियो रायते राजु ॥ इति श्री कवि नीशुर अवनरषीश्वर अवनीश प्रिय व्रह्म रिष कविराज श्री केशव दासेन निर्मिता जहाँगीर चन्द्रिका समाप्ता संवत श्री नृपत विक्रमादित्य राज्ये १७८६ भादौवा मासे शुक्ल पक्ष सुदि पंचम्या रविवारे ॥

विषय—ग्रंथ का कथानक इस प्रकार है कि खान खाना के पुत्र एलच बहादुर और केशवदास कवि में यह वाद छिड़ गया कि भाग्य बड़ा अथवा उद्यम। उसीपर से केशव ने इस ग्रंथ की रचना की। इसमें भाग्य और उद्यम को पुरुष रूप देकर वाद विवाद कराया है और अन्त में यह निर्णय दिया है कि दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। भाग्य और उद्यम की इसी बहस में अन्य राजाओं का तथा जहाँगीर समेत उसके दरबार का वर्णन भी किया है। निम्न राजाओं का हाल इसमें दिया है। (१) महाराज मान सिंह। (२) दूलह राय बुँदेला। (३) राय दुर्गभान। (४) भोजराज के रनजीत सिंह (शायद कोटा के) (५) स्याम सिंह, गोपाचल के। (६) विक्रमाजीत, भदौरिया। (७) दौल-तखान। (८) एलचशाह। (९) खान खाना। (१०) मिरजा आजम। (११) अकबर। (१२) हसन बेग। (१३) स्यामसिंह। (१४) रतन सिंह। इत्यादि बहुत से तत्का-लीन राजाओं तथा सरदारों के सम्पूर्ण वर्णन कवि ने कुशलता से भाग्यवान बनाकर कह-लाया है। फिरंगीयों का भी वर्णन आया जिससे ज्ञात होता है जहाँगीर की सभा में वह थे, "तैलंग तिलक विद्यानगर फिरंग सब। साहि जू की सभा राजै राजा देश देश के" ॥ दो तीन कवित्त तो रामचन्द्रिका के भी ज्यों के त्यों इसमें आए हैं। जैसे यह आया है, "निधि के समान है विमान कृत राजहंस वेविध विबुध युत देस से अचल है"॥

विशेष ज्ञातव्य—जहाँगीर चन्द्रिका का विवरण पहिले भी लिया जा चुका है, पर वह इतनी शीघ्रता से लिया गया है कि असल में कौन इसके रचयिता थे इसे ही गड़बड़-

झाले में डाल दिया है। ध्यानपूर्वक पढ़ने पर मालूम होता है कि यह कृति निस्सन्देह ओड़छा निवासी केशवदास की ही है किसी अन्य की नहीं। इसमें दो तीन छन्द रामचन्द्रिका के भी आए हैं और शैली आदि सम्पूर्णतः उन्हीं से मिलती है। अतः इन्हें जैसा कि विनोद में माना गया है, अलग मानना सरासर भूल है।

संख्या ११४. रासमान के पद, रचयिता—केवलराम, कागज—बाँसी, पत्र—४०, आकार—१० X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीदेवकी नन्दनाचार्य्य, पुस्तकालय, कामवन, मथुरा।

आदि—अथ श्री राम मान के पद श्री केवल राम गोसांई जी कृत लिषते ॥ प्रिया मन हरनि छवि धरनि श्री कृष्ण मनु मोहि लीना। निरष छवि रूपकी कान्ति को पीय लषि भए दीना ॥ भए मोहन दीन निरषत होइ लीन प्रेम बढ्यो हिरदे धारे। इन्दु सम वदन हुइ सुधा को सदन वर प्रेम हित उमगि त्रैलोकवारे ॥ अंक नव सत लाल चलत मद गज चाल मन्द मुसकनी अदभुत प्रवीना प्रिया मनहरन छवि धरन श्री कृष्ण मन मोह लीना ॥

अंत— बिलावलराग आज सषी निरषत न अघानी। बोलत लाल तोतरवाँ बानी ॥ बंछा सफल आपनी जानी। सुनि २ वच मइया मुसकानी ॥ बार बार पीवत हइ पानी। लीउ उठाइ सकल लपटानी। केवल सोभा अति पसरानी ॥

विषय—प्रिया राधिका जी का मान करना और भगवान कृष्ण का मनाना।

संख्या ११५ ए. मन्त्रावली, रचयिता—खड्गदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ X ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ठा० विजयपाल सिंह जी, स्थान—रीठरा, डाकघर—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी।

आदि—॥ मंत्रि ब्रह्म गायत्री ॥ यदि उदित अजै मुनि संत सवद निर्वान। दुवदसि मध्ये फेरि औसो हम आठौं जाम ॥ अक्षर अक्षर उदोत नाम सुरति सुहंगम डोरि। ब्रह्म गायत्री सुमिरिऐ कपट गांठि देषोलि ॥ आठ पहर च्यौंसठि घरी मिरिनि भरि विकरि देपु। सुठ सामंधौ सार है ताको वरनि विवेषि ॥ मनु औरुप मनु थकाइ ओद सौ दुवार करि थीर। काम धैनिकाया पौलै मान्यै हंसु लगै सो थीर ॥ रहनि गहनि निर्मल सदां, निर्भल तन मानु श्रंग। सुरति सवदुधमक गहानिफिरि नहिं छोड़े संग ॥ रसनां रामु न बोलिअै स्रवन सुन्यैन कान। वात अंतर मैं अजपा करै रोम रोम सव जाल ॥ अंतर धुनि लागी रहै त्रिकुटी संजम-ध्यान ॥ काम धेनु हाजिर रहै प्रघट होइ विज्ञान ॥ वंकनारि उलटी वहै चढ़ैं विहंग अपार ॥ जैसे मकरी तारु गहि चढ़त न लागै वार ॥

अंत ॥ मंत्र चंद्रमाके अरघकौ ॥ अण्ड देह सिरुनाइ कौं चंद कौ करौ प्रनाम। यह अंत संकट हरन सुमिरि हृदयै सतराम ॥ × × × निहचै अक्षिर की देष छिज अंतर मैं लषि लेउ। मौज मुकतिमलु षाइयै, अमरलोक पगु देउ ॥ सतगुरु करुना सिंधुजू, कीन्ह्यौं नाम प्रगासु। दुवापर द्विज चेताइयै, केरा आपनों दासु ॥ सत गत नाम सुनाइए, षगदास सुनिलेहु ॥ सो महिमा तुमसौं कही, करौ भगति सौं नेहु ॥

विषय—कुछ साधुओं के कर्मादि संबंधी मन्त्रों का संग्रह ।

संख्या ११५ बी. शब्द स्तोत्र विज्ञान, रचयिता—खङ्गदास, कागज देशी, पत्र—८, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर विजयपाव सिंह जी, स्थान—रीठरा, डाकघर—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी ।

आदि—संत सरुप करुना सिंधु नृपांन्यैह्यँ ।। तंता निजु ब्रह्म वानीं अनूपं ॥ विप्रदासं ॥ पूरन पुरुषोत्तम पर ब्रह्म पारं ॥ स्रव लीन स्रव लीन अया क्रतारं ।। नहीं भोगभोगी न भोगी न भुगितं ।। नहीं जोग जोगी न जोगी न जुगितं ।। नही देव देवीं नहीं वीन देवं ।। निरतार त्रिम्हो न सकती न सेवा ॥ पिंड ब्रह्मांड सफल घर देषं । निराधार आधार आया अलेषं ॥ न्यैह्यँ तत निजु नामु आपा अभेवं ॥ जायौ न थाप्यौं न पूजा न सेवं ॥ पमझ्यौन पानी चहेना श्रृगांरं ॥ अषंडित ब्रह्म सोई सर्व पूरं सदा ध्यान धारी अषंडी निरासा ॥ सदां घी पीवै न जीवै पिआसा ।। प्रम घाम घीरा उदासी अकेला लव लीन जोगी गुरु ध्यान मेलं ॥

अंत—सवदही बांधे जाम नाम सव सवद ही गाए । वहु राग रंगी खियाला चीनि करु नहिं पासे ॥ सवद ही सुमिरन जप शवद ही अजपा गन्ये । सवद ही देवल सवद पूजै अरु भन्ये ॥ सवद अपंडित रुप सवदु नहिं षंडित होई । ऐसा सवदु अगाध सजल घट रह्यौ समोई ॥ सवदु करै आचार सवद सवनि रोमैड गावै । निर्गुन सर्गुन वरनि सवद सवनिनैं गावै । सवदु रुप करतारु सवदु देवन को देवा ।। सवदु ही अगम अगाधि सवद कौन्यिरौ भेवा ।। सवदु सदां सर्वंग अंग सव सफल समाने ॥ सवदुहि करै विवेकु सवदु न्यारो निरवानां ।। मनु माया विस्तारि सवद स्यौ मांडौषेला सवदु गुरु है गुपित प्रघट करि दीन्ह्यौं चेला ॥ असतोतरि विग्यान ग्यान तै महिमा न्यारी ।। करुना सिंधु विचारि विधि स्यौ कहत विचारी ॥ द्वापर पहले चरणभेल सांकि अपि आँन ॥ प्रगदास सुनु आंस प्रघट कीन्यौं विज्ञान

विषय—ब्रह्म और शब्दादि की महत्ता का वर्णन ।

संख्या ११५ सी. शब्द, रचयिता—खङ्गदास (षूगदास), कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—७½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—ला० बालाप्रसाद पटवारी, स्थान—कीठौत, डाकघर—सिरसागंज, जि० मैनपुरी ।

आदि—[आदि के २२ पृष्ठ लुप्त, २३ वें पृष्ठ से उद्धृत] जोति होति अनेग महिमा परम पदु नहिं जानतं । परम पदु प्रताप सतगुरु रुपरेष अहाषतं ॥ कृपा सतगुरु करी साहिब सकल घट मैं देषतं । जुगानि जुगनि सतिपुरिष आज्ञा जीव कारन पगुधरं ॥ दीन लीनं अचनं कैकैं जगत मौं डोलत फिरं ॥ त्रिगुन रहिता सत्तिवक्ता सत्यलोक विराजतं ॥ प्रगठि दोउ पर काटि कलिमल विप्रके घर राजतं । दरस दरसे चरन परसे वंदगी प्रंनामतं । षूगदास विचारि देषौ मिले मुनि मन भामनं ॥२९॥

अंत—भजन भगति चौका विधि पूरी । सुमिरचैं नामु सजी मनि मूरी ।। नामु निरंतर सवतैं न्यारा । यह लगि चऊदह तवक पसारा ।। सतगुर दुजकौं समझाया । वीरा

मौज मुकति कौं पाया ।। मौज मुकति सतगति को भेवा । करुना सिंधु करौ परवेसा ।। इकईस षंड-षंड के पारा । चरनि वताये ते व्यवहारा ।। अकह अगाध अगोचर वानी । अपनी महिमा आपु वषानी ।। दुज सुदेस को भ्रम छुड़ाया । पूरन ब्रह्म आपु चलि आया ।। पूरन ब्रह्म अमर घर वासी । प्रघटे द्विज के हेत विलासी ।। महिमा प्रघट ध्यानं की कीना । द्विज सुदेस अंतर लषि लीनां ।। द्विज सुदेस अपनो करि जाना । करुना सिंध प्रगट्यौ ज्ञाना ।। निर्गुन महिमा वरनि बताई । षूगदास सुनियौ चितुलयाई ।।

विषय—स्तुति, शब्द, रेखता, स्तोत्र, क्रिया शोधन की गायत्री, मंत्र ब्रह्म यागत्री, शब्द सुमिरन, शब्द अजपाजाप, शब्द स्नान को मंत्र, प्रात उठ चलने का मंत्र, झाड़ा पेशाव का मंत्र, मंत्र दाँतौन, सूर्य्य देव की गायत्री, चन्द्रमा की गायत्री, जल पीने का मंत्र, मंत्र प्रसाद कौ तृण तोड़ने का मंत्र, शय्या गमन का मंत्र, मंत्र चन्द्रमा के अर्घ्य का, शब्द वीरा, शब्द आर्ती, मुक्ति रमैनी, शब्द रछको, शब्द मंगल, शब्द विलासी, शब्द अनकोलन, शब्द सुहागिल तथा शब्द रमैनी ।

संख्या ११६. दशम स्कन्द भागवत, रचयिता—पर्ग कवि, कागज—बाँसी, पत्र—१०२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० गजाधर सिंह जी, स्थान व डाकघर—सुरहेंदी, जि०—आगरा ।

आदि—तो तालीश के ध्यारि अरठई ॥ सोई पर्ग रारि वरनई ॥ चाँनूरे मुष्टिक कौनारि ॥ कवि पापी हुँ भंजि है मुरारि ॥ जँह सुपदेव जुनृप सो कहें ॥ अतिरचि पाइ महागह गहें ॥ राजोवाच तव नृप विनवे अति करि सेव ॥ विस्तरि कथा सुना बहु देव ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥ पटोल जाहि कहे सो वैन ॥ सीसुन वापे नीचे चैन ॥ विनती सुन हो हमारी कान्ह ॥ दीन दयाल अहो भगवान ॥ तुम सन्तनि प्रति पालहु ॥ दुष्टनि जोग सिषावन देहु ॥ और पृथ्वी के भारै हरहु ॥ निज मेरे अपराध हरहु ॥ विनती सुनी इन्द्र की हरी ॥ और अजान कंस को करी ॥ × × ×

विषय—दुष्ट कंस के अत्याचार के कारण भगवान का कृष्ण रूप में अवतार लेना, कंस तथा पृथ्वी के तत्कालीन अन्य राक्षसों का नाश करना, पांडवों से मित्रता करना, रुक्मिणी हरन, द्वारका निवास आदि समस्त कृष्ण चरित्र का वर्णन इसमें किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—उपर्युक्त ग्रंथ के प्रत्येक अध्याय के अन्त में "पर्ग" राय कवि ॥ नाम इस प्रकार आया है । "सुकदेव वचनन ते लई । सोई पर्ग राय कवि कई ॥" पुनः "चौवीसों अध्याय जो लही सो सुक तुम सों नीकै कही सुकदेव वचनन ते लही सोई वरनि षर्ग कवि कही"

संख्या ११७. रचयिता—पेम (खेम), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीदाताराम महन्थ, कबीरी गद्दी, स्थान—मेवली, डाकघर—जगनेर, जि०—आगरा ।

आदि—॥ अथ ग्रन्थ ज्ञान उपदेश लिष्यते ॥ काहू पूरण पुन्न करि, तैं पाई नर देह ॥ कै मिहर वानह्वै पौज दई, सो सुमिरि सुफल कर लेह ॥ दस माहीना गर्भ में, तूँ वर रह्यो मुषमौंन ॥ तात मात की गम नहीं, तहँ रषवारौ कौन ॥ नष सष साज सँवारि प्रभू, आन्यो मुकती ठौर ॥ निपजी मैं साकी सवै, धनी भए तब और ॥ साव धनी सों चुप रह्यो, चित ऐलौ दऊ बोर ॥ बाटि बीचि ही ले गए, वरन साह की चोर ॥

अंत—सुरंगी देह मधि जरदी। गई पलक में मिलि गरदी ॥ भुजा नष अँगुरी बीनी। सुसिर में ईसकी दीनी ॥ कि मानो दहीड़ी फूटी ॥ सगाई इस विधि सो टूटी ॥ दोहा हाथ परत गयो प्राणियो, तनमें बीती ऐह ॥ घरि आये प्रीतम सवै, जारि वारि करि पेह ॥ साषी इत काया मैं दिन परै, उत संकट पर्‍यो प्रान ॥ "पेम" कहैं सुनियो सबै, कोई न तजियो ग्यान।

विषय—गर्भ, बाल, युवा, प्रौढ़ा, वृद्धा, मरणासन्न आदि अवस्थाओं के दूषण बतलाए गए हैं। तथा जीवन कितना क्षणिक एवं नश्वर है इस पर अधिक जोर दिया है।

संख्या ११८. विपिन विनोद, रचयिता—जन खुस्याल कायस्थ (स्थान—भलुईपुर), कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८९२ (१८३५ ई०), लिपिकाल—वि० १९३२ (१८७५ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री राधागोविंद चन्द का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—अथ बाग विहार लिख्यते ॥ दोहा गुर गोविंद गंगा सुमिरि। गणपति गौरि मनाइ ॥ पोथी विपिन विनोद की। भाषा करौं बनाइ ॥ सारंगधर कृत संस्कृत, समुझि न आवत चित्त। जन खुस्याल भाषा करी, दोस न दीजो मित्त ॥ महाराज × × श्री दौलत राव नरेस। जिनके गुन गन की कथा, वरन सके नहि सेस ॥ ३ ॥ जिनके सुत महाराज श्री, जनक राव भूपाल। तिन कारन भाषा करी, सादर सदा दयाल ॥ ४ ॥ या पोथी को नाम अव, राख्यो जनक विलास। पढ़त सुनत सुख ऊपजै, हिय को होय हुलास ॥ ५ ॥ संवत दस अरु आठ सै, नौवे ऊपर दोइ ॥ माघ मास तिथि चोथि सुदी, भाषा कीनी सोइ ॥ ६ ॥

अंत—काले धोले दुहुन की, क्रिया एक विधि जान। धोले सो पोंडा कहैं, स्याम गोद गिरिमान ॥ × × × भुजपुर देस आरा सहर, सूवा नगर बिहार। दफ्तर भलुई पुर के, कानून गोइ विचार ॥ श्री वास्तव कायस्थ कुल, कहियत नाम सुस्याल। व्रज कौं आयो जानिकैं, सरन लाड़िली लाल ॥ जो कोउ वाग धर्‍यो चहै, वृछ लगावै कोइ ॥ पोथी विपिन विनोद की, प्रथम पढ़ै यह सोइ ॥ इति श्री विपिन विनोद, वाग लगाने की विधि लिखतं मथुरा मध्ये हस्ताक्षराणि राधा वल्लभस्य।

विषय—१ वृक्ष लगाने का फल, भूमि परीक्षा, भूमि रोग, निकम्मी भूमि, अच्छी भूमि, दिशा विचार, वृक्ष नाम, वनस्पति, द्रुम, लता आदि के भेद, बीज के बीज, डारबीज, जरबीज, भूमिशोधन, बीज शोधन बाग लगाने की विधि, सिंचन, पृ० १—५ तक। २—

तुषार, आँधी, विजुरीमारेकी दवा, टीडी मूसा का मंत्र, कुआँ बनाने की विधि, नारंगी, बड़हल, आँवरे, आम्र, अनार कैथ महुआ, बेर कलम, दाख, अंगूर, नीबू, प्रभृति वृक्षों के लगाने और सींचने आदि की क्रिया, ६—८। ३—फल बड़े करने का उपाय, फूल बड़े करने का उपाय, सूखे वृक्षों को हरा करना, वृक्षों की सर्व रोग हरण दवा आदि, पित्त कफ आदि वृक्षरोग की पहिचान और उपचार, ९।१२। ४—वल्लरीदोष, वक्ष फोड़ा, भूमि दोष, कच्चा फल झरने आदि का उपाय, फल को सुगंधित करना, नादन बन फलने का उपाय, गुठली छोटी करनी, कच्चे फल हों, पके फल न गिरें, बारह माह फलें, तुरन्त बाग लगाना हो वृक्ष न फले, तिसका उपाय, १३—१५। ५—वृक्षों के पतझड़ का समय अलग अलग और उन पर पत्ते आना। ६—जाम फल और सीताफल आदि का वर्णन, कमरख, सहतूत, दाख, अंजीर, विही, अंगूर, गुलाब, कलम, सर्व फूल, पैमद करने लायक वृक्ष, १६—१९। ७—एक वृक्ष पर कई वृक्षों का लगाना, नारंगी, सन्तरा, सदाफल, अमल वेस, कागदी, कौला, सरसराइ, बिजौरा इन बारह का एक में लगाना, बड़ गूलर, सहतूत, अंजीर का समिश्रण, अनार, गुलनार, कनी अनार और खट्टे अनार का मिश्रण, सेव और जामफल का मिश्रण, नारंगी आम पर लगाना, बेरों के भेद और उसका पैमद करना, गुलाब और सेवती का पैमद, दाख का पैमद करना, पैमद करने का समय और उसकी विवरण सहित विधि, पौड़ा की कमाई आदि, पृ० १९—२३

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी है। हिन्दी में अभी तक कोई पुस्तक विपिन विद्या पर प्रामाणिक रूप में नहीं लिखी गई है। भले ही इक्का-दुक्का कुछ पुस्तिकाएँ निकल गई हों। अन्य साहित्यों में इस विषय के राशि-राशि ग्रन्थ लिखे गए हैं। यह ग्रन्थ प्रायः सौ वर्ष पहिले का लिखा हुआ है और उस समय की लोक रुचि से इसका पता लगता है। मूल ग्रंथ संस्कृत में विपिन-विनोद नाम से प्रसिद्ध है। उसी का पद्यानुवाद आरा जिलान्तर्गत भलुईपुर निवासी, कानून गोइ, जाति के कायस्थ जन खुसाल ने विक्रमाब्द १८९२ में किया है। अन्त में व्रज में आकर निवास करने लगे थे। ग्रंथ बहुत ही उपादेय है और वृक्षों तथा पौधों के रोगों को दूर करने के लिये जो नुस्खे बतलाए गए हैं वे वैज्ञानिक हैं। उनका उपयोग लाभप्रद हो सक्ता है। वृक्षों को अधिक फूलदार तथा फलदार बनाना, एक दूसरे पौधों को पैमद द्वारा लगागा, भिन्न २ खाद देना, रोगों का उपचार, फूलों को रंग विरंग करना आदि बीसों बातों पर बड़ी अच्छी तरह प्रकाश डाला गया है।

संख्या ११९ ए. क्रियाकोस, रचयिता—किशन सिंह (स्थान—साँगानेर), कागज—देशी, पत्र—१०२, आकार—१३ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७८४, लिपिकाल वि० १८७७, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर (नया), स्थान—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ क्रिया कोस लिष्यते॥ सभव सरन लक्ष्मी सहित, वर्द्धमान जिनराय। नमौ विवुध वंदित चरन, भरिजन को सुषदाय॥१॥ जाके ज्ञान प्रकाश मैं, लोक अनन्त समाव। जिमि समुद ढिंग गाई षुर, षार नीर दरसाव॥२॥ ब्रषभ

आदि जिन आदि दै, पारश लौं तेईस । मनवच काया पद पद्म, वंदौ कर धरि सीस ॥३॥ नमौ सकल परमात्मा, रहित अठारह दोष । छियालीस गुन पुमुष जे, है अनंत गुनकोष ॥४॥ वसु गुन समिक्ति आदिजुत, प्रनमौ सिद्ध महंत । काल अनंता नंहथिति, लोक सिषिरि निवसंत ॥ ५ ॥ आचारज उनकाय गुरु । साधु त्रिविधि निरग्रंथ । भवि जगवासी जननिकौ, दरसावै सिवपंथ ॥ ६ ॥ जिनवानी द्वि विधान षिरी । द्वादसांग मय सोय । ता सरसुति कौ नमतु हौं, मन वचन काय जिय सोय ॥ ७ ॥ देव सुगुरु श्रुति कौ नमौ, त्रेपन क्रिया जु सार । श्रावक कौ वरनन करौं, संक्षेपहि निरधार ॥ ८ ॥

अंत—कहुँ है अशुद्ध पद याही, शुध करि पढ़ियौ भविताही ॥ अधिकौ नहिं कहनौ जोग । बुधजन कौ यही नियोग ॥ १ ॥ अडिल्ल । किसन सिंह यह अरज करै सब जन सुनौ । करि मिथ्यात्व कौ नास निजातम पदमुनौ ॥ क्रिया सहित वृत पालि करन वस कीजियै । अनुक्रम लहि सिव थान स्वुतौ जीजियै ॥ २ ॥ सवैया ॥ सत्रह सै संवत् चौरासी आद्रुभाद्र मास वर्षारितु स्वेत तिथि पूनौ रविवार है । सतभिषारि षट धृति नाम जोग कुंभ ससि सिंह कौ दिनेस महूरत सार है ॥ ढूढाहर देस जानि वसै साँगानैरि थान जैसींघ सवाई तनौ राज जानि निधार है । ताके राजे सम एरिपूर्न की भाषा यहै भव्यनि के हिरदै हुलास दैनहार है ॥ ३० ॥ × × × मंगल सु ग्रंथ इह जानियौ बकता मुष मंगल सदा । श्रोताजु सुनै वक्ता गुनै मंगल करता के सदां ॥ ४ ॥ १९०४ ॥ इति श्री क्रिया कोस भाषा संपूर्नः ॥समाप्ताः॥ श्री ॥ × × × मिती असुन सुदि ६ सुक्रवार संवतु १८७७ ॥ पुस्तिक माथे लभैंचू पीतामर ॥ वाहुला सराइ ॥ सैनी ॥ प्रति उतारी देषिके ॥ पुत्र पीतांमरके ॥ परम सुपने उतारौ । भाई गंगाप्रसाद के पठनार्थं ॥ गाँउ नदिगया मध्य प्रति-उतारी ॥ दोहरा ॥ जैसी प्रति देषी सुनी, तैसी लिषी सुधारि । अक्षर सुद्ध असुद्धकौ क्षिमियो कविजनहार ॥ १ ॥ ग्रंथ लिषो अति कठिनसौं । सठ जांनत आसान । मूरख जल अरु अग्नि सौं, रक्षा करौ सुजान ॥ २ ॥ अक्षर लिषि जिमि वाटिका । तरु तरु फल अधिकाइ । जैसो जल धन सींचियै, त्यौं अनूप दर साय ॥ ३ ॥

श्री	श्री	श्री	श्री
६	६	६	६
श्री	श्री	श्री	श्री

विषय—देशव्रती श्रावक की त्रेपन क्रिया मूलगुन ८ । अनोव्रत ५ । शिक्षाव्रत ४ । गुणावृत ३ । नवनिधि १२ । प्रतिमा ११ । दात ४ । जलगाला १ । अनक्षनीय १ । दगज्ञान १ । चरन ३ का विस्तृत वर्णन ।

संख्या ११९ बी. क्रिया कोस, रचयिता—किशन सिंह, (स्थान—साँगानेर), कागज—देशी, पत्र—७८, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७८४, लिपिकाल—१८९० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान—दिहुली, डाकघर—बरनाहल, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ उन्मः सिद्धेभ्यः ॥ अथ क्रिया कोस लिषतेः ॥ दोहा ॥ समव सरन लक्ष्मी सहित, वर्द्धमान जिनराइ । नमौ विवुध वंदित चरन, भवजन कौ सुषदाइ ॥ जाके ज्ञान प्रकार मैं, लोक अनंत समाव । जिमि समुद्र ढिंग गाइपुर, षार नीर दरसाव ॥२॥ वृषभ आदि जिन आदि है, पारस लौं तेईस । मन वच काया पद पद्म, वंदौं कर धरि सीस ॥३॥ नमो सकल परमात्मा, रहित अठारह दोष । क्षयालीस गुण प्रमुषजे, हैं अनंत गुण कोष ॥४॥ वसु गुन समकित आदिजुत, प्रणमौसिद्ध महंत । काल अनंता णंत थिति, लोक सिपिर निवसंत ॥५॥

अंत—सत्रह सै संवत चौरासी, आइ भाद्रमास वर्षा रितु स्वेत तिथि पुर्णौं रविवार है । सत भिपारि पदः प्रति नाम जोग कुंभ ससि सिंह कौ दिनेस महूरत सार है ॥ ढूंढा हर देस जानि वसै सांगानेर थान जै सींघ सवाई तणौ राजा नीति धार है । ताकै राज सम परि-पूरन की भाषा यहै भव्य विके हिरदै हुलास दैन हार है ॥८॥ छप्पैछंद । मंगल श्री अरहंत सिद्ध मंगल सिव नाइक । आचारज उवझाइ साधु गुरु मंगल लाइक ॥ मंगल जिन मुष पिरीचि नावरण सिकी वानी । मंगल श्रावक नित्य सम किती मंगल जानी ॥ मंगल सुग्रंथ इह जानियौ वकता मुष मंगल सदा । श्रोता जो सुनै वकता गुणौ मंगल करता के सदा ॥१०॥ ॥ इति श्री क्रिया कोस भाषा संपूर्णः ॥ समाप्त ॥ मिती श्रावण सुदि ॥५। सोमे संवतु ॥ १८९० ॥ लिपितं ॥ विसुनलाल ॥ कायथ ॥ माथे ॥ दिलसुप राती हई आके जाइ मई सुभ सथान ॥

विषय—देशव्रती श्रावककी त्रेपन क्रियाओं का वर्णन ।

संख्या ११९ सी. अथ क्रिया कोश भाषा, रचयिता—किशन सिंह, कागज—स्यालकोटी, पत्र—१०१, आकार - १२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३३३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७८४ = (सन् १७२७ ई०), लिपिकाल—वि० १८९७, प्राप्तिस्थान—श्री चन्द्रभान जैन, स्थान—मँगूरा, डाकघर—अछनेरा, जि०—आगरा ।

आदि—ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ क्रिया कोश की भाषा लिष्यते दोहा समव सरण लिछमी सहित, वरध मान जिनराय ॥ नमो विवुध वन्दित चरण, भविजन कूँ सुखदाय ॥ जाके ज्ञान प्रकाश में, लोक अनन्त समाव ॥ जिस समुन्द्र ढिग गायखुर, यथा योग्य दरसाव ॥ वृषभनाथ जिन आदि दे, पारस लो तेईस ॥ मन वच काया भाव धरि, बन्दौ करि धरि सीस ॥ नमों सकल परमातमा, रहित अवारा दोष ॥ छियालीस गुण आदि है, है अनन्त गुण कोष ॥

अंत—छप्पै—मंगल श्री अरहन्त सिद्ध मंगल शिव दाइक ॥ आचारिज तुव काम साधु गुरु मंगल लायक ॥ मंगल जिन मुष पिरी दिव्य धुनि जिन बानी ॥ मंगल श्रावक नित्य सम किती मंगल जानी ॥ मंगलजु ग्रन्थ इह जानियो, बकता मुषि मंगल सदा ॥ श्रोता जु सुणो निज गुण गुणो, मंगल करि तिनको सदा ॥ दोहा किसन सिंह की वीनती, जिन श्रुत गुरु सौं राह ॥ मंगल निज तन सूपद लषि, मुकहि मोक्ष पद दाहिं ॥ संवत् १८९७ इति श्री क्रिया कोश भाषा मूल ।

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में जैनधर्मानुसार गृहस्थ लोगों को कुछ क्रियाओं का पालन करने का उपदेश दिया है।

संख्या ११९ डी. क्रिया कोस भाषा, रचयिता—किसन सिंह (स्थान—साँगानेर), कागज—मूँजी, पत्र—८८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७८३, पूर्ण, रूप—अतिप्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७८४ = (सन् १७२७ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान—रायभा, डाकघर—अछनेरा, जि० —आगरा।

आदि—ओं नमः सिद्धेभ्यः॥ अथ त्रेपन क्रिया कथा कोस भाषा लिष्यते ॥ दोहा॥ समव सरपा लछिमी सहित, वर्द्धमान जिन राय॥ नमो विवुध वंदित चरन, भव जन को सुष दाय॥ जाके ग्यान प्रकास में, लोक अनन्त सभाव॥ जिस समुद्र ढिग गायपुर, जथा नीर दरसाव॥ वृषभ नाथ जिन आदि दे, पारसलौ तेईस॥ मन बच काया भाव धरि, बन्दौ कर धर सीस॥ नमो सकल परमातमा, रहित अवारा दोष॥ वियालीस गुण आदि दे, है गुन अनंन्तहि पोष॥ वसु गुण सम किन आदि जुत प्रणमौ सिद्ध महंत॥ कालं अनंतानंत थिति, लोकसिषर निवसंत॥

अंत—सत्रह सै संवत चौरासिया सुभादौं मास वर्षा रितश्वेत तिथि और रविवार है। सतविपारि विघृत नाम जोग कुंभ ससि पंथ दिन को सुमहूरति अतिसार है। हूँ हिरदेस जान वसै साँगानेर थान जैसिंघ सवाई महाराज नीतिधार है। ताके राज समै पर पूरण का इह कथा भव्यन कै हिरदै हुलास देनहार है। × × × दोहा किसन सिंघ की वीनती, जिन श्रुत गुर सौराह। मंगल निज तन सुपद लषि, मुकुहि मोक्ष पर दाह॥ चौ०॥ जबलौ धरम जिनेश्वर सार। जगत माहिं वरनै सुषकार॥ तवलौ बिसतरयौ इह ग्रन्थ। भक्त जन सुर सिव दायक पन्थ॥ इति श्री क्रिया कोष ग्रन्थ॥

विषय—वन्दना, श्रैणिक की चर्चा, पृष्ठ ४ तक। बाईस दोष अभिज्ञ, पृष्ठ ९ तक। गोरस मर्य्यादा, पृष्ठ ९ तक। रसोइया परिहरिका आदि, पृ० १२। रजस्वला स्त्री की क्रिया, पृ० १४। बारह व्रजों की क्रिया तथा कथा, पृ० २७। भोगोप भोग चौथे सिष्या-वृत कथा, अतिथि संविभाग, अहारदान का दोष, पृ० ३५ तक। मौन कथनं, सत्यासमरण, अष्ट प्रकार को ज्ञान—पंच महाव्रत आदि, पृ० ३७ तक। ११ प्रतिभा की कथा पृ० ४२ तक। ५३ क्रियाएँ, पृ० ४८ तक। निश्चय दर्शन, गूँद की उत्पत्ति। सीधा की मर्य्यादा, प्रतिमाजी की महिमा, निषेध, जनम मरण की क्रिया, ग्रह शान्ति ज्योतिष वर्णन, त्रैलोक्य-सार नेमचन्द्र के सिद्धान्त, पृ० ६४ तक। नवग्रहाशक्ति विधि, जाप पूजा की विधि, नन्दी श्वर विधि १६ कारण १० लक्षण, अन्य बीसों व्रत, पृ० ८६ तक। कवि परिचय, उसकी प्रार्थना, रचनाकाल आदि, पृ० ८८ तक।

संख्या १२० ए. भागवत महिमा, रचयिता—किशोरी अली, कागज—स्यालकोटी, पत्र—६०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८३७ (१७८० सन्),

प्राप्तिस्थान—श्रीगोपाल जी का मन्दिर, स्थान—नगर, डाकघर—फतेहपुर (सीकरी), जि०—आगरा।

आदि—श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः। सोरठा श्री गुरुचरणन माथ, धारों नित ही प्रीति जुत। कीजे मोहि सनाथ, भक्ति देऊ भागौत की ॥ श्री भागौत पुरान, निगमन कौ फल प्रगट है। याही कौ करि गान, इष्ट राधिका पाइहौं ॥ जय जय शुक मुनिराइ, अति दयाल करुणा भवन ॥ बन्दौं तिनकें पाइँ, मंजु कंज से सोहने ॥

अंत—छप्पै अष्टादस शत वर्ष बरनि तापर सैतीसा ॥ शुक्ल पक्ष मधु मास सप्तमी रवि ग्रह ईसा ॥ तिहि दिन श्री भागौत महातम पूरण कीनौं ॥ सार सार उद्धारि लिख्यो यह सुजस नवीनों ॥ पावन अनूप हरि सुजस जस किशोरी अली वर्नन कियो ॥ भवताप तपित लखि आपनो, करन हेत सीतल हियो ॥ इति श्री भागवत महिमा किशोरी अली कृत सम्पूर्णः × × ×

विषय—श्री मद्भागवत पुराण का माहात्म्य जिसमें कई पुराणों से उद्धरण दिए गए हैं, १—५६। द्वादश स्कंधों का सार, ५७—६०।

संख्या १२० बी. भक्ति महिमा, रचयिता-किशोरी अली, कागज-स्यालकोटी, पत्र—४८, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८३८ (१७८१ ई०), प्राप्तिस्थान—पुरी गोपाल जी का मन्दिर, स्थान—नगर, डाकघर—फतेहपुर (सीकरी), जि०—आगरा।

आदि—॥ अथ भक्ति महिमा ॥ सोरठा ॥ जय जय वंशी अलि, जयति किशोरी स्वामिनी ॥ करुणा करि मोहि पालि, प्रेम भक्ति कौ दान दै ॥ जय ललिते सहचारि, श्री राधा को प्राण सम ॥ मेरी ओर निहारि वंशी अलिके जानिकैं ॥ जयति कृष्ण घन स्याम, परम छबीले रसिक बर ॥ पूरण करिये काम, मम हिय भक्ति सु प्रेरिकै ॥ जय वृन्दावन धाम जय वृन्दे अधिकारिणी ॥ (गा) गावों तुव गुण ग्राम निज रज प्रापति कीजये ॥

अंत—सफल करौ अब स्वामिनी, यह मोमन की चाह। सन्तन संग बसि विप्रुन मैं प्रेम भक्ति लऊँ लाह ॥ सवैया संवत सार अठारह सै अड़तीस की साल रसाल सुहाई ॥ माधव मास पुनीत लसै सुकला पछि सोम कला सरसाई ॥ पावन पुन्य अखै त्रितिया गुर वासर जाग सबै सुखदाई ॥ भक्ति महातम ता दिन पूरण कीनो है सन्तन कौ सुखदाई ॥ इति श्री भक्ति महिमा किशोरी अलीकृत ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में भक्ति की महिमा वर्णित है। तत्सम्बन्धी पुराणोक्त कई आख्यायिकाएँ दी गई हैं। साथ ही स्कन्द पुराण, बाराह पुराण, पाराशर स्मृति, वृहन्नारदीय अगस्त्य, भागवत, भगवद्गीता, पद्म पुराण आदि के उद्धरण समर्थन में दिए गए हैं।

संख्या १२० सी. सत्संग महिमा, रचयिता—किशोर अली, कागज—स्याल कोटी, पत्र—३७, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८३८ (सन् १७८१ ई०), लिपिकाल—वि० १८४९ (सन् १७९२ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री गोपाल जी का मंदिर, स्थान—नगर, डाकघर—फतेहपुर, जि०—आगरा।

आदि—श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ श्री राधो कृष्णभ्यो नमः ॥ सोरठा । जय जय श्री गुरुदेव, करऊ कृपा जन दीन पर । सत संगति की सेव सदा दया करि दीजए । सत संगति सम आन, पुरुषारथ नहि जगत में ॥ मिलैं तुरत ही कान्ह, यामे संसय जिनि करो ॥ लाभ न यासम कोइ, सन्त समागम जो लहे ॥ कहै भागवत सोइ, सत संगति कीजे सदा ॥ दोहा । श्री नदनन्दन भक्ति कौं, कारण बरसत संग ॥ सोई अब वरणन करौं, रुचि करि सुभग प्रसंग ॥

अंत—राग सोरठ ॥ स्वामिनी बिनती सुन लीजे ॥ श्री वनराज बास बिनु स्यामा पल पल हाय आयु यह कोजै ॥ तहाँ मिलि संग रसिक मंडल मैं दपति सुजस सुधारस पीजै ॥ ललित निकुंज विहार जमुन तट निरखि हरषि नैननि सुख जीजै ॥ भावुक जुगल प्रेम रस माते तिनकी मोहि नित संगति दीजे ॥ किशोरी अली की आरति लखिके, हाहा कुँवर विलंब न कीजे ॥ इति पद संपूर्ण ॥ श्री रस्तु ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में सत्संगति का महत्व विस्तृत रूप से वर्णित है। शास्त्रों से अनेकानेक उद्धरण उसके समर्थन में दिए गए हैं। अन्त में रचनाकाल यों दिया गया है। कवित्त अष्टादश सत अठतीस की वरषवर, शुक्ल पछ मधु मास सरस सुहायो है। नौमी तिथि सुन्दर लसत भौमवार, सुभ सोई राम जन्म को दिवस विधि गायो है। सन्त महिमा को ग्रन्थ वरन्यो अनूप यह, तिहि दिन आनन्द उल्लास सरसायो है। सन्त सुख दानि जन आपनो ही जानि हित, कृपा करि किशोर अली को अपनायो है। पृ०—३५।

संख्या १२० डी. सार चंद्रिका, रचयिता—किशोरी अली, कागज—स्याल कोटी, पत्र—६१, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०९८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८३७ (१७८० ई०), प्राप्तिस्थान—श्री गोपाल जी का मन्दिर, स्थान—नगर, डाकघर—फतेहपुर (सीकरी), जि०—आगरा ।

आदि—श्री राधा कृष्णभ्यां नमः ॥ सोरठा जय जय भानु कुमारे जय राधा असरन सरन ॥ अपनो विरद विचारि प्यारी पालऊ दीनजन ॥ कीरति लली उदार करुणनिधि जस रावरौ ॥ छायो जगत अपार वंशी अलिकी स्वामिनी ॥ गौरी रुप निधान प्रीतम की प्राणेश्वरी ॥ तुम हौ परम सुजान करिय कान जन बीनती ॥ जयति कृपा की रासि जयति निकुंज विहारिणी ॥

अंत—छप्पै अष्टादस शत तिहि ऊपर सैतीस जानिये ॥ सज्जन जन सुखदानि यहै संवत वखानियै ॥ मार्ग शीर्ष सुभ मास पक्ष शुक्ला सुख करनी । मंगल मंगल बार सुतिथि दुतिया मन हरनी ॥ यह सार चन्द्रिका रस मई, वैष्णव महिमा शुभवरी ॥ अली किशोरी गुरु कृपा, पाइ गाइ पूरण करी ॥ इति श्री सार चन्द्रिका सम्पूर्ण ॥

विषय—अछूत, यवन, हूण, आभीर आदि भी भक्त होकर ब्राह्मणों से महान हो सकते हैं, इस सिद्धान्त का शास्त्रों के उद्धरण देकर समर्थन, १—६। भक्तिकी अपूर्व महिमा, ७—८। भगवान के भक्त भवन को पुनीत करते हैं, ९—१२। भक्ति और भक्तों का

निर्णय, १३—३४। निम्बार्क सम्प्रदाय के सिद्धान्त तथा उनकी विस्तृत विवेचना जिनमें समस्त धर्म्म शास्त्रों एवं विभिन्न पुराणों के उद्धरण दिए गए हैं। ३५—५६, हरि भक्ति के उपासकों की नामावली, ६०—६१।

संख्या १२१. हरि कीर्तन (अनु०), रचयिता—किशोरीदास जी, कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति प्रतिपृष्ठ—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६४९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री तुलसीराम जी गोस्वामी, नंदजीके मंदिर का घेरा, स्थान—डाकघर—नंद ग्राम, जि०—मथुरा।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति ॥ राग भैंरु आड़ताल ॥ मंगल रूप कुँवरि राधेको, निरषि निरषि नैननि सुख लहीये। मंगल दरस परस अति मंगल, मंगल रसना निशि नाम कहीये। मंगल इष्ट सदा इनही को, मंगल चरण सरन व्रत गहीये। दासी वृन्दावन कुँवरि किशोरी, सरनागत की लाज निबहिये ॥

अंत—वल्लभराज गोप कुल मंडन इन द्वै घर कौ जगा। नंदराय इक दियो पिछोरा तामें कनक तगा। श्री वृषभान दयो इकटोडर (? तोड़ा) कंचन जटित नगा। कीरति दई कुँवर की अँगुली जसुमति अपने सुत को झगा, किशोरीदास कौं ले पहिरायो नील पीतको पगा।

विषय—(१) भगवान कृष्ण के भक्ति संबंधी पद। (२) उत्सव मालिका। (३) पलना का उत्सव। (४) राधाष्टमी का उत्सव। (५) श्री राधिका जीके पलने का कीर्तन। (६) वावनावतार की जन्म वधाई। (७) सांझी, विजयादशमी। (८) वंशी कीर्तन; रहस। (९) रथ उत्सव तथा महारास। (१०) गोवर्द्धन कीर्तन। (११) दीपमालिका, गोपाष्टमी, प्रबोधिनी, वसंत-आगम। (१२) वसंतोत्सव, होरी, रंगडोल। (१३) महाप्रभु कृष्ण चैतन्य का जन्मोत्सव। (१४) राम नौमी, फूल मंडली, नृसिंह जन्मोत्सव, स्नान यात्रा, राधिकाजी की बाधाई।

संख्या १२२. सेवक की बानी, रचयिता—कृष्णदास (स्थान, वृंदाबन), कागज—मूँजी, पत्र—५८, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण अनुष्टुप्)—५८०, पूर्ण, रूप-प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राधेश्याम द्विवेदी, स्वामीघाट, मथुरा।

आदि—श्री हितहरिवंश चंद्रो जयति ॥ अथ सेवक की बानी लिख्यते ॥ तृतीय पद ॥ राग धनाश्री। श्री हरिवंस चंद्र शुभनाम ॥ सव सुख सिंधु प्रेम रसधाम ॥ जाम घड़ी विसरै नहीं ॥ यह जु परयो मोहि सहज सुभाव ॥ श्री हरिवंश नाम रस चाव ॥ नाम सुदृढ़ भव तरन कों ॥ नाम रटत आई सब सोहिं देह सुबुद्धि कृपा करि मोहि ॥

अंत—जैति जैति हरिवंश नाम रति सेवक वानी ॥ परम प्रीति रस रीत रहसि कलि प्रगट बषानी ॥ प्रेम संपदा धाम सुषद विश्राम धर्मनी ॥ भनत गुनत गुन गूढ़ भक्ति भ्रम भजत कर्मनी ॥ श्री व्यासनंद अरविंद पद तासु चरन रस राचहीं ॥ जै श्री

कृष्णदास हित हेत सों जे सेवक वानी बाँचही ॥ इति श्री सेवक वानी की फल स्तुति संपूर्ण ।

विषय—श्री हित हरिवंश जी का जीवन चरित्र । विशेषतः उनकी धार्मिक शिक्षा तथा उसका प्रभाव वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता हित हरिवंश के कोई शिष्य कृष्णदास हैं। उन्होंने सिर्फ ग्रंथ के अंत के छप्पय में अपना नाम दिया है । ग्रंथ के बीच बीच में कहीं कहीं तत्कालीन मुसलमानी बादशाहों के अत्याचारों की झलक भी दिखला दी गई है। मलेच्छों तथा मलेच्छ राजाओं के अत्याचारों का वर्णन महत्व का है ।

संख्या १२३. रुकमणी विवाहलो, रचयिता—कृष्नोदास गिरिधर, कागज—मूँजी, पत्र—६, आकार—१०३/४ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि० १६९२ (१६३५ ई०), प्राप्ति स्थान—श्री गोसांई जीवन लाल जी, स्थान—नरी, डाकघर—अकबरपुर, जि० मथुरा ।

आदि—रुकमनी विवाहलो । राग सोरठी ॥ विद्रम देस कुंदनपुर नगरी । भीषम नृपति तहाँ नव निधि सगरी ॥

× × ×

जुगल षोडस लछिन ललना मरत पिंगल पारषी ॥ पोडस भूषन अंग भ्राजित दिननि षोडस वारषी ॥ मृगराज कटि तटि मृगज लोचन मृग अंक वदन सुदेसए । जन कहतु कृस्नौदास गिरिधर उपजि विद्रम देसए ॥

अंत—भगत हेत अवतार विमल जस भूतल लीला धारी ॥ गिरिवर धर राधा वल्लभ पर जोड़ो जनि वलिहारी ॥ रुक्रमिनि ब्याह कथ्यौ जन कृष्णै सीषे सुनें सुनावै ॥ अर्थ धर्म्म अरु काम मुकति फल च्यारि पदारथ पावै । इति श्री रुकमिनी व्याह ॥

संवत् १६९२ वर्षे चैत्र बदि ११ गुरुवासरे गढ़ नलवर मध्ये ॥

विषय—कृष्ण और रुक्मिणी का विवाह ।

संख्या १२४ ए. जोगिनी दिशा विचार, रचयिता—कृष्णजू मिश्र, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४४ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित बाँके लालजी, स्थान—साहूपुर, डाकघर—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ शारदाभ्यो नमः ॥ श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥ अथ जोगिनी दशा लिख्यति ॥ दोहा ॥ मुनिन दशा आठौ कहीं तिनके सुनों प्रमाण, तिन में जोगिन सव कहीं गिरजा सो बलवान ॥ जन्म नखत गुन सहितकर हरि बस सों मतिधाम । वचै अंक जो जो वचे, ताके सुनि अव नाम ॥ होति मंगला एकते, बचे पिंगला दोय ॥ धन्या कहिये तीनते, चार भामरी होय ॥ भद्रका पुनि पांचवे, षट ते मुद्रा जान । सृद्धा कहिये सातते, आठ संकटा मान ॥ कवित्त ॥ मंगला की बानी सिव मंगला बखानी, द्विज नाह

दशा जानी सोतो एकही बरसकी । सूरज की पिंगला वरष विन जीव दशा धन्या तीन दानी वहु कंचन करष की । मंगल की धामरी वरस श्रुति भद्र बुध संम्वत विशिख दानि पावन हरषकी । उलका सनीचर श्री सम्वत सर सो आठौ राहु संकटा परषकी ॥

अंत—पिछिले आचार जनिको, मतु विलोक कमनीय । कियो मिश्र श्रीकृष्ण जह, तिमिर दीप रमनीय ॥ होय गजादिक लाभ जो, जन्म समय गज जोग । त्योंही पुर पत्तननि को, जानों सिगरे लोग ॥ × × × ॥ कवित्त ॥ भद्रका में मंगला करति फल अपने को, पूरन परम यह संकटा बखानी है । ताही विधि उलका में पिंगला कहति कृष्ण, धन्यका में धन्या का परम सुखदानी है । संकटा में भ्रामरी विदित सब ग्रन्थन में, सिद्धिका में चन्दका संकटाल जग जानी है । पिंगलो में उलका त्यों मंगला में सिद्धा सुनौ, भ्रामरी में संकटा करति अति हानी है ॥ इति श्रीमन् श्री हरिदत्त चरणार विन्द करनदास स्वादक श्रीमन् मिश्र लोक जनि तनुज श्री कृष्ण चरचरीक विरचिते तिमिर प्रदीपे जोगिनी दशा अन्तर दशा फल वर्णनम् समाप्तः × × × अथ शुभ सम्वत् १८४४ शाके १७९ अषाढ सुदी १४ भृगुवासरे श्री मिश्र ठाकुरदासजी पुस्तक लिख्यते ॥

विषय—आठों जोगिनियों की दशाओं का विचार ।

संख्या १२४ बी. प्रश्न विचार, रचयिता—कृष्णजू मिश्र, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—पंडित बाँकेलालजी, स्थान—साहूपुर, डाकघर—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः । दोहा—राधा राधा रमन के सुमिर चरणचित चारु कियो मिश्र श्रीकृष्ण तवं भाग प्रश्न विचारु १ श्री गुरु गणपति शारदा सकल देव करि नेहु प्रश्न तंत्र वरनन करों करुणा करि वसदेहु २ तुरिया भवन लषि वृद्धि कहु निजु प्रभुजुत सुन हेरि के सुभ प्रभु की दृष्टि ते सुष ग्रह भू की हेरि ३ कव लजि हे अधिकारु वह छुटै जरा च्योरोकि च्यन ताहिं वरनत विवुध सो कहु लग बिलोकिं ४ चोपई जो प्रश्न समेचर लग्न होय निजु नाथजु सुभजु तल वन सोई तो छुटे वंधे तें सुनि प्रबीन पुनि मनुज होइ अधिकार ।

अंत—लखि पोत भयभीत कर कलि के अति विसार ताते में सूछम राचयो यह सुनि प्रश्न विचार चित्त दे याहि लिखि कहियो सुपति बिचार रचो मिश्र श्रीकृष्णजू यहि हित निज उरधार ।

विषय—शुभाशुभ प्रश्नोत्तर विचार ।

संख्या १२५. रागसागर या संगीत कल्पद्रुम, रचयिता—कृष्णानन्द, कागज—स्याल कोटी, पत्र—२३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा ।

आदि—॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री व्रज पति सुरराज के, चरण कमल सिरनाय ॥ कहौ रीती संगीत की, राग रुप दरसाय ॥ राग प्रेम की खानि है, राग मुक्ति को मूल ॥

राग रंग तै होत है, सकल देव अनुकूल ।। प्रथम नाभि ते धुनि उठै, ताको सुद्ध उचार ॥ तीनि ग्राम तामें भये, मंद मध्य अरु तारु ॥ मंद हृदय ते जानिये, मध्य कंठ ते होय ॥ उपजै तार कपाल ते, भेद कहे कवि लोय ॥ अथ स्वरन के नाम ॥ षरज रिषभ गंधार स्वर, मध्यम पंचम मानि ।। धैवत बहुरि निषाद कौ, सरिगम पधनी जानि ॥

अंत—दोहा—सोरठि गौढ मिलाय के, राग विलावल संग ॥ जै जै वन्ती होत है, गावति उठति तरंग ।। भैरवी सिंधवी मिलत ही, भैरवी सिंध वषान ॥ आनन्द भैरवी टोडिका, राग भैरवी गान ॥ पर्य औ ललित मिलै, भरि आरी सम भाग ॥ राग कलिंगा होत है, उपजत है अनुराग ।। घोटो चैती जंगला, विद्रोही अनुमान ॥ पीलू वरवा काफी है, सिधे मनै आसान ॥ देश एक अहंग पुनि, आसा जोग तिलंग ॥ सोहर विहारी लूम पुन, व्यूहर बढ़ै उमंग ॥ इति राग मिलाप ॥ नमो नारायण ॥ इति श्री कृष्णानन्द व्यास देव राग सागरोद्भव संगीत राग कल्पद्रुम में राग रागिणी मनराय विवेकाध्याय राग विलाप सम्पूर्ण।

विषय—अथ स्वर के नाम, सप्तस्वर के पशु पक्षियों के नाम उनके स्वरूप—पृ० ३ तक। मूरछना के नाम, बाजों के नाम, राग निरूपण, भैरव राग लक्षण, भैरव की पाँच भार्य्या, भैरवी लक्षण, बैडाड़ी लक्षण—पृ० ५ तक। मधुमाधवी लक्षण, वंगाली, मालकोश, सिंधवी, मालकोश पंच भार्य्या, टोड़ी, गुनकली लक्षण—पृ० ७ तक। खंभावती ककुभ, हिंडोलराग, हिंडोल की पाँच भार्य्या, रामकली, देशारवल, ललित, बिलावल, पट मंजरी, दीपक, दीपक की पाँच भार्य्या, देशी लक्षण—पृ० १० तक। मोदी, मट, केदार, श्रीराग, श्रीराग पंच-भार्य्या, मालल, अन्त श्री, श्री बसंतराग, मौलहिरी, आसावरी, मेघमाल, मेघ-भार्य्या, मलारी दक्षिण गुर्जरी, भूपाली, देशकारी—पृ० १४ तक। शंकरराग, सारंग नर, सोरठ, तुरंग टोड़ा, पंचमराग, स्यामराग त्रिवेनी, जैतश्री, विभास सुघ वंगाली, सामन्त, सारंग—पृ० १७। भिन्न २ राग रागिनियों के गाने के समय तथा उनके विषय में अन्य बातें। राग कालिंगा और मिलाप—पृ० २३ तक।

संख्या १२६. आनन्द लहरी, रचयिता—कृष्ण सिंह, कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि० १७९४ = १७३७ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री ईश्वरी प्रसाद जी वैद्य, स्थान व डाकघर—होतीपुरा, जि०—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आनन्द लहरि लिष्यते ।। एक रदन गज वदन सेउ मन अति विलास सो ॥ होहि क्रिया सब सिद्ध और वहु विधि हुलास सो ॥ गवरि पुत्र आनन्द कन्द सब हित सुषलायक ।। अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष तुम हौ फल दायक ॥ अव होहु कृपाल दयालु प्रभु, कृश्नसिंह के सुवुधि हित ॥ आनन्द लहरि उमगै हिये, श्री नारायण भक्ति हित ॥

अंत—दोहा सूछम गति है दुहुन की, धर्म्माधर्म्म विवानु ।। नारायण सन्मुष पुरुष, करै विवेकु सानु ॥ जथा बुद्धि की रीति सों, वरन्यों कृष्ण विचारु ।। प्रभु करुनामय तुम सदा, अवागमन विचारु ॥ इति आनन्द लहरी समाप्तः शुभ मस्तु ।। सं० १७९४ समये भाद्र मासे शुक्लाष्टम्यां चन्द्रवासरे वि० कमल नयनेन ॥ मिश्रेन ॥

विषय—सरस्वती ध्यान, पृ० १—२ । निर्गुण तथा सगुण का विचार, पृ० २—३ । चौबीस तत्वों का वर्णन, ३—४ । भक्ति नीति और ज्ञान की विवेचना, ४—६ । वेदान्त की अन्यान्य बातों का विचार, पृ० ६—१० ।

संख्या १२७ ए. संग्रामसार, रचयिता—कुलपति मिश्र, कागज—बाँसी, पत्र—१५४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४२ वि० (सन् १७८५ ई०), प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, गोकुलपुरा, आगरा ।

आदि—श्री गणपतये नमः ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ अथ संग्राम सार लिख्यते ॥ छप्पै उरद वदन जय सदन विघन वर ठंडन षंडन ॥ शुंडा डुंड प्रचंड दनुज हरि सिव कुल-मंडन ॥ असन वरन भवभीत हरन सुमरन तुव विज्जय । भारथ भाषा करन विविध वरुभार दिग्विजय ॥ उद्दाम रीति पद वर्न गुन वंद छन्द, रचना सुघट ॥ रे रम्भ कम किज्जे कऊँ जुद्ध कुद्ध सैना सुभट ॥

अंत—दोहा बादअस्त्र विविपरि हरण, द्रौणि जुद्ध सन रुद्र । परिछेत अन्तिम कह्यो, कुलपति ज्ञान समुद्र ॥ इति श्री मन्महाराजा धिराज श्री राम सिंघ देव आज्ञा कुलपति मिश्रेण विरचिते द्रोण पर्व भाषा संग्राम सारेनाम षोडश परिछेदः ॥ शुभं भवतु ॥ संवत् १८४२ ॥ शुभे दुतीक चैत्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्यां भृगुवासरे लिखितं मिश्र शुकदेव पठनार्थं राणाजी वालकृष्ण जी ॥ लेखक पाठकयोः मंगलं ददातु । पुस्तक लिख्यो सुधारिके, बाल कृष्ण के हेत ॥ शुभ चिन्तिक शुकदेव कहि, मन वांछित फल देत ॥ करि कटि ग्रीवा नैन मुष, सब सुष दुख ह्वै जान ॥ लिख्यो जात अति कष्ट सौं, सठ जानत आसान ॥ शुभंभवतु ॥ मंगलं ददातु ॥

विषय—महाभारत के द्रोणपर्व का पद्यात्मक अनुवाद है ।

संख्या १२७ बी. महाभारत द्रोण पर्व सार, रचयिता—कुलपति मिश्र (आगरा), कागज—बाँसी, पत्र—१६४, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७३३ (सन् १६८६ ई०) । लिपिकाल—वि० १९२६ (सन् १८६९ ई०), प्राप्ति-स्थान—श्री धनपति रायजी चतुर्वेदी, स्थान व डाकघर—होली पुरा, जि०—आगरा ।

आदि—दोहा जब नृप कुलपति मिश्र को कियो वहुत सनमान। कह्यो जुद्ध भाषा करौ, द्रोण पर्व परमान ॥ अथ कविप्रशंसा ॥ छप्पै ॥ माथुर वंस प्रवीन मिश्र कुल अभय राज भय ॥ सब विद्या परवीन वेद अध्यन तपो मय ॥ तारापति जिहि पुत्र विप्र कुलजिमि तारा-पति ॥ तासु तनय मय लाल ब्रह्म विद्या यिचित्रगति ॥ हरि कृष्ण कृष्ण भजि कृष्ण मय तासु तनय भगवन्त मगा ॥ भय परसुराम जाको तनय, गुरु सम भजि राम पगा ॥

अंत—दोहा वाद अस्त्र विवि परिहरण; द्रोण युद्ध सत रुद्र ॥ परिछेद अन्तिम कह्यो कुलपति ज्ञान समुद्र ॥ सं० १९२६ शाके १७५१ मिती जेष्ठ वदी मंद वासरे प्रति कोल नगर अचलेश्वर तट श्री शंकरर्ष मंदिरे पूर्ण शर्म्मेण लिखितोयं पुस्तकः श्री माथुर वंशोत्भव पुरुषोत्म स्यार्थे शुभं ॥

विषय - कविपरिचय तथा कविप्रशंसा, पृ० ७ तक। पांडवों का अश्वमेध यज्ञ करना, कौरवों का बुलाया जाना, उनका अपमान होना, जुआ आदि खेलना और पांडवों का वनवास जाना, बनवास के पश्चात् कौरवों से लड़ाई होना और पांडवों की जीत तथा राजगद्दी पर उनका बैठना आदि वर्णन। विशेषतः इसमें विस्तृत रूप से द्रोणाचार्य के साथ पांडवों का जो पाँच दिन तक युद्ध हुआ है उसका वर्णन है।

संख्या १२८. दानपद, रचयिता—कुम्भनदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० तुलसीराम वैद्य, स्थान व डाकघर—माँट, जि०—मथुरा।

आदि—श्री राधा रसिकेन्द्रो जय। अथ दान पद॥ राग देव गंधार। हमारो दान देहु गुजरेटी। बहोत दिना चोरी बेच्यो, आज अचानक भेंटी। अति सित राति कहाधौं करेगी, बड़े गोपकी बेटी। कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन कर भुज ओढ़नी लपेटी।

अंत—अहो प्यारी को लकुटी आड़ी करें, और कोन सकै कहि बात हो। रस ही रस बस ह्वै गए और, सुफल भये सब गात हो। अहो प्यारे जुवती अनेक सुहावनी, ओर वतरस वदनो ब्योहार हो। चतुरन मन दोउ मिले, और दास बलि बलि हार हो।

विषय—राधाकृष्ण की दान लीलाओं का वर्णन।

संख्या १२९. नरसीलौ, रचयिता—पं० लक्ष्मण (स्थान फतेहपुर, आगरा), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौधरी सरनाम सिंह जी, स्थान—न० सभा, डाकघर, कुचेला, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ नरसी की जिकरी लिख्यते॥ तिरिवे कूँ आधीनी जगमें अधिक है॥ बूड़न कूं अभिमान। हरचंद अरु पहलाद से बैठे जात विमान॥ सत्य भजन प्रताप मोर ध्वज राजा एक नरसी महतां तिरि गयौ॥ निजनाम कथा परगासी॥ सुनि लेउ बैठि कहैं हरि चरचा॥ कोई नरसी की दुहिता भई रामा ब्याह सुता को ठहरायौ॥ कोइ नौंतन भात चलीं झूनांगढ़ जोगीरंक पिता पायो॥ ठट्ठा करै वगरकी तिरिया पूछै दै दै हाँसी॥ निजनाम॥ १॥ चरचानारि करैं आपुस मैं॥ कोई काऊ कें पीहर काहू के वंधव काहू को पिता......वन मैं॥ थोड़ो वहुत लिखौ नरसी त्यौं झाँझ वजावत विनमैं॥ वहौ तक कहैं भातु नहिं लावैं जोगी और संन्यासी॥ निजनाम०॥२॥ लागी चैंक पजरिगयौ जामा॥ कोई ठट्ठामान कहैं गुजराती लज्यामान सुनें सवकी॥ कहा कहूँ कछु कहत न आवै दुखल वहौत कहा वलकी॥ सुनि सुनि वचन पजरि गयौ जामा फिरि फिरि लेत उसासी॥ निजनाम०॥ ३॥

अंत—बूझै स्याम वताइ देउ भाई मेरे अस नावन के नगर कूँ॥ मोहि पल पल होत अवार। रकम लिखी सो लीजियौ तुम गिनि गिनि साहूकार॥ सो देंतई देत स्याम नहिं हारयौ सब दुनियाँ हारीलेत में॥ रथ हांक्यौ सेठ अगारी॥ जापै ज्वाव स्याम ने

दियौ ॥ कोई वोरे कलम लिखें कागद में दुनियाँ देश दिखावन कूँ ॥ पहुंचो स्याम सजन की पौरी लै जाउ वेगि धरौ धनकूँ ॥ लै जाउ वेगि सामास्यौ सामा समधिन के कोठ्याढी ॥ ॥ रथ हाँक्यो० ॥ रामा देखि खुशी भई मन में ॥ कोई लै लै भात गवाह् लै मगल राम.........

विषय—नरसी महता का हरि भक्ति का वर्णन ।

संख्या १३० ए. यशोधर राजा का चरित्र, रचयिता—लक्ष्मीदास (स्थान—साँगानेर), कागज—सन का, पत्र—३५, आकार—११ X २ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८६०, पूर्ण, रूप—बहुत प्राचीन, पद्य, लिपि नागरी, रचना काल—वि० १७८१ = सन् १७२४ ई०, लिपिकाल—वि० १८२५=सन् १७६८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर जी, स्थान—रायभा, डाकघर-अछनेरा, जि०—आगरा ।

आदि—ऊँ नमः सिद्धेभ्य ।। अथ श्री यशोधर राजा को चरित्र लिख्यते । दोहा । आदि जिनेन्द्र नम सदा, त्रिजगत गुरु जिनराय । सोभे महिमा अनन्त जुत, धर्म्म राज पति धाय ॥ चौपाई अजित नाथ बंदू धरि माय । जित अरिजनक सुविजया माय संभव जिन बंदू धरि ध्यान । धर्म्म रतन उपधान सुथान ॥ अभिनंदन आनंद करतार ॥ भक्तन को भवपार उतार ॥ सुमति जिनेश्वर के क्रम दोय ॥ बंदू अहिनिशि हरषित होय ।

अंत—दिल्ली सहर विषैं भलो, जैसिंघ पुर जाणू । धर्म्म सुथान समान या, अनियानन माँनू ॥ सुंदर नंद षुस्याल ए, रह बना वह रानी ॥ भव्य धरौ निज चित्र में, भगवत को वानी ॥ संवत्सतरा सै भले, अरु औरु इक्यासी ॥ जे पढिसी सुणिसी सदा, तेही सुष पासी ॥ कातिक षष्टी भाँवंती, ससि के उजियारे ॥ भव्य जीव सुणि जे पछै, तेरी विसतारे ॥ जैन धर्म्म परभाव सौं, सबही सुष होई ॥ तातै धर्म सुधारि है, तो ता सम कोई ॥

× × × ×

सुभ संवत् १८२५ मासोत्तम मासे मार्ग सिर कृष्ण पक्षे तिथौ द्वादसी वासरे सोमवार ॥

विषय—जैन धर्मानुयायी राजा यशोधर की कथा का वर्णन । रचनाकाल—दिल्ली सहर विषैभलौ, जै सिंघ पुर जाणू । धर्म्म सुथान समान या, अनि थानन माँनू ॥ सुंदर नंद पुस्याल ए, रह बना वह रानी ॥ भव्य धरौ निज चित्र में, भगवत की बानी ॥ संवत्सतरा सै भवे, अरु औरु इक्यासी ॥ जे पठिसी सुणिसी सदा, तेही सुष पासी ॥ कातिक षष्ठी भावतो, ससि के उजियारे ॥ भव्य जीव सुणि जै पछै, तेरी विसतारै ॥ जैन धर्म्म परभाव सौं । सव ही सुष सोई । तातै धर्म सुधारि कै, तो ता सम कोई ॥

× × ×

सुभ संवत १८२५ मासोत्तम मासे मार्गसिर कृष्ण पक्षे तिथौ द्वादसी वासरे सोमवार ॥

विशेष ज्ञातव्य--संस्कृत मूल ग्रंथ का रचयिता भट्टारक देवेंद्र है और पद्य बद्धकर्ता पंडित लक्ष्मीदास, जैसा कि निम्नलिखित पंक्तियों से प्रकट है:—॥दोहा॥ सागानेर सुथान में, मूल नाद्रक थानूँ । भट्टारक देवेंद्र कीरति की जिहिं आनू ॥ पंडित लक्ष्मीदास जी, तिनकर इह कीन्हो । रहस्य सकल कीरति महा, मुनिवर को लीन्हो । इसी ग्रंथ के अंत में "सिंदूर पाकर" नामक ग्रंथ भी कवित्त सवैयों में है । अधूरा होने से इसका विवरण नहीं लिया ।

संख्या १३० बी. श्रेणिक चरित्र, रचयिता--लक्ष्मीदास (स्थान--गाँगावती), कागज--काल्पी, पत्र--१३०, आकार--८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२७५, पूर्ण, रूप-प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७३३ वि० (सन् १६७६ ई०), लिपिकाल—वि० १९१९, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान—रायभा, डाकघर—अछनेरा, जि०—आगरा ।

आदि—श्री गुरु परमात्मने नमः ॥ अथ श्रेणिक चरित्र भाषा लिख्यते ॥ राग विलावल ॥ दोहा ॥ गणपति श्री अरहंत पद, महावीर भगवान ॥ घाति करम मिथ्यात तम, हरि उदया चल भान ॥ समव सरण लक्ष्मी दियैं महिमा अगम अपार ॥ इन्द्र आदि चरणा प्रते, नमें भूमि सिरधारि ॥ प्रमु समीप श्रेणिक नृपति, क्षायक सम वितपाय ॥ होनहार तीर्थेश पद, पद्म नाभि जिनराय ॥ तिस चरित्र भाषा भई, भई कहन रुचि मोहि ॥ पूरब आचार 'जबवन, सुनि कहि कहिंस्यो सोय ॥

अंत—दोहा ता समीप साँगावती, धन जन करि भरपूर ॥ देवस्थल महिमाँ घनी, भला ग्रहस्त सनूर ॥ पंडित दशरथ सुभ सुभग, सदानंद तस नाम ॥ ता उपदेश भाषा रची, भवजन को विसराम संवत सतरा से उपरे; तैतीस जेठ सुदिपक्ष ॥ तिथि पंचमी पूरण लहिं; मंगलवार सुभक्षि ॥ फेर लिखी गुण वास में (अर्थात् ४९) लक्ष्मीदास निजबोध भूलचूक सबद कोउ, बुध जनि लीज्यो सोध ॥ इति श्रेणिक महाराज जीको जीव अगम चौवीसी में प्रथम तीर्थंकर महाराज श्रेणिक होणहार तपाँहु का भव चरित्रं संपूर्ण ॥ मिती फाल्गुन कृष्ण १० संवत् १६२९ मंगलचंद श्रावक गोत्र बोहरा ॥ श्री जिनाये नमः ॥

विषय—श्रेणिक चरित्र में जैनियों के एक धार्मिक राजा का चरित्र दिया गया है । मुनियों की संगति से उन्हें ज्ञान हो गया और तपस्या करने को चल दिए । अंत में कवि ने अपना बड़ा लंबा चौड़ा परिचय दिया है ।

विशेष ज्ञातव्य--निम्नलिखित पद्य कविपर विशेष प्रकाश डालते हैं:—। दोहा श्री सुभ चंद्राचार्य्य तिन्ह, करयो संसकृत सार । ते सुनि लक्ष्मीदास मनि, भाषा टाल पयार ॥ × × गढ़ रण थंभौ सिरोमनी, तले सेरपुर वास पंडेल वाल सु वंश में, चाडवाल गोत्र है तास ॥

संख्या १३१. पद्मिनी चरित्र, रचयिता—लक्षोदय (लब्धोदय) या लालचन्द जैन (स्थान—मेवाड़), कागज—मूँजी, पत्र—२७, आकार—११ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—

नागरी, रचनाकाल— वि० १७०२ (१६४५ ई०), लिपिकाल— वि० १७५७ (१७०० ई०), प्रतिस्थान—पं० मयाशंकरजी, अधिकारी, स्थान और डाकघर—गोकुल, जि०—मथुरा।

आदि—श्री शान्तिनाथजी ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ दुहा – श्री आदीसर प्रथम जिन, जगपति ज्योति सरुप निरभय पद वासी नमूँ, अकल अनन्त अनूप ॥ चरण कमल चितशुनमूँ, चौवीस भो जिण चन्द । सुष दाइक सेवक भणी, सांचो सुर तरु कन्द ॥ सु प्रसन्न सारद सामिणी, हो ज्यो मात हजूरि । बुधि दीजो मुजन बहोत, प्रगट वचन पंडूर ॥

अंत—सामि धरम के सील तणा गुण सांभलयारे, पुजै मननी आस । उधौ अधिको कहिऊ कवि चातुरी रे मिछा ढक मतास ॥ इति श्रीपद्मनि चरित्र ढाल भाषाबंधे श्रीगोरावादल रणंजय प्रापणौ नाम तृतीय षंभ समाप्त मिदं ॥ × × × सोरठा सोल अधिक सै आठ कवित दुहा गाथा मिल्या । श्रुणो सगुरु मुघ पाठ, ढाल सरस गुण पाल ॥ उनमाने लालचन्द कहि, कविता को किय हेत । कुंभी नरक पडंत मा, वंस रहित बिन हेत ॥ संवत् १७५७ वरषे आसोग वदि ७ सोमे लिष्यते ॥ वपर्वपुर नगरे ॥ पराढेगढे ॥

विषय—इसका कथानक यद्यपि जायसी के पद्मिनी चरित्र जैसा है, पर कहीं कहीं घटनाचक्र में अंतर है। इसमें जायसी के अनुसार हीरामन तोता तथा जटमल भाटों द्वारा पद्मिनी का गुणगान नहीं कराया है, बल्कि और उपायों से पद्मिनी का पता चलाया गया है। उदयपुर के राजा रत्न सिंह की बहुत सी रानियाँ थीं जिनमें पटराणी प्रभावती थी। 'पटराणी परभावती रुपे रंभ समान । देखत सुरी न किन्नरी असी नारि न आन" ॥ इस रानी से वीरभाण नामक प्रतापी पुत्र हुवा । एक दिन अच्छा भोजन न बनने की शिकायत राजा ने प्रभावती से की । इस पर रानी ने क्रोध में कहा, "तव लड़की वोली तिसेजी, राणी मनकरि रास । नारी आणो कान भीजी । दयो मत झूठो दोस ॥ हने के लवी जाणां नहीं जी, कि सुँ करीजे बाद । पद्मणि का परण रे नवीजी, जिम भोजन है स्वाद ॥" रानी के ऐसे वचन सुनकर राजा क्रोध में खड़ा हो गया और यह कह कर चल दियाः—"राणो तो हूँ रतन सौ परणु पदमनि नारि भो सातो वोले मुन्हे जे मैं राषो मान । परणु तुरणी पदमिनी गालु तुझ गुमान ।" राजा चित्तौड़ से चलकर भयानक समुद्रों को उघड़नाथ सिद्ध की कृपा से पार कर सिंहल पहुँचा । अपनी वीरता सिंहल के राजा को दिखलाकर वहाँ पद्मिनी से विवाह किया और ६ महिने बाद चित्रकूट आया । चित्रकूट में राघव और चेतन दो पंडित राजा रतन सिंह से अप्रसन्न होगए और वे अलाउद्दीन के यहाँ रहने लगे और एक तोते द्वारा बादशाह से पद्मिनी के रूप की प्रशंसा करायी । अन्त में अलाउद्दीन का चढ़ाई करना और रत्न सिंह का मारा जाना एवं पद्मिनी का उद्धार करना वर्णित है ।

संख्या १३२ बी. षटकर्म्मोपदेश रत्नमाला, रचयिता—पांडेलाल चन्दकृत (स्थान—बियाना), कागज—बाँसी, पत्र—१५६, आकार—११ × ६ इंचों में, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०९५७, पूर्ण, रूप – प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८१८, लिपिकाल—वि० १८९५, प्राप्तिस्थान—श्रीजैन मन्दिर, स्थान व डाकघर—अछनेरा, जि०—आगरा ।

आदि--॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ षटकर्मोपदेश रत्नमाला लिख्यते ॥ दोहा--वसु सत लक्षण सहत तनु, बन्दौ रिषभ जिगन्द्र ॥ तृपति प्राणी सकल, पुरषोत्तम सुख कन्द ॥ छप्पै--आदि पुरुष जिन, बृषभ नाथ त्रिभुवन पति नायक ॥ चरण कमल कर सीस धारि, बन्दौ सुष दायक ॥ लक्षण बृषभ सुता सुधरम तीरथ के कर्ता ॥ सुर नर षग पति करत सेव केवल पदधर्ता ॥

अंत--चौपाई--संवत अष्टादश सत जानि ॥ ऊपर फेर अठारह जानि ॥ माह शुक्ल पाँचै शानिवरि ॥ ग्रन्थ समापत कीन्ही सार ॥ इति रत्नमाला समाप्तं ॥ संवत १८९५ ॥

विषय--प्रस्तुत ग्रंथ में विभिन्न राजाओं ने षट् विकार से भिन्न जिस प्रकार भगवान की पूजा की वैसा ही फल मिलने का वर्णन है ।

संख्या १३२ ए. राजुल पचीसी, रचयिता--लालचन्द विनोदी, कागज--देशी, पत्र--८, आकार--१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्रीदुर्गासिंहजी, स्थान--माँगरोल (गुजर) मझलीपारी, डा०--रुनकुता, जि०--आगरा ।

आदि--श्रीगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ प्रथम सुमिरौ जादौ राइ ॥ पुनि सारद मनाव सौ जीव वे ॥ बन्दौ अपने गुरु के पाई ॥ राजमती गुन गावत सौ जीव वे ॥ गाऊत मंगल राजुल पचीसी ॥ नेमि जब व्याहन चढ़े । देखि सूबनि दया उपजी, छाड़ि सबन को चले ॥

अंत--जो कोई सुनै भाव सौ ॥ इन्द्र चन्द्र धनेन्द्र चक्री ॥ अति हिरयो पुरि गाइयो ॥ यह लाल चन्द विनोद गावै ॥ सुनत सब जन गह मरै ॥ राजुलि पति श्री नेमि जी ॥ सवनि को मंगल कीये ॥ इति श्री राजुल पचीसी सम्पूर्णम्

विषय--नेमनाथ का विवाह होना और उसी अवस्था में उनको वैराग्य हो जाना तथा तपस्या करने आबू पर्वत पर चले जाना । वहीं उनकी स्त्री राजुल का जाना और विलाप करना, किन्तु उनका न लौटना और अपने तप में दृढ़ रहना, इसी का ग्रंथ में वर्णन है ।

संख्या १३३. इतिहास समुच्चय, रचयिता--लालदास (स्थान--आगरा), कागज--मूँजी, पत्र--५० (लगभग), आकार--१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--८००, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--वि० १७४५ = १६८८ ई०, प्राप्तिस्थान--पं० मयाशंकरजी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल ।

आदि--निरत गीत हरिवन गुण गाविहि ॥ अैसै जीव नरक गति पावहिं ॥ पर निन्दा जो नित उठ करैं ॥ ते नर जाव नरक में परैं । अैसैं जीव नरक कौ जाँहि ॥ राजा यामें संसौ नाँहि ॥ क्रिप्न दीन अनाथ जो होय ॥ दीन देषि तापैं नहिं कोय ॥ अैसे देषि कृपा जो करै ॥ ते सब जीव स्वर्ग पग धरैं ॥

अंत--सुनि कवि गुनी देहु जिमि षोरि । × × × नगर आगरे गांव ॥ ऊधो दास पिता को नाँव ॥ जाति······यौ लालादास ॥ भाषा करि बरन्यो इतिहास ॥१०४०॥

……इति श्री महाभारथे इतिहास समुच्चय ।। तेतीसमोध्यायू ।। ३३ ।। इति श्री महाभारथे ……बतीस इतिहास संपूर्ण समाप्त ।। समत १७४५ वृषे मास कार्तिक सुदी ७ बार सनीसर वारे ।। नगर गंधार सुधाने सुभ मस्तु लिषतं स्वामीजी श्री श्री श्री उधौदासजी कौ शिष्य स्वामीजी श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री लालदास कौ सिष्य तुरसीदास वाचै जिसको राम राम ।।

विषय--संक्षिप्त में महाभारत का वर्णन ।

संख्या १३४ ए. हिंडोरा, रचयिता—ललितकिशोरी (स्थान—वृन्दावन), कागज—मूँजी, पत्र—१७, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गोपाल जी का मन्दिर प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—झूमक कान पान अधरन रचि मिह दीपग नव बाल ।। रहि रहि चमक उठत उघटत मुष, जनि छेड़ो गोपाल ।। छाँड़ौ स्याम मुरकि गई बहियाँ, टूटी मुकतामाल ।। सिसकि लचकि द्दग भौंह मरोरी, परे प्रीति के ष्याल ।। झोटा तरल होत जिय डरपत, पटुली गहत विशाल ।। उझकि झरोषें ललित किशोरी, विहसी दै रूमाल ।।

अंत—झूलत को श्यामा के संग यह सषी साँवरी प्यारी है । कजरे नैन सैन सों बतियाँ अषियन कोर कटारी है । जोवन जोर मरोर भौंह पर ललित किशोरी वारी है । ललिता को परिहास कही यह नागरी × × × । दै भुज ग्रीव सुधा रस पीवत मृदु विहसत चष नैनन कोरी । ह्वै सिथिली विथुरी वर आनन अलप अलक वेसर लसी थोरी ।। ताहि निखारत ब्याज रसिक वर तहीं उर झाप दई अधिकोरी । ललित माधुरी चतुर चंद्रिका तुरत ही भूरस रोस मरोरी ।। रहो चतुर बड़े कहि कल मुसकत लषो कटक पिय पान किशोरी ।

विषय—राधा कृष्णका श्रृंगार और प्रेम वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ललित किशोरी वृन्दावन के अच्छे कवि हो गये हैं । इन्होंने अपने आराध्यदेव राधा कृष्ण की श्रृंगारात्मक भक्ति में अच्छे अच्छे पद लिखे हैं । उनके हिंडोला गीतों का संग्रह प्राप्त हुआ है । ये गीत ब्रजके मंदिरों में हिंडोरा के समय आज भी खूब गाए जाते हैं ।

संख्या १३४ बी. ललितवानी, रचयिता—ललितकिशोरी (स्थान, वृन्दावन), कागज—बाँसी, पत्र—४६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वरजी, स्थान और डाकघर—कोसीकलाँ, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री कुंज बिहारी बिहारिनि जी ।। अथ श्री स्वामी हरिदास वंस उजागर श्री स्वामी रसिकदास जी तिनके परम प्रिय शिष्य श्री ललित किसोरी दास जी जिनकी बानी लिख्यते ।। प्रथम साषी ।। दोहा ।। प्रथम कृपा प्रकासिये, श्री गुरु परम सुभाव । प्रेम दृष्टि सों सींचिये, रसिक सिरोमनि राव ।। छिन २ बीतत जुग समे, तुम बिन नाहिन ओर । कृपा करो विचार के, परम रसिक सिरमोर ।। महा अग्नि ज्वाला उठी, फोहा सम

हो आय । रसिक बिहारिनि ललित वर, तुम ही लेहु बचाइ ।। जिनकों अपनों जानतें, प्राननि ते अधिकाइ ।। तेई अब वैरी भए श्री हरिदास निवाइ ।। रीझि रसिक हरिदास जू, राखी अपने संग । मिलत मिलत आनन्द अति, छिन छिन बाढ़त रंग ।

अंत—नित्य बिहार निरन्तर मेरो । अद्भुत प्रेम रंग रस अद्भुत अद्भुत रूप सुधा को घेरो ।। ललित प्रिये सुष रासि रसिकवर येई कृपाकरि छिन छिन हेरो ।। दासि विहारिनि तन मन राची, कोऊ परसंन्न रहौ कि रुठे री ।। सहज बिहार निरन्तर मेरो, तनमन मिलि विहरत दोऊ प्रीतम, छिन छिन प्रेम घनेरो, सीवनि प्रान सुकेलि हमारी, दासि विहारिनि कियो निबेरो, सदा प्रसन्न ललित हरि दासी, कोउ दहनो रहो कि डेरो ।।

विषय—(१) स्वामी हरिदासका गुणानुवाद ? पत्र १ से १४ तक । (२) श्री वृन्दावन में वृन्दावनचन्द्र श्री कृष्ण जी तथा हरिदास जी की लीलाएँ, पत्र १५ से ३१ तक । (३) विरह वर्णन, पत्र ३२ से ३९ तक । (४) स्वामी हरिदास जी की महिमा । राधिका जी की भक्ति सम्बन्धी पद, पत्र ४० से ४६ तक ।

नोट—स्वामी हरिदास जी को उनके अनुयायी साक्षात् कृष्ण भगवान तथा प्रियाजी का रूप मानते थे । उसी भाव को लेकर कविता की गई है । यह हरिदास वल्लभ संप्रदाय के हरिदास से भिन्न जान पड़ते हैं ।

विशेष ज्ञातव्य - ललित किशोरी वृन्दावन के प्रसिद्ध कवियों में से हैं । इन्होंने बहुत से पदों की रचना की है । ये स्वामी हरिदास की शिष्य परम्परा के थे । इनका मंदिर शाह जी का मंदिर कहा जाता है । इनकी पद रचनाएँ प्रायः सभी उत्तराधिकारियों के पास सुरक्षित हैं, पर वे बतलाते नहीं हैं । इनके पौत्र आदि ने इनके कुछ ग्रंथ प्रकाशित भी करवाए थे, पर उनका प्रचार उनके सम्प्रदाय तक ही सीमित रहा । साहित्यिक दृष्टिकोण से उनपर विचार न हो सका । ललित किशोरी जी की कविता बड़ी ललित है । यह १९ वीं सदी के भक्त कवि हैं ।

संख्या १३४ सी. ललितपद (अनु०), रचयिता – ललित किशोरी, कागज—बाँसी, पत्र—१९, आकार—८×८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ग्यासी राम, स्थान—रिठौरा, डा०—बरसाना, जि० - मथुरा ।

आदि—कुण्डलिया । काहू विधि देषै भटू हम हूँ ये रस ष्याल ।। तनक दूरि वा ग्राम तट हा हा चलिए हाल ।। हा हा चलिए हाल गैल गुरजन डर आली ।। तुमैं निरषि रस ष्याल करै क्यों पुनि बन माली ।। अनुदिन छलत छलाक आज चल छलिए ताहू ।। जोगि निवेष बनाय परषि मग परौ न काहू ।। दोहा ।। चली छली छली नेलली अली संग संग गाय ।। करतु न तुनी हाथ में, जोगिनि वेष बनाय ।।

अंत—सषी बड़ी बात ना बिनु पढ़ै, पढ़ौ श्रवै भरिपूर ।। सकल काज साधक सदा, सतगुरु चरनन धूर ।। लपकि धूरि लै चरन लै, मेली मुष घनस्याम ।। पढ़न लग्यौ सुक सम तुरत, पीतम पूरन काम ।। नैन सजल गति बैन थिर, सिथिल भए अंग अंग । समुझि

समुझि पी अर्थ रस, झूमो प्रेम तरंग ॥ मोर पक्ष इत उत षसे, पीताम्बर कहुँ वीर । कहूँ लकुट मुरली अवनि, पीताम्बरटरत अधीर ॥

विषय—राधाकृष्ण की सोलह कलाओं का वर्णन ।

संख्या १३४ डी. पदमाला, रचयिता—ललितकिशोरी, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामलाल जी, स्थान—गिंड़ोह, डा०—कोसीकलाँ, जि०—मथुरा ।

आदि—राग विलावल ॥ जो चाहौ सोई करौ नित्य कुंज बिहारी । तुम्हारे हित में लाड़िली अति हीं हितकारी । परम उदार सिरोमनि प्रियातिहारी । श्री ललित किशोरी रंगसो मिलिप्रानप्यारी । कुंज बिहारिन लाड़िली रस रूप नवेली । उमगि उमगि आनन्द सों प्रीतम संग खेली ।

अंत—राग बिहागरो ॥ हमारी रसिक सिरोमनि प्यारी । लियें सुभाव रहत निस-वासर, तन मन अति हितकारी । जोइ जोइ रुचै करै पुनि, सोई जीवनि प्रान अधारी । श्री हरिदासी ललित किशोरी छिन हू होत न न्यारी ।

× × ×

विषय—राधाकृष्ण की भक्ति और प्रेम के पद ।

संख्या १३५ ए. वैद्यक की पुस्तक (३), रचयिता—ठा० लेखराज सिंह जी (न० खुशहाली, मौ० करहरा, जि० मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—६५, आकार—९ × ५½ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९५०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० विजयपाल सिंह जी मास्टर, स्थान—न० खुशहाली, स्थान—करहरा, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ नाड़ी लक्षण लिखते ॥ हाथ अंगूठ निकट की, नाड़ी जीवन मूल । तासों पण्डत देह को, जानो सुख दुख सूल ॥ भूख्यो प्यास्योसैयन जुत, तेल लगाये कोइ । जैयें न्हाय तुरत ही नारी ग्यान न होइ ॥ नरकी कर पद दाहिनो, त्रय को कर पद वाम । वहाँ वैद्य चातुर समझ नाड़ी को यह धाम ॥ बहुत गृन्थ पोथीन सो—और बुद्धि सों जान । नाड़ी लक्षण समझकर औषद दीजै जान ॥ आदि, मद्धि, और अंत में, रक्त वात पित्त कप जान । ऐसे नाड़ी चारि विधि, ताकी कर पहिचान ॥

अंत—धनीय सोंठि पीपरि सैंधों नोन । अज मोद सेकी हींग जीरो लै तोन ॥ सवै बरावर पीसो भाई, टंक लीजो पुनिताई । मठा संग पीवै दिन सात, शूल आम दूरि ह्वै जात ॥ भूख होय तासों अधिकाई, अरुचि जाय अति ही गुण दाई । एक भाग अफीम जो होई, ताँसू दूना ईंगुर सोई ॥ तिगुनी लोंग और मिश्री जानों, चोगुण मोंचरस मानो ॥ रत्ती दो भरि गोली कीजै—साठी चामर पानी या छाछि के संग लीजे । भयंकर अतीसार होइ भंग—जाय न्हाये श्री गंग ॥

विषय—१—नाड़ी लक्षण, जिह्वादि परीक्षाएँ, लंघिनादि, ज्वर और उनके भेद, लक्षण तथा उपाय, मस्तिष्क संबंधी रोग, वात संबंधी रोग तथा उनके संबंध के अनेक नुसखे, मेथी पाकादि, भान रोग, शोथ, व्रण, टूटी हड्डी, सूजन चोट और नाड़ी व्रण आदि वर्णन १–३२। २—अभ्रक, विधि तथा धातुओं का शोधना। रसों और पाकों का बनाना, पंच बीस प्रकार के प्रमेह तथा संग्रहणी, शूल और अतिसारादि रोगों की अनेक औषधियाँ और उपचार, ३३–६१।

संख्या १३५ बी. वैद्यक की पुस्तिका, रचयिता—बा० लेखराज सिंह (नगला खुशहाली, ग्राम—करहरा, जि० मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—९ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० विजयपाल सिंह जी मास्टर, नं० खुशहाली, स्थान—करहरा, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी।

आदि—अथ फसद आदि लोहू छुड़ाने के जतन ॥ रक्त विकार होय जो आई, ताकी फसद खुलावै भाई ॥ मुनासिव वैद्य हकीम जो जाने, उतनो काढ़ि के लोहू मानै ॥ आध पाव पाव भरया आध सेर ॥ या जानो तुम एक सेर ॥ सरद ऋतु में थोरो जानो—ऋतु और में जादा जानो ॥ अथ शुद्ध लोहू के सरूप। मीठो लाल वरण जो होई—शीतल गर्म न जानो कोई। भारी चकना जानो भाई, कछू दुरगंध जानिये ताई ॥ दुगध लोहू गरमी के करै विकारा—पीड़ित दुग्ध लोहू है पारा ॥ पके शरीर पीरा अधिकाई—दाह होइ चट्टा परि जाई ॥

अंत—अथ त्रिकशूल काल क्षण। कटिके तीनों हाड़ में भाई, वासा हाड़ पीर अधिकाई ॥ तिक शूल रोग वह आई, ताकी मोपे सुनो दवाई ॥ वारु रेत सों सेक करई, या अखे उपल रेख सो भाई ॥ अथवा गूल्ही वोली की जड़ की वकली गिलोय सितावर असंगध की वकली ॥ माऊ वक्कल गोखरु रास्ना निसोत सौंफ कचूर सुजान ॥ अजवायन सौंठि वरावर लै, सवकी वराव गूगल गूगल की चौथाई घृत है ॥ इन सवको एवजीय कराई—मासे पांच खाय मद संगा ॥ या गरम पानी या खखा संगा ॥ जानगृह भुजा स्तंभ संधि गति वाय—खोड़ा पन टूटो हाड़ बनाय।

विषय—(१) फसद खोलना, रक्त वर्णन, रक्त निकालने और न निकालने का विधान, षटऋतु वर्णन, वायु पित्तादि का ऋतु सम्बन्ध से संचय, प्रकोप और शांति, आहार-विहार, स्नान-विधान, प्राणहर्ता छः वस्तुएँ, मैथुन, धातु तथा उपधातु, तत्त्व, त्रिदोष, कफादि स्वरुप, हाड़ माँसादि स्वरूप, प्रमेह चिकित्सा, मूत्रकृच्छ, मूत्रघात तथा अन्य मूत्र सम्बन्धी रोगों का वर्णन, १–१८। (२) बवासीर, कृमिरोग, उरुस्तंभ, अंडवृद्धि, वात सम्बन्धी रोग, पित्त सम्बन्धी कुष्ट, किशोर गुग्गलादि औषधियां, अम्ल पित्त, विसर्प रोग, स्नायु रोगी विस्फोटक, फिरंगवाय, मसूरिका (चेचक), लहसन तथा मस्से तथा फोड़े फुंसी, खाज व दाद, चेंपरोग विष, उन्माद, मूर्छा, भ्रम, पाँडुरोग कामला, उदररोग, उदावर्त, आमाशय के रोग, शोथ, छर्दि, अजीर्ण, विशूचिका, मन्दाग्नि आदि अजीर्ण विशूचिका या यत्न, १९–७४। (३) कुछ रस एवम् चूर्णादि, वायु की बवासीर, राजयोग, सिंह तथा तेंदुवा आदि के काटने की

औषधियाँ, भगंदर, रूपराज रस, ग्रथित, माकफ़ायूर, अठारह प्रकार का कुष्ट और अवलेहादि सम्बन्धी कई नुसखे और अन्य कई रोगों के नुसखे।

संख्या १३५ सी. वैद्यक की पुस्तक ? (अमृतसागर), रचयिता—लेखराज सिंह (न० खुशहाली, ग्रा०—करहटा, जि०—मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—११०, आकार—९३ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४, खंडित।

आदि—अथ अनुवासन तेल लिख्यते ॥ गिलोय अरुसा-भारंगी ल्यावै-कंज अंड की जड़ मगवावै। कागल हरी शतावर सैंजना भाई, रोहिष समेति टका टका भरिलाई। जब उरद-अलसी, कुलस्पी भाई-वेर जर सहित सेर सेर भरि ल्याई ॥ ज्वकुटकर लीजै सब भाई-चौंसठ सर नीर डरवाई ॥ औंट ताहि काढ़ि कर भाई-चौथाई रहिजावै आई ॥ सेर चारि तेल मिलावै-मधुरी आँच सो तेल पकावै ॥ जले क्वाथ तेल रहि जाई-टका एक में दीजै ॥ सर्व रोग वाय के छीजै, अनु वासन तेल यह भाई ॥ लेखराज सिंह यों कहि समझाई ॥

अंत—अथ वमन विधि लिखते ॥ शरद ऋतु और वर्षा आई-मनुष्य को वमन जुल्लाव वताई ॥ कफ को रोग हिया दुखदाई-विष को रोग शिली पद ताई ॥ कोढ़ विसर्प अजीर्ण आई-भ्रम प्रमेह स्वाँस खास दुखदाई ॥ पीनस मिरगी उन्माद वखानों-रक्ता तिसार अतीसार वखानों ॥ तालू ओठ पके जो भाई-कान पके जानो दुखदाई ॥ दो जिभ्या हो गई जो आई-पित्त मेद वढ़े कफ अति भाई ॥ शिर को रोग पसवाड़ा दुखदाई-ज्वर ततकाल अरुचि है भाई ॥ इतने रोग जानि जो भाई-ताको देहीं वमन करवाई ॥ और रोग नीचै लिखूं भाई-तिनको नहीं वमन करवाई ॥ तिमर रोग गोला जो आई-उदर व्याधि और दुर्बलताई ॥

विषय—१—छः ऋतुओं में हर खाने की विधि, वस्तिकर्म (पिचकारी) की विधि रक्त, पित्त सम्बन्धी उपद्रवों का यत्न, अमृत, भल्लोतक, अवलेह, हरतालादि विधि, शरीर पुष्टि का यत्न, रूप रस, ताँवेश्वर तथा नागेश्वरादि वर्णन, मेदरोग, क्षीणता, सुपारीपाक, चंदनादि तैल, वानरी गुटका, वातकंटक रोग, दाह, कब्ज, अपतन्त्र, नींद व आंत व्रण, मुख रोग, छाले, खाँसी, कास, स्वास तथा महा स्वास की औषधियाँ। हृद् रोग, शूल, तिल्ली, दाँत मसूड़े आदि के रोग, जिह्वादि रोग, गले के रोग, शूल कर्ण श्राव, पीनस आदि, मुख रोग, जिह्वादि रोग, गले के रोग, कर्ण श्राव, पीनस आदि, मुख रोग, शिरो रोग, मृगी, विपाथ, मुत्र रोग, नेत्ररोग, मोतिया विन्दु, कृप ग्रंथि रोग, कुंजन रोग, तथा आँख आना, १-८३। २—सन्निपात अंजन, चौंसठ रोग और चौरासी वायु हरने वाली घोरा चोली, चितभ्रम, सन्निपात, ग्यारह प्रकार के शिरो रोग, कुंडलिका, अष्टीला, जलंधर, शोथ, गुल्म, गोला, प्रदर, अत्यस्नी रोग तथा बालकों के रोग एवम् चिकित्सा, ८४-११०।

संख्या १३६. वर्षोत्सव के पद, रचयिता—माधौ दास आदि, कागज—मूँजी, पत्र—६८, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० चोखेलाल जी, स्थान—परसोत्री की गद्दी, डा०—सुरीर, जि०—मथुरा।

आदि—होरी राग लिष्यते ॥ होरी रंग राष्यौ नागरी हो, आजु की बढ़ी छवियार । यह वृन्दाबन यह रविजा तट यह होरी त्योहार ॥ यह सोभा यह सिंगार अद्भुत यह षुलि षेलनहार । यह बाजनि की षाजनि राजनि यह हुलसनि हेत ॥ यह रुचि रण अलापनि गावनि सुन जदु होत सचेत ॥ यह प्रीतम मुरली के स्वर मिलि लेत रस भरी ताव । यह कौतुक षग मृग त्रण धरि भूले है आमन जान ॥

अंत—ललित । आजु भयो गोकुल में आनन्द जसुमति ढोटा जायो । नरनारीमिलि मंगल गावत ब्रज रषवारो आयो ॥ जै जै कार भयो सब लोकनि गर्ग रिषी जस गायो । भिक्षक जन मन फूले सबहीं विप्रन वेद सुनायो ॥ जुवती जन सब जुरि मिलि आई आँगन चौकपुरायो ॥ मगन भये षेलत दधिकादौं, मधु मंगल जन चायो ॥ गोरस की चमकी अवनी पर मघवादेषि लज्यायो ॥ श्री भट बावा नन्द मगन भए फूलि अंग नहीं मायो ॥ इति श्री बधाई कृष्णचन्द्र की सम्पूर्ण ।

विषय - होरी के पद, १—३७ तक । मलार, ३८-५१ । मारवाड़ी हिंडोरे, ५२—५४ तक । बधाई, ५५—६८ तक ।

१—वृन्दावनहित २—रसखानि । ३—सूरदास । ४—माधौदास । ५—शालिगराम ६—लक्षिराम । ७—चन्द्रसषी । ८—नागरी दास । ९—रूपलाल । १०—दासगदाधर । ११—आनन्दघन । १२—दयासखी १३—मीरा १४ कृष्णदास १५-हितहरिवंश १६—व्यास स्वामिनी १७—विहारिन दास १८—चतुर्भुज दास १९—तुलसी दास २०—हरिदास २१—कमल नैन २२—रसिकगोविन्द २३—किशोरीलाल २४—नन्ददास २५—मानदास २६—विट्ठल विपुल २६—कुम्भन दास २८—श्रीभट २९—परमानन्दी उपर्युक्त पदरचयिताओं के पद—इस ग्रन्थ में संकलित हैं ।

संख्या १३७. माधुरी दास जी की वानी, रचयिता - श्री माधुरी दास (स्थान—माधुरी कुण्ड), कागज—देशी, पत्र —३९, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८७ वि० (१६३० ई०), प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामलाल जी, स्थान—गिड़ोह, ग्राम—कोसी कलाँ, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री गौराङ्ग विधुर्जयति ॥ अथ श्री श्री माधुरीदास जी की वाणी लिख्यते । श्री उत्कंठा माधुरी । दोहा । श्री कृष्न चैतन्य स्वरुप को, मन वच करौं प्रणाम । सदा सनातन पाइये, श्री वृन्दावन धाम । गौर नाम औगौर तव, अन्तर कृष्ण स्वरूप । गौर स्यामरे दुहुन कूँ, प्रकट एक ही रुप । तिनके चरण प्रताप ते, सर्व सुलभ जग होय । गौर स्यामरे पाइये, आप अपनपौ खोय ।

मध्य—दोहा । केलि माधुरी केलिकी, छिन छिन लेहु सुवास । होय सदा सुख सहज ही, श्री वृन्दावनवास । सम्मत सोलह सौ असी, सात अधिक हियधार । केलि माधुरी छवि लिखी, श्रावण बदि बुधवार ।

अंत—मान माधुरी जो सुनै, होय सुबुद्धि प्रकास। प्रेम भक्ति पावै विमल, अरु वृन्दावन वास। मान माधुरी जो पढ़ै, सुनै सरस चितलाय। रागमार्ग में चित रहै, राधा कृष्ण सहाय। इति श्री मान माधुरी समाप्तः। श्रीमन् माध्व मत मार्तण्ड कलियुग पावनावतार श्री श्री भगवत् कृष्ण चैतन्य चरणानुचर श्री रुप गोस्वामी शिष्य माधुरी दास कृत माधुरी सम्पूर्णः।

विषय–१—उत्कंठ-माधुरी, २—वंसीवट माधुरी, ३—केलि माधुरी, ४—वृन्दावन माधुरी, ५—दानमाधुरी ६—मान माधुरी नाम से भक्ति विषयक छः रचनाओं का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—माधुरी दास की पद्य रचना बहुत ही आकर्षक है। अभी तक इन्हें व्रज निवासी ही कहा जाता था। अब मालूम हुआ है कि ये माधुरी कुण्ड में रहते थे जो मथुरा तहसील में एक गाँव है।

संख्या १३८ ए. भगतवछल, रचयिता—मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार–६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर विजय पाल सिंह जी, स्थान—रीठरा, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गनेस जी सदासहाई रहैंगेजी॥ अथ मलूकदास की भगत पदी लिषते॥ चौपही॥ भगत वछल संतन सुखदाई। जिनके दुःख निवेरे भाई॥ जाके दुःख आपु दुष पावैं। बंदी होइ तौ जाइ छुड़ावै॥ १॥ वंदी छोड़ि क्रस्न के वाना। सो तो तीनि लोक मै जाना॥ ज्यौं बलिक पारै महतारी तैसें रछया करत मुरारी॥ २॥ हरिके प्रान वसैं जनमाहीं। गरुड़ विसारी छुड़ावन जाही। जहँ जहँ परै भगत पै गाढ़ो। मानों राम कालिह को ठाढ़ो॥ ३॥ राम राम पहलाद पुकारो। पिता बाँधि गिरवरते डारौ॥ तातो वायु न लागन पाई। ऊपर राषि लियो रघुराई॥ ४॥ भावौ हैवाअसुर षम्भु से वाँधे। कादि षईगा फुलाव कांधे। नर सिंघ रूप जब धरो मुरारी। मारे असुर मिटे दुखभारी॥ ५॥

अंत—दास कबीर बूड़ि नहिं पाये। तोरि जँजीर हरिपार लगाये॥ जो हरि कौं भजे सो हरि को होई। हरि को ऊँच नीच नहि होई॥ सौन भगत ने मरदन कीयो। बोहत रीझि कछु राज न दीयो॥ २९॥ धन्ना भगत को हरिसों हेता। बिनहीं वीज जम्मयो षेता॥ नामदेव की छानि छवाई। मंदिर फेरि गऊ जिवाई॥ ३०॥ माधोदास जाउतो भाई। श्री जगंनाथ सीतलताई॥ अवतौ सरन रामके आऐ। दास मलूक परम पद पाऐ॥ ३७॥ कहै सुनै अरु कोउ गावै। बसि बैकुंठ बहुरि नहिं आवै॥ जो आवै तो हरि को दासा। राम भरोसे छाई आसा॥ ३२॥ इति श्री मलूकदास जी की भगतपदई॥ संपूरन॥

विषय—कुछ भक्तों के सुयश और भगवान की भक्तवत्सलता का वर्णन।

संख्या १३८ बी. भगतवछल, रचयिता – मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८६ वि० (१८२९ ई०), प्राप्तिस्थान—जतीजी का मन्दिर, स्थान—करहल, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोथी भगत वछल ॥ श्री रामे राजा जन परजा तेरो । सुमिरन करत भाइ अपने अपने ॥ टहले लागे जोगिन अधिकारी । संकर जामैं नारद ढफठो सुषदेव ॥ ताल बजाइ सनक सनकसनंदन तारी । दूहे सेस सहस मुष गावै ॥ × × × भगत वछल संतन सुषदाई । जनको दुःख निवारो भाई ॥ जन दुष धाये दुःष पावा । वँधो हुतो तव जाय छुड़ावा ॥ चीर कोट भे दरसन पाए । नगन करहु द्रोपतहि जाई ॥ गाइचे चीर दुसासन लीन्हा । सभा माँहि कोइ मनेन कीन्हा ॥ सुमिरन कीन्ह द्रोपती रानी । प्रगटे कृष्ण हृदय में जानी ॥ अम्बर को अम्बार लगाए । भगति हेतु प्रभु दौरे आए ॥ भीषम द्रोन वहुत पछताने ।

अंत—परमेसुर कहँ भगति पियारी । जो कुल करे सोइ अधिकारी ॥ जवते सरन राम के आए । दास मलूका तव सुष पाऐ ॥ मलुका पापी पेटका, सपनेहु जानत नाहिं । भक्ति लिषी कोइ धावना, धोखे दीन्हों मोहि । चलने चलने सव कहैं, मेरे मन में और । साहिब सो परे न जाइहौं, मोकौं और न ठौर ॥ जो सौ कोसहु वसै, तासौं दरसन नीति । दुरजन जो द्वारे वसै, लाख कोस को बीच ॥ भगत वछल संपूरन सुभः ॥ श्री पोथी भगत बछल समाप्तम् शुभम् ॥ संवत् १८८६ फागुन बदी द्वारकादसी को ॥ पोथी समाप्तकीन ॥

विषय—भक्तों का गुणगान ।

संख्या १३८ सी. मलूक जस, रचयिता – मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौ० नेकसे सिंह जी, स्थान—नगला फौजी, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ श्री मलूक चरित्रे । भगतवत्स संतनि सुषदाई जिनके दुख निवारन भाई ॥ जिनके दुख आपन दुख पावें-वंध्यो होइ सो जाय छुड़ावैं ॥ १ ॥ वंदी छेरि कृष्ण को वानों-सोतो तीन लोक मैं जानौं ॥ ज्यौ पालै बालकु महतारी-अैसे रछा करैं मुरारी ॥ २ ॥ हरिके प्राण वसें जिनमाही-गरुड़ वसारि छुटावन जाहि ॥ जहाँ जहाँ परे भगत को गाढे-जानो राम कालिह को ठाढ़ो ॥ ३ ॥ राम राम प्रहलाद पुकारै-पिता वांधि गिरवरतें डारे ॥ ताती वाउन लागिन पाई-ऊपर ही राखे रघुराई ॥ ४ ॥

अंत—दासु देषि रिषि वहुत लज्याने । राजा दौरि चरण लिपटाने ॥ दास कवीर न वूड़न पायो । तोरि जंजीर तीर लै आयो ॥ १६ ॥ नाम देवकी छानि छवाई । मंदिरु फेर्यो गऊ जिवाई । तहाँ विष लिप्पत मानुष आयो । तवल कि कुरमा समझायो ॥ १७ ॥ देवपितर पूजें मति कोई । मरती बार महा दुख होई ॥ देव पितर कोइ काम न आवैं । यह पूजाप सव ज्यौ डहकावे ॥ १८ ॥ जवते सरण राम के आये । दास मलूक महा सुष पाये । करे

मानपुर मलूक जुवसें गंगा तट नित्य सो रसे ।। १९ ।। इति श्री मलूक जस ।। पढ़ै सुनै होइ मनुवस शुभं भवेत् ॥

विषय—श्री मलूक दास जी द्वारा संतोष का वर्णन ।

संख्या १३८ डी. विष्णुसत्यनाम, रचयिता—मलूक दास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८×४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौ० नेकसे सिंह जी, स्थान—नगला फौजी, डा०—सिर्सागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ विष्णुसत्य नाम ।। वासुदेवं रिषीकेषं-वावनं जल सायनं ।। जनार्द्दनं हरिकृष्णं—श्री वत्सं गरुड़ ध्वजं ॥ १ ॥ वाराहँ पुंडरी कशयं नृसिंहं नर कातकं ॥ अव्यक्तं संरस्वतं-विष्णु मनंत मज व्यय ॥ २ ॥ नारायणं गदाध्यक्तं-गोविंद कीर्ति भजनं ॥ गोवर्धनं धरं धीरं-भूधरं भूवने श्वरं ॥ ३ ॥ व्येतारं जज्ञ पुरुषं-जज्ञेसं जज्ञवाहनं ॥ चक्र पांणि गदा पांणि-संख पांणि नरोत्तमं ॥ ४ ॥

अंत—ईश्वरं सर्वं भूतानां-सर्व भूत सयंप्रभू ॥ इति नाम सेत्यं-वैष्णय वंखल पापहँ ॥ व्यासेन कथितं—पूर्वं सर्व पाप प्रनासनं । यः पठेन्प्रात रुत्थाय-संभव द्वैष्मवोनरं ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा-विष्णु सा ज्यौतियाडोयात ॥ चन्द्रायणं सहस्रेण-मुक्ति भागी भवेन्नरः ॥ अश्व मेध्या तंम पुण्यं-फलमाप्नोति मानवः । इति श्री विष्णु पुराणे विष्णु सत्यनाम ।

विषय – विष्णु के सहस्रनाम वर्णन ।

संख्या १३९. सन्तोष सुरतरु, रचयिता—मानकदास, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—८×७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि - नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ (१८५९ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री गोकुलनाथजी मन्दिर, गोकुल, मथुरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रथम मन की पूरण काम ताकी सिद्धि के अर्थ पूरण काम रूप सन्तोष ताके निरुपण के अर्थं पूरण काम करणे वारे ईश्वर ताको प्रथम नमस्कार करिये है ॥ दोहा - नंद नन्दन वन्दन करौं, सुन्दर तन घन स्याम । उन पद रजकी सेवते, होत हैं पूरण काम ॥

अंत—दोहा—जाकी कृपा ते होत है, मोंमन पूरण काम । सदा सर्वदा राम सो, मम उर पुर कौ धाम ।। टीका—आकास सरीखौ खाली पेट जो मन सो भी जाकी कृपा ते सदा पूर्ण काम परिपूर्ण होत है । सो रामजी मेरे उर रूप पुर में सर्वदा धाम घर करौ ॥ इति श्री मानिकदासजी विरचितं सन्तोष सुर तरु नाम पुस्तकम् सम्पूर्णम् ॥ संवत् १९१६ मिती आसाढ़ बदि १ गुरो दिने ।

विषय—भक्ति, भगवद् आराधना, नामस्मरण आदि की महिमा समझायी गयी है ।

संख्या १४० ए. हनुमान पचासा, रचयिता—मान कवि, कागज—स्याल कोटि, पत्र—१०, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—

२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—श्री गनेसजू सदा सहाय श्री सरस्वतीजू सदा सहाय श्री गुरुजी सदा सहाय नख सिक हनुमान पचासा मान कवि कृत लिष्यते ॥ कवित्त ॥ दरस महेस को गनेस को अलभ्य सभा सुलभ सुरेस को न प्येस है प्यनेरु कौ पूज द्वारपालन मनाय प्रजापाल दिगपाल लोकपाल पावैं महल प्रवेश को ॥ बेर बेर कोन दीन अरज सुनावै जहाँ याते विनयवान हों नरेश अवधेस को ॥ मान कवि शेष को कलेस काटिवे को हाय हुकुम हटीलो हनुमन्त पे हमेश को ॥ मंडन उमंडजन मंड खल खंडन को दौर दंड दाहिने उठायो मरदान हैं ॥ चोटी चंडका की चट चुटकी चपेट माहि रावने दपेट युग छवि वलवान है। भनै कवि मान लसे विकट लगूर दोह दाहिने चरन चारु मारिका महान है। दरद हनै डाँकनी डरन डंक डाँकनी हरन काँक नीके हनुमान है ॥

अंत—कविरा—बाँचै डेढ़ मासा सोकसंट विना सातये तपको तमास्य वासा मंगल अनन्त को ॥ विभव विकासा मन वंछित प्रकासा दसों आसा सुख सम्पत विलासा सुर सन्त को ॥ महावीर साँसा पून वीरा औ वतास करैं, विपत को ग्रासा तन आसा अरि अन्त को। सिख नख खासा रिद्धि सिद्धि को निवासा, यह दासा आसा पूरक पचासा हनुमन्त को॥ इति श्री हनुमान पचासा सम्पूर्ण हस्त लिपि सीतलदास सुकल कै।

विषय—पचास कवित्तों में हनुमानजी की स्तुति ॥

संख्या १४० बी. लक्ष्मण चरित्र, रचयिता—मान कवि, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—६३/४ × ४१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० हरीशंकरजी, स्थान वा डा०—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री हय ग्रीवाय नमः ॥ दोहा ॥ रमा राम रामानुजहि, वंदौं पवन कुमार। श्री गोविन्दा चौर्ज भजूं, श्री मद्राम कुमार ॥१॥ श्री वागी सुर पद कमल मैं, मन सों परसि पवित्र। मेघनाद के जुद्ध मैं, वरनौं लषन चरित्र ॥२॥ श्री रामानुज मनुज नहि, धरनी धारन धीर। वंदौं जन दुष अक्षमन, लक्ष लक्ष्मण वीर ॥३॥ ॥ कवित्त अनंग सेषर ॥ प्रवुद्ध क्रुद्ध कुंभ कर्न राम सौं विरुद्ध सुद्ध जुद्ध मध्य जुडिय सुर्ग धाम सुम्भियौ। परी अतंक लंक मै निसंक लंकनाथ घूर्नितूर्न पूर्न सौन पुत्र वोल चोष चुमियौ ॥ जुलंत जंग जज्ञ मै अधुर्ज घुर्ज सज्जियं विसर्जियं चल्यौ सुवीर वेग छौंनि छुम्भियौ। निवद्ध कोप जुम्भ वंधु वंध लक्ष्य वंधि कैं वली अजीत इंद्रजीत जैतथंभ उम्भियौ ॥४॥ इतहूँ प्रचंड दोरद ढुँदन कठोर घोर धनुष टकोर छाइ छौनी स्यौं गगन मैं। भनैं कवि मान अंग दक्षि समेत ओज उमंग उपेत सिरनेत छत्रपन मैं ॥ काल यौं कराल जगै कोप ज्वाल माल मनौ होत है अकाल अलैकाल त्रिभुवन मैं। समर विधाता वीर विघन कौ ज्ञाता आन निऊ भौजन त्राता एक भ्राता महारन मैं ॥५॥

अंत—भूप दसरथ्थ कौनवेलौ अलवेलौ रन रेलौ रोपि प्रेलौदल निश्चर कौ। मान कवि कीरति उमंडी पालषंडी चंडी पति सौ घमंडी कुल मंडी दिनकर कौ ॥ इन्द्र मद गंजन

को भंजन प्रभंजन तनै कौ मनरंजन निरंजन उभर कौ। राम गुनज्ञाता मन वंछित कौ दाता हरि भक्तन कौ त्राता धन्य भ्राता रघुवर कौ ॥१२६॥ महाबाहु भूपदसरथ्थ कौ कुमार मारहू तै सुकुमार जैतवार समरन कौ। असरन सरना अमंगल हरन भार धरनी धरन मजबूत महा मन कौ ॥ नंदन सुमित्रा को निकंदन अमित्रनं कौ मान जग बंद बड़ो बंधु सत्रुघन कौ। कंता उर मिल को नियंता दुष्ट जीवन कौ हंता इंद्रजीत कौ निहंता षलगन कौ ॥१२७॥

विषय—लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध में लक्ष्मण की कीर्ति का वर्णन।

संख्या १४० सी. नृसिंह चरित्र, रचयिता—मानकवि, कागज—देशी, पत्र—३९, आकार—६¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३९ (१७८२ ई०), लिपिकाल—सं० १८६३ (१८०६ ई०), प्राप्तिस्थान—श्रीमान् पं० हरीशंकरजी, स्थान व डा०—खैरगढ़, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ लिख्यते श्रीमंनृसिंह चरित्रं ॥ दोहा ॥ जे जै श्री प्रहिलाद प्रभु, जे पालन पन रिंह। जै हरिनाकुस दल मलनि, जय जय श्री नरसिंह ॥१॥ ॥ छंद श्रवन सुषद ॥ जे जै वीर श्री नरसिंह। पालत प्रनत जन पन रिंह। जै जै ज्वाल माल जुलंत। भ्रकुटी विकट तट मटकंत ॥२॥ जै जै हिरन कस्यप काल। थर थर कपत काल कराल ॥ जै जै तुरत खम्ह फार। तीपन नपन उदर विदार ॥३॥ जै जै दीन जनं प्रतिपाल। जिन पठ जहर फार्‍यौ हाल ॥ जै जै दलनु सुत भूप। जग भय हरन नरहरि रूप ॥४॥ छन्द गीतिका ॥ भय हरनि नरहर रूप की विरदाउली वर भाषिये। जिहि रटत संकट कटत प्रगट वर मिलत जे अभिलाषिये ॥ दुष दहत दारिद वहत उलहत भक्ति लहत सुधाम कौं रिपुतपत पातक कपत जग जन जपत नरहरि नाम कौं ॥५॥

अंत—नरहरि चरित चारु उदोत। बाँचत सुनत मंगल होत। सुमिरत सकल भय भज जात। सुष सरिसात दुष हरि जात ॥५९॥ प्रति दिन करहि पाठ तमाम। तोक सिद्ध सब मन काम ॥ विन सत रोग कष्ट विषाद। प्रगटहि नारसिंह प्रसाद ॥ सुदि वैसाष चौदस मद्धि। श्रद्धावान ध्यान निवद्धि ॥ करि उपवास इकइस पाठ। नरहरि देहि सिद्धैं आठ ॥६०॥ अथ राज्य वंस वर्ननं ॥ छप्पय ॥ कुल बुँदेल अलबेल वीर छत्र साल भूपमनि। तासु तनय जग तेस जासु कीरति कुमार भनि ॥ तासुअ नृपति पुमान जासु विक्रम दिवान सुत। सीलवंत वलवंत संत भगवंत भक्ति जुत ॥ तिहि निकट मान कवि मान। हेति नारायन जस उच्चरय। नरसिंह वीर भ्रकुटिन विकट दुष दपहि रक्षहि करय ॥१॥ अथ कवि वंस वर्ननं ॥ वंदिय जनवर वंस विदित हठि सिंह नाम हुव। सुंदर मनि तिहि नंद भयत्र हरिचंद तासु सुव ॥ तासु तनय पहिलाद जासु दानीय राम सुत। राम दास गुन रास तासु नंदन प्रकास जुत ॥ तासुत कनिष्ट कवि मान जन नारायन जस उच्चरित। हरि हरि वसोक भव भय हरिव करिव नाथ नरहरि चरित ॥२॥ संवत नव गुन वसु कुमुद १८३९ बंधु निबंध पवित्र। नरहरि चौदस कौं भयौ श्री नरसिंह चरित्र ॥ इति श्रीमं नारायनदास मान कवि क्रतो श्रीमंनृसिंह चरित्र कथा ॥ समाप्त ॥ दुती श्रावन शुक्ल पक्षे ८ सुक्र वासरे ॥ संवत् १८६३ श्री राधाकृष्णाय नमः ॥ श्री नृसिंहाय नमः ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—(१) पृ० १–६ तक प्रह्लाद जन्म वर्णन (आ० का पद)। (२) पृ० ६–१३ तक शिक्षा काण्ड। (३) पृ० १३–१८ तक ज्ञान काण्ड। (४) पृ० १८–२१ तक परीक्षा काण्ड। (५) पृ० २१–२३ तक रक्षा काण्ड। (६) पृ० २४–२६ तक सरभरक्षा। (७) पृ० २९–३९ तक हिरणा कुश वध तथा प्रह्लाद विषय वर्णन।

संख्या १४० डी. राधाजी को नख शिख, रचयिता—मान कवि, कागज—बाँसी, पत्र—८, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकरजी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथजी का मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ श्रीराधाजी को नष सिष ॥ नष वर्नन ॥ अरन वरन मनि किधों इन्द्र गोप गन, कैधों फूल किरन ते परम प्रवीने है। कैधो सीस उडगन मुकुर मदन किधो, दीपक दिपत किधों दीप दुत हीने है। सहित विवेक वर बुद्धि मन एक कर, रचि रुचि सुचसो विरंच एक कीने है। राधे रुप निधि विधि सुष पद अग्र नष, मान कवि सोभित रुचिर रंग भीने है ॥

अंत—केस वर्नन। सवैया—नैन मतंग के चोर किधों भोर लता अति ही छवि छाजे। स्याम सुवास सुभाइ सचिक्कनि दीह प्रकास सिषी लष लाजे ॥ केसर रुप सिवार वढ़े रस राज किधों इहि साज सो साजे ॥ मेह की धार कलिन्दी किधों मषतूल के तार किवार विराजे। इति श्री प्यारी राधिका जीको नष सिष कवि मान कृत समाप्तं ॥

विषय—राधा के नख से लेकर शिख तक के प्रत्येक अंगों की शोभा का वर्णन।

संख्या १४१. गो लोक की जिकरी, रचयिता—मंगी लाल, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महताव सिंहजी, स्थान—सींगेमई, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गो लोक की जिकरी लिख्यते ॥ एजी राक्षित वढ़ि गये वौहौत दिगा धरती दहलानी ॥ सेसन ओढ़त भार रसातल जाति समानी ॥ अधर मुकरत अपार इन्दुर के जौरें गई। जब धरती करति पुकार सोझें तो भार उतारौ मेरौ नै भूढ़ि रसातल जाति है ॥ भजन ॥ भूअ कौ सुर भार उतारौ ॥ जापै ज्वाव दयौ इन्दुर ने ॥ गरजै वीर अपरवल दाने महापापी और अभिमानी ॥ जुझ करै कोई नाइ जीतै शिव शंकर के वरदानी ॥ मानहुँ दुति लेंउ दानेन के ॥ करम नाइ छूटें पापिन के ॥ धरम नाइ दुनियां में फैलै ॥ हूं तोइ देंउ वताइ शरण तू ब्रह्मा की लैलै ॥ हमहूं संग चलेंगे तेरे विधि, पै जाइ पुकारौ ॥ भुअ० ॥

अंत—॥ भजन मानौं सिख सैल कुमारी ॥ सवकौ भेद वताइ देंउ तुमकूं ॥ धरम के अंस दुलार दुलिष्ट रहोगौ पवन ते भीम वड़ौ ध्यानी ॥ अरजुन अंस होइ इन्दर के वाँधैगौ लख संधानी ॥ अश्वनी कुमरन के दोऊ निकुल और सहदेव होऊ ॥ भीस्म अंस वसू जानौ ॥ कलजुग के अवतार भूप जर जोधन कूं मानौ ॥ सूरज अंस करन होइ पैदा कौंता कौ औतारी ॥ मानौ० ॥ × × × भजन भोग विन होइ न पूरौ ॥ गन पति सेस महेस

बिधैता व्यास कौ ध्यान ध्यौ मन में ॥ कलि के कवि खद्यौत प्रकासित करि २ वाद परें अघ में ॥ सदाहूं सारद कौ दासा ॥ भरतिया गामु करौं वासा ॥ नाम मेरौ संगी दुनिया में ॥ हरि भक्तन कौ दास सभा में हरि चरचा गावें ॥ नारायन के चरन कमल में लगि रही डोरि हमारी । मानौं सिख सैल कुमारी ॥ १ इति ॥ इति श्री गौ लोक के भजन मंगीलाल कृत ॥ ॥ सम्पूर्ण शुभम् ॥

विषय—पाप बढ़ जाने पर पृथ्वी का इन्द्र ब्रह्मादिक देवताओं के पास जाकर शिकायत करना, उन सबका परमात्मा की प्रार्थना करना तथा परमात्मा का वसुदेव देवकी के गृह में अवतार लेकर आने का कथन और देवताओं को भिन्न भिन्न व्यक्तियों के यहाँ जन्म धारण करने का आदेश ।

संख्या १४२. वैतालपच्चीसी, रचयिता—मानिक कवि, कागज—मूँजी, पत्र—९५, आकार—८½×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५०० वि० (?), लिपिकाल—सं० १७६३ = (१७०६ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण जी, स्थान व डा०—कोसी कलां, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ अथ वैताल पच्चीसी लिख्यते ॥ ॥ चौपही ॥ सिर सिंदूर वरन मै मंत । विकट दन्त कर फर सुग हन्त ॥ गज अनन्त ने वर झङ्कार । मुकुट चन्दु अहि सोहे हार ॥ नाचत जाहि धरनि धस मसे । तो सुमिरन्त कवि तु हुलसे ॥ सुर तेतीस मनावें तोंहि । मानिक' भनै बुद्धि दे मोहि ॥ पुनि सारदा चरन अनुसरो । जा प्रसाद कवित उच्चरो ॥ हंस रुप ग्रन्थ जापानि । ताकौ रुप न सकौ बखानि ॥ ताकी महिमा जाइ न कही । फुरि फुरि माइ कंद भा रही ॥ तोप साइ यह कवि तु सिराइ । सा सुवरनों विक्रम राइ ॥

अंत—जो पढ़ि है वैताल पुरानु । ओरु सन्त सुनि देहै कान ॥ तिनि के पुत्र होहिं धन रिधि । औरु सहश्र जिती सब सिधि ॥ कर जोरे भाषे सावन्तु ॥ जै जै कृश्नु (?) संत को तन्त ॥ विक्रम कथा सुने चित कोइ ॥ कायरु सो नर कबहू न होइ ॥ रात साहसु पुरषारथ धरे ॥ जो यह कथा चित्त अनुसरे ॥ सो पण्डित कवि होइ अपार ॥ वानी बुद्धि होइ विस्तार ॥ इति श्री वैताल पच्चीसी विक्रम गुन वर्णनं दोहरा कवित्त बस्त वंध छन्द सोरठा कथा समाप्ता ॥ संवत् १७६३ बर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे पर्वनि सप्तमी भौमवासरे ॥ लिषतं तिवारी परगराइ ॥

विषय—इस ग्रंथ में राजा विक्रमादित्य की बहादुरी की २५ कथाएँ वर्णित हैं जो काफी मशहूर हैं। मूल ग्रन्थ संस्कृत में है, जिसका हिन्दी में यह पद्यात्मक अनुवाद है । रचना-कालः—सुनै कथा नर पातग हरे ॥ ज्यो वैताल बुद्धि बहु करे ॥ विक्रम राजा साहस करे ॥ कह 'मानिक' ज्यो जोगी मरे ॥ संवत पन्दह सै तिहिकाल ॥ ओरु वरस आगरी छिपाल (?) ॥ निर्मल पाष आगहनु मास ॥ हिमरितु कुम्भ चन्द्र को वास ॥ आठे घोसु वार तिहि भानु ॥ कवि भाषै वैताल पुरानु ॥ गढ़ ग्वालीय कथानु अति भलौ ॥ मानु सिंघ तौ

वरु जा बलौ ॥ सघई छेमल वीरा लीयो ॥ 'मानिक' कवि कर जोरें दीयो ॥ मोहि सुनावहु कथा अनूप ॥ ज्यो वैताल किए बहुरूप ॥ × × (२) कवि परिचय ॥ काइथ जाति अजुध्या वासु ॥ अमऊ नाऊ कविन को दासु ॥ कथा पचीस कही वैताल ॥ पोहोचो जाइ भीव के पताल ॥ ताके वंस पाँचइ साष ॥ आदि कथनु सो मानिक भाषि ॥ ता 'मानिक' सुत सुत को नंदु ॥ कविता वन्त गुननि को वंदु ॥ जैसे भाटु छल्यो पाताल ॥ ज्यो माँग्यो विक्रम भुवाल ॥ जैहे विधि चित्र रेषा वसकरी ॥ ओरु आपनी आप दाहरी ॥ × × × मति ओछी अरु थोरो ग्यान ॥ करी बुद्धि अपने उनमानु ॥ अछर कटे होइ तुक भंग ॥ समओ जाइ अर्थ को अंग ॥ जहाँ जहाँ होइ अनमिली बात ॥ तँह चौकस कीजो तात ॥

विशेष ज्ञातव्य—कोई समय था जब वैताल पच्चीसी सरीखी कहानी संग्रह का हिन्दी में कोई सम्मान नहीं था, हेय दृष्टि से ऐसी कहानियाँ देखी जाती थीं। पर अब समय बदला है। इन कहानियों की काफी प्रसिद्धि है। मूल संस्कृत से हिन्दी में कई गद्य एवं पद्यात्मक अनुवाद विभिन्न रचयिताओं के पूर्व ही उपलब्ध हो चुके हैं। किन्तु यह उल्था खोज में सर्व प्रथम ही प्राप्त हुआ है और रचना काल तथा लिपिकाल की दृष्टि से महत्व का है। ग्रंथ की लिपि बहुत अशुद्ध है। यथा शक्ति शुद्ध उद्धरण देने का प्रयत्न किया गया है।

संख्या १४३ ए. रामाश्वमेध, रचयिता--मस्तराम, कागज--बाँसी, पत्र—९०, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान--पंडित गंगा प्रसाद जी, स्थान व डा०--सुरीर, जि०--मथुरा।

आदि—श्री जानकी वल्लभो जयति। अथ रामाश्वमेध लिख्यते ॥ महादेवो वाच ॥ उमा कहेउ सब प्रश्न तुम्हारा। रामचन्द्र महिमा अति भारा। नाना भाँति मुनीसन गए। जिहि विधि रघुपति चरित सुहाए। मुनि ब्रह्मादि निरन्तर गावहिं। रघुपति चरित को पार न पावहिं। जदपि कही मम मत अनुसारी। अब कहा कहुँ सु शैल कुमारी।

अंत—तुलसीदास गुरु विमल झर, अग्या सिष्यहि दीन। मस्तराम अस नाम तिहि, यथा बुद्धि सम कीन। कलिजुग कर जड़ जीव हम, नहिं कछु हृदय विचार। कथा अधिक द्वै अधिक अस, यामें कियो उचार। तासु विलग नहि मानिए, मम मति अतिहिं मलीन। हानि लाभ जानत नहीं, कलि मल मम मन मीन ॥ राम सुजस प्यारो लग्यो, याते कही बढ़ाइ। गाइ गाइ रघुपति चरित कलि मल सकल नसाइ ॥ दोस अमित गुन एक नहिं, राम नाम जस होइ। गावहि सुनहि जो विमल जस, दोष गिने नहिं कोइ। × × × इति श्रीराम चरित्रे अष्टम सोपान भाषायां तुलसी दासे न कृत श्री रघुनाथ लवकुश युद्ध वर्ननो नाम रामाश्वमेध ॥ लेखक भूपाल मिश्र।

विषय—राम राज्य के सुख, ऐसे समय में धोबी द्वारा सीता हरण के संबंध में राम की अपकीर्ति होना और राम की आज्ञा से लक्ष्मण का सीता को वन में छोड़ना। सीता का वालमीकि के आश्रम में आश्रय लेना, लव-कुश का पैदा होना, अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ की

तैयारी करना, राम लक्ष्मण का लव और कुश से युद्ध होना, बाद में उनका अपने पुत्रों को पहचानना और सीता का पृथ्वी में समाना आदि इसमें वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—विवरण में कई रामाश्वमेध आ चुके हैं, पर मस्तराम का नहीं आया है। ऊपरी नजर डालने से प्रतीत होता है कि ग्रंथ के रचयिता तुलसीदास हैं, कारण ग्रन्थ के अन्तिम कुछ दोहों में उनका नाम आया है। पर गौर से देखने पर मालूम होता है कि इसके रचयिता मस्तराम हैं जो अपने को तुलसीदास का शिष्य बतलाते हैं तथा उन्हीं की आज्ञा से ग्रन्थ का लिखा जाना भी कहते हैं—"तुलसीदास गुरु विमल झर आग्या सिष्यहि दीन। मस्तराम अस नाम तिहि यथा बुद्धि सम कीन॥" तुलसीदास को गुरु मान कर प्रणाम भी करते हैं और पुनः उन्हीं की प्रेरणा से ग्रन्थ का लिखना बतलाते हैं जो निम्न पंक्तियों में और पुष्ट हो जाता है। दोहा—तुलसीदास भाषा करी सप्त काण्ड समुझाय। सुनत सुजन मन मोद अति भव भय सकल नसाय॥ अरथ बहुत अक्षर अलप, रामचरित अति गुढ़। सज्जन अर्थ सब जानहीं, कहौ सुमति निज ढ़ूढ़॥ अश्वमेध संक्षेप करि, अर्थ समुझि नहिं जाय। तिहि कारन टीका सहित, कहो सकल समुझाय॥ तुलसीदास पद पंकरुह, मुदित नाथ कर भाल॥ अश्वमेध व्याख्यान कहु, कहो राम गान गुन गाय॥ राम सिया पद नाय सिर, कहूँ चरित समुझाई। तुलसिदास के कवित शुभ, तिनमें दियो मिलाय। × × × तुलसीदास कर प्रेरेऊ ताते कहा बुझाय, भूल चूक सज्जन सकल सोधि लेहु निराय॥ ग्रंथ के बीच बीच में गोस्वामी तुलसीदास की चौपाइयों आदि छंदों का भी समावेश है, जैसा कि वह स्वीकार करते हैं। इतने प्रभावों से यह सिद्ध है कि मस्तराम निसन्देह गो० तुलसीदास जी के शिष्य थे और उन्हीं के स्पष्ट आदेशानुसार उन्होंने ग्रंथ रचा। रचना काल ग्रंथ में नहीं मिलता। इस पुस्तक का प्रचार भी काफी है। अन्य गाँवों में भी इसकी प्रतियाँ प्रायः पायी जाती हैं।

संख्या १४३ बी. रामाश्वमेध, रचयिता—मस्तराम, कागज—मूँजी, पत्र—१०२, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० भोलारामजी, स्थान व डा०—बाजनै, जि०—मथुरा।

आदि—अथ रामाश्वमेध लिख्यते महादेव उवाच उमा कहेउ सब प्रश्न तुम्हारी। रामचन्द्र महिम अति भारी॥हाथ सीप लै जल निधि जाई। गहरे जल कोऊ पार न पाई॥ नाना भाँति मुनीसन गाए। इहि विधि रघुपति चरित सुहाऐ॥

अंत—कोस अमित गुन एक नहिं राम नाम जस होय। गावहिं सुनहि जो विमल जस, दोस गिने नहिं कोय॥ राम चरित करि नैम कहि गामहि सुनहि सुजान। तिनकर सकल मनोरथ पूजहि श्री भगवान॥ इति श्री रघुनाथ लवकुश युद्ध वर्ननो नाम रामाश्वमेधि सम्पूर्ण॥ मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरुड़ ध्वजं। मंगल पुंडरीकाक्षं मंगलाय स्तनो हरी॥

विषय—रामचन्द्र के राजसूय यज्ञ तथा लवकुश के युद्ध का वर्णन।

संख्या १४४. हरि चरचा विलास, रचयिता—मयाराम, कागज—मूँजी, पत्र—११७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी,

प्राप्तिस्थान—श्री गोपालजी का मंदिर, स्थान—नगर, डाकघर—फतेहपुर (सीकरी), जि०—आगरा ।

आदि—श्रीमते निम्बार्कदत्याय नमः ॥ अथ हरि चर्चा विलास लिष्यते ॥ कवित्त ॥ निम्बार्क चक्र अर्क अज्ञा प्रमान कीनी, दीनी दिक्ष्या दंडी कौ लीनी मन भायकैं ॥ तिनही के वंस में प्रसंस श्री हरि व्यास दे, करैं चूरन सेव देव दुर्गा सव धायकैं ॥ सो भूदेव कन्हर देव नारायण श्री परमानन्द, देव चतुर चिन्तामणि श्रीकृष्ण भट्ट आयकैं ॥ जुग जुग अवतार लेत दुष्टन को दंड देत, सन्तन सुष देत करै लीला तन पायकैं ॥

अंत—कहै श्रीराम सुनो हनुमान करौ सिधि, काम को पयानौ जल्दी ही कीजये । मुद्रिका लिहे जाहु जानकी कर दीजयो, जानकी बिना तात छिन नहीं जीजये ॥ नैक सुधि पाँऊ तौ आतुर ह्वै धाऊँ, काल हु जीति रण पुत्र जनक सुता लीजये । कहत 'मयाराम' मेरे जवहीं अराम, सीता सी भाम को मिलाय नैक दीजये ॥ × × × तहाँ अनहद बाजे बजे सदा चौसठि घरी ।जहाँ नृतत नटी सुजान सकल सुभ गुन भरी । तहाँ वाजैं लाल मृदंग संग मुहुचग है । जहाँ उठत है तान तरंग बढ़यो अति रंग है॥ जहाँ पटरानी सुमति भूप ढिग राजही ॥ जाकौ अद्भुत रुप निरखि रति लाजही ॥ तहाँ मयंक मुखी बहु सषी षड़ी कर जोरिकें ॥ बहु करत है भाव कठाक्ष हँसै मुष मोरिकें ॥ × × ×

विषय—हनुमान का सीता की सुधि लाना और राम-रावण युद्ध की तैयारियाँ होना, १–६ । कृष्णावतार की लीलाओं का वर्णन, ७–१८ । विष्णु की माया संबंधी विचित्रताएँ, कृष्ण और महाभारत युद्ध, पाण्डु और कौरव वंश से उनका व्यवहार, १९–२५ । वक्ता, श्रोता, उत्तम श्रोता, कनिष्ट श्रोता के लक्षण, २६–२९ । भक्त के बत्तीस लक्षण, ३०–३५ । दिवस निसि के राग भूदेव जी की टीका, निम्बार्क सम्प्रदायका वर्णन, शेषजी की टीका, मुसलमानों का वैष्णवों पर अत्याचार, ३६–५० । आध्यात्मिक विषय, तथा निम्बार्क भक्तों का वर्णन, उनके गुरुओं तथा गद्दियों का हाल, ५१–७७ । योग एवं वेदान्त, ७८–११७ ।

विशेष ज्ञातव्य—इस बृहद् ग्रंथ के रचयिता 'मयाराम' हैं जो सम्भवतः पहली ही बार अन्वेषण में आए हैं । यह निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी प्रतीत होते हैं । रचना उत्तम है, मधुरता सम्पन्न है । अपने सम्प्रदाय का वर्णन इन्होंने खूब विस्तार पूर्वक किया है, पर दुःख है वह क्रम पूर्वक नहीं है । बीच २ यत्रतत्र कई महात्माओं तथा उक्त सम्प्रदाय के अनुयायियों के नाम आए हैं । ग्रंथ खोज में महत्वपूर्ण प्रतीत होता है ।

संख्या १४५. मीरा बाई के पद, रचयिता—मीरा बाई, कागज—मूँजी, पत्र—१८, आकार—८½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (बहुत सुन्दर अक्षर), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि० सं० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—पंडित रामेश्वर जी, स्थान व डा०—कोसीकलाँ, जि०—मथुरा ।

आदि—अथ मीरा बाई के पद लिष्यते ॥ सोरठ- मोहन बता परी बंसी माला ॥ काँधे कमरिया हाथ लकुटिया, गऊ चरावन वाला ॥ इक वन ढूढ़ सकल वन ढूढ़े, कहूँ न पाये

नन्द लाला ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जिनके गरे वन माला ॥ मध्य—राग आसावरी ॥ नंद नन्दन सों मेरो मन मानो, कहा करेगो कोऊ री || अब मैं चरन कवल लपटानी, जो भावे सो होय री ॥ मात रिसाय पिता त्रासे, हँसै बटाऊ लोग री ॥ नन्द नन्दन सों प्रीति न छाड़ों, विधिना लिष्यो संजोग री ॥ अब मेरो यह लोक जाय किन, अरघर लोक नसाव री ॥ मीरा प्रभु गिरिधर की दासी, मिलौंगी निसान बजाय री ॥

अंत—रागमारू—तेरे नाव लुभानी हो। नैनन नींद नहीं आवही दिन द्योस दिवानी हो ॥ नाव लेत तिरते सुने वे पाहन पानी हो ॥ द्विज अजामील उधरयो जम-त्रासन सानी हो ॥ पुत्र हेत पदवी दई सव कोइ जानी हो ॥ सुकृत कबहूँ न आचरयो भव काम कमायो हो || कीर पठावत गनिका प्यारी बैकुण्ठ बसानी हो ॥ गज संकट में टेरियो तव अवधि तुलानी हो || कर धर चक्र धरि आइ पाप सुजौन मिटानी हो ॥ नाव महातम गुरु दिया परतीत बँधानी हो || मीरा प्रभु गिरिधर मिलिया वेद बषानी हो ॥४७ मिती कातिग वदी २ सं० १८८८ ||

विषय—मीरा कवियित्री के निम्नलिखित पद इसमें संगृहीत हैं:—१—मोहन बतावरी वंसी बाला। २—नैनन पर गई असी बान। ३—हरि बिन क्यो जिवो माई। ४—मोमन लै गयो सोही। ५—होय हो नन्द घर चेरी। ६—लगन सोई नन्द नन्दनसौ लागे। ७—सजन सुधि ज्यों जानो ज्यों लीजे। ८—कहा करौ माय मोहन लै गयो लगन लगाय। ९—माई कहाँरी करौ मेरे विमल हीयो। १०—हूँ तो मन मोहन रूप लुभानी। ११—अब तो प्रगट भई जग जानी। १२—आषिन में नन्द लाल वसौ मेरी आषिन मैं नन्दलाल। १४—माई मेरो मोहन मन हरयो। १५—गोविन्द सो प्रीति करत वही क्यों नहीं अटकी। १६—हौं तो माई गोविन्द सौं अटकी। १७—नैना तेरे रंग भरे निस पिय संग जागे। १८—मेरो मन लाग्यो गुपाल सू अब लाषन क्यों न रिसावरी। १९—नंद नन्दन सौं मेरो मन मानौ कहा करेगो कोऊ री। २०—ठाढ़ो सुन्दर साँवरे ढोटा कहियत नन्द किशोर। २१—मैं देषो दसुदा को नन्दन आँगन षेलत वारोरी। २२—मेरी प्रीति लगी नन्दलाल सौं मोंको बरजत लोग अजान री। २३—मेरो प्रीतम मदन गुपाल होरी षेले लाड़िलौ। २४—मेरे नैन में डारो जिन पिय पिचकारी। २५—मो मन राम नाव बसी। २६—कोई कहै मीरा भई बावरी कोई कहै हरि रसी। २७—नैना बसे रे मेरे सकल ब्रज की सोभा राधेश्याम तन हेरे। २८—राणाजी जहर दियो म्हे जाणी। २९—प्रीतम वेग क्यो न आवौ। ३०—लाज छोड़ि केहर भजे करै नहि कछु काम। ३१—नैना लोभी रुप के वहोरि सकै नहि आय। ३२—म्हारे घर होता ज्यो राजि। ३३—मीरा रंग लाग्यो हरी। ३४—नैना अटक मानत नाँहि। ३५—मन तुपर सिहर के बचन। ३६—मुरली वजाय म्हारो हीयो लीया जाय माय। ३७—आरती तेरी हौं। ३८—मैं चलत हूँ तुम जाहुरी। ३९—माई री गिरधरजी की लटकिन पर अटकि मोरी अँखिया। ४०—मेरे कोउ कहा करेगो। ४१—नैना अटके रूप सौ थल पल नहि लागे। ४२—नैना घूँघट में न समात। ४३—नैना मेरे निपट विकट छवि अटके। ४४—सिर धरे मटकिया डोले। ४५—माई मैं लयो है गोविन्द मोल। ४६—आलि मेरे नैनन माँहि बसौ। ४७—नैननि बान परी आली री। ४८—तेरे नाँव लुभानी हो।

संख्या १४६. कवित्त संकलन, रचयिता—मोतीराम, कागज—मूँजी, पत्र—५२, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१२, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकरजी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथजी का मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अंग दलौ अड़ि पंजे गाड़त अषाड़े माँझ, छोव छके छहरे छवा सो पछराज के। लाल करै आँषे जोम राषै जिय माहि घनी, लोट पोट होत चोट करैं जीति काज के॥ मोतीराम कहै थान थहरै थिरकि थिरा, थिति ह्वै रहत छित छाए बड़ी लाज के। अगा पग देत फर मग्ग में अभाग लाल, लड़त अवीरे बलवन्त महाराज के॥

अंत—मद भरे लोचन विशद अंग आभा चारु, लच्छ लछ हंस की सी सोभा अवतंस की। ताल अंक उर पै विशाल नील पट फैंट, सत्रुन की नसंक संक नही उटवस की॥ आयुध अनेक खेती के कन्त जू पै तऊ, सायुध भये हैं हल मूसल प्रसंस की॥ जमन के वंस की निवंस की विचारि चिंत, वासुदेव वंस की है लाज जदु वंस की॥ × × ×

विषय—निम्नलिखित कवियों के कवित्त सवैयों का संग्रहः—१–सेनापति २–देव ३–मोतीराम (भरतपुर निवासी) ४–घासीराम ५–हरिवंस कवि ६–कलानिधि ७–पद्माकर ८–पुषी ९–सोमनाथ १०–कविराज ११–रसखान १२–कृष्ण १३–शिवदास। भरतपुर के महाराज बलवंत, जसवन्त और जवाहिर आदि की प्रशंसा।

विशेष ज्ञातव्य—महाराज बलवन्त भरतपुर नरेश के आश्रय में मोतीराम कवि सं० १९२७ से १९५६–५७ तक रहे। इन्होंने कई ग्रंथ लिखे हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में मोतीराम की रचना का बाहुल्य है। अतः उन्हीं को रचयिता माना है, पर उनके अतिरिक्त जैसा कि विषय के कोष्ठ से स्पष्ट है, अन्य कवियों की रचनाएँ भी इसमें संकलित हैं।

संख्या—१४७. बरसाना वर्णन, रचयिता—मुरलीधर (स्थान—बरसाना, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप-प्राचीन, पद्य, लिपि–नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर उमराव सिंह जी रईस, स्थान—उड़ियामई, डाकघर—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ पोथी वरसाना वर्णन लिख्यते॥ दोहा॥ क्षीर समुद वैकुंठ में, वेद कहत निज धाम। सो मैं देष्यो जाय कैं, बरसाने विश्राम॥ १॥ ॥ राग सोरठी॥ विष्णुपद॥ परवत पर राजत श्री ठकुरानी। नंद नँदन ललितादिक वनिता दरसन रहत लोभानी॥ निंदत सरद चंद मुख शोभा रतिहू रहत लजानी। नेक कोर की कृपा कीजिए मुरली करत बषानी॥२॥ दोहा॥ नेति नेति श्रुति कहत है, विमल विसद जसु गाइ। वरसाने के रूप मे मोहन रह्यो लुभाइ॥३॥

अंत—॥ विष्णुपद॥ प्रात समै राधा हरि राजत। घूंघुट में मन मथ मनु वैठो वान कटाक्षनि साजत॥ चंचल चारु नैन ता भीतर युगल मोन लषि लाजत। मुरली राग विभास अलाप्यो मंद मंद धुनि वाजत॥ २२॥ दोहा॥ प्रेम द्वि विंशति भानु पठि, चित में

होत प्रकाश । रीझि समुझि नर कहत ही, अघ-तम होत विनाश ॥ २३ ॥ इति श्री ग्राम बरसाने वासी यदुवंशावतंस श्री मुरलीधर ॥ विरचितायां ज्ञान चन्द्रोदय दोहा विष्णुपद ॥ ॥ समाप्तम् शुभमस्तु ॥ अक्षि[२] चंद्र[१] वसु[८] चंद्र[१] पुनि, संवत्सर परमान । एकादशी कुजवार को, कीन्ह्यों प्रेम वषान ॥ २४ ॥

विषय—बरसाने के महत्व का वर्णन ।

संख्या १४८. रामचरित्र, रचयिता—मिश्र मुरलीधर, कागज —मूँजी, पत्र—२५६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीरामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा ।

आदि— × × × (रामचन्द्र को विश्वामित्रजी यज्ञ रक्षा के लिये माँग रहे हैं, राजा दशरथ मोह-वश कहते हैं) ॥ राजोवाच ॥ सुनो रिषि राज बेंन सब तुम कहो साँचे, मोहि बिछुरति पल कल न परति है ॥ कैसे किये जात न्यारे आँषिन के तारे मैंने —सहे दुष भारे देह अज्यों थहरति है ॥ और सब कीजे मोहि संगलाइ लीजे, यह हठ तजि दीजै मति धीर न धरति है ॥ राम को पठैबो मुनि मन में न आवतु है नेंक के वियोग तन बाती-सी बरति है ॥

अंत—॥ अथ कवि वंस वर्णन ॥ उपज्यो माथुर द्विजनि में, याते हित चित लाइ ॥ वरनतु हों उत्पत्ति सब, ग्रन्थनि को मत पाइ ॥ ब्रह्मा ही के वंश में प्रथम भए मुनिसात ॥ तिनते माथुर विप्र सव, चौसठि विधि विख्यात ॥ × × × मथुरा ही के वास ते पायो माथुर नाम ॥ चौसठि विधि याते भए, पाए चौसठ ग्राम ॥ जद्यपि माथुर द्विजन के, बहुत भए सन्तान ॥ तद्यपि चौंसठि ग्राम गुन, भए प्रसिद्ध जहाँन ॥ हिरण्याक्ष हनि के जबै, प्रगटे जज्ञ बराह ॥ इनही की पूजा करी, क्रतु में कियो निबाह ॥ × × × त्रेता में श्रीराम ने, बहुत कियो सनमान ॥ चौंसठि इन के ग्राम ते, दीने इनको दान ॥ द्वापर में श्रीकृष्ण को हनि के द्वेषी कंस ॥ आदर करि पूज्यो इन्हैं, कीनी बहुत प्रसंस ॥ अबहूँ या कलिकाल में, दिल्ली पति सुष पाइ ॥ इनहीं की ठौरनि इन्हें, दीनो वास बनाइ ॥ अकबर ने आदर कियो, बहुत जानि गुनषानि । उनिके संताननि करी सदा कृपा औकानि ॥ हिन्दू पति राना इन्हे, गुरु कर परसें पाइ ॥ बसिबेकूँ इन द्विजनि कों, कीनी ठौर बनाइ ॥ दीने अपने देशमें केतिक इनको ग्राम ॥ अजहूँ लौ ह्याँ बसत है, करत सकल सुख धाम ॥ माथुर ही की जाति में, गुन ते न्यारे नाम ॥ पाठ कियो जिनि वेद को, ते पाठक मति धाम ॥ तीनि वेद के पाठ ते कहत त्रिपाठी लोग ॥ ऐसे ओरो जानियो, गुन ही के संजोग ॥ × × × जिन जिन मुनि की रीति सों, पढ़े मुनिन ने वेद । तिन तिनहिं के नाम सों, उपजे साषा भेद ॥ × ×

विषय—मख रक्षा, राम का धनुष भंग करना, राम विवाह, वनगमन, वननिवास, राक्षसों से युद्ध, सीता हरण, सुग्रीव के साथ मैत्री, सीता वियोग, राम रावण युद्ध, रावण मरण, राम का अयोध्या लौटना आदि वर्णित है । माथुर ब्राह्मणों की उत्पत्ति ब्रह्मा से लेकर विभिन्न ऋषियों तक, पृ० ३७७–३७८ । माथुर ब्राह्मणों का राजाओं द्वारा मान एवं उनका माहात्म्य, पृ० ३७८ से ३७९ तक । प्रवर वर्णन मनुस्मृति के प्रमाणों समेत, पृ० ३७९–३८० । × × ×

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ खोज में महत्वपूर्ण प्रकट होता है। इसके कवित उत्तम हैं। रचयिता मुरलीधर अकबर कालीन मालूम होते हैं, क्योंकि इन्होंने दिल्लीपति अकबर की दानशीलता की चर्चा की है। ग्रंथ बहुत जीर्ण शीर्ण है अतः रचनाकाल, रचयिता का निवास-स्थान आदि प्रकट नहीं हो सके। ग्रंथ का परिमाण और कविता की उत्तमता इसे महाकाव्य का पद दे सक्ती है। निम्न छन्दों में पद्य रचना है। कवित, सवैया, छप्पै, गीतिका, हरि गीतिका, तोमर, दोहा, चौपाई, हरि छन्द आदि। कवि सिद्ध हस्त है।

संख्या १४९. नागरीदास जी की बानी, रचयिता—नागरीदास, कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामलाल जी, स्थान—गिड़ोह, डा० —कोसी कलां, जि०—मथुरा।

आदि—अथ नागरीदास की बानी लिख्यते ॥ राग गौरी ॥ प्रथम जथा मति श्रीगुरु चरन लड़ाइ हों। उदित मुदित अनुराग प्रेम गुन गाइहों। निरखि दम्पति सम्पति सुख रीझि मस्तक नाइ हो। देहु सुमति बलि जाऊ आनन्द बढ़ाइ हो। आनन्द सिंधु बढ़ाइ छिन छिन प्रेम प्रसादहि पाइ हो। जै श्री वर बिहारिन दास कृपातै हरिष मंगल गाइ हो।

अंत—अलि पराग अनुराग रति रंग मगे चित चौरे। यो विहरत नव नागरी साँवल तन गोरे। श्री विहारिन दासि लड़वही विपुल प्रेम मन भोरे। जै जै श्री नागरीदास होति वलि तुम नित नवल किसोरें। इति श्री नागरीदास जी के रस पद।

विषय—राधा कृष्णजी की भक्ति।

संख्या १५०. उरगनौ, रचयिता—नल्हु कवि, कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७० वि०, प्राप्तिस्थान—पं० सियाराम जी शर्मा, स्थान—करैहरा, डा०—सिरसागंज, मैनपुरी।

आदि—सिधि श्री गनेसाय नमः ॥ उरगनौ लिख्यते ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ नामु अनंदु समौ चवालु ॥ भागै छमे छरु भज्यो अकालु ॥ नल्हा सम्हारी सारदा ॥ वै सुगौर के जानै पुंनु ॥ हीयरा वसै तासु कौ धमुं ॥ लोभ पापु जाकै नहीं ॥ मैं कुलवंती पूछौं तोंहि ॥ कहु वे चक्रु परै जिनि मोहि। तू सवही मति आगरी ॥ करि प्रनामु हौं लागौं पाई ॥ गुनीवंत ज्यौं दूजै माई ॥ हौ सुनामु तेरौ जपौं ॥ तव वुधि मोकौं दीनी घनी ॥ भादौं मासु कुदिनु सप्तमी ॥ वारु कुदिनु अरुवा छारयौ ॥ जनम जनम हौं तेरौ दासु ॥ जीत नादु गुन कवित हुलासू ॥ पीय उरगनौ लौ रह्यौ ॥१॥

अंत—तब दुरि मिले दोउ गात ॥ मानहु दूधनि परयौ विवात ॥ मानहुँ षांड महु पुरु हरी ॥ दुहू जननि अति अपन्यौ रागु ॥ हीयौ अधार भजौ सत संगू ॥ अरु गंजे थानदार मारे ॥ पान फूल कौ कीजै भोगू ॥ छंद विनौदु भयौ संजोगू ॥ तव सुष आई नींदरी ॥ इहै विधाता नीके करौ ॥ ऐक से ज्यादोउ पौढ़ीयौ ॥ तवहिं गवरि हीयौ सुष भयौ ॥ यहै वषानु नल्ह कौ होई ॥ ऐसै आइ मिलौ सब कोई ॥ पीय उरिगनौ है रह्यो ॥१००॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ सुभं भवतु ॥ संवतु १७७२ ॥

विषय—विदेश जाने के लिये तत्पर नायक को नायिका द्वारा शकुनों और वर्ष मासादि के वियोग दुःख कथन द्वारा रोकने का वर्णन ।

संख्या १५१. गुरुनानक बचन, रचयिता—नानक, कागज—स्यालकोटी, पत्र—४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीव्रजकिशोर श्रीवास्तव, छीपी टोला, आगरा ।

आदि—॥ श्रीगुरुनानक बचन ॥ दोहा—गुन गोविन्द गायो नहीं, जन्म अकारथ कीन ॥ कहि नानक हरि भजि बिना, जिहि विधि जल को मीन ॥ विषयन सौं काहे रच्यो, निमखन होहि उदास ॥ कहि नानक हरि भजि मना, अवध जात है बीत ॥ विरध भयौ सूझै नहीं, काल पहुँचियो आन ॥ कहि नानक नर बावरे, क्यों न भजै भगवान ॥ धन दारा सम्पति सकल, जिन अपनी कर जान ॥ इनमें कोऊ संगी नहीं, नानक साँची मान ॥

अंत—दोहा—भय नासन दुर्मति हरन, कलि में हरि को नाम । निस दिन जो नानक भजै, सुफल होहि तिहि कान ॥ जो प्राणी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार ॥ कहि नानक आपन तरै, और न लेत उधार ॥ ज्यों सपना अरु पेखना, ऐसे जग को जान ॥ इनमें कछु सांचौ नहीं, नानक बिन भगवान ॥ जैसे जल मैं बुद बुदा, उपजैं बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची, कहि नानक सुनि मीत ॥

विषय—प्रस्तुत छोटे से ग्रंथ में नीति तथा भगवद्-भक्ति के उपदेशात्मक दोहे दिए गए हैं ।

संख्या १५२. पद या बानी, रचयिता—नन्ददास, कागज—मूँजी, पत्र—१७, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० केशवदेवजी, स्थान व डा०—माँट, जि०—मथुरा ।

आदि—॥ टेक ॥ एक पहिले ही रंग भरी पुनि भीनी रंग रंग । रंग रंग की संग सहचरी, बनी है रंगीली के साथ । पहिरे वसन रंग रंग के रंग भरै भाजन हाथ । रंग रंग की कर पिचकाई, सोहे एक समान । मनहुँ मैन शिव परस ज्यो । हाथ नितु पीक मान ।

अंत—ह्वै गये रस विवस सबै काहू न रही सँभार । छूटी है छवि सों अलक लटकतु हैं मुक्ति निहार । को है रुकति लाज पै अति प्रेम की उरैड़ । नन्ददास निधि न रुकत वारु की मैड़ । × × ×

विषय—होरी और धमार के पद ।

संख्या १५३. वसिष्ठ संहिता, रचयिता—नरहरिदास, कागज—मूँजी, पत्र—७९, आकार—७×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लीलाधर पटवारी, स्थान—मदनवारा, डा०—सुरीर, जि०—मथुरा ।

आदि—वासिष्टसार ग्रन्थ लिख्यते ॥ मंगलाचरण । पूर्व छायो । पुरशोत्तम ने प्रणमूँ, ये आद्य नरंजन देव । परम पुरुष परमात्मा, कीजे तेहनी सेव ॥ चराचर व्यापी रह्यो, हरि अन्तर्यामि राम ॥ बाह्य आभ्यन्तर पूर्णसदा, प्रणमू ते परधाम ॥ जे देश काल विछन्न नहीं, अविछन सकल अनन्त ॥ ज्ञान रुप आनन्द घर, ते पद सेवहि संत ॥ आत्मा अनुभव जाणिए, ते वचन कह्यो नवि जाय । नमूं नित्य संतत जने, जेहि नेति नेति श्रुति गाय ॥ ब्रह्म सनातन गाइये । ए अध्यातम उपदेस । हरिगुण सन्त प्रसादथी, लेते कर्म्म कलेस ॥

अंत – अेम आत्म स्वरूप वहिरन्तर राम । मन इन्द्री प्रकाशक धाम ॥ सर्व प्रकाशक आत्मा एक । रघुपति राघो एह विवेक ॥ अर्क विविंत दर्पण जेह । जे जप वन्त तां भजिये तेह ॥ निर्मल महा अनन्त पाषिए । मलिन महामुष नव्य देषिए ॥ राम ज्ञान सहित बुध्य होय जे हनि । निर्मल चित्त वृत्य कहिए ते हनि ॥ × × ×

विषय—१–वैराग्य विवेचन । २–अनवीज यज्ञ । ३–जीवन्मुक्ति । ४–मनलय । ५–वासना का उपराम । ६–आत्मज्ञान । ७–आत्म निरूपण । ८–आत्म अर्चन । ९–जीवात्मा । १०–ब्रह्म । ११–मानभाव और गुरु लक्षण । १२–सांसारिक दुःख ।

विशेष ज्ञातव्य—"कर जोड़ी नरहरि कहै, धरिय निरंजन ध्यान । × × × हरि कृपा त्यारे जाणिए, ज्यारि होय बुद्धि प्रकाश ॥ तेसे वे हरि गुरु सन्त ने, इम कहे नर हरिदास" ॥ विवरण में कई नरहरिदास आए हैं । पर उनमें से ये कौन हैं यह निर्धारित करना कठिन है । अपने विषय में इन्होंने कुछ नहीं लिखा है । इनकी कवितामें, जैसा कि उद्धृत दोहे से प्रकट है, मारवाड़ी शब्दों का प्रयोग है । अतः कहा जा सकता है कि ये संभवतः जोधपुर वाले नरहरिदास हैं ।

संख्या १५४. कान्यकुब्ज बंशावली, रचयिता—पं० नारायण प्रसाद, कागज—देशी, पत्र—५४, आकार—९½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमती रानी कुंअरि, भू० पू० अध्यापिका, कन्या पाठशाला, सिरसागंज, मैनपुरी ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कान्यकुब्ज वंशावली प्रारभ्यते ॥ प्रथम मंगला चरणम् ॥ श्लोक—आदि मध्यांत रहितं, दशा हीनम् पुरातनम् । अद्वितीय मह वंदे सच्चिदा-नंद रुपिणम् ॥ १ ॥ वन्दा महे महेशान चंद्रको दंड खंडनम् । जानकी हृदया नंद चन्दने रघुनन्दनम् ॥२॥ × × × नारायण प्रसादेन संग्रहीतार्य्य भाषया । पूर्व ग्रथांन्स मालोच्य इयं वंशावली शुभा ॥५॥ अथ ब्राह्मणोत्पत्ति निर्णयः ॥ उक्तं च भागवते ॥ श्लोक ॥ पुरुषस्य मुखं ब्रह्म क्षत्र मेतस्य वाहवः । उर्वी वैश्यो भगवतः पद्भ्यां शूद्रोभ्य जायत ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ अब ब्राह्मणों की उत्पत्ति का निर्णय लिखते हैं । कि सृष्टिकर्त्ता जो पुरुष उसके मुख से ब्राह्मण वाहु से क्षत्रिय उरु भाग से वैश्य और पाद से शूद्र उत्पन्न भये ॥६॥

अंत—यज्ञोपवीत प्रार्थनायां विनियोगः ॥ ॐ यज्ञो पवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यं-त्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्य मग्र्यं प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं वलमस्तु तेजः ॥ इस मंत्र से प्रार्थना करके धारण करै यज्ञोपवीतम सीति मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापतिर्देवता अनु-

ष्टुप छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः । ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वोप वीतेनो पनह्यामि । इस मंत्र से यज्ञोपवीत दौनों हाथमें ले दक्षिणवाहु में पहिर कर वाम स्कंध पर स्थापन करे पश्चात् आचमन करके यथा शक्ति गायत्री का जप करे ।। और तीन पक्ष के उपरान्त द्वितीय यज्ञोपवीत धारण करे ॥ इति यज्ञोपवीत धारण विधिः ॥ अथ प्राचीन यज्ञोपवीत विसर्जनम् ॥ यज्ञोपवीतं यदि जीर्णवंतं विद्यादि वेद्यं परब्रह्म सत्वम् ॥ आयुष मग्रं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं विसृज्य स्तुतेजः ।।१।। इति जीर्ण यज्ञोपवीत विसर्जनम् ।। इति श्री मत्पण्डित नारायण प्रसादेन संकलिता ।। कान्यकुब्ज वंशावली समाप्ता शुभम् ।।

विषय—कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के कश्यप, शांडिल्य, कात्यायन, भरद्वाज, उपमन्यु, सांकृत, गर्ग, गौतम, भारद्वाज, धनंजय, काश्यप, वत्स, वशिष्ट, कौशिक, कविस्त, पाराशर, इन षोड़श गोत्रों का विस्तार से वर्णन ।

संख्या १५५. नाम संकीर्तन, रचयिता—नरोत्तमदास, कागज – बाँसी, पत्र—३, आकार—९ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान —श्री पं० रामनारायणजी गौड़, स्थान व डा०— कोसी, जिला—मथुरा ।

आदि —श्री कृष्ण चैतन्य चन्द्राय नमः ।। जय जय श्री कृष्ण चैतन्य नित्यानन्द ।। जय अद्वैताचार्य्य जय गौर भक्त वृन्द ॥ जय जय सनातन जय श्री रूप ॥ जय जय रघुनाथ प्रान स्वरूप ॥ जय जय गोपाल भट्ट भट्ट रघुनाथ ।। जय जय श्री जीव जय लोकनाथ ॥

अंत—छाड़ अन्य कृपा कर्म्म अन्याधापन । मानुषे राधाकृष्ण सेवा कर हो सेवन ।। श्री राधे कृष्ण पाद पद्म जार मकरन्द । सदापान कर जासे जापा इव आनन्द । मने आनन्दे वोल हरि भज वृन्दावन ॥ श्रीगुरु कृष्ण वैष्णव पद हृदय विलास ।। नाम संकीर्तन कहे नरोत्तमदास ॥ इति श्री नाम संकीर्तन समाप्त ॥

विषय—महा प्रभु कृष्ण चैतन्य का संकीर्तन अथवा स्तोत्र ।

संख्या १५६. दोहा संग्रह गाने के लिये, रचयिता—नजीर, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—सुलेख, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडा रामलोटा महराज, स्थान—सोरों, डा०—सोरों, जि०—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ गाने के लिये दोहा लिख्यते । दो० । झूठो वासो वृक्ष की सो हंसा करैं न नेह । राजा छाड़ी नागरी मन चाहै सो लेय । मूरख सोच विचार में उमर गवाई रोय । जो कुछ कर्ता रचि दई दूजी और न होय ॥ क्या उनको अज माइये जिन्हे लियो अजमाय । हंड़िया प्यारे काठ की एक वार चढ़ि जाय ॥ हरियल लाकड़ ना तजै औ तजै नरन को सूर । भक्त ना तजे भक्तई औ कपट तजै ना कूर ।। जिन दुख दीनो और को वह दुख में मरैं करहाय । कुअनां खोदे और को सो आपै जाय समाय ।। मूरख सुष सीषत नहीं चातुर सुख को खाय । जो नर सिष मानै नहीं सो पल पल पछिताय ॥ वैदा नाड़ी छाड़ि दे है हिरदय में फांस । दरशन की आसा लगी सो जौ लौं तन में सांस ॥

अपने अपने सोच में नर नारी सब हीन । मोको ऐसो सोच है कि मैं जानी या मीन ॥ जीवन थोड़े रोज को फिर मिल माटी होय । तनिक जिंदगी बावरे सो गर्ब न करियो कोय ॥ विक्रमजी तो चल बसे औचलि भये राजा भोज । नेकी जग में रहि गई औ रहो न कोई खोज ॥

अंत—रंग रूप अँरु जोवना हुइ हैं ये सब खाक । चार दिना की चांदनी फिर अधियारा पाख ॥ हिरनी से हिरना छुटो जगत कुलांचै खाय । चौंगिदा भापत फिरै सो विछुरन बुरी बलाय ॥ जानै सो वोलै नहीं वोलै सो अनजान । ज्ञानी को चुप्पी दई अज्ञानी करत वषान ॥ ज्ञानी ज्ञान भूलै नहीं भूले न वनिया भाव । जिनके मन में वैर है सो कबहुँ न भूलै दाउ ॥ एकन को नित सोग है औ एकन को राग । मूरख सोच विचार में अपनो अपनो भाग ॥ खन पुरवाई चलत है खन चालत पछियाव । खन गाड़ी है नाव पर खन गाड़ी पर नाव ॥ जिन करनी जेसी करी सो त्यो ताहि वखान । जैसो वोये खेत में तैसो लुनय किसान ॥ रतन सेन राजा मरे औमरी पदमिनी नारि । गढ़ वारवर खेड़ा भये और नाउं लेत संसार ॥ साईं कौ ना भूलिये यह दुनिया हर रंग । रूप संग ना जायगो सो करनी जेइहै संग ॥ ओछे कूर गंवार से कोउ न करियो प्रीति । क्याही रंग कसूम को और क्वा वारुकी भीत ॥ पर त्रिया की प्रीति को कच्चो डोरा हेरि । जोरत जोरत दिनलगैं औ टूटत लगैं न देरि ॥ आग बुरी है डाह की औ डाह जरावत अंग । जैसे दीपक डाह से जरि जरि मरत पतंग ॥ लागै तौ टूटै नहीं औ टूटी जोड़ैं कोय । लागी टूटी फिर जुड़ै तौ गांठ गठीली होय ॥ पीतम तोता नैन से होय न एकौ काज । नैना वही सराहिए जिन नेनन में लाज ॥ मूरख कूर गंवार को कबहुँ न लीजौ नाऊं । तनिक हेत जीमें करै तो धरै मूंड़ पर पाऊं ॥ इति श्री दोहा सम्पूर्ण समाप्तः सवत् १९०७ वि० राम राम राम ॥

विषय—इस ग्रंथ में शिक्षाप्रद ९० दोहे हैं ।

संख्या १५७. भ्रम विध्वंस मन रंजन, रचयिता—नेतिदास, स्थान—गीगला (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—२९, आकार—१३ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५०, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शालिगराम जी, स्थान—गीगला, डा० सादाबाद, मथुरा ।

आदि—सत्य सुकृत आदि अदली अजर अचिन्त्यपुरुष मुनीन्द्र करुणामय कवीर सुरति योग सतायन चारु गुरु धनी धर्म्मदास वंस वयालीस की दया सकल सन्त महन्तन की दया ॥ सतगुरु सत्य कबीर को, इक क्षण सुरति चढ़ाय ॥ नेतिदास वन्दन करै, लीजे पार लगाय ॥ कुण्डलिया ॥ नैया मेरी तनिक सी, बोझ अपरबल स्वाय ॥ वहुत जन्म से धार में, अतिहिं रही भरमाय ॥ अतिहि रही भरमाय, भरी है वस्तु अपारा ॥ आवागमन के भँवर वृत्य में सूझ न पारा ॥ नेतिदास की विनय सुनौ सतगुरु खिवैया ॥ गहहु दया को गंड़ घाट पर आवै नेया ॥

अंत—काया नगरी आयकें पर्‍यो मोह की फाँस ॥ यह ठगियों का देश है करत शीघ्र ही नास ॥ करत शीघ्र की नाश भ्रमैया जग चौरासी ॥ सुख दुख के वस पर्‍यो जव

जम की फाँसी ।। नेतिदास मन समुझि त्याग ठग कामा भारी ।। मिलन पिया के देश हेत भयी काया नगरी ।।

विषय—१—सतगुरु प्रार्थना। २—सतगुरु माहात्म्य। ३—माया की चपेट। ४—मायावादियों का ज्ञान। ५—कबीर का निर्गुण ज्ञान।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता कबीर पन्थी थे। इनका जन्मस्थान गीगला (मथुरा) है। जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके लड़के के पास फुटकल छिन्न भिन्न पत्रों में इनकी बहुतसी कविता पड़ी हुई है, उन्ही के यहाँ प्रस्तुत ग्रंथ का विवरण लिया गया है। इनकी कविता में प्रवाह तथा ओज है। रचनाकाल आदि कुछ नहीं मालूम होता, पर इनको मरे हुए लगभग ५० वर्ष हो गए हैं। अतः इसके पूर्व की ही रचना होना अवश्यम्भावी है। कुण्डलियों के अलावा सवैया, मनहरण, घनाक्षरी, दोहा और पदों आदि में भी इनकी रचनाएँ हैं।

संख्या १५८. नितानन्द के भजन, रचयिता—नितानन्द (स्थान—मथुरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—५२, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६४, पूर्ण, रूप—अर्वाचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०४ = सन् १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—ओंकारनाथ जैन, स्थान डा०—रुनकुता, जि०—आगरा।

आदि—गादी नदिया सन्तीपुरधाम क्षेत्र मथुरा वृन्दावन पालीवार उदैतो देवता गरुड़ देवता अखाड़ा बलभद्र सम्प्रदाय श्री माधवाचार्य्य गृहे श्री महाप्रभू नितानन्द द्वारा श्री मुकुन्द मुरवारी द्वारा श्री नासिका गुरु गुमानीदास ।। × × × बुधि विमल करनी विबुधि हरनी रुप रमनी निरखिये ।। बर दिये न वाला पद प्रवाला मंत्र माला हरखिये ।। थिर थाम थम्बा अति अचम्भा रूप रम्भा झलकती ।। भजिये भवानी जगत जानी राज रानी सरसुती ।।

अंत—आरती कीजै अगम अपार की ।। मिटि गये सब जंजाल जनम के, तन मन मंगल चार की ।। भक्ति थाल भरि ज्ञान का दीपक शोभा निरखि मुखार की ।। सूरजचन्द करोड़न सरवर एक रुप उजियार की ।। देखि दयाल गोपाल लाल छवि शोभा अनन्त प्रकार की ।। जगमग ज्योति उद्योत परस्पर मोहन महल मंझार की ।। अन्तर भवन तेज घन स्वामी नगरी नित्त वरार की ।। बरसत पुष्प अखंड प्रीति से बाजत अनहद तार की ।। घंटा ताल मृदंग संघ (? ष) धुनि, वंसी सबद सम्हार की ।। सकल सन्त मिलि करै आरती जीवनि मुकति दुआर की ।। खुल गई पलक झलक घट पट में, अविनासी सुखसार की ।। नितानन्द भजि राम गुमानी दास अकथ कथा दरवार की ।।

विषय—निर्गुण मत सम्बन्धी भजन, पृ० ६। सतगुरु के, पृ० १०। माया के, पृ० १४। उर आन्तर में ब्रह्मदर्शन के भजन, पृ० १८। आत्मा तथा परमात्मा के विषय के भजन, पृ० २४। गोविन्द कृष्ण के भजन, पृ० ३५। राम सीता के भजन, पृ० ३८। सतगुरु महिमा वर्णन, पृ० ४५। हरि के भजन, पृ० ४७।

संख्या १५९. पद्मनाभ जी के पद, रचयिता—पद्मनाभ, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—९ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७६, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जमनादास, कीर्तिनिया, नवा मंदिर गुजरातियों का, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः अथपद्मनाभ जी के पद लिख्यते ॥ राग भैरव ॥ श्री वृन्दावन रम्य करस दानी ॥ श्री वल्लभ पद पंकज माधुरी, जिनको अलियां रुचिमानी । भ्रू विलास अन्तः पुर गह्यां रास स्थली दगनि दरसानी ॥ नन्द सुवन सुख अवधि घाईलो, मंडल ओर पास रहुँ पानी ॥ बाग धीश जुब जनहूं न समझी, मधुराई मुरली मधु जानी ॥

अंत—राग गोरी । श्री लक्ष्मण भट पुत्र पद रज वोहोत रजधानी । दरस परस होत सरस वेरु चित, ब्रज जन घर घर बन केलि जानी ॥ कनिका रंग रंग द्रवित सदन उर, व्रज पुर भाव सों मिलि बुध सानी ॥ पद्मनाभ प्रभू सर्व विधि सति दम्पति आनन्द अदेय दानी के दानी ।

विषय—राधाकृष्ण के भक्ति और प्रेम संबंधी पद ।

विशेष ज्ञातव्य—इसमें केवल पद्मनाभ जी के पद ही हैं। यह पद्मनाभ कौन थे, इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता । विवरण में इसका पता नहीं है । पदों की संख्या से ये उत्कृष्ठ पदकार प्रतीत होते हैं। गुजराती शब्दों की पदों में भरमार है, अतः ये गुजराती मालूम होते हैं।

संख्या १६०. ख्याल, रचयिता—पन्नालाल (स्थान—आगरा), कागज—स्याल कोटी, पत्र—४२, आकार—१३ X ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७६४, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ प्रसाद वैद्य, नूरी दरवाजा, आगरा।

आदि—महाराज पन्नालाल जी नूरी दरवाजा आगरा के ख्याल ॥ ख्याल ॥ मेरो देह सों नेंह रह्यो है नहीं मोहि सूरत स्याम दिखा तो सही : फिरै भटकत जीव वृन्दावन में निर्जीव को जीव बना तो सही ॥ ये मैं जानत हूँ सर्वत्र है तूँ पर व्रज में तो अलवत है तूँ ॥ हैं और असत्त एक सत्त है तूँ मोहिं तत्त को पाठ पढ़ा तो सही ॥ तूँ है अलख अगोचर आप हरी अद्वैत अखंड अजाप हरी । मेरो है तुहीं माई वाप हरी मेरे पाप को ताप मिटा तो सही ॥ तूँही दीन दयाल कृपाल हरी तूहीं काल को काल गुपाल हरी ॥ तूँ ही बेल में वृक्ष में डाल हरी मेरी बेल में बेल बढ़ा तो सही ॥ १ ॥

अंत—× × × क्यों अये बुत नादा मन में पछताते हो । क्या सितम गरीबां को सिखलाते हो । पिटवाके गोट कचेही मात खाते हो । ख्याली मिस्सर लाला को बिसराते हो । 'बिहारी' के कौल पर यकीं नहीं लाते हो । "पन्ना" से बाजी बदकर क्या गाते हो । जो घरूँ हाथ तो रिश्ता बतलाते हो ॥

× × ×

विषय—१—कृष्ण विनय, कृष्ण महिमा। २—इश्क का मरीज। ३—साकी और शराब। ४—रचयिता के पुत्र-मरण पर वियोग। ५—पत्नी के विरह की आकुलता। ६—कोक अर्थात् रति विज्ञान। ७—हनुमान-विनय। ८—दधीचि ऋषि का परोपकार। ९—स्त्री की सुन्दरता। १०—उर्दू के शेर। विषय अक्रम रूप से दिये गये हैं; कोई सिलसिला नहीं है।

विशेष ज्ञातव्य—जनश्रुति से पता चला है कि पन्नालाल रूप राम के समकालीन थे। पन्नालाल तथा रूपराम में बड़ी मित्रता बतलायी जाती है; परंतु पन्ना रूपराम की तरह सफल ख्याली प्रतीत नहीं होते। इनके ख्याल लचर और ढीले ढाले होते हैं। लाला मिस्सर तथा विहारी जिनका नाम 'अन्त' के उद्धृत ख्याल में आया है, पन्ना की मंडली के थे। पन्नालाल का निवासस्थान नूरी दरवाजा आगरा बतलाया गया है। इस पर विश्वास किया जा सकता है, कारण कि उस मुहल्ले के प्रायः सभी लोग यही कहते हैं।

संख्या १६१. हंसदूत, रचयिता—श्री पन्नालाल वैश्य (स्था० आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—१४६, आकार—१३ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९७१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री लीलाधर जी गर्ग, कचहरी घाट, आगरा।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री निकुंज विहारिणे नमः। अथ मंगलचरणम् मूल॥ दुकूलं बिभ्राणो दलित हरिताल द्युति हरं। जपा पुष्प श्रेणी रुचि रुचिर पादाम्बुज तलः तमाल श्यामाङ्गोदर हसित लीला श्रित मुखः परानन्दा भोगः स्फुरतु हृदि मेकोऽपि पुरुषः मुखोल्लास—दोहा अखिल लोक आधार जो, ब्रह्मसच्चिदानन्द ॥ मम उर तिन श्री कृष्ण को होहु प्रकाश अमन्द ॥ मूल की भाषा पद्य। धारत पीत पटा छवि तासु दली हरताल की कान्ति दुराई ॥ पाँति प्रसून जपा जनु सोहति जासु पदाम्बुज की असपाई ॥ श्याम तमाल सौ अंग लसै, मुसकानि करी मुख की जुलु नाई ॥ सो परमानँद पूरण रुप प्रकाशहु मोउर अन्तर आई ॥

अंत—छन्द गीतिका। जगबन्धु श्री ब्रजचन्द्र के आनन्द अतिशय की लता। यह हंस दूत निबन्ध राखौ सघन पल्लव आवृता ॥ आधार श्रृङ्गारादि रस दूषण रहित कविजन गन्यौ। श्रीकृष्णचन्द्र चरित्र घटना रुप सों साम्प्रति बंध्यै ॥ सारांश—सोरठा—हँस दूत रस सार, दूषण बिनु कविजन लख्यौ। सो हरि चरित उदार, करत रहे विस्तृत जगत ॥

विषय—गोपियों के विरह का विस्तृत वर्णन है। जब अक्रूर श्रीकृष्ण को लेकर मथुरा चले गये तो राधा आदि ब्रजबालाएँ कृष्ण वियोग में अत्यन्त आकुल हो गईं और हंस को अपना दूत मानकर उसी से अपनी विरह गाथा सुनाने लगीं आदि वर्णन।

संख्या १६२ ए. ब्रजलीला के पद, रचयिता—परमानन्द, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—अथ जगायेबे ते आदि लेकर ब्रज-लीला के पद ॥ राग विभास - जागो कृष्ण जसोदा बोले इहि औसर को सोवे हो ॥ गावत गुन गोपाल ग्वाल मिल, हरषत दह्यौ विलोवे हो ॥ गो दोहन धुनि पूरि रह्यो ब्रज, गोपी दीप संजोवै हो ॥ सुरभी हू के बछरुहा जागे, अनमिष मारग जोवै हो ॥ बैन मधुर धुनि महुवर बाजै, बैत गहे कर सेली हो ॥ जागे कृष्ण जगत की जीवन, अरुन नैन मुष जोवे हो ॥ गोविन्द प्रभु जू दुहत है धौरी, गोप बधू मन मोहे हो ॥

अंत—॥ राग विहागरौ ॥ मैया मोहिं माखन मिश्री भावै ॥ औंटो दूध सद धौरी को, बेला भर क्यों न प्यावे ॥ तू जो कहत तेरो ब्याह करौंगी, तोहि निसंक नींद को आवै। परमानन्द जसोधा रानी हँसि हँसि कंठ लगावै ॥

विषय—जगाने तथा आरती मंगल के पद, पृष्ठ–५। श्रृंगार करना, पृष्ठ–९। गाय दुहाने के पद, पृष्ठ–१०। उलाहने के पद, पृष्ठ–१२। घर के भोजन के पद, पृष्ठ–१४। छाक (कलेवा) के पद, पृष्ठ–१५। वन-क्रीड़ा, पृष्ठ–१६। नट के पद, पृष्ठ–१८। ब्रजलीला तथा भक्ति के पद, पृष्ठ–२४।

विशेष ज्ञातव्य—पद्य उत्तम हैं। परमानंद के अतिरिक्त अन्य कवियों के भी पद बीच बीच में आ गये हैं, जैसेः—१–रहीम, २–मानदास, ३–चतुर्भुजदास, ४–राम राय, ५–गोविन्द, ६–सूरदास, ७–नन्ददास, ८–कुम्भनदास, ९–इन्द्र, १०–कृष्णदास, ११–रषि केशव, १२–कल्याण।

संख्या १६२ बी. लालजी को जनम चरित्र, रचयिता—परमानन्द, कागज—बाँसी, पत्र—७, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकरजी याज्ञिक, स्थान—गोकुलनाथजी का मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ श्री गुसाईं लालजी को जनम चरित्र परमानन्द कृत लिष्यते ॥ प्रथमे श्रीगुरु चर्न कमल मकरन्द धरौ आना। श्रीगुरु परम स्वरुप प्रगट सूरत भगवाना ॥ श्रीगुरु जन्म कर्म की कछु मैं कथा सुनावौ। गुरु महिमा अवगाह पार हौं तनक न पावौं ॥ सन्त महन्त सुनो सभे करुना कर लीजे। गुरु चर्नों हित बढ़े मुझे इतनो वर दीजे ॥

अंत—जन्म जन्म हौं दास दीन हो बुद्ध हमारी। जिहलालन पगु धरैं तहाँ चरनन हितकारी ॥ परमानन्द अधीन दीन इतना वर पावे। श्रीलाल चरन की सरन सदा निर्मल जस गावे ॥ इति लालजी का जन्म चरित्र परमानन्द कृत समाप्तम् ॥

विषय—श्रीलाल, बंगाल के महाप्रभु चैतन्य तथा ब्रज के वल्लभाचार्य्य के समान ही, एक वैष्णव शाखा के संस्थापक हो गए हैं। इनको मानने वाले पंजाब की ओर हैं। वे इन्हें परमात्मा का अवतार समझते हैं। श्रीलाल का जन्म अजू नाम ब्राह्मण के यहाँ सिन्धु नदी के किनारे सं० १६०८ में हुआ था। "द्विज अजू गृह प्रगट नाम श्रीलाल धरायो। सोरह सै अठोत्तर प्रभु अवतार आयो ॥" इनका निधन काल इस प्रकार दिया है:—संमत् सोरह सै इसठे वेद सपंचम माँही लाल डेह तज चल्ये भयों जयकार तहाँ हीं। यह भगवान के बड़े भक्त थे। कई मनुष्यों का इन्होंने उद्धार किया।

विशेष ज्ञातव्य—इसी ग्रन्थ के साथ श्रीलालजी की वंशावली मोतीदास कृत पद्य में दी हुई है जिसका रचना काल इस प्रकार है:—"संवत् दिग[१०] अरु वसु[८] वसत, रुद्र[११] तासु पर होइ। माघ शुक्ल तिथि पंचमी, कहि वंसन्त सब कोइ शुक्रवार दिन एक मों, करी लाल वर पाइ"। संभवतः यह सं० १८११ वि० है।

संख्या १६२ सी. नि० प० (? नित्यपद संग्रह), रचयिता—परमानन्द, कागज—स्यालकोटी, पत्र—५०, आकार—७ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बहोरीलाल भारद्वाज, स्थान व डा०—अछनेरा, जि०—आगरा।

आदि—...जागो मेरे लाल जगत उजयारे ॥ कोट वदन वारी मुसकिन पर, कमल नेन नैनन के तारे ॥ संग लेउ ग्वाल बाल औ बछ सब, जमुन तीर जिन जाऊ मेरे प्यारे ॥ परमानन्द कहत नन्दरानी दूरि जिन जाउ मेरे बृज रखवारे ॥ जागो मेरे लाल जगत उजियारे ॥

अंत—परम उदार चतुर चिन्तामन, सेवा सुमरन मानै। हस्त कमल की छाया राखे, अन्तर गति की जानै ॥ वेद पुरान श्री भागवत भाषैं, कर फवतीयन मन भायो। परमानन्द इन्द्र सो वैभव, विप्र सुदामा पायो ॥ × × ×

विषय—आचार्य्यजी तथा गोसाईजी के पद, पृ०—१। यमुनाजी के पद, पृ०—२। श्रीगंगाजी के पद, पृ०—३। जिमायबे के पद, पृ०—४। कलेऊ के पद, पृ०—६। मंगलासन मुख के पद, पृ०—६। हिलंग के पद, पृ०—७। दधिमथन के पद, पृ०—८। खण्डिता के पद, पृ०—९। मुरली के पद, पृ०—१२। मंगला आरती के पद, पृ०—१३। अथ वृताचार्य्य के पद, पृ०—१३। अन्हवाइबे, शृंगार, पलना, खिलौना, चन्द्र-प्रकाश, खिलाने के पद, पृ—१९। बलदेवजी, बाललीला, फल फलारी, छुट रुचन, मान, माखन चोरी, उलाहने आदि के पद, पृ०—२६। शृंगार, पैया, भोग, कलह, टियारे, सेहरे, भोजन के पद, पृ०—३१। बृज भक्तों, भोग सिरायबे, बीड़ी, छाक, भोजन आदि के पद, पृ०—३४। फुटकल पद, पृ०—५३।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का नाम संक्षिप्ताक्षरों में 'नि० प०' दिया गया है संभवतः यह 'नित्य पद' है। पदों के अन्त में 'परमानन्द' नाम की ही छाप है, किन्तु एकाध स्थल पर 'विष्णुदास' का नाम भी आ गया है। पद उत्तम हैं।

संख्या १६३ ए. अमर बोध सास्त्र, रचयिता—परशुराम, कागज—मूँजी, पत्र—४२, आकार—१२ × १० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीराम गोपालजी अग्रवाल, स्थान—मोतीराम की धर्म्मशाला, सादाबाद, मथुरा।

आदि—श्री गोपाल राइ जी सति ॥ श्री गुरदेवजी सति ॥ श्री स्वामीजी श्री परसरामजी कौ ग्रन्थ श्री अमरबोध सास्त्र लिख्यते ॥ दोहा—श्रीगुर सवद हृदे धरैं, परसा प्रेम समोइ। तौ मनसा वाचा कर्म्मणा, जोवां छै सोइ होइ ॥ श्रीगुर सवद समान सौ, कोइ सुकृत सूझै नाहिं। हरि मंगल पद परसराम, प्रगट भयौ जा माहिं ॥ श्रीगुर सवद समान कूँ, औरन कोई उपगार। परसराम गुर कृपा तैं, हर पाइए अपार ॥ श्रीगुर सवद सदा उर धारैं। गुर प्रसाद हरि नाम सभाँरै ॥

अंत—हंस देह तजि न्यारा होई। ताकी जाति कहौ धूँ कोई ॥ विण संग यां पाछै का कहिए। ऊंच नीच कौ मरम न लहिए ॥ नारी पुरष कि बूढ़ा बाला। तुरक किहिं हू करी सम्हाला ॥ स्याह सुपेत किराता पीला। अवरण वरण कि ताता सीला ॥ अगम अगोचर कहत न आवै ॥ अपणै अपणै सहजि समावै ॥ समझ न परै कही को मानै। परसा दास होइ सोई जानै ॥ इति श्री विप्र मतीसी सम्पूर्ण ॥

विषय—१-गरु महिमा और निर्गुण ज्ञान। २-रोगरथ नाम लीला। ३-नाम निधि लीला। ४-सांच निषेध लीला। ५-श्रीनाथ लीला। ६-निजरूप लीला। ७-श्रीहरि लीला। ८-निर्वाण लीला। ९-समझणी लीला। १०-तिथि लीला। ११-वार लीला। १२-नक्षत्र लीला। १३-श्रीबावनी लीला। १४-विप्रमती लीला। उपर्युक्त लीलाएँ माखन चोरी लीलाओं की सदृश नहीं हैं वरन् आध्यामिक रूपक बाँधकर उक्त लीलाओं को निरर्थक बतलाया गया है।

संख्या १६३ बी. जोड़ा, रचयिता--परसुराम, कागज--मूँजी, पत्र--८८, आकार--१२ × ९ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि - नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीराम गोपालजी अग्रवाल, स्थान-- लाला मोतीराम की धर्म्मशाला, सादाबाद, मथुरा।

आदि—राग मारू--जाको मन हरि हरि सुमिरै ॥ ताकी सदा सति करि श्री पति रक्षा आपु करैं ॥ चरन कंवल विश्राम सदा थिर, हरि वा जाणि वरैं ॥ सरणाई संम्रथ सुखदाता, सब दुष दोष हरैं ॥ अति आतुर आए हरि पुर तैं, गज हित ग्राह तिरैं ॥ पंड वधू कूँ चीर आप हरि, दीनौं आइ धरैं ॥ जो हरि भजै भजै हरि ताकूँ, हरि विसऱ्या विसरैं ॥ उग्रसेन कूँ छत्र सिंघासन दै हरि पाइ परैं ॥ गज भुजंग गिर त्रास दई अरि, माऱ्यौ सो न मरैं ॥ रच्छा करण सदा संगि जाके, सरण जम काल मरै ॥ असुर अबुधि अगनि मैं डाऱ्यो, जाऱ्यो सो न जरै ॥ साषि प्रगट प्रहलाद उजागर, क्यौ हरि विरद दुरै ॥ ताकी महिमा को कहिबे कूँ जो हरि ध्यान धरै ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस सुरे सुर, सेस न कही परै ॥ ऊचे तं ऊचे ले राष्यो धूपुर पुर निपरै ॥ परसा धिरड ज्ञान पात सुन, टाऱ्यो न टरै ॥

अंत—दास सुभाव की जोड़--निंदौ कोइ वंदन करौ, कोइ कहो कछू संसार। परसराम निज दास गुण, हरिष्य सोक ते न्यार ॥ दुष सुष गुण औ गुण अरत, जो लिये न माया मानि। परसराम ता दास कै, हरष सोक सामानि ॥ इति श्री स्वामीजी श्री परसराम देव जी कृत जोड़ा सम्पूर्ण ॥

विषय—१-श्री गोपाल राइ जी सत्य बन्ध को जोड़, २-दशावतार, ३-रघुनाथ चरित्र, ४-श्री कृष्ण चरित्र, ५-शृंगार, ६-सुदामा चरित्र, ७-निफल विभय, ८-भगत साषि कौ जोड़, ९-कर्म्म निन्दा, १०-देह देहल का जोड़, ११-द्रौपदी, १२-गज ग्राह, १३-प्रहलाद चरित्र, १४-गुरु कौ जोड़, १५-गुर सर कौ जोड़, १६-प्रेम सरण, १७-गुर अंकुश अमान को जोड़, १८-गुरु सनेह, १९-प्रेम निरवार, २०-गुरु विचार, २१-सांचागुरु, २२-सत्संगति, २३-सत्संग सुख, २४-अगाध, जाणिराइ, हरि व्यापक को जोड़, २६-हरि

स्वभाव, जीव स्वभाव, अंकुर स्वभाव, स्वभाव पति, २७–हरि कृपा, सनेह, भजन, स्मरण, संतोष, सेवा सुमरण, सेवा प्रीति, सांच अदिष्ट, तनमन, रामरतन, राम कृष्ण भेद, स्तुति भगति, साधु विरोध, भजन विश्वास, प्रबोध, रामभरोस, स्वान गयंद आदि के जोड़, २८–सुरति, क़ायसूर पीड़ा, वैद रोगी, भय, निर्भय, आय विचार, आय समृद्ध, होतव्यता करुणा गरीबी, विवेक, शब्द परख, भजन प्रकाश, हरि रंग, हृदय प्रकाश, परदेशी प्राण, शुद्ध मार्ग, प्राण अगोचर, सन्देस परदेशी को, परदेशी प्रीतम, ब्रह्म अग्नि आदि, समप्रीति, एकांगी-प्रीति, विरहीजन, भीतर विरह, प्रीति विचार, मिलन, प्रेम गति, प्रेम, आरती, नेम, अन्य धर्म, सोवर, हंस, ग्राम, पेच असाध्य, ब्रह्म बलहीन, संगति विमुख, भक्ति, स्मरण हीन, कुबुद्धि, अहम्, असझ, बंधन, निर्दयी, मनसा काम, पाप उपाय, निन्दा, गुण, कनक कामिनी, भामिनी, संखी, जमराजद्वार, कलपचर, उद्यान, विद्यार्थी, मिथ्या वकवाद, ज्ञान, हरिमाया, भावभक्ति, आलारासी, प्रभु आज्ञा, साधु निन्दा साधु असाधु, स्वारथ परमार्थ, कामी निष्कामी, क्रोध वंसी सुहाग, सांप छँछूदरी, अशुभ कर्म, मोह जगत, कर्म, मन मैल, मन कामना इत्यादि विषय वर्णन।

संख्या १६३ सी. राग सागर, रचयिता—परसराम, कागज—मूँजी, पत्र—७९, आकार—१२ × १० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५००, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीराम गोपालजी अग्रवाल, स्थान—लाला मोतीराम की धर्म्मशाला, जि०—मथुरा।

आदि—राग ललित—जो जन हरि सुमरण ब्रतधारी ॥ सो क्यों मरैं दास दुविध्या तै, जाकै राम महाबल भारी ॥ त्रिपनारी अहंकार आप वलि पति देपत सुत मान उतारी ॥ राष्यो जतन जाणि जग उपर दीसै धू अधिकारी ॥ नरसिंघ रूप धरयो हरि प्रगटे, हिरणाकुस मारयो उर मझारी ॥ हरि सुमिरत द्रोपती पति राषी प्रगटी प्रीति पुकारी ॥ रावण रंक कियो जिन छिन में, अनुग सहित सब सैनि संघारी ॥ परसुराम प्रभु थापि विभीषण, निर्भै लंक दिषारी ॥

अंत—राग केदारो—पोढिए सेज श्री गोपाल ॥ आपणें सुषि सकल सुप पति, परम रुचि नंदलाल ॥ पलन पलटत पलक लोचन कवँल दल सु विसाल ॥ निरषि सुन्दर राज मन्दिर प्रसन दीन दयाल ॥ सुर निधि करुणा सिंधु श्रीपति हरण हरि उर साल ॥ चरण सेवा करत परसादास भयो निहाल ॥ पोढिए नंद नंदन राइ ॥ सुष सेज सुन्दर स्याम प्रीतम, राधिका उर लाइ ॥ चोवा चंदन अंग लेपन, कुसुम सेज बणाइ ॥ परसुराम प्रभू घने आनंद, ब्रज जनन सुषदाइ ॥

विषय—राम कृष्ण तथा भक्तों के गुणानुवाद एवं संसार की निस्सारता और वैराग्य-प्रतिपादन विषयक पदों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—जहाँ तक मेरा ज्ञान है, प्रस्तुत ग्रंथ खोज में नितान्त नवीन है। इसमें संगृहीत पद प्रसाद गुण और लालित्य की दृष्टि से उच्चकोटि के हैं। लगभग सभी प्रकार की राग रागिनियाँ इसमें आ गई हैं। कवि का नाम परशुराम है जो प्रत्येक पद के

अन्त में आया है। इसके अतिरिक्त उसके विषय में और कोई बात ज्ञात नहीं हुई। ग्रंथ में न तो रचनाकाल और न लिपिकाल ही दिया गया है। फिर भी ग्रंथ दो सौ वर्ष से अधिक का ही प्रतीत होता है।

संख्या १६४ ए. भजनावली, रचयिता—पातीराम कवि, स्थान—सौंधी (आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—८६, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० टीकाराम शास्त्री, तह०—किरावली, डाकघर—अछनेरा, जि०—आगरा।

आदि—ॐ गनपतये नमः भजन लिखते ॥ अन्तर्ध्यान भए श्री स्वामी जी ॥ पाँडव गएहि बारे कों जब सुन सन दएजू ॥ टेक ॥ गादी मैं बैठे परिक्षत प्रताप वान ॥ पुत्र के समान सौ प्रजा कौ करै सनमान ॥ युद्ध में अतुल बल झेलत न कोई बानजी ॥ बैठत सभा में रास गान नित रहे सरंगी तमूरा बीन ॥ बाँसुरी बाजत रहे ॥ गन्धर्व गवैया गाइ गाइ ॥ धुनिकै हैत रहै सुन्दर राग नए ॥

अंत—मुनि छवि देखि भूप मुसकाने ॥ टेक ॥ दोउ कर जोरि दई परि कम्मा, अपने मन ब्रह्मा अनुमाने ॥ सुन्दर रूप कौन कवि वरनैं, निरखि अंग रति कंथ लजाने ॥ बार बार विनती नृप कीनी बोले वचन प्रेम रस साने ॥ तुम समान द्विज दगनि तिहारे, सुकृत समूह प्रगट मम जाने ॥ माँगे आप देहुँ मैं सोई, देह राज्य धन माल खजाने ॥ सेवक जानि लेहु चरणनिकौं, हुकुम करौ महाराज सयाने ॥ भोजन करो भुवन मेरे पै द्विज नायक जब हृदय थिराने ॥ पातीराम भये बस भूपति आतुर विप्र चरण लपिटाने ॥

विषय—१-राजा परीक्षित के अन्तिम समय सम्बंधी भजन, २-द्रोण चरित्र, ३-हनुमान चरित्र, ४-व्रज लीला के भजन, ५-चक्रव्यूह की लीला, ६-गीता के भजन, ७-उद्धव वृज गमन लीला, ८-सुलोचन के भजन, ९-रामचन्द्र बनवास, १०-धनुष-यज्ञ लीला।

संख्या १६४ बी. गुढ़ लीला, रचयिता—पं० पातीराम, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर भूरे सिंह जी, स्थान—नेरा डा०—भारौल, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भजन गूढ़ लीला लिष्यते ॥ सामनी ॥ सोचो जी कुछ त्रिया कौनसी मन में करौ जी विचार जाकूं ॥ शिव भटकत फिरें ॥ एजी खोलि लेउ उह नारि जाय वेदन में गामें, भामिनि वहौत मलूक जाय अति शील वतावें ॥ हिरदेतें लिपटाय ॥ भामिनि राखै संग में जो नर सुरपुर कूँ ले जाय ॥ अवकै भेद बताऊं त्रिय कौ जाय खोजत डोलै रे देवता ॥ भजन ॥ ऐसी एक नारि वतामें। लच्छिन सुनों सुघर भामिनी के ॥ विगरि अँगुरियन विछुआ पहरें विनु मुखनि पायल बाजें विगरी परम बुहलात चलावै अपनी सौतिन कें काजें ॥ चाल ॥ भामिनी पीया की प्यारी। खिलै जनु चंदा उजियारी ॥ लोक तीनिनि की है माता ॥ पदारथ चारिन को दाता ॥ सामरथ बढ़ा रहे

जाकूं ॥ अजी भटकें शेश गनेश सदां शिव खोजत हैं वाकूं ॥ सार सब वेदन कौ जानों ॥ अजी ऐसी भामिनि देखि पिया कौ अति मम लहरानौ ॥ विनु हाथन ताल बजावै ॥ वानी विन हरि गुन गावै ॥

अंत—नौग्रह वासु करैं कहु कित में ॥ कौन कौन सी दिसा वसत वे कौन २ से रूप धरे ॥ कौन कोन सी दिसा वसत वे कौन २ से रूप धरे ॥ कौन २ सी रासिन पैवे कैसें जोर करैं ॥ चाल ॥ ग्रहनि के वतलाओ तारे ॥ कहौ कैसें २ मारे ॥ कौन कौहै पूंछा तारौ ॥ कौन कौहै चुटिया वारौ ॥ तेज कुंसे में अधिकाई ॥ अजी किन कौ मै जग मान देखि जाय दुनियां दहलाई कहौ विनिके वाहन कैसे ॥ अजी विन पैहै असवार फिरे वे ठौर २ जैसे ॥ इतनों ही भेद वताऔ ॥ जो तुम गुनवान कहाऔ ॥ जो मरम तुमनि नहिं पावै ॥ तौ मति वद वादल गावै ॥ जिहि पाती राम वनायौ ॥ हम तुमरे ही आगे गायौ ॥ रसिया है तौ भेद कहौ नहीं करिजा आपु किनारौ ॥ सुनि० ॥ ८ ॥ ३ ॥ इति श्री ॥

विषय—कुछ गूढ़ विषयों पर कविता (गीतों में) ।

संख्या १६५ ए. हरिदासजी वाणी की टीका, रचयिता—पीताम्बरदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामलाल जी, स्थान—गिड़ोह, डा०—कोसी कलां, मथुरा ।

आदि—टीका-श्री कुंज विहारी जयति । नमो नमो जय रसिक पद, मम हिय करहुँ निवास । दुर्गम पद सुलभ करौ, श्री स्वामी हरिदास ॥ श्री हरिदासी करि आराधि । श्री विपुल विहारिन दास साधि । श्री सरस नर हरि के पद वन्द । श्री रसिक कृपा सूंलहि रस कन्द ।

अंत—रागनट-डोल सघन वन तें जुग आये । तन में तन मन में मन विलसत, घन दामिनि उपमा छवि छाये । प्रीतम नित वरषा रति चाहत, मोर चातकी पिक रट लाये । श्रीहरि दासिनि निरखित उपमा, कुंज बिहारी अपने पाये । इति श्री अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास जू के पदन कों अर्थ संक्षेप मात लिखितं पीताम्बर दासेन ।

विषय—हरिदासजी का आध्यात्मिक वाणी की पद्यात्मक टीका ।

टिप्पणी—यह वही पीताम्बर मालूम होते हैं जो हरिदास के शिष्य थे ।

संख्या १६५ बी. रसपद, रचयिता—पीताम्बरदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हरिश्चन्द्र पटवारी, स्थान, डा०—कोसी, जि०—मथुरा ।

आदि—राग विभास-भोर भयौ चलि काहे अचेत , तेरी जीवनि तोही सों, लागी सुनि किन होहु सचेत । ललितादिक आवनि निसुख, पावनि गावनि को कर चेत । पीताम्बर पट झटक लटिक, उठि सैंन सुख नित बहेत ।

अंत—नीरस श्रवन सुनत नहिं आवै। रसिकन केहि परस उपजावै। रसिक कृपापद जुग कमल, मूरति जुगल किशोर। पीताम्बर के प्रान सुख, रसिकराय सिर मौर।

विषय—राधाकृष्ण की भक्ति।

संख्या १६६ ए. बारहखड़ी, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—९ × ५½ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९३७, प्राप्तिस्थान—पं० दौलतराम जी टेले, स्थान—कुतकपुर, डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ अथ बारहखड़ी ॥ क का कृष्ण बाहुरे अवधि गई सब बीति। अब ऐसिन की ए सखी कहहु कहा परतीति ॥ ख खा खबरि लई नहीं, बृज वनितन की स्याम। कब देखौं इन दृगन तैं, वह मूरति अभिराम ॥ ग गा गिरि कौं थापिकैं, मघवा जग्य नसाय। कियौ सु भोजन वासु कौं, बृज वासी अपनाय ॥ घ घा घन घेराइ कै, मघवा चढ़ौ रिसाय। गिरधरि कर नख वाम पर, लीनौं बृजहि बचाय ॥ च चा चित जोंहं प्रभुहती, बृज तजि करहिं पयान। डारि दियौ गिरवर नहीं, किमि दुख सहते प्रान ॥

अंत—ज्ञ ज्ञा ज्ञान अमोघ दै, परि तोखी बृज वाम। करि प्रणाम नंद तात कहँ, विदा भये घन स्याम ॥ जो जन पढ़ि है मुदित मन, बारह खड़ी अनूप। लहहिं सुजन निर्वान पद, परें नहीं अघकूप ॥ रची सरल वारह खड़ी, प्रभू द्याल मति मंद। दीन जानि करि लीजियै, चरण सरण बृज चंद ॥ साध संत हरि भगत द्विज, कविन कहौ सिरनाय। भूल चूक मम दोख लखि, छमियों अघ समुदाय ॥ १९३७ में, पूरण करी बनाय ॥ इति श्री वारह खड़ी प्रभू द्याल कृत सम्पूरणम् ॥ शुभम् ॥

विषय—ब्रज बनिताओं की विरह दशा का वर्णन।

संख्या १६६ बी. बारहमासी, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० ब्रजकिशोरजी शास्त्री, स्थान व डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ प्रभुदयाल कृत बारहमासी लि० ॥ भादौं में अति घन छायौ। आयो नहीं ब्रज चंद ॥ कुविजा बैरिन हुइ रही। डारि प्रेम को फंद ॥ डारि प्रेम को फंद कंथ अजहू नहिं आयो ॥ कठिन हिये को श्याम जाय कुविजा ग्रह छायौ ॥ गरजि घुमड़ि घन घोर, आइकैं वरसै मेहा। प्रभूदास की आस स्याम ने तजि दयौ नेहा ॥ क्वार मास लागे सखी, तुम धन लेवहु नीर। दरस देहिं पिय साँवरे, सीतल होइ सरीर ॥ सीतल होइ सरीर सुनौं तुम कुँअर कन्हाई। विनु देखे नहिं चैन आय तुम होहु सहाई ॥ अहो पिया ब्रज चंद मैन तन आय सतायौ ॥ प्रभूदास करि महरि स्याम जलदी घर आयौ ॥

अंत—बैसाष मास लागो सषी, कीजै कछू उपाइ। सोवत में सपना भयौ, आनंद उरन समाय ॥ आनंद उरन समायू ख्वाब देखे नँद लाला। कछु जिय बाढ़ी आस खुसी भई ब्रजबाला ॥ सोवत खुलि गई आँखि हुआँ कुछ कोई न कोई। प्रभूदास अंदेस लिखी प्रभु

हुइहै सोई ॥ जेठ मास लगो सषी, फरकै वाईं आखि । वीस विसेहरि आइहैं, अगिले पिछले पाख ॥ अगिले पिछले पाख वढ़ो जिय नयौ हुलास । आय मिले घनस्याम वीति गये बारह मास ॥ करि सोरह सिंगार लाड़ली सिंदुर लगायौ । प्रभूदास करि महरि स्याम ताईं छिन आयौ ॥ इति ॥ दोहा ॥ जो गावै सीखै सुनें, कहते प्रभूदास । कृपा लाड़िले लाल की, सुरपुर ताकौ वास ॥

विषय—कृष्ण के वियोग में गोपियों की बारहमास की विरह दशा का वर्णन ।

संख्या १६६ सी. वारहमासी लावनी की, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—९ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दौलतरामजी मटेले, स्थान—कुतकपुर, डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ अथ वारह मासी लिष्यते ॥ लावनी की ॥ अजहूँ ना आये स्याम कहा जिय धारी । सखी निपट कठिन वेपीर भये वनवारी ॥ लागे असाढ़ तन छार विरह की झरसैं । सखी उमड़ि घुमड़ि घन घोर तड़ीक घन बरसै ॥ सुनि घोर मोर किल कोरतड़ित घन दरसैं । विनि नंदलाल वृजवाल ग्वाल सव तरसैं ॥ सखी दूंकि विरह तन टूक करत दुख भारी । अब निठुर कठिन वे पीर भये वनवारी ॥ घर घर मैं पड़हे डोल लगे सखी सामन । गावैं मलार किल कारपार गज गामिन । सजि सजि नव सप्त सिंगार सखी सब कामिनि । लै सब्ज भुजरियां हाथ चलीं पौहरावन ॥ गावैं करि करि अनुराग राग पिय प्यारी । अब निपट कठिन वे पीर भये बनवारी ॥

अंत—चैत दहत झख केतन कछू वनि आवै । दूजे लिखि जोग विजोग स्याम पठवावै ॥ सौतिन सँग रचि-रचि भोग आपु सुख पावै । हम सेली पेहरैं अंग भभूति रमावै ॥ अव जाइ मधुपुरी वनैं स्याम ब्रह्मचारी । अव निपट० ॥ वैसाख भाखि वृज ताल कहै कोई हरि सैं । चर्चा जाहर नहीं होइ छिपा कूवरि सैं ॥ विरहा वपु धरि वृज इन्द्र चढ़ौ आतुरसैं । निस वासर द्रग घन स्याम विन वरसैं । अव डूवत वृज किनि आइ करौ रखवारी । सखि निपट कठिन० ॥११॥ लगे होन जेठ शुभ सगुन गोपिकन भ्यासी । प्रभु सूर्य्य ग्रहण कुरुखेत मिले सुख रासी ॥ नटवर वपुधारि गोपाल रहत व्रजवासी । भये तनक देवहित काज द्वारिका वासी ॥ विहरत वृज नित प्रभू दयाललाल गिरधारी । अव निपट कठिन वे पीर भये वनवारी ॥१२॥ इति वारह मासी प्रभूदयाल कृत ॥ सम्पूर्णम् ॥

विषय—व्रज वनिताओं की विरह दशा का वर्णन ।

संख्या १६६ डी. बारहमासी (पुरबी में), रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महिपाल सिंह जी, स्थान—करहरा, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—पिया बिनु कौनु बँधावै धीर । लईं सुधि ना भये वे पीर ॥ लगे आसाढ़ गाढ़ तन्के । परे चहुँओर सोर बन्के ॥ कौहकि रहे मुरिला वन वन्के । भये तन साल अब

लन्के। मदन वेधत विनि हरि तन तीर। लई सुधिना भये वे पीर ॥१॥ लगे सामन् रिमि झिम वर्सें। सघन घन दामिनी वर्सें॥ विना घन स्याम जिय तर्सें। चली सजि वाम घर वर्सें॥ भुजरियाँ लै कालिन्द्री तीर, लई सुधिना भये वे पीर ॥ २ ॥ भादौं विनि माधव अंग दही। विरह उर अंकुर पूरि रहे। कठिन दादुल पिक बोल सहे। सींचि नैनन से नीर बहे॥ झुकी वैरिनि अंधियारी वीर। लई सुधि ना भये वे पीर ॥ ३ ॥

अंत—चैत चिन्ता वढ़ी भारी। न बहुरौ फेरि बनवारी॥ भई रढ़ि रढ़ि कोयल कारी। गये दै प्रेम की तारी॥ तजीं ब्रज वनिता वे तकसीर। लई सुधिना भये वे पीर॥ लगे वैसाख जली छाती। पठाई जोग की पाती॥ ऊधौं हम प्रेम मद माती। फिरैं धरि जोग दिन राती॥ मिले ना नंद सुत वल वीर। लई ना सुध ना भये वे पीर॥ जेठ तन्मैं फुकै ज्वाला। विरह व्याकुल विरज वाला॥ निरखि ब्रज हाल गोपाला। मिले प्रभुलाल नंदलाला॥ करत नित लीला कुंज कुटीर। लई सुधि ना भये बे पीर॥ इति श्री वारहमासी पूरवी प्रभूद्याल कृत॥ सम्पूर्णम्॥१।

विषय—कृष्ण के वियोग में होनेवाली ब्रज वालाओं की हीनावस्था का वर्णन।

संख्या १६६ ई. बारहमासी पुरबी (२) भरतजी की, रचयिता—प्रभुदयाल (स्थान—सिरसागंज, मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महिपाल सिंह जी, स्थान—करहण, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी।

आदि—वारहमासी पुरबी भरथजी की॥ कहत मुहि राज कर मुनि धीर। जियौं मैंना विना रघुवीर। चैत चिन्ता बढ़ी मन्मैं। सवजि रही ज्वाल मोतिन् मैं॥ फिरैं सियराम वन वन्मैं। लियौ जस केकई जग मैं। भई नां बांझ क्यों बे पीर। जियौं मैंना विना रघुबीर॥१॥ लगे वैशाख सुनौं भाई। दिवस निसि कल्प सम जाई। पठन वन राम से भाई। दियौ मोहि राम समुझाई॥ सराहन जोगि मेरी तकदीर। जियौं मैं ना बिना रघुवीर॥२॥

अंत—माह भारथ पहुचै जाई। चित्रकूटहि लखि विकलाई॥ देखि तापस वपु रघुराई। भरथ चरण परे धाई॥ भरथ चरणन परे धाई। मिले प्रभु द्रग भरि पुलक सरीर। जियौं मै ना॥११॥ फागुन प्रभु भरथहि समुझाई। अवधि कर राज करौ जाई॥ मिलिहि हम तुमहि तात आई। चतुर्दस वरख वादि भाई॥ पालि पितु मात वचन अकसीर। जियौं मैं ना विन रघुवीर॥१२॥ लौंद विच भरथ विदा कीने। अवधि आये कृसत हीनैं॥ भनत प्रभू द्याल भरथ जीनैं। कठिन तव साधि विरत लीनैं॥ छाइ नंदी पुर परन कुटीर। जियौं मैं ना विना रघुवीर॥ कहत मोहि राज करन मुनिधीर॥ १३॥ इति वारहमासी पूर्वी भरथजी की॥

विषय—भरतजी की राम के वियोग में होने वाली दशा का वर्णन।

संख्या १६६ यफ. दंडक संग्रह, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८×५ इंच, पत्र—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रुस्तम सिंह जी, स्थान—दिखतौली, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ दंडक ॥ आनन पर चन्द्र वारि वारौं कीर नासिकापैं, माखनि के गोला जुग वारौं लै कपोलनि पर । नैननि पै षंजन मृग मीन दीन वारौं धाई, भृगुटी पै धनुष दंत दाड़िम दुति डोलनि पर ॥ ग्रीव पै कपोत अधर विंवाकर कंज वारि, चक्र वाक वारि दैंहु कुच उर अमोलनि पर । केहरि कटि जंघ कदलि वारौं प्रभुद्याल, आजु कोकिला कौं वारौं मृदुल राधे मुष बोलनि पर ॥ जैसे अनुराग मोहिं बाढ्यो द्रौपदी कौं देषि, जैसें गयो हित चित दीन दुषी गज पर । जैसें वन फँसौ विकल ग्वाल गाय वक्ष हेरि, कीन्ह्यों जब भारी कोप इन्द्रदेव ब्रज पर ॥ जैसें रति भक्तन पे दास प्रभूद्याल मोहि, जैसें दृग दृष्टि खुभी वृन्द्रा विपिन रज पर । जैसें प्रग भीषम निबाहन की पक्षि मोहि, तैसें अब ध्यान रहै पद पंकज पर ॥

अंत—संकर तनय अघ दाता गण राजा अहैं, सरण गहैं तें दाग रहैं ना कलेस के । धारैं ध्यान सारदा दिनेस सेस हित करि, चित तै न तारैं द्रगतारे अखिलेस के ॥ लषन तनय तन घालता की दृष्टि रही, गाय रहे यश नरनारी देस देस के । हरत सकल अघदेत अनधन यातें, रटत सकल जग चरण गणेस के । गई तीं अकेली जल हित सिर धरि घट, कीरति लड़ैती अति सरल चलन की । डगर चलत तिहि द्रगन षटकि गई, कृष्ण की हँसनि दुति अंजन दलन की ॥ लषण तनय कपि कहत सषन संग, लै रहे लहरि अँग कालिन्द्री थलन की । अंग अंग निरषि हरषि जिय ठगि रही, अलक झलक लखि नंद के ललन की ॥

विषय—श्रृंगार, भक्ति एवम् विनय सम्बंधी कुछ दंडकों का संग्रह ।

संख्या १६६ जी. होली गजल आदि, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज – देशी, पत्र—१६, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महिपाल सिंह जी, स्थान—करहरा, डा० सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—···॥ तिल्लना राग पीलू ॥ दीप तनन दानी उदित दिरि दिरिना दीम तन दिरि दिरिनादीन । द्रद्र द्रिंतान द्रद्रत दार दानी तारे दानी ॥ ताना दीम ताना दीम ॥ मम पप नी नी सा मगारे सा ती नीता नी नी ता गारे मगरे सगरेसा ॥ गावत सुजन प्रभूदयाल के रंगीले ख्याल हरिपद उर धरि मुदित मन ॥ राग पिलू तिताला ॥ रोकौ ना डगर हरि जान दै वगर मो सौं करत झगर नित उठि कैलगर झटकट पटमट खट अटकत नितवंसीवट थट मटकत कर गहिकर ॥ दपटि झपटि लिपटत अग महि लट छांड़ौ ना गगरि अब करौ ना गहर ॥ मदन गुपाल प्रभूद्याल वृज वाल हेरि हंसि हट करि नित करत गदर ॥

अंत—दादरा ॥ राग गौरी में ॥ निरखि सखि स्याम की सलौनी छवि चलि कैं । मोर मुकुट सिर अद्भुत राजत औरु घुंघुरारी अलकैं ॥ मुक्तमाल वन माल हिये पर थिरकि थिरकि उर छलकैं । स्यामल तन पट पीत रहै लसि कानन कुंडिल झलकैं ॥ अवलोकत प्रभु द्याल लाल छवि थथि दृग लगहिं न पलकैं । जिहि लखि विवस होत वृह्मादिक मुनी अबहूँ मन ललकैं ॥ निरखि सखी स्याम कौ ॥ ठुमरी भैरवी की महरि

तुम वरजौ न अपने कान हरि भये निपटनदान । वंसीवट मारग नित रोकै मागत जोवन दान ॥ महरितुम ॥ लेत छिड़ाई दूध दधि माखन करि करि नंद की आन ॥ महरि० ॥ भुजगहि अंचल पट झकझोरत नाहक झिगड़ौ ठान ॥ ग्वालवाल नंदलाल साथ लै हमहि करत हहिरान ॥ महरि० ॥ हुई निसंक नहिं संक करत हरि नित उठि गोरस हान। हा हा करि वहु विधि समझाये वे नहीं छाँड़त वान ॥ महरि० ॥ हैहा किम जल्लाद भूलि जइहै सिवरौ इठलान ॥ सुनहिं कंस प्रभूद्याल रहइ जब कितनी सेखी खान ॥ महरि तुम वरजौ व अपनैं कान ॥

विषय—राग रागिनी, होली, ठुमरी, गजल व दादरा आदि का संग्रह।

संख्या १६६ एच. ज्ञान दर्पण, रचयिता—प्रभूदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप्) ६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दौलतराम जी भटेले, स्थान—कुतकपुर, डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ अथ ज्ञान दर्पण कवित्त लिष्यते ॥ सवैया ॥ कलिकाल बिहाल किये न रहैं भव दंभ दुरंत किये पथ सारे। क्रोध मनोज अलान बड़े करि सम्मत मोहनैं जाल पसारे ॥ लोभइ देपि विचार उरे तहाँ ज्ञान विवेक सवै हियहारे। प्रभूद्याल कहाँ भजि कैं उवरै तुमही करतार निवाहन हारे। १। हरिनाम रटौ प्रेम अटौ अस औसर तान न आन पड़ैगौ। ग्रसिहै जिय काल आचानक आइ त्रदोख जजीरन सै जिकड़ैगौ ॥ वनिता सुत तात सवै परिवार विना प्रभु की इन ढाल अड़ैगौ। प्रभूद्याल कहैं कछुऔ न वनै जब काल वली दल साजि चढ़ैगौ ॥ २ ॥ काहे कौ सोच करौ उदवेग वड़े प्रभु है जन कौ रखवारौ। जिन ग्राह की त्रास निपात करी ततकाल गयंदहि आनि उवारौ ॥ मंजारिके तात वचे प्रभु द्याल अवाविच पावक दागुन पारौ। संकट नाथ हरैं दुखनाथ बिना रघुनाथ न और निहारौ ॥ ३ ॥

अंत—झूठी जहँ देह ग्रेह झूठौई सनेह नेह, झूठौई प्रपंच जग वीच लखि लीजिये। साँचौ रामनाम तजि काम आठ जाम भजौ विना हरि नाम काम झूठौई पतीजिये ॥ झूंठौ नात तात मात भ्रात प्रभूद्याल कहैं झूठ तन भंग कौ भरोस तज दीजिये। हाथ हू की नारी न्यारी छोड़ि भाजती हैं तापै देह नारी कौ भरोस कौन कीजिये ॥१८॥ मनभूले फिरे गनिका मुख जोहि रहे रमि चित्त कलाइन मैं। जिकड़े तन क्रोध मनोज अड़े मुखवात कढ़े न रसाइन मैं ॥ प्रभूद्याल कहै भ्रग है तन चा मनिका मन काम सरै चतुराइन मैं। हरिनाम अमी पिउ मोद मुदाम अराम है। राम के पाइन में ॥ १९ ॥ न मिटै भव संकट दुर्ग दुरंत ग्रसे अघ-पुंज पजाइन मैं। भैखज नाम बिना हरि के न मिटै तन रोग दवाइन मैं ॥ प्रभूदयाल कहै त्रय ताप मिटै सो कसौ रसना प्रभुनाइन मैं। हरिनाम अमी पिउ मोद मोदाम अराम है राम के पाइन मैं ॥ २० ॥ इति ज्ञान दर्पण कवित्त ॥ संपूर्णम् ॥

विषय—भक्ति ज्ञान और उपदेश संबंधी कवित्त सवैयों का संग्रह।

संख्या १६६ आई. पावस (१), रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रुस्तम सिंह जी मुनीम, स्थान—दिखतौली, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ पावस ॥ आई कारी कारी घटा छूटि रही विज्जु छटा, दादुर पिक मोरनि नै वजू कूक डारी री। सूनी सेज मेरी मेघ देत गर्जि फेरी झुकी, चहुँदिसि अँधेरी सुरति मोहन विसारी री॥ पिया पिया पपिया पुकार करै माँझी राति, जुगुनू चिनगारी अनल छाँड़ि देह जारी री। कैसें प्रभूद्याल मैं जियौंगी हाय कंथ विना, झींगुर झिंकारी अंग लागत कटारी री॥ सवैया॥ दादुर मोर चकोर सुनौ पिक ध्वाई तुम्हैं अव राम सिया की। नैंक दवायें रहौ रसना गति हेरि इतै विरहीनि जिया की॥ स्याम विदेस छये प्रभुद्याल तजी सुधि गोकुल गांम ठिया की। क्यों खग मोहि सतावौ अरे तुम बोली न बोलौ पपैया पिया की॥

अंत—कारे कारे भारे भारे दर्सत गिरि कज्जल से, दसहू दिसि गर्जि गर्जि देन लगे फेरी री। चपला की चमक इतै सीर परे दादुर के, चातक पिक मोहन की कूक है करेरी री॥ सरिता सर खादर परि पूरित भए हैं, नीर कहै प्रभूद्याल दुक्ख प्रजा के हरे री। कीनी है असेस कृपा आज सक्रदेव जू नैं, वरसत घन कोपि कै असाढ़ छटि उजेरी री॥ पूरी आस कीनी आजु छिन में रमा के नाथ, दीन्ह्यौं सुष जीवन को करी नाहिं देरी री। मेघनि कौ आयसु दै पठ्यौ महि मंडल में, सरासेत दीन्ह्यौं करि दीन दुषित हेरी री॥ गर्जि गर्जि कोपि कोपि भारी प्रण रोपि रोपि, छोड़त प्रभूद्याल तीर दसहू दिसि घेरी री। पल्क दरियाई नाम जाहीतें कहावौ नाथ, वरसि रही प्रलय सी असाढ़ छटि उजेरी री॥ कैसै कैं धारौं धीर एरी वीर पावस मैं, दादुर पिक मोर ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

विषय—वर्षा वर्णन।

संख्या १६६ जे. पावस (२), रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान–सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र - ४, आकार – ७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) — १४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० सिवारामजी शर्मा, स्थान—करहरा, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी।

आदि—पावस॥ श्री॥ कवित्त॥ सवैया॥ छाइ कैं स्याम विदेश रहे मुखा सुखा करैं पावस पाइकैं। पाइकैं कंथ विहूनी मनो भव सैंन समेत चढ़ौ व्रज धाइकैं॥ धाइकैं आवत वैरी पपीह रटै प्रभुद्याल पिया गुण आइकैं। आइकैं मोहि मिलौ नहिं मोहन मेरे अटा पै घटा रही छाइकैं॥१॥ छाइकैं आवत हैं जुगुनू उड़ि देत हैं पावक सी चितल्याइकैं। ल्याइकैं पत्र धरौं उन उद्धव जोगिनि होउ भबूति रमाइकैं॥ माइकैं को प्रभूद्याल हितू दुख जाइ कहौ अपनौं पति आइकैं। आइकैं मोहि मिलौ नहिं मौहनु मेरे अटापै घटा रही छाइकैं॥२॥

अंत—आई बैरिनि कारी घटा पिक दादुर वोलि रहे मुख वावैं। गर्जत मेघ दमंकति दामिनि सौति परौ प्रिउ कौं भुरवावैं॥ प्रभूद्याल न धीरज होत हियैं द्रग नीर प्रवाह रुकैन

रुकायैं । पावस मैं धनि वेधन है जिनके पति सोवत कंठ लगायैं ॥१४॥ सारस हंस चकोर हैं वन मोर चहूं दिसि सोर मचायैं। चातक सब्द पिया मुखगाइ वियोगीनिके जियकौं लल-चायैं ॥ क्यों वचिहैं कहौ प्राण भटू सो विना प्रभूद्याल पिया घर आयैं | पावस मैं धनि वेधन हैं जिनके पति सोवत कंठ लगायैं ||१५॥

विषय—पावस का वर्णन ।

संख्या १६६ के. पोथी मनोरंजन की शिक्षा कौमुदी (ज्ञान सतसई), रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान-सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—९ × ५३⁄४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दौलतरामजी मटैले, स्थान-—कुतबपुर, डा०—मदनपुर, जि० —मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशजी सहाय || पोथी मनोरंजनी शिक्षा कौमुदी ज्ञान सतसई प्रभूदयाल कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ एक रदन गज वदन तन, राजत लाल सिंदूर । विघन हरण मंगल करण, कृपा करहिं भरिपूर ॥ १ ॥ लसत भाल ससि गंग सिर, उमा वाम अर-धंग | मुंड माल गल सोभिजें, भूखण सजत भुजंग । २ || प्रण पौं पद रज धारि सिर, उमा सहित बृख केंत | करहु अनुग्रह जानिजन, मदन दहन करि हेत ॥३॥ वंदौं कमला पति चरण रज, खुद मन तज ताप । अधम उधारण नाम प्रभु, जिनकौ प्रघटत आप || ४ || आमिष भोगी अधम खग, तारे राम सुजान । सो कृपाल करि लीजिए, चरण सरण नमवान ॥ ५ ॥ टारहु विखम विखाद तन, करहु सो तम कर नास । सैल सुता सुत कीजियै, दिन दिन वुद्धि प्रकास ॥ ६ ॥

अंत—रा कहते राचे हृदय, ज्ञान विराग विवेक | म के कहत मुख मोरिं कर, भजे काम तजि टेक || क्रीट मुकुट सिर राजही, उर मौतिन की माल | स्याम वरण छवि हृदय धरि, भजिये दशरथ लाल ॥ ज्ञान सतसई सरस सुभ, रची सुखद संसार । सज्जन जन पढि हैं मुदित, छमि मम दोष अपार ॥ ज्ञान सतसई मोदमन, पढ़ इ जो चित्त द्रढ़ाय । भव दुर्घट वंकट विकट, ता विच नाहिं ठगाय ॥ हाथ जोरि प्रणवहुँ सवहि, कवि पंडित समुदाय । प्रभुद्याल की भूल छमि, लीजै सुद्ध बनाय ॥ मारग सिर सुदि पंचमी, चंद्रवार सुभ ठीक । करी समापति सतसई, ललित चित्त रमनीक ॥ इति श्री ज्ञान सतसई प्रभू-दयाल कृत ॥ समाप्तम् शुभं ||

विषय—ज्ञानोपदेश एवम् भक्ति संबंधी दोहों का संग्रह ।

संख्या १६६ एल. प्रभुदयाल के कवित्त, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान-सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१३७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८८, खंडित, रूप-प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर महिपाल सिंह जी, स्थान—करहरा, डाकघर—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—कवित्त ॥ वन खंडी महादेव को ॥ सिव है अखंडी सँग सोहति है चंडी जिन, देवम हित षंडि दलि डारे घमंडी हैं। गुण निधि गंभीर वीर महावीर राजै जिन, लँकंद दहि

दनुज उर मारि दई डुन्डी है ।। निकट ही विहारी श्री सहित छवि धारी लखि, लखि भ्रजत भ्रम भारी प्रभुद्याल कलुष खंडी है । गंज के निकट सिव रमत धरि विकट, वपुदेवन के देव महदेव बन खंडी है ।। कवित्त मल्होआ महादेव कौ ॥ जनके अघ-ओघ निवारण के तिपुरा सुर गर्व हरऊ आके । वाम उमा अर्धंग लियैं सिव भक्तन के तमतऊ आके ॥ गल मुंडन माल विआल लसैं तन अंग अनंग नसऊ आके । जग तारण कारण सारण के प्रभूद्याल महेस मलहूआके ।।

अंत—धनुहूँ धधकाइ गयो मन में भ्रकुटी लखि वक्र महा चपलाई । द्रग देखि दुरे मृग कानन मैं अरु मीन रही लज मांझ छिपाई ॥ प्रभुद्याल लखी दुति कामिनि की तजि संक निसंकहि दीठि मिलाई । उन ऐसी दई द्रगकी मुरकैं जनु चोर चये दर चोट चलाई ॥३॥ कटिकी कृसता लखि केहरि हू वनजाइ छिपे औ दई्न दिखाई । प्रभुद्याल कहैं सकुचें मनमें चकई चकवा कुच देखि गुलाई ।। ललके ललचे द्रग रूप छिपे न रहे भय सन्मुख आँखि उठाई । उन ऐसी दई द्रग की मुरकैं जनु चोर चयेपर चोट चलाई ॥४॥ चँद्र विना ज्यों चकोर दुखी विन सूरज अम्बुज जों दुख पावै । स्वाँति विना जौं पपीहा दुखी भांमरि दै करि प्रीति वढ़ावै । मीन दुखी इक वारि विना प्रभूद्याल विना जल प्राण गमावै । सोगति आजु भई हमकौं जवलौं निजहात कौ पत्र न आवै ॥ इति श्री प्रभुदयाल के कवित्त ॥ समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—ज्ञानोपदेश, भक्ति, मान, स्तुति, देव, राम, विरह, पावस, रसिक आदि विषयों पर कहे गये कवित्तों का संग्रह ।

संख्या १६६ यम. प्रभुदयाल के पद, रचयिता—प्रभुदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महिपाल सिंह जी, स्थान—करहरा, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—।। पद लिष्यते ॥ भजि सीतावर राजिव लोचन सोच विमोचन हितकारी । क्रीट मुकुट सिर······ति रुति राजत भ्राजत तिलक खौरि निआरी ॥ गज मुक्तन के हार हिये पर कानन कुंडिल अति दुतिकारी । स्याम अंग पर लसत पीत पट मनहु स्याम घन तड़ित उजारी ॥ कनक सिंघासन सिय युत राजत कर सर धनु छत्रु यमट हारी । भरत सत्रुहन विजन झकोरत लखन चौंर ढोरत कर धारी ।। चापत पद पंकज रघुवर के अंजनी सुत हनुमत बलकारी । यह छवि धरि प्रभु रमत अवधपुर मृदु मूरति द्रग हरति न टारी ॥ दनुज निपात सनात किये स्वर संतन की प्रभु विपति निवारी । कलुख ग्रसत प्रभूद्याल अधम पर द्रवहु नाथ लखि दीन दुखारी ॥ भजि सीतावर राजिव लोचन सोच विमोंचन जन हितकारी ।।

अंत—जदुवर रुकिमिणी लै हसि धाये । संख ध्वनि मन मुदित करत प्रभु चौंकि सुभट घबड़ाये ॥ सकुन सहित शिशुपाल सवण सुनि लटि उठि वीर पराये ।। रुकुन प्रतिज्ञा ठानि क्रोध करि पदेउ सुरथ भहिराये ॥ दपटि झपटि कटि गहि जदुनंदन वांधि रथहि

अटकाये । धाये सूर अमित वल करि करि सो वलदेव नसाये ॥ जुरा सिंधु शिशुपाल हरि हिय लज्जित हुइ करि आये । भगिनि दियौ छुड़वाय अनुज कौं वहु विधि हा हा खाये ॥ कीन कूच द्वारावति कौं, हरि हरखि निसान वजाये । भये सुखी सब निरखि जुगल छवि आनंद उर न समाये ।। पूछि विप्र सुभ लग्न घरी गुनि मनि ग्रहण करवाये । करहि आरती धाइ नारि नर कंचन थार सजाये ॥ विधु बदनी जुरि मंगल गावहिं सुनि कल कंठ लजाये ॥ रुकुमिणि कृष्ण विवाह भयौ इमि घर घर बजत वधाये ।। हरि प्रताप प्रभुदयाल भनत पद, हरखि हरखि गुण गाये । जदुवर रुक्मिणि लै हँसि धाये ।

विषय—भक्ति, द्रौपदी, राधा, चीर हरण लीला, तथा रुक्मिणी आदि पर रचे गये कुछ पदों का संग्रह ।

संख्या १६६ यन. प्रभुदयाल की फुटकल कविता, रचयिता—प्रभूदयाल, स्थान—सिरसागंज (मैनपुरी), कागज - देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीबलदेव पुस्तकालय, ग्राम व डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ सवैया ॥ कंचन रंग बन्यौ तिय अंग प्रभा मुख जोहि प्रभाकर लाजै । नासा सजे नथ रूप कौं नाथि मनौं डटि रोकि दियो रति राजै ॥ मोती वुलाक दियैं प्रभूद्याल कँडैल की सुन्दरता छवि छाजे । गोरे कपोल लसै तिलयौं ज्यों सरोज कली शशि बीच विराजै ।। सवैया ॥ प्यारी की बैंदी सम्हारै कवहूँ कवहूँ उरमाल वनाय दई है । साजै कवहूँ अलकैं पलकैं कवहूँ गल में भुज नाय लई है ॥ मोहन भाव निहारी त्रिया प्रभुद्याल कटाक्ष दिखाय गई है । परियंक तें आतुर ही उठिकैं मुख अंचल दै मुसिक्याय गई ॥ ॥ सवैया ॥ कबहूँ मग नयनी की बैनी गुहै कबहूँ मुख वीड़ी लगाय दई है । कवहूँ द्रग अंजन रेख खचै कवहूँ मँहदी कर लायदई है ॥ कबहूँ उर हार धरै छतियाँ पिय के मन की तिय पाय गई है । रिस के मिस सौं प्रभुद्याल कहै परिजंक कौ वाल विहाय गई है ॥

अंत—॥ दंडक ॥ सारी रैनि जागैं धरैं पावक कौं आगैं वचैं, शिशिर तैन भागैं चित्त चढ़ौं रहै चंग पै । असन बसन सोच वढ़ै निसि दिन यों ही, जात कढ़ै कैसे कहौ सहैं सीत भीत कृसत अंग पै ॥ थर्थरात सर्वं गात सावित नहिं कढ़ति बात, कढ़ै प्रभुद्याल मौहि भावै दिल तंग पै । दीन दुखी रंकन की फाटत है········देखि, सीत की सवारी कौ समीर के तुरंग पै ॥ दंडक ॥ आई देखि शिशिर की वहार मोद धारि, हदै धाये हैं विदेसी गेह प्यारी के प्यार में । तोसक रजाई पलंग गैंडुआ आसजाइ, गर्म गर्म असन पान करत संग थार में ॥ पोढ़े सुख मंदिर के अंदर प्रभुद्याल, कहैं दम्पति मिलि वाले पीमस्त मदन झार में । डाले गल काँह पड़े पेचना लगाइ दोऊ, केलि मौज पाइ रहे कुहिर की झुहार में ॥

विषय—नख शिख, षट ऋतु, भक्ति, वात्सल्य, प्रेम, आशीर्वाद, अभिशाप, स्तुति और नर काव्य (ठा० लायक सिंह लभौआ, ला० गुरुदयाल सिंह फर्रुखाबाद, महारानी विक्टोरिया, प्रिंस एडवर्ड, शाह दुर्गा प्रसाद, जसवंत नगर और ला० बाँके बिहारीलाल रईस इटावा आदि) के कुछ छन्दों का संग्रह एवम् कुछ गीत काव्य ।

संख्या १६७ ए. सबद कामण बनडा, रचयिता--प्रागदास, कागज—बाँसी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० तुलसीराम वैद्य, स्थान और डा०—माठ, जि०—मथुरा।

आदि—सबद कामण बनडा ॥ बावार मया बनड़ा कामण अेसी कीन्हा ॥ कामण करी याचित मैं धरीया ॥ अन्तर मैं लीषी लीन्हा राजि ॥ टेक ॥ कामण करी कै कामही मस्वा ॥ क्रोध ग्यान सुमारी ॥ ल्योला लाय लोभ कूमारी ॥ मोह मनी कुटारी राजी ॥

अंत—पीया धारी झीणी गैल, मन तौ मोटा, हो साहिब कैसे पहुँची हौ ॥ पीया को झीणो पंथ झीणो होई हो। साहिब सोई पहुँची है ॥ पीया कौन है चले देश, अविचल पुरुष हो साहिब ॥ कहै है कबीर घट माँही, प्रागदास हो साहीब षाना जाद है।

विषय—पुरुष और माया संबंधी रहस्यवाद।

संख्या १६७ बी. सरोधोज्ञान, रचयिता—प्रागदास, कागज—मूँजी, पत्र—५३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० तुलसीराम वैद्य, स्थान व डा०—माठ, जि०—मथुरा।

आदि—सत कबीर साहिब की दया। अथ सरोधो लिष्यते ॥ आदि पुरुस अवचल धनी, बन्दी छोड़ कबीर। ग्यान सरोदी दीजए, सति मति गहै गंभीर ॥ पाँच तंत गुन तीन कौ, ग्यान सरोधा मांहि। सुर ग्यानी कृषो जील्यो, घटही घटकै माँहि ॥ × × × सरब सिधि सुर में बसै, सब ग्यान को ग्यान। सब जोगन को जोग है, सब ध्यानन को ध्यान ॥ साहिब कबीर किरपा करी, दियो बुद्धि परगास। ग्यान सरोधो पाइया, प्रेम लग्यौ प्रागदास ॥

अंत—साहिब कबीर घट में कहे, मेरी कहा बिसाति। प्रागदास दम भरत हैं, मोपें करौ निजाति ॥ नाभि नासिका बीच में, पड़ा रहै तहै सूर। आठ पहैर रण करत है, प्रागदास भरपूर। साहिब कबीर किरपा करी, कह्यो सरोधो नाम। प्रागदास आधीन है, कोटि करै परनाम ॥ इति श्री सरोधो ग्यान सम्पूर्ण ॥

विषय—स्वरोदय का ज्ञान।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ खोज में कबीर स्वरोदय तथा ज्ञान स्वरोदय के नाम से पहिले भी विवरण में आ गया है। यह कबीर दास का ही बनाया बतलाया गया है, पर बात ऐसी नहीं है। इस प्रति से स्पष्टतया प्रकट हो गया है कि इसके रचयिता प्रागदास, कबीर साहिब के शिष्य हैं। "साहिब कबीर किरपा करी, दियो बुद्धि परगास। ग्यान स्वरोदय पाइयाँ, प्रेम लग्यो प्रागदास ॥

संख्या १६८. रसतरंगिनि, रचयिता—प्राणनाथ, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० श्री नारायण प्रसाद जी, स्थान—माड़री, डा० तिलियानी, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रसतरंगिनि लिख्यते ॥ अथ मंगलाचरन ॥श्लोक॥ श्री गुरुदेव नमस्तुभ्यं त्वं ध्यान मंगलं महत् । देहिमे निर्मलं प्रज्ञा, भगवद् गुणं ॥ १ ॥ श्रीधरं माधवं वंदे, त्वमेव शरणं प्रभो । प्रज्ञातुर मे स्वामिनभि जुष्यतु गुणं ॥ २ ॥ दोहा ॥ वंदौ श्री गुरु चरण जुग, धारणि राख निज शीस । श्री हरि यश वर्णन करौं, दै शुभ बुद्धि बुधीस ॥ १ ॥ × × × ॥ दंडक ॥ श्री मनि महंत अनिरुधजू विराजै जहाँ वंश श्री गोविन्द दास जूके कुल भूषने । महा साधु शीतल प्रसन्न मुख देखिये फूल्यो रहो वारिज विलोकि इष्ट पूषने ॥ भागवत गावै अति प्रेम सरसावै चित श्रोतनि रमावै हरै दोष दूषने ॥ भजन प्रकासै तऊ नारद से भासै लेत प्रेम भरी तान मीठी साचे सुर फूंकनै ॥ १३ ॥

अंत—कीनौ प्रेम भारौ मानि प्रान हतै प्यारौ सारौ गारौ तजि दीनौ लीनौ पनु मनु चाइकै । प्रापति की चाह राखि भाखि अनुकूल वैन नैन सैन हेरि अभिलाष लाषु भाइकैं ॥ ऐसो दया भाजन विलोकि पीठि दीजै ताहि सीजै न सुजसु मेरे मन मान सौ रिझायकैं । धकु ताकौ नेही अरु होइ भंग निति एस गयौ दयौ न विनोद दान प्रेम सरसायकैं ॥ ४८ ॥ अंतर निवासी हरि रुप जानि सेयौ भयौ है अनन्य भाव मन वच और पाइकैं । एकहू महूर्त न ध्यान विसरायौ आयौ प्रेम कौ आवेस वेस रुप गुन गाइकैं ॥ परसन दीनौ सठ ताकौ हठ कीनौ यह भेद जानि लीनौ प्रान थाकै अकुलाइकैं । धृकुताको नेही होइ मंगनि निरास गयौ दयौ न विनोद दान प्रेम सरसाइकैं ॥ ४९ ॥ इति श्री विप्रलंभ श्रृंगार पत्री कवित दोहावली समाप्तम् । संवत् सन् १०० अष्टादस १८ पांच अधिक और साठि १८६५ मार्ग शीर्ष तिथि षष्ट्या ६ वार सूर्य सुत साठि और नाम लेखक, लिखो द्विज सनाढ्य शुभ ग्राम । सूर सुतादक्षिण दिशा पार बटेश्वर ग्राम । जोजन डेढ़ सुजानियै नाम भाइरी वास । चारि वर्ण जहँ वसत दक्षिण दिशिमें वास । वृक्ष मनोहर द्वार पर वर है जाकौ, गौ ब्राह्मण कौ दास । वंश मध्य उत्तिम पुरुष नाभि कमल में धात । ता सुत नाम अंगिरा और मरीचि वषाम ॥ दस सुत लै बढ़ती भई मुनि वशिष्ट प्रशस्तै तिनके वंश में जनमत भये दयाराम द्विजराज ॥ ताके सुत के नाम की विदित ग्राम अनुग्राम ॥ छोटे लाल बषानिये दैवज्ञी भारती नाम । तासु तनय द्विज राज जू देव जीत यह नाम । तिनके द्वै भ्रात भये अति प्रसिद्धि संसार । पंडित कर यह सूर हैं ज्येष्ट भवानी प्रसाद । लघुभ्राता कौ नाम है ठाकुर दास द्विजदास ॥ भमानी प्रसादस्य तनय भागवतिदास वखानि । ते व्याहे डगरु पुरा ब्राह्मण भोलाराम तकै । तहाँ वास क्षत्रीनि कौ विजै सिंह है नाम । तासु प्रिया वड़गुजरी तिन दीन्हीं प्रति मोहि । अस्त व्यस्त मूसनि कटी सो मैं लिषी बनाय । सडवाय इकही वहाँ नाम भाद्राता संयोग है दई वृजलाल सिंह की नारि नाम प्रसिद्ध कन्है प्रसाद है भवानी प्रसाद के पुत्र । ठाकुर दास के पुत्र का नाम भगवत जानि जौ वाचैं कहवें सुनै सकल लोक जस होइ । आसिर्वाद पार रामराम दंडवत नमस्कार सबको यथा योग्य जी ॥

विषय—१-मंगलाचरण, आदि कारण, ग्रंथ निदान, विरहिन दान । नवरस नाम, विप्रलंभ श्रृङ्गार तथा उसके भेद एवम् हरि मूर्ति का वर्णन, [प्रथम अंक, पृ० १–७] ।

२–मनमोहन चरित्र, विप्रलंभ शृंगार, पूर्वानुराग वर्णन, [द्वि० अं० ८–१४] । ३–करुणा मान वर्णन [तृ० अं० पृ० १४–२०] । ४–राधाप्रीति पालन, [च० अं० पृ० २०–२७] । ५–विप्रलंभ शृंगार की दश दशाओं आदि का वर्णन, [पं० अं० २७–३५] । ६–भक्ति प्रकार वर्णन, [ष० व स० अं० ३५–४१] । ७–हरि प्रीति वर्णन, [अष्टम अं० ४१-४२] । ८–विप्रलंभ शृंगार पंची दोहावली, [४२–५२] । ९–लेखक का परिचय [पृ० ५२] ।

टिप्पणी—प्रस्तुत पुस्तक के रचयिता ने ग्रंथ के आद्यंत में अपना नाम अंकित किया है । श्री गोविंददास नामक एक व्यक्ति के कुटुंब में कोई महंत अनिरुद्ध हुए जिनके आग्रह से ग्रंथकार ने यह ग्रंथ लिखा । दूसरे और चौथे अंक का अंत करते हुए ग्रंथकार ने अपना नाम "प्रानगनाथ" लिखा है । बस इसी से रचयिता का नाम स्थिर हो जाता है । ग्रंथ में यदा कदा केशव दासादि कुछ आचार्यों के प्रमाण भी उद्धृत किए गए हैं । इसमें शृंगार रस के वियोग भेद को प्रधानता दी गई है । संचारी आदि का भी विशेषरूप से वर्णन किया गया है । उदाहरणों के छंद भी अच्छे हैं ।

संख्या १६९. उत्पत्ति अगाध बोध, रचयिता प्रेम, कागज—मूँजी, पत्र—३६, आकार ४३/४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५२ वि० = १७९५ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री गणेशी लाल जी स्वर्णकार, स्थान व डा०—माट, मथुरा ।

आदि—श्री राम सत्यद्ये जी ॥ उतपत्य अगाध बोध लिष्यते ॥ गुरु गोविन्द कृपा उर धारौ ॥ ग्रन्थ अगाध बोध बिस्तारौ ॥ प्रथम निरालम्ब एक निरंजन ॥ ताके आश्रम माया अंजन ॥ माया में प्रतिबिम्यो एक ॥ प्रगटौ ईश्वरौ ग्यान विवेक ॥ तिनते उपज्यों वो ऊँकार ॥ ताकी त्रिगुन कियो विस्तार ॥

अंत—दोहा अति अथाह कछु थाह नहिं, थकित तहाँ मन-प्रान । प्रेम कहै कहियै कहा, समुझि समुझि हैरान ॥ अकथ अगोचर सकलते, प्रेम पहुँचै हाथ । प्रेम कहै अनभै अकह, एक निरंजन नाथ । इति श्री उत्पति अगाध बोध ग्रन्थ सम्पूरन समाप्त ॥ श्री राम जी सारी छै जी ॥ मिती सावन वदि १० सनीचर वार संवत् १८५२ मुकाम नरवर के किले पर ।

विषय—आत्मा, ब्रह्मज्ञान, वैराग्य, आदि विषयों का निर्गुण मत के सिद्धान्तों का निरूपण ।

संख्या १७० ए. पंची प्रकरन मनबोध, रचयिता—पृथ्वीलाल कायस्थ, स्थान—भिंड (भदावर), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१३ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महाराज महेन्द्र मान सिंह जी, महाराजा भदावर, स्थान व डा०—नौगवाँ, जि० – आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पंची करण मन बोध ॥ दोहा ॥ श्रीगुरु दीन दयाल प्रभु, निगम कहत सुख दैन । जिनके कृपा कटाक्ष ते, मिलहि परमपद अैन ॥ १ ॥

श्रीगुरु पूरन ब्रह्म हैं, श्रीगुरु अलख अनूप। श्रीगुरु सहजा नंद हैं, श्रीगुरु प्रभूअन भूप ॥२॥ श्रीगुरु की महिमा अगम, सारद सकै न गाइ। हरिहर अजगुरु के चरण, चरचत चित लगाइ ॥३॥ श्रीगुरु चरन प्रताप सौं, मिलत हरी हर आइ। श्रीगुरु चरन प्रताप सौं, पूरन प्रभू ह्वै जाइ ॥ ४ ॥ श्रीगुरु की महिमा अघट, प्रगट प्रत्यक्ष बनाइ। सारद सेस महेस अज, श्रुति हू सकत न गाइ ॥५॥ सुदिन महूरत सुभघरी, धनि धरनि वह ठौर। जिहि दिन प्रगटे परम गुरु, पारासर सिर मौर ॥६॥ कछु सोवत कछु जगत में, आये परम दयाल ॥ माया पट झट कौहरखि, निरखत भयौ निहाल ॥७॥ हरखि निरखि चरनन पऱ्यो, परखे परम दयाल। पृथ्वी आया आप लखि, वोले बचन भुआल ॥ ८ ॥

अंत—अष्टांग योग ॥ नेती जोती वस्ती करिये। भाटी पुनि कुंजल क्रीअ धरियें ॥ ध्यान धारना वहुरि समाध। अष्ट अंगन न साधू साध ॥७१॥ ॥ सबद ॥ सवदगुरु ॥ सुरति चेला ॥ अगम तीरथ ॥ त्रकुटी मेला ॥ अजपा जाप ॥ निरालंब गायत्री ॥ सूश्रम वेद ॥ दसधा भक्ति ॥ काया मन्दिर ॥ आत्माराम देवता ॥ खेचरी ॥ भूचरी ॥ चाचरी ॥ अगोचरी ॥ उनमनी ॥ पंच मुद्राया ॥ साधंनेसाध ॥ राजा ॥ दीदार दरसन ॥ मानसी सेवा ॥ तपका चंदन ॥ चरचिल देवा ॥ फकर फकीर। आसन का पूरा ॥ सवद का सूरा ॥ ग्यान का गाढ़ा ॥ सो जोगी सुंन्य महल में ॥ ठाढ़ा ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ ग्यान गाय इहि के पढ़े होति सकल संसार। सत गुरु चरन प्रताप सों आतम करहु विचार ॥७३॥ श्रीगुरु पारस परम कीनी कृपा अपार। पृथ्वी कों दरसन दये सहजानंद उदार ॥७४॥ ग्यान तत्त्व आलम दयों श्रीगुरु परम दयाल। पृथ्वी तन मय चरन चित, राखत अपनों भाल ॥ ७५ ॥ इति श्री सिद्धांतसार पंची प्रकरन मनबोध श्रीगुरु पारासर चरन प्रसादेन प्रथीलाल विरंचिते तृतीयो अध्याइ ॥ ३ ॥ संपूरन ॥ श्रीगुरु प्रसनं मन बोध समाप्त शुभं भवत ॥ मिती वैसाख सुदि ॥१०॥ रबीवार ॥ संवतु ॥१९१४॥ मुकाम नोंगाऐं ॥ पुस्तक ॥ मनबोध ॥ समाप्त ॥

विषय—मंगलाचरण, गुरु महात्म्य, गुरु उपदेश, आत्मस्वरूप, सोहं शब्द महत्त्व, निराकार, (१) ब्रह्म की समीक्षा, [प्रथम अध्याय पृ० १–८]। (२) शरीर का निर्णय, विराट रूप का निर्णय, तुरीया अवस्था, तत्त्व निर्णय, [द्वि० अ० ८–१४]। (३) ज्ञान संवाद, ओंकार निर्णय, साधू माह प्रश्न संवाद तथा अष्टाङ्ग योग वर्णन, [१४–१८]।

संख्या १७० बी. वंश विख्यात, रचयिता—पृथ्वीलाल कायस्थ, स्थान-भिंड (भदावर), कागज—देशी, पत्र—१७२, आकार—११½ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६७६, आदि से खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९१७, लिपिकाल—सं० १९१७, प्राप्तिस्थान—श्रीमान् म० महेन्द्र मान सिंह जू देव, भदावर नरेश, स्थान व डा० — नौगवाँ, जि०—आगरा।

आदि—[आदि के २४ पृष्ठ लुप्त, २५ वें पृष्ठ से उद्धृत] जने दलनि जाहि तुरत सथोर हैं। भारे भारे गढ़न गिरावें एक पल ही में खंडि डारे षलनि खदेरि घेरि मारे हैं ॥ प्रथीलाल सुकवि धरें न धीर अरि गन पुर पुर पौरि पौरि दौरि दौरि रौर पारे हैं। जहाँगीर साहि सों अमर सींघ राजा कहें विर सिंघ देव भुजा पूजन विचारे हैं ॥ ३५९ ॥ अमेरि वारे

राजामान कछवाए का जवाब ॥ दंडक ॥ कच्छ कुल कलस नरेस मान सिंघ बडोंगढ़ अमिरि को मुकुट फेरि बोलो है। जहागीर साहि महा साहि छत्रधारी सुनि विर सिंघ बुंदेला देव मोल में अमोलों हैं ॥ वारिध लौं धाओं काम करि लाओं तामैं पूजन भुजानि कों मरुके मंत्र षोलो हें। नीको लगों वजत वजाग्रें साज दारनि के खुलिवाअें खाल ख्याली आगें ढोल पोलों हें ।.३६०॥ बूंदी वारे रावगज सींघ हाड़ा को जवाव, सवैंआ ॥ पूजें भुजा विर सिंह नरेस की जानें कहा वढ़ौ कामकरौ है। आगें केर करि आए अवै हममान करों सो अगारु धरो है ॥ काविल सिंघ रवँधार लौं खेदिकें मारिकें मीर तहां विचरों हें। हाड़ा हँकारि कहें गज सिंघ जू पूँछअ अ जागहि कोऊ तरो हें ॥३६१॥ राजा जगत सिंघ चीतौरगढ़ वालेका जवाव ॥ दंडक ॥ आपुह दहिंद के विलंद के पातसाह बड़े सातहू चकतापर सताकों करत हैं। जहाँगीर साहि की सवारी की सुनत साहि चीन की विलायत लों धीर ना धरत हैं ॥ पृथ्वीलाल सुकवि तुम्हारे पुन्य पूरे पूर भूप तिहारे ठौंर ठौंर निडरत हें। जगत सिंघ रानाजी कहत साहि आलम सों विर सिंघ बुंदेला कहानै अें करत हें ॥ ३६२ ॥दोहा॥ यह जवाव कहि नृपति सत्र, विदा भयों दरवार। गयों साहि अपने महल, मन में करत विचार ॥ ३६३ ॥ प्रात होत भुज पूजि हौं, लखें सवै नर नाह। जो इतनी केरनी करें सो विर सिंघ सुवाह ॥ ३६४ ॥ राजा भदौरिया विक्रमाजीत ॥ दंडक ॥ हाड़ा कछबाए झाला जुरिकें राठौर सवें खीचीनि समेत जादों जूह चलि आए हैं। जगत सिंघ राना सौं सलाह सवै आइकरी करिए कहाजू हम जाही काज धाए हैं ॥ विक्रम भदौरिया कों दीजे अग्र आंगें वीर अपनी समेति सेंन साहि तें सवाए है। प्रथी कवि लाल कान भनक परी है आइ जरद जरी के सारि जामा वनवाए हैं ॥ ३६५ ॥

अंत—अथ श्री सरस्वती को वचन ॥ दोहा ॥ संवत् ऊनइसें वरष, सत्रह कहौं बषानि। जेठ वदी आठें सुभग रविवासर पहिचान ॥ १ ॥ दंडक ॥ बानी श्री भमानी भोर भाषति हैं टेरि टेरि हरषि महेस यही कहत सुनायकें। अंस अवतारी पुत्र पूरन जुधिष्ठिल सो ह्वे हें महि इंद्र इंद्र आनद बढ़ाय कें ॥ पृथ्वी कविलाल वीर विक्रम विसाल में न पारथ समान रहें छिति पर छाय कें। भूपति महेंद्र सिंघ जू कें नंद श्रें सों होइ जें सो भजराज भयौ राजा रघुराय कें ॥ × × × ॥ अथ ग्रंथ पूरन ॥ दोहा ॥ सुभ नछित्र उत्तिम घरी, ग्रषरवि चंद्र पुनीत। हुकुम पाइ महि इन्द्र को ··· ··· ··· ··· ··· ग्रंथ अजीत ॥ १७६ ॥ सिरी वास्तव कायस्थ कुल। अमर दास के वंस। दुज पद प्रथी वसत ··· ··· षन लालहि अंस ॥ १७७ ॥ वसत नगर ··· ··· काइथ कुल मति धीर। अष्टादस ··· ··· रान जिनि श्रवन सुने गंभ्भीर ॥ १७८ ॥ कहौं वंस विष्यात यह, नृप-कुल-मंडन सोइ। अष्टादसो पुरान कों, ताहि सुनें फल होइ ॥ १७९ ॥ कहौ वरनि यह वीर रस, नवरस भरों रसाल। अलंकार धुनि विंजना समझि करों मनि माल ॥ १८० ॥ संवत उनइससे वरष, सत्रह कहों वषानि। जेठ वदी दसमी सुभग ससि वासर पहिचान ॥१८१॥ तीर तर निजा निकट ही, नवगाओं सुषदान। कहों वंस विष्यात तहँ पृथ्वीलाल वषान ॥ १८२ ॥ करों अधिँ सम भान नृप भूषन वसन समेत। गज तुरंग धन ग्राम दें कीनो बहुरि सुहेत ॥ १ ॥ इति श्री मनि

महाराज धिराज राज भदावर को वंस विष्यात कवि प्रथीलाल विरचितायां षष्टमो अध्यांइ ॥ ६ ॥ संपुरनं सुभंभवत् ॥ जेठ वदि ११ भौमे सं० १९१७ ॥ मु० नोंगाअें ॥

विषय—(१) पृ० १ से २४ तक—लुप्त (प्रथम द्वि० अध्याय के ३५८ छं०)। (२) पृ० २५ से ५० तक-(द्वि० अ०) जहाँगीर का बुंदेला राजा वीरसिंह की भुजा पूजने का इरादा, राजाओं का बिगड़ना और राजा विक्रम सिंह भदौरिया को प्रमुख बनाकर युद्ध की तैयारी, जहाँगीर द्वारा भदौरिया का मनाया जाना तथा सम्मान, सं० १६६२ की वैसाख वदी ७ को उक्त राजा का देहावसान, इन्होंने ९ वर्ष ४ माह ५ दिन राज किया। विक्रम के पुत्र भोज का वर्णन। जन्म दि० फा० सु० ४, सं० १६२२ वि० मृ० का० ज्ये० सु० ५ सं० १६६४। भोज के पुत्र किसुन सिंह का वर्णन (जन्म भादों सु० ७ सं० १६४०, मृ० पू० व० ४ सं० १६६५) इनके पुत्र मंगद राय का वर्णन (गद्दी अटेर में मृ० १६६५) इनके बेटा कीर्ति सिंह का वर्णन (ज० १६५६, मृ० १६६७), इनके पुत्र वदन सिंह का वर्णन (ज० १६४६) इनकी कीर्ति का वर्णन, वटेश्वर के मेले, शिवजी के प्रकाश एवम् जमुना प्रवाह की गति बदलने का वर्णन। (३) राजवदन सिंह की मृ० १७०५ में, राजामहा सिंह (ज० १६६९) इनकी कीर्ति तथा युद्ध वर्णन पृ०, (५२ तक), पृ० ५३ से ७७ तक लुप्त, राजा गोपाल सिंह तथा लाला अनुरुद्ध सिंह का वर्णन (पृ० ९३ तक), तृतीय अध्याय। (४) गोहद के जात राव का वर्णन, अनुरुद्ध सिंह का वर्णन, नवादाबागादि का वर्णन, मंदिर आदि का वर्णन, चम्बिल की गढ़ का वर्णन, राजा राइ सिंह बेटा बहादुर सिंह का वर्णन, महाराजा हिम्मत सिंह पुत्र महाराज गोपाल सिंह के भाई लघु राजा अनुरधा सिंह के राजा राइ सिंह जी के बाद जैपुर से मदद लेकर आना और अटेर की गद्दी पर वैठना, महाराजा हिम्मत सिंह की धाक, वीरता और वैभव का वर्णन (सं० १८१२ में) स्वर्गारोहण, उनके समकालीन आलम गीर सानी का संक्षिप्त वर्णन (च० अ० पृ० १२० तक)। (५) हिम्मत सिंह के पुत्र वखत सिंह राजा का वर्णन। यह गोद आये, जवासे नगर के राय जय सिंह के पुत्र थे, जम्म० का १८०५, १८१२ में गद्दी नशीनी, राज नीति आदि का वर्णन, समकालीन शाह आलम का वर्णन, नादिर शाह व सिकंदर की चढ़ाई, १८४७ में मृत्यु, इनकी गोद प्रताप सिंह हुए, पराके सुजान सिंह के पुत्र थे इनकी कीर्ति आदि का वर्णन मृत्यु काल १८७७, (पृ० १३९ तक पाँचवाँ अध्याय)। (६) महाराज अनंत सिंह का वर्णन (१८११–१८९७) इनके वैभव, वीरता और विवाहादि का वर्णन। (गोंडा के विवाह का विस्तृत वर्णन। महाराज प्रताप सिंह का स्थापना तथा मन्दिर का वर्णन, महाराजा महेन्द्र सिंह जी का वर्णन (१८९७ में गद्दी नशीन)। विवाह का वर्णन, दान, महाराज अनेत सिंह जी की स्थापना के मंदिर का वर्णन, राज भदावर का हाल इनकी शाखा सूत्रादि का वर्णन, सरस्वती का वचन, सरस्वती का वचन ग्रंथ पूरण प्रभा। कवि परिचय और ग्रंथ निर्माणकाल (१३९-१७२) छठवाँ अध्याय।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के आदि के २४ पत्रे लुप्त हैं। बीच में भी ५३ से ७७ पृ० तक लुप्त हैं। अतः इसका ऐतिहासिक क्रम भंग हो गया है। राजाओं के ऐतिहासिक परिचय का

रोचकता के साथ सरस वर्णन किया गया है। प्रत्येक राजा का वर्णन करते हुए तत्कालीन सम सामयिक राजाओं एवं यवन सम्राटों का भी संक्षिप्त परिचय प्रासंगिक रूप से देकर भदावर राज्य का इतिवृत्त दिया है। इससे सारे भारत के इतिवृत्त पर प्रकाश पड़ता है। समय परिचय में एक भारी त्रुटि हो गई है। दूसरे अध्याय में महाराजा कीर्ति सिंह का जन्म सं० १६५६ वि० है। पुनः तीसरे अध्याय में उनके पुत्र वदन सिंह का जन्म १६४६ वि० माना है जो संभव नहीं। अनुसंधान से ज्ञात हुआ कि वदन सिंह कीर्ति सिंह के दत्तक पुत्र थे।

संख्या १७० सी. व्रत्ति रत्नाकर, रचयिता—पृथ्वीलाल, स्थान—भिंड (भदावर), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१३ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७३ वि०, लिपिकाल—सं० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमान् महाराज महेन्द्र मान सिंह जी, महाराज भदावर, नौगवाँ आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ व्रत्ति रत्नाकर प्रारंभ ॥ दोहा ॥ वक्र तुंड गिरिजा सुमन, रद्धि सिद्धि धन धाम। विघन हरन आनंद करन, पूरन पूरे काम ॥ १ ॥ सिव सनकादिक सारदा, नारद सहित सुरेस। चरन कमल हिय धारिकें, वरनत छंद विसेस ॥ २ ॥ ॥ संवत ॥ छंद हरि गीतिका। पंकजहि भगनी पति सु अरि के सीस सतगुन तों करों। वनिता सुता अरि कुलनि ऊपर सुंन कें कें दो धरों ॥ वेद रिषि कुल नखत तिथि कों चित मांझ विचारिये। शिव नेंन रस अरुवांन नंदहिं संवतें उरधारिये ॥ ३ ॥ बर्खाजु मासहि मास लघुगनि नखत पति कों पछीआ। मंजार भक्षण तासुपति के जननि वाहु निरछीआ ॥ कृष्ण सुत की त्रिआ पितु ता पिता गुरु दिन गनौं। आरंभ सुचि रुचि करत प्रथी व्रत्ति रत्नाकर भाणों ॥ ४ ॥ छंद सुंदरी—पूरन पूर हरी हर धाम हैं। वेद पुरान गुनी गुन ठांम हैं ॥ नाम विरंचि विविचारि धन्यो सुभ। भिंड पुनीत सुधर्म भरों सुभ ॥ ५ ॥ कायथ सुध उमा वरदायक। प्रथीअलाल हरीहर पायक ॥ वेद पुरान सुजान सुनें सव। छंद प्रबंध विचित्र कहे तव ॥ ६ ॥

अंत—मंडन श्रुति आलंविनी, उद्दीपन रस खानि। कला वृत्ति धर धर्म सव, लीजो कवि पहिचान १२०। कवि हित कारन ग्रंथ यह, रचों विचित्र वनाय। पढ़े पढ़ावें विविध विधि, करैं चित्र चित चाय ॥ १२१ ॥ एक आदि कैं यौं सहस कोठा करत बनाय। भरत अंक निरसंक कवि रचत छंद सुखदाय ॥ १२२ ॥ वरन मंत्र का व्रत्ति जुत, वृत्ति रतनाकर यह नाम। कविन हेत अमृत परम करहि पान सुख धाम ॥ १२३॥ पारासरिषि संगिता। अरु रुग्वेद पवित्र। तिहि विचारि कीनौं प्रगट व्रत्य रत्न यह मित्र ॥ १२४ ॥ श्री गुरु चरन प्रसाद सों। कीनों ग्रंथ बखान। भूल चूक छमियो चतुर, सम सों वुधि निधान ॥ १२५ ॥ इति श्री रुगुबेद भूषन भूषितायां श्री पारासरी संगिता श्रुतेन छंदो दयात व्रत्ति रत्नाकर ग्रंथ काव्य प्रथ्वीलाल विरंचितायां शुभं भवत् ॥ मिती वैसाख वदि ॥ १२ ॥ भौम वासरे संवतु ॥ १९१४ ॥

विषय—मंगलाचरण। श्रुति में दोहा की उत्पत्ति। दोहा के कर्म जाति तथा भेद और उनके कोष्ट (जंत्र साधन)। (१) सप्तस्वर, गननभेद प्रस्तर श्रुतेन, धनदाअंक, सुखदा अंक, तथा पौत्रदा। दग्धाक्षर, संगीत मध्य आव्रति मात्रावृत्त प्रस्तार, मात्रा प्रस्तार यंत्र। द्वादश मात्रा फलाफल विचार (मात्राव्रति पूर्ण हुआ पृ० १-९)। (२) गण व्रति—गण भेद, गण मित्र शत्रु अगन अपूर्व शत्रु मित्र फल, अष्ट गन फल अफल विचार, गग अगण भूषण, यंत्र गुरु संज्ञता मते, कवित्त जाति श्रुति बोधात्म। षट वर्ग अंक निर्णय, सप्तस्वर उत्पत्ति, वर्णवृत भूषण यंत्रराज कवर्ग यंत्र, चवर्ग यंत्र, यात्रा व्रत्ति प्रस्तार भूषण यंत्र, टवर्ग, तवर्ग यंत्र, पवर्ग यंत्र, अवर्ग यंत्र, (पृ० १० —१८)।

संख्या १७१. जैमिन पुराण, रचयिता—पूरन कवि, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—१०½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६७९ वि०, लिपिकाल—सं० १९०० वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर विजयपाल सिंह जी, स्थान—रीठरा, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गोपाल नमः ॥ श्री कुँवर कृष्णाय नमः ॥ अथ श्री जै मुनि पुरान लिष्यते ॥ दोहा ॥ जाकहँ सुमिरत देव मुनि, किन्नर गंध्रव नाग। नर पसु पंक्षी चर अचर, सबके पद अनुराग ॥ चौपाई ॥ ता प्रभु को मम प्रथम प्रनामा जासु सकल घट घट विश्रामा ॥ अकथ अनाम अरुप रुपधारि। करे उचरत भुवप नाना-वारि ॥ सो सब पठहि सुनहि आप न सब फल पावहि ॥ प्रीतिकर्वे कपटहिजे कोई ॥ आगिल जन्म विप्रवर होई, सुनहि जे सरधा चेत समेता ॥ वसहि ते सर पुनि पुन निकेता। गावहिं जे सप्रेम मृदुबानी। गंध्रव गति पावें ते प्रानी ॥ सुनि गुनि जे पुनि करनी जे करही। ते तनु तजि हरि लोक सिधारइ ॥ पुनि जे आनहु बोल सुनावैह ॥ जीवन मुक्ति नारिनर पावहि ॥ चारि प्रकार जीव जग जानो ॥ पावर विषे इन मोछि ग्यानी ॥ तिनके लछन बुध न वषानी ॥ × × × गत संवत् षोड़स सत दोई ॥ वर्ष ओरु सतहत्तर होई। मास असाढ़ कृष्ण पषवारा ॥ तेरसि तिथि सन भान कुमारा। तिह दिन जै मुनि कृत अवतारा ॥ पढ़त सुनत सब कहँ सुष सारा ॥

अंत—है नृप देश अरु आठ पुराना। सबके सुनैं होइ कल्याना ॥ जो फल सब पुरान मुनि राई। सो पावहि भारथ सुनि भाई ॥ २२ ॥ भारथ सुनैं होइ फल जोई। जै मुनि सुनै द्वगुन फल होई ॥ धनवा देस नगर धन पावन। होइ जहां यह कथा सुहावन ॥ २३ ॥ धनि वे वरन धन्य वे नारी। सुनहिं जे श्रवन विसारि विकारी ॥ ते तन अछित मनोरथ पावैं। अर जम दूत निकट नहिं आवैं ॥ २४ ॥ इति श्री महाभारथे अस्व मेद के पर्वन जै मुनि कृते फल वर्ननो नाम छयासठिमो अध्याय ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ सामन सुक्ल पछ की नौमी अरु बुधवार। संपूरन जै मुनि कथा, भइ गुरु क्रपा अपार ॥ २५ ॥ कवि न चतुर कछु उक्ति नहिं, नहिं वर बुद्धि विसाल। जड़ता पूरन कौं छमौ, सज्जन दीन दयाल ॥ २६ ॥ इति श्री ॥ दोहरा सोरठा ॥ पूरन पुस्तक कीन, संवत् सत उनईस मैं। कातिक की तिथि तीन, वर्ष रतन अरु नेत्र शिव ॥ १ ॥

समागमनो (उनसठ० अ०), १४२–१४६ । ६०–दुशीला पुत्र जिवावन (साठवाँ अ०), १४६–१४७ । ६१–अर्जुन आगमन (इकसठ० अ०), १४७–१४९ । ६२–यज्ञशाला वर्णन (बासठ० अ०), १४९–१५१ । ६३–जैमुनिकृत यज्ञ संपूर्ण (त्रेसठ० अ०), १५१–१५४ । ६४–ब्राह्मण राजा भोजन वर्णन (चौसठ० अ०), १५४–१५६ । ६५–सकृत प्रस्थ मोक्ष वर्णन (पैंसठ० अ०), १५७–१५८ । ६६–फल वर्णन (छाछटवाँ अध्याय), पृ० १५८–१६० ।

संख्या १७२. चिन्ह चिन्तामणि, रचयिता—नागेशात्मज पूर्ण ब्रह्म, कागज—मूँजी, पत्र—२४, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०५, खंडित, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि० १७६९ = १७१२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० राधेश्यामजी द्विवेदी, स्वामीघाट, मथुरा ।

आदि— × × × ॥ वोष्ट लक्षणं ॥ प्रवाल सम साजिरे मृदु समान दोन्ही वरे ॥ सुगन्ध अधरी सुधा भज निकाम चीतांभरे ॥ तड़ील अधरा वरी मधि ले रेख जे सुन्दरि ॥ नृपास निवसे सदा सकल भोग मन्दिरि ॥ विथम अधर काले स्थूल बारीक हाले ॥ उजल पुटित वर्ते ववाते रोम आले ॥ अधर असति अैसे ते वधू निंद्यजाणा ॥ अधन कलह कारी कामा(१) ते रमाना ॥ वरिल अधर मध्ये उच्च आनन्द कारी ॥ तलिल अधर चुम्बी दन्त माला विकारी ॥ ललित अरुण शोभे पक्क बिंबोष्ट जीचा ॥ परिम कृअति वाहे भूपति कांत तीचा ॥

अंत—आधी पाहे सुचिन्हे कुल वय धन धी शील विद्या निरोगी । भ्राता दाता सुमाता घटित सुजनिता मित्र कामूक भोगी ॥ अैशाया लक्षणा लानिरखुन करणे लग्न पुत्रात्मजे चे ॥ त्याला सन्तान जन्मे निज युगल कुला जाण तारील साचे ॥ अैसी जोन करी पिताभंक अरी सन्तान हिंसाकरी । तेणे दुःख दरिद्र पातक घडे भोगील जन्मान्तरी ॥ असे जाणुन सावधान वदती मूढ़ा सते बोधिनी ॥ या अधरि अति सावधान असती आनन्द ते भोगिनी ॥ इति श्री जो जार उपनामक नागेशात्मज पूर्ण ब्रह्म वरचिते चिन्ह चिन्तामणि स्त्री प्रकरणं समाप्तं ॥ श्री लक्ष्मी वेंकटेश ॥ संवत् १७६९ ज्येष्ठ बदि १४ शनि वासरे चतुर्भिः सहैः समाप्तं ॥

विषय—इसमें सामुद्रिक शास्त्र के नियमों द्वारा पुरुष स्त्री के समस्त अंगों तिलमसा आदि के चिन्हों तथा हस्त पादादि की रेखाओं से जीवन का हाल बतलाया गया है ।

संख्या १७१. जैन जातक, रचयिता—राघोदास (१), कागज—सनी, पत्र—१७, आकार—८¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९७, पूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—तुलाराम गवैया, डा०—बरसाना, जिला—मथुरा ।

आदि—श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्री मत्पाश्र्व पाश्र्व देवाधि देवं ॥ स्मारं स्मारं सारदा सद्गुरुं च ॥ सद्यो ज्योति शास्त्र सद्ज्ञान वृद्धै ॥ सार सारो धार सारं ब्रवीमि ॥ अवगत अविनासी अजत, सब करबे समरत्थ ॥ वे सबही सब उनहि में, अरुन्यारे सब संघ ॥ अविनासी विनसै नहीं, ना कहुँ आवै जाइ ॥ भक्त काज प्रगटत इमों, ज्यो विजनावसमाइ ॥

अंत—हरि पूजा गुरुवार करीजे ॥ भृगु सिव ग्रह अघ कीजे ॥ तैलदान सनिवार

करावै ॥ राऊ जोरि कर विप्र जिवावै ॥ पीत पात्र घृत भरो केत ॥ अश्रुत गृह दान ते श्रुत फल देत ॥ इति श्री जातक सार ग्रहे राघोदास विरचिते तृतीयो ध्याय ॥

विषय—जैन ज्योतिष द्वारा शुभाशुभ का फल ज्ञात करना।

विशेष ज्ञातव्य—राघोदास का नाम पुष्पिका में आया है। यह सन्देह रह जाता है कि वह संस्कृत के मूल ग्रन्थ के रचयिता थे अथवा हिन्दी के इस पद्यात्मक अनुवाद के। जैनियों का ज्योतिष यद्यपि कुछ भिन्न होता है, तौ भी सिद्धान्तों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

संख्या १७४ ए. पुन्याश्रव कथा कोश भाषा, रचयिता—रामचन्द्र मुमुक्ष, कागज—मूँजी, पत्र—२४६, आकार—$१३\frac{१}{२}$×७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, स्थान—रायभा, डा०—अछनेरा, तह०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ श्री पुन्याश्रव कथा कोश भाषा लिख्यते ॥ श्लोक ॥ श्री वीर जिन मानभ्य वस्तु तत्व प्रकाशकं ॥ बक्षे यथा मयं ग्रन्थं ॥ पुन्याश्रवा विधानकं ॥ दोहा ॥ वर्द्ध मान जिन वन्दि कै, तत्व प्रकासन सार ॥ पुन्यश्रवा भाषा कहूँ, भव्य जीव हित कार ॥ सब जीवन को हित चहत, करत आपकौ काज। सो गुरु मम हिरदै बसौ, तारण तरण जिहाज ॥ सोरठा ॥ प्रणमों सारद माय, स्यादवाद लक्षन सहित। जिहि सेवत घट जाय, धरम प्यार घाढे अधिक ॥

अंत—अक्रत पुण्य आपणी माता कणें षीर मांगें ॥ सब वैसा तोड़णैं मारैं, वलि भद्रवा कामारिवास्यौं ॥ वचव कहै। अक्रत पुण्य काषीर की वांछा करि ॥ सुषादिक कुम्हि लाय गया ॥ अकृत पुण्यणैं दुर्वल देषि पलि भद्र इकी माताणैं पूछी अक्रत पुण्यणैं असो दुर्वल क्यों हुवो ॥ मता महीषीर की अप्तापति सौ ॥ तव बलिभद्र के सोयक दूध चाँवल प्रतादिक दीया अरक ही तू आपणैं घर के जाय बीर करि अक्रत पुन्यणै भोजण कराय तव माता दुग्धादि कले आपणे घर आय कहती हुइ ॥ × × ×

विषय—इसमें सैकड़ों प्रकार की विचित्र पर साथ ही साथ ऐतिहासिक कथाओं का पौराणिक ढंग पर वर्णन है। मेंढ़क की कथा पृ०–४ तक, भरन की कथा पृ०–८ तक, रत्नशेखर चक्रवर्ती की कथा पृ०–१५ तक, वजू दत्त चक्री, पूजा फल वर्णन पृ०–४६ तक, मंत्र फलाष्टक, राजा सुग्रीव की कथा, प्राश्वनाथ कथा, राजा जनक की कथा, श्रावक गण फलाष्टक, शील फलाष्टक, कुबेर प्रिय श्रेष्टी की कथा, सीताजी की कथा, राजा वजू कर्ण वली की कथा, आगे वाई नीली की कथा, पृ० १३२ तक। चाड़ाल अपमी पालीता कथा, उपबास फलाष्टक, नागकुमार कामदेव का आख्यान, भवस्य दत्त की कथा, जाम्रती की कथा, ललित घटा को कथा आगैर्जुन चम्बाल की कथा, दान फलाष्टक, श्रीषेण की कथा, जयकुमार सुलोचना की कथा, वजूजंघ आदि इसी प्रकार की कथाएँ, पृ० २४६ तक।

संख्या १७४ बी. चौबीसों महराज की पूजा, रचयिता—रामचन्द्र, पत्र—१६१, आकार—६×३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०५, पूर्ण,

रूप—प्राचीन सुन्दर, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५९ वि० = १८०२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर, स्थान व डा०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—श्री जिन देवजी सहाय। अथ चोवीस महाराज की पूजा लिष्यते ॥ दोहा॥ सिध वुधि दायक कर्म्म जित, भरम हरण भय भंज। चौवीसौं जिनधौ मुझे, ग्यान नमूँ पद कंज ॥ अथ श्री जिन नाम अष्टोत्तर नमस्कार ॥ अडिल्ल ॥ या संसार मझार असाता तप्त हूँ। स्वामिन् आयौ सरन हरौ दुष भक्त हूँ ॥ लषे निस्पृह तुंही भोगतें नाथजी। नमूँ नमूँ तुम पाय जोरि के हाथजी

अंत—॥ पूर्णार्घ ॥ वृषभ आदि चउवीस जिनेश्वर ध्यावही। अर्घ करैं गुण गाय तूर बजावही ॥ ते पावै शिव शर्म भक्ति सुरपति करैं। रामचन्द्र सक नाहि कीर्ति मग विस्तरैं ॥ इति श्री रामचन्द्र कृत चतुर्विंशति महाराज की पूजा जयमाल पंच कल्याणक दोहरा सम्पूर्ण ॥ संवत अष्टादश सतक, वरष गुन सठा जानि। जेष्ठ शुकल द्वितीया विषैं, पूरण कियौ सुजान। लिखी जती बसन्त ने ॥ बषाना नगर सुथान। चन्द्र प्रभु चिन विंब अति, राजत हैं जिमि भान ॥ श्री रस्तु ॥

विषय—जैन अष्टोत्तर नामावली १–४। तीर्थंकर की पूजा ५–९। आदिनाथ की पूजा १०–१४। पंच कल्याण १५–१८। अजितनाथ की पूजा १९–२५। इसी प्रकार अलग २ चौवीसों तीर्थंकरों की पूजा और उनकी स्तुतियाँ दी गई हैं।

संख्या १७५ ए. चंदराईणां, रचयिता—राम चरण, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुब्बलाल जी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ चंदराईणां प्रथम गुरु देव कौ अंगलिषंते ॥ अति सुमरथ भ्रंम नास अैसा गुरु हेरिऐ। माया सूं मनकाढिक उलटा फेरिऐ। राम भजन गलतानं आस सब छडिऐ। परिहांराम चरण वैरागादिसी पगमडिऐ ॥ १ ॥ सत गुर सरणौं आइ काज करि लीजिऐ। काम क्रोध मद लोभ मोह तजि दीजिऐ ॥ गुर उचरै मुख वंन हीरदै धरि राषिऐ। परिहां राम चरण मुष रांम रैंणिदिन भाषिऐ ॥ २ ॥

अंत—प्रेम प्रीति लपटाइ पीया परसन भया। हरष सोग दुष दुंद सवही दूरि गया ॥ बर अविनासी संगि सुरति नहचल भई। परिहां रांम चरण पति परसि कामना जलि गई ॥ ५ ॥ दिगनि मंडल मैं जाइ सुरति आसण कीया। मिलि ररकार भर अमल अमृत पीया। चढ़ी अमल मतिवाले देह सुधि नां रहै। परिहां राम चरण वो सुष संत विरता लहै ॥ ६ ॥ इति प्रचा कौं अंग संपूरण ॥ अंग ३ ॥ चंदराइराणां ॥ २२ ॥

विषय—गुरु देव का अंग, सुमिरन और परिचय का अंग।

संख्या १७५ बी. चेतावनी, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—११, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हीरालाल जी शर्मा, स्टेशन मास्टर—रे० स्टे० टिंडौली (ई०आई० आर०), जि०—मैनपुरी।

आदि—॥ अथ श्री ग्रंथ चितावणी लिपंते ॥ दोहा ॥ प्रथम वंदन गुरु देवकूं । पुनि अनंत कोटि निज साध ॥ कहूँ एक चितावणी ॥ यौ वांणी विमल अघाध ॥ १ ॥ वंधे सुवादरस भोग सैं ॥ ईद्रयां तणें अरथ ॥ उन जीवन के चेत बे ॥ करुं चीत वांणि ग्रंथ ॥ २ ॥ रांम चरण उपदेश हीति । कहूं ग्रंथ विसतारि ॥ पर्‌यौ प्रांन भव कूप मैं । सोनिक्र सै अथ रविचारि ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ दिवानां चेति रे भाई । तुजि सिरि गजब चलि आई ॥ जुरा की फौज अति भारी । करै तन लूटि कैं षवारी ॥ १ ॥ सांई वेगि अपरामं ध्याइ । पीछैं जुरादावै आइ । तजि संसार का सब धंध । ऐ तो सही जम का फंद ॥ २ ॥ अवरूं रांम रसनां गाइ । वीतो जनम अहलो जाइ ॥ तेरा जनम की सुणि आदि । मूरिष षोइऐ नाहि वादि ॥ ३ ॥ पाई दुलभ मनिषा देह । अब हरि सुमिर लाहा लेह । गाफिल होइ मति भाई । औसर वोहोर नहिं पाई ॥ ४ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ राह चेतावणि ग्रंथ सुणि, हरि सूं करै सनेह । राम चरण सांची कहै, फिरि धरै न दूजी देह ॥ १ ॥ राम चरण भजि राम कूं, छांडि दिहादिक परिवार । झूठां तजि रचि सांच सूं, तो छूटै जम मार ॥ २ ॥ राम चरण भजि राम कूं, संत कहै समुझाइ । सुख सागर कूं छांडि कै, मति छीलरि दुष जाइ ॥ ३ ॥ सोरठा धरीया दलकछ जाइ; सवद ब्रह्म नाही कलै । राम चरण रति ताहि, चौरासी का मैंटलै ॥ १ ॥ चौरासी की मार, भजन विना छूटै नहीं । तातैं होइ हुसियार, ऐसी सीषत गुरु कही ॥ २ ॥ इति श्री ग्रंथ चेतावणी ॥ समाप्तम् ॥ शुभम् ॥

विषय—चेतावनी एवं ज्ञानोपदेश ।

संख्या १७५ सी. ग्रंथ चेतावनी, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुब्बलाल जी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि अंत—१७५ बी के समान ।

संख्या १७५ डी. चेतावनी, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार ६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० पूरन मल जी, स्थान—वैझुआ, डा०—अराँव, जि०—मैनपुरी ।

आदि-अंत—१७५ बी के समान ।

संख्या १७५ ई. ग्रंथ चेतावनी, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० श्याम लाल जी, स्थान—आरौंज, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी ।

आदि-अंत—१७५ बी के समान ।

संख्या १७५ एफ. गुरु महिमा, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० पूरन मल जी, स्थान—बैजुआ, डा०—अराँव, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ गुरु महिमां ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ सीस धरूं गुरु चरण तरि, जिन दिया नांव ततसार । राम चरण अब रैन दिन, सुमिरै वारंवार ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रथम कीजै गुरुकी सेव । ता सँग लहै निरंजन देव ॥ गुरु किरपा बुद्धि निहचल भई । तृष्ण ताप सकल बुझि गई ॥ १ ॥ मैं अज्ञान मुत्तिका अति हीन । सत गुरु सवद भया परवीन ।। सत गुरु दया भई भरपूर । भ्रम क्रंम सांसौ गयो दूरि ॥ २ ॥ गुरु की पूजा तन मन कीजै । सत गुरु सवद हृदै धरि लीजै । सत गुरु सम दूजो नहिं कोई । जासों तन मन निरमल होइ ।। ३ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ सत गुरु कूं मसतक करै, राम भजन सों प्रीति । राम चरण वै प्राणियाँ, गया जमो ए जीति ।। १ ॥ साँचा सत गुरु सेइऐ, तजिऐ कूड़ा मंत । राम चरण सांचा मिल्यां, दरसैगा निज तंत ।। ३ ।। गुरु महिमा सीखै सुनै, हिरदै करै विचार । राम चरण तत सोधि ले, सो ही उतरै पार ॥ ३ ॥ इति श्री गुरु महिमा, संपूर्णम् समाप्तम् ॥

विषय—गुरु की महिमा का वर्णन ।

संख्या १७५ जी. गुरु महिमा, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान, पं० डुब्बलाल तिवारी, स्थान व डाकघर—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि-अंत—१७५ यफ के समान ।

संख्या १७५ एच. गुरुमहिमा, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गो० रघुवर दयालजी, स्थान—न० खुशहाली, डा० सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ ग्रंथ गुरु महिमा लिषते ।। साषी ॥ स्तुति की ॥ रमतीत राम गुरदेवजी, फुनि तिहूं काल के संत । जिनहूं रामचरण की वन्दन वार अनन्त ॥ १ ॥ ग्रंथ ।। दुहा ॥ सीस धरूं गुरु चरण तल, ··· ··· ··· । ··· ··· ··· ··· ॥ सत गुरु सांच सील पिछाणंया । काम क्रोध मद लोभ गुमाया । गुरु क्रिपा संतोष ही आया, त्रिसना ताप मिट्यां सुष पाया ॥७॥ गुरु गोविंद सूं अधिका होई, या सुणि रोसि करो मति कोइ । परथम गुरु सूं भाव बँधावै, गुरु मिलिया गोविन्द कूं पावै । ८ ॥ दत्त झग मर गुरु चोबीस, सवही का मत धारया सीस । अपणी अकलि आप समझासा, मुति फुरन कूं गुर ठहराया ॥ ९ ॥ गुण चिन्ता गुण के देन भूलै, क्रित घरीग दी प्रेमा में झूले । सूगरा गुरु की सैंन विछाणैं, नुगरा नर बाइक नहीं मानैं ॥ १० ॥

अंत—गुरु क्रिपा नर की बुधिपाई। पसूं व्रत सब दूरि गमाई॥ आप निवै गुरु दीरघ देषै। ता सिव को क्रत लागै लेषै॥ १८॥ जो नर गुरु का औगुण धारै। होइमन मुषी गरू विसारै॥ सो नर जनम जनम दुष पासी। गुरु द्रोही जम द्वारै जासी॥ १९॥ गुरु मिनष बुधि जाणैं मिलि कोई। सतगुरु ब्रह्म बुद्धि सम जोई॥ सतगुरु सकल काल को काल। सिषा निवाजण दीन दयाल॥ २०॥ दुहा॥ सतगुरु कूं मसतग धरै, रांम भजन सूं प्रीति। रामचरण वै प्राणियां, गया जमारो जीति॥ १॥ साँचा सतगुरु सेइये, तजिऐ कूड़ा मंत। रामचरण सांच्या मिला, दरसैगा निज तंत॥ २॥ गुरु महिमा सीषै सुणैं, हिरदैं करै विचार। रामचरण तंत साधिलै, सोही उतरैपार॥ ३॥ इति ग्रंथ गुरु महिमा संपूरण॥

विषय—गुरु महिमा का वर्णन।

संख्या १७५ आई. ग्रंथ मन खंडन, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गो॰ रघुवर दयालजी, स्थान—न॰ खुशहाली, डा॰—सिरसागंज, जि॰—मैनपुरी।

आदि—अथ ग्रंथ मन षंडण लिष्यते॥ दूहा॥ अलप निरंजन वीनऊं, लागूं सतगुर पाइ। मन षंडण की जुगति होइ, सो मोहि चौह बताइ॥ १॥ मन तन पर असवार है, गुंणइंद्री सब साथे। फिरै स्वादां वसि भयौ, क्यूं करि आवै हाथे॥ २॥ चौपाई॥ सपत धात काया असथांन। चेतन राजाम परधांन॥ मन है तीन अपरवल जोध। तामैं दोइ न मानै वोध॥ १॥ पांच पीया दामन की लारि। फुंनि पांचा पंच पंच आगार॥ अपणा अपणा चाहै भोग। ज्यूं ज्यूं नगरी बांधै रोग॥२॥ तव त्रपति इक मतो विचारयौ। मन षंडण निज मन विसतारयौ॥ मन की चोरी निज मन पावै। नरपति आगैं सब गुदरावै॥ ३॥ निरपति को निज सदा हजूरी। परक्रति मनमुष वाँधै धूरी॥ मैं तौ हूँक मराइ को करि हूँ। तेरी चोरी कागद धरि हूँ॥ ४॥ तेरै भोगराइ दुष पावै। वार वार गरभ मांही आवै॥ चाकर चोर धरभी न सुष। जनम मरण सँग भुगतै दुष॥ ५॥

अंत—ज्यूं ज्यूं मनवा वोला हेरै। जहाँ जहाँ निज मन जाइ घेरै॥ कहूँ न मन की लागै दाव। निज मन को छाती पीर पाव॥ ११॥ निज मन है नरपति को दास। परकति मन को नही विसवास। जो परकति मन कै चलै सुभाइ॥ तो अनंत जोणि मैं गोताषाइ॥ १२॥ जीव ब्रह्म निज ऐको करै। चंचल मन न्हचल मैं धरै॥ असैं मन कूषंडो भाई। ऐह सीष सतगुरु सूंपाई॥१३॥ मन षंडण का ऐह उपाव। और न कोई दूजा दाव॥ मनकै मतै कभूं नहि चालै। मन कूं उलटि अफूटो पालै॥१४॥ सव जीवा कूं मन भरमावै। मन कै संगि दुष सुष कूं पावै॥ सतगुरु सवदां पकड़ै मनकूं। रांम चरण परम सुष होइ जनकूं॥ १५॥ मन का मारया जे नर मरै। लष चौरासी घटवै धरै॥ मनकूं मारि मरैगा कोई। परम धाम में वासा होई॥ १६॥ दुहा॥ मन षंडै रामैं भजै, तजै जगत ग्रह कूंप। रामचरण तव परसिये, आतम सुद्ध सरूप॥१॥ चौपाई॥ सोरठा॥ आतम कूं नहीं व्याधि,

व्याधि रोग मन मानिए । जिनए तजी उपाधि, सुध सरुप ते जांनीए ॥ २ ॥ श्री इति मन षंडण ग्रंथ संपूरण ॥ दुहा ॥४॥ सोरठा ॥१॥ चौपाई ॥२४॥ सरव ॥३०॥

विषय—मन का खंडन करने की विधि ।

संख्या १७५ जे. कवित्त, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र – ७, आकार—५¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हुब्बलालजी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ कवित्त ॥ प्रथम गुरुदेव कौ अंग लिषेते ॥ राम भजन का भेद समझि सतगुरु सूं पावै । सिष वड़ भागी होइ भेद सुणि मन ठहरावै ॥ अंतरि षुध्या जगाइ नांव का करै अहारा । भजन भाव भरि पूर आंन रस लागै षारा ॥ पाँच तत्त्व गुण तीन कूं जीति अमी रस षाइ । रामचरण सिष सूरिवाँ जौ शव दम ही होइ जाइ ॥ १ ॥ सतगुरु सम्रथ जांणि वांणि झूठी सव षोवै । कंकर पूरिन षाइ सुरति में हीरा पोवै ॥ ऐसा नाहीं कोइ सगा सत गुरुसा प्यारा । जंव सूं लीया बचाइ पाइयं म्रत की धारा ॥ रामचरण गुरुदेव विन मेरे औरन कोइ । वैकरि राषै सीस परिमैं हिरदै राषौं पोइ ॥ २ ॥

अंत—बड़ौ भगति बिसवास ताहि सुरति सुम्रथ गायौ । देषि सवन सिरताज साध हठ समझि समायौ ॥ मघ में कुंजर कोपि सुझि सूंगह झक भयोरयौ । विरुड आपणां काजि साहि कूं केसौ दोरयौ ॥ सुरति वंटी साटौ भयौ जैसे बिणज विहार । रामचरण रहै लाभ धंन सों हीं वड़ौ विचार ॥ ५ ॥ इति विचार कौ अंग संपूरण ॥ अंग ४ ॥ कवित्त ३७ ॥

विषय—गुरुदेव का अंग, सुमिरण, और विचार का अंग ।

संख्या १७५ के. कवित्त, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि - नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० पूरनमलजी, स्थान—वैजुआ, डा०—अराँव, जि० —मैनपुरी ।

आदि—रामचरण का भेद समझि सतगुरु सूं पावै । सिष बड़ भागि होइ भेद सुनि मन ठहरावै ॥ अंतर खुधा जगाइ, नामका करै अहारा । भजन भाव भरपूरि, आन रस लागै षारा ॥ पाँच तत गुण तीन कूं, जीति अमीर सुषाइ । रामचरण सिष सूरियां, जौ शब्द मय हुइ जाइ ॥१॥ सतगुरु समरथ जानी, छाणि कूठी सव षोवै । कंकर दूरि न षाइ सुरनि मैं हीरा पोवै ॥ ऐसा नहिं कोइ सगा सतगुरु सा प्यारा ॥ जम सूं लिया वचाइ पाइ अंम्रत की धारा ॥ रामचरण गुरु देव विन मेरै औरन कोइ । बैकरि राषै सीस परि मैं हिरदै राषौ पोइ ॥ २ ॥

अंत—दया जिनु कै दिल वसै सोही संत दयाला । कठिन कलू मैं देह धरि देषि जाव बेहाला ॥ देषि जीव वेहाल दया करि नांव प्रकास्या । जिनि उर लीन्हा धरि जिनुका भ्रम विनास्या ॥ कहैं रामचरण संत प्रगट्या हमसे किये निहाल । दया जिनुकै दिल वसै सो ही संत दयाल ॥ अथ गुरुदेव कौ अंग संपूर्ण ॥

विषय—ज्ञानोपदेश का वर्णन ।

संख्या १७५ एल. कवित्त, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ला० जयकुमार गुप्त, स्थान व डा०—करिहा, जि०—मैनपुरी ।

आदि—१७५ के. के अनुसार है ।

अंत—सब धरमा सरि धरंम साधि इक दया विचारी । काया मंजन का नीर तट गए सँवारी ।। सिलता मैं पङिरी वंवद्यौ पावै सरति । मांहीं देषि दुषी वेहाल धसे कारण कूं ताहीं कर गहि वोंवण लगियौ, धरंम तजि भयौ उवार । यूं पारन पै पहुँचै, रामचरण कपटी सूं उपगार ।। ३ ।। भगति आभुषण सील साध सांचै मनि धारयौ । गुरु की आग्या मांनि भीष आरंभ विचारयौ ।। रति वंती इक नारि, दगो करि घर मैं घेरयौ । रसनां सूं धरंम हारि, दगै नागरि मन फेरयौ ।। कपटी कै पांनैं पड्यां, वचै कपट कै पांणि । रामचरण नहिं वूझिऐ, करिकैं षैंचा ताणि ।।४।। वड़ौ भगति विसवास, ताहि सुरति सुग्रथगायो । देषि सदन सिरताज, साध हठ समझि समायो ।। मद्य मैं कुंजर कोपि सूंड़ि सूं राहि झक झोरयौ । विड़द आपणा काज साहि कूं कैसो दौरयौ ।। सुरति वँटी साटौ भयौ, जैसें विणज बिहार । रामचरण रहै लाभ धन, सोही वड़ौ विचार ।। इति विचार को अंग संपूरण ।। अंग ४ ।। ।। कवित्त ।। ३० ।।

विषय—गुरुदेव सुमिरन परिचय, और विचार के अंगों द्वारा गुरु की महत्ता, ईश्वर भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन ।

संख्या १७५ एम. कुंडलिया, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० डुब्बलालजी, तिवारी, स्थान व डाकघर—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—।। अथ कुंडलिया ।। प्रथम गुरुदेव कौ अंग लिषंते ।। रामचरण गुरु परसिया, क्रपा राम निज साध । सकलि वकलि सव मेंटिकैं, वकस्या सवद अघाध ।। नकसा सवद अघाध, ताहि संमि और न कोई । तिमिरि गए सव न्हासि, भांणु ज्यूं प्रगट होई ।। वाट चलाई मुकतिकी ।। मन होइ रह्या अहलाद । रामचरण गुरु प्रसीया । क्रपा राम निज साध ।। १ ।। रामचरण सतगुरु मिल्या, भागा भरम अनेक । दुरमति दूरि निवारि कैं, सवद लिषाया ऐक ।। सवद लषाया ऐक और कोई दाईन आवै । चाहि महीं चित मांहिं राम सुप दिल दरसावै ।। सुरति सुहागिण होइ रही प्रस्या पुरस अलेष । रामचरण सतगुरु मिल्या भागा भरम अनेक ।। २ ।।

अंत—थिति पाइ मन थिर भया, मिटि गया वाद विवाद । रामचरण नहचल भया, सतगुरु कै परसाद ।। सतगुरु कै परसाद, प्रेम तत प्रस्या सोहीं । रह्या सकल भरपूरि, नभ

ज्यूं व्यापक होई ।। दृष्टिन मुष्टिन गहण गति, अैसा अगम अगाध । थिति पाई मन थिर भया, मिटि गया वाद विवाद ।।७।। इति प्रचा कौ अंग संपूरण ।। अंग ३ ।। कुंडल्या ।।२१।।

विषय—गुरुदेव का अंग, सुमिरण और परिचय कौ अंग ।

संख्या १७५ एन. ग्रंथ मन खंडण, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हुब्बलालजी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ ग्रंथ मनषंडण लिष्यते ॥ दोहा ॥ अलष निरंजन वीन वूं, लागूं सतगुरु पांई । मन षंडण की जुगति होइ, सो मोहि थौह वताई ।।१।। मन तन पर असवार है, गुण इन्द्री सव साथ । फिरि संवादां वसि भयौ, क्यूं करि आवै हाथ ।। २ ।। चौपाई ।। सपत धात काया असथांन । चेतन राजा मन परधान ।। मन कै तीनि अपर वल जोध । तामैं दोई न मानैं बोध ।।१।। पाँच पयादा मन की लार । फुनि पाँचा पंच पंच अगार । अपणां अपणां चाहै भोग । ज्यूं ज्यूं नगरी वांधै रोग ।।२।। तव नरपति एकै मतो विचारयो । मन षंडण निज मन विसतारयो ।। मन की चोरी निज मन पावै । नरपति आगै सव गुदरावै ॥३॥

अंत—मन का मारया जो नर मरै । लष चौरासी घट वै धरै ॥ मन को मारि मरैगा कोई । प्रेम धांम मैं वासा होई ।। १५ ।। दोहा ।। मन षंडै रामैं भजै, तजै जगत ग्रह कूप । रांमचरण तव परसिए, आतम शुद्ध स्वरुप ।। १ ।। सोरठा ।। आतम कूं नहिं व्यधि, व्याधि रोग मन मानिऐ । जिनऐ तजी उपाधि, शुद्ध सरूप ते जाणिऐं ।।१।। इति श्री मन पंडण जोग ग्रंथ संपूरण ।। चौपई १५ ।। दोहा ४ ।। सोरठा १ ।। श्रव ३० ।। ग्रंथ ३ ।।

विषय—मन को वश में रखने का उपाय एवं उपदेश ।

संख्या १७५ ओ. मन खंडन जोग, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० पूरनमल जी, स्थान—बैजुआ, डा०—अरॉंव, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अंत—१७५ एन के समान ।

संख्या १७५ पी. ग्रंथ नाम प्रताप, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—४$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हुब्बलाल तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ ग्रंथ नांम प्रताप लिषंते ॥ दोहा ॥ महिमां नाम प्रताप की, सुनौं श्रवण चितलाइ रामचरण रसना रटो, तो क्रम सकल झड़ि जाइ ॥ १ ॥ जिन जिन सुमरया नांम कूं, सो सव उतरै पार । रामचरण जो वीसरया, सोही जम के द्वार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ राम नाम कूं जिन जिन ध्यायौ । भौकूं छेदि परम पद पायौ सिव जी निस दिन रांम उचारै, राम विनां दूजो नहिं धारै ॥ १ ॥ पारवती कूं रांम सुनायौ । राम विना सव झूठ वतायौ ॥

सोही नाम सुनौं सुष देवा। गर्भ बास में लागो सेवा ॥ २ ॥ राम सुमिरि सब मोह निवार्यौ। मात पिता तजि बनां सिधारयौ ॥ रांम प्रताप रंभा गई हारी। सुमिरत रांम कांमना हारी ॥ ३ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ ऐह चहन दरस्यां विना, मति कोई छोड्यो ध्यान। रांमचरण ऐक रांम बिन, सबही फोकट ग्यान ॥ १ ॥ रांमचरण भजि रांम कूं, ब्रह्म देस कूं जाइ। जाहां जम जूं राका भै नहीं, सुष मैं रहै संमाइ ॥ २ ॥ रामचरण कहै रांम को, बड़ो प्रताप जुग मांहि। अनंत कोटि जंन ऊ धरया, भजैं सो भ्रमैं नाहि ॥३॥ इति श्री नाम प्रताप संपूरण ॥ ॥ दोहा ८ ॥ चौपाई ४ ॥ श्रव ७२ ॥ ग्रंथ १ ॥

विषय—नाम प्रताप वर्णन।

संख्या १७५ क्यू. नाम प्रताप, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० पूरनमलजी, स्थान—वैजुआ, डा०—अरांव, जि०—मैनपुरी।

आदि—अंत—१७५ पी के समान।

संख्या १७५ आर. नाम प्रताप, रचयिता—रामचरण, कागज— देशी, पत्र—९, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुँवर गुलाब सिंह जी रईस, ग्राम—शेरपुर, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ग्रंथ नाम प्रताप लिष्यते ॥ साषी स्तुति की ॥ रंमतीत रांम गुरुदेवजी, फुनि तिहूँ काल के संत। जन कूं रांमचरण की, वंदन वार अनंत ॥ १ ॥ दूहा ॥ महिमा नाम प्रताप की, सुनै श्रवण चितलाइ। रामचरण रसना रटै, तो क्रम सकल झड़जाइ ॥ १ ॥ × × × पारवर्ती कूं राम सुनायौ। राम विना सब झूंठ वतायौ ॥ सोई रांम सुन्यो सुष देवा। गर्भवास मै लागौ सेवा ॥ २ ॥

अंत—॥ दूहा ॥ अनहद गिरिजै निभ झरै, दामणि जोति उजास। रामचरण सुनि साइयां, हंसा करत निवास ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सइर तटि हंस बैठा जाई। साइंर हंस मैं रह्या समाई ॥ वोत पोत भया दुई तन दरसै। संत गरक ब्रह्मं सुषकूं परसै ॥१॥ ब्रह्मं प्रस्यां की दसा बताऊं। बाहिर के लछन पिछनाऊं ॥ जाकै रंक ऐक ही राऊ। माया सेती करै न भाऊ ॥ २ ॥ जाकै इंद्र ब्रह्मं रस वूठा। सकल विहार होइ गया झूंठा ॥ किनक कांमणी करैं न नेहा। छकें ब्रह्मं रस रहष देहा ॥ ३ ॥ जैसें दूंद मिली साइर मैं। कैसै पकड़ि सकै कोई क्रमैं ॥ जीव ब्रह्मं मिलि भए समाना। ब्रह्म मिला क्रम करै न आना ॥४॥ ऐह चैहन दरस्या बिनां, मति कोई छोड़ों ध्यान। रामचरण इक राम बिन, सबही फोकट ग्यांन ॥ १ ॥ रामचरण भजि राम कूं, वड़ौ परताप जग मांहिं। अनंत कोटि जन उधर्यां, भजैस भरमैं नाहिं ॥ २ ॥ इति ग्रंथ नाम प्रताप संपूरण ॥

विषय—नाम का प्रताप वर्णन।

संख्या १७५ एस. रामचरण के शब्द, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—१७०, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रघुनाथ प्रसाद जी, स्थान—न० ताल, डा०—भदान, जि०—मैनपुरी।

आदि—···वुधि ॥ जो निसदिन सुमिरै राम ॥ लोभ मोह तृष्णा मिटै ॥ तव पावै विश्राम ॥ २६ ॥ भजन विना छूटै नहीं ॥ राम चरण भौव पासि ॥ जौ चाहै दीदारकूं ॥ तौरटि ऐसास उसासि ॥ २७ ॥ रामरटोनर वर्तिग हो ॥ सकल वासना पेलि ॥ पर वरति पसारा वंधइ ॥ रामचरण दै ठेलि ॥ २८ ॥ निसि दिन भजिए रामकूं ॥ तजिए नहीं लगार। रामचरण आठौं पहर। पल पल वारं वार ॥ २९ ॥ सुगिरा सुमिरै राम कू, परिहर माया मोह। रामचरण नुगए सोई, जाके संसै सोग अँदोह ॥ ३० ॥ रसना रटिये राम कूं, जड़िये नहीं कपाट। राम चरण मुष मूँदिकै, षाली रहै निराट ॥ ३१ ॥ जो अहार मुष सूं करै, तोतिर पति होवै मन्न। षुध्या न भागै प्राण की, रषा सुरति मै अन्न ॥ ३२ ॥ राम चरण रसना रटै, तो लहै राम रस स्वाद। प्यासा मुठो भीचकैं, जनम गँवावै वाद ॥ ३३ ॥

अंत—......राष दुहाई छाहलै ॥ घरकौ काढ्यौ भूत ॥ जै कवहूँ सुपना मैं दरसै ॥ कै झरपि कहै भयौ भूत ॥ ५ ॥ राम चरण संसार कीरै ॥ झूठी सकल सगाई ॥ आदि अंत मधि रांम सगो है ॥ ताहि समझि भजि भाई ॥ ६ ॥ पद १ ॥ सगो अंति मधि रांम सगो है। ताहि समझि भजि भाई ॥ ६ ॥ पद ॥ १ ॥ सगोएक राम है ॥ हम देष्या सोचि विचारि ॥ टेक ॥ सैंवल ज्यूं पूतां फल्यौरै ॥ जहाँ भयौ सुष वासी ॥ ई झूँठी झिमरी डह कायौ ॥ काम पड़्यो पिछतासी ॥ कै सूड्यूं फूल्यौ फिरैरे ॥ मैं मेरी भरमायौ ॥ हूँवड़ हूवड़ भयौ जगत मैं ॥ हरि हिरदै विसरायौ ॥ २ ॥ सुष सुवारथ सवको सगारे ॥ दुष मैं निकट न आवै ॥ दुष प्रहारी राम सुनेही ॥ ताकूं काहे न गावै ॥ ३ ॥ लष चौरासी घट धर्‍यारे ॥ जहाँ कछू समझि न आई ॥ ई औंसरि नर को तन पायौ ॥ ताहि सुफल करि भाई ॥ ४ ॥ मात पिता कुल सुत वित नारी ॥ ······ वर्जम की पासी ॥ रामचरण ईनको संगत ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

विषय—भक्ति, ज्ञान और उपदेश तथा प्रेमादि पर कहे गये पदों का संग्रह।

संख्या १७५ टी. रामचरण के शब्द (साखी), रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—११४, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुब्बलाल तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुरा, जि०—मैनपुरी।

आदि—पृष्ठ २ तक लुप्त, तीसरे पृष्ठ से उद्धृतः—राम सुमिरि हलका भया, सौ नर उतर्‍या पार ॥ ७ ॥ नौका नाम वणांइ कैं, संत करै भौ पार। रामचरण जग नां चढ़ै, तातैं वूड़ा धार ॥ ८ ॥ रोम रोम विष सूं भरया, निर विष कैसें होइ। राम सुधारस पाइकैं, सतगुरु करि हैं सोइ ॥ ९ ॥ अैसी कोई न करि सकै, सो सतगुरु सूं होइ। रामचरण गुरु

गारडू, सब विष डारै धोइ ।। १० ।। जो साँचा सतगुरु मिलै, तौ सांचा दारु देहि । चौरासी का जीव की, ब्रह्म दृष्टि करि लेहि ।। ११ ।। जो साँचा सतगुरु मिलै, तौ सांचा देवै ज्ञान । मन कौ टाँकौ काढ़िकै, कंचन करै निधान ।। १२ ।। × × × × रामचरण सतगुरु विना, कूंण करे उपगार । भवसागर की धार मैं, तुरत लघांवै पार ।। १४ ।। रामचरण सतगुरु मिल्या, कीया भ्रंम सबदूरि । जित देषूं जित रांम है, रह्या सकल भरपूरि ।। १५ ।।

अंत—सूरावण की सरम है, काइर कूं फिटकार । रामचरण काइर हुवां, पकड़ै नहीं करार ।। ५ ।। रामचरण मानूं मतौ, कायर तणूं विचार । अपणां जीवा कारणैं, परधै करै षवार ।। ६ ।। भगति गई भ्यासै नहीं, नहीं सतगुरु की संक । रामचरण वा जीव कूं, जम लै जाइ निसंक ।। ७ ।। साध मिल्यां मुछांठ सै, जगत मिल्या लड़काइ । रामचरण वांक्या किया, साध संगति मैं आइ ।। ८ ।। काइर अपणौ मुषि कहै, सो एक न भावै नांहि । वै क्यूं वोलै वापड़ा, जो मधारि गन मांहिं ।। ९ ।। थोड़ा जीतव कारणैं, गुरु सूं कपट कीयौ । रामचरण अब देषिये, कैसो लाभ लीयौ ।। १० ।। सतगुरु अपणा सांचदे, कीया वोहोत उपगार । तासूं अंतर राषियौ, तासिष कूं धिक्कार ।। ११ ।। काहा रेत कौ च्यूंत रौ, कहा इरंड कौ वाग । दिना च्यारि मैं षासा फुसी, ज्यूं काइर कौं वैराग ।। १२ ।। इति कादर कौ अंग संपूरण ।। अंग ६२ ।। साषी १५३० ।। साषी संपूरण ।।

विषय—गुरुदेव, सुमिरन, सूरातन विरह, ज्ञान विरह, साखी लै, प्रेम-प्रकाश, परिचय, पतिव्रता, विनती, विश्वास, साधु संगति, वरकत, असाधु संग, भेष, कुसङ्ग, अज्ञान, चित कपटी, अवगुण ग्राही, सारग्राही, अकलि, विचारण, साँच, भ्रमविध्वंस, टेक, मन, चेतावनी, गुरु परीक्षा, गुरु शिष्य पारख, गुरु विमुख, काल, सती, जीवत मृतक, सजीवन, वेहद, मध्य, पंथ, रस, सुखम मार्ग, शुभकर्म, उपदेश, जग्यास, भुरकी, जरणा, कामीनर, राहित, सहज, दया, माया, निन्दा, व्यवहार, लोभीनर, आशावेली, चाणक कस्तूरिया मृग, निद्रा, देखा-देखी, हेत प्रीति, निश्चय और कायर नामक ६२ अंगों का १५३० साखियों में वर्णन ।

संख्या १७५ यू. रेखता, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—५¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुब्बलालजी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—।। अथ रेखता गुरुदेव कौ अंग लिषंते ।। सतगुरु ग्यांन दे बुधि नृमल करी भरंम अरु क्रम सब दूरि कीया । काल्व वेताल की जाल सब काटि करि, काढ़ि कैं आपणीं सरणि लीया ।। सील संतोष अर दिष्टि का पोष दे सीस धरि हस्त हरि नांम दीया । रांम ही चरण गुरुदेव दयाल के, चरण कौं प्रसतां भ्रत जीया ।। सतगुर सारसा और दीसै नहीं तीन हीं लोक फिरि देषि जोई । भरंम कपाट उघाड़ि दीप वाधन्या मनकी मलनता दूरि षोई ।। वेद कतेव सुरिग संमझि आई तहीं सुभ अर असुभ की भूलि भारी । मिलत गुरुदेव

जगाइ चेतन कीया भूलि परि ग्यान की थाप मारी ॥ रांम की धांय हंम दूरि कहूँ जांण तां पिंड ब्रहं मंड का भेद पाया । रांम ही चरण गुरुदेव दयाल के चरण कूं प्रसतां साँच आया ॥२॥

अंत—नांव का भेद अब सवद मैं कहत हूँ, सुरति दे सांमलो सरव कोई । और सव नांव सिपती कहै ब्रह्म का रांम निज वीज सिव कहत सोई ॥ मेस आस नंक सुषदेव नारद कहै तीन ही लोक धुनि अधिक होई । और सव नांव जुगि जुगि उपजै षपै, ऐकररं कार है अषंड जोई ॥ रांम ही चरण अब सैइ रहै ता पुरिस उपजता बिनसता पुरि षोई । कृष्ण औरार भागोत मैं भाषियौ ऊधों कूं निज नाँव सब भ्रम खोई ॥ इति भ्रंम विधुंस को अंग संपूरण ॥ अंग ४ ॥ रेखता २२ ॥

विषय—गुरुदेव, सुमिरन, परिचय और भ्रम विध्वंस का अंग वर्णन ।

संख्या १७५ व्ही. शब्द, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप्) २००, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुब्बलालजी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ अथ सवद लिषते ॥ जै जै रांम सब कोई ध्यावै । रहता रांम की सुधि न पावैं ॥ जै जै राम उपजि पपि जासी । रहता रांम अचल अविनांसी ॥१॥ केवल राम सकल सिरताजा । ताहि तजि मूढ़ करै अकाजा ॥ पंथ पुरात मैं हाथ न आवै । तासैं सारी सिसरि संम्हावै ॥२॥ भूला भेद कहां सूं पावै । भूला गुरु कैसरणैं जावै ॥ भूला कूं भूला भ्रमावै । जनम मरण का अंत न आवै ॥३॥

अंत—॥ राग आसा सिंधु लिषते ॥ रांम रांम प्रहलाद उचारें, होरी जरि भई छारा हो । जै जै कार भयौ हरि जन कै, राम विमुख मुख कारा हो ॥ टेक ॥ साध समाज जहाँ अति आनंद । राम भजन परि पूरी हो । हरणां कुस होरी का संगी । पंडतऊ सूर मुष धूरी हो ॥ १ ॥ × × × अव गुमांन पाव सूं पेलूं ॥ आयो मांनि उड़ाउं हो ॥ साहिब की सषी ईन सूं ... ...

विषय—भक्ति संबंधी कुछ पदों का संग्रह ।

संख्या १७५ डब्ल्यू. शब्द प्रकाश, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुब्बलाल जी तिवारी, स्थान व डा०—मदनपुर, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथ ग्रंथ सवद प्रकाश लिषते ॥ दोहा ॥ रांम नाम तारिग मंत्र, सुमिरै संकर सेस । रामचरण सांचा गुरु, देवै यों उपदेस ॥१॥ सतगुरु वकसै रांम नामं, सिष धरै विसवास । रामचरण निस दिन रटै, तौ निहचै होइ प्रकास ॥२॥ अब सुणि यै सब साधु सुजांणां । रांम भजन का करुं वषाणां ॥ प्रथम नांम सतगुरु सूं पाया । श्रवणां सुणि कैं प्रेह उपजाया ॥१॥ फुनि रसना की सरधा जांगी । रांम रटिण निस वासर लागी ॥ दुजी आसा सकल बुहारी । तब रांम नामं मैं सुरति गहारी ॥२॥

अंत—॥ दोहा ॥ वरणि कह्यौ संक्षेप सों, दरिया कैसो पार । जिन पर सीया धाम कूं, सो लीज्यो संत विचार ॥१॥ रामचरण रटि राम नाम, पाया ब्रह्म विलास । ईसाधन कोइ लागसी, जाकै होसी सवद प्रकास ॥२॥ इति श्री ग्रंथ सवद प्रकास संपूरण ॥ दोहा ४ ॥ चौपाइ २४ ॥ श्रव २८ ॥ ग्रंथ ५ ॥

विषय—अनहद शब्द वर्णन ।

संख्या १७५ यक्स. शब्द प्रकाश, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० पूरनमलजी, स्थान—वैजुआ, डा०—अराँव, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ग्रंथ शब्द प्रकाश लिख्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम तारिग मंत्र, सुमिरै शंकर शेष । राम चरण साँचा गुरु, देवै यों उपदेस ॥ १ ॥ सतगुरु वकसै राम नाम, शिष्य धरै विसवास । रामचरण निस दिन रटै, तो नहचै होय प्रकास ॥ २ ॥ अब सुनियो सव साधु सुजाना । राम भजन का करूं वखाना ॥ प्रथम नाम सतगुरु सूं पाया । श्रवणां सुनि के प्रेम जगाया ॥ १ ॥ फुनि रसना की सरधा जागी । राम रटनि सव सुर लागी ॥ दूजी आसा सकल विसारी । तव राम नाम में सुरति ठहारी ॥ २ ॥

अंत—राम राम विनु आन उपाई । जूं झूला का खेल कराई ॥ वालक पेलु मंदर वनाया । तामैं वसि कौने सुष पाया ॥ २३ ॥ राम भजन विनु षाली करनी । ज्यों वन वीज सुधारी धरणी ॥ राम वीज साधन हल हाँकै । तौ रामचरण ती फल पाकै ॥ २४ ॥ दोहा ॥ वरणि कह्यौ सव प्रेम सों, दरिया कैसी पार । जिन परसिया धाम कूं, लीजो संत विचार ॥१॥ रामचरण रटि राम, पाया ब्रह्म विलास । ऐसा धन कोइलागसी, जाके होय शब्द प्रकाश ॥२॥ ॥ इति श्री शब्द प्रकाश समाप्तम् ॥

विषय—भक्ति संबंधी विचारों का संग्रह ।

संख्या १७५ वाई. शब्द प्रकाश, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गो० रघुवर दयाल जी, स्थान—न० खुशहाली, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—अथै ग्रंथ शब्द प्रकाश लिषते ।। दुहा ॥ स्तुति ॥ राम नाम त्यारगे, मंत्र सुमिरे संकर सेस । रांम चरण सांचा गरू, देवे यौं उपदेस ॥ १ ॥ सतगुरु वगसै रांम नाम सिवधारै विसवास । रामचरण निस दिन रटै तोन्ह चै होइ प्रकास ॥ २ ॥ चौपाई ॥ अव सुणियौ सवसाध सुजाणां । राम भजन का करुं वषाणां ॥ प्रथम नाम सतगुरु सूं पाया । श्रवण सुणिकैं प्रेह उपजाया ॥ १ ॥ फूनि रसना की सरधा जागी । राम रटन निसि वासर लागी । दूजी आसा सकल वुहारी । तव राम नाम मैं सुरति ठहारी ॥ २ ॥ पदम आसणन्ह चल मन कीया । नासा नरति धरि धरि लीया ॥ सास उसासां धवणि लगाई । आरति करिकैं व्रह जगाई ॥३॥ रसना अगर षूली इक सीरा । प्रथम याकौ पैसो नीरा । रटता रटता भयौ मिठास । हरिष भयौ आयौ विसवास ॥४॥

अंत– अैसो पद विरला जन पावै। सो भौ सागर नहिं आवै ।। राम रट्याँ काऐ प्रकासा। मिल्या ब्रह्मं पद भो भय नासा ।।२१।। रांम चरण कोई रांम रटैगा। सो जन ऐही धाम लहैगा ।। राम नाम निस वासुर गासी। सो नर भोसागर तर जासी ।।२२।। राम नाम विन आन उपाई। ज्यूं झूल्यां का षेल कराई। बालक वेलू मंद्र विनाया। तामैं वैसि कूणैं सच पाया ।। २३ ।। राम भजन विन षाली करनी। ज्यूं विनि वीज सुधारी धरनी ।। राम वीज साधन हल हांकै। तो रामचरण षेती फल पाकै ।। २४ ।। दुहा ।। बरण कह्यौ संषेपसो, दरीया कैसो पार। जन परसीया धांम कूं, सो लीज्यौ संत विचार ।। १ ।। रांम चरण रटि रांम नांम, पाया ब्रह्मं विलास। ईसा धन कोई लागसी, जाकै होसी सवद प्रकास ।। २ ।।
।। इति ग्रंथ सवद प्रकास संपूरण ।।

विषय—नाम का महत्त्व वर्णन।

संख्या १७५ जेड. साखी (माया का अंग), रचयिता—रामचरण, पत्र–५, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० पूरनमलजी, स्थान—वैजुआ, डा०—अराँव, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ साखी महिमा कौ अंग लिख्यते ॥ मुख सूं तौ झूठी कहै, अंतर वहुत उपाय। रामचरण इन वात सूं, जीव रसातल जाय ।। १ ॥ माया तौ मीठी लगै, खारा हरि कौ नाम। रामचरण वा अंध कौ, ना कोई नाम न ठाम ॥ २ ॥ माया काँदौ राम जल, साधू मीन समान। काँदौ जन राँचे नहीं, जल विछुरति तजि प्रान ॥ ३ ॥ माया काली नागिनी, चुनि चुनि खाया पूत। रामचरण भजि राम कूं, उवरा कोउ अवधूत ॥ ४ ॥ जनि जनि खाया पापिनी, दया न उपजै तासु। पहली सेवै पोषदे, पीछे करै सकल कौ नासु ॥ ५ ॥

अंत—राम भजन लागा रहै, माया मना विसारि। रामचरण आगैं सुखी, यहाँ सुषी संसार ॥ ६२ ॥ जो जानूं गुरु सत्य है, तौ यह साषी भी सत्य। आगैं होय सो देषियौ, अव मति रहौ न चिंत्य ॥ ६३ ॥ माया नारी ब्रह्म भी, मात करै प्रतिपाल। रामचरण मेरी कहै, सो हरामखोर वेहाल ॥६४॥ जननी कूं नारी गिनैं, सो न रहो सिखवार। रामचरण ई पाप सूं, चौरासी की मार ॥६५॥ रामचरण अपनी कहै, सो घेरि रहै घर माहिं। छाजन भोजन मात दे, सुत वगलावै नाहिं ॥६६॥ इति माया कौ अंग संपूर्ण ॥

विषय—माया से बचने और ब्रह्म में लीन होने का वर्णन।

संख्या १७५ ए[२]. साखी, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—८½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ला० जयकुमारजी गुप्त, स्थान व डा०—फरिहा, जि०—मैनपुरी।

आदि— ··· ··· ··· ··· ··· ··· वुधि। जो निस दिन सुमिरै राम, लोभ मोह त्रिस्नां मिटै ।। तव पावै विश्राम ॥ २६ ॥ भजन विनां छूटै नहीं, रामचरण भावैं पासि।

जौ चाहे दीदार कूँ, तो रटिए सांस उसास ॥ २७ ॥ रांम रटो नखर्ति गहो, सकल वासना पेलि । पर वरति पसारा बंध है, रामचरण दे ठेलि ॥ २८ ॥ निस दिन भजिऐ राम कूं, तजिए नही लगार । रामचरण आठुं पहरै, पल पल वारुं वार ॥२९॥ सुगरा सुमिरै राम कू, परि हरि माया मोह । रामचरण नुगरा सोई, जाकै सांसो सोग अदोह ॥ ३० ॥ रसना रटिये राम कूं, जड़िए नहीं कपाट । रामचरण मुष मुंदिकैं, षाली रहै निराट ॥ ३१ ॥ जो अहार मुषसूं करै, तो नृपति होवै मन्न । षुध्यान भागै प्राँण की, रख्या सुरति में अन्न ॥ ३२ ॥

अंत—रामचरण मानूं मतौ, कापर तणूं विचार । अपणां जीवा कारणैं, परछै करै षवार ॥६॥ भगति गई भ्यासै नहीं, नहिं सतगुरु की संक । रामचरण वा जीव कूं, जम लै जाइ निसंक ॥७॥ साध मिल्यां मुं वांव सै, जगत मिल्या लड़काइ । रामचरण वांभ्या कीयां, साध संगति में आइ ॥८॥ काइर अपणें मुष कहै, सो एकन भावै नाहिं । वै क्यूं बोलै वापड़ा, जोम धारि मन माहिं ॥९॥ थोड़ा जीतव कारणैं, गुरु सूं कपट कियौ । रामचरण अव देषिये, कैसो लाभ लियौ ॥१०॥ सतगुरु अपणां सांच दे, किया वहुत उपगार । तासूं अंतर राषियौ, तासिष कूं धर कार ॥११॥ कहा रेत कौ च्यूंत रौ, कहा ईरड़ को राग । दिन चारि मैं घासा फूंसी, ज्यों काइर कौ वैराग ॥१२॥ इति कायर को अंग संपूरण ॥ अंग ६२ ॥ साषी १५३७ ॥ साषी संपूरण ॥

विषय—नाम माहात्म्य, गुरु माहात्म्य तथा दृढ़ भक्ति और सत्य ज्ञान का उपदेश ।

संख्या १७५ बी[२]. साखी मन कौ अंग, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिव नरायन जी, स्थान—लभौआ, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ अथ साषी मन कौ अंग लिष्यते ॥ राम चरण मन मसकरा, कदै न आवै हाथ । राम नाम लागै नहीं, रमैं विकारा साथ ॥ १ ॥ राम चरण मन उलटिया, सत गुरु कै उपदेस । विषयविकार सब छांड़िकै, निरगुण कीया भेस ॥ २ ॥ निरगुण नांइ लगा रहै, पलकन विसरै ताहि । हरस हस्याई छाड़िकैं, रहै राम ल्यौ लाइ ॥ ३ ॥ मन मैला तन ऊजरा, ऐसे भगत अनेक । रामचरण क्यों पाइए, निरमल पुरुष अलेष ॥ ४ ॥

अंत—हँसि हँसि सुनता ज्ञान कौं, करि करि वहुत हुलास । रामचरण मन षसि-पड्यां, विलषै रालि निसास ॥ २४ ॥ मनका मोटा प्राणियां, ताका कैसा संग । टुक कै राजिस कारणैं, करै धर्म का भंग ॥ २५ ॥ अपनी त्यागी वस्तु सौं, फेरि विलवै जाइ । राम चरण उषल्यौ आहार, सुनहां पाछो षाइ ॥ २६ ॥ रोग भय्या सैं उषल्यौ, सुरति रही ता माहिं । राम चरण मनकू करै, अंतरि त्यागी नाहिं ॥ २७ ॥ इति मनकौ अंग संपूर्णम् ॥

विषय—मन की विषमता और उसके वशीकरणके लाभ ।

संख्या १७५ सी[२]. साखी टेक कौ अंग, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—

३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनरायन जी, स्थान—लभौआ, डा०—शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी।

आदि—॥ अथ साखी टेक कौ अंग लिख्यते ॥ राम चरन केहरि तनै, देखौ मतौ करार। भूष मरै दिन सात लौं, वोही तन नहीं करै अहार ॥ १ ॥ अनल पंष आकासमें, रहै अधर मठछाय। राम चरन धरि ना वसै, अपनी मतौ लजाय ॥ २ ॥ राम चरण मुकसाल विनु, हंसा चंचुन छाहि। सांग सर भर बागुला, क्रम्म कीट चुनि खाहि ॥ ३ ॥ देषो टेक चकोर की, पावक करै अहार। राम चरन छांड़े नहीं, जौ जलि वलि होवै छार ॥ ४ ॥ आसकरै संसार की, चात्रक रहै उदास। भूमि पड़ौ जलना पियै, एक राम विसवास ॥ ५ ॥

अंत—व्यापक ब्रह्म सवै सचराचर, ग्यान गुरु विन भेद न पावै। वाहिर साधन कोटि करौ घर, मांहि धर्‌यौ धन हाथ न आवै ॥ उलटि विचारि कै आपकूं षोजिए, बाहर की भरमां विसरावै। राम चरण कही हम देषि कैं, अैसैं ही संत महंत बतावै ॥ ७ ॥ ॥ साषी ॥ मतपंथ देष्या जोइ कै ॥ वहिर वंध अनेक। राम चरण सतगुरु मिल्या। गही नांवकी टेक ॥ १ ॥ इति भ्रम विधुसको अंग संपूरण ॥ ॥ अंग ३ ॥ सवैया—२४ ॥

विषय—सुमिरण, परिचय और भ्रम विध्वंस का वर्णन।

संख्या १७५ डी[२]. सवैया, रचयिता—राम चरण, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—$५\frac{३}{४} \times ४\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हुब्बलाल जी तिवारी, स्थान और डा०—मदनपुर, मैनपुरी।

आदि—॥ अथ सुवइया प्रथम सुमरण को अंग लिषंते ॥ राम कौ नाम मुकुट मेरै सिरतावोपमा वरणी नांहिं जावै। याही में जोग जिगादि तुला व्रत संजम नेम तपै सब आवै ॥ याही मैं तीरथ भेष सरुप सुनातेन भ्रम यौहीं संत गावै। होइ क्रिपालं दियौ गुरुदेव जी रांम चरण सों ही मन भावै ॥ १ ॥ गुरुदेव दया निज ग्यांन लह्यो, भ्रम फुसिउ झाइ दियौ फटकै। मन तांही कूं साहे सुनाथ भयौ, छकि छांड़ि रह्यौ रसके गटकै ॥ निसवासर ही पल पाव धरी, घर त्यागी प्रघरि ना भटकै। कहै राम चरण अैसा सुष सागर छोंड़िकैं छीलरि क्यं अटकै ॥ २ ॥

अंत—अंतर सांची प्रीतिसौं, जो कोई लेवै नाम। रामचरण सांची कहै, टेक निभावै राम ॥ २५ ॥ राम चरण कौप्यौ जगति, और दिलीकोमीर। राम भरोसैं राम की, पकड़ी टेक कबीर ॥ २६ ॥ जल पावक नग त्रास सूं, कसक्यौ नहीं कवीर। राम चरण सांचा तरकैं, उलटि पछ्यो पगि मीर ॥ २७ ॥ वही साधु वहि राम है, कछू टेक में फेर। राम चरण इक सांच विन, दुनियाँ आगैं जेर ॥ २८ ॥ इति टेककौ अंग संपूरण ॥

विषय—टेक का महत्व और उसका भक्ति में उपयोग।

संख्या १७६ ए. आश्चर्य अद्‌भुत ग्रंथ, रचयिता—रामदास जी, कागज—स्याल कोटी, पत्र—५०, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)-

३७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डूंगर पंडित, स्थान—पनवारी, डा०—रुनकुता, जि० आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सच्चिदानंद रुपाय नमः ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥ कथं ब्रह्म वृहतीत् व्यापकं ॥ यथं ॥ प्रार्थना मंगल रुपं ॥ व्यापक हौ जी तुम ॥ नाथ भक्त हितु विपु धरयो ॥ जदुकुल लीयो है औतार ॥ नन्द घर पग धरयो ॥ १ ॥ नंदनंदन व्रजराज करुणां करौ याहि तौ जीव की रजीनाथ अविद्या परिहरौ ॥ २ ॥ याही तौ अविधान करयौ है जीव अल्पज्ञ रहै ॥ ताते भूल्यो स्वरूप आपनौ नाम यहै ॥ नैहौत कल्र कौ पेरयौ ॥ अविधा नै जीव यह तुम विन कौन करैगौ नाथ जुनि साक यह ॥ ४ ॥

अंत—देखि हम तो कूँ कहा उपदेश कह्यो हौ ॥ अरुतु कहा विपर्जय करै है ॥ तब कोई यसका पूर्व कर्म मलीन हा ॥ सो तिनकौं संस्कार उदै होत भयौ ॥ सो सिधांती सुमिथ्या वाद करत भयौ ॥ मिथ्या भोगुं परि बैठ करि आचार्य्य ईश्वर कौ अभाव करत भयौ। भोगो परि अत्यन्त प्रेता दौरत भई ॥ सो मलीन संस्कार विक्रम करावत भयो ॥ सो मिसकै असाधि रोग भयौ अैसे असाधि रोग्यों की औषधि नहीं ॥ संसार मार्ग में भ्रमेंगे ॥ वेद पुराण शास्त्र महात्मा ॥ अैसेही है ॥ आश्चर्य वत् अद्भुत ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥ श्री रामदास जी महाराज ने ये ग्रन्थ जज्ञासीन के अर्थ प्रकट कीनो ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय वेदान्त है। वेदान्त के 'तत्व मसि' आदि सूत्रों की आलोचना की गई है। प्रार्थना तथा ब्रह्म का रूप, १—४ पृ०। विराट पुरुष की उत्पत्ति, ५—१०। पंचेन्द्रियों का ज्ञान, १०—११। पंच कर्म्मेन्द्रियाँ, ११-१२। पुरुषका अवतार, १३—१८। गुरुशिष्य का वेदान्त विषय पर विस्तृत वाद विवाद, १९—२४। विभिन्न आशंकाएँ एवं सन्देह पृ० २५—३५। अन्तर्यामी उक्ति, उत्तम अधिकारी वर्णन, तत्पद और त्वं पदका स्पष्टीकरण, योग तथा सतरज तम आदि गुणों का वर्णन, ३६—४९।

संख्या १७६ बी. रामायण, रचयिता—रामदास, कागज—बाँसी, पत्र—१६४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६२४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बुद्ध प्रकाश वैद्य, स्थान व डा०—होलीपुरा, तह० – बाह, जि०—आगरा।

आदि—॥ हनुमान छप्पय ॥ गोपद कीन्हों सिन्धु करे मसक तँह दानव ॥ राम नाम गुन सुक्ति पहिरि माला भव मानव ॥ अनिल आत्म अंजनि वन्द सीता दुख मोचन ॥ बड़े धीर कपि धीर अछत लंका हा रोचन ॥ मनोज वेग मारुत अधिक, खल जीते बुधि वल वड़े। श्री रामदत्त कर पूत सब, सरनदास छोड़े बड़े ॥ × × × ॥ ब्रह्मा दोहा ॥ जग उधार को सार सुनि- नारद मुनि उपदेसु। पढ़े गुनै याके सुनैं, मन को मिटे कलेस ॥

अंत—॥ राम जू ॥ द्वै मैं करत एक न वनै ॥ भये दीन मलीन राघव मतौ बूझत मनै ॥ लछिमन को मारिये यह वड़ो आकस कर्म ॥ प्रतिग्या जो जाइ जब ही जाय मेरे धर्म ॥ गई मोतें सती सीता मिटे नाहीं सोच ॥ परयो संस्यो और मोंको भई भारी पोच ॥ सीय वसिष्ठ सुमन्त तीनो काल जानो मुक्त ॥ बैठो मोइ समुन्द्र मोसों कहौ कीवों जुक्त ॥

× × × ×

विषय—(१) राम, हनुमान, आदि देवों की प्रार्थना । (२) रामजन्म, ताड़कादि वध, धनुष भंग, सीता विवाह । (३) अयोध्या आगमन, वनवास को जाना आदि ।

संख्या १७६ सी. अथ सूक्ष्म वेदान्त, रचयिता—रामदास, कागज—स्यालकोटी, पत्र—१४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डूँगर पंडित, स्थान—पनवारी, डा०—रुनकुता, तह०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—॥ अथ सूक्ष्म अध्यारो उपवाद लिष्यते ॥ किं प्रयोजनं ॥ जीव के कल्याण के अथ ॥ सत् चिद् आनन्द एक अद्वैत ब्रह्म तिस्मै सूँ अस्ती भाति प्रिय रूप होत भया किस पार मिथ्या जड़ दुष उपर ॥ सो माया कौ कार्ज नाम रुप आकार देहादि कति सपरवो भाती परमाता परमान प्रमती भाव कूं प्राप्ति होत भया ॥ सो जीव ॥ प्रमत्ती विषै तिसकै अर्थ कर्म्म करत भया ॥

अंत—तुम परमातमा अचल अविनासी मैं जीव आतम पद लाजूँ हूँ ॥ चक्रवर्ती सुतो भ्रष्ट होय तब जग में ताहि श्रम भारो ॥ रामदास बल हीन भये हरी धन विद्या देह परवारा है निर्बल केवल हो पुरषोत्तम ॥ साषि वेद मैं यह भारी प्रभुजी मै शरण तुम्हारी में आयौं हुँ ॥ इति श्री महा पुरषोत्तम ईश्वर की प्रार्थना सम्पूर्ण ।

विषय—सूक्ष्म, स्थूल ब्रह्म का वर्णन, पृ० १–४ । सांख्यसिद्धांत तथा रागमय का वर्णन, पृ० ५–८ । परमतत्व, माया के तत्व, भिन्न-अभिन्न दर्शन, पृ० ८–१० । सांगीत स्तोत्र; तत्व दर्शक माल, शब्द-राग, पृ० १०–१२ । ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति, तथा महा पुरुष पुरुषोत्तम की प्रार्थना, पृ० १२–१४ ।

संख्या १७७. फुटकर कवित्त, रचयिता—रामदयाल उपनाम रामानन्द, स्थान—चन्दन शहर (इटावा), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वागीश्वरानन्द जी पाण्डेय, स्थान व डाकघर—चन्दन शहर, जि०—इटावा ।

आदि—॥ श्री ॥ कवित्त अंतर लापिका छप्पे ॥ उरगन पति है कौन कहौ हर की गौरी को । भगवत की कस दृष्टि कहा कासी करनों को ॥ रवि प्रकाश का नाश दंड दुष्टन को दीजे । पिय विरहिन को हड़त गुरू चरणन कीजै ॥ कहु विन खायें कह खाय सोई सदेव राषै सरम । रामद्याल उत्तर परम सो वासर तज कान गम ॥१॥ धाता लिपनन कहां कहौ वनवासी नर को । रजक कहा हर लेत अस्त्र का कर हल धर को ॥ अधोगती को करै कृषी काकौ अति चाहे । मष मैं बांधो कौन कहा कहिये भट वाहै ॥ कहु कहां चराचर धरे सोई सदैव आधार भल । रामद्याल उत्तर यही भाभी मैं हम जव वथल ॥ २ ॥ सवैया ॥ सूरज तेज प्रकास जहाँ तहँ रात कहाँ दिन चंद्र न आवै । दींजर लाग जमै न कछू तम देष चकोर दुषी पछतावै ॥ पंडित औ कविता जन कौ वकवाद वृथा गुलु सोर सतावै । त्यौं कवि राम-

याल कहै ठग चोर छोरन भोर न भावै ॥ १ ॥ दोहा ॥ रवि न रात दिन चंद्र, नहिं जरदीं तम न चकोर । कविता पंडित चोर जब, चाहत भोरन सोर ॥ १ ॥

अंत—ख्याली भूत पाली मुंडमाली औ कपाली संग, काली औ कराली करैं काल के कलेवेरी । काशी के मवासी सुभतासी चरचासी करैं, दासी सुरतासी तासु पाहि नाहिं भेमेरी ॥ जंगम जती सो सती धरती कौं धरै करै, करै वेनती को फेर फेरकैं फिरेवेरी । खेवै क्यों न खेवै मुक्त देवै क्यों न देवै देव, देवन के देवै महादेवै क्यों न सेवैरी ॥ १३ ॥ जोगिन के जोग सिद्ध भोगिन के भोग वृद्ध, रोगिन के रोग दोष दूरि दर्श दीन्हे से । कलि मल नसात चित चिंता मिटि जात होत, बुद्धि को प्रकाश शंभु शरण चरण चीन्हे से ॥ पुर मुनि मन भयो वेद ब्रह्मा विश्नु गायो जस, पायो ध्रुव धाम वामदेव नाम लीन्हे से । रामद्याल है दयाल सव विधि वन खंडीश्वर, जान परत मेरी मुक्ति तेरी भक्ति कीन्हे सै ॥१४॥ कोई कंठ कंठी वाँधें कोई संख झंडी कांध, कोई भेष कीन्हें ब्रह्म दंडी हाथ हंडी है । कोई मृगछाला, वाघछाला ओढ़ि आवत है, कोई पंच धूनी वीच बैठे झारखंडी है ॥ कोई जात जगन्नाथ राम नाम दरसन कौं, कोई जोति ज्वाला मुखी से वैचर्ण चंडी है । जाकी जस भावना फलैगी प्रेमता की तस, रामद्याल मेरे प्राण पालत वल खंडी है ॥

विषय—कुछ देवगणों की स्तुति तथा महादेव, कृष्ण, और देवी आदि की वन्दनाएँ एवम् काशी इत्यादि तीर्थों का महत्व । उद्धव और गोपियों का संवाद तथा कुछ श्रृंगार रस के कवित्त ।

संख्या १७८. रघुनाथ विजय, रचयिता—रामदयाल चतुर्वेदी (होलीपुरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १९१२ सन् १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ईश्वरीदास चतुर्वेदी, स्थान—होलीपुरा, तह०—किरावली जि०—आगरा ।

आदि—|| अथ रघुनाथ विजय लिख्यते || एक रदन मुख दहन हरण सव पाप ताप भय || चन्द्रभाल गज वदन विघन वर हरि किशोर वय || मुक्तिमाल गल शुभ्र चारि भुज आयुध धारीय || शुभ्र जासु गुण गाथ दुष्ट बुधि सकल विदारीय || कहि राम दयाल सिति कंठ सुत गौरि नन्द वर दीज्जये || रघुनाथ विजय वर्णन करौं, विमल बुद्धि वर किज्जये || × × × सोधि सबै प्रति मन्दिर अंदररावण गेह गयो हरषाई || चित्र विचित्रन धाम अनूप लखे चित मानहुँ लेत चुराई || सैन किये तेंह रावण दीख सो जानकी मात परी न लषाई || सोचन लाग सुयल करौ जिहिं रामदयाल हिये हरषाई ||

अंत—कवित्त जैसे ते भारथ पारथ की पैज राखी: वीरता विजय दीन्ही कौरव संहारे हैं । जैसे जार लंक पल एक ही में छार करी, सुखद सुनाय वैन सीता सोक टारे हैं || जैसे पाय अयुष सुमेर तें सिषिर लायो, सुखद समूह प्राण लषन के उवारे हैं || तैसे ही उवार डार विपति कपीश नाथ, राम दयाल कहैं नाथ सरण तुम्हारे हैं || × × ×

विषय—हनुमान जी का लंका जाना और रास्ते में सुरसा से मुठभेड़ होना, लंका की शोभा का वर्णन, लंकिनी वध, पृ० १-४ तक । लंका में सीता जी को खोजना, विभीषण

से भेंट होना और उसका विदेह कन्या का पता बतलाना, पृ० ४-६ । रावण का सीता जी को भय दिखाकर चला जाना, त्रिजटा का स्वप्न सुनाना, लंका का उजाड़ना, तथा हनुमान का सीता की खबर लेकर वापिस आना, पृ० ६–१० ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का जन्म कुँडली द्वारा सं० १८८१ फाल्गुन कृष्णपक्ष गुरुवार अष्टमी का है । इनके पिता का नाम हरदत्त राय था । इनकी मृत्यु सं० १९६४ कुँआर कृष्ण ३० को हुई । इन्हें ज्योतिष तथा वैद्यक का अच्छा ज्ञान था । दयानन्द जी से इनकी भेंट हुई थी । कहा जाता है अपने मूल सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में दयानन्द ने इनकी चर्चा की है । इन्होंने फुटकल बहुत सी कविताएँ बनाई हैं । बहुत सी नष्ट हो गईं । अब जीर्ण रूपमें कुछ फटे पत्र मिलते हैं । इनके कवित्त एवं छप्पय वीर रस के अधिक पाये जाते हैं ।

संख्या १७९. सुषसमूह, रचयिता—रामकृष्ण, कागज—बाँसी, पत्र—४०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामशरण वैद्यराज, स्थान—विद्यापुर, डा०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ गनपति गुणपति वेदपति, श्री पति सुरपति देव ॥ विजै करवसिंह वाहिनी वैद्य धन्वजर सेव ॥ कर जोरे विनती करौं, और नवावों सीस ॥ कलि विचित्र नर भिषग्न जन, चूक करो वकसीस ॥ विविध सास्त्र कीनो मथन, सकल जीव सुषकार ॥ सुष समूह पुस्तक कियो, औषधि अन्न विहार ॥ वैद्य सुहृदी वैष्णव, रामकृष्ण हितकारि ॥ सुष समूह पुस्तक रच्यो, नाना ग्रंथ विचारि ॥ सतगुरु चोबे जगत मनि, निज मथुरा अस्थान ॥ पीतम राम कृष्ण सुत, भाषा करी वषान ॥

अंत—अथ मार्ग सोषी जक्ष्मा लक्षणं निदान ॥ दोहा सूषे मुख णल शिथिलता, न जाइ अंग सों सोइ ॥ स्वास कास अस घास युत, नष्ट कहत छवि सोइ ॥ अथ मार्ग सोषी चिकित्सा । आक फूल ले एक पल, त्रिकुटा फूल समान ॥ गुटका गुड़ सो बाँधिये, एक अक्षर परमान ॥ क्षय षासी पुनि न रहे, उदर सूल मिटि जाय ॥ स्वास कास गद ज्वर घटै, पीतम कह्यो सुनाय ॥ × × ×

विषय—रोगों के निदान एवं उनकी चिकित्सा ।

संख्या १८० ए. रामरक्षा, रचयिता—रामानंद, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौ० जोधा सिंह जी, स्थान—सामपुर, डा०—जसराना, जि०—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ ओं संझा तारनी सर्व दुःष निवारनी ॥ संझा तरें सर्व दुष हरें । अषंड मंडलं निराचरं व्यापिक एन चराचरं ॥ १ ॥ दर्सनं तत पादारतस्मै श्री गुरुभे नमः ॥ आदि गुरूदेव अंत गुरूदेव मध्यगुरुदेव सर्व गुरुदेव ॥ २ ॥ अलष गुरुदेव के चरनारवृंदं नमस्ते नमस्कारं । हरंत व्याधि सकल संताप कलह कल्पना दुषदालिद्रं ॥३॥

षंड षंड तस्मै श्री राम रक्ष्या निरंकार वाणी। अनुभय तंत लैनिर्भय मुक्तिजानी ॥ ४ ॥ बादिया मूल देषिया अस्थूल गर्जिया गगन जहाँ ध्यान धुनि लागी रहै। त्रिगुण रहै सील संतोष श्री राम रक्ष्याउचरंते आकार जाग्यो रहै ॥ ५ ॥

अंत—वाघ वाघिनी को करै काराषेचरी भूचरी छेत्र पाला धुआई फिरती रहै। अलष निराकार की जो ग्रह दूत पाषान टारया ॥ १८ ॥ हाथ चक्र ले वाढ़ वाढ़धा पंथमें पंथमें घोरमें संचोरमें। चोरमें सोर में सोर में देश पर्देस में राज के तेज में अग्नि की झरमें ॥ १९ ॥ षेलुको मारस्ते सो उत्तमोल्ते सो उतों सांकड़े षाते पीते आपुरक्षाकरै ॥ चरन औरु सीसलै अपु से उतारहै गुप्त को जापुलै गुप्त पढ़ता रहै ॥ २० ॥ जीतिया संग्राम फिरि सूधा किया तर्जंति रूमनारी। गर्जिया गगन वाजीया वैन असंष सब्दलै तुत्तीसारं ॥ गुरु रामानंद ब्रह्मज्ञानी राम रछ्या उघरै पानी ॥ २१ ॥ इति श्री गुरुरामानंद जी की राम-रछ्या ॥ संपूर्ण समाप्तं ॥

विषय—रामरक्षा स्तोत्र।

संख्या १८० बी. रामरक्षा, रचयिता—रामानन्द जी, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—५½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ला० छैल विहारी लाल जी, स्थान—अँराव, डा०—भारौल, जि०—मैनपुरी।

आदि—॥अथ रामनंदजू की रामरक्षा लिष्यते ॥ ॐ संज्ञा तारनी सर्वदुःख निवारनी ॥ संज्ञातः सर्व दुःख हरः पिंड प्राण की रक्षा श्री निरंजनी करै ध्यान धूपंम पुष्पकं पंचेंद्री भूतासतां ॥ ॐकार विंदु संजुक्तं नित्यं ध्यायंति संयोगिनः ॥ १ ॥ कामदं मोषदं चैव ओं-काराय नमे नमः ॥ ओं अषंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ॥ तत्पदं दर्सितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥२॥ ओं आदि गुरुदेवः अंत गुरुदेव मध्य गुरुदेवः। मध्य गुरुदेव अपिल गुरुदेव सरण गुरुदेव मध्य गुरु के चरनार विंदं ॥ नमस्ते नमस्कारं हरत सकल संताप दुष दारिद्र हरणं कल्पना रोग पीड़ा मथवान व्यापै सकल विस्व विष षंड षंडे ॥

अंत—श्री रामचंद्र वुचरंते लक्ष्मण जी सुनंते पुण्य वटंते पाप घटंते श्री रामरक्षा हनुमंत भाषते। दुष्ट दैत्यं आवत रामराषंते ॥ योगिनी करै भक्त वक्षल तापर कर डीनि नर करै ॥ उलटि द्रष्टिताही कुंपाई ॥ इस पिंड प्रान की श्री रामरक्षा करै ॥ ॐ अज आसन वजू किवार वार वारह वजूले रुधु द्वार प्राण यो कोई करै वजूषहार ॥ उलटवीर वाई कूं षाय दै हमारें हरि वसै देषै वे अनंत श्री राम लक्ष्मन रक्षा करै चौकी हनुमंत वीरकी ॥ वजू का कोट लोह किवार चौकी राजा रामचन्द्रजीनकी लक्ष्मन जी हनुमंत जो सुनुते पाप हरंते पुन्य लभंते सत कीले मध्यान काले संभूया काले स्मरंते नित्यं विष्णु लोकं सगछति ॥ ॥ इति श्री रामानंद जी की रामरक्षा संपूर्ण ॥

विषय—रामरक्षा स्तोत्र।

संख्या १८० सी. राम रक्षा, रचयिता—गुरु रामानन्द, कागज—देशी, पत्र—४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—

नागरी, लिपिकाल—सं० १८५४, प्राप्तिस्थान—श्री पं० राममूर्ति जी, स्थान—बल्टीगढ़, डा०—शिकोहाबाद, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ऊं संझा तारनी सर्व दुख निवारनी संझा तरैं सब दुख हरैं अषंड मंडलं निराचरं व्यापक एन चराचरं ॥१॥ दर्सनं तत पादारतस्मै श्री गुरुभ्यो नमः आदि गुरुदेव अनंत गुरुदेव मध्य गुरुदेव सर्न गुरुदेव ॥२॥ अलष गुरुदेव के चरनार वृंदं नमस्ते नमस्कारं हरंत व्याधि सकल संताप कलह कल्पना दुष दालिद्रं ॥३॥ षंड षंड तस्मै श्री राम रक्षा निरंकार वाणी अनुभय तंत लैनीयि मुक्ति जानी ॥४॥

अंत—षेलते मालते सोउते साकड़े षाते पीउते आपु रक्षा करै। चरन और सीस लै आपु सेउता रहै गुप्त को जापु लै गुप्त पढ़ता रहै ॥ २० ॥ जीति या संग्राम फिरि सूधा किया तजंति रूम नारी। गर्जिया गगन वाजीया वैन असंष शब्द लै तुत्ती सारं॥ गुरु रामानंद ब्रह्म ज्ञानी राम रक्षा उधरै प्रानी ॥ २१ ॥ इति गुरु रामानंद जी की राम रक्ष्या संपूर्ण ॥ समाप्तं संवत् १८५४ मिती पौष वदी ६ सनिवासरे ॥ श्री रामचंद्र सहाई ॥ श्री रामचंद्राई नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ यद्याक्षरं परं भ्रष्टं, पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्: तत्सर्वं छम्यतां देव, प्रसीद परमेश्वरं ॥ रामचन्द्र सहाई ॥ श्रीराम ॥

विषय—राम रक्षा स्तोत्र।

संख्या १८० डी. राम रक्षा स्तोत्र, रचयिता—श्री गुसाईं रामानन्द, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—५×४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित राधेश्यामजी, स्थान—स्वामीघाट, मथुरा।

आदि—॥ श्री रामाय नमः × × श्लोक × × ऊं अस्य श्री राम रछ्या निराकार वांणी अनभैत तलै निरभै मुक्ति जानी ॥ बांधिया मूल देषिया अस्थुल ग्रजिया गगनि धुनि ध्यान लागा ॥ त्रिगुण रहता रहै सील संतोष मांही ॥ श्रीराम रछ्या दीयां आकार जाग्या पंचत तलै पचीस प्रकृति पांच वाय पंच भू आत्मां समि दिष्टि घेरि येक आनी पान अपान उदान व्यान समान मिलि अनहद सवद की षबरि जानी ॥ उलिटिया सूर ग्रह डंक छेदन कीया ॥ पेषिया चन्द तहाँ कला सारी ॥ अग्नि प्रगट भई जरा वेदन जरी डंकिनी संकनी वेरि मारी ॥

अंत—बैकुंठ निजु धाम। जहां वसंत अच्युत घन स्याम सकत संत हरि सरुप। कवल नयन अनूप ॥ समै मूर्ति आनंद। जन चकोर कृष्णचंद ॥ सइ मृत पीया। बिषि का दरद सब दूरि भागा ॥ कंवल दल कंवल दल जोति ज्वाला जगी ॥ भँवर गुजार अकास लागा रोम नाडी व्याधि तु चासोषंत बाजंत बैन उघरंत नैन तिति पोषत सबद त्रिकुटी सारंग ॥ स्वामी रामानन्दजी ब्रह्म ज्ञानी श्रीराम रछ्या दीया थिर हो प्रानी ॥ पंथे घोरे संग्रामे सत्रु संकटे वंचते ॥ इति श्री गुसाईं रामानन्दजी राम रक्ष्या सम्पूर्ण ॥

विषय—भगवान रामचन्द्रजी की प्रार्थना।

संख्या १८० ई. राम रक्षा, रचयिता—गुरु रामानन्द, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५×३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० तोतारामजी, स्थान—आमरी, डा०—शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी ।

आदि—॥ श्री भगवानुवाच ॥ ज्ञानं परम गुह्यं मे, यद्विज्ञान समन्वितम् । सरहस्यं तदंगं च गृहाण पिंड निर्मल भया ॥ पिंजरे पढ़े सुवा रोग पीडा मद्य वाज व्यापै रामे रोमररं द्वार उंचरंत वाणी । श्रवण दे नाद सुनि दृष्टी अरु मुष्टि भया रंग मेला ॥ सुनिका देह ऐ सुंन सुंन सुनाता रहे आपकी आपसौ जाधी लागा सरिरसों सरीर मिलि सरीर निरषता रहै जीव सूं जीव मिलि ब्रह्म जाग्या नयन सुं नयन मिलि वयन निरषत रहैं मुष सूं मुष मिलि बोल बोल्या श्रवण सूं श्रवण मिलि नाद सुनता रहे सवद सूं सवद मिलि सवद पेल्या निरत सूं विरता मिलि सुरत आवै । रंग सुरंग मिलि राग गावै ॥

अंत—रामजी पढ़ते लक्ष्मणजी सुनंते, हनुमान सुनंते । वीजी मंत्र त्रिकाल जपंते, सो प्राणि लागे रहे तैसो पारंगते ॥ अजर आसन वजर किवाड़, वजूटिया दसूं द्वार । जो करै पाप नर को द्योत, उलटि काल ताहि कौ षाय ॥ जो सुपरा मुष राम निरंजन डरै, ताकी देव अनंत रक्षा करै ॥ ९ ॥ इति श्री गुरु रामानंद विरचितं श्रीराम रक्षा संपूर्ण ॥

विषय—राम रक्षा स्त्रोत्र ।

संख्या १८१ ए. शनि कथा, रचयिता—रामानन्द, कागज—बाँसी, पत्र—३३, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२० = १७६३ ई०, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० नन्दकिशोर, स्थान—सेई, डा०—छाता, जि०—मथुरा ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री सनिसर देवताजी की कथा लिख्यते ॥ दोहा—शंकर सुत के चरन गह, करन सरन सब काज । फील वदन मति सील करि, लम्बोदर महाराज ॥ उमा सरस्वती दधि सुता, सावित्री समयेक । जगराणी जपंति सब नासत कुबुधि अनेक ॥ अलष येक तुपलकस, लषै न कोऊ पार । रामानन्द कु दीजिए, वेद बुधि आधार ॥

अंत—दोहा—एक सहस अर आठ सै, वरस बीस में जानि । कृपा करी गणपति, रच्यो ग्रन्थ सुखमानि ॥ रामानंद नीधड़ वस, नीर भगाव राम । येह नव ग्रह रूपकु निसिं, कोइ करु प्रणाम ॥ जै कोई चाहै जगत में, कुल कुटुम्ब अर चैन । तो श्रवना सुणने कथा, प्रतक्षें दीषा-वैचैन ॥ इति श्री सनीसर देवताजी की कथा सम्पुरणं, संवत् १९१५ साके सालि वाहने १७८०

विषय—उज्जैन के राज्य का सुन्दर वर्णन करते हुए कवि ने शनि ग्रह के संबंध की बहुत सी कथाएँ कही हैं । जिन राजाओं पर शनि की साढ़ीसाती लगी वे सब आपत्तियों के शिकार हुए और अन्त में शनि को शान्त करने से दुःखों से मुक्त हुए ।

संख्या १८१ बी. शनिचर की कथा, रचयिता—रामानन्द, कागज—बाँसी, पत्र—२८, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—

३७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि–नागरी, रचनाकाल–सं० १८२० वि० = सन् १७६३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं प्रभुदयाल पुरोहित, स्थान—अकबरा, डा० रुनकुता, जि०—आगरा।

आदि—अथ श्री सनीचर जी की कथा लिष्यते ॥ दोहा संकर सुत के चरन गहि, करन सरन सबकाज ॥ फिलवदन मत सिव करि, लम्बोदर महाराज ॥ उमा सरसुता दधि सुता, सावित्री सम येक ॥ जगराणी जयती सदा, नासत कुबुधि अनेक ॥ अलष येक तुष लक सब, लषे न कोउ पार। "रामानन्द" कु दीजये, वेद बुधि आगार ॥

अंत—जिनके घर में शनि कथा, विप्र कहत है आन ॥ भागि जाय तिनके सदा, दुष दलीदर जान ॥ सुन कै दिन जाग्रण करै, कथा सुणै चितलाय ॥ कोटि पीड़ तनकी मिटै, अण चित मकुल पाय ॥ एक सहस अर आठसै, वरष बीस समजान ॥ करी कृपा गणपति सकत, रचो ग्रन्थ सुष मान ॥ इति रामानन्द कृत शनिकथा।

विषय—१—शनिश्चर देव का माहात्म्य, २—उनकी पूजा की विधि। ३—विक्रमार्जीत पर आपत्तियों के पहाड़ टूटना और अत्यन्त निराश होना अन्त में शनि देव की पूजा से उनके अच्छे दिनों का आगमन। ४—एक सेठ का आर्थिक न्यूनता के संकट में फँसना, यहाँ तक कि दाने दाने को मोहताज हो जाना किन्तु, एक पडित के बतलाने से उसका शनि की आराधना करना और उसका पुनः धनिक हो जाना। ५—शनि देव की प्रार्थना।

संख्या १८२. लगन सुन्दरी, रचयिता—रामनाथ, कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१३२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गोस्वामी पातीराम जी, स्थान—पैगू, डा०—भारौल, जि०—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री लगन सुन्दरी लिखते। सिद्ध शदन संकर सुवन श्री गज वदन गणेश। तिन्हे वन्दि पुनि नाइ सिर पूजत चरण महेश ॥ वालक जन्म के विचार। पुत्र जन्म के भेद सव—लक्षण कहो समझाय। जाको जैसो गृह परै—ते फल देत वताय ॥ राह परे जाइ दिसा—सिर हानो तहाँ जान। मगर दिसि पापो फटो—वान सो टूटो जान ॥ रवि दीपक तिहुँ ओर है—शनि लोहा जह होइ। गुर पीतरि जा विधि मिले—लगन जानिये सोइ ॥ अंत—अथ ऐकार्गल ॥ असुनि और विसकुंभ सों स्वाति प्रीति सन होइ। सौभाग्य विसाखा जानिए—भरनी आयु स्मान सोइ ॥ कति कासो भन सोक है—अनुराधा अति गंड। सुकमी रोहिनी जेष्टा—वैधृत होइ प्रचंड ॥ × × × मेष कर्क के सूर्ज में, दग्धा छटि पहिचान। वृषे कुँभ और चोथिहै—देखि ग्रन्थ जहमान ॥ धन मीन के सूर्ज में—दिउज कही जहु जान। रामनाथ अव वरजिये—दग्धा तिथि पहचान ॥ इति श्री रामनाथ कृत लगन सुन्दरी विवाहु—प्रकर्ण शक्षमोध्याय सम्पूर्ण ॥

विषय—(१) व (२) प्रथम अध्याय पृ० १ से ७ तक । दू० अ० ७ से १४—बाल जन्म लग्न घरी और राजयोग । लगन घरी (इ), नवग्रह फल, मृत्यु जोग और नव ग्रह पहिचान । (३) तृतीय अध्याय पृ० ७ से २२ तक—एक ग्रह फल (चन्द्रादि का पृथक पृथक फल) कथन । (४) चतुर्थ अध्याय पृ० २२ से ३५ तक—द्विग्रह फल, त्रिग्रह फल, तथा अन्य फल (तुंगफल) । (५) पञ्चम् अध्याय प० ३५ से ५७ तक—जन्म पत्री का फल, संवत् फल, नंदा तिथि फल, लग्न फल, राशि फल । गण फल, मित्रग्रह फल, तुंग ग्रह तथा रिपुग्रह फल । निवांशा । नक्षत्र फल । ६—षष्टम् अध्याय ५१ से ५७ तक—वर्ष निकालने का विधान, मास दशा, मूलन को वास । ७—सप्तम् अध्याय, पृ० ५८–७४ तक—वर्ण, वर्ग, विधि, षड़ाष्टक, प्रीति शुभाशुभ, नक्षत्र प्रीति, स्वामी प्रीति, स्वामी विरोध योनिक्षय, नक्षत्र विवाहीक लग्न अँधरी, लग्न वहरी, अन्य विवाह सम्बन्धी तैलादि भद्रादि फल । मर्मवेध और लता पतादि फल वर्णन ।

संख्या १८३. सत्यनारायण कथा, रचयिता—रामप्रसाद गूजर, कागज—मूँजी, पत्र—१४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८=१८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जानकी प्रसाद जी, स्थान—पृथ्वीपुरा, डा०—किरावली, जि०—आगरा ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा चरण युगल गणनाथ के, सुमरत तम सव नास । ज्ञान खान अघहान सब, हृदै होय प्रकास । गण नाथहिं उर सारदाहिं, सुमरौं बारही बार ॥ तुम प्रसाद कथा कहि, होहु वेगही पार ॥ × × × भाषा भनित अति प्रेम सों, लीजो सुजन सुधार ॥ गुरजर राम प्रसाद द्विज, लघु मति मन्द गमार ॥

अंत—सकल द्विजनि कुँ नाय सिर, पुनि पुनि करैं प्रणाम । साधु सन्त सज्जन चरण सुमिरौं आठौं जाम ॥ रामप्रसाद रघुनाथ पर, माँगत हैं कर जोर ॥ तुम सुमरन और भजन में, सदा रहे मन मोर ॥ इति श्री नारायण कथा कहैं बहुत ही भाव भाषा कही चतुर्थ अध्याय ॥ संवत् १९१८ शाके १७८३ लिष्यतं ब्राह्मण किसूँ लाल जी पन्हवारी मध्ये ॥

विषय सत्य नारायण की कथा का मूल संस्कृत से हिंदी में पद्य-बद्ध अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत पद्यात्मक अनुवाद के कर्ता राम प्रसाद भाट हरदोई निवासी से भिन्न हैं । ये जाति के गुर्जर हैं जो आगरा भरतपुर में बहुत से पाये जाते हैं । इन लोगों की जाति नीच समझी जाती है । कहा जाता है:—अहिर गड़रिया गूजर । तीनों खोजे अजर । कारण एक पशुपालन आदि का काम ही इनके यहाँ होता है । रचनाकाल अज्ञात है । कविता साधारणतया अच्छी है । खोज में कवि नवीन है ।

संख्या १८४. भाग्य बोधिनी ग्रंथ, रचयिता—रामेश्वर, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२०, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—राम स्वरूप शर्मा, स्थान—वीदमपूर, पो० आ०—किशनी, जि०—मैनपुरी ।

आदि—प्रश्न देखने की रीति ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भाग्य बोधनी ग्रंथ रामेश्वर कृत लिख्यते । प्रश्न देखने की रीति यह है कि आगे कोष्टक में लिखे ३२ प्रश्नों में जो प्रश्न देखना चाहते हौ सो पहिले अपने मन में सोच लो। २—अपने मन में प्रश्न सोचने के बाद उत्तर से दखिन की ओर चार पंक्तियों में लिखौ जैसी नीचे लिखी हुई हैं सो लिखते समय गिन्ती नहीं करनी

। ० ०
। । । । । । । । । । । । । । । । ०
। । । । । । । । । । । । । । । । ० ०
। । । । । । । । । । । । । ०

३—जो रेखा ऊपर लिखी हुई हैं उनके माफक रेखाएँ लिखके पीछे से अलग अलग एक एक पंक्ति की रेखाओं की गिनती करौ जिस पंक्ति की रेखाएं विषम हो जायगी उनका एक ꕥ चिन्ह उसी पंक्ति के सामने वा दूसरी जगह धरि लेव और जिस पंक्ति की रेखाएं सम हों उनको दो चिंह (ꕥ ꕥ) उसी पंक्ति के सामने रख दो, १, ३, ५, ७, ९, ११ ये विषम हैं और २, ४, ६, ८, १०, १२ ये विषम हैं।

अंत—स्त्री पुरुष के हस्त का भेद। काम काज से हाथ की स्थित रेखाओं का स्वरूप बदल जाता है क्योंकि काम काज से हाथ नरम व कठिन होते हैं और अंगुरी मोटी हैं। स्त्री पुरुषों के हाथ में विशेषता होती है इससे जोजना अनुराग वांछा दोनों में भेद है स्त्री में पुरुष से अधिक अनुराग है इस कारण उसका हाथ अग्र सहित होता है स्त्रियों की अंगुरियां पोर रहित सूक्ष्म हों तौ जोजना में विशेष सामर्थ नहीं अंगुष्ठ वड़ा हो तो जागरुक प्रेम सूक्ष्म ज्ञान सुभाव सूक्ष्म ज्ञान भावित्व स्त्रियों का सामान्य लक्षण है स्त्रियों की अंगुरी गोखुर के रुप को धारण करै तो भरता की उसपर अति प्रीति हो तौ सकल गुण संपन्न विशेष अनुरागवता मूर्त कामाश्री होय स्त्रियों की अंगुरियाँ नाना प्रकार की होती हैं इससे वे जानकारी इच्छा विषयी भूता होती हैं॥ स्त्रियों की अगुरियों में परस्पर मिलने से छिद्र न हों तौ उदारता रहित होते आशा युक्त होती हैं विशेष भेद पुरुष सामुद्रिक से जान लेना रेखाओं के और चिन्हों को भी देख के फल जानना॥ इति श्री रेखाओं के और चिन्हों को भी देख के फल जानना इति श्री भाग्य बोधनी ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः लिखा शिवदीन भाट वैसाख सुदी पंचमी संवत् १९३१ वि० भोलेपुर स्थान की छावनी राम जी सदा सहाय करै

विषय—इस ग्रंथ के ४ भाग हैं जो इस प्रकार हैं :—(१) प्रश्न भाग, १ से ३४ पृष्ठ तक। इसमें प्रश्न व उत्तर शुभ अशुभ लिखे हैं। (२) स्वप्न भाग, पृष्ठ ३५ से ७८ पृष्ठ तक। इसमें स्वप्न के भले बुरे फल और उनके निवारण की रीति लिखी है। (३) शकुन फल भाग, पृष्ठ ७९ से ९३ तक। इसमें छींकों, पशुओं और चिड़ियों एवं कीड़ों के शुभ अशुभ फल लिखे हैं। (४) सामुद्रिक भाग, पृष्ठ ९४ से १११ तक। इसमें हाथ की रेखाओं, अंगुलियों आदि से भले बुरे फल लिखे हैं।

संख्या १८५. रसखान (संग्रह), रचयिता—रसखान (स्थान—दिल्ली, बृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—२६८, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण

(अनुष्टुप्)—६९२, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मया-शंकरजी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथजी का मंदिर, डा०—गोकुल, जि०—मथुरा ।

आदि—अखियाँ अखियाँ सो सकाय मिलाय हिलाय रिझाय हिये भरिबो । बतियाँ चित चोरण चेटक की रस चाल चरित्रन उच्चरिबो ॥ रसखानि के आनि सुधा भरिवो, अधरान पै त्यों अधरा धरिबो । इतने सब मैन के मोहनी जंत्र पै मंत्र वसीकर सी करिबो ॥ अंगनि अंग मिलाय दोऊ रस खानि रहे लपटे तरु छाहीं । संग निसंग अनंग को रंग सुरंग सनी पियदे गल बाही । बैन जु मैंन सु एन सनेह को लूटि रहे रति अन्तर जाही । नीबी गहे कुच कंचन कुम्भ कहे बनिता पिय नाहीं जू नाहीं ॥

अंत—धीरज क्यों न धरो सजनी पिय तो तुम सो अनुरागेइगो । जब योग वियोग को आन बने तब योग वियोग को भागे इगो ॥ निश्चै निरधार धरो जियमें रसखान सबे रस पावेइगो ॥ जिनके मन सो मन लागि रहे तिनके तन सो तन लागेइगो ॥ जब ते इन सौत सवागनि ने मुख सों मुख जोरि लियो रसरी । निस धौस रहे अधरनि धरी नित गावत है पियके जसरी ॥ मधुरे मधुरे सुर बाजत हैं इन प्रान लिए सबके कसरी । हम तो व्रज को बसिवो ही तज्यो व्रज वैरिन बासुरी तु बसरी ॥

विषय—रसखान की भक्ति रस पूर्ण तथा शृंगारात्मक स्फुट कविताओं का संकलन किया गया है ।

संख्या १८६ ए. गिरिराज वर्णन (अनु०), रचयिता—रसिकदास, कागज—बाँसी, पत्र—८, आकार—८ X ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हरिदत्तजी, स्थान—चिकसौली, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि— X X X बार बार बन्दौ गिरिराय । शैल रूप ह्वै पुरुषोत्तम निज, व्रज भी रही दरसाय । जे जन नित प्रति रज में लोटत, तिनके सकल ताप नस जात । धरणी तत्व अलौकिक जिनको, होत पर्म सबही सुख गात । ब्रह्मान पान नित निज कुंडन में, जे जन करत नियम मनधार । नीर तत्व अति उत्तम जिनको होत महा फल अन्त न पार ।

अंत—श्री हरिदास वर्य्य की महिमा को नाहिन कोउ पावत अन्त । सेस विधी सिव सनकादिक, मुनि चाहत पदरज श्री भगवन्त । हौ अति दीन मलीन हीन मति, पापीन महा अघ की खान । रो सें रसिकदास को दृढ़ कर, चर्ण सर्ण राखो गहि पान ।

विषय—गोवर्द्धन पहाड़ की शोभा का वर्णन ।

संख्या १८६ बी. रसिकदास के पद, रचयिता—रसिकदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—९ X ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राधा वल्लभ ब्राह्मण, स्थान—गिड़ोह, डा०—कोसी कलाँ, जि०—मथुरा ।

आदि—भागि बड़ो वृन्दाबन पायो । जारज को सुर नर मुनि कलपत विधि शंकर सिर नायो । बहुतक जुग या रज बिन वीते जन्म जन्म डहकायो । सो रज अब कृपा दीनी

अभै निसान बजायो । आइ मिल्यो परिवार आपने हरि हँसि कंठ लगायो । स्यामा स्याम जु विहरत दोऊ सखी समाज मिलायो । सोक सन्ताप करौ मति कोई, दाव भलौ वनि आयो । श्री रसिक विहारी की गति पाई धनि धनि लोक कहायो ।

अंत—महा केलि में जानत कोई । निभृत निकुँज सुख लूटे दोई । महा केलिको सकै बताइ । नहि कहिबे की पर मति आइ । या रस को जो जानो मर्म । तासों कहिये यह निज धर्म्म । श्री नर हरिदास कौ हेतु निज जानौं । श्री रसिकदास रस सार बखानौ । इति श्री रससार पूर्ण ।

विषय—राधा कृष्ण का प्रेम ।

संख्या १८७. रसिकदास की वानी, रचयिता—रसिकदास (स्थान—जतीपुरा), कागज—देशी, पत्र—१२६, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि - नागरी, रचनाकाल —सं० १९२७, प्राप्तिस्थान—श्री जमनादास जी कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल, मथुरा ।

आदि— × × × ॥ राग सारंग जाय सखी कैसे तू ही बन, लाज साकरी तेरे पाय । पाय लाल को दे आलिंगन, नातर करत रहेगी हाय ॥ हाय छोड़ दे लाज सयानी, काहेन लेत लाल उर लाय ॥ लाय लेहु प्रभु रसिकदास को अन्तर आधि तुरत मिटि जाय ॥

अंत—॥ राग सारंग ताल झपक ॥ श्री रणछोड़ राय को बन्दौ, चरण सीस धारे जू । छप्पन भोग महा उत्सव की, लीला जग विस्तारो जू ॥ संवत् उनवीस ता ऊपर सतावीस प्रमाना जू । मधु सद तिथि द्वादसी वार बुध सुभ अति गणिक बर गनो जू ॥ ता दिन श्री रणछोड़ राय पंचामृत करवायो जू । दूधन्हवाय उबटनो सब अंग सौरभ सरउबटायो जू ॥

× × × ×

विषय—राधाकृष्ण की भक्ति, श्रृंगार, प्रेम और गुणानुवाद विषयक पद ।

विशेष ज्ञातव्य—यह रसिकदास 'रसिक प्रीतम' (हरिराय) से भिन्न हैं । फिर भी ये वल्लभाचार्य्य के अनुयायी बतलाये जाते हैं । इनका जीवन जती पुरा में रहते हुए अधिकतर भगवद् गुणानुवाद में व्यतीत हुआ । इस ग्रंथ में सिर्फ इन्हीं के पदों का चयन है जो कविता की दृष्टि से उच्च कोटि के हैं ।

संख्या १८८. गोविन्दानन्दघन, रचयिता—रसिकगोविन्द (वृन्दावन), कागज—मूँजी, पत्र—१६०, आकार—८½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, सजिल्द, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, लिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्याम-लाल वल्द, पन्नालाल हवेलिया, बल्देव गंज, स्थान व डा०—कोसी, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री मद्राधा रसिक सर्वेश्वर जू सहाय ॥ अथ श्री गुविन्दानन्द घन लिख्यते ॥ कवित्त ॥ ललित सिंगार परिहास विनै दूती मुष विरह निवेदन मैं करुणा कौ साज है । रुठिबे में रौद्र सुरतोत्सव मैं बीर कम्प भै विभत्सन षरद छत कौ समाज है ॥ अद्भुत उलटि सिंगार सात प्यारी के मनाये विन पीको न सुहाय कछु काज है । श्री कृष्ण विहार

सदा बंदत गुविन्द जाहि सेवत सरस रस राज महाराज है ॥ छप्पै सयन कुंज अलि गुंज पवन तहँ त्रिविधि सुहाई। रतन जटित अवनी अनूप जमूना वहि आई। छरितु कोक संगीत राग रागिनि सषि रति पति। सब सुष साज समाज सहित सेवत अति नित प्रति ॥ शृंगार प्रेम रस सरस पुनि काल कर्म्म गुन कछु न डर। दम्पति विहार गोविन्द जय जय श्री वृन्दा विपिन ॥

मध्य—कछु मोतिन मांग गुही न गुही कछु केसरि षौरि लगावति है। कछू भूषन भेद रचे न रचे रसिया पिय सौ बतरावति है ॥ तिरछाय चितै रहसै विहसै व्रजचन्द्र गुविन्द कौ भावति है। उह चित्रनि चारु चरित्र विचित्रनि मित्र कौ चित्त चुरावति है ॥ सीतलमंद सुगन्ध समीर अमन्द चन्द की चारु जुन्हाई चन्दमुषी व्रजचन्द गुविन्द के संग रमें अति आनन्ददाई ॥ पावै पिया रसिया अधरामृत त्यों त्यों करै तिय दूनी ढिठाई। गेंद उरोजिनि की करि मार भुजा भरि श्रंक लगे लपटाई ॥

अंत—सूत्र माँझ लक्षन सबै उदाहरन सब छन्द। रसिक गुविन्दा नन्द घन, वरन्यो रसिक गुविन्द ॥ प्रथम श्री राधा सर्वेश्वर सरण गुरुदेव जू की परम्परा पीछे कवि वंस जानि ॥ नवरस भाव भाव सान्ति आदि विभावादि एक दूजे नायक औ नाइका सगुन मानि। तीजे दोष पद वाक्य अर्थ रस नाटक के, सोरह अठारह पचीस दस पट ठानि ॥ चोथे गुन शब्दारथ अलंकार रसिक, गुविन्दा नन्द घन के प्रबन्ध चारियों बखानि ॥ इति श्री मत् वृन्दावन चन्द्रबर चरणारविन्द मकरन्द पानानंदित अलि रसिक गोविन्द कविराज विरचितं श्री मत् रसिक गोविन्दानन्दघने गुणालंकार वर्ननं नाम चतुर्थ प्रबन्धः ॥ शुभ संवत् १८७० मिती कार्तिक सुदि ९ चन्द्रवार चिरंजीव लाला श्री नारायण पठनार्थं लिषतं श्रीमत् वृन्दावने लेषक स्वयम् ॥ बांचे जाकौं जथा जोग्य श्री राम राम ॥

विषय—१—प्रारम्भ, गुरु रसिक अनन्य जी का वंश वर्णन, पत्र—१—२ तक। २—संस्कृत के मान्य ग्रन्थों की रस, अलंकार, सहित्य के संबंध में सम्मतियाँ, ३—४। ३—रस, भाव, विभाव, अनुभाव, सात्विक, संचारी, स्थायी आदि निम्नलिखित उदाहरणों में कवियों की कविताएँ दी है:—रसिक गोविन्द, केशव, लाला, कासीराम, शिरोमणि, किशोर, सेनापति, घनस्याम, सूरदास, मुकुन्द जू, रघुराई, सोभ, बिहारी, नन्दन, वालम, आनन्दघन, मोतीराम, नन्ददास, मतिराम, हरिवंस गुसाईं जू, गंग, कुलपति, सोमनाथ, नारायण, देवता, देव, राजा नागरी दास, व्यास जू, इन्द्रजीत, आदि ५—४१।

४—नायक नायका भेद निरुपण, उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त इस प्रकरण में उधोराम, भगवन्त, कोक, मुकुन्द, सदानन्द, नन्ददास, दयानिधि, आनन्दघन, कृष्ण, किशोर, रसखान, शम्भु, देव, ब्रह्म, प्रवीन, रामकवि, सोमनाथ, मतिराम, विहारी, हेली, काशीराम, निवाज, गंग, लाल आदि की कविताएँ नायक नायिकाओं के भेदों के उदाहरणों में आयी हैं, पत्र, ४२—७७।

५—काव्य के दूषणों का वर्णन। गोविन्द, केशव, कुलपति, सोमनाथ आदि कवियों की रचनाएँ उदाहरण स्वरूप आयी है, पत्र, ७८—९५।

६–गुणालंकार, चित्रकाव्य, अर्थालंकार, शब्दालंकारों के भेद और सविस्तृत उदाहरण। गोविन्द, लाल, कविनाथ, केशव, घनश्याम, तुलसी दास, सूर, देव, विहारी, सोमनाथ, कुलपति, सोम, छत्रसिंह, देव, गंगा, मुकुन्द, कशीराम, किशोर, शिरोमणि, श्रीपति, नागरीदास, देवीदास, वृन्द, चिन्तामनि, गदाधर, सूरत, हरिवंश, गुसाईं जू, दयानिधि, ध्रुवदास जू, नन्ददास, व्यास जू, चन्द कवि, जगजीवन, पृथ्वीराज राजा, कविन्द्र, चतुर बिहारी; मतिराम, नरोत्तम, इत्यादि कवियों के अलभ्य उदाहरण इसमें दिए हैं। इनके अलावा बहुत से अज्ञात कवियों की कृतियाँ भी दी हैं, पत्र, ९६––१५७।

७––कवि-परिचय, १५८–१५९ तक।

कवित्त। जादोदास साहकौ सपूत पूत सालिग्राम, सुत न रानी बाल मुकुन्द कहायो है। जैपुर वसैया बिल सैया कोक काव्यनु को, ताको लघु भैया श्री गोविन्द कवि गायो है। सम्पति बिनासी तब चित में उदासी भई, सुमति प्रकासी याते व्रज को सिधायो है। अब हरि व्यास कृपा विन ही विलास रास, सब सुष रासिबास वृन्दावन पायो है। दोहा मात गुमाना गुविंद की पिता जु सालिगराम श्री सखेश्वर सरण गुरु, बास बिंदाबन धाम रच्यो गुविंदानन्दघन, श्री नारायण हित्त। कृष्णदत्त पाण्डे तिन्हें दियोजनि निज मित्र॥

गुरु-परिचय––परम उदार दुष दंद के हरन हार, सब गुन सार सदा राजत अभेव है, पूरन प्रकास वेद विद्या के निवास, कविगोविन्द कहत जासु जस कौन छेव है॥ रसिक अनन्य वरनागर चतुर चारु, चरन कमल भव सागर के षेव है। जीवन हमारी कुंज भौन अधिकारी, अैसे सर्वेश्वर सर्न सुखकारी गुरुदेव है॥ अथ गुरु वंश वर्णनं॥ दोहा। जै जै जै श्री राधिका सर्वेश्वर श्री हंस। सनकादिक नारद सदा, निम्बादित्य प्रसंस॥ जैसा कि उपर्युक्त कवित्त से स्पष्ट है, रसिक अनन्य जी इस महा कवि के गुरु हैं। रसिक गोविन्द एक उच्चकोटि के कवि हैं। इनके दो छोटे मोटे ग्रंथ भी अनुसंधान में मिल चुके हैं; पर वे इतने महत्वके नहीं हैं। प्रस्तुत ग्रंथ बहुत महत्व का है। कवि जयपुर के रहने वाले थे। दुःख पड़ने पर वृन्दावन भाग आए जहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय की दीक्षा लेकर भागवत् भजनमें समय व्यतीत करने लगे। इनके भाई का नाम बाल मुकुन्द, पिता का शालिगराम, पितामह का जादोदास था। माता का नाम गुमाना था। कविके हाथों से ही लिखी हुई प्रस्तुत प्रति है। अपने भतीजे नारायण के लिये यह ग्रंथ उन्होंने लिखा है। इस दृष्टि से प्रस्तुत प्रति महत्वपूर्ण है। कविता बहुत ही सरस है। अपने दिनों के फेर का वर्णन करते हुए एक जगह इन्होंने लिखा है:—निन्दत है सो तो बन्दत है प्रतिकूल करै अनुकूल की बातें। जाहि जुहारितौ हौ घर जाय सू आइकै, पाँय परैं तजि घातें। दुःख अनेक हुते पहिले अब है अति आँनद गोविन्द यातें। रीति सबै सुधरी है हमारी पियारी विहारी तिहारी कृपातें॥ (गुरु परम्परा) श्री निवास विश्वेश्वर चारज के चरन अरु कमल सोभत है अभिराम। श्री परसोत्तमाचार्य्य श्री विलासाचारी पुन पूरे जन मन काम॥ श्री सरूप माधवेस दियै देस देसन मैं कहूँ बलभद्र पद्मचारी जू मोदधाम। श्री स्यामा गोपाल कृपाचारी देव पुन भट्टजू को है नाम॥ कवित्त। पद्म नाम यह ओर उपेन्द्र राम चन्द्र जान, वामनाचार्य्य श्री कृष्णचार जानियै। पद्माकर भूर भट्ट गुर वंदे भट्ट, और

माधव जू स्याम भट्ट गोपाल बलभद्र फेरमानियै । श्री गोपीनाथ के सर्वेस कीने हैं पवित्र, देस गांगल भट्ट काशमीर केसवं वषानियै ॥ श्री भट्ट हरि व्यास देव जाने रसभेव बद्ध परस रामदेव हित सन्तन के सानियै ॥ छंन्द तिनके सिष्य भये हरिवंस । तिनके नारायन अवतंस । तिनके श्री गोविन्द गुरु भये । श्री गोविन्द सरन तक रहे । छप्पै ॥ विकट भटवल्लभ भल भजन भलै भूमंडन मंडन । कुटिल कुतर्की कपट दुष्ट करमठ दंडन ॥ सिंघ नाथ करि विमुष वितुराड निझुंडनि खण्डन ॥ दृढ़ हरि भक्ति कुठार विटप पाखण्ड विहंडन ॥ अविरुद्ध सुद्ध मत प्रणत हित ध्वंस ध्वन्त संघट निपट । कर मंडत चंड अखंड निस मारतंड प्रभुनित प्रगट ॥ तिनके सर्वेश्वर सिरमोर । तारे पतित अनेकनिठोर ॥ वैष्णव रसिक गोविन्द लेषक कोक काव्य विलसइया । सालिग्राम सुत जात नटनी वाल मुकुन्द को भैया । जैपुर जन्म जुगल पद सेवी नित्य बिहार गवैया । श्री हरि व्यास प्रसाद पाय भो वृन्दा विपिन बसैया । दोहा बेटा बाल मकुन्द कौ, श्रीनारायण नाम । रच्यो तासुहित ग्रंथ ये, रसिक गुविन्द अभिराम । रचना काल वसु८ सर५ वसु८ ससि१ अब्द रवि, दिन पंचमी वसन्त । १८५८ रच्यौ गुविन्दानन्द घन, वृन्दाबन रस वन्त ॥ यहे गुविन्दानन्दघन, नाम धर्यौ इहि हेत । कहत सुनत सीषत लिषत, सव विधि आनन्द देत ॥ रसिकन कै रस भौन यह, कवि के काव्य समूह । रसिक गुविन्दानन्द घन, सज्जन के सूप व्यूह ॥ सुकवि गोविन्दादिकनि कृत, यह आनन्द समूह । याते नाम आनन्द घन धर्यो रहित प्रत्यूह ॥

× × ×

संख्या १८९. गुनमाला, रचयिता—राय सिंह श्रीमल, कागज—मूँजी, पत्र—१०, आकार—११ × ५$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१५ = १६५८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधेश्याम ज्योतिषी, स्वामीघाट, मथुरा ।

आदि—॥ दोहरा ॥ णमौ सरसति स्वामिनी, जो मुझ होइ सहाइ । अल्प बुद्धि विस्तार बहु, कहों तरेपन भाइ ॥ चौपाई ॥ उदयक भाव २१ ॥ गति चउष्क अरु ज्यारू कषाइ । षट लेश्यात्रय वेद बनाइ ॥ मिथ्या आदि अविरत असिद्ध । अग्यानी नै हरषै किद्ध ॥ गति चारिऊं कौ वरनौ नाम नरक तिरऊँ च महादुष धाम ॥

अंत—यह गुन माला भाव जुत, पढ़ै सुनै नर कोइ । रिद्ध सिद्ध पूरे तिसे, आनन्द मंगल होइ ॥ अल्प बुद्धि रचना रची, राइ सिंह श्रीमाल । पार साण वैरी साल सुत, कियो कछुक यह ष्याल ॥ सत्रसै पन रोत्तरै, मगशिर सुदी सुवीज । यह गिरंथ पूरन भयो, बुद्धि वार ससि तीज ॥ एक दिवस स्वैमें वही, पदम विजै तिह थान । आइ बैठि पूछी यहे, किनो कियो गुण गान ॥ यह तौ कछु इक नइसी, जोड़ु किसी को होइ । कइ तौ यह तुम्ह नै करी, कै नर औरे कोइ ॥ जौ कछु थी सोई कही, कियो हमो यह ष्याल । अलप श्रुती समुझै इसे, पढै सुबाल गोपाल ॥ इति श्री माल पारसाण गोत्रीय राय सिंह कृत ग्रन्थः ॥

विषय—यह ग्रन्थ जैन दर्शन का है । ५३ भाव, २१ उदयिक भाव का पट् लेश्या गुणों आदि बातों का बहुत सूक्ष्म वर्णन किया है ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता राय सिंह श्रीमाल हैं, जैसा कि अन्त में दिए हुए कोष्ट के दोहे से प्रकट है। ये कहाँ के रहने वाले थे, इसका पता नहीं चलता, पर इनकी भाषा से प्रकट है कि ये जयपुर की ओर के रहने वाले थे; क्योंकि कहीं कहीं "है" की जगह 'छै' आता है। पुस्तक मालिक द्वारा पता चला कि यह ग्रंथ कोइ ५० वर्ष पूर्व सवाई माधवपुर से (जो कि जयपुर के पास है) आया है। रचयिता के पिता का नाम वैरी साल ज्ञात होता है। "सब बातें हम पै सुनी, कही उपाध्याय पास। श्री प्रमोद हम सों कह्यो, ल्यावो देषे तास॥" इससे प्रकट होता है कि किसी उपाध्याय को यह ग्रंथ सुनाया गया। श्री प्रमोद नाम से ख्यात किसी जैन मुनि को भी यह दिखलाया गया जिसने इसमें संशोधन किया जो आगे के दोहों से प्रकट होता है।

संख्या १९० ए. रितुराज मञ्जरी, रचयिता—रिषीकेस, कागज—मूँजी, पत्र—३१, आकार—९ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मंदिर, गोकुल।

आदि—॥ रितुराज मंञ्जरी लिख्यते ॥ दोहा ॥ रसिक सिरोमनि स्याम घन, गुन निधि आनन्द कंद। कवल नैन के सब सुषद, ऋषि केश ब्रज चन्द ॥ सौन्दर्ज सुद्धा निधि निति मुदित, उपमा दीजे काहि। गौरी भौरी भामिनी, भई चकोरी चाह ॥ केलि कथा रस माधुरी, सुनऊ रसिक दै चित्त। विविधि विनोद विलास सौं, विपन विहारी नित्त ॥

अंत—॥ दोहा ॥ सुष विलसत हुलसत हिये, रहसि प्रिया घन स्याम। ऋषि केश वर्नन किए, सिसिर सकल रस धाम ॥ रितुराज मंजरी मोद मय, भरी प्रेम रस रंग। रिषी केस चित चाइ सौं, चाहत रसिक सुभंग ॥ षट रितु निपट विशाल सौं, विलसत स्याम स्याम। रिषी केस आनन्द सौं, वृन्दावन निजु धाम ॥ इति श्री राधा विलास नामां रिषीकेस विरचितायां रितुराज मंजरी वर्णन नाम समाप्तः ॥

विषय—१-बसन्त ऋतु नायक नायका के संवाद रूप में, २-ग्रीष्म वर्णन, ३-ग्रीष्म विलास, ४-पावस ऋतु, ५-शरद ऋतु, ६-बाँसुरी, ७-दीपमाला, ८-चौपड़, शतरंज, ९-हेम ऋतु, १०-शिशिर ऋतु, ११-मानवती नायका।

संख्या १९० बी. शनि कथा, रचयिता—ऋषिकेश, कागज—मूँजी, पत्र—२६, आकार—६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ वि० = सन् १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दीपचन्द्रजी अध्यापक, भारत गली, स्थान व डाकघर—फतेहपुर सीकरी, जि०—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शनि चरित्र लिष्यते ॥ छप्पै छंद ॥ ईस तनय गण ईस सीश सुन्दर शसि सोहत। वारण वदन विलोक लोक तिहुँ होत विमोहत ॥ कामद करुणा सिंधु सुषद सब काज सुधारन ॥ रिद्धि सिद्धि गुण ज्ञान दान दरिद्र निवारन ॥ शुभवर दायक सुमति ग्रह विध्न, विदारन अघहरन ॥ करहु कृपा "रिषि-केस पर" सुमन वच करि आयो सरन ॥

अंत—रहौ उनै सब काल सहाई। दीनौं तुमकौ वर सुषदाई ॥ श्री शनि देव सदा सुष कारे ॥ यो वर दै निज धाम सिधारे ॥ दोहा ॥ कहैं सुनैं चित लायकैं, यह कथा सुष धाम। तिनपै होइ प्रश्न शनि, शनि चरित्र यह नाम ॥ इति श्री शनि चरित्र ऋषिकेश भाषा सम्पूर्ण समाप्ति ॥ लिषतं कल्यान मिश्र सं० १९१६ ॥

विषय—शनि कथा का पद्यात्मक अनुवाद।

संख्या १९१ ए. ख्याल, रचयिता—पं० रूपकिशोर या रूपराम (स्थान-आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—७८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामचन्द्र, नीलकंठ महादेव, सिटी स्टेशन, आगरा।

आदि—भज श्यामा मधुसूदन भव भय विषम ताप त्रय भंजन हार। रस रसना के त्यागि तौ मुक्त होइ श्रुति कहैं पुकार ॥ यवनादिक तारे घन सुन्दर विश्व विदित अमृत सीता। निशिचर नारी का वर अहिवात तात शंकर जीता ॥ केश रमेश जान मधु मर्दन शेष फेनत राडुल मीता। पाप राति दिन भजें भजें जो पार्वती पति पुत्र उदार ॥

अंत—भयो काल वस कन्थ इहिं बधो चहत प्रभु विरद साहार। बहुत मन्दोदरी ने चरण गहि दस सीस समुझायो। भयो पर काल वस रामन सिखावन मन नहीं भायो। कहै ख्याली मिसर वल्लाकौ जस धरमा धरन छायो। ललक कहैं लाल लाला प्यार पन्ना लाल प्रति पायो। लल्ला हुक्मा राखि कहैं रूपा रघुपत पद प्रीत अपार ॥

विषय—१–ईश्वर महिमा। २–मनुष्य की काया का वैचित्र्य। ३–ज्योतिष के जन्म ग्रहों का फल। ४–विंशोत्तरी दशा। ५–प्रेम और वियोग की वेदना। ६–बुढ़ापे का वर्णन। ७–कृष्ण की लीलाएँ। ८–कृष्ण के शरीर की शोभा। ९–गोपियों की विरह व्यथा। १०–भगवान का भक्त-प्रेम। ११–हनुमान का लंका जलाना आदि।

संख्या १९१ बी. हिन्दी उर्दू ख्याल संग्रह (अनु०), रचयिता—पं० रूपराम (स्थान-आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—७६, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९२४, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित रामचन्द्र, नीलकंठ महादेव, सिटी स्टेशन, आगरा।

आदि—पर ब्रह्म पूरण परमातम पतित पाल प्रभु मोचन पाप ॥ पावन पद पंकज अज पूजत परम प्रीति परिहरि संताप ॥ पग प्रिय पद्म पराग परस भव पार होत प्राणी कर जाप ॥ पाय पिसाउ प्रेम पय पीवत पर परिहास न उप अस्थाय ॥ प्रवल पीक परछिउ छिपावत पटु जन चित सम पुष्प प्रलाप ॥ पुन्न पताख प्रीत प्रण पर्वत दहन कष्ट पाहिक परिताप ॥ प्रघट कल्प पादप पृथ्वी पर हरिजन हरन अनेक प्रलाप ॥

अंत—लगन लगा के जुदा हुआ जिस वक्त से वो चंचल बुहलूल ॥ लगी मेरे सीने से सितम उस वक्त से फ़ुरक़त की मसलूल ॥ लिया घेर ग़म ने मुझको और कहती है वहशत महलूल ॥ तरजै है तन है सवार गरदन पै जुदाई का जहलूल ॥ लहरैं हैं बेकली

वदन में रहै है दिल हर वक्त मलूल ॥ लाद के कोई गम बैठा हूं चाक जिगर मिसले मशलूल ॥ लिपटा हूँ पट्टी में न अच्छा लगे आबो दाना पाशलूल ॥

विषय—ईश्वर प्रार्थना तथा उसका प्रताप, पृ० १–८ तक। फारसी के ख्याल, पृ० ८–२२ तक। ख्याल हिन्दी के लघु अक्षरों में, पृ० २२–३४ तक। आध्यात्मिक ख्याल, पृ० ३४–६८ तक। रामचन्द्र से पुकार, पृ० ६८–१०२ तक। राधा कृष्ण का प्रेम, पृ० १०२–१२६ तक। स्फुट ख्याल (उर्दू में), पृ० १२६–१५२ तक।

संख्या १९१ सी. कलंगी, रचयिता—पं० रूपराम (स्थान—आगरा), कागज—स्याल कोटी, पत्र—८, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामचन्द्र, नीलकंठ महादेव, सिटी स्टेशन, जि०—आगरा।

आदि—भगत भय भंजन हौ निरवान। करौ करुणानिधि करुणा कान ॥ नाव काया मेरी कर घात। विपत सागर में बूड़ी जात ॥ कोऊ खेवटिया नाहिं दिखात। लाज अब नाथ तुम्हारे हाथ ॥ बल बल्ली लागत नहीं, चली विपत की धार ॥ प्रेम पाल ढीलौ भयो, गरे गर्भ गुण झार ॥ विपत सागर में बूड़ी जान ॥ उबारौ कर गहि कृपा निधान ॥१॥

अंत—प्रभा लखि मृग पति शरमाए। त्याग के नगर बनें आए ॥ दुखित मन रम्भा पछताए। भागी अराम बीच छाए ॥ थके मत्त गज यूथवर, गति विलोकि नव बाल ॥ देख हृदय चकृत भऐ, हारे बाल मराल ॥ बृह्मादिक सुर सकल मुनि, और चराचर झारि ॥ ख्याली के बस करन को, बिश्व विमोहन नारि ॥ मिश्र रुपा जिन अवलोका।

विषय—प्रार्थना, शिव-शोभा वर्णन, पनिहारी शोभा एवं पनिहारी-रूप वर्णन, कृष्ण का योगी और राधिका का योगिनी रूप वर्णन, राधा का मान करना, ऊधो का गोपियों को योग का सन्देश देना, ब्रज-वनिताओं की विरह वेदना और ब्रह्म रूप, आदि वर्णन।

संख्या १९१ डी. ख्याल बारह खड़ी (अनु०), रचयिता—पं० रूपराम आगरा, कागज–स्याल कोटी, पत्र–१३२, आकार–१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र जी, नीलकंठ, महादेव, सिटी स्टेशन, आगरा।

आदि—अय यारो देखो तो यह है हम दम तुम में तुमारा। इन्तजार में किसके गिरेवाँ करते हो पारा पारा ॥ आठों पहर हर घड़ी पास एक दम तौ नहीं तुम से न्यारा ॥ अपना आप खोज देख लो खुदी से करकें किनारा ॥ अव्वल आखिर का वो मालिक समझ हमारा इशारा ॥ आकर छू गुरु रिसाल गिरके कदम जो चाहे निस्तारा ॥

अंत—लुत्फ कहाँ महफ़िल का यार बिन और रोनके वहरि कहाँ। मज़ा कहाँ मयकशी कहाँ और शमा कहाँ गुलगीर कहाँ। नज़र वेध्यानी पर है अव कुरान की तफ़सीर कहाँ। वाज कहाँ वो वज़ू कहाँ तौसीक कहाँ तनक़ीर कहाँ। हिम्मत वर लाला सा हिंद में पैदा हुआ दवीर कहाँ। लाम कहाँ वो अलिफ कहाँ तसनीफ कहाँ तहरीर कहाँ। यकताई (?) में अप "रूपा" पैदा है तेरी नजीर कहाँ। (?) कविताई।

विषय—आध्यात्मिक विषय का विस्तृत वर्णन।

संख्या १९१ ई. ख्याल बाजी, रचयिता—पं० रूपराम, स्थान—आगरा, कागज—स्यालकोटी, पत्र—२००, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५००, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं०—रामचन्द्र, नीलकंठ महादेव, सिटी स्टेशन, आगरा।

आदि—अय साहिब सलतनत तेरे इसरारके मारे फिरते हैं। सर पर सौ सौ हुमा-कदम में पदम विचारे फिरते हैं॥ बड़े बड़े साहिबेताज सो ताज उतारे फिरते हैं॥ हातम हिम्मत वर सदहा हात पसारे फिरते हैं॥ महर महँम तल बसैं तिस पर भी मन मारे फिरते हैं॥ कर करकें अंगुश्त सुलैमा आपको हारे फिरते हैं॥ फर्श पैं जरें फिरते हैं और अर्श पै तारे फिरते हैं॥

अंत—गंजन दुख दारिद दमन हैं कौशलेश मन मगन के पाऊँ॥ गन्धवादिक धरें हिये में श्रीपति आकृत अगन के पाऊँ॥ मंडन मन 'धरया सिंग' 'लाला' है श्री गंगे जमन के पाऊँ॥ 'पन्ना लाल' नहिं पड़े हैं सनमुख जिनके त्रिबधी तपन के पाऊँ॥ उनकें 'रूप-किशोर' ने दिल पर लिखे हैं हुकमा कठन के पाऊँ॥

विषय—१—ईश महिमा। २—भक्त वियोग। ३—विश्व की नश्वरता। ४—साकी और भक्ति रूपी शराब। ५—अन्य आध्यात्मिक बातें। ६—रुह और नूर का वर्णन। ७—ईश्वर का निवास हृदय में। ८—शृंगार तथा स्त्रियों का वर्णन। ९—भगवद् भजनके लिये चेतावनी इत्यादि।

संख्या १९१ एफ. ख्याल चिंतामणि, रचयिता—पं० रूपराम (स्थान–आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—७०, आकार—९ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, खंडित, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामचन्द्र, नीलकंठ महादेव के सामने, सिटी स्टेशन, आगरा।

आदि— × × लख इकन्त में कन्त प्रिया कछु सकुच सहित बतरान लगी॥ पास पिय के जान लगी कछु मन्द मन्द मुसकान लगी॥ तन में काम कृशान जगी और मन में सकुच समान लगी। आँखिन में इठलान लगी ऊपर मन तैं इतरान लगी॥ कछु दिन तें पिय पास जाय कर प्रीत खवावन पान लगी॥ कर पकरत किलकान लगी कछु कछु हिय में हुलसान लगी। रति गति निरखत चकित चौंक परयंत परान लगी॥

अंत—ईश रूप है जीवकर्म्म माया में जो न बँधाओगे। बन्धन से बच जाओगे आपे में आप लखाओगे॥ मिस्सर जी धरमा सिंग जब दोनों को गुरु बनाओगे॥ कहै लाल लाला पन्ना फिर क्यों नहिं गुनी कहाओगे॥ कहैं 'रूपकिशोर' सरेगों न जो वाणी ये विसराओगे॥ (चित्र काव्य) × × × ॥ इति॥

विषय—१–नवोढ़ा आदि नायिकाओं का वर्णन। २–पाप और भवसागर। ३–नख-शिख (उर्दू भाषा एवं हिन्दी लिपि)। ४–स्त्रियों की खूबसूरती। ५–गणेश वन्दना (हिन्दी और संस्कृत), पृ० १–१० तक। ६–गंगा स्तुति, पृ० ११–१९ तक। ७–संकर

वंदना, पृ० २०–२८ तक। ८–विष्णु स्तुति, पृ० २९–५२ तक। ९–राम नाम महिमा, पृ० ५३–५७ तक। १०–कृष्ण स्तुति 'गोपाल जन्म', पृ० ५८–६६ तक। ११–ब्रह्म ज्ञान, पृ० ६७–९० तक। १२–कृष्ण तथा गोपियाँ, पृ० ९१–११० तक। १३–चित्र काव्य, १११–११५ तक। १४–कलि-महिमा, पृ० ११६–१२६ तक। १५–ज्योतिष फलित, पृ० १२६–१३२ तक। १६–चित्र काव्य, पृ० १३३–१३७ तक।

संख्या १९१ जी. ख्याल मञ्जूषा (अनुवाद), रचयिता—रूपराम (स्थान-आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—६९, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—श्रीरामचन्द्र, नीलकंठ महादेव, सिटी स्टेशन, आगरा (यू० पी०)।

आदि—जै जै जै गजवदन विनाशन विघन सकल सुरनायक जी ॥ नमो विनायक सिद्ध सन्तन के सदा सहायक जी ॥ त्रिविध ताप सन्ताप शमन दुख दमन दुष्ट दल दाहक जी ॥ सद्गुण ग्राहक विमल मति भक्ति मुक्ति रस गाहक जी ॥ निर्विकार निर्विघ्न निरन्तर स्वच्छ सुजन निर्वाहक जी ॥ प्रेम प्रवाहक सुकृत खेत हित विमत विलाहक जी ॥

अंत—टटोल के पग बढ़ा कुटिल है वर घाटी की बाट विकट ॥ ठीला जहाँ शिव समाधि का है तहाँ सरोवर है औघट ॥ टलै वहाँ से धीरे धीरे होय नहीं पग का आहट ॥ टोकेंगे मारग में तसकर तीन पाँच दस हैं नटखट ॥ टंटा तू मत करै किसी से पकड़ ब्रह्मपुर की चौखट ॥ × × × ठेका रूपकिशोर पकड़ के किस प्रकार गाई सोरठ ॥

विषय—१–गणेश वन्दना। २–बरसाने की फाग। ३–कामरु कामक्षा देवी की स्तुति। ४–धनञ्जय तर्थात् अर्जुन का युद्ध। ५–शंकर की अमर-कथा। ७–शृंगार वर्णन। ८–आशिक और माशूक। ९–मियाँ मन्सूर की फाँसी। १०–स्त्रियों की शोभा। ११–तकदीर के खेल। १२–मूसा की कथा। १३–दार्शनिक विषय। १४–लैला और मजनू का वियोग। १५–नवयुवती का वर्णन। १६–कौरव और पाण्डवों का वैमनस्य। १७–संसार और माया।

संख्या १९१ एच्. ख्याल संग्रह (अनु०), रचयिता—रूपराम या रूपकिशोर (स्थान-आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—९, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामचन्द्र, नीलकंठ महादेव के सामने, सिटी स्टेशन, आगरा।

आदि—बसे है दिल अन्दर मेरे उस माहेल का जबाव के पाऊँ ॥ वरहम गर होगा तो लूँगा पकड़ अपने अहवाव के पाऊँ ॥ बने मेरे चश्मों के मकामी उस पुरनूरो शवाव के पाऊँ ॥ बस उसके पाँओं को मैं समझा अपने अरवाब को पाऊँ ॥ वान से नहीं उखड़ेंगे ये मेरी उल्फत इस्त तवाब के पाऊँ ॥ बदलेंगे ता हश्र नहीं सादिक है मेरे खाव के पाऊँ ॥ बँधे चाहे जाना में उम्र मेरी इस अस्ल हवाव के पाऊँ ॥१॥

अंत—वरसों से बेकरार हूँ चश्मों से है जारी अश्के उवाव ॥ बात न मुझसे करते हो अय माहेलका क्या है इसवाब ॥ विसमिल तू कर चुका मुझे समझाही किया मैं तुझे ज़्वाव ॥ वदन तेरी पुरकत में गया फुक बचूँ मैं क्यों कर अै अरवाब ॥ बलाए गम सह सह के मेरा हो गया जिगर जल जल के कबाब ॥

विषय—ईश्वर प्रार्थना तथा महिमा और शृंगार विषयक फारसी के पद्य हैं।

संख्या १९१ आई. ख्याल संग्रह (अनु०), रचयिता—रूपराम या रूपकिशोर (स्थान-आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—५४, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ प्रसाद वैद्यराज, वैद्यराज फार्मेसी, नूरी दरवाजा, आगरा (यू०पी०)।

आदि—पं० रुपकिशोर कृतं ख्याल लिख्यते ॥ न खोल घूँघट के पट तूँ प्यारी चलेंगे नाराच चिता बनी के। सरोज सकुचेंगे चन्द्र बदनी ये तेरी लखते ही चाँदनी के ॥ है चौथ तूँ मत महल पै चढ़ियो समय अधेरी ये यामिनी के। लगेंगे घर घर से अर्घ बिगड़ेंगे व्रत हर एक कामिनी के ॥ हँसन से तेरे दसन खुलेंगे जो रस ले रसना सुहाविनी के ॥ तो मान मोतिन के न रहेंगे गुमान टूटेंगे दामिनी के ॥ छिपा लें अंचल से चन्द्र आनन विचार परिहर हनाहनी के ॥

अंत—॥ दोहा ॥ रुप विहूनी कूबरी, भये तासु हरि यार। मेट कान कुल सिर लियो, बदनामी को भार ॥ × × × ॥ शेर ॥ महर 'हरदयाल सिंह' की हो तो आवें हर नजर मेरी। वफादारी से 'मिस्सर' वेकली हर ले वोहर मेरी ॥ 'लाल लाला' लो धरम सिंह हो फिर वालाय सर मेरी। टलें गमो रंज 'पन्नालाल' हो खातिर निडर मेरी ॥ ॥ दोहा ॥ झपकत लल्ला पल नहीं, हुक्मचन्द जनि ज्वाल। छल मय "रूपकिशोर" जी, करी हरी ने चाल ॥ × × ×

विषय—२-स्त्रियों के मुख का वर्णन। २-राजा भर्तृहरि का वैराग्य वर्णन। ३-गोपियों का ऊद्धव को उलाहना और योग शिक्षा का ठुकराना। ४-वृज-विरह वर्णन। ५-गोपियों का गुमान। ६-मोहन और वृज-वनिताओं के झगड़े। ७-मध्या नायिका वर्णन। ८-गोपियों का प्रेम वर्णन। ९-नायिका का पथिक को रोकना। १०-ग्रीष्म वर्णन। ११-दृष्टि कूट। १२-कृष्ण की प्रार्थना। १३-कृष्ण गोपियों की लीलाएँ। १४-उर्दू फारसी के ख्याल। १५-ज्ञान कथन। १६-राम नाम महिमा। १७-ब्रह्म और शक्ति का निरूपण। १८-कर्म्म और वैराग्य। १९-आत्म ज्ञान एवं ब्रह्म ज्ञान। २०-गंगा एवं शिव महिमा। २१-ज्योतिष तथा वैद्यक। २२-राम जन्म वर्णन। २३-शंकर प्रार्थना। २४-पाप, भक्ति, माया, आदिका वर्णन। २५-पिंगल वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—अन्त के पद्यों में जो अन्य नाम हैं वे सब ग्रंथ रचयिता और रूप किशोर के मित्रों एवं खयालियों के नाम हैं। ख्याल कहने वालों की मंडली में यह नियम था कि वे ख्यालों में अपने मित्रों का नाम देते थे। रूपराम ने बहुत ख्याल रचें हैं। आगरा तथा उसके आस पास के जिलों के समस्त ख्याली इन्हें अपना गुरु समझते थे। रचयिता ने बीसों विषयों का प्रतिपादन बड़ी योग्यता से किया है। इससे प्रकट है कि उनका ज्ञान कोष अत्यन्त विस्तृत था।

संख्या १९१ जे. योग ब्रह्म (अनु०), रचयिता पं० रूपराम या रूपकिशोर, (स्थान-आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—५२, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति

(प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० श्री रामचन्द्र ब्राह्मण, नीलकंठ महादेव के सामने, सिटी-स्टेशन, आगरा।

आदि—जिन्हें याद स्वांसा साधन चौबीस भूमि भेदन करना ॥ उनें न बाधा करै जगत में जरा ज्वाल जीना मरना ॥ क्षर अक्षर से है सबकी उत्पति ओहं से तन उपजा ॥ निरअक्षर से प्रगट भई स्वाँसा सोहं से मन उपजा ॥ अग्न धरन आकाश पमन पानी सैं पिंड रतन उपजा ॥ पिंड से उपजे कार्य कर्म से माया का बन्धन उपजा ॥ माया से दुख सुख उपजे दुख सुख से जन्म मरन उपजा ॥ जोगी जन तन मन को मारके। तजें जग्त मिथ्या विचारकें ॥ विषे भोग वरतन विकारकें। दुख इनमें नाना प्रकारके ॥

अंत—महा प्रलय हो जाय जो पत्ता हिलै तो ये सुनिये हलचल ॥ कहाँ वृक्ष कहाँ पात कहाँ फलफूल कहाँ चारों माली ॥ कहाँ पमन का वास कहाँ वो बीज कहाँ उसकी डाली ॥ कहाँ वो सीतल छाँह कहाँ वो सुगन्ध सुख देने वाली ॥ कहाँ पखेरू सात कहाँ वे चुगें कहें मिस्सर ख्याली ॥ लाल बिहारी कहें लाल ये हैं पन्ना का छन्द प्रबल ॥

विषय—१—पंच तत्वों से सृष्टि रचना, माया की क्रीड़ाएँ। २—दश इन्द्रियों का मारना। ३—काम क्रोध लोभ मोह का जीतना। ४—योग-मन्दिर शरीर का वर्णन। ५—स्वाँस-नियंत्रण तथा समाधि। ६—आसन मुद्राआदि। ७—ब्रह्मध्यान। ८—ब्रह्म वर्णन। ९—उर्दू और फारसी के ख्याल। १०—सांसारिक माया। ११—रहस्य वादी ख्याल।

संख्या १६२. परीक्षा बोधिनी, रचयिता—मुंशी रूपकिशोर जी (स्थान—कागारोल जि० आगरा), कागज—स्यालकोटी, पत्र—११६, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य-गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२५ वि० = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री दरबारी लाल जी हे० मा० स्थान, डा०—कागारोल, आगरा।

आदि—॥ परीक्षा वोधिनी ॥ बात पित्त कफ यह शरीर के दोषों का संग्रह है और मन के दोषों का संग्रह रज और तम है। कवित्त। सात कला अमासय सात होय धात सात उपधातु सात त्वजा सात ही बनाही है। दोष तीन हड्डीन के बांधन को नौसे नसें दोसौं दस हड्डी अस माधव* जी गाई है। मर्म स्थान एक सौ सात और रसको सब, जगह सात सौ नसैं ऐसे ही बताई हैं ॥ पुरुष पिन्डी पाँच सों स्त्री के पाँच सौ बीस, धमनी नारी चौबीस सो वेदन में गाई है ॥ माधव यह कवि का नाम नहीं पर माधव निदान का मत है।

अंत—उराम जुलाब। सोंठ-फूला सुहागा शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक समान लेय इनसे तिगुना शुद्ध जमाल गोटा लेय, इनकी गुड़में गोली बनावै ठंडे जल से दस्त हो और गर्म जलसे बन्द हों। दस्त बन्द करना। हुब्बलासं, समा बयेरू, अकरकरा, चौदह मासे हर-एक ले अफीम साढ़े तीन मासे झाऊ के फूल १४ मासा झरबेरी के बेर बराबर गोली करै ॥

दोहा । बहुधन ले अहसान करि; पांरो देत सराहि । बैद वधू हँसि भेद सों, रहीं नाह मुख चाहि ॥

विषय—वैद्यक से भिन्न रोगों के निदान सहित नुस्खे और रसादिक एवं काष्ठादिक दवाइयों के बनाने की विधियाँ दी गई हैं ।

संख्या १९३. ख्याल संग्रह, रचयिता—रूपरसिक स्थान—(वृन्दावन), कागज—मामूली, पत्र—२०, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५०, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री नत्थी लाल जी गोस्वामी, स्थान व डा०—बरसाना, जि० मथुरा ।

आदि— × × × मत करो इश्क यह इश्क बड़ा काफिर है । मेरी जान जहाँ यह पैदा होता है । माल मुल्क जी जान हया हुरमत सब खोता है । यह नशा इश्क का बहुत बुरा है साहिब । मेरी जान जाम जो इसका पीते हैं । स्वासों में जी जाता है मरते हैं न जीते हैं । हर वक्त फिक्रकी रहै ख़ुमारी दिलमें । मेरी जान न होते मन के चीते हैं । जीते जी मर जाय इश्क के यही फजीते हैं ।

अंत—ऊधो तुमने सुधि लीनी भली हमारी । महाराज लगी है लगन विहारी सों । वे आयेंगे कि नाय कहो तो तुम्हे हमारी सों । गिन २ के दिन मोहन बिन कटें हमारे । महाराज कृष्ण कहो कब लग आमेंगे । सन्देह सिंधु ते गोपिन को कब पार लगाओगे । बिलगें हैं पापी प्रान दरस रसप्यासे । महाराज स्याम कब दरस दिपावेंगे । × × × जाहर कर दीने बैरिन के मन भाये । अबै "रूप रसिक" मोहन ह्वे गये पराये । महाराज प्रीत करकै पर प्यारी सों । वे आयेगें कि नाय कहो तो तुमे हमारी सों ।

विषय—१ – आध्यात्मिक प्रेम । २—भक्ति महिमा । ३—ब्रजकी शोभा । ४—गोपियों का उद्धव को पाना और उनसे अपनी व्यथा की कथा कहना ।

संख्या १९४. शिक्षा पत्री, रचयिता—सहजानंद, कागज – मूँजी, पत्र—५६, आकार—४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४३, खंडित, रूप—जीर्ण (प्राचीन), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८८२ वि० = सन् १८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राजधर चपरासी, भार्गव बैंक, भैरों बाजार (आगरा) ।

आदि—चौपाई । करुना निधि सब सुख अति भिनि ॥ शिक्षा पत्र प्रगट जेहि कीनि ॥ × × × गोकुल खेल करे गिरधारि ॥ कृष्ण मूर्ति नटवर सुख कारि ॥ सहजानन्द सुखद एहि रीति ॥ करत मंगलाचरन सप्रीति ॥ बोले कृष्ण चरन उरधारिहुँ ॥ रहि वार ताल पत्री यहि लखिहुँ ॥ मन आश्रित सतसंगी जेते ॥ नाना देश रहत है तेते ॥ रामप्रताप जेष्ठ मम भ्राता ॥ छोटो सो इछा राम विख्याता ॥ धर्म्म देवहुँ से तनु धारे ॥ हैं दोउ सुन्दर भ्रात हमारे ॥ तिनके पुत्र महादृढ़ धीरा ॥ अवध प्रसाद और रघुवीरा ॥ जा कुँ दत्त पुत्र हम कीना ॥ सब मन्दिर सतसंगी दीना ॥ नैष्ठिक मुकुन्द मुख्य सत वादि ॥ ग्रहि सब माया रामभद्र आदि । सधवा अरु विधवा सब नारी ॥ जो मेरे आश्रित सुवि चारी ॥ मुक्तानन्द आदि सब त्यागी ॥ जेते मम आश्रित बड़ भागी ॥

अंत—दोहा यह प्रमान जो वर्तिहीं, नर त्रिय मम जन होय ॥ धर्म्मादि चहुँ वर्गकी सिधि पावहि सोय × × × संवत अठारह च्यासियो, महा सुदि पंचमी जान । तादिन शिक्षा पत्रि लखि, एहि करि जग कल्यान ॥ × × ×

विषय—कवि का सपरिवार तीर्थ यात्रा करना, पृ० १ से १२ तक। कृष्ण स्तुति, पृ० १२–१६ तक। मथुरा के मन्दिरों की पूजा का वर्णन, पृ० १६––२० तक। उपदेशात्मक चौपाइयाँ, पृ० २०—५६ तक।

संख्या १९५. श्री गोपाल यज्ञ, रचयिता—शंकर, कागज—स्यालकोटी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––श्री पं० बांके बिहारीलाल जी, श्री बिहारी जी का मन्दिर, स्थान—खेरागढ़, जि०––आगरा।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गोपाल यज्ञ लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री लम्बोदर गणपति करी, तुंड ससि सीस। बंदन करि संकर कहै, देहु बुद्धि वकसीस ॥ छप्पै ॥ जै जै जे गनपति गौरि सुत मंगल कारिय ॥ बंदौ तौ पद कंज करहुँ नित अस्तुति भारिय ॥ लंबोदर तन गौरि च्यारि भुज विघन विनासन ॥ सोहत दंती वदन देहु बर बुद्धि सुदासन ॥ निस काम यज्ञ गोंपाल कौ चमन सिंह साज्यो हरस ॥ यह मुदित महत्त आनन्द सों, करहु परम पूरन सरस ॥ दोहा ॥ श्री गोपाल सुमिरि धरन पीताम्बर कटि जोइ। यज्ञ रच्यौ तुमहित सरस, चिमन सिंह ने सोइ ॥

अंत—॥ अथ कज्जल वर्ननं ॥ सारद सौ परम पवित्र पय पारद सौ सत्व गुन सरद के सुमेधन प्रमासौ है। कैधों रूप रासि गज दन्त सौ अमन्द चार सन्तन के मन सौ महन्त ही सुभासौ हैं। संकर कहत घन सार हरि चन्दन सौ दिस दिस दीप दपि विसद विकासौ है। वीर चिमनेस रघुवंशी मान सिंहावत रावरौ सुजस फैल्यो चंद चन्द्रकासौ है ॥ ॥ अथ आसीरवाद वर्णनं ॥ जौ लौ कोल कमठ सिर धारै धरा को भार जौ लो आय दीर्घ सुष संपति उछाव रे ॥ जौ लौ सप्तदीप सिंधु इन्द्र औ फनीन्द्र चन्द्र जौ लो सर्व संसति की वृधि अधिकाव रे ॥ संकर कहत जौ लों जल थल वायू भव जौ लों परमारथ सुपुन्य को प्रभाव रे ॥ जौ लो मेह सिंह नन्द वीर चिमनेस वेस तो लौं रहौ अमर धरापै ध्रुव राव रे ॥ ॥ दोहा ॥ स्वाम धर्म्म ध्रुव चिमन के, रहे सीस परवेस ॥ श्री भूपति भमरेस को, हित नित बढ़े विसेस ॥

विषय—श्री चिमन सिंह नामक राजा ने, जो किसी भमर रियासत के मालिक थे, एक गोपाल यज्ञ किया था। उसी का धूम धाम से हवन, ब्राह्मण भोजन, राजा की दान शीलता, नगर तथा राज भवन की सजावट आदि का वर्णन है।

संख्या १९६ ए. कवित्त रामायण, रचयिता—सेनापति स्थान–(अनूपशहर), कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—१३ × ८इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)––३५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चुन्नीलाल अग्रवाल, ताजपुरा, मथुरा।

आदि—॥ कवित्त ॥ सुरतरु सार जी सँवारी है विरंचि पचि, कंचन पचित चिन्ता-मनि के जाइ की । रानी कमला की पिय अगम कहन हारी, सुर सरि सषी सुष देनी प्रभुपाइ की ॥ वेद में बषानी तीनि लोकनु की ठकुरानी, सब जग जानी सेनापति के सहाइ की । देव दुष दंडन भरत सिर मंडन के, बन्दौं अघ षंडन षराऊँ रघुराय की ॥

अंत—कुशल वरस करि गाई सुर धुनि काहि, भाई मन सन्तनु के त्रिभुवन जानी है । देवन उपाऊ कीनो है भौ उत रावन कौ, विसद वरन जाकी सुधा सम वानी है ॥ भुवपति रूप देह धारी पुनि सील हरि आई सुर परतें धरनि सिय रानी है । तीरथ सरब सिरोमनि सेनापति, जानी राम की कहानी गंगाधार सीबषानी है ॥ इति रामायन ॥

विषय—राम चरित्र वर्णन ।

संख्या १९६ बी. रसायन, रचयिता—सेनापति (स्थान—अनूपशहर), कागज—बाँसी, पत्र—१२, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चुन्नीलाल जी, ताजपुरा, मथुरा ।

आदि— अथ रसायन ॥ दै के जिनि वीव ज्ञान प्रानु तनु मनुमति, जगत दिषायो जाकी रचना अपार है । दृगनि सौ देषैं विश्वरूप है अनूप जाको, बुद्धि सौं बिचारें निराधार निरधार है ॥ जाको अध ऊरध गगन दस दिसि उर, व्यापि रह्यो तेज तीनि लोक को अधार है । पूरन पुरुष हृषी केस गुन धाम राम, सेनापति ताहि बिनुवतु बार बार है ॥

अंत—रहौ परलोक ही के सोक में मगन आपु, साँची कहौ हिन्दु कि मुसलमान राउरे ॥ मेरी सिष लीजे जापे कछू बन छीजे, मनु मानै तब कीजे तो सौं कहत उपाउरे ॥ चारि वर देनी हरिपुर की नसैनी गंगा, सेनापति याको सेइ सोकहि मिटाउरे ॥ न्हाइ कै विसुन पदी जैहै तू विसुन पद, जाह्नवी न्हाई जा जाह्नवी पास वाउरे ॥

विषय—१—रामचन्द्रजी की प्रार्थना । २—राधा स्तुति । ३—धार्मिक विषय के इसी प्रकार स्फुट कवित्त । ४—कलि काल वर्णन । ५—शाब्दिक अलंकार पूर्ण छन्द ।

संख्या १९७ ए. अलबेलेलाल जू के छप्पय, रचयिता—सेवादास, कागज—मूँजी, पत्र—२०, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८४० = १७८३ ई०, लिपिकाल—वि० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—मयाशंकरजी याज्ञिक, गोकुल, मथुरा ।

आदि— अथ श्री अलबेले लाल जू के छप्पय । श्री अलबेले सीस क्रीट अति लगतु सुहायो । झल झलात नग ज्योति छटा लषि भान लजायो । मौतिन अवली तास मनौ उडगन छवि छाजै । ताकौ महा उजास दीह त्रिभुअन तम भाजै । पंच षंड सुन्दर सरस कंचन कौ परगास करि । निरषि नैन प्रफुलित सदा, सेवादास मन ध्यान धरि ।

अंत— नारद सुक सनकादिक आदि ब्रह्मा सिवध्यावत । नेत नेत कह वेद तदपि ये पार न पावत । नाम लेत सुष होत हरत अघ के कलि दुषन । अंग अंग छवि छटा झलक सुन्दर वर भूषन । श्री अलबेले लाल प्रभु रहत सदारे हरि अचल । सेवादास दरसन लहै मन वंछित सो पाय फल । इति श्री अलबेले साहिब जू की छप्पै ॥ सम्पूरन ॥

विषय – श्री कृष्ण भगवान के समस्त श्रृंगारों का बड़ा ही रोचक वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—सेवादास के अन्य ग्रन्थ पहले भी आ चुके हैं, पर यह नहीं आया था। अतः नवीन है। कविता की दृष्टि से इसमें बड़े मनोहर छन्द हैं।

संख्या १९७ बी. अलंकार, रचयिता—सेवादास, कागज—मूँजी, पत्र—५३, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७१, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८४० = १७८३ ई०, लिपिकाल १८४५ वि० = सन् १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर याज्ञिक, गोकुल, मथुरा।

आदि—दोहा × × × श्री अलबेले लाल के जुगल चरन करि प्रीत। सेवा दास वरनतु करै, अलंकार की रीत। श्री रघुवर को नमय, जनकसुता परिध्यान। अलंकार जानिय सरस, होइ हृदै में ज्ञान। अठारह सै चालीस, संवत सरस बषान। पौस मास बदि सप्तमी, वार भौम शुभ जान।

अंत—धनुष वान असि चर्म कमल अँगुरीन अँगूठी। सारंग सुधो कठिन कमठ सरद वर ललित अनूठी। हरित चित्र अति तेज कुलस असुनहिं कंचन रचि। नव गुन चुंच कपोत धार स्याम ही सो सुचि। जुग गोसा गासी परज, हाथ वांस केसर नगन। रहत सदा रघुवीर कर, सेवादास लषि कै नगन।

विषय—उपमा, उपमेय, उपमान, परिनाम, स्मृति, सन्देह, आदि अलंकार, १–९ तक। चपला, दीपक, निदर्शना, परिकर, स्तुति प्रशंसा, व्याज, विभावना, विषम, सम, विचित्र, अलप, व्याघात, एकावली इत्यादि, १०–३२ तक। विकल्प, समाधि, अर्थपति, अर्थान्तर न्यास, प्रहर्षन, विषाद, अवज्ञा, मीलित आदि, ३३—५० तक।

संख्या १६७ सी. नख सिख वर्णन, रचयिता—सेवादास, कागज—मूँजी, पत्र—३१, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८४० = १७८३ ई०, लिपिकाल—वि० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जो याज्ञिक, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री रामाय नमः। अथ अलबेले लाल जू कौ नष सिष वर्ननं॥ अथ तरवा वर्ननं॥ सौनौ सौ प्रकास कैधों उदित दिवाकर की, किरनै उजास तास राजति नेले के। मानिक मयूष कैधों मंगल सरुप रुप, छाजत अनूप कै पलास कुल झेलेके। ताम रस रुप इन्द्र बधु के वरन देखो, सेवादास ध्यान धरि सुन्दर नवेलेके। कोमल अमल लाल पल्लव रसाल जाल, छविनि के ताल ताल चरन अलवेले के।

अंत—धरिये गुन सुन्दर रुप महालषिये छवि नैननि कों भरिये। भरिये प्रभुनाम सदा मन में छिन में भवसागर को तरिये। तरिये वर पावन प्रेम जियौ निसिवासर नेम मुदा करिये। करिये सेवादास निरन्तर सो अलबेले के ध्यान सदा धरिये॥ इति श्री अलवेले लाल जू कौ नष सिष वर्णन सम्पूर्ण।

विषय—नखसिख वर्णन।

टिप्पणी—प्रस्तुत कविने अलंकार के सभी अंगों पर लेखनी चलाते हुए भक्तिरस और धर्म का भी कौशल के साथ वर्णन किया है।

संख्या १९७ डी. रसदर्पन, रचयिता—सेवादास, कागज—मूँजी, पत्र—९५, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८४० = सन् १७८३ ई०, लिपिकाल—वि० १८४५ = सन् १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री रामाय नमः अथ श्री रसदर्पन लिष्यते ॥ कवित्त ॥ सरस सलौनो गात मौतिन की माल जाल, अंग अंग सजे सो सुन्दर आभरन है। झलमलात छटा सो राजत अनूप रुप, उदित प्रकास मानौ भोर के तरन है। नैन रतनारे वंक भृकुटी मनोहर हैं, उज्वल मुषारविन्द हेम सो वरन है। सेवादास सुष के निधान मन ध्यान धरि, अलबेले लाल सव सिद्धि के करन है।

अंत—हीरन कौ हार ही सुउर में मनोहर है, मोतिन की माल सो प्रकास छवि छारकै। श्रवन तार्टक लोल अलकैं कपोलन पै, मकराकृत कुण्डल कुजा समान भाइकैं। सेवादास सीताराम को मन ध्यानधरि, कोमल जुगल सो चरनन चित लाइकैं। भूषन बसन परिनाना दिव्य भाँतिनके, कंचनकी चौकी पै विराजै तब आइकै। इति श्री रसदर्पण सपूंरण ॥ संवत् १८४५ ॥

विषय—हिन्दी के नवरसों की व्याख्या उदाहरणों समेत की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खोजमें पहले पहल आया है। कविता सुंदर है। कविने अपने संबंध में कुछ नहीं लिखा।

संख्या १९८ ए. भागवत् दशम स्कन्ध, रचयिता—सेवादास या सेवाराम, पत्र—१२१, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुरलीधर, स्थान—कचौरा, डा० अछनेरा, जि०—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री शुकदेवो वाच ॥ अस्त प्राप्तिश्च कंसस्य, महेष्यो भरतर्षभः ॥ हते भर्ति हि दुःखार्त्तेईयतुः स्वपितुर्गृहान ॥ हे राजा जरासिन्धु जो राजा है ताके पुरु की कथा तुम सुनो ॥ कंस जो राजा है ताकी द्वै रानी ही एक तो अस्ति नाम अरु और एक प्रस्ति नाम करके ॥ × × ×

अंत— × × × अरु इस्मी लोहे तेऊ श्री भगवान के ध्यान ते वैंकुन्ठ वास पामैं हैं तो कछू यामें आश्चर्ज नही है। ता भगवान के अर्थ राजा राज्य को छाड़ि के बन को चले जात हैं ते बैकुण्ठ वास पामे हैं तो याके विसैं कछू आश्चर्ज नहीं है ॥ इति टीका सेवा रामकृत समाप्तं ॥ शुभम् भूयात ॥

विषय—श्री कृष्णचरित्र वर्णन। १—राजा उग्रसेन तथा कंसके वंश का वर्णन। २—देवकी का विवाह और दैवी आकाशवाणी। ३—श्री कृष्ण जन्म और उनका गोकुल में आना। ४—श्रीकृष्णकी बाल्य क्रीड़ा और रास विलास आदि वर्णन। ५—राक्षसों का वध तथा अन्यान्य घटनाएँ। ६—कंस वध।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ कोई विशेष महत्व का नहीं है। भागवत दशमस्कंन्ध संस्कृत की भाषा टीका है, जो बीसों बार विवरण में आ चुका है। सेवाराम कोई संस्कृतज्ञ स्थानीय पंडित रहे होंगे। उनके विषय में कोई बात ज्ञात नहीं हुई।

संख्या १९८ बी. श्री मद्भागवत, रचयिता—सेवाराम मिश्र, कागज—मूँजी, पत्र—२१५५, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०३७३ श्लोक, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८८४ = सन् १८२७ ई०, लिपिकाल—वि० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गनेशी लाल जी मिश्र, स्थान व डा०—अछनेरा, जि०—आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ जन्माधस्थ यतोन्वयादित् रतस्वार्थे स्वभिग्यः स्वराट् ॥ तेने ब्रह्म हृदाय आदि कवये मुह्यन्ति यत्सूरयः ॥ तेजो वारि मृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गो मृषा ॥ धाम्ना स्वेण सदा निरस्त कुहकं सत्यं परं धीमहि ॥ पूरन ब्रह्म परमात्मा जो हैं श्री भगवान तसैं सर्व जगत कौ विस्तार कीनों है ताकों वेदव्यास जू प्रनाम करे है सिष्यनि सहित ॥ श्री वेद व्यास जू सार ब्रह्म को ध्यान धरि कैं श्री भागवत पुराण महिमा गावत भए ॥ श्री भागवत सकल सुख दायक है तामें तत्व वस्त है। साधनि के निमित्त यह ग्रंथ है। ताके श्रवण करेतें त्रिविधि ताप दूरि होइ या ग्रंथ मैं नारायनि कृत या भागवत विषैं तात काल भगवान को हृदै मैं लहै हैं या ग्रंथ को जो मनुष्य हिए में लाये हैं सो श्रवण करे हैं सो पढै हैं ॥ सो ब्रह्मानन्द कन्द रस चाषे हैं।

अंत—तस्मै नमो भगवते वासुदेवाय साक्षिणे ॥ य इदं कृपयां कस्मै व्याच च छेदु मुक्षवे ॥ योगीन्द्राय नमस्तस्मै, शुकाय ब्रह्म साक्षिणे ॥ संसार सर्प संदष्टं विष्नु रात ममूचत ॥ इति श्री मद्भागवत महा पुराणे द्वादस स्कन्धे परमहंस संहितायां वैयासिक क्या नाम त्रयोदशमो ध्यायः ॥ जगत अजग रसरूप रूपियौ राजा परीछत को डस्यो हो ताको कृपा करिकै शुकदेव जू नै अमृत प्याय कै जिवाय लीनो है सूत जू कहै हैं के जो जो जन्म हौ पाऊँ ताही ताही ता जन्म मैं हौ हरिदासनिकौ दास निकौदास रहौ। हे भगवान जू यहां कृपा मोपै कीजयो हे सोनक रिषि जू निःसन्देह सौं सुनौ हौं सुन सौ कहतु है श्री मद्भागवत कौ और श्री भगवाण कौ नाम उचार करें ते कोटि जन्म के पातक छीण होत हैं ॥ प्रनाम करेते दुष दूरि होत हैं ॥ इति श्री मद्भागवत महापुराणे ॥ संवत् १८८४ मिती आसाढ़ १२ भृगुवासरे ॥ सेवाराम मिश्र कृत ॥ दसषत सालिग्राम जी के ॥

विषय—भागवत का हिंदी गद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक स्वामी से पता चला कि प्रस्तुत ग्रंथ का मूल्य १५०) रु० है।

संख्या १९८ सी. गीता महात्म, रचयिता—सेवादास, कागज—बाँसी, पत्र—४०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप, स्थान व डा०—कोसी, मथुरा।

आदि—× × × बकरी बोली प्रमान। फर फराय दीन प्रान। बहोत रैन गए

सोइ । मैनी प्रान तजे जोइ । जनम बाँध ही सुलीन । धर्म्म राज प्रसु कीन । जमा राजा करि विचार । मोकूँ बँधि नरक डार ।

अंत—छप्पय ॥ ये सब दूषन होत परम बत्तीसहिं गाए । पूजन कौ परकार याहि तैं श्रवन सुनाए । कृपा सिन्धु सियराम नहि मैं मति करवे को । ललित छविन के पुंज सरस नेतर भरवे को । गीता इक अध्याय कौ पाठ प्रेम सौ जो करन्त । सेवादास मन भावते कृष्ण चन्द्र अघ को हरन्त । श्री श्री श्री श्री ॥

विषय—इस रचना में गीता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है ।

संख्या १९९. सेवक हित की वाणी, रचयिता—सेवकदास हित, पत्र—३४, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि० १८१०, प्राप्तिस्थान—श्री अध्यापक कालिका प्रसाद जी, स्थान व डा०—कन्तरी, जि०—आगरा ।

आदि—॥ श्री हरिवंश चंद्र जयेति श्री वशनंदनो जयति ॥ अथ श्री सेवक जी कृत बानी लिषते ॥ श्री हरिवंश चंद शुभ नाम । सब सुष सिंधु प्रेम रस धाम ॥ जमघटी विसरे नाहीं ॥ यह जु परयौ मोहि सहज सुभाउ । श्री हरिवंश नाम रस चाउ ॥ नांव सुदृढ़ भवतरन कौ । नाम रटत आई सब सोंहि । देहु सुवुधि कृपा करि मोहि ॥ पाई सुगुन माला रचौं । नित्य सुकंठ जुपहिरौं तासु ॥ जसुवरनौं हरिवंश विलास । श्री हरिवंशहि गाइहौं ॥१॥ श्री बृन्द्रावन वैभव जिती । वरनत बुद्धि प्रमानौं किती ॥ तिती सबै हरिवंश की । सषी सषाकौं कहौं निवेरि ॥ तो मेरे मन की अवसेंरि । टेरि सकल प्रभुता कहौं । विशंभर सव जग अभ्यास । जासु वरनौं हरिवंश विलास ॥ श्री हरिवंशहि गाइहौं ॥२॥

अंत–हरिवंस नाम सर्वसार । छाँड़ि लेत वहुत भार॥ राज वैभव देषि के । विषै विषम भोवही ॥ जोरु होत साधु संग । आनि करत प्रीति भंग ॥ मान काज राजसीन के जु सुष जो पावही ॥ जहाँ तहाँ अनषात सषि कहत आपुगात सकल द्योस ॥ छंद जात राति सर्व सोवही ॥ प्रसिध व्यास नंद नाम । जानि बूझि छोड़ ही प्रमाद ते । लिये विनां जनम वाद षोवहीं ॥३॥ श्री हरिवंश नाम हीन षीन दीन देषिये कहा भयौ वहुग्य ह्वै पुरान वेद पठही ॥ कहा भयौ भये प्रवीन जांनि मांनिए जग त्रिलोक रीझि सोभ कौ बनाय बात गढ़हीं ॥ कहा भयौ किये करम जग्य दान देत देत फल निपाइ उच्चर देव लोक चढ़ही ॥ परयौ प्रवाह काल कौं कदापि छुटि है नहीं श्री व्यास नंद नाम ज्यौ प्रतीति सौं न रहही ॥ ४ ॥ इति श्री सेवक वांनी संपूर्ण ॥ श्री सेवकदास जी कृत वांनी संपूर्ण ॥ लिषितं गः॥ वैष्णव सोभाराम पठनार्थं ॥ सोभाराम छै ॥ संवत् १८१० न वरष्ये भादरवानी अमस्य वार सोमेः ॥ ह॥ रि ॥ वं ॥ श ॥ गु ॥ रु ॥ राधाकृष्ण ॥ राधाकृष्ण ॥ राधाकृष्ण ॥

विषय—१–श्री हरिवंश जी का जन्म तथा हित संप्रदाय का वर्णन, पृ० १–४ तक । २–नाम प्रताप, पृ० ४–८ तक । ३–हरिवंशजी की वाणी का प्रताप वर्णन, पृ० ८–१० तक । ४–स्तवराज, पृ० १०–१२ तक । ५–सुख सम्पत्ति विस्तार स्तवराज द्वितीय स्तोत्र, पृ० १२–१३ तक । ६–सेवकजी का सिद्धान्त प्रकाश, पृ० १३–१४ तक । ७–श्री हरिवंशजी

की कृपा, नाम यश, नामोच्चारण, मंगलाचरण, धर्म तथा उसके उपासिकादि तथा उनकी वाणी का वर्णन, पृ० १४–३४ तक ।

संख्या २००. धर्म्मसार, रचयिता—पंडित सिरोमनि, कागज—बाँसी, पत्र—९५, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७५१ = सन् १६९४ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री जैन मन्दिर, स्थान—कठवारी, डा०—रुनकुता, जि०—आगरा ।

आदि—श्री पार्श्व जी सदा सहाई जी ॥ अथ धर्म्मसार भाषा लिषते ॥ श्री ॥ जी ॥ वीर जिने सुर प्रनवों देव । इन्द्र नरेन्द्र करै तुम सेव ॥ और वन्दौं हूँ गुरुनिन पाय । सुमरत जिनके पाप नसाय ॥ बरतमान जो जिन पर ईस । कर जोरूँ जिन नाऊँ सीस ॥ जै जिनेन्द्र भव मुनि कहैं ॥ पूज हूँते मैं सर मन गहैं ॥ जिन वानि प्रनमु धरी भाव ॥ भव जल रासि उतारननाय ॥ पुनि बन्दौ गौतम गुनराई ॥ धर्म्म भेद तिन दीयौ बताई ॥ अचारज कन्द कन्व मुनिभये ॥ सुमरित जिनके भव दुषगये ॥

अन्त—दोहा जिनबानी जो भगवती, दास तास जु कोय ॥ सो पावै सुष सार तै, पर्म धर्म्म पद होय ॥ सम्बत सत्रै सै इकावना, नगर आगरे माहि ॥ भादौं सुदि सुष दूतकी, बाल पाल प्रगटाय ॥ सुष रसमैं सब सुष सै, कुरत मांहिं कछु नाहिं ॥ पुरुष बात इतनी यहै, पुरुष प्रगट समझाय ॥ गुण कीजै गुन वन्त वर, दोष न लीजे कोय ॥ जिन बानी के सुमरन, सबकौ मंगल होय ॥

विषय—जैन धर्म्म के मुख्य सिद्धान्तों, उपसिद्धान्तों तथा व्यापक नियमों का उल्लेख किया गया है ।

संख्या २०१. लोगतारिका, रचयिता—शिवभोग, कागज—बाँसी, पत्र—९६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)-२०६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मदन पाल ब्राह्मण, स्थान व डा० पेंतीखेड़ा, तह० बाह, जि० - आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—अथ पोथी लोग तारिका लिष्यते ॥ श्री गनपति गुरु हर सुमिरि, इष्ट मित्र सुपमूरि ॥ गिरा गौरि पति ध्यान तैं, होइ कलुष दुष दूरि ॥ छन्द ॥ एक दन्त भगवन्त संत हित आनन्द कारी ॥ चन्दभाल वन्दन विसाल भरि भाल लाल प्रहारी ॥ दूरि होत छल छिद्र सकल नासत दरिद्र डर ॥ अष्ट सिद्धि नव निध्यि देत वहु व्रध्यि इष्टवर ॥ त्रयिलोक प्रथम वन्दत चरन कोटि तरन सोभा वरन ॥ सव सुष समुन्द्र श्री रुद्र सुत सिव प्रसाद गल मुषारन ॥

अंत—दोहा । सकल जीव कल्यान हित, प्रगती करी है सोहि । कहतु महातमु तासु कौ, है प्रसन्न हित तोहि ॥ कै गीता स्रवनि वरै करै कि पाठ निदान ॥ तिनहिं भवसि करि, हो हि गोमुक्त मुक्ति कल्यान ॥ चारि कमल मो नाभिके, ता सुगन्ध त्रयीलोक ॥ सो निश्चै करि लानी ये, गीता के श्लोक ॥

विषय—भगवद् गीता के अठारहों अध्यायों का माहात्म्य अलग अलग वर्णित है ।

संख्या—२०२. सर्वसंग्रह वैद्यक भाषा, रचयिता–मिश्र शिवदत्त सनाढ्य (सादाबाद), कागज—मूँजी, पत्र—४५, आकार—९×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित नन्दराम जी, स्थान व डाकघर—सादाबाद, मथुरा।

आदि—अथ सर्व संग्रह वैद्यक लिख्यते। अथ नेत्र रोग कूं माखी विष्टा मिरच हरद सोधो वाय विडंग हरड चिरायतो नींव पत्र बहेग छालि पीपरि नागर मोथा कूं सम भाग मिट्टी पीसि। अजा दुग्ध सू गोली चना प्रमान बनावै और छांह में सुषावै॥ औषधि सौं तिमिर जाय। घोड़ी दूध सौं फूलौ जाय। रात्यंधे कूं भांगरा रस सूँ कमल वाय कूं कांजी सू परिवार कूं महिषी घ्रत सूं॥ विष खायो ताकूं गोली १४ खवाइयै विष उतरै सर्प के काटे कूं गोली ७ विष खाये कूँ ५ भलौ होइ।

अंत—औषधि उनहरा की। मैन फल मासे २ हरदी मासे २ जलमें घिसके गरम करिकें बाल कूँ प्यावे तथा मैनफल की मिगी मासे २ नौसादर मासे २ जलमें काढ़ो कर प्यावै॥ ओषधि स्त्री प्रमेह चौरई की जड़ टंक ५ साठी चामरके धोमन जलसों दीजे प्रमेह जाइ॥ इति श्री वागभट्ट कृतेन वैद्यक वार्तिक समाप्तं॥ लिखितम् मिश्र शिवदत्त सादाबाद मध्ये शुभम् भूयात्॥ मिती आसाढ़ कृष्ण ३ बुधे।

विषय—रोगों का निदान और औषधियाँ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ आयुर्वेद विषयक संस्कृत ग्रंथों के आधार पर संगृहीत किया गया है। इसके रचयिता वर्तमान पुस्तक मालिक के परपितामह थे। वे स्वयं वैद्य थे और उन्हीं के हाथों की यह प्रति लिखी है। उनको बीते १०० वर्ष से अधिक हो गये। वे आदि निवासी तो काशी के थे पर पीछे सादाबाद में जाकर रहने लगे थे। इनका वंश वृक्ष इस प्रकार है:—

टीकाराम > दौलतराम > जीसुखराम > वल्देवदत्त > शिवदत्त > श्री नारायण > पं० नन्दराम। गद्य में होने के कारण ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

संख्या २०३. कर्मविपाक, रचयिता—सिविलाल, कागज—मूँजी, पत्र—२६, आकार—७×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९१० वि० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामसरण वैद्य, स्थान—विद्यापुर, डा० किरावली, जि० आगरा।

आदि—॥ सिधि श्री महागणाधिपतयेन्मः॥ अथ कर्म विपाक लिषते ॥पार्वत्योवाच॥ जन्मपुत्र विनासो जदा भवेत्॥ कौन कार्ज कन्या प्राप्तं॥ श्री महादेवोवाच॥ मेष रासी जाति कौ अहि रहुतौ॥ तस्य नाम लछिमन वासी मान पर कौ। महा अकर्म कीयो॥ ब्राह्मन कौ लैनो हतो॥ तिनी ब्राह्मन धन्यो दियो॥ पाछे ब्राह्मन को लैनो हतो॥ तिनी ब्राह्मन धरनो दियो॥ पाछे ब्राह्मन कुकर्म वच कह्यो उपग्रह वोल्यौ॥ अप्राछिकीयो सो ब्राह्मन मान्यो॥ तासु ब्राह्मनिसित भई॥ सो ब्राह्मनतु कूँ पापलग्यो॥

अंत—वृष १९ वृष २५ वृष ३६ वृष ८५ जदपि सुभग्रह रक्षा करै है तदपि जीवन वृष ११ मास येक १ दिन ५ घरी १० पल ३१ मृत्यु असुन मास सुकुल पक्षे तिथि पूरना गुर बासरे ॥ रेवती नाम नक्षत्र प्रथम पहिरै वाय सुर पित्त रोग देह जाती ॥ इति मीन रासि संपूरण इति श्री पारवती महादेव संवाद वीर रासि सं ॥ सं० १९१० पुस्तकं लिषते ब्राह्मन सिविलाल ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रन्थ इस नाम के मूल संस्कृत ग्रंथ का संक्षिप्त पद्यानुवाद है। इसमें प्रत्येक नक्षत्र के भिन्न चरणों द्वारा हर एक मनुष्य का पूर्व जन्मका वृत्त बतलाया गया है। पूर्व जन्म में क्या २ पाप पुण्य किये गये तथा उनका क्या क्या प्रायश्चित्त है यही सब इसमें लिखा है।

संख्या २०४ ए. पदमाला (अनु०), रचयिता—श्रीभट्ट आदि, कागज—मूँजी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८११ वि० = १७५४ ई०, प्राप्तिस्थान—नत्थाराम पुजारी, गढ़ीपरसोत्ती, डा० सुरीर, मथुरा।

आदि—बसो मेरे नैननि दोउ चन्द ॥ गौरव रन वृषभान नन्दिनी, स्याम वरन नंद नन्द ॥ गोकुल रहे भुलाय रुप में, निरखत आनन्द कन्द ॥ श्रीभट के प्रभु प्रेम रस बन्दन, क्यो छूटे दृढ़ फन्द ॥

अंत—नन्दलाल प्राण प्यारे मुसकिन में हूतो निहाल कीनी। टोना सो परे डान्योरी मोपर जब अँगुराई लीनी। चितयो नैन घुराय सषीरी प्रेम ठगोरी कीनी। हित अनुप सुहात न वा बिन मूरत है रँग भीनी। लिखितं मिदं श्री भट्ट वंश वल्लभस्य जेष्ठात्मजेन नव नीत वलभाख्येन ॥ शुभमस्तु ॥ चैत्र कृष्ण चतुर्दशी भौमवासरे सं० १८११ उच्च ग्रामे लिख्यते ॥

विषय—राधा कृष्ण की भक्ति के पद। निम्न कवियों के पद इसमें आये हैं:—
१—श्रीभट्ट २—नन्ददास ३—मीरा ४—वल्लभ रसिक ५—सिवराम ६—सदानन्द, ७—सूरदास ८—परमानन्द।

विशेष ज्ञातव्य—श्रीभट्ट पदों के एक उत्कृष्ट रचयिता थे। इनका जुगलसत पहिले भी विवरण में आया है, किन्तु और भी न जाने कितनी इनकी स्फुट रचनाएँ यत्र तत्र पड़ी हैं जो एकत्र नहीं मिलती हैं। इनकी रचना बड़ी सरस एवं शृंगारात्मक है। वृज के कवियों में राधा कृष्ण का शृंगार वर्णन करने में ये दक्ष थे। आज दिन भी व्रज के प्रमुख मंदिरों में जब श्री कृष्ण का शृंगार किया जाता है तो इन्हीं के पद गाए जाते हैं। इनके ग्रंथ तथा पद बहुत कम मिलते हैं। कहा जाता है कि इनकी बहुतसी रचनाएँ लोप हो गई हैं। ग्रंथ का महत्त्व इससे और अधिक बढ़ गया है कि इसे श्रीभट्ट के ही वंशज किसी वल्लभ के जेष्ठ पुत्र ने लिखा है। इसमें अन्य कवियों सिवराम और सदानन्द आदि के पद भी आए हैं जो विशेषतः ध्यान देने योग्य हैं।

संख्या २०४ बी. पद, रचयिता—श्रीं भट्ट, कागज—मूँजी, पत्र—१२, आकार—१३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४६, खंडित, रूप—

प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित बसन्त लाल, स्थान व डा०—नौहझील, जि०—मथुरा।

आदि—॥ श्री भट के पद लिख्यते ॥ दोहा चरन कमल की दीजिए, सेवा सह जर साल। घर जायो मिहि जानिके, चेरो मदन गुपाल ॥ एक तालौ ॥ मदन गुपाल सरन तेरी आयो। चरन कमल की सेवा दीजे चेरो करि राषौ घर जायो ॥ धनि धनि मात पिता सुत बन्धौ धनि जननी जिन गोद षिलायो ॥ धनि २ चरन चलत तीरथ को, धनि गुरु जिन हरिनाम सुनायो ॥ जे नर भए विमुष गोविन्द सों, जन्म अनेक महादुष पायो ॥ श्री भट के प्रभु दियो अभयपद, जग डरप्यौ जब दास कहायो ॥ दोहा जाके नामहि लेत सन, देत जुगल निज कूल। जै जै वृन्दाबन जु है, महानन्द कौ मूल ॥

अंत—॥ सोरठि ॥ ठाढे दोउ एक षोइया माही। बँसी वट तट जमुना जल में, निरषत चञ्चल झाँहो ॥ कारी कमरिया अन्तर दम्पति, स्याम स्याम लिपटाही ॥ श्री भट कृष्ण कूट में कंजन, जल वर्षत झल काही ॥

विषय—राधाकृष्ण के प्रेम, शृंगार और भक्ति से ओत प्रोत पद।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में श्री भट्ट के पदों का संग्रह है। इनका जुगल सत तो बहुत प्रसिद्ध है, पर एक जगह पर संकलित फुटकल पद बहुत कम मिलते हैं।

संख्या २०५. साहित्य सार चिन्तामणि, रचयिता—श्री धरानन्द, स्थान—(भरतपुर), कागज—मूँजी, पत्र—५२, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८३, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य और पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथजी का मंदिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री मनाणाधि पतये नमः ॥ कवित्त जाति उचरन किये पूजे सुर नर गण सी, कृपा करण समृद्धि के भरण हैं। बुद्धि विस्मरण वानी वरन वरन हते, खेत ऊसरन उपजावै सुवरण है ॥ मंगला चरण आभरण उषरण ज्योति, नख सुधा करन सौ सीतल करण हैं ॥ दारिद दरण पारिजात के परण सव, संकट हरण गुरुदेव के चरण है ॥

अंत—कवित्त ॥ कोल करो जग में सुजस चित चाहते कों, जाने एक फल में समुद्र जल फारे हैं। असुर विदारे कोटि देव जस धारे भारे, बार बार धरनी के संकट उघारे हैं ॥ कहत कवीस राज राज सुरराज पक्ष, राज धर्म्म राज पद कंज चित धारे हैं ॥ सुरन के टाप टंक टूटत गिरिशकूट, फूटे सिल कोटि तट बाजत नगारे हैं ॥

विषय—अलंकार निरूपण।

विशेष ज्ञातव्य—खोज में यह कवि नवोपलब्ध है। कविता इसकी उच्च कोटि की है। यह भरतपुर के राज-कुल के आश्रय में था। इन्होंने बीच बीच में उदाहरण स्वरूप वहाँ के क्षत्रियों की वीरता का वर्णन किया है। यह बातें ग्रन्थ मालिक की खोज से ही ज्ञात हुई हैं, जिन्होंने 'भरतपुर के राज कवि' नामक ग्रंथ बड़े अनुसंधान के साथ लिखा है जो अप्रकाशित पड़ा है। विशेष वृत्त जानने के लिए उनसे पत्र व्यवहार किया जा सकता है। ग्रन्थ भरतपुर नगर में ही लिखा गया है, जिसका उल्लेख पुष्पिका में हुआ है।

संख्या २०६. श्रृंगार माधुरी, रचयिता—श्री कृष्ण भट्ट, कागज—स्यालकोटी, पत्र—१६०, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२२, खंडित, रूप—प्राचीन, जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० इन्द्र मिश्र, स्थान—ब्रह्मपुरी, डा०—कोसी कलाँ, जि०—मथुरा।

आदि—॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ विघन हरन सुष करन नाम उचरन सुभ वितरन ॥ कंज वरन जुग चरन सरन नर संकट उतरन ॥ मद मत्तंग आमोद मधुर मोदक कर मण्डित ॥ मन मोदक बहु सुण्ड तुण्ड ताण्डव विधि पण्डित ॥ हेरम्ब इकू अवलम्ब जग दुष कदम्बवर्त विष करन । जय इक्क दन्त मतिवंत वरभाल चन्द भय उद्धरन ॥

मध्य—॥ प्रछन्न अभिसारिका ॥ गरजि गरजि घोर घटा चहुँ ओर फिरी, दसौं दिसि माहि दामिनीनि कौविलास है। तैसी निस पावस की मानहु अमावस की, कुंज भौन भयो भूरि भयकौं निवास है ॥ बड़ी बड़ी बूंदें डरपावनीं लगत्यों ही, अैसे समैं प्यारी अभिसार कौ विलास है। पंथ कीच वीच परी कंचन कीछरी जानि, पकरी भुजंग मनि मानिक की भास है ॥

अंत—परम प्रचण्ड मारतण्ड सौ प्रचण्ड तेरो, ताके मध्य पंचानल साधना धुरत है। देषियत रैंनि दिन नैननि के पूरन, प्रवाह फर फेरि फेरि मंजन करत है ॥ कंचुकी नवीना मानो धरनिहि दिगम्बरता, छांडि ··· विषै अभिलाष दिननि भरत है ॥ राजाराउ बुद्धसिंघ रावरे निपुन की, रमनि के उरोज मानो करन वरत हैं ॥ इति श्री मन्महाराउ राजा बुद्धसिंघ देवाज्ञा प्रवर्तक कवि श्री कृष्ण भट्ट विरचितायां श्रृंगार रस माधुर्यां पंचदशो स्वादः ॥ (अपूर्ण)।

विषय—मंगला चरण, १–२ (३ से १० के पत्र ग्रंथ में नहीं हैं)। नायक भेद, ११–१७। नायिका भेद, १८–३९। दर्शन के लक्षण तथा भेद, ४०–४९। मिलन के भेद और लक्षण, ५०–६३। भाव, विभाव, आलम्बन हाव, विभ्रम, तथा नायिकाओं का वर्णन, ६४–९७। विप्रलम्भ रसादि चिन्ता, स्मृति, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि आदि, ९८–११६। मान के लक्षण तथा भेद, ११७–१२२। मानमोचन, प्रणति, अपराध, उपेक्षा, प्रसंग विध्वंस, करुणा, विरह, समझावना, १२३–१४७। विनय, मिलाप, १४८–१५२। हास, परिहास, नवरस, १५३–१६४। नवरस, १६४–१६९ (अपूर्ण)।

संख्या २०७. संक्षेप दशम, रचयिता—श्री लाल जी (स्थान–सिन्ध नदी का तट), कागज—बाँसी, पत्र—७, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६७४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक, गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः। प्रथमे श्री गुरुचरन धिग आवौं। श्री गोविन्द भक्ति को पावौं ॥ जिन हरि भक्ति सहित हृदधारी। तिनकी विपति गुपाल निवारी ॥ प्रीक्षतके प्रभु अंग मुरारी। सस छेद कर आपदा टारी ॥ दै तन कर भू अति दुष पाआ। विध को सब वरनन्त सुनाआ ॥

अंत—संवत् सोला सइ चोतारा। फागुन शुक्ल पक्ष बुधवारा॥ तिथ पंचमी दिन प्रगट सुनायो। सन्त जना मिलि मंगल गायो॥ दशम चरित्र सुनै नरनारी। तिस पर सु प्रसन्न गिरधारी॥ श्रवन सुनै को मुष कर गावै। चार पदारथ सहजै पावै॥ मन क्रम वचन सुनें हृदधारे। लालदास प्रभु सरन तुम्हारे॥ इति श्री दसम संक्षेप श्री गुसाईं लाल जी कृत सम्पूर्णम्। सम्मत् १८४४ शुक्रवासरे तिथि प्रतिपदा।

विषय—लीला विस्तार।

श्री लाल जी, संवत् १६७५ भाद्र सुदी ६। श्री मथुरा नाथ, संवत् १६९० पोह बदी ९। श्री केवलराम जी, संवत् १७२६ असु सुदी ७। श्री गोकुलनाथ, संवत् १७३३ वैसाष सुदी ९। श्री जगन्नाथ, संवत् १७४३ आहड़ सुदी ६। श्री मदनमोहन, संवत् १७५२ आहड़ सुदी १०। श्री प्रद्युम्न जी, संवत् १७७४ सावण सुदी ७। श्री गोसाईं चतुर्भुज, संवत् १८२५ आहड़ सुदी १५। श्री माता थाहरी जी, श्री मुरलीधर, श्री माता पोपटी जी, श्री व्रजभूषण, श्री अनुरुद्ध जी, श्री धरनीधर जी।

संख्या २०८ ए. ख्याल निर्गुन सर्गुन, रचयिता—सुखलाल कवि, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुं० सुखवासी लाल जी प्रधानाध्यापक, प्राइमरी पाठशाला टूँडला, स्थान व डा०—टूँडला, आगरा।

आदि—ख्याल वहर लँगड़ी॥ इस ख्याल मेरे को सुनके भ्रमना दूर करो वावा। वेदकी वानी है ये मुझको मंजूर करो वावा॥ बुद्धी इंद्री मन प्रान पदारथ चार मोक्ष आदिक गाये। उसी प्रभू ने रचे तव निगुन सगुन गुन कहलाये॥ प्रभू निगुन रज गुन तम गुन सतगुन से अलहदे-फरमाये॥ ब्रह्माँड रचके सगुन में सगुन निगुन वन के आये॥ माया रची तव सगुन वने ये भेद निगुन गुनमें पाये। गुन जव मेंटे हुए तव निगुन कौन फिर गुन गाये॥ शेर॥ जव प्रलय होती है यार समझ वानी को। रुप नहीं रेख रहे॥ इतनी होती है खवर दिलमें ब्रह्मज्ञानी को। हो अलष अलेष रहे॥ समझोपद निरवान श्रवन साविक दस्तूर करो वावा। वेद की वानी है ये मुझको मंजूर करो वावा॥ १॥

अंत—पृथवी से पैदा होके सब प्रथवी में मिल जाता है। कोई कहीं को गुनी जाता है ना कोई आता है॥ जेवर सोने का हर कोई अलग अलग वनवाता है। सवके अन्दर एक वोही सौना रूप कहाता है॥ इसी वजह वो निर्गुन सगुन जलसा औवल दिखलाता है। दिखला करके फेर आपे में आप समाता है॥ शेर॥ मेरे गिरधारी गुरू आज कहे हैं वनठन। ज्ञान विज्ञान के पद॥ खूव अंदाज से दंगल में कहें राम किशन। करके कुलवात कोरद॥ सुखलाल कवी के छन्द सुनो मत दिल मंजूर करो वावा। वेद की वानी है ये—इसको मंजूर करो वावा॥ ४॥

विषय—निर्गुण सगुण व्याख्या।

संख्या २०८ बी. ख्याल शहादत, रचयिता—सुखलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७६,

पूर्ण, रूप प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुं० सुखवासी लाल जी, प्रधानाध्यापक, प्राइमरी स्कूल, टूँडला, स्थान व डा० टूँडला, जि० आगरा।

आदि—॥ ख्याल शहादत ॥ सद रहमत इस वहादरी पर लाख मरहवा दरुद दम। जाय ख़ुल्द तलवार के रस्ते सर के वल पहुँचे क़ासम ॥ व्याह भये दिन चार न वीते रज़ा इलाही आ पहुँची। गोया तक़ाज़ा लेके सख्त शादीमें तवाही आ पहुँची ॥ उसी रोज़ थी घरके वीच दुलहन भी ब्याही आ पहुँची ॥ मेंहद तक मैली ना हुई सुरखी में स्याही आ पहुँची ॥ शेर ॥ व्याह का ज़माना उतरा था वोही वनके कफ़न। लाश वक्ते कर वलाके काम आया सुर्ख तन ॥ खेलते चौथी कहाँ से जवके तीजे का पयाम। पेशतर से आन पोंहचा वाँध सर सेहरा समन ॥ झड़ी ॥ वोही आखि़रश फूल वनाये। और दूसरे हात ना आये ॥ ये जो हात कंगना वंधवाये। उसे खोलने वहाँ ना पाये ॥ मुकाविले दुश्मनों के आये ऐसी फ़ुरसत मिली ना कम। जाय ख़ुल्द तलवार के रखते सर के वल पोहँचे क़ासम ॥ १ ॥

अंत—हलाक़ सदहा किये आप भी ख़ुद पीछे हो गये शहीद। जगह कौन अफ़सोस की वाक़ी रही जो कीजे रंज मज़ीद ॥ वोल उठे उस्ताद मदारी वदरुद्दीन साहव तौहीद। कही प्रेम सुख भैरोंने कुछ वात समझ से नहीं बईद ॥ शेर ॥ शेर का वुरक़ा पहन कर हुक्म खालिक़ से मरे। वाजवी रोना है उसका जो सदा रोया करे ॥ जीते जी गाज़ी रहा और वाद मरने के शहीद। चल दिया जन्नत को कब नार दोजख़ से डरे ॥ झड़ी ॥ गौरी शंकर मजनूंखाँ की। सनत तेरी सुखलाल है वाँकी ॥ शवे शहादत आज वयाँ की। सवने सराही सवने हाँकी। रहमत अल्ला दौनों जहाँ की वहादरी हो गई ख़तम। जाय ख़ुल्द तलवार के रसते सरके बल पहुँचे कासम ॥ १६ ॥

विषय—क़ासिम की करबला में वीरता दिखाने का वर्णन।

संख्या २०९. बूटी संग्रह वैद्यक, रचयिता—सुखराम दास (स्थान-रतलाम), कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९७५, पूर्ण, रूप—स्वच्छ, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० वि०, लिपिकाल—सं० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ वैद्य, ग्राम—दातागांव, डा०—खैर, जि०—अलीगढ़।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बूटी संग्रह वैद्यक सुषराम दास रतलाम निवासी कृत लिख्येत ॥ १—सेवती। सेवती के गुण। गर्मी से माथा दूषता हो जिसकी दवा। गर्मी से माथा दूखे तो सेवती का फूल तथा अतर सूंघे तौ बंद होय। सेवती का गुलकंद जल के साथ पीवे तथा सेवती के फूल तोला १ इलायची रत्ती ४ मिर्च ७ काली। मिश्री एक तोला घोट कर पीवे तौ दाह गर्मी मिटै माथा की व्याधा मिटै आराम होवै ॥ २—गुलाब। वाय गर्मी से माथा में कूलन चलती होय तिसकी दवा। वाय गर्मी से माथा दूखता होय तौ चैती गुलाव और अतर सूंघै वंद होवै ॥ गोपी चंदन और गुलाव जल ये दोनो माथे पर लगाने से नक्सीर वंद होवे। गुलाव जल से आंख धोवै तो आंख की गर्मी जाय। गुलाव का गुलकंद जल के साथ पीवै तौ दाह गर्मी मिटै आराम होवै ॥

अंत— (१)

क्लीं	३००	३००	३००	१००	नास्य
क्लीं	३००	३००	१००	३००	नास्यमुष
क्लीं	३००	३००	३००	३००	नासय चंद
क्लीं	३००	३००	३००	३००	नासय मुष चंद।

(१)

यंत्र स्यालरी झाड़ वांधने का। यह यंत्र हरताल अष्ट गंध से लिख खेत में गाड़े तौ स्यार खेत में न लगें।

(२)

क्लीं	ह्रीं	श्री
ॐ	ह	बु
य	ताप	नमः

(२)

यह मंत्र लिखकर मेलि का वांधा हो उसको भोजपत्र अथवा कागज पर लिखकर वांधे आराम होवे। यदि वालक के वांधे तौ नजर न लगे।

इति श्री वूटी संग्रह वैद्यक ग्रंथ सुषराम दास कृत संपूर्ण समाप्तः संवत् १९१४ वि० लिखा सिव दास।

विषय—इस ग्रंथ में हर प्रकार के फूल और वूटी के नाम उनके गुण और दोषों पर विचार कर किस रोग पर किस भांति से वे लाभ दायक हैं, वर्णन किया गया है।

संख्या २१०. त्रिया भोग, रचयिता—सुन्दर दास, कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० गिरबर सिंह जी जमींदार, स्थान—दिहुली, डा०—बरनाहल, जि०—मैनपुरी।

आदि—प्रूढ़ा प्रगल में जब ही होई। कामु माथै सुवुधि सु कोई॥ पसु पंछी नर सुर ब्रह्मा विरना हे व्यापौ है हर॥ ऐसो तिहु पुर देउ सु कोइ॥ जा कही श्रंग व्यापौ नहिं होइ॥ काम कथा जो सुनै सुनावै। सुनत श्रवन रस रस कहँ पावै॥ ब्रु ब्रष सैकौ लोइ। कथा सुनै फिरि तउनै होइ॥ जनमत जौर सिपंडी भावै। काम कथा सौत्रिय वहु भावै॥ कामु रुपु अरु काम कुरूप॥ कामु अषारतु निरंधु होइ॥ × × × ॥ दोहरा॥ प्रथम रिषिनि असलोक करि, रचि पचि कीन्ह्यों कोकु। रसिक जननि कहँ सुनत सुष, बढ़त कामु मिटै सोकु॥ कामी कह मन कामना, उपजतु भोग विलास। काम केलि कौ हास्य रसु, प्रगट्यौ सुन्दर दास॥ त्रिया भोगु या ग्रंथ कौ नामु, सुंदर रसिक विजा ब्रछ न पामु॥ कोक नाम रिषि आहि कती सुउ, ग्रंथ कर्यो ··· ··· ॥ × × × वार वार अवलोक नु करै। त्यौं त्यौं या स्वादै अनुसरै॥ सकल काम रस मथि मथि करि कीन्हौं। सारु सारु वस्तु रसिकनि कहु लीन्हौं॥

अंत—चीतौरी निकसी होइ ॥ कैसैहुँ वइनी की नहिं होइ ॥ काँसि ववूर की सेतु कल्पावै ॥ पानी मटुकी भरिकैं चढ़ावै ॥ औटतु औटतु सेरुक रहै ॥ जव पानी पिवावहु वाकहियां ॥ तव नित प्रति इहि विधि पियावहु ॥ जैसे पेटतै वेगि चलावहु ॥ सिथिल होइ वेसुधि होइ अनुसरौ ॥ जैसे छेरिइ डरौ ॥ इहि विधि दिनाछइ सातक द्यावौ ॥ निहचै तारोगइ नसावै ॥ ....॥

विषय—स्त्री पुरुष संबधी केलि क्रीड़ा, नख क्षतादि आसन वर्णन तथा पुष्टादि सम्बंधी कुछ औषधियाँ।

संख्या २११. तर्क चिन्तामणी, रचयिता—सुन्दर दास, कागज - मूँजी, पत्र—४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—अथ ग्रंथ तर्क चिन्तामणि ॥ चौपाई चन्द ॥ पूरण ब्रह्म निरंजन राया ॥ निति यह नख सिष साज वनाया ॥ ताको भूलि गयो विभिचारी ॥ अईया मन कहुँ बूझ तुम्हारी ॥ गरल माहि कीन्ही प्रति पाला ॥ तहाँ तो होते बहुत बेहाला ॥ जनमत ही वह ठौर बिसारी ॥ अईया मन कहूँ बूझ तुम्हारी ॥ बालापन में भयो अचेता ॥ मात पिता सौं बांध्यो हेता ॥

अंत—॥ चौपाई ॥ सकल सिरोमणि है नर देहा ॥ नारायन का निज घर ऐहा ॥ जामहि पइये देव मुरारी ॥ अईया मन कहुँ बूझ तुम्हारी ॥ चेति सकौ सौ चेतहु भाई ॥ जिन डह काइ राम दुहाई ॥ सुन्दर दास कहैं सु पुकारी ॥ अई या मन कहुँ बूझ तुम्हारी ॥ तरक चिन्तामणी सम्पूरणं ॥

विषय—विराग के दृष्टिकोण से बाल, युवा और वृद्ध अवस्था की भूलें प्रकट कर यम यातना का तथा भक्ति का महत्व दिखलाया गया है।

संख्या २१२ ए. वाराखड़ी, रचयिता—सूरदास, कागज—बाँसी, पत्र—४, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ वि० = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० प्रभुदयाल, स्थान—अकबरा, डा०—रुनकुता, जि० आगरा।

आदि—॥ अथ वारै खड़ी लिष्यते ॥ कका कृष्ण गोपालको, करि सुमिरन दिन रैन ॥ टेरे तांसु कैहें तुहें, पावेगो सुप चैन ॥ षषा खेत न घाड़िये, सूखीर को काम ॥ सायर है सन्मुष रहौ, पन रापै गो राम ॥ गंगा गुरु की सीप सुनि, छाड़ौ सकल जंजाल ॥ भवसागर के तरन को, कीजै कछू उपाव ॥

अंत—हहा हरिकी सेवा कीनी ॥ अष्ट सिधि नव निधि ताकूँ दीनी ॥ ध्रू-प्रहलाद उतरि गये पारा ॥ बहुरि न आये यह संसारा ॥ ररा रांडी माडी वहुत सुष पायो ॥ विप्र सुदामा हरि गुण गायो ॥ वाराषरी पढ़ो मन धारे ॥ "सूरदास" वैकुन्ठ सिधारे ॥ इति श्री सुदामा वाराषरी सम्पूर्ण सम्वत् १८८७ वार सूर्य्यो सवाई रामने लिषी मिती जेठ वदी १५।

विषय—इसमें दो बाराखड़ियाँ हैं। एक तो कृष्ण के गुणों का बखान करती है और दूसरी में सुदामा की कथा दी गई है।

संख्या २१२ बी. वारामासी, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौ० अङ्गद सिंह जी, स्थान—नयानगला, डा०—भदान, जि०—मैंनपुरी।

आदि—श्री गनेस जू॥ श्री सरस्वती जू॥ अथ वारामासी॥ चल चल सषी चल देषिय श्रीनंद घर वालक भये। धन धन जसोदा भाग तेरे गोकुला के दुष गये॥ उठौ ननदी दियल जारौ मुष देषौं वंस के। जाके सीस ऊपर ···ट सोहै राज सोहै कंस के॥ वुलवाइ कै दुजराज पंडित सोध सुभ आनंद घरी। कंस मारन संस कारन आन प्रगटे नरहरी॥ बाजे नगारे तीन पुर तब असुर कैं संका भई। कंस पठई पूतना जब गोकुलै सुर पुर गई॥ यह जान कै तुम होय सजनी चंद्र दोषी क्या भई। एक दिन अनमान कीनौं श्री कृष्ण कौ इछया भई॥

अंत—···हि श्री पति गडूर टेरे गडूर पौंचै नायकैः। देषि काली माथ नाऔ श्री क्रस्न लीनौ नायकै॥ कर जोर नागिन करति विनती मांग प्रीतम पाइऐ। यह वात दै जसुदा के ललना वंध छोर कहाइऐ॥ अब तौ न छोड़ौं नागिनी यह सहस फल दायकै। कंस के संग सार षेले नाग कौ सिर हारकै॥ भैजु नाग नाथन वेद भाषत माथुरा ··· इऐ। सूर के प्रभु नागलीला रहसमंडिक पाइऐ॥ इति श्री नागलीला संपूरनं॥

विषय—कृष्ण जन्म से नाग नाथन लीला तक अत्यन्त संक्षिप्त कृष्ण चरित्र वर्णन।

संख्या २१२ सी. भागवत महापुरान, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०९, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, गोकुलपुरा, आगरा।

आदि— × ×॥ राग धनाश्री॥ वरनी करना सिंधु की कछु कहत न आवै। कपट हेत परसौ की जननी गति पावै॥ वेद उपनिषद जस कहै निरगुनदि बतावै। सोई सगुन ह्वै नंद की दाँवरी बंधावै॥ उग्रसैन की आपदा सुनि सुनि बिलषावै। कंस मारि राजा कियो आपुन सिर नावै॥ जरासंध की वंध काटि त्रय कुल जस गावै॥ असमय बिन निगले पिता ताको साप नसावै॥ उधरे सोक समुद्र तै पंडव ग्रह लावै॥ जैसे गैया वत्स कौ सुमिरन उठि धावै॥

अंत—कह्यो विषय सै अपन न होय। भोग करो कैसो किन कोय॥ तब तरनापौ सुत कौ दीन्हो। वृध पनो फिर आप न लीनो॥ बन में करी तपस्या जाय। रह्यौ हरि चरन न सौं चित लाय॥ या विधि नृपति कृतारथ भयो॥ सो राजा मैं तुम सों कह्यो॥ शुक ज्यो नृप सों कहि समझायो॥ सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥ इति श्री भागवते महापुराने सूरदास कृत नवम स्कन्ध समाप्तं॥९॥ मिती भादों बदी १२ बुधवार संवत् १८७९ शाके १७४४॥

विषय—कृष्ण स्तुति, पत्र २१ तक। व्यास सुक संवाद, पत्र २२ तक। नाम माहात्म्य, विदुर के घर भोजन, पत्र २५ तक। द्रौपदी सहायक, भारथ समय, द्रुयोधन वचन भीष्मप्रतिज्ञा, भगवान वचन अर्जुन के लिये, अर्जुनभीष्म का संवाद, युद्ध समाचार, ३७ तक। भगवान द्वारा परीक्षित की गर्भ में रक्षा, राजा परीक्षित की कथा, सतसंग महिमा, विराट् रूप, चौबीस औतार ४६ तक। विदुर मैत्रेय संवाद, विदुर जन्म, सनकादिक वर्णन, असुर सुर, वाराह अवतार, कपिल देव अवतार, दत्तात्रय अवतार, पत्र ५२ तक। जज्ञ अवतार, पुरजन कथा, पत्र ६० तक। अजामिल उद्धार, गुरु महिमा, पत्र ६६ तक। नरसिंह अवतार, शिव सहाय, नारद जन्म कथा, गज मोचन, कूर्म्म अवतार, मोहिनी रूप वर्णन, वामन अवतार, मच्छ वर्णन, पत्र ७७ तक। राजा पुरुरवा को सौम्य वैराग्य, च्यवन ऋषि, राजा अम्बरीष, सौभरि ऋषि, श्री गंगा ध्रुव लोक आगमन, परसराम अवतार, बाल काण्ड में राम चरित्र, सीता वचन, पत्र ८६ तक। केकई वचन राम प्रति, वन काण्ड, सुन्दर काण्ड की कथा, लंका काण्ड, उत्तर काण्ड, पत्र १०८ तक। राज समाज वर्णन तथा अहिल्या की कथा वर्णन, नहुष को कथा, ११० तक। कचदेवयानी की कथा, ११२ तक। देवयानी ययाति विवाह, १२० तक।

संख्या २१२ डी. द्रोपदी के भजन, रचयिता—सूरदास (स्थान—व्रज), कागज—बाँसी, पत्र—१४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ऊँकारनाथ, स्थान व डा०—रुनकुता, जि०—आगरा।

आदि— दोहा कंठ विराजै सरस्वती, हिरदय वसै महेश ॥ समझावौ अक्षर मिले, गौरी पुत्र गणेश ॥ भीम गंगा जल भरि ला भाई ॥ कौरव पंडवा एकै दोउन, मिलिकै सारि मचाई ॥ दोहुन मैं से एकुन हारयो, प्यास २ कहि जुर्जोधन राई ॥ भीम वली और दोनों बन्धु जे, ठाड़े भरै गवाई ॥ इनसे घट करिवै के कारण, भीम दई पानी को पठाई ॥

अंत—जै जे रथै सबेरे ही मारूँ ॥ जै जै रथै सबेरे ही मारुँ, मारि धरनि फारि डारूँ। लाख आन इन्दर राजा की, अपनी दतौन जबही फारूँ ॥ अजा छार और नाउँ द्वार पै, मुर्द शिला पै न्हाऊँ। इतने पातक मोकूँ लागै, जो जै रथ को छोड़ आऊँ ॥ × × ×

विषय—इसमें दुर्योधन के साथ युधिष्ठिर आदि का जुआ खेलना और उसमें युधिष्ठिर का बुरी तरह हारना, द्रौपदी का दुशासन द्वारा चीर खींचा जाना और उसका कृष्ण को लाज बचाने के निमित्त पुकारना, कृष्ण का वस्त्रों की ढेर लगा देना आदि विषयों के भजन हैं। अन्त में चक्रव्यूह तोड़े जाने के भी पद हैं।

संख्या २१२ ई. पद संग्रह, रचयिता—सूरदास, कागज—बाँसी, पत्र—२०, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८९, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० रामलाल जी, स्थान—जावरा, जि०—मथुरा।

आदि—॥ राग भैरों ॥ भोर भवन नव निकुंज ऊठी कुँवरि राधा। चार जाम स्याम सुन्दर सुष बढ़ौ अगाधा ॥ बिछुरे बार हार उरझि आलस बस गोरी। मनो मधुप कनकलता निधर कनक कोरी ॥ सारदा सची सी सहचरी लुटति चर्णे। तिनके चरन चूमि २ निकसै कविं वरनै।

अंत—अश्वमेध जज्ञ जो कीजे, न्हाइ बनारस धारा। राम नाम सरतौन पूजै, इह तन गारिहि वारा ॥ सहस बार त्रिवैनी परसै, चन्द्रावन सौ बारा। सूरदास गोपाल भजन विन, जैहो जम के द्वारा।

विषय—भगवान की भक्ति और प्रेम के पद।

संख्या २१२ यफ्. पद संग्रह (अनु०), रचयिता—सूरदास आदि, कागज—मूँजी, पत्र—६५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३१४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मानदास बावा, ग्राम—रिठौरा, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—प्यारी जू सुन्दर वदन तुम्हारो। ताप निरषि प्रीतम सुष पावत, निमषन होत न न्यारो। मन्दहास परिहास परस्पर, नवन वने हनि हारो ॥ श्री बिहारी विहारिन दास रहसि रस, बृन्दावन विपिन विहारो।

अंत—चरण सरण राधे की आयो। बहोत जन्मते भटकत डोल्यो, अब निज सरनो पायो। मिटे है अनेक जन्म के बन्धन, कठन कर्म्म सब ही छिटकायो। किसोरी दास बृज बृन्दावन रानी, भजि अब सबही भरि पायो। × × ×

विषय—राधाकृष्ण की भक्ति से ओत प्रोत निम्नलिखित कवियों के पद इसमें संगृहीत हैं:—१-आनन्दघन, २-सूरदास, ३-श्री हरीदास, ४-गोविन्द प्रभु, ५-अली किशोरी, ६-बिहारिनदास, ७-लछीराम, ८-नन्ददास, ९-भोलानाथ दास, १०-विट्ठलदास, ११-रसिक विहारी, १२-इच्छाराम, १३-श्रीहित हरिवंस, १४-दामोदर, १५-कृष्णदास, १६-परमानन्ददास, १७-बिहारीदास, १८-मीरा, १९-नागरीदास, २०-किशोरीदास, २१-नरसी, २२-हितध्रुव, २३-व्रजनिधि।

संख्या २१२ जी. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—काश्मीरी, पत्र—३२०, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२० वि० = १७६३ ई०, प्राप्ति-स्थान—बाबा नागरीदास, काली मर्दनघाट, वृन्दावन।

आदि—श्री गोपी जन वल्लभाय नमः राग सारंग बाल विनोद भावती लीला, अति पुनीत मुनि भाखी। साधु साधु तुम सुनहु परीक्षत, सकलदेव मुनि भाखी ॥ ध्रुव० ॥ कालिन्दी के निकट प्रगट इक, मधुपुरी नगर रसाला ॥ कालनेमि उग्रसेन वंस कुल, उपज्यो कंस भुआला ॥

अंत—मै रघुनाथ चरन चित दीनो। मन क्रम वचन विचारि सखी, मिलिबे को आगम कीनो ॥ डुले सुमेरु सेस सिर कम्पे, पछम उदो करैं वासर पति। सुनि त्रिजरी होत

उन छाड़ों मधुर मूरति रघुनाथ कन्तरति ।। सीता करत विचार मनहिं मन, आजु काल कोसल पति एहैं । सूरदास स्वामी करुना मैं कृपानाथ मोहिं क्यो विसरै हैं ।। इति श्री सूर सागर पद मुक्तावली समाप्ता संवत् १८२० वर्ष मासोत्तम मासे माघ मासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्यां ।

विषय—दशम स्कन्ध भागवत का अनुवाद जिसमें भगवान् कृष्ण का चरित्र वर्णित है ।

संख्या २१२ यच. सूर सागर, रचयिता—सूरदास जी (स्थान—गौघाट, रुनकुता), कागज—मूँजी, पत्र—३०६, आकार १२ × १० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३००५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० वि० १८४४ = १७८७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जमनादास जी कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल ।

आदि—चरण कमल बन्दौ हरिराई । जाकी कृपा पंगुगिरि लंघै, अन्धे को सव कछु दरसाइ ॥ बधिरा सुनै मूक पुनि बोले, रंक चले सिर छत्र धराइ ॥ सूरदास स्वामी करुणा मय, बार बार बन्दो तिहि पाइ ॥

अंत—कारन करन हार भगवान । तक्षक डसन हर मत जान ।। बिन हरि अज्ञा डसै न पाव । कौन सके काहू सन्ताप । हरि ज्यो चहे त्योहीं होय ॥ नृप यामे सन्देह न कोय ॥ नृप के मन यह निश्चय आयो ॥ जज्ञ छाड़ि हरि चित्त लगायो ॥ सूत सौनकन कहि समझायो ।। सूरदास त्यो हरि गुन गायो ॥ १८३१ ।। इति श्री भागवते महापुराणे सूरदास कृतौ द्वादस स्कन्ध समाप्त सम्पूर्ण ॥ संवत् १८४४ मिती बैसाष सुदी नौमी ॥

विषय—भागवत का पदों में अनुवाद ।

संख्या २१२ आई. सूर सागर के पद, रचयिता—सूरदास, कागज—मूँजी, पत्र—११०, आकार १० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१३८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—भूदेव प्रसाद स्वर्णकार, स्थान—परसोती गढ़ी, डा०—सुरीर, जि०—मथुरा ।

आदि—राग देवगंधार ॥ जव वसुदेव देवकी व्याहीं भई अनाह दवानी हो ॥ अठ्यो पुत्र होय भगनी कौ करि है राज जिहानी हो ॥१॥ रथ ते उत्तर परयो कंसा स्वर करो षड गनिव टारो हो ॥ अवहि व्यानै देवकी मारौ रहे न सोच विचारो हो ॥२॥ त्रिया मारि के दोष न लीजै विसम बात यों भाषी हों ॥ जैते सुत होंहिं सवै तुहि पै हौं चइ सूर दोऊ साषी हो ॥३॥

अंत—आसावरी ॥ शिवशंकर हमकूँ फल दीजौ ॥ पो होप पान नाना फल मेवा षटरस लै लै अरपन कीनो ॥१॥ पाय परी जुवती सव यह कहिं धन्य धन्य त्रपुरारि ॥ तुरत ही फल पूरन हम पायो नन्य सुवन गिरधारि ॥२॥ विनैं करत शिव ता तुम सर को पीय चंचल कर जारे ॥ सूर स्याम पति तुम तै पाणो कहि घट्टी भारे ॥३॥

विषय—राधा कृष्ण का शृंगार, भक्ति, प्रेम आदि स्फुट विषय सम्बंधी पदों का चयन

संख्या २१२ जे. वंसी लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—सादा, पत्र—४८, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पूरण मल जी शर्म्मा, स्थान—राजा, डा०—माठ, जि०—मथुरा।

आदि—॥ वंसि लीला प्रारम्भ ॥ प्रिया जी टैर किया अनियो गवहा ज्यू ॥ गवहा बोला। अवका भईन प्रियाजी। प्रियाजी बोला॥ हे हो गवहा वृन्द्रावन में बड़िक हर वंसी बाजत है। तोहरे पंचन को क्या होत हैं॥ प्रियाजी बोला॥ हमरे पंचन् को क्या होत हैं॥ गवहा बोला॥ तोहरे बड़ी विरह होत है तो चार कंचा नहिं आठ कंचा के रुवाम गाई के दो नुकान में॥

अंत—ले बंसि जदुनाथ जाये, जमुना तट टेन्यो। जा हा उठे छवि सो राग ताहा मुरलि धुनि टेग्यो॥ भक्त वत्सल प्रभु द्वारिका ये राखे सब को मान॥ ये वृज में कोहि वनि हें पद गावैं सूर सुजान॥ वंशी अब लीजिए लिज्ये लिज्ये बिहारी लाल॥ इति बंसि लीला॥

विषय—भक्ति, प्रेम और कृष्ण की वंसी की गोपियों द्वारा चुराए जाने का वर्णन।

संख्या २१३. श्रृंगार सार, रचयिता—सूरत मिश्र (स्थान—आगरा), कागज—बाँसी, पत्र—२४, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८५ (सन् १७२८ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः॥ रिपुपली नायका॥ सुमिरत ही हरि छिनतु ही, दीने वसन बढ़ाइ॥ सुनि प्रभाव रिपु की तरुनि, सबै गई मुरझाइ॥ सपल पर नारि॥ मन भावन आवन कह्यो, सावन लागत धाम। विरमायों बालम सषी, काहू वैरिनि वाम॥ उपनायका अनुनायका॥ सम कछु घटि उप नाइका, जे कनिष्टिका नाम। लघुता युत अनुनायिका, जे सेवक जन वाम॥

अंत—॥ दोहा॥ वरनी रस श्रृंगार की, संछेपहि कछु रीति॥ लषौ चूक सौ बनाइयौ, कवि कोवि करि प्रीति॥ नगर आगरौ बसत सौ, बाँकी ब्रज की छाँह॥ कालिन्दी कलमष हरनि, सदा बहति जा माँह॥ श्रुति पुरान कविता सरस, जप तप नृत्य सुगान॥ जहाँ चरचा निशि दिन रहै, अरचा श्री भगवान॥ भगवत पारायन भये, तहाँ सकल सुख धाम॥ विप्र कन्त बजु कुल कलस, मिश्र सिंघ मनि नाम॥ तिनके सुत सूरत सुकवि, कीने ग्रंथ अनेक॥ परमारम्य वर्णन विषैं, परी अधकसी टेक॥ माथे पर राजति सदा, श्री मद्गुरु गंनेस॥ भक्ति काव्य की रति लही, लहि जिनके उपदेस॥

निम्नलिखित ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं:—

प्रथम कियो सत कवित में, इक श्रीनाथ विलास। इक ही तुक पर तीन सौ, प्रास नवीन प्रकास॥ श्री भागवत पुरान के तँह, श्री कृष्ण चरित्र॥ वरने गोवर्द्धन धरन, लीला लागि विचित्र॥ भक्त विनोद सुदीन ता, प्रभु सो सिक्षा चित्र॥ देव तीर्थ अरु पर्व के, समै समै सु कवित्त॥ बहुरि भक्तमाला कही, भक्तिन के जस नाम॥ श्री वल्लभ आचार्य्य के,

सेवक के गुन धाम ॥ काम धेनु इक कवित में, कढ़त सत वरन छन्द ॥ केवल प्रभु के नाम तँह, धरे करन अनन्द ॥ इक नष सिष माधुर्य्य है, परम मधुरता लीन ॥ सुनत पढ़त जिहि होत है, पावन परम प्रवीन ॥ छंद सार इक ग्रन्थ है, छन्द रीति सब आहि ॥ उदाहरन में प्रभ जसै यौं, पवित्र विधि ताहि ॥ कीनों कवि-सिद्धान्त इक, कवित रीति कों देखि ॥ अलंकार माला विषै, अलंकार सब लेखि ॥ इस रस रल कीन्हो बहुरि, चौदह कवित प्रमान । ग्यारह सें बावन तहाँ, नाइकानि को ज्ञान ॥ इह इक सार सिंगार तँह, उदाहरण रस रीति । चारि ग्रन्थ (?) ये लोक हित, रचे धरि हिय प्रीति ॥ कहा कहूँ ए ग्रन्थ हूँ, प्रभु जस अंकित मानि । ज्यौं व्यंजत वह लवन तनु, पाइ स्वादु मन मानि ॥ जा ग्रंथ में कवित में, आवै हरि को नाम ॥ सो वहु सुभ सूरत सुकवि, अति पवित्र सुष धाम ॥ संवत संग्रह सै तहाँ, वर्ष पचासी जानि । भयो ग्रन्थ गुरु पुष्य में, सित असाढ़ श्रय मानि ॥ बहु ग्रन्थनि मथिकै सुयस, रच्यौ सार सिंगार ॥ सूरत सुकवि पढ़ै गुनै, पावै सब सुष सार ॥ ९८ ॥ इति श्री सूरत मिश्र विरचिते सिंगार सारे विप्र लम्भ वर्णन नाम सप्तमो विलास सम्पूर्ण सुभ ॥ X X X

विषय—उपनायक कनिष्टों में अनुनायका, देस प्रकार, वयते आरूढ़ा यौवनाभि सारिका, अन्य स्नेह दुःखिता, अष्ट नायकादि वर्णन, पृ०–२ तक । नायक लक्षण, अनुकूल लक्षण, उनके उदाहरण, शठ्धृष्ट लक्षण, सठ उदाहरण, धृष्ट उदाहरण, पृ०–४ तक । भाव वर्णन, विभाव लक्षण, आलम्बन उद्दीपन, चन्द्रोदय कलगान वाँसुरीक, षट् ऋतु तत्र वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हिमन्त, शिशिर वर्णन, पृ०–५ तक । तियरूप वर्णन, सुमनादि उद्दीपन, जल केलि, स्थायी भाव, सात्विक भाव, स्तंम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वर भंग, कम्प, विवर्ण, हेलाहाव, लीलाहाव, ललित हाव, मदभाव, विभ्रम हाव, विहति हाव, विलास हाव, कल-किंचित्, पृ०–८ तक । विछित हाव, विब्बोक हाव, नोढ़ावित हाव, कुट्टमित हाव, बोधक हाव, अन्यदपि हाव, ग्रन्थान्तर, चेष्टा, पृ०–९ तक । अथ सषी वर्णन, रूप दिखलाना, नायक पक्ष की दूती, शिक्षा, विनयादि उदाहरण, मान, दूती वर्ण, नाइन वचन, मालिन, तम्बोलिन वचन, उत्तम, मध्यम, अधम, दूती, सषी वर्णन, पृ०–१२ तक । अनुत्पन्न विप्रलंभ सिंगार, विप्रलंभान्तरं संयोग, मिलन लक्षण, दर्शन, चार दर्शन के उदाहरण, साक्षात्, स्वयं दूत लक्षण । स्वयं दूत लक्षण, उसके उदाहरण, अनुराग वर्णन अवहास हास उदाहरण, नाइका का परिहास नायक के प्रति, सखी का परिहास दम्पति से, अष्टारति भेद–वहि, अन्त, रति, पृ०–१४ तक । अथ विप्रलम्भ श्रृंगार, पूर्वानुराग विरह, श्रवने पूर्वा-नुराग, दर्शन से अनुराग, दश दशा, अभि आदि का वर्णन, चिन्ता, गुणकथन, स्मृति, उद्वेग, प्रलाप आदि, पृ०–१५ तक । उन्माद, उदाहरण, संचारी, गान व्याधि, जड़ता दशा, मान भेद, इर्षा जन्य का उदाहरण, प्रणय जन्य, मध्यम मान, मनोपाय, साम उपाय, दान उपाय, भेदोपाय, प्रणति, उपेक्षा, प्रसंग विध्वंस, अथ प्रवास विप्र लम्भ, प्रवास उदाहरण, नायका का विरह कथन, नायक का विरह सखी से कथन, पृ०–१७ तक । असाढ़, सावन, भादौं, आसोज, कार्तिक, मार्ग सिर, पौष, माह, फागुन, चैत्र, वैसाख, जेष्ठ–बारह मास का मासा १९ तक । नायका की पत्री नायक को, नायक की पत्री, करुणा विरह, पृ०–२० तक ।

वियोग निर्णय, कार्य्यान्तर वियोगाभास, देशान्तर वियोगाभ्यास, पूर्ण श्रृंगार उदाहरण, कवि-परिचय, तथा उनके बनाये हुये ग्रन्थों का वर्णन, पृ०-२२ तक। नोट—बाकी ३ पत्र "रसरल" नामक ग्रंथ, इसी रचयिता के बनाये हुये हैं।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ अन्वेषण में बिल्कुल नवीन प्रतीत होता है। वह न तो 'मिश्र बन्धु विनोद में है और न संक्षिप्त विवरण' में। इसमें सूरत मिश्र के प्रायः ११ ग्रंथ बतलाये गए हैं जो मेरे ख्याल से खोज में सभी प्राप्त नहीं हुए। कवि के पिता का नाम इसमें 'सिंघ मनि' दिया गया है यह भी "मिश्र-बन्धु विनोद" में नहीं है।

संख्या २१४ ए. सालोत्तर, रचयिता—ताराचन्द, कागज—मूँजी, पत्र—१९, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२१ (सन् १८६४), प्राप्तिस्थान—श्रीयुत शिवचरण स्वामी आर्य्य, स्थान-रायभा, डा०-अछनेरा, जि०-आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सालोत्तर लिक्षते ॥ दोहा ॥ बाजी सौं हाजी रहै, ताजी सुभट समर्थ। रण सूरे पूरे पुरुष, लहै कामना अर्थ ॥ बालापन सरनहि रहि, मैं पायेउ सषवृन्द। शाल होत्र में देषिकै, वरणत चेतनि चन्द ॥ श्री कुसलेस नर सहित नित, चारु चहौं। असु विनोद हय ग्रन्थ यह सार विचार कहौं ॥ मूल मान साखा सु मधु शुभ करि राजत राज ॥ सुमन सुफल पर लियौ सबै कुशल सिंह महाराज ॥

अंत—॥ आंषिन को अंजन॥ भीम सेनी कपूर ॥ औरु वंसलोचन ॥ दोनों मिलै कैं जस्त की कटोरी मैं गारै ॥ रगरि कैं आंषि में लगावै ॥ भरि कै पट्टी बाँधि वंधेज मे रहे ॥ तीन दिन पीछे पट्टी खोले आषि निरमल होइ ॥ इति श्री शालि होत्र सम्पूर्ण समाप्तं ॥ मिती माघ सुदी सप्तमी ७ गुरुवार संवत १९२१ शाके सार वाहन १७८६ ॥ लिखितं मिश्र उदैराम श्री टाणें ग्राम मध्ये पठणारथ ॥ गंगाराम ब्राह्मण ॥ श्री परमात्मणे नमः ॥

विषय—घोड़ों का इलाज वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का पता नहीं चलता, पर आरंभ की पक्तियों से ऐसा कुछ अवश्य विदित होता है कि वह कोई राजा कुशल सिंह के आश्रय में रहा है। ग्रंथ संस्कृत के शालिहोत्र का, जिसमें नकुल और सहदेव का वार्तालाप हुआ है, पद्यात्मक अनुवाद है।

संख्या २१४ बी. शालि होत्र, रचयिता—ताराचन्द, कागज—मूँजी, पत्र—६२, आकार—६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१६ (सन् १५५९ ई०), लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामप्रसाद मिश्र, स्थान—गोपऊ, डा०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—॥ श्रीराम जी ॥ अथ श्री शालि होत्र लिष्यते ॥ दोहा ॥ नमो निरंजन देव गुरु, मारतंड ब्रह्मंड ॥ रोग हरण आनन्द कर, सुष दायक जग पिंड ॥ श्री महाराज गुरु, सैंगर वंस नरेस ॥ गुन गाहक गुण जनन के, जगत विदित कुसलेस ॥ जाके नाम प्रताप कौ, चाहत जगत उदोत ॥ नरनारी सुष सुष कहैं, कुसल कुसल कुल गोत ॥ चित चातुर चष

चातुरी, मुष चातुर सुख दैन ॥ कवि कोविद वरनन रहत, सब सुख पावत जैन ॥ बालापन ने सरन हरि, मैं सुष पायो वृन्द ॥ साल होत्रि मत देषिकै, वरनति चेतन चन्द ॥ श्री कुसलेस नरेस हित चाऊ, लह्यो अस्व विनोद ग्रंथ यह सार विचार कह्यो ॥ दोहा ॥ मूल मख साषा सुमध ॥ पत्र सुध करन सराज ॥ सुमन सुफल फलियो सदा, कुसल सिंह महाराज ॥

अंत—पुरहा पांडे गोपीनाथ, कान्ह कुबज मैं भये सनाथ। तिनके सुत चार्यो अधिकाई। इन्द्र, इन्द्रजीत, लछिमन, जदुराई ॥ चौथे ताराचन्द्र कहीजै। जिन यह अश्व विनोद बनायो ॥ हरिपद चेतन नाम की आसा। सालिहोत्र भाष्यो परगास ॥ कुसल सिंह महाराज अनूप। चिरंजीव भूपनि के भूप ॥ सोरठा ॥ यहै ग्रन्थ सुष सार, जिनके है हित हीय मैं ॥ लेह सुधारि विचारि, चेतनि चन्द्र कह्यो यथा ॥ दोहा ॥ सम्बत सोरह सौ अधिक, चारि चौगनो जानि ॥ ग्रन्थ कह्यो कुसलेस हित, रक्षक श्री भगवान ॥ मिती बैसाष बदी ८ शनि वासरे संवत १९०० लिषक मिश्र परसराम ॥ ग्राम अस्थान गोपऊ ॥ नाती देवीदास को ॥ पुत्र परम सुष को ॥

विषय—अश्व चिकित्सा का वर्णन है।

संख्या २१५. पंच परमेष्ठी की पूजा, रचयिता—टेकचंद, कागज—देशी, पत्र—४७, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सुख चंद जी 'जैन साधु', स्थान—नहटौली, डा०—चन्द्रपुर, जि० - आगरा।

आदि—अथ पंच परमेष्टी पूजा विधान लिख्यते ॥ दोहा ॥१॥ रंजत मन भंजन कर्म, परम पंच गुरु सार। पूजित पद सुर नर षगा, पावा है भवपार ॥१॥ सोरठा ॥ प्रथम देव अरहंत, गर्भ पहल षट मास के। मणि मय नगर करंत, पाछे जिन अवतार लै ॥ २ ॥ ॥ चौपही ॥ पर पर जाय छाड़ि जिन राय। गर्भ विषै अवतार धराय ॥ तव षोड्स सुपना मां लेय। तिनकी कथा सुनौं पुनि जेय ॥३॥ अडिल ॥ ऐरा पति गज वृषभ स्वपेदत दानी यै। सिंह पहुप की माल शुछ हित मानि यै ॥ पूरन कुंभ सशी रवि कूं दोय शुभ देषिया। मक्ष जुगल जल थांन केलजुत पेषिया ॥

अंत—पंच महाव्रत सुमति पांच गनि इंद्री पाचौ करै वस धीर। षट आवस्थ करै नितही मुनि ताकरि पाप हरै वर वीर ॥ भूम सेंन आदिक गुण सात जु और मिलावै इति के तीर। अष्ट विंशति होइ सकल मिलि इन धनि साध धरै सिव धीर ॥५॥ एही पांच गुरु पर मेष्टी एही सकल हित सुषकार। एही उत्तम पुरुष जगत में मन वांछित फल के दातार ॥ एही मंगल दाय जगत मैं पंचम नाति करतार ॥ इनके पद कौ भव भव सरनू मागू उरकी टेक नित्रारि ॥६॥ दोहा। अर्हत सिद्ध आचारप्य के ॥ उपाध्याय पद पाय। साध सहित पाँचौं चरण ॥ पूजौं टेक लगाय ॥७॥ इति श्री पंच परमेष्ठी पूजा पाठ भाषा टेक चंद कृत संपूर्ण ॥ पठनार्थं लभेच् सिखरचंद हलवाई अटेर वालै के माथे मिती भादौं सुदी १ ॥ संमतु १९२५ बुध को जो वाँचै ताको फल होइ ॥

विषय—पंच परमेष्ठी की पूजा का विधान तथा माहात्म्यादि का वर्णन ।

संख्या २१६. कवित्त फुटकर, रचयिता—ठाकुर, कागज - बाँसी, पत्र—१२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्) - ३४०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मया शंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ कवित्त फुटकर लिख्यते ॥ मतमाते गुबार गरुर भरे धिधकी दिये ढोल बजावत है । गहि लावत धावत धूरि भरे जो पै गोप वधू कहुँ पावत है । कहि ठाकुर जो पै चली तुम बाहिर कौन सयान कहावत है । दई मारे जिभार कछू कौ कछू हरि हार दुवार पै गावत है ।

अंत—जबते निरखे मन मोहन जू तब ते अँखियाँ ए लगी सो लगी । कुल कानि गई भटू वाही घरी जब प्रेम के पुंज पगी सो पगी ॥ कहि ठाकुर नेह के नैनन की उर में अनी आनिष षगी सो षगी । अब नावरे गावरे कोउ धरौ हम साँवरे रंग रगी सो रगी ॥

विषय—ठाकुर की भक्ति एवं श्रृंगार पूर्ण कविताओं का स्फुट संग्रह ।

संख्या २१७. श्रीकृष्ण पद, रचयिता—टोड़ाराम (स्थान–गढ़ी परसोत्ती, मथुरा), कागज—बाँसी, पत्र—१४, आकार—११½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि— नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० चोखेलाल मिश्र, स्थान—गढ़ी परसोत्ती, डा०—सुरीर, जि०—मथुरा ।

आदि—श्रीकृष्ण पद ॥ जन्मे कृष्ण भक्त सुपदाई वृह्मा रुद्र देव सब मिलकै विनती हरि गाई ॥ धर्म सवै कंसा नै मैं ष्यायौ पर ह्यौ धरनी परछाई ॥ १ ॥ सुनिवि विनती करुना बोले देव सुनो मन लाई ॥ हम औतार मधुपुरी लैहें वासुदेव उत्तम घर जाई ॥ २ ॥ भादों वदी अष्टमी आई जन्मे श्री जदुराई ॥ अज वैंगी तहाँ तारे टूटे मात पिता की वन्दि छुटाई ॥३॥ टोडाराम विघ्न को सुमरिन वृह्मा देवन गाई ॥ कंस आदि सब अस्वर सिधारो भक्तन के हरि सदा सहाई ॥४॥

अंत—करौ आरती राम सिया की जग भूपन निरहषत जोरी अवधपुरी मनमाहीं ॥ कीरति अधिक दसौ दिस माची रामचन्द्र और जनक सुता की ॥ १ ॥ भक्तन हित औतार लीयौ हरि अद्भुत जिनकी झाँकी ॥ कोटि कौन छवि उपमा जिनकी भक्त नर क्ष्या करन सदा की ॥ २ ॥ क्रीट मुकुट मकरा कृत कुंडल वैजंती त्रखा की ॥ हिरदे में कमं कीम की मूरति पीताम्बर शोभा की ॥ ३ ॥ जाको पार निगमन नही पावै शेष महेष कला की ॥ टोडाराम कहा छवि वरनै नारद सारद सबकी बुधि थाकी ॥ ४ ॥

विषय—१-श्रीकृष्ण जन्म । २-कृष्ण लीलाएँ । ३-व्रज वर्णन । ४-राम सीता आदि के स्फुट पद ।

विशेष ज्ञातव्य—टोड़ाराम गढ़ी परसोती नामक गाँव के निवासी और ग्रंथ स्वामी के पिता थे । इनको मरे हुए ५० वर्ष के करीब होगए हैं । अतः कविता इसके पूर्व की ही होगी । इनके संबंध की प्रायः सभी बातों का पता चल जाता पर पुस्तक स्वामी ग्रंथ के

विवरण लेने के समय घर पर नहीं थे। गाँव में पूछने से पता चला कि टोडाराम ने बहुत से भजन बनाये और वे दूर दूर तक गाने के लिए जाते थे। अब भी स्थानीय गवैये उनके भजन गाते हैं।

संख्या २१८. टोडरमल संग्रह, रचयिता–टोडरमल, कागज—देशी, पत्र – ७, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१८, खंडित, रूप – नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मया शंकर जी याज्ञिक, स्थान व डा०—गोकुल, मथुरा।

आदि – कवित्त गुन बिन धन जैसे गुरु बिन ज्ञान जैसे, मान बिन दान जैसे जल बिन सर हैं। कंठ बिन गीत जैसे हित बिन प्रीत जैसे, वेश्या रस रीति जैसे फल बिन तर है। तार बिन जंत्र जैसे स्याने बिन मंत्र जैसे, नर बिन नारि जैसे पुत्र बिन घर है। टोडर सुकवि तैसे मन में विचारि देखो, धर्म बिन धन जैसें पंछी बिन पर है॥

अंत—जेहि जेहि सुखित भये तेहि तेहि कवि टोडर बिछुरे जदुपती। सीतल मन्द सुगन्ध समीर जेते सब तत्ती अबहीं अनल भए तत्ती। जम मयी जोन्ह, ब्याल मयी वेली, तरु भए तीर कुसुम भए कत्ती॥ जेहि जेहि बन हमहिं हरि संग विहरत वेहि बन अबहि दहन लगे छत्ती॥ × ×

विषय—नीति और राधा कृष्ण के प्रेम आदि के स्फुट कवित्त एवं सवैयों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—अकबर के माल मंत्री टोडर की कविताओं का यह संग्रह है। पं० मया शंकर जी याज्ञिक ने विभिन्न हस्त लिखित ग्रंथों के आधार पर इसे प्रस्तुत किया है। संग्रह में भक्ति की भी कुछ रचनाएँ हैं, जिनसे विदित होता है कि ये भक्त भी थे।

संख्या २१९. दीन व्यंग, रचयिता—तोष निधि, कागज—मूँजी, पत्र—२४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—फसली = १२८२, प्राप्तिस्थान—पं० लडैती लाल जी, स्थान व डा०—सहपऊ, जि०—मथुरा।

आदि—अथ दीन व्यंग लिष्यते॥ दोहा सुमिरि तोष निधि दीन जन, दीन बंधु घनश्याम। सौ दोहा मय ग्रन्थ किय, दीन व्यंग्य सत नाम॥ कितिक दूरि तें सुनि लई, द्रुपद सुता की टेर॥ कानतु कान्ह रुई दई, सुनत न मेरी बेर॥ भरही भारथ भीर मै, राषी घंटा तोरि॥ तेई अब तुम क्यो रहै, मोही सौ मुख मोरि॥ कहा विरावत रावरे, ओडत मेरो झार॥ गोवरधन सो नाहि हौ, हाहा नन्द कुमार॥

अंत—कब को टेरत दीन रट, होत न श्याम सहाइ॥ तुम हू लागी जक्त गुरु, जग नायक जगवाइ॥ दीन व्यंग सत ग्रंथ लषि, रीझै संत प्रवीन॥ कुटिल कुतर्की षीझि है, कहा करै मति हीन॥ नहिं पंडित कवि भक्त नहिं, गुनी प्रवीनन संत॥ अर्थ पाइ निजु तोष निधि, कहि समुझायो तंत॥ इति श्री दीन व्यंग तोष निधि कृतौ सनि फसली १२८२ मासानां मासो असुनि कृष्ण पक्षे तिथौ पंचम्यां चन्द्रवासरे॥ पठनार्थ श्री ठाकुर दूदे साहि जी कौ शुभ स्थाने सैपऊ के॥

विषय—भगवान से अत्यन्त मार्मिक प्रार्थना ।

संख्या २२०. जिकरी दंग राजा की, रचयिता—तोताराम, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महताब सिंह जी, स्थान—सींगेमई, डा०—सिरसागंज, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जिकरी दंग राजा की ॥ मेरे घट करियो परगास सदां तुम वंसी वारे ॥ विथा शोक मम रंज हरौ करतार हमारे ॥ तुम दया वंधु गुरु देव दीन वंधु दीनानाथ हो मैं करुं आप चरनन की सेवा ॥ सेवक सेवा सदां श्याम की अठ पैरा मेरे नैम है ॥ भजन ॥ नागर गुन सागर स्वामी ॥ जगत उजागर नाम तुमारौ ॥ लख चौरासी जौनि आदि सुमिरैं जोगी सन्यासी जी ॥ कोटि देव तेतीस नाम पै धुनि मुनि सेस अठासी जी । सव सनकादि आदि व्रह्मादिक जपैं स्वर्ग के धामी ॥ नागर० ॥ एक मुख जपकांतक वोलूं ॥ चतुर मुखी कमलासन तेरो निस दिन पार नहीं पामैं ॥ सेस नाग सुष सैल फननते नये नाम वे नित गामैं ॥ नाम राम मुख रहै न खाली तजें न अपनी वानी ॥ नागर० ॥ मैं जो रज तेरे चरनन की ऐसे २ पारन पामैं वे तो मानस संसारी ॥ कमल नैन कमला पति केशव कृष्ण आपु कृपा चारी ॥ का विधि नाथ मोइ तारौगे मैं सागर कामी ॥ नागर० ॥ ज्ञान हीन विद्या परकासौ ॥ करौ उजेला घट भीतर दंग लड़ाई गाऊं जी ॥ का विधि घोड़ी भई अपछरा पंड जंग दरसाऊं जी ॥ मैं तोताराम सभा में रंग रसिया और नामी ॥ नागर० ॥ १ ॥

अंत—॥ भजन ॥ चौदे तन भवन समाने ॥ अचरज कीसी बात सुनाऊं ॥ रोम विरछ अगिन मुख कहिये दसऊ दिसा कानन जानो ॥ सातों सागर पेट आँखि सूरज है साँची कर मानो ॥ तन को हाड़ पहाड़ निहारैं नदिया नसें ठिकाने ॥ चौदे त० ॥ सवरे पवन साँस में लागे इन्द्रादिक तेतीस देव हैं वाकी भुज में छाये हैं ॥ असुनी कुमर नाक में वैठे सदां सुगंद सवाये हैं । जगत सुगंद आदि मिलियागिरन कुवन कूं पहिचाने ॥ चौदे०॥ महि आगास नैन गोलाई ॥ दिन अरु राति पलक हैं जाके नैन नीर जल सागर हैं ॥ जगत स्वाद जिह्वा मैं छाये दाँतन मैं जय नागर हैं ॥ माया हँसी ओठ ऊपर को लाज सील कूं माने ॥ चौदै० ॥ नीचे ओठ लालची कहिये ॥ अधरम पीठि धरम की छाती मेघ घटा सिर वार घने ॥ काम देव वरसा को पानी तोताराम कहैं इतने ॥ कौन देवता ऐसौ कहिये देउ ज्वाव जब जानें ॥ चौदे० ॥ है गुनवान बड़ौ तू ज्ञानी ॥ घेरि लियौ तू भरी सभा मैं आज मान तेरे मारे ॥ कै तो अर्थ वताइ नहीं तो छाड़ि सभा कूं उठि जारे ॥ ढफ ढोलक सरकाइ निकरिजा काऊ वात वहाने ॥ चौदे तन भमन समाने ॥ इति दंग राजा की लड़ाई सम्पूर्ण ॥

विषय—इन्द्र के अखाड़े का जमना और नृत्यादि का होना, हरि का एक अप्सरा को प्रसन्न होकर पारितोषिक में एक मुंदरी प्रदान करना, उसका हृदय उसे तुच्छ समझकर अभिमान करना । भगवान का अभिशाप और अप्सरा का घोड़ी हो जाना । दंग राजा का उसे प्राप्त करना, हरि का उसे छोड़ देने का हठ, उसका न मानना युद्ध की चुनौती, दंग

का पाँडवों की शरण में जाना, युद्ध होना, भगवान का पाँडवों को चेतावनी देना, अर्जुन का क्षमा माँगना व अप्सरा का शाप मोचन होकर अपने असली रूप में आकर आकाश में उड़ जाना, दंग आदि का खिसियाकर चुप रह जाना ॥

टिप्पणी--प्रस्तुत रचना ग्राम्य कविता का नमूना है। ऐसे कुछ ग्रंथ दिल्ली आगरा की खोज में मिले थे। ये बड़े २ दंगलों तथा मुबाहिसों के साथ गाए जाते हैं। उधर ख्यालों का भी आधिक्य है। तहसील किरावली (आगरा) में प्राप्त प्रस्तुत ग्रंथ ढफ बाजों से संबंधित है। कवि की रचना में ठेठ व्रज भाषा के अनेक प्रचलित अपभ्रंश शब्द पाए जाते हैं। अनुप्रास, यमक का आधिक्य है। कहीं २ किसी बात की सिद्धि में अनेक दृष्टान्तों का प्रयोग किया गया है।

संख्या २२१ ए. बजरंग चालीसा, रचयिता—तुलसीदास, कागज--देशी, पत्र--२, आकार--६ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० विद्याराम जी शर्मा, स्थान—मक्खनपुर, डा०--शिकोहाबाद, जि० —मैनपुरी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार। वरणों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ॥ १ ॥ बुद्धिहीन तनु जानि कैं, सुमिरौं पवन कुमार। बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ॥ राम दूत अतुलित बल-धामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ॥ महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवारि सुमति के संगी। कंचन बरण सुवेशा। कानन कुंडल कुंचित केशा।

अंत—संकट हरै हरै तनु पीरा। भजै निरंतर हनुमत बीरा ॥ संकट तैं हनुमान छोड़ावै। मन वच कर्म ध्यान जो लावै ॥ जै जै जे हनुमान गोंसाई। कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥ यह शतवार पढ़ै जो कोई। छूटै बंदि महा सुख होई ॥ जो कोई पढ़ै बजरंग चालीसा। होइ सिद्ध साखि गौरीशा ॥ दोहा ॥ पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप। राम लषण सीता सहित, बसहु हृदय सुर भूप ॥ इति बजरंग चालीसा संपूर्णम्।

विषय—श्री हनुमान जी की स्तुति।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ तुलसीदास की रचित सुप्रसिद्ध 'हनुमान चालीसा' ही है। केवल उसका नाम परिवर्तन करके बजरंग चालीसा रख लिया है।

संख्या २२१ बी. राम मंगल, रचयिता—तुलसीदास, कागज--मूँजी, पत्र--४, आकार--७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--८६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० तुलसीराम वैद्य, स्थान व डा०-माट, जि०--मथुरा।

आदि--श्री रामाय नमः लिख लिख पठवे संदेस अवधेस के नाथ को। जीते सकल नरेस सजे हो बरात को। दशरथ गुरुहि बुलाई पत्रीका सुनाइए। रच्यो मिथिलेस विवाह राम व्याहि लाईए।

अंत—अन्तर्यामी राम जानी सब जीवकी । कियो अखुर भंडार अस्तुति करे जानकी । यह रघुवर जी को व्याह विमल जस गावहीं । गावत तुलसीदास जनम फल पावहीं ॥ इति श्रीराम मंगल सम्पूर्ण ।

विषय—रामचन्द्र जी का समारोह के साथ विवाह ।

टिप्पणी—प्रस्तुत रचना के अन्त में तुलसीदास का नाम है । पर प्रसिद्ध तुलसीदास के जानकी मंगल के अनुकरण पर यह रचना जान पड़ती है ।

संख्या २२१ सी. सतशतक, रचयिता—तुलसीदास गोस्वामी (स्थान–काशी), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल–१९०९ वि० = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मोहन लाल, स्थान—पुदलपुर, डाकघर—सादाबाद, जि० —मथुरा ।

आदि—श्री सतगुरु साहिब की दया ॥ दोहा नमो नमो श्रीराम प्रभु, परमातम पर धाम । जेहि सुमरत सिधि होत है, तुलसी जन मन काम । राम वाम दिसि जानकी, लछिन दाहिनी ओर । ध्यान सकल मंगल करन, सुरतरु तुलसी तोर । परम पुरस परधाम पर जापर अपर न आन । तुलसी जो समझत सुनत, राम सोई निरवान ॥

अंत—वर्ण विसद मुक्ता सरिस, अर्थ सूत्र सम तूल ॥ सतसैया स्वर्ग वर विशद, गुण शोभा अनुकूल ॥ कहहि लघु गुणिन कहु, गुणि कहै लघु भूप ॥ महि गिरि गति जिमि लखत दोऊ, तुलसी वर्ष सरूप ॥ दोहा चारु विचारु चल, परि हरि वाद विवाद ॥ शुक सीम स्वारथ अवधि, परमारथ मरजाद ॥ इति श्री मद्गोस्वामी तुलसीदास विरचितायां शप्त रसिक राजनीति बर्णनो नाम सप्तमें सर्गः ॥ लिषतं ठाकुर भगत सिंह लिपायतं साधु प्रेमदास पठनार्थं ॥ हाथरस मध्य ॥ सवत् १९०९ ॥

विषय—नीति, भक्ति, तथा उपदेश के दोहे ।

संख्या २२१ डी. शिवरी मंगल, रचयिता—तुलसीदास व रामदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० विष्णु सिंह जी, स्थान—उखाँड़, डा०—भदान, जि०—मैनपुरी ।

आदि—॥ श्रीराम चंद्राय नमः ॥ राग स्वहाग विलावल ॥ दोहा ॥ शवरी सोय उठि फरकत वाम विलोचन वाहु । सगुन सुहामणे शोचत मुनि मन अगम उछाहु ॥ छंद ॥ मुनि अगम उर आनंद लोचन सजल तन पुलकावली । तृण परण साल वनाय जल भर सफल चाहन चली ॥ मंजुल मनोरथ करत सुमृति विप्रवर बानी भली । ज्यों कल्प वेली सुकेली सुकृत सुफल फुली सुष कली ॥१॥ दोहा ॥ प्राण पिया पाहुन आए हैं, राम लक्ष्मण मेरे आजु । जानत जन जियकी मृत, चित राम गरीब निवाजु ॥ छंद ॥ मृदु चित राम गरीव निवाजु, आज विराजि हैं ग्रह आइकें । ब्रह्मादि शंकर गवरि पूजे पूजहुँ अव जाइकें ॥ लहि नाथ हो रघुनाथ वानो पतित पावन पायकैं । दोउ ओर लाभ अघाय तुलसी तीसरे गुण गायकैं ॥२॥

अंत—॥ दोहा ॥ शिवरी भक्ति भली करी, बन फल पूजे राम। राघव तारि तुरत ही, तुलसी प्रीति पुरातन जान ॥९॥ नीच हुती नीकें तरी, देके झूठे बेर। सब औगुन राषो तजे, चितय प्रेम की ओर ॥१०॥ नदी नीर निरमल भयो, शिवरी परस शरीर। अब नेतें सरसा करी, रामदास रघुवीर ॥११॥ इति श्री शवरी मंगल संपूर्ण श्री ॥ रामचंद्राय नमः ॥ ॥ श्री ॥ रा ॥ मः ॥ श्रीराम ॥ श्री ॥ रामरि युक्ता जनकात्म जाया त्रिचंत यंति हृ राम रूपं ॥ रो रोद सीता रघुनाथ पाहि गोविंद ददा मोदर माध वेति ॥१॥

विषय—शवरी के राम-प्रेम का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ राम भक्त शवरी की भक्ति पर लिखा गया है। इसके सम्पादक का कुछ पता नहीं और न रचनाकाल एवम् लि० का० के संबंध में ही कुछ कहा सुना गया है। ऐसा जान पड़ता है कि इसको किसी भक्त ने अपने पढ़ने के लिए तुलसीदास की रचना में से लेकर लिख लिया है तथा एक पृथक् पुस्तिका का रूप दे दिया है। अंतिम दोहे में रामदास का नाम आया है। यह पद श्लिष्ट है। संभव है यह संपादक का ही नाम हो परन्तु इस बात का कोई सुदृढ़ प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

संख्या २२२ ए. रतन सागर, रचयिता—तुलसी साहिब, कागज—बिचौंदी, पत्र—११०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री धर्म्मपाल जी बोहरे, स्थान—सलीमपुर, डा०—सादाबाद, जि०—मथुरा।

आदि—श्री सतगुर साहेब की दया ॥ सकल सन्तन की दया ॥ लिषते रतन सागर साहिब तुलसीदास का ॥ हिरदे अरज कबूल, स्वामी से कछू कहत ॥ हो कहो रचना निज मूल, भूल भरम कब से लई ॥ जब नहीं अंक अकार ॥ सार सुरति कहो कहती ॥ जब का कहो विचार ॥ पार पिये पद पुरस का ॥ छन्द प्रथम पद धुर गुर, आदि की रचना कहो ॥ कस कुरम सेस आकार अंषलक नौ निरंजन कस रहो ॥ सब चंद सूरज हूर प्रिथी कस, भार अपने लियो ॥ सब तत अगिन अकास पौना, कौन विधि क्रत पतन्नयो ॥

अंत—तुलसी हीयो हुलसी लषौ, हिरदे हर्ष बषान ॥ जान जन्म नर तन येही, कही सब सन्त बषान ॥ नर तन में निरनै लषै, रषै सुरत समझाइ ॥ चाह रषै नहिं अन्त की, सतगुर सबद समाइ ॥ नर तन दुर्लभ न मिले, षिलै कवल रस माहिं ॥ षाइ अमर फल अगम के, जो सतगुरु सरनाइ ॥ रतन जतन सागर मही, कही जो निरनै छान ॥ ध्यान वरन विष्यान सब, बूझे वचन प्रमान ॥ हिरदै से तुलसी कहै, रहै न गम के पार ॥ जो निरधान सन्तन कही सो सतगुर पद सार ॥

विषय—आत्मा और ब्रह्म का ज्ञान वर्णन।

संख्या २२२ बी. रतन सागर, रचयिता—तुलसी साहिब, कागज—सनी, पत्र—१०४, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शान्ति स्वरूप जी, राष्ट्रीय पाठशाला, स्थान व डा०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—श्री सतगुरु साहिब की दया। सकल संतन की दया। तुलसी साहिब का ग्रन्थ रतन सागर लिष्यते ॥ सोरठा हिरदे अरज कबूल, स्वामी से कुछ पूछि हौं। कहौ रचना निज मूल, भूल भरम कब से भइ ॥ जब नहीं अंड अकार, सार सुरति रित कह हती। जब का कहौ विचार, पार प्रिये पद पुरस का। छन्द प्रथम पदम नामधुर गुर, आदि की रंचन कहो। कस कुरम सेस अकार अंड खंड ॥

अंत—दोहा नर तन दुर्लभ ना मिलै, खिलै कवल रस माहीं। पाये अमर फल अगम के जो सतगुरु सर नाई ॥ दोहा रतन जतन सागर मही, कही जो निरनै छान। ब्यान वरन विष्यन सब, बूझे बचन प्रमान। दोहा हिरदे से तुलसी कहै, रहै अगम पार। जौ निरधार सन्तन कही, सो सतगुरु पद सार ॥ इति श्री ग्रंथ रतन सागर सम्पूरण ॥

विषय—ज्ञान, वेदान्त, आत्मा, परमात्मा आदि आध्यात्मिक विषयों का विवेचन है।

संख्या २२२ सी. सतगुर साहिब की साषी, रचयिता—तुलसीदास साहिब, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—धर्म्मपाल बोहरे, स्थान—सलीमपुर, डा०—सादाबाद, जि०—मथुरा।

आदि—सतगुर साहिब की दया ॥ सकल सन्तन की दया ॥ लिषते सबद साषी ॥ पुर पटन येकस दर है, सून समद के पास ॥ गगन गरज सूरत चढ़ी, पावे तुलसीदास ॥ सबद ॥ पुर पन केरी बाट तौ अचरज देषिया ॥ वाघर मढ़त कूम्हार सो सुरत विवेकीया ॥ तन मन अछर आदि का, काया काल कुम्हार ॥ नित बरत बिनसै बनै, उपजत बारम बार ॥ सतगुर से सुरतिन्नई, दई कीन घर घाट ॥ बात भटक जम जाल में, बेचत हाटै हाट ॥ सबद साष की आष से, नहीं छुटे भरम जाल ॥ पल पर पल निरषत रहै, स्वामी दीन दयाल ॥

अंत—ख्याल पिय पिय रटौ श्रुति से पपैईया प्यारे ॥ स्वातिबूँद अधर झरत, नीर आस लषि अकास ॥ जिअ की प्यास अमी से बुझाई रे ॥ किरमिर किरमिर बरसत मेह। बीज बदर करवि देहे ॥ अज अदीद देह से निनासरे ॥ बनैरे चौषक षेल। पावै कोई पलक सैल ॥ गुरु के वचन कहत हो पुकारे ॥ संत सरन भये अधीन ॥ बूझे कोई चतुर चीन्ह ॥ सत संग कर कमकूँ सिहारे ॥ तुलसी सव तरकीन सुन्दर पर सुरति लीन ॥ सुरति मुरति मगन होई निहारे ॥

विषय—निर्गुन ज्ञान, माया की निन्दा, संसार का त्याग, सुरति ज्ञान की लव लीनता और वही मोक्ष का उपाय, तथा सतगुरु की भक्ति करना आदि वर्णन।

संख्या २२२ डी. सवइया तुलसी, रचयिता—तुलसी साहिब (हाथरस), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—धर्म्मपाल बोहरे, स्थान—सलीमपुर, डा०—सादाबाद, जि०—मथुरा।

आदि—सवइया तुलसी साहिब के लिषते ॥ बामन वेद बताइ कहै भगवान महा प्रलय सैंन कराई ॥ भये तत नास विराट अकास अछै विछ वास सो पात के माही ॥ आतस प्रीथी जोयौन नहीं तब थौन कछू जल जल बताई ॥ इहि विधि भाषि विचारि कहै कहो थल विन जल कैसे रहाई ॥ नीर रही जल जीव सही सो प्रिथी भए विन नीरन भाई ॥ वैराट विनास तौ ब्रह्मा कौ नास तो वेद विनास भयो जल माही ॥ कागद स्याही न कल्म वची तुलसी तब की विधि कौन सुनाई ॥

अंत—वेदान्त कहैं जग ब्रह्म मई, सोई ईश्वर कर्म्म मीमांस नै गायो ॥ कथन पातन जल जोग कह्यौ, सो विसेस रसा रम मयौ बतायो ॥ न्याइ जो गाइ करतार कहै, सोई सांष ने नित अनीत सुनायो ॥ तुलसी षट रीति पर पंचकरी, सो करौ जिन जक्र कौ जानि बुड़ायो ॥ इति श्री सवईया समाप्ता ।

विषय—न्याय, वैशेषिक, वेद, पुराण आदि द्वारा प्रतिपादित विषयों का खंडन और आपा पंथ के सुरति ज्ञान का मंडन ।

संख्या २२२ ई. तुलसी कुण्डलिया, रचयिता—तुलसी साहिब (हाथरस), कागज—देशी, पत्र—१२९, आकार—६ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—धर्म्मपाल बोहरे, स्थान—सलीमपुर, डा०—सादाबाद, जि०—मथुरा ।

आदि— × × × देषो पूत कलार का मद मइया को देइ ॥ मद मइया को देइ रोज पीये भरि प्याला ॥ भठी उतरे जाइ करै नित मद से प्याला ॥ रैन दिवस नित जाइ करै नहिं घर हुसियारी ॥ जोइ बड़ी विचार चार सै लषै न पारी ॥ तुलसी फूल निहार कै पीया कहै सोइ लेइ ॥ देषो पूत कलार का मद मइया को देइ ॥

अंत—बार बार विनती करौ सतगुरन चरन निवास । सतगुर चरन निवास वास मोहि दीन लषाई ॥ नित नित करौ विलास पार घर अपने आई ॥ मैं अति पतित मति हीन दोन देषो मोहिताईं ॥ लीना अंग लगाइ कहूँ कस कौन वड़ाई ॥ तुलसी मैं अति हीन हौं दीना अगम निवास ॥ बार बार विनती करौं सतगुरु चरन निवास ।

विषय—आपा पंथ के सतगुरु तथा सुरति ज्ञान का प्रतिपादन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मेरे विचार से रचयिता की सर्वोत्तम रचना है । इनका रहस्यवाद स्पष्टतः आध्यात्मिक है । कबीर से इनके विचार बहुत मिलते जुलते हैं ।

संख्या २२२ यफ्. तुलसी साहिब की वानी, रचयिता—तुलसी साहिब, कागज—विचौंदा, पत्र—४२१, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१५६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बोहरे धर्म्मपाल जी पालीवाल, स्थान—सलीमपुर, डा०—सादाबाद, जि०—मथुरा ।

आदि—सीरे सीरे सतगुर साहिब की दया ॥ सकल संतन की दया ॥ लिष्यते साहेब तुलसीदास के ॥ दादू दुर दराबी ॥ पीया रस पीयत सराबी ॥ टेक ॥ पीयत प्याल मन मतवाला ॥ भोर भया उजयाला ॥ षूबी षलक षुदी षोई ष्लाबी ॥ अंदर षील गई

खाबी ॥ मका भीस्त हज को देषा ॥ अबरा आब अरताबी ॥ अला आदनबी लष छूटा ॥ राजा नेबाज अजाबी ॥ मलकूत नकसुत जमरुत जाके ॥ लाऊ ताहर ऊतापागी ॥ लैला लीला मुकाम रन ही सो ॥ जगत जहांन पराबी ॥ दाउ दग दीदारही ये के ॥ चूनबे चूनबे ज्वाबी ॥ चौदा तबक ईतीया जतवज्या ॥ आया अरस आराबीं ॥

अंत—चौपाई सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ॥ तदिय कहो विन राहा ना कोई ॥ महादेव अस कररन राषा ॥ भजन प्रभाव भक्त असन्ताषा ॥ येक अनीह अरूप अनामा ॥ असस चिदानन्द प्रधामा ॥ ब्यापिक विश्वरूप भगवाना ॥ तेहि धर देह चरित क्रत नाना ॥ सोकेवल भक्तन हित लागी ॥ परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥ जेहि जन परम मता अरु छेऊ ॥ तेहि करुना कर कीन्ह न कोऊ ॥ × × ×

विषय—सतगुरु का ज्ञान पृ० १–३० । आगरे का सत्संग, ३१–४३ । जगबोध तथा तुलसी साहिब का बारहमासा, ४४–४६ । श्रुतिसार रास मन्दिर, दया चेतावनी, विरहिणि, सकल सन्तों की माया, ४७–१०६ । ककहरा द्वारा ज्ञान कथन, ज्ञान की अरिल्ल, सवैया छन्द में पुराण निरूपण, जगकी निःसारता का झूलना, श्रुति सिद्ध, १०७–१३० । पवन, गगन, त्रिकुटी और नाल का नाम, जीव का बचना, द्वार और घटिका भेद, सिद्धि के नाम गुण, प्रकृति निरूपण, पांच इन्द्रियों, नसीहत का शब्द, नैनू बचन १३१–२१४ । मन और तुलसी का वाद विवाद, लोमश ऋषि का अपने पिता से साथ संवाद, परमहंस वचन, नसीहतनामा, फूलदास और तुलसी का संवाद, २१५–२६१ । नानक साहिब, दादू, दरिया, और मीरा के वचन, सूरदास कबीर पद, २६२–२८० । मुजुवां के सन्देहों का निराकरण, फूलदास, माना, पियालाल, सूरदास, आदि की गोष्ठी, २८१–३०८ । ज्ञानी का वारहमासा पलकराम के वचन, गोपाल गोसाईं तथा तुलसी की गोष्ठी, ३०९–३७० । कबीर वचन, गोपाल वचन, हृदयवाच, सन्तवचन, ३७१–४२१ ।

संख्या २२३ ए. अघासुर मारन लीला, रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—१४, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—९८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—॥ अथ अघासुर मारन बछरा बालक चरित्र लीला ॥ बन्दन करहु नन्द नन्दन पद विन्दा विपिन विहारी ॥ बसहु उदै उर आलय गोकुल ग्वाल रुप गिरधारी ॥ नेत उठि नन्द सुवन बन बालक ले बघरान चरामै ॥ बाल विनोद लाल ग्वालन में पैले तेन्हें षिलामैं ॥ सघन कुंज कदमन के उपर चढ़ि वन्दर ज्यो वोले ॥ पकरत फिरत करत कौतूहल दौरे दबकत डोलें ॥ लैलै नाम गाइ माइन कै बछरनि टेर सुनामैं ॥ सुनत छाँडि चरते वछ वाछी हूँकरि हूँकरि आमैं ॥

अंत—घर घर आय कही यह ग्वारन सुनत अचम्भो पायो ॥ बरस एक बीत्यौ अघ मारै इतनो आज बनायो ॥ लीला ललित लाल गिरधर की ताकौं लषै न कोई ॥ सुनि सुनि चरित विचित्र कान्ह के प्रेम "उदै" उर होई ॥ अघ मारन हारन ब्रह्मा को सुष ग्वारन को

दीयो ॥ नंद नदन व्रज वृन्दाबन में उदै आय मनो कीयो ॥ इति श्री अघासुर वृज चरित्र लीला ॥ सम्पूर्ण ॥

विषय—कृष्ण का पेड़ों पर चढ़ २ कर खेलना कूदना, गौओ के नाम ले २ कर पुकारना, कंस के भेजे हुये राक्षस अघासुर का आना और अजगर का रूप धारण कर ग्वाल बालों एवं समस्त बछड़ों को निगल जाना, कृष्ण का पेट फाड़ कर निकल आना और सबके प्राण बचाना, सबका हिलमिल कर बैठकर 'छाक' अर्थात् कलेऊ करना ब्रह्मा का सब बछड़ों को चुरा ले जाना। कृष्ण का अपनी माया के बल पर, सब ग्वाल, बालों तथा बछड़ों को ज्यों का त्यों बना लेना। ब्रह्मा का लज्जित होना तथा सब हरण की हुई गायों एवं बछड़ों को वापस कर देना एवं श्रीकृष्ण की स्तुति करना। यही प्रस्तुत पुस्तिका में वर्णित है।

संख्या २२३ बी. चीर चिन्तामणि, रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—२०, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, पूर्ण, रूप—अत्यन्त प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—॥ अथ चीर चिन्तामनी लिष्यते ॥ एक दिना वृजनारि निरषि जमुना जल न्हाती ॥ ताक लगाइ गुपाल करी तिन सौछल छाती ॥ चीर चुराये जाइ जव, सबकी नजरि बचाइ ॥ काहू ने जानी नहीं, चढ़े कदम पै जाइ ॥ सिरोमणि ठगन के ॥१॥ मगन ह्वै रहीं नगन तीर तनकी गम नाहीं ॥ उछरति बूड़त तिरति फरति, चक्र ज्यौं चकवाई ॥ अति चंचल दृग चाहिनी, जोवन रूप नवीन ॥ करत केलि जल में मनो, काम रुपिनी मीन ॥ मगन गन गोपिका ॥ २ ॥

अंत—भ्रमर दूत हँसि हँसाइ सुष पाई न्हाइ तरति अमानी ॥ सब अपने घर गई निडर काहू नहिं जानी ॥ यह लीला क्रीला सहित, ग्वाल बाल जल माल ॥ वसौं "उदै" उर में सदा, चीर चोर नँदलाल ॥ करत सव ख्याल जी ॥ ६० ॥ हे वृषभान कुमारिका, हो व्रज राज कुमार ॥ मोमन बृन्दाबन बसौ, कर नित नये विहार ॥ राज वृज राज कौं ॥ ६१ ॥ इति श्री चीर हरन लीला चिन्तामनी सम्पूर्ण ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में श्री कृष्ण भगवान की चीर हरण लीला का सरस वर्णन है। गोपिकाओं का नग्न होकर जमुना में नहाना, उनके चीर उठाकर कृष्ण का कदम्ब पर चढ़ जाना, गोपियों का नहाकर बाहर निकलना, वस्त्रों को न देखकर घबड़ाना, कृष्ण को वस्त्र लिये हुए वृक्ष पर चढ़े हुए देखना, उनसे कई प्रकार से चीर वापिस लौटा देने के लिये चिरौरी करना, लाज बचाने के अर्थ जल में पुनः प्रवेश करना, कृष्ण का अस्वीकार करना तथा बीसों प्रकार के बहाने बनाना, गोपियों का परस्पर वाद विवाद, जमींदार के यहां बात कहने की धमकी देना, इसपर कृष्ण का अधिक चिढ़ाना, अन्त में व्रज बालाओं का अत्यन्त नग्न होकर पुनः वस्त्रों की याचना करना, बड़ी कठिनाई के पश्चात् कृष्ण का उन्हें चीर देना और भविष्य में नंगे न नहाने की चेतावनी देना आदि का वर्णन।

संख्या २२३ सी. दान लीला, रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—२५, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि – ॥ अथ दान लीला लिष्यते ॥ नन्द गाम ते निकरि स्याम सव सषा सिषाये ॥ बरसाने की छेंकि गाइ गहवर बन लाये ॥ यह सुधि सुनिके राधिका, आनन्द उर न समाय ॥ चन्द्रावलि चम्पक लता ललिता लई बुलाई ॥ सहेली संग की ॥ मिलि कै यह मत कियो चलो सबही अव आली ॥ आइ चराइ गाइ आज गहवर वन माली ॥ तिनसौ चलि बलि कीजयों, कछु इक वाक विलास ॥ गोरस मिस रस रूप कौ, माषन मदन प्रकास ॥ प्रेम रस पीजये ॥

अंत—बरसानौ नँद गाम निकट दोऊपुर वासी ॥ नित नव लीला करै लाल व्रजलाल विलासी ॥ चन्द्र किरनि कीरति कुमरि, सहत सषी सव ग्वाल ॥ बसहु उदय उर मे सदा, दधि दानी नँदलाल ॥ षजानौ ष्याल कौ ॥ इति श्री उदै विरचितायां दान लीला सम्पूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण की दान लीला का वर्णन ।

संख्या २२३ डी. अथ गिरवरधर लीला, रचयिता—उदै, कागज—बाँसी, पत्र—२४, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८५२ वि० = सन् १७९५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गिरवरधर लीला लिष्यते ॥ गण पति गिरा गवरि गंगाधर गिरधर गुरु गोपाल ॥ सुमिरहु सिद्ध वृद्ध विधाधर हूजै देव दयाला ॥ लीला ललित लाल गिरिधर की बाल ख्याल सुख सोहें ॥ नैन बैन मुष श्रवन प्रान मन सुर नर मुनि जन मोहें ॥ वसत अहीर भीर गोकुल में गोप राज रज धानी ॥ घर घर बृन्द सकल सुरहिन के दही दूध रुचि मानी ॥ तिनमें नन्द महरि बड़ भागी, भाग्य विभौं को बरनौं ॥ कृपा करी तिनके उपर अति तीन लोक ईश्वर नौ ॥

अंत—कोटि काम लालराय स्याम तन सोभा अमित अमानौ ॥ सो छबि वसै "उदै" उर अन्तर गिरिधर रूप रमानौं ॥ यह लीला गिरधर गोपाल की वाल विनोद विलासी ॥ सो या सुनै गुनै अरु साँषै सो साँचो व्रज वासी ॥ दोहा ॥ संवत अठारह वांमना, शुदि कार्तिक बुधवार ॥ भयौ "उदै" उर तेज, वै यह लीला अवतार ॥ इति श्री गिरवर लीला सम्पूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

संख्या २२३ ई. गिरवर विलास, रचयिता—उदय, कागज—मूँजी, पत्र—५४, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १८४५ = सन् १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—॥ अथ गिरवर विलास लिष्यते ॥ कवित्त सुंदरि प्रवीन रुप जोबन नवीन सोहे, लींये कर बीन "उदै" अषिल अवगहनी ॥ चन्दन चढ़ायें तन कुन्दन सुगन्धन सौं, सौंधे वरचीर चारु चंचल दवा चाहिनी ॥ सोहत सुकुमार उर फूलन के हार वार, बेनी सों सुठार मोती जोती हंस वाहनी ॥ बसौं उर आइ मेरे कंठ सुष पाइ सदा, सारदा सहाइ रहौ कवि कुल दाहिनी ॥ दोहा येक समै मंत्री सुमंत, वैठे मन नृप पास ॥ नृप मन मंत्री सौं कहत, सुनहु सुमत येक बात ॥

अंत– दोहा दीप दान देष्यों दगनि, उपज्यो उर अहलाद ॥ उदै उकति वरनन कियो, सुमति नृपति संवाद ॥ दरस काज कविता गयो, पुर पुरसोत्तम पास ॥ कृपा करी जगदीस ने कियो गिरवर विलास ॥ संवत अष्टादश सतक, पैंतालीस प्रमान ॥ कार्तिक पष पछिली सुतिथि, पूरन चन्द्र कलान ॥ या गिरिवरन विलास कौं कहैं सुनै नर सोइ ॥ दीप दान अस्नान के, कीये को फल होइ ॥ इति श्री गिरिवर विलास सम्पूर्ण

विषय—सरस्वती वंदना, मन रूपी राजा का सुमति मंत्री से गोवर्द्धन पर्वत की महिमा पूछना, सुमति का, जैसी महिमा श्रीकृष्ण ने अर्जन की है, वर्णन करना, पृ० १–४। गोवर्द्धन का स्थान, वहाँ की चित्र विचित्र रचना, कुञ्ज कोकिलादिक का वर्णन, राजहंसों, सरोवरों फूलों, विटपों, लताओं, सांगीत, अप्सराओं, उनके नृत्यादि, ५–१२। आस पास की भूमि, भिन्न२ प्रकार की शोभा व्रज माहात्म्य, ब्रह्मादिक देवताओं की लालसाएँ, वृजवासियों का सौभाग्य, नाच रंग, आमोद प्रमोद, वाद्य-गीत, सामगान, पूजा पाठ, ब्राह्मणों आदि का स्तवन, पाठन, १३–२०। गोवर्द्धन के सँकरे मार्ग, उनकी अलौकिक सुन्दरता व्रजबालाओं के मत्त गीत, दीप ज्योति, मन्दिरों की मालाएँ, वहाँ की आलंकारिक रचना, कंचन तथा रत्नों का वर्णन, देव दुर्लभ शोभा, २१–२६। दीप दान, परिक्रमा पूजा की महिमा, नवों गुणों, चारों वेदों, चार सम्प्रदायों, रिद्धियों सिद्धियों, निर्वाण, मोक्ष, गंगा, देवताओं का रूप धारण कर विचरना, २७–३५। कामदेव की समस्त सेना के शिविर का गोवर्द्धन पर विश्राम और बड़ी ओजस्विनी कविता में उसका वर्णन, ३६–४०। वैराग्य, विज्ञान, ज्ञान, विद्या, आदि का सदैव वहाँ निवास, राधा कुण्ड, हरजी आदि कुण्डों का माहात्म्य, तीर्थ का फल, विचित्र शोभा, कृष्ण की लीलाएँ सदैव वहाँ होते रहना, राक्षसों का संहार आदि होना, पृ० ४१–४७। अन्नकूट आदि स्थानों का वर्णन, इन्द्र का वहाँ रहना और कृष्ण की स्तुति करना, अन्यान्य शोभाओं का आकर्षक वर्णन, पृ० ४८–५४। [प्रस्तुत बृहद् ग्रन्थ की कविता, मेरे विचार से, इतनी उत्कृष्ट है कि उसकी हिन्दी के प्रधान कवियों में गणना होनी चाहिये।]

टिप्पणी—सरसता, मधुरता एक-एक छन्द से टपकी पड़ती है। आदि से अंत तक अलंकारों की भरमार है। कवित्त, सवैया, छन्द, दोहा, दंडक, सोरठा, कुंडलिया आदि छन्दों में ग्रन्थ लिखा गया है। रचनाकाल का दोहा यह है:—संवत अष्टादश सतक, पैंतालीस प्रमान। कार्तिक पष पछिली सु तिथि, पूरन चन्द्र कलान ॥

संख्या २२३ यफ. जोग लीला, रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६९, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दाऊ जी मन्दिर, स्थान—बड़ी बठैन, डा०—कोसी कलाँ, जि०—मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जोग लीला लिख्यते ॥ एक समै मन मीति मोहि आज्ञा यह दीनी। याही ते मन धारि जोग लीला तब कीनी ॥ सिव सनकादिक सारदा नारद सेस गनेस। देहु बुध तौ बर 'उदै' उर अक्षर गीत विशेष ॥ एक दिन नन्द कुँवार ग्वाल मिल मतो उपायो। बरसाने ते निकर भोर एक भेस बनायो ॥ तुम सब गायन पै रहो मैं बरसाने जाँहु। मै कबहु देष्यो नहीं के सो है वह गाऊ ॥ भूप वृषभानु को ॥

अंत—वे अपने घर गए उलट ये अप घर आई ॥ बहु रंगी गोपाल ख्याल ब्रज बाल षिलाई ॥ बरसाने नँदगाम के निकट सघन संकेत ॥ पीतम प्यारे हेत को निपट निमानो खेत ॥ काम बन केलि को। कपट रूप धर किते भाँति बहु भेष बनाए। गोपी गोप गुवाल बाल कूँ ष्याल षिलाए ॥ रूप सिरोमनि राधिका, रसिक सिरोमनि स्याम। बसत 'उदै' उरमें सदा बस संकेत सुधाम स्याम स्यामा सहित ॥ इति श्री जोग लीला ॥

विषय—ग्वालिया कृष्ण का कुछ चुने हुए सखाओं को लेकर योगी का रूप धर कर बरसाना जाना, गाँव के बाहर धूनी रमा कर चेलाओं समेत बैठना, बरसाने की बहुत सी स्त्रियों का उनके पास आना, किसी को गंडा-फूंदना देकर किसी को झाड़ फूँक कर, किसी को भभूत देकर अच्छा कर देना, अन्त में राधा का आना और कृष्ण के प्रेम में फँस जाना, यही इसमें वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—उदय कवि के कई ग्रंथ पहिले प्राप्त हो चुके हैं। आगरे में भी इनके ग्रन्थ मिले हैं। इनकी कविता बड़ी सरस एवं मधुर है। कहीं कहीं तो इनकी कृतियाँ नन्ददास से भी बढ़ी चढ़ी हैं। इनकी सभी रचनाएँ विशेषतया भक्ति प्रधान हैं।

संख्या २२३ जी. जुगल गीत, रचयिता—उदय, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—५ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—॥ अथ जुगल गीत लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति फन पति देव पति, दिन पति धन पति मार ॥ नाम रूप गुन कथन करि, ताकौ लहत न पार ॥ परम पुरुष सबते परें, पूरन ब्रह्म अनादि ॥ जोगी जन जाको जपत, श्रुति संकर सनकादि ॥ अषिल लोक करता अहै, सब कौ सिरजन हार ॥ सब जीवन की आत्मा, परमात्मा अगुन अगेह ॥ निज इच्छा करि धरत है, नाना विधि की देह ॥

अंत—कोसल पाल गुपाल की, निरखि लटकती चाल ॥ करि २ इच्छा उर उदै, नैननि होत निहाल ॥ जे पद पंचवटी फिरि आये ॥ जे पद वृज वछरनि संग धाये ॥ जे पद परसि गंग चलि आई ॥ आदर करि सिव सीस चढ़ाई ॥ जे पद कमला कुच-धरे ॥ जे पद ब्रज रज गाहत फिरे ॥ इति श्री जुगल गीत प्रेम प्रतीत सम्पूर्ण ॥

विषय—१-परब्रह्म की स्तुति तथा उसका अवतार धारण करना। २-वाराह, मच्छ, वामन-आदि चौबीसो अवतार लेना। ३-राक्षसों का संहार करना एवं धर्म स्थापित करना। ४-राम तथा कृष्ण अवतार वर्णन। ५-दोनों अवतारों की तुलना अर्थात् राम ने सुबाहु ताड़का मारी तो कृष्ण ने सकट तथा पूतना को पछाड़ा। ६-राम ने की यज्ञ रक्षा तो कृष्ण ने की व्रज रक्षा। ७-उन्होंने अहल्या को उद्धारा तो इन्होंने कूबरी को सम्हारा। ८-इसी प्रकार दोनों के सहायकों, विवाह, जुद्ध, मुनि रक्षा, वनवास, राक्षसों का नाश करना, कंस- रावण को मारना, उग्रसेन-विभीषण को राज्य देना आदि बातों में पूर्ण सामञ्जस्यता विस्तृत रूप से बतलाई गई है।

संख्या २२३ यच्. मोहनी माला, रचयिता—उदय (कवि), कागज—बाँसी, पत्र—१०, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मोहिनी माला लिष्यते ॥ दोहा ॥ पूरन ब्रह्म अनादि अज, सो व्रज राज कुमार ॥ भक्त हेतु भूतल विषै, आइ लियो अवतार ॥ जन रंजन गंजन असुर, नर नाटक के भाइ ॥ मोह लिये व्रज जन सवै, मोहन भेष बनाइ ॥ मोर मुकुट कुँडल झलक, अलक गुंज गर हार ॥ मोहन स्याम सरीर में, सोहन सबै सिंगार ॥

अंत—दोहा राधा मोहन के निरषि, चरित विचित्र उदार। "उदै" होत आनन्द उर, लीला ललित बिहार ॥ राधा मोहन लाल के, पद पंकज की आस। उदै रहौ उर में सदा, विन्दा विपिन विलास ॥ राधा मोहन लाल की, लीला मोहन माल ॥ पहिरै कंठ धरै कोई, जाको भाग विसाल ॥ इति श्री मोहनी मान लीला सम्पूर्ण ॥

विषय—प्रस्तुत छोटी पुस्तिका में एक प्रकार से कृष्ण के समस्त गुणों का वर्णन कर उनकी स्तुति की गई है। १-कृष्ण के अंग-अंग की शोभा का वर्णन। २-उनका गाय चराना और वृज-नारियों को मोह लेना। ३-वृज-वनिताओं के साथ भिन्न २ क्रीड़ाएँ एवं मनोरंजन करना। ४-धेनु, प्रलम्ब, आदि बड़े २ राक्षसों का वध करना। ५-दुष्टों एवं राक्षसों को मार २ कर भक्तों को बचाना। ६-राधा कुब्जादि से प्रेम। ७-भक्तों पर भगवान का अगाध प्यार।

संख्या २२३ आई. रामहरण लीला (राम करुणा), रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमती सुखिया ब्राह्मण, स्थान—हँसेला, डा०— अछनेरा, जि०—आगरा।

आदि—अथ राम हरन लीला लिख्यते अति सुन्दर सुकुमार कुँवर ये कौन के ॥ अहिरावन को बोलि कही रावन मुनि भाई ॥ राम लखन दोऊ वीर तिनहिं तू हरि ले जाई ॥ दोहा—अहिरावन यह सुनत ही मगन भयौ तेहि काल ॥ माया करि हरि लै गयो तिनको निस पाताल ॥ कुँवर ये कोन के ॥ १ ॥

अत—जामवन्त सुग्रीव बिभीषण सबही भाखे ॥ धनि धनि पवन कुमार प्रान तिह सवके राखे ॥ दोहा कीश भाल कपि कटक में भयो न भावत भोर, रामचन्द्र चाहत उदय कपि कुल कुमुद चकोर, इति श्रीराम हरण लीला सम्पूर्ण

विषय—इस ग्रंथ में अहिरावण द्वारा रामचन्द्र जी के चुराये जाने की कथा रोचक छंदों में वर्णन की गई है ।

संख्या २२३ जे. राम करुणा, रचयिता—उदय कवि, कागज—बाँसी, पत्र—५०, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३७, खंडित, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमती सुखिया देवी, स्थान—हँसेला, डा०—अछनेरा, जि०—आगरा ।

आदि—× × × मसक समान सुजान भये हनुमान सिधारे ॥ दरवाजे में घुसत एक राक्षसी लषाए ॥ रे सठ कोन कठोर हठि, मोय निदरि कित जाय ॥ चोर जहाँ लगि लंकि केते सव डारे षाइ ॥ रजाइस राम की ॥

अंत—मनुज चरित अनुहरि रारि यह लछिमन कीनी, नर नाटक गृह ग्राम राम करुणा रस भीनी । जो या को सीखे सुने उदय होइ उर आन, जाकी सदा सहाय को आप करें हनुमान ॥ राम करुणा करे इति श्रीराम करुणा कर से पूर्ण ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विषय—ग्रंथ में रामचन्द्र जी की स्तुति की गई है ।

संख्या २२३ के. राम करुना नाटक, रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—३३, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८६ वि० = १८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीरामदत्त, स्थान—हाँतिया, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—अहिरावण को बोलि कही रावण सुनि भाई । राम लषण दोउ वीर तिहै तू हरि लौ जाई । अहिरावण सुनत ही, मगन भयौ ततकाल । माया करि हरि लै गयो, तिनको तिस पाताल । कुँमर ये कौन के ।

अंत—मनुज चरित अनुहारिणी यह लछमन कीनी । नर नाटक गुन ग्राम राम करुणा रस भीनी । जो याकूँ सीषे सुनै उदै होय उर ज्ञान । जाकी सदा सहायकों, आय करैं हनुमान । इति श्रीराम करुना नाटक । शुभं भूयात् । मिती जेष्ठ बदी ३ संवत् १८८६ ।

विषय—अहिरावण का राम लक्ष्मण को पाताल लोक में हर ले जाना, राम की सेना का विलाप, हनुमान का अहिरावण का वध करना और राम लक्ष्मण को छुड़ाना ।

संख्या २२३ यल. सुमरण मंगल, रचयिता—उदय, कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—॥ अथ सुमरण मंगल लिष्यते ॥ दोहा वाक विनायक नाथ सिर, सुमिर विप्र सुर सन्त ॥ गुरु पद प्रेम प्रताप बल, वानी विमल फुरन्त ॥ करहु कृपा करुणा निधे,

राधे नन्द कुमार ॥ करन चहों अद्भुत वरन, यह सुमरन सिंगार ॥ छन्द ॥ येक समै सुष धाम राम अभिराम काम छवि ॥ सुन्दरि सीता सहित लषी छवि उदै सषी कवि ॥ मनि मय पुरट प्रजंक फैन पैसेन सुन्द पति ॥ लषन करत कर चमर पानि प्यारी पद चंपति ॥

अंत—सुचि सहित मानो नेम ॥ सै प्रीति मानहु प्रेम ॥ जुत दया जानो धर्म्म ॥ तषी सहित सुभ कर्म्म ॥ जनु भक्ति जुत अनुराग ॥ करुणा सहित वैराग्य ॥ तपस्या सहित जन जोग ॥ सम्पति सहित ज्यों भोग ॥ कीरति सहित जस लागि ॥ श्री सहित मानो भागि ॥ अस कोटि उपमां वारि ॥ नही राम सिय अनुहारी ॥ पटतर न दूजी कोइ ॥ सीय राम सम सो होइ ॥ × × ×

विषय—१–गणेश तथा भगवन्त वन्दना। २–राम पंचायतन वर्णन। ३–रामचन्द्र के अंग-अंग अर्थात् केश, कपाल, भुजा, पद, जाँघ, कपोल, नासिका, दाँत, भृकुटी, हस्त, नेत्र, गंड-स्थल, ओष्ठ, चिबुक, नख, उदर, त्रिवली, यज्ञोपवीत, मधुर मंद हास्य, वक्षस्थल, चरण चिन्ह, कटि, पीत वस्त्र, जानु आदि का सविस्तृत वर्णन। ४–सीता के भी अंग प्रत्यंगों का, उनके समस्त अलंकारों एवं वस्त्रों सहित वर्णन। ५–लक्ष्मण की सुन्दरता का चित्र खींचा गया है। ६–पुनः रामचन्द्र की महिमा तथा शोभा का वर्णन। ७–अवध तथा राम चरणों की भक्ति की प्रशंसा।

संख्या २२३ एम. सुमिरन सिंगार, रचयिता—उदै, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी, बेलनगंज, आगरा।

आदि—× × × बामन विष्णु वराह विश्वम्भर विश्वारी ॥ माधव कर मुकुन्द मदन मोहन मधु हारी ॥ पर पूरन पर ब्रह्म पर परमेश्वर स्वामी ॥ पार ब्रह्म पर पुरुष प्रकृति पर अन्तर जामी ॥ जदुपति जसुधा पूत पूतना प्रान प्रहारी ॥ वासुदेव हरदेव देवकी उदर उधारी ॥

अंत—सुर नर मुनि जन जिते नाम निज मंत्र बताओ ॥ आगम निगम पुरान नाम सर्वोपरि गायो ॥ दोहा ॥ नित चित हित हरि नाम को, करि सुमिरन सिंगार ॥ या संसार सुमार ते मरे न मरती बार ॥ या विनया संसार मै सरबस जाइ गमाइ ॥ उदै उचित सबको यहै, और न अहे उपाय ॥ श्री सुमरिन सिंगार सम्पूर्ण

विषय—कृष्ण एवं रामचन्द्र की स्तुति।

संख्या २२३ यन. स्याम सगाई, रचयिता—उदय, कागज—बाँसी, पत्र—४, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८७ वि० = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प्रभुदयाल पंडित, स्थान—अकबरा, डा०—रुनकुता, जि०—आगरा।

आदि—॥ अथ स्याम सगाई लिष्यते ॥ एक दिन राधे कुँवरि नन्द घर खेलनि आई। चंचल चित्र विचित्र देषि जसुमति मन भाई॥ नन्दराई मन में चहैं, पेषि रूप की राशि ॥ यह कन्या मेरे स्याम कूँ, गोविन्द पुनवै आस ॥ कि जोरी सोहती ॥ जसुमति अति अनन्द ह्वै कैं वृज नारि बुलाई ॥ लीनी निकट बुलाइ मर्म की बात सुनाई ॥ तुम जइयौ

वृषभान कैं, बहोत करौ मन हारि ॥ यह कन्या मेरे स्याम कूँ, हम माँगति गोद पसारि ॥ कि जोरी सोहती ॥

अंत—जब स्याम की भई सगाई ॥ फूले ग्वाल अंग नहीं समाई ॥ गावत चले रंग रस भरे ॥ सब ही मनसूँ लागत भले ॥ समाचार जसुमति ने पाए ॥ गज मोतियन के चौक पुराए ॥ ब्रज की वधू बुलाकें कीयो अरनौवा ॥ श्री नन्द राय बलहारि सगायी स्याम की ॥ सम्पूर्ण ॥ मिती असाढ़ वदी ४ सम्वत १८८७ वार तिथि सूरज ॥ लिषि राजपूत वंस लाला सगई राम नै ॥ मडौरा को ॥

विषय—इस ग्रंथ में स्याम की सगाई का वर्णन है । एक बार राधा नंद के घर खेलने गई। उसे देख कर नंद बाबा और यशोदा का जी ललचाया कि उसका विवाह श्याम के साथ हो जाय । अतः उन्होंने नन्द को वृषभान के घर बात चीत छेड़ने की गरज से भेजा । वहाँ नन्द गये तो वृषभान ने उन्हें खरी खोटी सुनाई । कहा, कृष्ण तुम्हारा चोर है ऊधमी है, हम अपनी कन्या का उसके साथ कैसे विवाह कर सकते हैं । बेचारे नन्द बाबा हाथ मलते चले आये । कृष्ण से कहा देख तेरे स्वभाव के कारण सभी तेरी बुराई करते हैं । कोई विवाह के लिए खड़ा नहीं होता । कृष्ण ने उत्तर दिया बाबा तुम क्यों वहाँ गये । मैं तो स्वतः ऐसा कर लूँगा जिससे वे खुद बिवाह को यहीं दौड़े आवें । अस्तु एक बार श्याम अपने सखाओं के समेत वृषभान के बाग में गये । उनका आना सुन बरसाने की सहेलियाँ राधिका समेत वहाँ आ पहुँचीं । अचानक राधा को सर्प ने काट खाया । जीने-मरने का प्रश्न सामने आया । किसी ने राधा की माँ को कहा कि कृष्ण इसे अच्छा कर सकते हैं क्योंकि उन्होंने यमुना में काली नाग को नाथा था । अतः वे सर्प दंशन की विद्या में प्रवीण हैं । पश्चात् कृष्ण को इस शर्त पर बुलाया गया कि यदि वे राधा को अच्छा कर दें तो उनके साथ उसकी शादी कर दी जाएगी । श्रीकृष्ण ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया और राधा को अच्छी कर देने के पश्चात् उससे विवाह कर लिया ।

संख्या २२३ ओ. वंसी विलास, रचयिता—उदै, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनि, बेलनगंज, आगरा ।

आदि—॥ अथ वंसी विलास लिख्यते ॥ धीर समीर तीर जमुना के मोहन गाइ चरावै ॥ बहुत दिना ते लगी ग्वालिनीं, मुरली हाथ न आवै ॥ ग्वाल गुपाल सघन कदमन पर षेलत लवे लवाई ॥ मुरली मुकुट उपरना तिनके, धरे दूर इकठाई ॥ ता दिन लग्यौ दाउ ग्वालिनि कौ छल के बल छिपि आई॥ लगे ष्याल दीषी नहीं काहू, मुरली लई चुराई ॥ जाय मिली अपने परि कर में, राधे के कर दीनी ॥ मगन भई सब कहत सषीरी भली भली तें कीनी ॥

अंत—कोऊ करि दोऊन को बीरी देत लेत मुसिकाई ॥ करि करि आदर रूप अगाधा राधा कुँमर कन्हाई ॥ कोऊ इक वाल ताल दैं कूकति कहि कहि कान्ह किशोरी ॥ अपने

रंग संग मिलि बैठे माँनहु चन्द चकोरी ॥ रसिक सिरोमनि रूप रँगीले ललित लाल पीय प्यारी ॥ बसहु विपिन बर कुंज 'उदै' उर मुरली चोर निहारी ॥ इति श्री वंसी विलास सम्पूर्ण ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में व्रज-बालाओं का कृष्ण की बाँसुरी चुराना और परस्पर में तरह तरह की सलाह करना कि इसे यमुना में फेंका जाय। किसी का यह भी कहना कि इसका मुख बन्द कर दिया जाय; क्योंकि यह मोहन के मुँह लगी है और हमें गालियाँ दिया करती है। राधिका का आकर बाँसुरी ले लेना और उसे फूँकना। फूँक से मोहन शब्द निकलना और कदम्ब पर बैठे हुए कृष्ण का उस ओर ध्यान आकृष्ट हो जाना। कृष्ण का बाँसुरी की खोज करना। साथियों से पूछने पर भी कोई सुराग न लगने के कारण उनका व्याकुल होना। बड़ी ही मार्मिक भाषा में, बड़, पीपल, आम, कदम्ब, नीम, आदि विटपों एवं सुन्दर लताओं से बाँसुरी के विषय में पूँछना और अपनी विरह व्यथा को प्रकट करना। अन्त में यह समाचार पाना कि ग्वालिनों ने उसे चुरा लिया है। अतः कृष्ण द्वारा उनका पता लगाना और बहुत प्रार्थना करने पर उनका हँसते हुए कृष्ण के दुःख में सहानुभूति प्रकट करना। पुनः उनका कृष्ण से यह कहना कि तुम नाचो और गावो तब तुम्हें बाँसुरी मिलेगी, कृष्ण का बचन देना। पश्चात् वंशी ले लेने पर श्रीकृष्ण और ग्वालनियों का हिलमिल कर नाचना आदि वर्णित है।

संख्या २२४. जुगल प्रकाश, रचयिता—उजियारे लाल, स्थान-(वृंदावन), कागज—मूँजी, पत्र—८१, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८३७ वि० = १७८० ई०, लिपिकाल—१८९६ वि० = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, स्थान व डा०—गोकुल, जि०—मथुरा।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जुगल प्रकाश लिष्यते ॥ कवित्त ॥ वदन गयंद एक रदन अमंद सोभा, सुष को सदन चंदभाल बाल सोहियैं। रतन किरीट सीस नाग उपवीत उर, चारि भुज आयुध है सालंकार जोहियैं। विद्या वेद ग्याता महा बुद्धिवर दाता, षट आनन के भ्राता जान कुंदर अरोहियैं। सम्भु के दुलारे उजियारे वारे गौरी जू के, मोहियै प्रकास करौ जाते मन मोहियैं ॥ × × × संवत अष्टादश सतक; बीते अरु सैंतीस। चैत बदी सातें उंबौ, भयो ग्रन्थ बकसीस।

मध्य—कवि वंस वर्ननं ॥ महा गुनाढ्य सनाढ्य कुल, तहाँ धनाढ्यअपार। मही महे मूनोतिया भागीरथी उदार। नन्दलाल तिनके तनय, नवल साह सु अनास। तिन सुत उजियारे कियो यह रस जुगल प्रकास। व्यास वंस अव- तंस हुअ घासी राम प्रकास। तिन सुत सुत सम्बन्ध कवि, किय वृन्दावन वास।

अंत—कवि हैं सुजस के जिहाज भवसागर मैं, आगर अनूप भूप नागरस गावै हैं। उजिआरे मेटिनि कौं छोटे करैं ओटे जानि, मोटे करै छोटे जे अगोटे समुहावै हैं। दीवै जौन होइ तऊ दीवै कछू थोरो घनौं, कीवैं सनमान दान मान अधिकावै हैं। षान सुलतान राजा रान मैं वषान चलैं, भलैं कहि आवैं इनैं भले कहि आवै हैं। × × × इति श्री जुगल

प्रकास उजियारे लाल विरचिते द्वादश प्रकास सम्पूर्ण ॥ संवत ॥ १८९६ ॥ मिती माघ बदी १० बुधवासरे || प्रति लिख्यतं मिश्र राम बकस ||

विषय—प्रार्थना, कवि वंश; ग्रन्थ रचने का प्रयोजन, १-४ तक । भाव, विकार, रति, श्रृंगार अनुभाव, सात्विक भाव, स्वेद, रोमांच, स्वर भंग, कम्प, आँसू, प्रलय आदि लक्षण, ५-१५ । रस लक्षण, संयोग श्रृंगार, लीला, विक्षिप्त, विभ्रम, ललित, विप्रलम्भ आदि लक्षण, पृष्ठ; १६-२४ । श्रृंगार रस, हास्य रस, रुद्र रस वर्णन, युद्ध, उत्साह, वीर, रस आदि, २५-४४ । इन्द्रजाल, अतिशयोक्ति, अद्भुत, माया रस, एवं शान्ति आदि, ४५-५१ । संचारी आदि भाव, आवेश, विषाद, उत्कंठा, मति, उन्माद, निधन, त्रास, ग्लानि आदि, ५२ ८० तक ।

संख्या २२५. संग्रह, रचयिता—संग्रह कर्ता-उमराय सिंह (पैगू मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमती रानी कुँअरि जी, भू० पू० अध्यापिका, कन्या पाठशाला, सिरसागंज, मैनपुरी ।

आदि—॥ कवित्त ॥ बारह कोस मैंनगढ़ सोरह कोस इटायो है, आठ कोस करहल पाँच सकूराबाद है । पच्चीस कोस आगरो और चार कोस थानो है, ताके वीच पैगू दल् दला पुरीजा में सातों जाति वसति है । जमींदार लभौ आवारौ शहर सकूरावाद है, मंडी तो सिरसागंज तीनों मुल्क जाहिर है । गाँव तो पैगू गांउ जामैं रजपूतन की निसानी है, ताके वीच मिहमगढ़ छत्रिन को वासो है ॥ उमराय सिंह यह ऊँचो दरवाजो तीन, चौक भीतर हमारो पुरवाई ओर को मकान है । लाल नुख होने से सुखी होता है स्वान नुख होने से दुखी होता है सेत नुख होने से रोगी होता है पीरे नुख होने से जोगी होता है अरुन नुख होने से पापी मुनुष होता है ॥

अंत—छाड़ि सबै झक तोहि लागै वक आठहु जाम यही जिय ठानी ॥ जातहीं दै है दयाल लढ़ा भरि लैहों लराइ यही जिय जानी ॥ पैहों कहाँ से अटारी अटा जिनकौं विधि दीनी है टूटी सी छानी । जो पै दरिद्र लिलाट लिख्यो सो लिलाट तौ काहू के मेटे न जात अजानी ॥ कोदों समा जुरतौ भरिपेट न माँगतो हौं दधि दूध मिठौती । सीत वितीत गयौ सिसियात है हों हटती पै तुम्हैं न हठौती ॥ जो जन तीनि हितू हरि के हेत तो मैं काहे को द्वारिका ठेलि पठौती । जाघर कौ कवहूं न गयौ पिउ टूटौ तवा और फूटी कठौती ॥ इति ||

विषय—कवि परिचय, मकान का नकशा, शकुन, कृष्ण के सम्बंध के कुछ कवित्त, लोभी का छन्द, हनुमान का सीता के पास संवाद ले जाना, सुदामा के छन्द, नायिका भेद के छंद और कुछ फुटकर छन्द तथा सुदामा के दो छंद ।

विशेष ज्ञातव्य—संग्रह के आदि में उमराय कवि ने अपने स्थानादि का परिचय दिया है । इससे अनुमान होता है कि ये स्वयं संग्रहकार हैं । संग्रह में किसी क्रम का निर्वाह नहीं है ।

संख्या २२६ ए. हरि कीर्तन, रचयिता—अष्टछाप आदि (स्थान-ब्रजभूमि), कागज—मूँजी, पत्र—१६४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण

(अनुष्टुप्)—२४६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल - सं० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गोपाल जी गोस्वामी, स्थान व डा० - नन्द ग्राम, जि०—मथुरा।

आदि—अरगजा गुलाल लै केसरि रंग, पिचकारी भरि भरि छोरत। अतर गुलाब अरु चोवा चन्दन, पिय मुष मीड़त बनि बनि बोरत। ते सब तव ले लाला मिलि गहि, गुप्त प्रकटि टक टोरत॥ झक झोरत बँहिया गहि दौरत, लटकि चलत वे रस में बोरत। तान सेन षेलत पिय प्यारी, बृज नारी गारी गावैं, सब बसकैं चित चोरत।

अंत—राग राम कली। सजन संग होरी खेलौंगी॥ लोक लाज कुल कान सषीरी, पाइन पैं लौंगी॥ अबीर गुलाल अरगजा केसरि, पिय परमें लौंगी॥ कृष्ण जीवन लछीराम प्रभु, भली बुरी सिर पर झेलौंगी॥ × × ×

विषय—वसन्त, होरी, दशहरा, फूल डोल आदि उत्सवों पर गाने के पद तथा भगवान के नित्य कीर्तन सम्बन्धी पद संगृहीत हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में निम्नलिखित कवियों के पद आए हैं:—१-तान सेन, २-व्यास, ३-हित हरिवंश, ४-दामोदर, ५-गदाधर, ६-कमल नैन; ७-श्री हरिदास, ८-गोविन्द प्रभू, ९-नागरी दास, १०-कल्यान, ११-आनन्द, १२-स्याम दास, १३-विहारिन दास, १४-माधो दास, १५-अग्र स्वामी, १६-राजाराम, १७-हित दयाल, १८-गोविन्द, १९-रसिक सिरोमनि, २०-लछीराम, २१-जुगल किशोर, २२-आनन्द घन, २३-मीरा, २४-जगन्नाथ कवि राय, २५-वल्लभ रसिक, २६-मुरारी दास, २७-माधुरी, २८-श्री शिवराम, २९-विद्या दास, ३०-घासीराम, ३१-मोहनलाल, ३२-राम राय, ३३-स्यामा स्याम, ३४-बाल कृष्ण।

संख्या २२६ बी. कीर्तन, रचयिता—अष्टछाप (स्थान-ब्रजभूमि), कागज—बाँसी, पत्र—३८, आकार—१४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० प्यारे लाल जी, स्थान—कुरसुण्डा, डा०—बिसावर, जि०—मथुरा।

आदि—× × × भोर भावतो श्री गिरधर देखो॥ सुभग कपोल लोल लोचन छवि, निरखत नैन सुफल करि लेखो॥ नखसिख रूप अनूप विराजत, सोभा मनमथ कोटि विसेखो॥ चत्रभुज प्रभु रस रासि रसिक कों, परम भाग बड़ इक टक पेंखो॥

अंत—लाल संग रति मानी मैं जानी, कहे देत नैना रँग भोए। चंचल अंचल मैन समात, इतरात रुप भरे मानो मीन महावर धोए॥ पलक पीक अंजन दे राखे, मानहु मानिक जरा वपोए॥ नन्द दास प्रभु की छवि निरषत, जानत हो निसि निमखन सोए॥

विषय—अष्ट सखाओं के भक्ति-रससिद्ध पद संगृहीत हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य रचयिताओं के पद भी हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं:— १-विष्णु दास, २-रसिक प्रीतम, ३-गोविन्द प्रभु, ४-लालाराम, ५-हित हरिवंश, ६-वृन्दाबन दास (इत्यादि)।

संख्या २२६ सी. नित्य के पद, रचयिता—अष्टसखा (स्थान-व्रजभूमि), कागज—मूँजी, पत्र—४८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण

(अनुष्टुप्)—९१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गोपाल जी गोस्वामी, स्थान व डा०—नन्द ग्राम, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री गोपी जन वल्लभाय नमः ॥ अथ नित्य के पद लिष्यते ॥ राग भैरव ॥ उठो हो गोपाल लाल दुहो धोरी गइयाँ ॥ सद दूध मथि पीयो घइयाँ ॥ भोर भयो वन तमचर बोले ॥ घर घर गोप घर सब खोले ॥ गोपी रथी मथनियाँ धोवें ॥ अपनो २ दही बिलोवै ॥ संग के सखा बुलावन आये ॥ कृष्ण नाम लै लै मंगल गाये ॥

अंत—॥ विलावल ॥ बाल विनोद खरे जिय भावत । नख प्रति बिम्ब पकरिबे कुँ हरि, हुलसि घुटुरुवन धावत ॥ कमल नैन माखन माखन माँगत हैं, ग्वालनि से नवावत ॥ सद एक बोलो चाहत हैं प्रगट बचन नहीं आवत ॥ छिनु एक माँझ त्रिभुवन की सोभा सी सुता माँझ दिखावत ॥ सूरदास स्वामी मदन मोहन जसोमति प्रीत बढ़ावत ॥

विषय—श्रीकृष्ण लीला संबंधी पदों का संग्रह ।

संख्या २२६ डी. नित्य के पद, रचयिता—अष्ट छाप (स्थान-व्रज), कागज—देशी, पत्र—६९, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६४ वि० = १८०७ ई०, प्राप्तिस्थान—हरिराम जी वैश्य, स्थान—विजौली, डा०—माट, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री कृष्ण चरण कमलेभ्यो नमः ॥ राग विभास ॥ स्यामा स्याम सेज उठि वैठे, अरस परस दोऊ करत सिंगार ॥ उन पहिरी वाकी मोतिन माला, उन पहिर्यो वाकों ······हार ॥ छूटे पेट संवारे श्री श्यामा, अलक सँवारत नन्द कुमार ॥ श्री भट्ट कहत जुगल की दूती, मेरे आँगन करन विहार ॥

अंत – तिहारे पूजिय पिय पाय । केसी केसी उपजत तुमकों । कहत बनाय बनाय । आतुर भए निपट पहिरे, वसन परे पलटाय । रचे कपोल पीक कहा पागे उरजे पत लखि आय । गिरधर लाल जहाँ निसि जागे, तहाँ कीजे सुख जाय । कुम्हन दास प्रभु जानीये बतीयाँ, अब तुम को तप साय । इति श्री अष्ट छाप के नित्य पद ॥

विषय—राधा कृष्ण की भक्ति और उनका श्रृंगार । अष्ट सखाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित कवियों के पद भी इसमें आये हैं:— १–श्री भट्ट- २–गोविन्द प्रभू, ३–रसिक, ४–गोपालदास, ५–स्यामा स्याम, ६—हरिदास ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ पदों का बड़ा ही सुन्दर संग्रह है इसमें अष्ट छाप के अलावा और और कवियों के पद भी संगृहीत हैं । अधिक पद सूरदास के हैं । इसमें सिर्फ ऐसे ही पदों का संग्रह है जो प्रति दिन की पूजा, विविध श्रृंगार और भोग आदि के समय मंदिरों में गाए जाते हैं ।

संख्या २२६ ई. पद चयन, रचयिता—अष्ट छाप (स्थान—व्रजभूमि), कागज—बाँसी, पत्र—६०८, आकार—१२ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जी का मन्दिर, स्थान व डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—राग विलावल॥ सोवत ग्वालिन कान्ह जगाए । भोर भए हम आए दरस कुँ, जीवन जनम सुफल करि आए ॥ उतम सेज और सेत बिछौना, चँहु दिसि रुचि रुचि आप बनाए ॥ 'सूरदास' प्रभु तुम्हारे दरस कुँ, पूरन चंद्र प्रकट है आए ॥

अंत—राग केदारो ॥ पोढिए प्रिय कुँवर कन्हाई । नौतन बन विविध कुसुमावली, मैं अपने कर से जब नाई ॥ नाहिन सखी समो काहसों, ग्वाल मण्डली सब बहुराई ॥ 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर । नागरि को ललिता लै आई ॥ × × ×

विषय—१–अष्टछाप, २–श्रीभट, ३–आसकरन, ४–रामदास, ५–रसिक सिरोमनि, ६–बल्लभ लाल, ७–विष्णु दास, ८–हित हरिवंश, ९–गोविन्द प्रभु, १०–रसिक प्रीतम, ११–जन गोविन्द, १२–कृष्ण जन, १३–कृष्ण जीवन लछिराम, १४–गदाधर हरिहर, १५–श्री विट्ठल गिरधरन लाल, १६–मुरारी दास, १७–व्रज पति, १८–कल्यान, १९–ब्रह्म दास, २०–भगवान हित राम राय, २१–व्यास इत्यादि । उपर्युक्त भक्त कवियों की रचनाएँ इसमें संगृहीत हैं जिनका विषय साधारणतया राधा कृष्ण की गुण गरिमा का गान करना है जिसको नवधा भक्ति में मुख्य स्थान दिया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—अष्ट छाप की रचनाओं का बड़ा विस्तार है । समस्त व्रज मंडल में वे फैली हुई हैं । हिंदी का वह दिन बड़ा सौभाग्य का होगा जिस दिन अच्छे वैज्ञानिक ढंग से इनकी रचनाएँ प्रकाशित हो जाएँगी । यह विशाल काय ग्रंथ ऐसे अवसर पर बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा । जिन मुख्य भक्त कवियों के नाम इस संग्रह में हैं वे परिश्रम पूर्वक छाँट लिए गए हैं । अष्टछाप के अतिरिक्त और भी कई भक्त कवियों की रचनाएँ इसमें हैं, किन्तु विशेषतया उन्हीं की हैं । अतः उन्ही को रचयिता माना है ।

संख्या २२६ यफ. पदों का वृहत् चयन, रचयिता—अष्ट सखा आदि, कागज—मूँजी, पत्र—३८७, आकार—४ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गोपाल गोस्वामी जी, स्थान व डा०—नन्द ग्राम, जि०—मथुरा ।

आदि—॥ श्री राधा गोविन्दो जयति ॥ अथ बसन्त लिखते ॥ राग बसन्त । ललित लवंग लता परिसीलन, कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करं विनकोकिल । कूजित कुञ्ज कुटीरे । विहरति हरि हरि सरस बसन्ते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि । विरही जनस्य दुरन्ते ॥

मध्य—राग कान्हरौ नन्दरानी तिहारौ वर सुबस बसौ ॥ सुनि हो रानी तिहारे ढोटा कौ, न्हाते हुँ जिनि वारषि सौ ॥ कोऊ करत बेद मंगल धुनि, कोऊ गावौ कोऊ हंसौ ॥ निरषि निरषि मुष कमल नैन कौ, आनन्द प्रेम हियो हुलसौ ॥ यहै असीष देत गोपी जन, जीवो कोटि बरीषौ ॥ परमा नन्द नंद घर आनन्द, पुत्र जनम भयोरि जगत जसौ ॥

अंत—भाग सुहाग सबै बढ्यौ खेलत फागु विनोद । राधा माधौ बैठाये श्री व्रज राणी की गोद ॥ भूषण देति जसोमति पहुँची पाणि पिछेल ॥ टीको टीका टिकावली हीराहार हमेल ॥ श्री विट्ठल पद पद्म की पावन रेणु प्रताप ॥ छीत स्वामी गिरिधर मिले मेटी तन की ताप ॥ इति श्री पुस्तक समाप्त ॥

विषय—(१) बसन्त के पद, १–३१ तक । गौरी राग धमार, ३०–७२ तक । होरी के पद, ७३–१७७ । फूल डोल आदि उत्सव सम्बन्धी पद हिंडोरा, १७८–२११ । पवित्रा, रक्षा बन्धन, २१२–२३२ । बधाई नन्द के लाल की, २३३–२५६ । नन्द वंसावली, २५७–२६४ । नंदोत्सव, राधिका जी की बधाई, २६५–२७५ । भाँड का नन्द के घर आगमन, २७६–२८६ । वृषभान राय की वंसावली, २८७–२८९ । मंगल गान, २९०–२९८ । दाऊ जी जन्म बधाई, श्री रामचन्द्र जी की बधाई, श्री नरसिंह जी की बधाई, श्री वावन जू की बधाई, फूल रचना, चन्दन की अक्षय तृतिया, जल विहार, २९९–३१७ । निवारन उत्सव, तलग्रह क्रीड़ा, रथयात्रा, ३१८–३२० । मलार गोचारण, दीपमालिका, दीप दान, ३२१–३३४ । गोवर्द्धन पूजा, गोवर्द्धन लीला, रूप चतुर्दशी, दशहरा, रास के पद, रास पंचाध्यायी, ३३५–३७८ । राधा कृष्ण के छन्द, ३७९–३८७ ।

विशेष ज्ञातव्य—यह वृहद् संग्रह ग्रंथ खोज में अत्यन्त महत्वपूर्ण है । एक ही जगह इतने पदों का संग्रह बहुत ही कम मिलता है । इसमें कवियों, सन्त महात्माओं तथा भक्तों की रचनाओं का समावेश है· जिनमें कई एक ऐसे हैं जिनके विषय में जानना तो दूर रहा शायद उनका नाम भी कहीं नहीं आया । उनके कुछ नामों की तालिका नीचे दी जाती है । पुस्तक मालिक ने इतना समय नहीं दिया कि ग्रंथ को आद्योपान्त पढ़कर उनके नाम पूरी तरह छाँटे जा सकें । १-अष्ट छाप के समस्त कवि, २–तुलसीदास, ३–ब्रजजन, ४–रसखान, ५-आनन्द घन, ६–किशोरीदास, ७–माधवदास, ८–श्री हरिदास, ९–हितहरिवंश, १०–राघोदास, ११–नागरीदास, १२–श्यामा श्याम, १३–रामदास, १४–कल्यानदास, १५–कमल नयन, १६–धोंधें जी, १७–बिहारिनदास, १८–अटलदास, १९–गोविन्द प्रभू, २०–रामराय प्रभू, २१–रघुनन्दन, २२–लच्छीराम, २३–हरनारायण, २४–व्यासदास, २५–माधुरी, २६–मीरा, २७-जगन्नाथ, २८–रामस्वरूप २९–ध्रुवदास, ३०–कटहरियाजी ।

संख्या २२६ जी. पद संग्रह (अनु०), रचयिता—अष्ट छाप आदि (स्थान–व्रज मंडल), कागज—मूँजी, पत्र—४८, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री तुलसीराम जी गुँसाई, नन्दलाला का मन्दिर, स्थान व डा०-नन्द ग्राम, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री गोकुलेशो जयति ॥ अथ हिंडोरा लिख्यते ॥ राग धनाश्री ॥ हिंडोरना हो रोप्यो नन्द अवास ॥ हिंडोरना हो मणि मय भूमि सुवास ॥ हिंडोरना हो विश्वकर्मा सूत्रधार ॥ हिंडोरना हो कंचन खंम्भ सुडार ॥ छन्द ॥ कंचन खम्भ सुढार डाँडी रसाल भँवरा फवि रंगे ॥ हीरा फिरोजा कनक माण मय ज्योति चहुँ दिसि जगमगे ॥ चित्र फटिक प्रकाश चहुँ दिशि कहा कहु निरमोलना ॥ कहे कृष्ण दास विलास निसि दिन नन्द भवन हिंडोरना ॥

अंत—राग सारंग ॥ पवित्रता पहिरे पत्री विट्ठलनाथ । श्री गिरधर आदि सब बालक बैठे सोभित साथ । अपने जन पवित्र किए सब दिए पवित्रा हाथ । गोविन्द प्रभु करुणा रस वरसत, धरत कमल कर माथ ।

विषय—हिंडोरा, होली, फाग, रामनवमी, दशहरा आदि त्योहारों के संबंध के पद । इनमें अष्ट छाप-कवियों के अतिरिक्त निम्नलिखित कवियों के नाम भी आए हैं:—गोविन्द प्रभू,

धर्मदास, कल्याण, गदाधर, जगन्नाथ कवि राय, रामदास, रसिक प्रीतम, रघुबीर, जुगल किशोर, व्यास दास, दामोदर और गोकुलनाथ।

संख्या २२६ यच. रास के पद, रचयिता—अष्ट छाप (स्थान-ब्रज भूमि), कागज—मूँजी, पत्र—९३, आकार—९ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान – पन्नालाल कायस्थ, स्थान—मड़वई, डा०—सादाबाद, जि०—मथुरा।

आदि—मालव ॥ नाचत रास में गोपाल मुदित गोप नारी। तरु तमाल स्याम लाल कनक बेलि प्यारी ॥ चलि नितम्ब नूपुर कटि लोल वंक ग्रीवा ॥ राग तान मान सहित बैन गान सीवा ॥ श्रम जल कन भरत सुरभ रंग रैनि सोहे ॥ कृष्णदास प्रभु गिरधर ब्रज जन मन मोहे ॥

अंत—सारंग ॥ नागरि नागर सुं मिलि गावत, रास में सारंग राग जमों। तान बंधान तीन मुरछना, देखत नई भव काम कमों ॥ अद्भुत और कहाँ लौं वरनो, मोहन मूरत बद नरमों। सुनि कृष्ण दास थकित नव उडपति, गिरधर पतिकें दरप दमो ॥

विषय—अष्ट छाप के भक्त कवियों ने राधा कृष्ण की रास लीला के सम्बन्ध में जो पद बनाए हैं वही प्रायः संगृहीत हैं।

संख्या २२६ आई. रास के पद, रचयिता—अष्ट सखा (स्थान-ब्रज), कागज—बाँसी, पत्र—१७, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गोपाल जी गोस्वामी, स्थान व डा०—नन्द ग्राम, जि०—मथुरा।

आदि—श्री गोपी जन वल्लभाय नमः ॥ राग मालव ॥ मदन गोपाल रास मंडल में, मालव राग रस भरयो गावैं। अब घर तांन बंधान ससुर, मधुर मधुर मुरली बजावैं। नृत्यत सुलय लेत नौ तन गति, बहु विधि हस्तक भेद दिखावै। उघटत शब्द तत्त थेई तत्त थेई, जुवती वृन्दावन मोद बढ़ावै ॥

अंत—राग कान्हरो ॥ ललना लाल नटत गावत कल, मुरली प्यारी मिलि शब्द बलि उघटत। जमुना पुलिन मुकलित मल्लिका, मधुप मत्त दुरे फटकत। त्रिगुण पवन चले विपिन सुवासित, विरह जकन्द कटत, रास रंग नव रंग रंगीलो, रति सुवासित विरह जकन्द कटत। × × ×

विषय—भगवान कृष्ण की रास लीला तथा सखियों के साथ उनके अन्य खेलों का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—१–परमानन्द, २–कृष्णदास, ३–कुम्भनदास, ४-चतुर्भजदास, ५–हित हरिवंस, ६–सूरदास के पद संगृहीत हैं।

संख्या—२२६ जे. पद, रचयिता—वैष्णव कवि, कागज—मूँजी। पत्र—५४, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२४४, खंडित,

रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--श्री भूदेव प्रसाद स्वर्णकार, स्थान--परसोत्ती गढ़ी, डा०--सुरीर, जि०--मथुरा।

आदि--सोरठ लागी रट राधा राधा नाम ।। नवल निकुंज कुञ्ज बन टेरत, नन्द डिबोना स्याम ।। कबहूँक षोरि सांकरी मोहन, डोलत बोलत भाम ।। आनन्द घन वरसामन भामन। धनि वरसानौ गाम ।।

अंत--रागदेस ।। याली मेरे जीयकी पीया सुनिके गए ।। आषै तो हमसौ लगाई इसक बाली दे गए ।। लै गये मेरा करार बे करारी है गई ।। देह तौ विदेह भई प्राण बाकी रहि ग ।। सूर नर चोर माधो आमने की कहि गए ।।

विषय--१--राम सुखदास २--तुलसीदास ३--चरणदास ४--सुखदेव ५--रामगुपाल ६--सूरदास ७--अग्रदास ८--विहारीदास ९--दास अनन्द १०--आनन्द घन ११--वृन्दावनहित १२--कुँमर किशोरी लाल १३--दलपतिदास १४--नरहरिदास १५--कमलनैन १६--नागरीदास १७--दयासखी १८--व्यास स्वामिनी १९--परमानन्द २०--चन्दसखी, २१--श्रीभट, २२--कुम्भनदास। प्रायः २२ से अधिक भक्त कवियों के पदों का संग्रह है। अधिकांशतः सभी पद राधाकृष्ण के गुणानुवाद से भरे पड़े हैं।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ में जिन रचयिताओं के पद आये हैं उनमें से कुछ को छोड़कर प्रायः सभी प्रसिद्ध हैं। जो खोज में नवीन हैं वे इस प्रकार हैं:--१-राम सुखदास, २-रामगुपाल, ३-दलपतिदास, ४-दयासखी, ५-चन्द्रसखी इनके कई पद ग्रन्थ में आए हैं, पर सिवाय नाम के और इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं हो सका। कुछ पद इसमें ऐसे भी हैं जो जाली हैं। ग्रंथ के अन्त का पद यथा, नाम तो दे दिया गया है कि यह सूर का है, पर पढ़ने से यह सिद्ध नहीं होता कि यह उनका है। सूरदास 'करार' बेकरारी' 'इसकवाली' आदि शब्दों का प्रयोग कभी नहीं कर सकते थे। फिर भी किसी ने स्वतः पद बनाकर अन्त में सूर का नाम देकर इन्हें चला दिया। ऐसा गेहुँओं में कोदो बहुत मिलाया गया है जिसका पता तुरत चल जाता है।

संख्या--२२६ के. पद संग्रह (अनु०), रचयिता--कृष्णदास आदि, कागज--बाँसी, पत्र--२२२, आकार--१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--२१८२, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० बसन्त लाल, स्थान व डा०--नोहझील, मथुरा।

आदि--श्रीगणेशाय नमः रंग हिंडोरना माई झूलत गोकुलचन्द। द्वै पंभ कंचन के मनोहर रतन जटित सुरंग ।। जाकी चारि डांडी सरल सुन्दर निरखि लजित अनंग ।। पटुली पिरोजा लाल लटकि झूमिका वहुरंग ।। मरुये सुमानि कचुन्नी लागे विच बीच ही रातरंग ।। जहाँ कल्पद्रुम तरछाँह सीतल त्रिविध मन्द समीर ।। जहाँ लता लटकति भार कुसुम ऊपर सि जमुना नीर ।। हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलिकीर ।।

अंत--बनी वृषभान नन्दनी आजु। भूषन वसन विविध पहरें, तनपिय मोहिनी साजु। हाव भाव लावन्य भृकुटी लट हरति जुवति जन याजु ।। ताल भेद अब घर सुर

सूचत नुपुर किंकिन बाजु । नव निकुंज अभिराम स्याम संग नीकौ बन्यो समाज ॥ जै श्री हित हरिवंस विलास राज जुत जोरी अविचल राज ॥

विषय--१-कृष्णदास, २-वृन्दावन हित, ३-स्याम स्याम, ४-आनन्दघन, ५-नागरिया, ६-हरिदास, ७-सूरदास, ८-कुम्भनदास, ९-विट्ठल, १०-हित हरिवंश, ११-रूपलाल, १२-लछिमनदास १३-हित हरिलाल, १४-नन्ददास, १५-जन गोविन्द १६-मुरारीदास, १७-चतुर्भजदास, १८-परमानन्द। उक्त पद रचयिताओं के पद इस संग्रह में आये हैं। प्रायः सभी राधाकृष्ण की भिन्न २ भावमयी भक्ति से भरे हैं।

संख्या—२२६ एल, पद संग्रह, रचयिता—वैष्णव कवि, कागज—बाँसी, पत्र—१३८, आकार ८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८४, खंडित, रूप—प्राचीन; पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—शिवचरणलाल वैश्य, स्थान व डा०—शेरगढ़, जि०—मथुरा।

आदि—राग सोहनी होरी रंगभरि डारौ जिनि पिचकारी ॥ जो षेले तो सूधे षेलो, नतरि देऊँगी गारी ॥ सास बुरी घर ननद बुरी है, हँसि हँसि देगी गारी ॥ रसिक वोह अभैराम स्याम, मेरी भीज गई है सारी ॥

अन्त—रास समे हारि मचाइ नन्द नन्दन ब्रज मोहन। वाजत विना मृदंग रवा डफ भर पिचकारी ले दौरी ॥ छन्द प्रवन्ध और विविध गत मेले हो खेलत करै झकझोरी ॥ आनन्द घन रसवादर उमड़े घूँघट में सुख मोरी ॥ × × ×

विषय—१-होरी के पद। २-धमार और रासलीला के पद। ३-वर्षोत्सव आदि के पद।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में अष्ट सखाओं के अतिरिक्त अभैराम तथा आनन्दघन के पद भी संगृहीत हैं। इसमें अभैराम के पद तो बहुत थोड़े हैं, पर अन्य पद-रचयिताओं के बहुत हैं। संग्रह अच्छा प्रतीत होता है। संक्षिप्त विवरण में कुलपति मिश्र की आगे की ६वीं पीढ़ी में कोई अभैराम बतलाए गए हैं जो आगरा निवासी थे, पर प्रस्तुत अभैराम वही हैं या कोई अन्य प्रमाणाभाव में ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता।

संख्या २२७ ए. गुननिरंजन नामौ, रचयिता—बाबा वाजिद, कागज--मूँजी, पत्र-१२, आकार--८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री दाताराम महन्थ, स्थान मेवली, डा०--जगनेर, जि०--आगरा।

आदि—॥ अथ गुन निरंजन नामौ लिख्यते ॥ दोहा ॥ अंग बभूति चढ़ाइकै, जटा बढ़ाई सीस ॥ निसि बासर मारग बहे, लहे न ब्रह्मा ईस ॥ छन्द तौ ब्रह्मा ईस, जटा करि सीस ॥ लगाइ विभूति, फिरौं इह सूति ॥ लहे नहिं देव, निरंजन भेव ॥ महासुर मुनि, गए सिर धुनि ॥ धरै नहीं धीर, एक बार पीर ॥

मध्य—षलक मुलक सों तिनका तोर ॥ पाहन भरि के नाव न बोर ॥ पास दास के कर तूँ डेरा ॥ आवै अम्ब कि जाय पबेरा ॥ भगता स्यौं मत भाजे दूरि ॥ कलि में यहै सजीवनि मूरि ॥ साधू सेनी रहु तूँ नेरा ॥ आवै अम्ब कि जाय पबेरा ॥

अंत—दरसन देह किन दीन दयाला ॥ बाजिद बिरहनि है बेहाला ॥ अड़ल नैन श्रवही नीर धरि चित न धरै ॥ बिसरयो सकल शरीर सिंगारहिं को करै ॥ "बाजिद" बिस्तार कहां बरनिए ॥ हरि हाँ लगी मरम की चोट तबहीं पहिचानिए ॥ इति सम्पूर्ण ॥

विषय—इसमें दादू के अनुयायी बाबा बाजिद की तीन छोटी छोटी पुस्तिकाएँ सम्मिलित हैं:—१–निरंजन गुन नामा। २–गुन पबेरा। गुन बिरह नामा। विषय इस प्रकार है:— १–निर्गुण पुरुष की महिमा, तथा उसके स्वरूप का कथन। २–संसार के आवा गमन रूपी नाटक की खिल्लियाँ उड़ाते हुए भक्ति मार्ग सर्वोत्तम एवं ग्रहणीय बतलाया है। ३–आत्मा का परमात्मा से वियोग होकर क्या क्या कारनामें होते हैं, इसका वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना खोज में नवीन प्रतीत होती है। इसमें तीन ग्रंथ हैं। अतः एक ही में विवरण लेकर तीनों का आदि-मध्य अंत दे दिया गया है। बाजिद के अन्य ग्रंथ पूर्व विवरणिकाओं में आ चुके हैं।

संख्या २२७ बी. नैन नामौ, रचयिता—बाजिद, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दाताराम महन्त, कबीर-गद्दी, स्थान—मेवली, डा०—जगनेर, जि०—आगरा।

आदि—॥ सोरठा ॥ अथ नैन नामौ लिख्यते ॥ नैना मोटी षोड़ि, अपनी गिनैं न और की, लोक लाज सब तोड़ि, तरुणी को देखहीं ॥ इन नैनों सौं नाथ, मनुवा कबहुँ न मेलिए ॥ साह चोर के साथ, सूरा दीने सुन भीया (?) कांहे कौं बेकाम, भला बुरा कै संग रहै ॥ साइर बाँध्यो राम, रावण सीता लै गयो ॥

अंत—दोहा नारि परायी देषता, नैना किए न हाथ। रावन के दस सिर गए, इन नैनों के साथ ॥ नैन व्याध असाध है, बूटी जरी न बैद ॥ जो जग में चाहौ जियो, तो अँखिया कर कैद ॥ × × × हरि दरसन को लोचहीं, जगमग पग नहिं देहिं ॥ ते लोचन "बाजिद" अहो, जनम सुफल करि लेहिं ॥ सोरठा नैननि आवत नीर, बिन देषे दीवान को ॥ पावन करहिं सरीर, ते लोचन बाजिद अहो ॥

विषय—आखों के ऊपर नीति के दोहे बनाए हुए हैं। उनमें अधिकाशंतः आध्यात्मिकता की झलक है।

संख्या २२७ सी. गुन राजा कृत, रचयिता—बाजिद, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मदन गोपाल, स्थान—विद्यापुर, डा०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—॥ अथ गुन राजा कृत लिषते ॥ दोहा एक सुष भुगते सुरग के, इक दुष नरकन माहि ॥ जो जैसे बीरज बवै, सो तैसे फल खाहि ॥ कथा प्रश्न अब कहत हैं, राजा बढ़ई साह ॥ आगम पूरब जनम को, कियो कौन निर्बाह ॥ चौपाई राजा एक बड़ो है लोई ॥ ताकी सरभरि को नहिं कोई ॥

अंत—चौपाई तौ या दुनिया उसर की षेती ॥ जब लग जीवे तब लग चेती ॥ आष्यों देषें कानों सुनै ॥ जैसो बोवे तैसो लुनै ॥ सोरठा फेर सार नहिं कोइ, बादर गहि दीवान की, कियो आपणों लोइ, भरि पावै बाजिद हौ ॥ माथे धरिए मौर, पनहाँ पाइन पहरिये ॥ जैसी तैसी ठौर, देत भया दीवान जू ॥ गुन राजा कृतः

विषय—प्रस्तुत पुस्तिका में एक राजा को अपने पूर्व जन्म का हाल जानने की उत्कंठा हुई। पीछे उसे ज्ञात हुआ कि मेरे उस जन्म के सगे भाई मेरे ही राज्य में साह, बढ़ई और कोढ़ी होकर जन्में हैं। राजा ने उनसे भेंट की और उनके कर्मों के फल से अत्यन्त दुःखी हुआ। अन्त में वैराग्य ले लिया।

संख्या—२२८ बीस ग्रन्थ टीका, मूल रचयिता—वल्लभाचार्य, कागज—मूँजी, पत्र—२३०, आकार—१४ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्) ११२७७, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ आचार्य श्रीमहाप्रभून के श्रीगुसाई जी के बीस ग्रन्थ तिनकी टीका लिख्यते ॥ प्रथम श्रीसर्वोत्तम ॥ श्री आचार्य जी महाप्रभून के अष्टोतर सत नाम जाके भीतर है ॥ ऐसो जो सर्वोत्तम ग्रन्थ ताको श्रीगुसाईं जी आप निरूपण करत हैं ॥ ताकी टीका श्री गोकुलनाथजी आप निरुपण करत हैं। नत्वा पित्र पदांभोज, सर्वाभीष्ट प्रदायकं। तत्प्रोक्ता चार्य्य नामानि, विविरिष्ये यथामती ॥ याको अर्थ अब श्रीगोकुलनाथ जी कहत हैं। जो हम श्रीगुसाईं जी के चरणारविन्द को नमस्कार कहते हैं। ते कैसे हैं चरणारविन्द। भक्तन की यह लोक सम्बन्धी जो वस्तु स्त्री पुत्र धनादिक और परलोक सम्बन्धी तिन सबन के देन वारे॥

अंत—कुश्रष्टि रत्नवाका चिउत्पयैत् सर्वे भ्रमः ॥ सास्त्र विषे मोह के दूर करिबे के निमत साधनन कौं उपदेस देखत हैं ॥ ताते साधनोतर से ॥ गुणमूल जो माया सो तो दूरि होय। जो यह जो कदाचित् कहें सोई एक विरुद्ध युक्ते मोकु सृष्टि सो बाधक है जो विकल्प करिके उत्पन्न होय। सो भ्रम काहेते दैवी कह्यो ॥ सो गुण मया मम माया दुरत्यया मामेव प्रपद्यंते। माया मेता तम्यते। यह गीता वाक्य विषे माया दूरि करिबे के निमित्त श्री ठाकुर जी ने अपनी सरण ही साधन कह्यो है। और साधन करिके निषेष माया की निवर्तन होय ॥ सो ताते हमने श्री ठाकुर जी को अभिप्रेत जो है सोई कहत है। इति श्री हरिराइ जी कृत सेवा फल ताकी टीका ॥

विषय—१–मन्दाग्नि कुमार कृत सर्वोत्तम स्तोत्र का भाषानुवाद गोकुलनाथ द्वारा, पृ० १–२४ तक। २–विट्ठलेश्वर कृत वल्लभाष्टक का भाषानुवाद गोकुलनाथ जी का, २५–३१। ३–विट्ठलेश्वर कृत प्रेमामृत का भाषानुवाद हरिराइ जी कृत, ३२–५३। ४–संस्कृत में रघुनाथ कृत नाम रत्न स्त्रोत्र, भाषा कर्ता अज्ञात, ५४–६३। ५–देवकीनन्दन कृत बालबोध की टीका, ६४–८७। ६–वल्लभाचार्य विरचित सिद्धान्त मुक्तावली की टीका श्री गुसाईं जी कृत, ८८–९१। ७–वल्लभाचार्य रचित पुष्टिप्रवाह मर्यादा, टीका श्रीहरिराइजी कृत, ९३–१२९। ८–वल्लभ रचित सिद्धान्त रहस्य टीकाकार गोकुलनाथ, १३०–१३५।

९-नवरत्न वल्लभाचार्य कृत, १३६-१४० । १०-वल्लभकृत अन्तःकरण प्रबोध, अनुवादक श्री विट्ठलेश्वर जी । ११-विवेक धैर्यश्रिय वल्लभाचार्य्य रचित, १४१-१४६ । १२-वल्लभाचार्य्य कृत कृष्णाश्रय का अनुवाद श्री गोकुलनाथ जी कृत, १४७-१६२ । १३-चतुश्लोकी मूल वल्लभाचार्य कृत अनुवादक श्री गुसाईं जी कृत, १६३-१७२ । १४-भक्ति वर्द्धिनी वल्लभाचार्य कृत अनुवादक श्रीगोसाईं जी, १७३-१७५ । १५-जल भेद वल्लभाचार्य कृत, सन्यास निर्णय, टीकाकार हरिराइ जी, १८३-२०७ । १८-निरोध लक्षण वल्लभ कृत टीका हरिराइजी कृत, सेवा फल, भाषाकर्ता हरिरायजी, २०८-२३० ।

संख्या २२९. सुगंध दसमी वृत कथा, रचयिता—विश्वभूषण, स्थान-शहर (गहेली), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८१/२ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सुखचन्द जैन साधु, स्थान—नहरौली, डा०—चन्द्रपुर, जि०—आगरा।

आदि—अथ सुगंध दसमी कथा लिख्यते ॥ चौपाई ॥ वर्द्धमान वंदौं सुखदाइ। गुरु गौत्तम वंदौं चितलाय ॥ सुगंध दसमी वृत सुनि कथा। वर्द्धमान परकासी यथा ॥ पूर्व देस राज गृह गांव । श्रेनिक राजा करै अभिराम ॥ १ ॥ नाम चेलना ग्रह पटरानि । चंद्र रोहिणी रूप समान ॥ नृप सिंहासन वैठो कदा। वनमाली फल ल्यायौ तदा ॥ २ ॥ कर प्रनाम वनमाली कहै । चित प्रमोद सु ठास्त्रे रहै ॥ ३ ॥ वर्द्धमान आए वैभार । जिन जीते विषया अरिमार ॥ इतनी सुनि नृपति उठि चले । दलवल सेना सव जन मिले ॥४॥ समो सरन वंदौं वर्द्धमान। पूजा भक्ति करौं वहुगान ॥ नर कोठा नृप वैठो जाय। हाथ जोरि पूछै सिरनाइ ॥ ५ ॥

अंत—सुनौ धरम श्रवननि संयोग। तजो राज परिग्रह संयोग । घाति घातिया केवल भयो । सो मुनि अजर अमर पद लयौ ॥ ३५ ॥ वृत सुगंध दसमी विख्यात । अति सुगंध सौरभता गात ॥ यह वृत नारि पुरिष जो करै । सो दुख संकट कवहूँ न परै ॥३६॥ सहर गहेली उत्तिम वास । जैन धर्म को करै सकास ॥ सव श्रावक वृत संयम धरैं । दान पूजा सौं पातिक हरैं ॥ ३७ ॥ हेमराज कवियन यौं कही । विस्व भूपन परकासी सही । मन वच काय सुनैं जो कोय । सो नर स्वर्ग अमर पति होय ॥ ३८ ॥ इति सुगंध दसमी वृत कथा संपूरनं ॥

विषय—सुगंध दशमी वृत की कथा का वर्णन।

संख्या २३०. ग्रन्थ सुभाषित, रचयिता—वीतराग देव, कागज—मूँजी, पत्र—७९, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि० १७९४ = सन् १७४७ ई०, लिपिकाल—वि० १८४६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर, स्थान—रायभा, डा०—किरावली, जि०—आगरा।

आदि—॥ श्री वीत रागाय नमः ॥ अथ सुभाषित ग्रन्थ लिख्यते ॥ जिना धीशं नमस्कृत्यं, संसार बुधि तारकं ॥ स्वान्य स्यहित मुघस्य, वक्ष्ये सद्भारि वितावली ॥ अथ

भाषा पीठिका लिष्यते || चौपाई श्री सरवज्ञ नमो चितलाय ॥ गुरु सुमरहुँ निरग्रन्थ सुभाय जिन बानी ध्याऊँ तिरकाल ॥ सदा सहायी भव गण पाल ॥

अंत—कवित्त "वीतराग देव जू" कह्यो सुभाषित गाय, ग्रन्थ रच्यो ज्ञान-धारक गणी सुभाय जी || इन्द्र धनेन्द्र चकवर्ती आदि सेवतु हैं, तीन लोक गेह कौ सुदीप कहाय जी || साधु पुरषौं के बैन अमृत सम मिष्ट ऐंन, धर्म्म बीज पावन सुमोक्ष फलदाय जी || सर्व जन हितकार जामें सुष है अपार, ऐसो ग्यान तीरथ अमोल चित लाय जी || दोहा || सतरा सै चौराणवे, श्रावण मास मझार || सुदि चौदसि पूरण भई, भाषा अदि सुकुमार ॥ संवत् १८४६ पौष सुदी १५ सुक्ल ॥

विषय—१-जिन देव की स्तुति । २- जिन देव की महिमा | ३-पूजा विधि । ४-भक्तों की गाथाएँ । ५-तप द्वारा मोक्ष की प्राप्ति |

संख्या—२३१ नित्य के पद, रचयिता—ब्रजाधीश आदि, कागज—देशी, पत्र—१०२, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि०—१८५२ = १७९५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० परशुराम, स्थान—चिमला, डा०—राया, जि० मथुरा ।

आदि—राग भैरव ॥ ताल चर्चरी जागे लाल लाडिली प्रभात कुंज गेह की ॥ लूटे रंग कोटि कोक जामिनी अछेह की || पीत बसन नील सारी लटपटे रति काम केलि प्रफुलित मन अरसी कुसुम चम्पक रंग देह की ॥ सोहे मुख आरसाइ गमीन मत्त सुधा छके, नाचत जुग कंज चढ़े सुषमानन नेह की ॥ घूघरारी अलक मधुप अलट पलट प्रभूषन "ब्रजाधीश" प्रभू सखी गाय सुख मेह की ॥

अंत—राग मलार ॥ दुताल ॥ सखी मोहे घन बरसत कित लाइ ॥ चलन सवत देषत बन बन सब, पंच रंग सारी बनाइ ॥ बिहरो गोबर्द्धन गिरि कुंजन केकिन कूक मचाइ ॥ ब्रजाधीश प्रभू प्यारी के वचन सुनि, आए निपट सुखदाई || × × ×

विषय—१-चतुर्भुजदास, २-कुम्भनदास, ३-सूरदास, ४-गोविन्द प्रभू, ५-कल्याण, ६-रसिक प्रीतम, ७-कल्याण, ८-ब्रजाधीश, ९-नागरीदास, १०-रामदास, ११-विष्णुदास, १२-हित हरिवंश आदि भक्त कवियों के राधाकृष्ण विषयक पदों का संग्रह है ।

संख्या २३२ ए. भजन उपदेश वेली, रचयिता—वृन्दावन हित (स्थान—ब्रज-भूमि), कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधा गोविन्द चन्द्र जी का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—भजन उपदेश वेली लिष्यते || कुण्डलिया ॥ श्री हरिवंस सरोज पद, कृपा रावरी पाइ । ब्यौहारिन जो वारता कहुँ परमारथ लाइ ॥ परमारथहिं लगाइ आपनो मन समझाऊँ । गुरु सन्तन मुष सुनी रीति सोई कछु गाऊँ ॥ जग तप षाने प्रगट जे अन्तर अर्थ विचार । वृन्दावन हित अब कहौ मन बुधि कौ विस्तार ॥

अंत—सेत वसन में दाग कों लागत ही लषि जाइ। लागत ही लषि जाइ जो रु-मन उज्जल होई॥ तन कुपाप संग्रहै विमल उर भासै सोई। कारी कामरि परै दरकि कजरौटी सारी॥ वाकौं उपमा अधिक पाय जिहि मति संचारी। वृन्दाबन हित हरि भजै सो सदा अदूष रहाइ। सेत वसन मैं दाग कों लागत हीं लषि जाइ॥ दोहा गूढ़ पषानै बरनि कै, कृष्ण भजन कह्यो सार। संत सुदिष्ठ निहारि कै, लीजो अर्थ विचार॥

विषय—भक्ति, हरि भजन, माया का त्याग, संसार की नश्वरता आदि का उपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—वृन्दावन हित की योग्यता मथुरा जिले में उनके पाए हुए कई ग्रन्थों से निश्चित हो चुकी है। ये एक प्रतिभाशाली कवि एवं भक्त हो गए हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८१० है। रचनाकाल—संवत् वर्ष अठार सै, दस उपर गत जानि। अगहन बदि दुतिया सुदिन, वेली सकल बषानि॥ समस्त ग्रंथ कुण्डलियों में है। मुहावरों का प्रयोग कविता में खुलकर किया गया है जिससे वह और अधिक प्रभावोत्पादक हो गई है। ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

संख्या २३२ बी. दीक्षामंगल, रचयिता—वृन्दाबनदास (स्थान—वृन्दाबन), कागज—मूँजी, पत्र—९, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६१, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२५ = सन् १७६८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री० गोस्वामी कुञ्जीलाल जी, स्थान व डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—श्री लाड़िली जी सहाय नमः॥ दोहा मिलि चाहे गोविन्द कौं, सो गुरु सरणे जाय। बिना गुरु कुछ न मिले, वेदो कहत बजाय॥ सगरोई जानै हरि हीन, गम जु निरनौ कीना। याहि कुतर्क जु गयकैं, षंडे मति मति दीना।

अंत—दीक्षा मंगल जो सदा, गावै सुनै सुजान। वृन्दाबन प्रभु भक्ति कौ, होइ भली विधि ज्ञान। इति श्री स्वामी वृन्दाबन विरचितायां दिक्ष्या मंगल संपूर्ण॥ लिष्यते वंशीदास पठनार्थ गंगा दास जी संवत् १८२५ चैत्र सुदी शनिवार पड़वा॥

विषय—गुरु दीक्षा लेने का माहात्म्य।

संख्या—२३२ सी. होरी धमारि (अनु०), रचयिता—वृन्दावन हित, कागज—मूँजी, पत्र—४६, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प्रेम बिहारी का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—राग गौरी प्रथम जथा मति प्रनऊँ श्री वृन्दाबन अति रम्य। श्री राधिका कृपा बिनु सबके मननि अगम्य। वर जमुना जल सींचन दिन ही सरद बसन्त। विविध भाँति सुमनस के सौरभ अलि कुल मन्त। अरुन नूत पल्लव पर कूजत कोकिल कीर। नूतनि करत सषी कुल अति आनन्द अधीर। वह तपबन रुचि दाइक सीतल मन्द सुगन्ध। अरुन नील सित मुकलित जहाँ जहाँ पूषन बन्ध।

अंत--राधा लाल रुप धाराधार उँमगि उँमगि नियरे भये। भजिए नेह महा ऊर बाढ्यो, हुलसि प्रेम पावस छये। सषी अभिलाष भरे सरस हिता, छवि की परति उलै उहै। वृन्दाबन हित रुप प्रेम निधि, नेम बहाई में डहैं।

विषय--वृज में राधा कृष्ण की होरी।

विशेष ज्ञातव्य—वृन्दावन के अतिरिक्त निम्नलिखित भक्तों के पद भी दिए गए है:--१-कृष्णदास, २-कुञ्जलाल, ३-कमलनैन, ४-अचलदास, ५-श्रीहरिदास, ६-राघवदास, ७-किशोरीलाल, ८-रूपलाल, ९-हित हरिलाल।

संख्या--२३२ डी. पद, रचयिता--वृन्दावन हित, कागज--मूँजी, पत्र--३०, आकार—९ X ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--७२०, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—भूदेव प्रसाद स्वर्णकार, स्थान—परसोत्ती गढ़ी, डा० सुरीर, जि०—मथुरा।

आदि—वरीयां जाँति है टहली॥ सदा हरि हरि गाय रसना आलस क्यों गहली॥१॥ ओसकन ज्यौं देह विनसै जीवन अति सहली। लष चौरासी भ्रूट मैं सवको ऊवचैं हरि महली॥ २॥ हरि विनु षोइन स्वाँस जैसे गई सब पहली॥ वृन्दाबन हित कृष्ण भजि रहि प्रेम सुष दहली॥ ३॥

अंत—केदारौ—मन ल कौंन केवल वली गर्वियैं नहिं देषि काया छाँड़ि जैहे चली॥१॥ साषि वेद पुरान भाषैं आगिली पिछली॥ काल नै सुर असुर सैना छिनक मैं दलमली॥ २॥ अभय हरिभजि भये जे जन वनी तिनकी भली॥ यहै एक उपाय ओषधि और नाहिन गली॥ ३॥ कह्यौ श्री गुरु संत समतं भक्ति सब जुग फली॥ वृन्दावन हित रुप प्रभु भजि ज्यौं रहैं थिरुथली॥ ४॥

विषय—१-राधा कृष्ण की भक्ति। २-वृन्दावन माहात्म्य। ३-भक्ति रस। ४-भजन की महत्ता। ५-सांसारिक विषयों की निन्दा के पद आदि।

संख्या—२३२ ई. पद, रचयिता—वृन्दावन हित, स्थान—वृन्दावन, कागज—मूँजी, पत्र—८४, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमांण (अनुष्टुप्)—१८४४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—शाहजी का मन्दिर, वृन्दाबन, मथुरा।

आदि—अथ विशन पद लिख्यते। श्री गुरुभ्यो नमः। पद ऐसो राम नाम रस खानि॥ मूरख याको मर्म न जाने पीवैं चतुर सुजान॥ राम रस मीठो ऐसो मीठो नाहि और कोई॥ जानै जानै पीयौ चतभुंज जोई॥ अधिक रसीलो जाको छीलुका ऊमीठो छोई जी॥ राम रस खानि सो तो वृंह्मा जी नै पाय लीयो॥ वीना ऊव जाय नाच नदि जीभै गाय लीयौ॥ मार कंडे जी नै मन मानि के मानि लीयौ॥ सेस सहस फन साँनि॥

अंत—राग गोरी नमो नमो पद पावन संत॥ हरि तारे को ऊक अनुरागी भक्तन तारे जीव अनंत॥ १॥ करुणा कुशल जगत जुरहर तापर उपकारी अति गुनवंत॥ कृष्ण

रसायनि पै दुष मेटत कृपा सिन्धु को पावै अंत ॥ २ ॥ तन तरवर तै पाव जाति करि दरषन करत भक्ति उलहंत ॥ वृन्दावन हितरुप महामति हरि धन धनिक उदार महंत ॥ ३ ॥

विषय—१–मालिनी लीला। २–गंधिनी लीला। ३–जोगिन लीला। ४–मनिहारि लीला। ५–जोगीलीला। ६–बारहमासी। ७–गोविन्द अष्टक। ८–लाहाराम कृत नरसिंह हुण्डी।

संख्या २३२ यफ्. पद संग्रह (अनु०), रचयिता—वृन्दावन हित, कागज—मूँजी, पत्र—४८, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८६ वि० = १८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प्रेम बिहारी जी मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति श्री हरिवंश चन्द्रो जयति श्री हित रूप गुरुभ्यो नमः ॥ अथ श्री बसन्त उत्सव पद लिख्यते राग बसन्त ॥ मधु रितु वृन्दावन आनन्द न थोर। राजत नागरी नव कुशल किशोर। जूथि काजु गल रूप मंजरी रसाल। विथकित अलि मधु माधवी गुलाल। चंपक वकुल कुल विविध सरोज। केतुकी मेदनी मद मुदित मनोज। रोचिक रुचिर बहै त्रिविध समीर। मुकलित नूतन निंदति पिक कीर। पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज। किशलय समन रचित सुर पुंज।

अंत—कहाँ लगि भाजि बचोगे, हम गहि रंगनि भरेंगी। जिहिं मुष पढत फागु की महिमा, हम तिहिं माड़ि टरेंगी। होरी कौ फल नीके दें हें, प्यारी पट तुम अंग धरेंगी। वृन्दाबन हित रुप लड़ैते; सुनिये हाल करैंगी। × × ×

विषय—१–वृन्दाबन की शोभा। २–होरी की धूम। ३–वर्षा ऋतु। ४–राधा जी का श्रृंगार। ५–गोपियों का उत्पात।

संख्या २३२ जी. पद संग्रह, रचयिता—वृन्दावन हित, कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामदत्त रहसधारी, स्थान—होंतिया, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि—॥ राग भैरों ताल मूल ॥ धनि राधा रावलि औतरिबौ। कीरति कृषि सुधाकर सजनी, नीरस तिमिर जगत कौ हरिबौ। भादौं सुकल अष्टमी प्रगटी, गौर तेज रस मय वपु धरिबौ। अहा कहा मंगल व्रज दरसे, रसिकन हित जु कृपा अति ढरिबौ।

अंत—मलार रूप उर स्याम सुभग अंग अंग। सषी चात्रक पीवति सुष जीवित, दामिनि भामिनि संग। तैसी यै गरजति मुष विधु मुरली, बाढतु है रस रंग। वृन्दाबन हित रास रसिक दोउ, निर्तत सरस सुधंग। × × ×

विषय—राधा कृष्ण का रूप सौंदर्य वर्णन।

संख्या २३२ यच्. पदावली (अनु०), रचयिता—वृन्दावन हित, कागज—बाँसी, पत्र—५६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हरिदत्त जी, स्थान—चिक-सौली, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा।

आदि— × × × या होरी की महिमा मोहन, विधिना तुमहिं चिताई। रस विलसन की घात घनेरी, धनि गुरु जननि पढ़ाई। करि परिहास सषी भई न्यारी, रजनी सुष जु विहाई। वृन्दावन हित रूप परम कौ, निक रस लीला गाई।

अंत—राग परज कोऊ लैहो चूरी मोति हौ कहत बिसातिन आई। गली गली में कहति फिरति कोऊ, लालहिं लेऊ मुलाई। जबहिं गई वृषभान पौरि तब, ऊँची टेरि सुनाई। स्याम पोत अरु स्याम नगीना, इहि घर लाइकल्याई। × × ×

विषय—होरी, फाग, वसन्त, धमार, कृष्ण की अन्यान्य लीलाओं का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है।

संख्या २३२ आई. पदावली (अनु०), रचयिता—वृन्दाबन हित, कागज—मूँजी, पत्र—३१, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राधे कृष्ण, स्थान—जाव, डा०—कोसी, जि०—मथुरा।

आदि—श्री राधा कृष्णभ्यां नमः ॥ अति सोहनि साथिनि लाइ ॥ स्यामा जू सन मानिए, यह सषी पेलनि आइ। या उर गुन की कोथरीं, मैं परषी सब अंग। तुम गुन परषन जौहरी, यहि रापो अपने संग। फूल गोद ते लीजिए, हँसि के लागो अंक। दग चकोर आनन्द है लषि इक ठाढ़ि मयंक।

अंत—बिच बिच छुटत कटाछ, कुटिल सर उलटि हूल कोऊ लागी। मुरझि परयो जहाँ मैं नमही, भटरति भुज भरि लै भागी। पिय के अंग तियन के लोचन, लुब्धे हैं छबि की ओभा। मानौ हरि कमलनि करि पूजे, बनी अनूपम सोभा। या होरी की अद्भुत लीला सब काहू ब्रज प्यारी॥ परम प्रेम कों प्रगट उदौ जहाँ नन्द दास बलिहारी॥ मंगल मस्तु पठनार्थ स्वकीय। संम्वत् १९३१ मिती माघ कृष्णा २ शनिवार।

विषय—हरि कीर्तन और भक्ति के पद, पृ० १–११ तक। होरी खेलना, पृ० १२–१३ तक। महाराज वृषभान का वंश तथा बरसाने में राधिका जी का जन्म, पृ० १४–१६। गारी के पद, पृ० १७–१९। धमार के गीत, पृ० २०–२५। बधाई, २६–२८। बसन्त, पृ० २९–३०।

संख्या २३२ जे. पदावली भाषा (अनु०), रचयिता—वृन्दावत हित, कागज—मूँजी, पत्र—३२, आकार—७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० चुन्नीलाल जी, स्थान—जमो, डा०—सुरीर, जि०—मथुरा।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ पद लिष्यते ॥ राग पंचम ॥ करषा ॥ देषि रे देषि मानुष जनम पाइकै स्वामि को काज ते कही किबो विषै अरु उदर सबै जौनि भरनो भऱ्यो कोई कृत अभागे इहाँ लियो कृपा कौ मेर सम सिंधु करुना जु उर राधिका ताई ॥ १ ॥ प्रेम लक्षना भक्ति औषधी कृपा सन्त गुर माँहि मिलाई ॥ भयौ धनिक जुग जुग परि पूरन ऐसी हस्त क्रिया बनि आई ॥ भय नहिं व्यापै वली निबल की दास भए

की यह प्रभुताई ॥ गयो दरिद्र जनम जनमनि कौ तृष्णा दारुण भूष मिटाई ॥ छूटि गयो माँगन घर घर कौ एकै घर आसा जु पुजाई ॥ वाही बन्दौ वाही गाऊँ जाकी गुरु ने बाँह गहाई ॥

अंत—लाल लड़ैती रंग में रस सम्पति लीनी । अरस परस अनुराग सौं करि केलि, कहैं गये छिन में याके प्रेरे ॥ सुमिरि राधिका वल्लभ यह दुष, मिटे वचन सुनि मेरे ॥ वृन्दावन हित रुप कहत हरि, हरि भव सिंधु तरेरे ॥

विषय—राधा कृष्ण की भक्ति के कुछ पद प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत हैं ।

संख्या—२३२ के. राधा जन्मोत्सव के कवित्त-रचयिता—वृन्दावन हित, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार १२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—वि०—१८१२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधा गोविन्द चन्द का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—अथ राधा जनम उत्सव बंध कवित्त ॥ स्याम हेत स्वामी जनम श्री वृषभानि निकेत ॥ रसिकनि प्रिय लीला ललित, प्रगट करन ही हेत ॥ × × × कवित्त उत कियो मंगल भूर धाम व्रजराज जू कैं, इत वृषभान धाम मंगल महा भयौ । नीरसता चूरि चूरि करि कीनी वार ने जू, दरस्यो है छोष अैसो रूप रस नयौ नयौ ॥ अहिलादनि जन्म व्रजेश सुत कारन यह, सुनत रस ग्यान कौ हियो हर्यौ ह्वै गयौ ॥ वृन्दावन हित रूप रस तत्वनु भै, वपु सत्य भक्तनि जानि सबकौ रिझै दयौ ॥

अंत—छप्पै कीरति जू कै महल रुप चहल पहल है । बंटति पंजीरी प्रेम रचति मंगल जु टहल है । जयति सकल मंगलनि मूल जनमीं श्री राधा । नित प्रति बीथिन उमगत अति सुष सिन्धु अगाधा ॥ इतरावलि रानैं भवन नित उत नन्द ग्राम व्रजपति सदन । वृन्दाबन हित अवतरे छवि अवधि कुँवर सोहन मदन ॥ × × × इक सत बारह कवित ए, बेली जनम विचार ॥ प्रेम भक्ति उप जाइ हैं, श्रवन पठन निरधार ॥ × × × साठ कवित पहिले लिषे, राधा जन्म प्रकास । ठारह से बारह बरष, भादौ सु दि सुभ मास ॥

विषय—वृषभानु के गृह जब राधिका का जन्म हुआ उसी की धूमधाम का इसमें वर्णन है ।

संख्या—२३२ यल. रसिक अनन्य प्रचावली, रचयिता—वृन्दावनदास हित, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार-१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप्) १०४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राधा गोविन्द चन्द्र का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—अथ रसिक अनन्य प्रचावली लिष्यते ॥ छप्पै ॥ नमो प्रथम गुर पद कमल जे कहियत हित रूप जग ॥ श्री गुरु के परसाद सुजस सम्पति जग पावै ॥ श्री गुरु के परसाद जुक्त जोगी मन आवे ॥ श्री गुरु के परसाद ग्यान पद ग्यानी बूझे ॥ श्री गुरु के परसाद भक्ति निधि भक्तिहिं सूझे ॥ गुरु बिन जे अंधे भ्रमत क्यों हू लहत न सुगति मग ॥ नमो प्रथम गुरु पद कमल, जे कहियत हित रूप जग ॥

अंत--श्रीरूपलाल गुरुवर कृपा कुंज दास दम्पति जजै ॥ प्रथम उड़ीसा वास त्यागि वृन्दावन आयो। इष्ट साधु सेवा करि नर तन सकल बनायो ॥ बन्धु जो गोपी दास पाक सुप्रभु हित सु बनावै। रीझें प्रभु के दास भाग कछु कहत न आवै ॥ कथा कीरतन प्रीति नित, श्री हित हरिवंश विधि भंजे। श्री रूपलाल गुरुवर कृपा, कुंजदास दम्पति जजे॥

विषय--प्रस्तुत ग्रन्थ में भक्त माल की तरह सवा दो सौ रसिक भक्तों का वर्णन है। १--गुरु वन्दना, २--राधावल्लभ की प्रार्थना। भक्तों के नाम:--(१) श्री नारायण, २--श्री अच्युतेश्वर, ३--श्री विजय भट्ट, ४--मिश्र प्रभाकर, ५--जीवद सुत हिमकर, ६--तारा, ७--श्री हित हरिवंश, ८--उनके चारों पुत्र, ९-श्री नागर, १०--कृष्णदास, ११-सदानन्द, १२--गिरधर, १३--दामोदर, १४-कमल नैन सुख, १५-विहारी लाल, १६-श्रीकुंजलाल, १७-नन्द किशोर, १८--द्वन्द्वमनि, १९--सुखलाल, २०-श्रीहरिलाल, २१-प्रियालाल, २२-श्रीव्रजलाल, २३--मुकुन्दलाल, २४-रूपलाल, २५-उदयलाल, २६-सुन्दरलाल, २७-मोहनलाल, २८-कृष्णदेव, २९-रूपकिशोर, ३०-श्रीहरि लाल, ३१-छबीले दास, ३२-ध्रुवदास, ३३-हित दामोदर, ३४-नागरीदास, ३५-विठ्ठल मोहनदास, ३६-नवलदास, ३७-परमानन्द, ३८-हरिदास, ३९-रामदास, ४०-पूरनदास, ४१-रंगागोविन्ददास, ४२-मोहनदास, ४३श्रीप्राननाथ, ४४-द्वारकानाथ, ४५-वैष्णवदास, ४६-कन्हर स्वामी, ४७-झूठा स्वामी, ४८-गोविन्ददास, ४९-सोमनाथ, ५०-किशोरीदास, ५१-स्याम साह, ५२-स्वामी श्री हरि, ५३-मोहन माधुरी दास, ५४-श्रीरसिकदास, ५५-पुहकरदास, ५६-गोवर्द्धनदास, ५७-जयदेव, ५८-लखमी दास, ५९-रघुनाथ, ६०-लछमावती, ६१-जुगल किशोर, ६२-ऊधोदास, ६३-विरक्त जोरी दास, ६४-रसिकदास, ६५-कृष्णस्वामी, ६६-नित्यानन्द, ६७-नराइन दास, ६८-लाला मुरलीधर, ६९-चरनदास पुजारी, ७०-वल्लभदास, ७१-जुगलदास, ७२-स्वामी नन्दराम, ७३-श्रीहरिजी मल्ल, ७४-केवलराम, ७५-चन्दसखी, ७६-ताहरीदास, ७७-तुलाराम, ७८-मणिकचन्द जू, ७९-रामदास, ८०-रसिक गुपाल, ८१-व्रजदास बरसानिया, ८२-किशनदास, ८३-श्रीरूपलाल, ८४-साहिब राइ, ८५-लोकनाथलाल, ८६-फलताराम, ८७-राइ खुस्याल, ८८-तुलसीदास, ८९-कृपाराम, ९०-व्रजलाल, ९१-गोरीदास, ९२-अनन्य अलि, ९३-कासीदास, ९४-सदाभक्त, ९५-निजुलाल सखी, ९६-भक्तदास मिश्र, ९७-भक्त माल, पूरब वाले, ९८-हितकुल प्रसाद, ९९-नवल सखी, १००-श्रीहलधर, १०१-किरनी बाई, १०२-बुलाकीदास, १०३-सहजराम, १०४-प्रियादास, १०५-सोनीराम, १०६-कल्याणमल कायस्थ, १०७-सुखानन्द, १०८-कृष्णभक्त तुलाधार, १०९-मनूलाल, ११०-माधुरीदास, १११-रसिक वल्लभ, ११२-जुगलदास पुजारी ११३-सेवा सखी, ११४-रामदास रसिक, ११५-श्रीचन्दलाल, ११६-गुज्जर धर, ११७-लाड़िलीदास, ११८-भोलानाथ इत्यादि।

विशेष ज्ञातव्य--यह ग्रंथ बहुत उपयोगी कहा जा सकता है। इसे दूसरा भक्तमाल जैसी नाभाजी की है, कहनी चाहिए। इसमें बहुत से ऐसे वैष्णवों के भी नाम हैं जो भक्त माल में नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वृन्दावन हित ने इसमें उन्हीं भक्तों के नाम दिए

हैं जो राधावल्लभी सिद्धान्तों के अनुयायी एवं रसिक थे। इसीसे नाम भी इसका रसिक प्रचावली रखा गया है। प्रत्येक भक्त के वर्णन में साधारणतः एक छप्पय कहा गया है, पर किसी किसी के विषय में ३--४ तक लिख डाले गए हैं।

संख्या २३२ एम. समाज के पद, रचयिता—वृंदावन हित, कागज—बाँसी, पत्र—६०, आकार—९ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० तुलसीराम जी गोस्वामी, नन्दजी के मन्दिर का घेरा, स्थान व डा०—नन्द ग्राम, जि०—मथुरा।

आदि—श्री हित रूप गुरुभ्यो नमः॥ अथ श्री कृष्ण जनम बधाई लिष्यते॥ राग भैरों॥ ताल आड़॥ अहो आजु नन्द सदन नभ चन्द उदैभयो, घर घर बजति बधाई॥ प्राची दिसि जसुमति उर दरस्यो, ताप गयो लषि माई॥ सागर रूप बढ्यौ पुर बीथिन, आतुर गति बनिता सुनि धाई॥ "वृन्दावन हित" रूप जाऊँ बलि, भई सबनि मन भाई॥

अंत—राग विलाबल एजू श्री वृभभान गोप रावलि पति, गह महताकें धाम। नित नित सुषनि रंगै तर वरषत, श्री बरसानैं गाम। निगम हु दुरी अगोचर आगम, राधा जाकौ नाम। सो खेलति कीरति के आँगन, जीवनि सुन्दर स्याम। जननी जनक गोद लै वैठत, कुवरि कुँवर श्रीदाम। वृन्दावन हित रूप अवधि सुख, लाड़त आटौ जाम।

विषय—श्री कृष्ण की बधाई और छठी आदि अन्य उत्सव, १–१६। नारद जी का आगमन, जसोदा का गर्भ धारण, भाँड आदि का आना, श्रीलाल जी का पालना में झूलना, श्रावण सुदी ११ का पवित्रोत्सव, रक्षा बन्धन श्रावण सुदी द्वितिया का उत्सव, हिंडोरा, १७–५० तक। राधा जी की बधाई, शिव जी का आगमन, लाड़िली जू का पलना, ५१–६०।

संख्या २३२ यन्. सन्तों की बाणी, रचयिता—वृन्दावन हित, कागज—मूँजी, पत्र—१५७, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत पं० तुलसीराम जी, नन्द बाबा जी का मन्दिर, स्थान व डा०—नन्द ग्राम, जि०—मथुरा।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति॥ राग बसन्त॥ वृषभान पौरि खेलत तव सन्त। व्रज ईश सुवन श्री राधा कन्त। टेक। डफ ताल झाँझ महु वरि उपंग। बाजै मुरली मधुर धुनि मिली संग। सुनि नव तरुनि न मन वध उमंग। पट भूषन साजे अंग अंग। ललिता दिक आंई कुँवरि पास। भाजन भरि लीने रंग सुवास।

अंत—आजु ब्रज जनम लियौ बलि राम। सावन सुदी पंचमी अति सुष वरषत वृज पति धाम। सजि सिंगार भेंट ले गावति आवति हैं व्रज भाम। जसुमति भाग प्रशंसति अपनौं उमह्यो है गोकुल ग्राम। हल मूसल धर कौ महा मंगल धनि धनि यह छिन जाम। वृन्दावन हित रूप रोहिनी कूषि परम अभिराम।

विषय—बसन्त सम्बन्धी पद, १–१३ तक। होरी धमार, १४–६७। दशहरा का उत्सव, ६८–६९। कृष्ण गोचारण के पद, ७०–७४। चन्दन रचन और अक्षय तृतिया,

७५–७७ । जल विहार, ७८–७९ । रथयात्रा, ८०–८१ । पावस ऋतु, मलार, ८२–८३ । व्रज प्रसाद वेली, ८४–८९ । श्री बलदेव जी जन्म बधाई, ९०–११३ । भक्ति सम्बन्धी पद, ११४–१५६ ।

संख्या २३२ ओ. विवेक लछन वेली, रचयिता—वृन्दाबन हित, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण—१२५ (दोहे), पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीराधा गोविन्द चन्द का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—अथ विवेक लछन वेली लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री हित रूप प्रनम्य पद, वरनों बुद्धि विवेक ॥ एक जीव हरि पद विमुष, हरि सन मुष कोउ एक ॥ दोऊन को ब्योरो कह्यो, रहनि कहनि अनुसार । इक हरि पदवी कों चढ़े, एक बंधे जम द्वार ॥ सठ हठ को छाड़े नहीं, सो मति असुर विसेस । वृन्दावन हित ता हिये, भिदै न विधि उपदेस ॥ संगति जो सुधरे नहीं, रुचै न हरि जस मिष्ट । वृन्दाबन हित जानियै, जीव आसुरी सृष्टि ॥

अंत—श्री हरिवंश अमी उदधि, सुमति लहरि अति लेत । वानी नीर रतन धरे, रसिक जौहरिन हेत ॥ १२३ ॥ लछन भजन विवेक की, वेली पढ़ै जु कोइ । वृन्दाबन हित ता हिये, भक्ति गह गही होइ ॥१२४॥ हरि गुर सन्तन चरन रज, वन्दन करि धरि सीस ॥ दोहा वरने एक सत, पुनि ऊपर पचीस ॥ १२५ ॥ इति ॥

विषय—नीति के दोहे ।

संख्या २३२ पी. वृन्दाबन जी की वानी, रचयिता—वृन्दाबन हित, स्थान—व्रजभूमि, कागज—देशी, पत्र—३४८, आकार—१२½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८१२ वि०—१८२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री राधा गोविन्द चन्द्र का मन्दिर, प्रेम सरोवर, डा०—बरसाना, जि०—मथुरा ।

आदि—श्री राधा बल्लभो जयति ॥ श्री वृन्दावन दास जी कृत लीला लिख्यते ॥ श्री गोस्वामी हित हरिवंश जू को सहश्र नाम—दुपई नमामि गुरु हित रूप बुद्धि दग कृपा सुदुतिधर ॥ नमामि गुरु हित रूप अविद्या महा तिमिर हर ॥ १ ॥ नमामि गुरु हित रूप टेक दृढ़ परम धर्म रति ॥ नमामि गुरु हित रूप भजन दिस कीनी मो मति ॥ २ ॥ नमामि गुरु हित रूप कृपातें यह मति पाऊँ ॥ मंगल श्री हरिवंश नाम को पुनि पुनि गाऊँ ॥ ३ ॥ नमामि गुरु हित रूप विदित जिनकौ व्रत वाँकौ ॥ छल टांकौ निह लग्यो पछि बड स्वामिनि धांकौ ॥ ४ ॥ नमामि गुरु हित रूप अलंकृत बानी करि हौं ॥ नमामि श्री हरिवंश नाम मंगल विस्तरि हौं ॥ ५ ॥

अंत—दोहा जुर पाछे छोड़े नहीं, हम लिय कंध चढ़ाइ ॥ अहो सनेही साँवरे, रीझ न वरनी जाइ ॥ १ ॥ लिषत लिषत आँखे थकी, सेत भये सिर वार ॥ तऊँ न रीझे तनक हूँ, नगधर नन्द कुवाँर ॥ २ ॥ वरनत हारो बुद्धि बेल, दौरि दौरि भई चूर ॥ हरि प्रीतम तुम देसरा, तऊ दूरिते दूर ॥ ३ ॥ पुनि पुनि दीजत षाट में, करत रावरी टहल ॥ कर्मन

माथे डारिके, सुष सोये हौ महल ॥ ४ ॥ और परेषो को करै, ऐहो गोधन पाल ॥ मात पिता के देस में, पुनि पुनि परत अकाल ॥५॥ उलटें चलें जू और ते, चालि नन्द के लाल ॥ जिनसों करी जु प्रीति तुम, तिन कौ यहै हवाल ॥ ६ ॥ अन्त लियो तुम सबनि को, जहाँ जहाँ कन्यो सनेहु ॥ मो पन आयो तीसरो, अब बिनती सुनि लेहु ॥ बन रज में तनु डारियो, विरद आपनो राषि ॥ हित वृन्दावन दास की, सत्य करौ प्रभु साषि ॥ इति ज्वर उराहनो ॥

विषय—राधा वल्लभी सम्प्रदाय के संस्थापक श्री हित हरिवंश का, जो रचयिता के भी गुरु थे, जीवन चरित्र तथा महिमा, पृ० १–२५ तक। राधिका जी की कथा, उनकी लीलाएँ आदि, पृ० २६–३१। राधिका जी का मंगल स्वरूप, ३२–३६। राधा वल्लभ का इष्ट रूप में स्मरण, ३७–४१। राधे जी की कृपा अभिलापा, भक्तों की ओर से, ४२–४६। हित के स्वरूप में राधा, ४७–४९। हित प्रकाश कवित्त अष्टक, ५०–५२। वृंदावन वर्णन, माहात्म्य, शोभा, ५३–५९। श्री कृष्ण सगाई, ६०–७६। कृष्ण को यशोदा की शिक्षा, ७७–७८। श्री कृष्ण मंगल छोरी चरवा, ८८–९०। व्रजवासियों की टेर, ९१–९२। व्रजविनोद, ९३–१००। दानलीला, १०१–१०४। राधा पति के नाम, १०५–१०९। आत्म प्रबोध, ११०–११४। भजनसार बारहखड़ी, ११५–१२१। कुमति की निंदा और सुमति प्रकाश, १२२–१२७। महागुण लक्षण, १२८-१३१। हरि इच्छा और महिमा, १३२-१३९। गर्व प्रहार, १४०–१४५। कलियुग चरित्र, १४६–१५२। भगवान का करुना रूप, १५३–१५६। भक्तों की यश माला (भक्तमाल की तरह), १५७–१६१। श्री गोस्वामी रूपलाल जी की सुजस पच्चीसी, १६२–१६४। श्री राधा जन्म उत्सव वर्णन (कवित्तों में), १६५–१८३। गोस्वामी रूपलाल जी का अष्टक, १८४–१८६। हरिप्रताप वर्णन, १८७-१९५। श्री वृषभानुजा अष्टक, १९६–१९८। संत संगति महिमा, १९९–२०२। यमुना अष्टक, २०३–२०४। वसंत अष्टक, २०५–२०६। हित रूप स्वामिनी अष्टक, २०७–२०८। विपनेश्वरी अष्टक, २०९–२१०। महत मंगल, २११–२१३। भजन उपदेश, २१४–२४१। अन्य लोगों का परिचय, २४२–२४८। हित जी के चार पुत्र का वर्णन, २४९–२५०। बनचंद जी के पुत्रों का वर्णन, २५१–२८५। यमुना महिमा, २८६–२९३। श्री वृंदावन महिमा, २९४–३०५। श्री श्रृंगार अष्टक, ३०६–३०७। भजन और पद, ३०८–३१२। गुरु कृपा चरित्र, ३१३–३२२–३४७। ज्वर उराहना, ३४८–३४९ इत्यादि।

संख्या २३३. ढोला मारवणी, रचयिता—जादव राय, स्थान–(जैसलमेर), कागज—मूँजी, पत्र—१०, आकार—९½ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६१६ वि०, लिपिकाल—वि० १७३१ = १६७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० राधेश्याम जी द्विवेदी, स्वामीघाट, मथुरा।

आदि—श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥ सकल सुरासुर सांमणि, सुणि माता सतः ॥ विनइ करानइं वीनवुं दिउ मुझ अवर लगत्तः ॥ १ ॥ जोतां नवरस मझे सवि ऊंघर सिणगार ॥ तागि सुर नर रजायइ अबला तासि अधार ॥ २ ॥ वचन विलास विनोद सरे, हाव भाव रति हास ॥ प्रेम प्रीति सम्भोग रस, एसिण गार अवास ॥ ३ ॥ गाहा गूढ़ी गीत रस,

कवित कला कलोल ॥ चकर तणा मंन रंजवण, कहिए कवित कलोल ॥ ४ ॥ × × × पाणी पवंग षग वंगा षुरसाणी ॥

अंत—मालव वणी सूँ प्रेम पियार ॥ बालापण नो नेह अपार ॥ तौंही मारवणी सुघणो ॥ लागो चित्त ढोला तणो ॥ बेही तणे वे पुत्र संतान ॥ दिना अघ का कंत वहुसाल ॥ मन वंछित ते पाम्या भोग ॥ सुष सम्पति संजम संजोग ॥ गाहा सात सेंए परमाण ॥ दूहानै चौपाई बषाण ॥ जादव राज श्री हरिराज ॥ जोड़ा तासि कौतूहल काज ॥ जन मुषि इण परि साभली ॥ तण ऊपरि कर ज्यो मनि सली ॥ दोहा घणां पुराणां अठै ॥ चौपई बंधमै की थौ पठे ॥ अधि कोऊ बो जोग्यो बऊ ॥ कवि यण जे सांस लो सऊ ॥ पड़ियो अठें जिहाँ पांतरो ॥ विचार ज्यो उम्हे तिहां षरो ॥ संवत सोल सइं सोलोत्तरइं ॥ आषा तीज दिवस मनि परइ ॥ जोड़ी जेसल मेर मझार ॥ बाच्या सुख पामीए अपार ॥ सो भील चतुर गुण गह गहइ ॥ बाचक कुशल लाभ इम कहइं ॥

विषय—राजस्थान की प्रसिद्ध कथा ढोलामारू इसमें दी गई है। जिस प्रकार राजा नल मारू देश की एक सुन्दरी पर मुग्ध हो गया और वहाँ राज कन्या भी भाट से राजा का गुणानुवाद सुनकर प्रेमाग्नि में जलने लगी और अन्त में कई घोर संकटों और लड़ाइयों के बाद दोनों का आपस में वरण हुआ, इसका रोचक उपाख्यान इसमें वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य—सुना है, सभा से 'ढोलामारू' का एक संस्करण निकाला जा रहा है। ऐसे अवसर पर इस ग्रंथ का पता लगना उपयोगी है। सभा चाहे तो प्रकाशित होनेवाले संस्करण को इस प्रति से भी शुद्ध कर सकती है। यह काफी पुराना है। ईस्वी १६७७ का लिखा हुआ। रचना काल इस प्रकार दिया है। "संवत सोलसइं सोलो त्तरइं । आषा तीज दिवस मन परइ" इससे सं० १६१६ वि० निकलता है। आखा तीज (अक्षय तृतीया) वैसाख शुक्ला में पड़ती है, जब सूर्य उत्तरायण रहते हैं। उसी समय दिन भी खरे अर्थात् गर्म रहते है, जैसा कि "दिवस मन षरइं" से प्रकट है। 'सोलसइं सोलोत्तर' का अर्थ होगा, सोला सै ऊपर सोला अर्थात् सं० १६१६ वि०। लिपिकाल के संबंध में कोई सन्देह नहीं हो सकता। कागज बहुत पुराना दिखलाई पड़ता है। ग्रंथ बहुत छोटे छोटे पर सुन्दर अक्षरों में लिखा गया है। रचयिता का नाम इस प्रकार दिया है:—"जादव राज श्री हरि राज जोड़ा तासि कौतूहल काज" अर्थात् जादव राज ने श्री हरिराज के लिए इस ग्रंथ को जोड़ा। जादवराज जैसलमेरके निवासी मालूम होते हैं, जैसा वह स्वतः कहते हैं कि ग्रंथ-निर्म्माण वहाँ हुआ:—"जोड़ी जेसलमेर मझार।" ग्रंथ खोज में बड़े महत्व का है। इसकी कविता बड़ी ही मधुर एवं हृदयग्राही है। जिस प्रकार जायसी के पदमावत में अवधी शब्दों की भरमार है उसी प्रकार इसमें राजस्थानी शब्दों की भरमार है। यह राजस्थानी का एक काव्य कहा जा सकता है। एक तो इसका कथानक ही बड़ा मनोहर है फिर देहाती सरल कविता में वर्णन कर कवि ने बड़ा ही अच्छा किया है। मेरा निजका विश्वास है कि जायसी के पद्मावत से यह ग्रंथ रत्न कुछ घटकर नहीं है।

———

तृतीय परिशिष्ट

ज्ञातनामा रचयिताओं की कृतियों के उद्धरण

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञातनामा रचयिताओं की कृतियों के उद्धरण

२३४ अकलनामा—यह बड़ा मनोरंजक ग्रंथ है। पहले तो यह ब्रजभाषा गद्य रचना है, दूसरे इसमें ऐसे विषय का प्रतिपादन है जो बहुत विरल है। इसकी विषय सूची इस प्रकार है:—

१—मुगलकालीन शासकों का संक्षिप्त विवरण।

२—मुगलकालीन भारत का राजनैतिक विभाग एवं उसके कुछ प्रसिद्ध स्थानों का विवरण।

३—आमेर (जयपुर) और सिसोदिया (उदयपुर) के राजाओं की वंशावली।

४—राजा बीरबल और अकबर बादशाह के संबंध का विवरण।

इस ग्रंथ की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। मथुरा में प्राप्त प्रति की नकल सभा के लिए कर ली गई है और दूसरी प्रति देखने के लिए प्राप्त कर ली गई थी। यह पता नहीं लगता कि इसका रचयिता कौन था। भरतपुर के निवासी रामद्विज ने भरतपुरवाली प्रति को लिखा और दूसरी प्रति को लाला इंद्रजीत ने गोपाचल (ग्वालियर) के निवासी भवानी दास पांडेय के लिये लिखा था। दूसरी प्रति संवत् १८८२ वि० में और पहली प्रति संवत् १९२१ वि० में लिखी गई थी। ग्रंथ में संवत् १८२१ तक के ऐतिहासिक विवरण पाए जाते हैं, अतएव इसकी रचना संवत् १८२१ और १८८२ वि० के बीच हुई होगी। इसमें संवत् १५५५ वि० के एक बहुत बड़े भूकंप का भी उल्लेख किया गया है जिसमें प्रतिदिन तेंतीस बार भूमि कंपन हुआ था। फलतः अनंत घरों का विनाश हुआ और स्थान स्थान पर पृथ्वी फट जाने से भूगर्भ का पानी बाहर उछल पड़ा जिससे चारों ओर बाढ़ का दृश्य उपस्थित हो गया था। यह उसी प्रकार का भूकंप जान पड़ता है जिस प्रकार का सन् १९३३ में बिहार में हुआ था। ग्रंथ का ऐतिहासिक अंश केवल आरंभ के भाग को छोड़कर श्रीव्रजरत्नदास जी ने 'हिन्दुस्तान' में छपवाया था, जिनके पास इसकी एक जीर्ण शीर्ण एवं खंडित प्रति थी।

संख्या—२३४ ए. अकलिनामा (चकत्ताशत), पत्र—३९, आकार—१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६००, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमान् ठा० श्रीचन्द्रजी, वैद्य, ग्राम—लभौआ, डाकघर—शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः॥ अथ चकत्ता पातस्याह सब वर्तीवंत संग्रह अकलि नामा लिष्यते॥ संवत् १४१४ में तैहमूरस्याह जी ईरांन कुलौदि मुलतान होइथल ५२१०० सवारों सों दिल्ली आइ राह में ५० हजार आदमी पकड़े और दिल्ली कतल भई लुटी पीछे

हरद्वार कौ मेला कतल करि पहाड़ की राह होइ जंबू के राजा को पकड़ि करि खिजर खाँ को लाहौर वा मुलतान वकसि आये आपुदेस समरकंद को गये बीच में कैऊवेर पठानों की पातशाही हिन्दुस्तान में होइ गई सं० १४५७ में वावरस्याह जहेरउद्दीन तैहमूर के वंस में पाँचईजाय गै काविल फतह करी आपनौ वंदोवस्त कीया तहाँ बड़ा भूकम्प आया वहुत हवेलीं गिरीं लोग दवि मुये एकवेर में तेतीसबेर धरती कंपी एक मास लौं दिन राति उपद्रव रह्यौ ऐसी सर्व ठौर भई भूमि फटी जल निकरौ पातस्याह चारि वार हिन्दुस्तान आइ गये पाँचवीं बेर आगरे लौ फतैह करि राणा संग वयाने आयो हतौ ताहि भजाय दयौ कितने काल पीछें आगरे में रोग सों परलोक भये तिनकौ मुकरवा काविल में भयौ पाँच वरष पातसाही करी संवत् १४८० मे हिमाऊं जहैरउद्दीन तखत पै बैठो गढ़ कालिंजर फतैह करी गुजरात तें सुलतांन बहादुर कौं भजाइ सेरसाह सों जौनपुर रोहतास चन्हाड़ पटना वंगाले ले कितने काल पीछे सेर खाँ सों पराजय पाय भ्रस्ट होइ भाजे जमुना जी में गिरे एक सक्का ने काढ़े वाकों आगरे में पातसाही दई वाने चाम के दाम ढाई दिन चलाये ॥

अंत—कवित्त जै गजवदन एकोरदन विराजै चारुवुद्धि कौ सदन सीस सोहै वाल छपाकर ॥ कूर मति दूरि करिवे के जग कारन है दासन के दुप और दरदनि दफा कर ॥ ध्यावै मंद वुद्धि वार पावैं छंद सुद्ध नीके पूजै ते प्रथम जहान देत नफाकर ॥ धनफति फनपति सम भयौ चाहे तौ तू गनपति गनपति जपाकर ॥ १ ॥ जाके विनु थापे सुर कार जन थापे नरकार जन थापें तौन कारज वनन को। गायक गुनीन कौ विनायक वन्यौई रहै सदा कवि नायक औ नायक गनन कौ ॥ मुनपति धनपति फनपति ध्यावै जाहि देत सुभगति आसरौ है कविजनन कौ। गाय लै रे गुन गनपति कौं मनाय लै तू करिहै सहाय पूत जग की जननि को ॥ २ ॥ आनंद करन आछे ऊजरे वरन सुभ सोभा वितरन भरें भारे आभरन हैं। पारन परन दोष दारिद दरन भव तारन तरन जन पोषन भरन हैं॥ कारन करन असरन सरन सदा वुधि के करन माने संकट हरन हैं। पातक हरन आभरन देवतान के मंगल करन सर्व मंगलाचरन हैं ॥ ३ ॥ देवन की मनि महादेव अरधंगी देव सेवग सुनी है अभय वरदाता तू। विश्व की भरनि सुभ करनि सरनि आयें जम के सरन ते वचावत विधाता तू॥ जन कहै मन का मिटाइ वेग चिन्ता एहो चिंतामनि रूप भो दुष्टन कौ हाता तू। जगत मैंसाता करि पाता कनि पाता कर छंद छवि ज्ञाता कर गनपति माता तू॥ ३ ॥ इति श्री परंपराय पातस्याही ग्रंथ चकत्ता सत वर्तानंत संग्रह अकलि नामा ग्रंथ संपूर्णम् पठनार्थ श्री पाँडे जी भमानीदास धौंहा वारे निवास सुभ स्थान गोपाचलगढ़ लिष्यितं कसवा धौरा मध्य लाल इंदरजीत मिती अषाढ़ सुदी ५ संवत् १८८२ ॥

विषय—मुगल सम्राट् बाबर से लेकर औरंगजेब के समय तक का संक्षिप्त ऐतिहासिक वृत्तांत।

संख्या २३४ बी. अकलनामा, कागज—मूँजी, पत्र—९६, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन लाल खादी की जिल्द, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९२१ = १८६४ ई०, प्राप्ति स्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मन्दिर गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ अकलनामा लिष्यते ॥ अथ चकत्ता की पातस्याही परम्परा लिष्यते ॥ संवत १४१४ मे मीर तैं मूर साहिब किरान चढ़े कौं लूटि मुलतान होइ थली की राह ॥ ७२००० सवारौं सौं दिल्ली आये ॥ राह में ५० हजार आदमी पकड़े ॥ दिल्ली आय के मारि डारे ॥ इकबाल षा भजे दिल्ली कतल भई और लुटी ॥ पाछे हरिद्वार को मेलौ कतल करि पहार की राह होइ जंबू कौ राजा पकर करि || षिजर षां कौ लाहोर वा मुलतान बकसि आए || आपुन देस समरकन्द कूँ गए ॥ बीच में कैऊ बेर पठाणौ की पातस्याही हिन्दुस्थान में होइ गई ॥ संवत १५५७ मैं वावस्याह जही रुद्दीत मूर के वंस मैं पांचई जायगे || काबुल फतेह करि आपना वन्दोवस्त किया ॥ तहाँ बड़ो भूकम्प भयो ॥ हवेली गिरी || लोग आदमी दवि मरे ॥ एक दिन में ३३ बेर धरती काँपी ॥ एक मास लौं राति दिन यह उपद्रव रह्यो ॥ अैसे ही सर्व ठौर भई || भूमि फटी जल निकस्यौ ॥ पातस्याह ४ बार हिन्दुस्थान आए गए पाँच वेर आगरे लौं फतेह करी || राणा सौगान बयाने पायो हुतो ताहि भजाय दयो ॥ कितने ककाल पीछे आगरे मैं रोग सो परलोक भये || तिनकौ मकबरा काबुल भयो || पाँच वरस पातस्याही करी संवत १६८० में हुमायुँ जरीही रुद्दीन तषत बैठे ॥

मध्य—५५ खान खाना कहता आदिमी बिना दगावाजी काम का नहीं ॥ पर दगाबाजी की ढ़ाल करना जोग्य तरवार की नहीं ॥ ५६ ॥ येक हलवाई दूध में पानी मिलाय बेचता था ।। ताके हजार रुपैया भेले भए ।। तब एक दिवस येक वन्दर थैली उठाय जमुना के किनारे रुप पर जाय बैठा ।। और आधे रुपैया किनारे पर डारे ।। तब कोई सकस बन्दर कूँ मारने लगा ।। तहाँ हलवाई कही क्यों मारते हो ।। दूध के रुपैया तो किनारे परे हैं ।। और पानी सूँ पैदा किये सो पानी में गए ।। सो हराम का माल फलदायक नहीं ।।

अंत—सूबा लाहोर का × × × लौण सिंध वहाँ ही है ।। ताही पहाड़ में बीस कोस ताई सिंध है ।. लूण केर के बदान ।। चिराक पोस सुन्दर वने हैं ॥ जम्बू के पहाड़ों में त्रिकुटा देवी का स्थान है ।। तहाँ ते येक गुफा में सू सवा पहर दिन चढ़े ताईं प्रबल पवन चलता है ।। ताकू टंठ कहते हैं ।। पाँच सरकार दोय सै चालीस परगना । जमीन येक कोटि इकसठ लाप पचहत्तर बीघा बनवै बिश्वा है ।। दोहा जब लगि मेरु अडिग रहै, जब लगि ससि अरु सूर । तब लग यह पोथी सदा, रहे ज्यो गुण भरपूर ।। इति श्री चकत्ता की पातस्याही सूबा प्रबंध अकलनामा के प्रश्नोत्तर सम्पूरनं ।।

विषय—१-संवत् १४१४ से सं० १८२१ तक के मध्य कालीन भारतीय इतिहास, मुस्लिम विदेशी राजाओं के जीवन, लड़ाइयाँ, विजय, आदि सविस्तृत वर्णित है । १—१७ । २—नीति तथा सदाचार के दोहे, १८-२० । ३—महाराज श्री माधव सिंह जी का कुल वर्णन । ४—भक्तों के नाम तथा उनकी महिमा । ५—हिन्दुस्थान की बादशाही का प्रमाण सब बड़े २ नगरों के नाम उनका फासला, लाहोर गजनी से लेकर बीजापुर औरंगाबाद, सेतबन्ध रामेश्वर, मुंगेर तक । ६—राज्यकर्मचारियों के पद ओहदे, वकील, मुसाहिब, वजीर, बकसी, ऐलची, सदर, नाजिर आदि आदि । ७—शाही शासन के मुहकमे, दवाई खाना, मोदीखाना कोस खाना, शिकार खाना आदि । ८—आमद, जमा, वसूली, खर्च का विवरण । ९—शालों के

भेद और उनके रंग। १०—स्त्री जाति का वर्णन। ११—वस्त्र, आभूषण सोलह श्रृंगार, २१-२८ तक। १२—छोटी २ प्राचीन चुटकुलों भरी कहानियाँ। नीति की कहानियाँ। बादशाहों के जीवन सम्बन्धी कहानियाँ, २९से ७२ तक। १३—दिनचर्य्या, राजाओं के लिये सात जकार का विचार ॥ जमा, जमीं, जालिम, जिहांन, जमींदार, जमान, जमीयत। १४—आमेर के राजाओं की नामावली, छत्तीस राग रागिनी। १५—सीसोदिया वंश वर्णन। १६—नवरस, अलंकार, गुण, सिद्धि, दोष, रोग, इन्द्रिय, संक्रान्ति, राशियाँ, नक्षत्र। १७—बादशाह के शासन कालीन सूबाओं, मार्गों, आबहवा, प्रसिद्ध स्थान, उपज, बाजार, लोगों के रहन सहन आदि तथा लम्बाई, चौड़ाई, नदियाँ पहाड़। १८—बंगाल, बिहार, इलाहाबाद, अवध, आगरा, मालवा खानदेश, बैराड, गुजरात, अजमेर, दिल्ली, लाहौर सूबाओं का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—छप्पय श्रीजसवन्त ब्रजेन्द्र कवै हरी निवक मुहरर। तिनके सदा समीप राज के काज करन वर ॥ सोभा राम दिवान सकल दुष धाम काम तरु। अग्रवार कुल जन्म सदा उर दया धर्म धर ॥ तिनके सुतनय हित राम द्विज इह पुस्तक लिखिय सरस। जे पढ़ै सुनै नर याहि कौ तिन कौ नित मंगल बरस ॥ दोहा संवत संत गुनईस पर, येक विंस की साल। जेठ मास तिथि पूर्णिमा, पुनि रविवार रसाल ॥ उपर्युक्त छप्पय में इस ग्रंथ के संकलन कर्ता ने अपना सम्पूर्ण परिचय दे दिया है। यह ग्रंथ कई दृष्टि से उपयोगी है। इसे Book of Knowdlege कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। ग्रंथ के संपादक रामद्विज हैं जिन्होंने भरतपुर नरेश श्रीजसवन्त ब्रजेन्द्र के शासनकाल में शोभाराम अग्रवाल, दीवान के पुत्र के लिये इस ग्रंथ का संकलन किया। रामद्विज कचहरी में नमक मुहर्रिर थे। संग्रह-काल Date stanza के अनुसार १९२१ है जो अधिक पुराना नहीं है, पर पुस्तकावलोकन से पता चलता है कि अन्य हस्तलिखित ग्रंथों से इसके लिखने में सहायता ली गई है। मुगल शासन काल के भारतीय सूबों का वर्णन बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रायः सभी आवश्यक बातें इसमें आ जाती हैं। बीच में जो कहानियों का अध्याय है वह भी बड़ा रोचक है। ग्रन्थ के आरम्भ में ही १५५७ विक्रमाब्द के उत्तरप्रदेशीय भूकम्प का वर्णन हृदय हिला देनेवाला है। जो हाल बिहार के भूकम्प में हुए वही इसमें हुए और शायद कहीं इससे भी अधिक। लिखा है—"एक दिन ३३ बार धरती काँपी थी"।

संख्या—२३५. बैतहाफ़िज साहिब, कागज—सन का, पत्र—४८, आकार ६½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सर्वोपकारक पुस्तकालय, मु० पो०—सुरीर, जिला—मथुरा।

आदि—श्रीरामाय नमः होवत सगले सूष तूं मै सभ मन ते मिटे। राजत पदे अमूप मैं ममता दुष सभ नास दोइ। बैत जुलफै न सिया हंप म वष मेदर जदई बाज ॥ वके ते मन शोरी दाब हम दरज दई बाज ॥ अरथ जुलफा सिया हंप म विच पंम देमा साहिनी फेर। वकैत मै दिवाने दावि चगम दे मारयाहिनी फेर ॥ अब भाषा अर्थ कहते प्रथम ॥ जुलफै न कही वे जुलफा है सो इसका यह भाव है सहकार अर निरकार जो दो तेरे सरूप है सोई। भया जुलफा अरतूँ दोनों विषे विराजमान हैं।

अंत—मूढ़हो होत सुजान जिनके वेर दरसन कीनै। लगत जो चर्णं आई सेई जनै आनंद भीनै। चिंता और विकार कट्यौ अपने जन केरी। दूर वासकि सुख देन मिटाव मम मेरी तेरी॥ जीव धर्म्म को दाह देत अभय पद पालं। बारम्बार नमः सोहे सर्व कृपालं॥ इति बैत हाफिज साहिब को पूर्ण।

विषय—इसमें सूफी मत के अनुसार परमेश्वर और उसकी भक्ति आदि का वर्णन है। आध्यात्मिक बातों का ही आधिक्य है।

टिप्पणी—यह ग्रंथ हाफिज किसी मुसलमान का लिखा हुआ है। मालूम होता है उन्होंने कई बैत—फारसी में एक प्रकार का छन्द—बनाए हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। विषय आध्यात्मिक है। अपने संबंध में इन्होंने कोई विवरण नहीं दिया है। ग्रंथ अच्छा है। एक मुसलमान का लिखा होने से और भी उपयोगी है।

संख्या—२३६. बाजनामा, पत्र—७, आकार—९३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४, पूर्ण, रूप—पुराना (सजिल्द), गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्रीमहाराज महेन्द्र मानसिंह जी देव, महाराजा भदावर, स्थान व पो०—नौगवाँ, आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः॥ अथ बाजनामा लिष्यते॥ दोहा॥ सुंदर मुष हठि हरत दुष, विघन विनासन आप। सुमिरि काज सुभ होत सब, सिद्धि गनेश प्रताप॥ साल होत्र भाषा रची, नकुल मते ठहराइ। भेद तुरंगन केर सब, कहा जथामति गाइ॥ सोरठा॥ जहाँ काज तहँ बाज, कहिये अवसि सिकार कों। सुनहुँ गरीब नवाज, पच्छिन केर इलाज अब॥ चौपाई॥ साल होत्र भाषी मति जाथा। सुनहु बाजनामा की गाथा॥ जो पावें हरी बाज उडावत। कुही चरग सो भाव दिवावत॥ सिकरा दंड उड़त न बासों। पर बाजी पर अधिक तमासा॥ तोनि चारि पुनि पालत कोऊ। छाँड़े मूठि उड़त हैं सोऊ॥ जेही काज सवल सो करई। अपने अपने पौरुष संचरई॥ यह सिकार चोप सुनि जिनकौं। परचि दाम सो राषत तिनकौं॥ दोहा॥ परचे दामन के मिलत। व्यापत तिनहिं अजार। तिनकौ करै इलाज तो। नीक करै करतार॥

अंत—॥ अथ भूंष की दवा चीते की॥ जावित्री मासे ६ सोंठि सतुआ ६ पीपरि ६ लौंग ६ देसी सौंठि ६ अजवाइन ६ अजवाइन षुरासानी ६ अजमोद ६ वंसलोचन ६ जायफल ६ दालचीनी ६ कालीमिरच ६ अकरकड़ा ६ सुहागा ६ केसरि ६ मासे छह यह सब दवाई सराब में भिंगोवे दिन तीनि॥ अथ मसाला चीते का॥ नेवू जाफरान जावित्री सोंठि जाइफर पीपरि छोटी काली मिरच नोसादर इन सब की कीमत चार आने है॥ श्री सिवाय नमः॥ दोहा॥ राम कथा मंदाकिनी। चित्रकूट चित चारु। तुलसी सुभग सनेह वन। सिय रघुवीर विहारु॥

विषय—शिकारी बाज के रोगों की चिकित्सा का वर्णन।

संख्या-२३७. बाजनामा मय चीतेनामा व हिरननामा, पत्र—५८, आकार—९३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३००, पूर्ण, रूप—पुराना,

गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९१२ वि० = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराज महेन्द्रमान सिंह जी साहब, महाराजा—भदावर, स्थान व पो०—नौगवाँ, आगरा।

आदि—॥ श्री ॥ अथ पोथी वाजनामा लिष्यते ॥ दवा परगरदे का ॥ कीरा पर काट डाला है ॥ सरहतीव वासों कहते हैं लहसन के बीच डोरा सा होता है तासों तीव कहते हैं ॥ नेनूआ गंधक ॥ आधी कोडी भर ॥ मुलतानी हींग टुकरा कोडी भर ॥ कुटकी आधी कोडी भर ॥ दवा चारो को पानी में षूब पीसे गोली बाँधे वजन चने भर का ॥ वाजवावहरी का ॥ और वासे छोटे जानवर को आधे वजन देहि॥तो इससे परजमी आमेंगे ॥ दवा कटमष का दूसरे ॥ गंधक निनूआ आधे कोडी भर, हींग टुकड़ा कोडी भर, नींव का पत्ता, भरभूजा का झोल आधी कोड़ी भर ॥ पियाज सुपेत तिसके रस में गोली बाँधे वजन चना भर का ॥ वाज वेहरी के वास्ते ॥ छोटे जानवर का वजन मसूर भर का ॥ दवा कटमक का तीसरा ॥ मिमाई रत्ती चारि भर ॥ और सिंगरफ रती चारि भर गंधक निनूआ रती चार भर हींग मुलतानी रत्ती चार ॥ ये सब दवा को इकंठा कर ॥ बकरी के दूध में परल करे ॥ पहर तीनि ॥ सूषें जव दूध फेरि डारि देहि ॥ जव जानवर मोहोड़ें ॥ वड़े जानवर को रती येक ॥ और जुरा को आधा रती ॥ और दवा दये ये येक घडी पाछे तामा देना ॥

अंत—॥ फसलि दूसरी ॥ त्यार करने झिलीये नर के में ॥ मादा हिरन के को दुवला करिकें मोहोरी का रंग हरावा कारा होइ मोहोरी दलोची पहरावै ॥ कि हिरन जंगल कान देषि सकें ॥ वदस्तूर मूदकें वास्ते गस्त के दोनो वषत जंगल में जाइकें बैठिकें मोहोरी मादे की येक हाथ से पकरि कें आगे बढ़ावै तो मस्ती करे ॥ और येक आदिमी डूरा वंदूष हाथ में रष के ईक दम पड़ा होके वा कितना वेठि कें कितना परिके चलें बैठिकें वंदूष हाथ में ले कें वंदूष अंदाजी करें ॥ और येक महीने तक हर रोज इसी तरह करे ॥ और वादि उसके वषत फजरिके वादि गस्त के आध सेर आटे की रोटी पकाइ के षूव सेकि कें आध पाव घीव में तर करिकैं नर को षवावे वा मादे को इसे कम देइ ॥ और साँझ कों सेर भरि चने नर को षवावे ॥ और आध सेर मादा को देइ ॥ तमामः ॥ मिती फागुन सुदी १३ बुधे संवत् १९१२ ॥ सनि १२६३ फसली ॥ ता० १९ मारिच ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री।

विषय—१ वाजनामा :—(१) पहचान (रंग नेत्र से) तथा भेद, दवाओं का प्रमाण, बलदेना और विविध बाजों को तैयार करने का विधान, (बहेरी, तुरमुती इत्यादि) ऊंचा उड़ाने का तरीका, जुलाब देना, राह साफ करना, औषधियाँ। साफ करने तुरमुती, बाँधने श्याहचश्म, श्याहचश्म आदि का बिठाना बदषोई शाहीन वगैरह, [१—५०]। (२) काबू करना, वयान कुरीज वगैरः, परों का इलाज, मोटा करना, जाड़े में मोटा करना, औषधियाँ। गरमी में मोटा करने का इलाज, बादखोरे का इलाज, जुकाम की दवाएँ, आँखों के इलाज, सिरगिरानी का इलाज, नुसखा के वाअकली। तुखमा तथा आकली की दवाएँ, निनाई का जानना, जानना पर, जानना सीना खुश्क और उसकी दवाएँ। दमा, चोट, खुश्की दिमाग, हिक्का, तनवीर, उगलना तामा, परमोहरा, नेजो की पहचान व

दवाएँ, बाई, जहरबाद, मृगी, पीरवाल, कंतजवाण, पिंडुरी की खाल, मुँह के मस्से, बाद-खोरा, तिल्ली तथा तालू का इलाज, [५१—८७]। २ चांतेनामाः—(३) पहचान, तैयार करना, जुलाब, शिकार, जोश रखना, बीमारियाँ जानना, जुकाम, आँखों का इलाज, सीने की खुश्की, खाँसी, तामा डालने का इलाज, जानना जोकीका, बाई, दवाएँ, मृगी, गर्मी मारे हुए का इलाज, सरदी का सताया, खाज, जख्म, मोच, हड्डी टूटना, रुजका, [८८—१०४]। ३ कुत्ता इत्यादिः—(४) पहचान कुत्ते की, उसका तैयार करना, बच्चालुज पश्मीं। साफ करने कुत्ते के, कुत्ते में जोश रखना, काबू करना वास्तै शिकार के, बीमारी जानना, दाग का जानना तथा उसकी औषधियाँ, जुकाम, नेत्र रोग, खाँसी, बाई, जहरबाद झोलें, मृगी, चोट, गर्मी व सर्दी के मारे हुए की पहचान व इलाज, खुजली, कीड़ों का इलाज, मोच तथा हड्डी टूटने का इलाज और रुजकेका निदान व इलाज। ४ हिरननामाः—(५) पहचान, बयान' फंदीत, झिल्ली की पहचान, बयानमूदे का, हिरन का तैयार करना, तैयार करना झिल्लिये नर, [१०५ —११६]।

संख्या—२३८. बारहमासी ग़दर, कागज—बाँसी, पत्र—८, आकार—८ × ३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ॐकारनाथ जैन, पो० मु०—रुनकुता, तह०—किरावली, जिला—आगरा।

आदि—||अथ बारहमासी लिष्यते ग़दर साल चतुर्दश की ॥ लगी पेम वैसाष लगी एक साहिब पै चीठी ॥ अब तुम होहुसियार लड़ाई मेरठ में बीती ॥ सुनत सब साहब घबराने ॥ धरि दए टोप उतारि करे जिनि हिन्दूनि के बाने ॥ भजे वे झाँकनि में डोले ॥ अपनी गरज के काज बहुत बेनरमी ते बोले ॥ लगु जिनि इन्हें काल कारौ ॥ जब के लोग षराब भयौ वा रोरे को मार्यो ॥

अंत—दीन दयाल विरज के राजा दीन टेक राषी ॥ षबरि लै हर मूसर बारे ॥ तुम बलदेव विरज के राजा के तुमही रषवारे ॥ दीन की काहू विधि राषौ ॥ अब तक टेक रही कारेन की नहीं धर्म्म बिगर्यो ॥ जब के लोग षराव भये वा हौवे को मार्यो ॥ इति श्री गदर की बारहमासी

विषय—प्रस्तुत छोटी पुस्तिका में स्थानीय ग़दर सन् १९५७ का बारह महीने के चित्र खींचने का प्रयत्न किया है।

संख्या—२३९. चित्र मुकुट रानी चन्द्रकिरिनि की कथा, कागज—मूँजी, पत्र—१९, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि काल—सं० १८९५ = १८३८ ई०, प्राप्ति स्थान—पं० मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मन्दिर गोकुल, जिला—मथुरा।

आदि—अथ चित्र मुकुट राजा की कथा लिख्यते। चौपाई धनि २ वे अषियाँ रत-नारी। अलष रूप की दरस भिषारी। जिन वह रूप अनूप निहारा। पाया लाल तज्या संसारा ॥ × × × नाम मुहम्मद के बलि जैये। पहिले अस्तुति उनकी कहिये ॥ अलष

निरंजन को वह प्यारा । वह साहिब तू जानि हमारा ॥ वा कारन विधना संसारा । बहुत जतन करि आप संवारा । उस कूँ लाभ कछु नहि लहिया । उसके कारण दुष सब सहिआ ॥ पाप की बेरी काटन हारा । दूरि करौ दुष दन्द हमारा ॥ चारि यारि की करौ बड़ाई । कहिवे जो कछु कहत न आई ॥

अंतः—चन्द्र किरनि लै चरननि डारी ॥ देष मूष फूली महतारी ॥ मुष देषा तब सीस उठाया ॥ दुष भागा अरु सब सुष आया ॥ अपने २ घर तब आए ॥ घर घर हुवे रहसि बधाये ॥ रहस मन्द लवा जन लागे ॥ सुष पाया अरु सब दुष भागे ॥ इति श्री चित्र मुकुट रानी चन्द्र किरनि की कथा सम्पूर्ण ॥

विषयः—चन्द्रमुकुट राजा शिकार खेलने को जंगल गया और वहाँ एक बहेलिये को राजा ने हंस पकड़ते हुए देखा । राजा को दया आयी और हंस बहेलिया से छुड़ा दिया । हंस प्राणदान पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने राजा को चन्द्रकिरण नामक राजकुमारी के रूप की प्रशंसा सुनाई और उस देश को हंस राजा को ले चला । रास्ते में राजा को घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पर अन्त में चन्द्रकुँवरि को उसने पा लिया, बस यही इसकी कथा है ।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के रचयिता सूफी सम्प्रदाय के कोई मुस्लिम कवि प्रतीत होते हैं, जैसा कि उनके मंगलाचरण से स्पष्ट है ।

संख्या—२४०. चित्तोड़ के राना की पीढ़ी, पत्र—२, आकार—६¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल— सं० १७७४ = १७१७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कुमारपालजी पचौली, स्थान—तरामई, पो० शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी ।

आदि—सीध श्री चीतोड़ का घणनारी पीढ़ी—एतातौ राजा पाछे दीनः पाछे रावलः पाछै राणाः आसामीः बरसः मासः दिनः घड़ीः पलः १ राजा अजै ब्राहरम १६ ६।७—२—० २ राजा बैरम ९ ९ १० ७ ७, ३ राजा बीज रा० २० ० ७ ९ ०, ४ राजा कासेव २५ १ १ ० ७, ५ राजा सुरज ७ ९ १० ० ७, ६ राजा अषैतोष १० १ ९ १ ३, ७ राजा सासत १५ १ ७ १० ६, ८ राजा कोक साह ९१ ३ ६ ६ ६, ९ राजा अनत २५ ० ६ ३ ६, १० राजा पीषड-द ३५ ० ० ० ०, ११ राजा अरक ० ७ ७ ७ ७, १२ राजा सेतान १९ १० १० २० ६ ।

अंत—२३ रावलों की सूची नष्ट—२४ रावल हंसराज, ४० ० ३ ६ ०, २५ रावल जयकरण ४ ३ ६ ६ ३, २६ रावल वैरःड ४९ ३ ६ ६ ३, २७ रावल वैरसी ९ ३ ६ ६ ३, २८ रावल बरसींघ ० ३ ६ ३ ३, २९ रावल सरपत १० १० १० १ ३, पाछ राणो हुवा १ राणो राहप ४० ९ १० ० १, २ राणे नरहु २० ० ४ ४ ०, ३ राणे नमपाल ७ ९ २९ ३ ६, ४ राणो प्रनपल ४१ १० ० ० ०, ५ राणो पीलकूवे राणो राइमल ६ राणो भीमसी राणो सेगर ७ राणो गढ़चढ़ राणो उदसीघ ८ राणो लषमसी राणो प्रताप सींघ ९ राणो हमीर राणो असरसींघ १० राणो षेतो राणो करण सींघ ११ राणो लाषा राणो जगतसींघ १२ राणो मोकल राणो राजसींघ १३ राणो कुंभो राणो अमरसींघ ।

विषय—चित्तौड़गढ़ के राजा, रावल और रानाओं की सूची।

संख्या—२४१. दिल्ली की पातसाही, पत्र—३, आकार—६३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपि काल—सं० १७७४ (१७१७ ई०), प्राप्तिस्थान—पं० कुमारपालजी पचौली, स्थान—तरामई, पो०—शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्री राम जी ॥ श्री गनेसाइ नमः ॥ श्री सरसती नमः ॥ गुरमयो नमः ॥ श्री दली की पातसाही लीषते ॥ एतानो तूंवर तपरा, पाछे चुहांण-तपराः पाछै पठाण तपराः संवत् ८२९ रै बरस दली पात साही हुई, तोरी वगतः वैसाष सुदी १३ दिलीरो मुरत (महूर्त्त?) सन्धेः वरस लग जोत हुवैः जगी मोरत (महूर्त्त?) घट्टो पुल (पल?) साधी, साधेनः सपत धातरी सुवागज षीली सेस नाग रामा थामै गाडीः प्रथम दीली तुवर तपराः तीरो वीगतः

आसामी पैली तुवर	वरस	मास	दिन	घड़ी	पल
१ प्रथम राजा वीसल दे	१९	५	१८	१९	२
२ राजा गंगेव	२९	३	२८	९	६
३ राजा प्रथीमल	१८	६	१९	११	३
४ राजा जदव	२	७	२७	१५	५
५ राजा नर पाल	१५	२	८	३	२
६ राजा उद्र	१४	४	९	९	०

अंत—संवत १६०८ रै जेठ सुदी १३ दिन लड़ाई हुई पठाण भागा मुगलाणो हुवो॥

	वरस	मास	दिन	घड़ी	पल
१ सुरताण तीमर लग	४५	७	२१		६
२ सुरताण बव मुगल	२३	६	२२	१५	५
३ सुरताण हमऊ मुगल	१०	४	१२	१९	१
४ सुरताण अकबर	२६	१	९	१३	१
५ सुरताण जहाँगीर	९	५	८	९	१
६ सुरताण सहाँ जीहा	३५	७	१५	२१	१
७ सुरताण औरंगजेब	१०	५	१८	७५	१०
८ सुरताण आलम साह	८	१	७	३	१
९ सुरताण भोजदीन कुरतुः	१२	३	५	२	१
१० सुरताण फरेक साह	१५	५	५०	८	९

विषय—दिल्ली की गद्दी पर बैठनेवाले राजा तथा बादशाहों की खानदानवार सूची मय उनके राजत्व काल के।

संख्या—२४२. दृष्टांत दशम स्कंध, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण—(अनुष्टुप्)—१५६, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीरामजी शर्मा, करहरा, पो० सिरसागंज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दृष्टांत दशम स्कंध प्र० १ श्लोक ३८ अथ वाव्द शतांते बापा की टीका में द०—एक पंडित चले जाते रास्ता में एक खोपड़ी परी पाई ताकों देखने लगे देखें तो वामें अक्षर लिखे भये हैं तिनकूं बाँचें तो उसमें लिखी ही कै और भी कछु होइगी पंडित विचारन लगे अब जाको कहा करें होयगो फिर परीक्षा के लिये घर लै आये संदूक में धर आप स्नान करने चले गये और स्त्री सूं कह गये इसे मति देखियो कोई दिन बाद दौनों जने में लड़ाई भई जब वे बाहर कूँ गये तब स्त्री ने बिचारी आज तो संदूक देखूँ पीट तौ गयौ ही है सो खोपरी देखि विचारी जिह मेरी सौति की है याही के सोच में मोय मारे है सो वाने कूटि कैं घूरे पै फैंकि दीनी पंडित जी देखि कही कहा करो सो कह दीनों पडित जी ने विचारी जिही हौनहार ही सौ है गई ॥

अंत—अ० ८ श्लो० ३१ सुप्रति को यथास्ते प्राकृत जो चोर की लाली नहीं जानी जाय है तो चोरशिखामणि श्रीकृष्ण ताकी लीला कहा जानी जाय । द० । एक बनिया पच्चीस रुपया में बैल खरीद कैं लै चलौ इतने में दो चोर मिले कहन लगे कि बैल कितने में देगौ वो बोलो पच्चीस रुपया लुंगो चोर बोले दस रुपया बनियाँ ने कही पच्चीस में तौ लायो हूं दस में नहीं दुँगो चोरन कौ सिरदार एक बाबा जी बनों बैठो हो सो चोर बोलो बाबा जी कह दे सो सही बनियाँ बोलो सो अच्छो बाबा जी के पास गये बाबा जी बोलो तेरे १०) नहीं और याके २५) नहीं तीन रुपया ले बनियां ने तीन रुपया लेके विचार करो बनिया चतुर बहुत हो बनिया ने विचार बहुत करो रुपा अदाइ करने चाहियें सो स्त्री बनिकें रास्ता में बैठि गयो रोमन लगो चोर बोले क्यों रोवे तेरे कोई है कि नहीं बनिया बोलो मेरे कोई नहीं है तो चोर ने कही मेरी भावी बनके रहियो परन्तु बाबाजी कह दें सो सही बाबाजी बोले कै मै पावनाओ चोर बोले अच्छो फिर चोर तो चोरी करन चले गये बनियाँ पीछे बाबा जी की छाती पै चढ़ मार पीट के गठरी पुठरी लेके चलो गयो और जि कह गयो कि सारे कल्ल फिर आउंगो इतने में चोर आयो देखें तो बाबाजी ससक रहो है बाबा जी बोलो अरे बांछ तुम कहाँ से ले आये और तुम्हारे सब दंड कमंडल लै गयो सो चोर बोलो चलो ढूंढें इतने में बनिया वैद बनि के आयो चोर बोले तुम कौन बनिया बोला हम वैद हैं चोर बोलो हमारे बाबा जी कूं देखो क्या दुख है बनिया ने नारी देख कही फलानै ठिकाने में पीरो फूल है । × × ×

विषय—दशम स्कंध के कुछ दृष्टान्तों का संग्रह ।

टिप्पणी—ऐसा जान पड़ता है कि इस ग्रंथ में उन कथाओं का संग्रह है जिनके द्वारा कथा कहते समय व्यास श्रोताओं को अपनी ओर आकृष्ट कर सके और लोगों को कथा में रुचि हो । किस स्थान पर कौन दृष्टान्त कहना चाहिए इसका ग्रन्थकार ने उल्लेख कर

दिया है। संभवतः ग्रंथकार स्वयं व्यास थे और अपने ही उपयोग के लिये उन्होंने इन दृष्टान्तों का संग्रह किया है।

संख्या—२४३. कवित्त संग्रह, कागज—मूँजी, पत्र—९८, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—हाथ मैं लकुट कैसी लटक सौं आवै माई, गायन के पाछैं कोटि कोटि छवि धरी है। बाँसुरी बजावै चाह दूनी उपजावै हम कहाँ जाय ब्रज तें हमारी मति हरी है॥ पीत पट सोई प्रीति फन्दनर नारिन कौ मुकुटी की सोभा कछु औरे गति करी है॥ तापे लाई चन्दन की पौरि भाल मोहनि कौ, गोपिन की लाज कैं जसोधा पाछे परी है॥

अंत—वरन वरन तन तरु फूले उपवन; बन सोई चतुरंग संग दल लहियतु है॥ वन्दी जिमि बोलत विरद वीर कोकिला हैं, गुंजत मधुप गान गुन गहियतु है॥ आवै आस पास पुहपन की सुवास सोई, सोने की सुगन्धि मांझ समै रहियतु है॥ सोभा को समाज सेनापति सुप साज आज, आवत बसन्त रितुराज कहियतु है॥ × × ×

विषय—१—रसखान। २—किशोर। ३—प्रेम। ४—सुकवि करीम। ५—आलम। ६—रसिक लाल। ७—अभिमन्यु। ८ प्रसिद्ध। ९—सषी सुख। १०—रघुनाथ। ११—वल्लभरसिक १२—कालिदास। १३—कवि सेष। १४—ईसुर। १५—मंडन। १६—हित ध्रुव। १७—कासी राम। १८—सेनापति। १९—मतिराम। २०—केसो दास। २१—दलपति। २२—गंग। २३—कल्यान। २४—नन्दन। २५—नरोत्तम। २६ मधुसूदन। २७—देव। २८—मकुन्द। २९—बलभद्र। ३०—दिनेस। ३१—शिरोमनि। ३२—बनस्याम। ३३—केशो केशोराय। ३४—ब्रह्म। ३५—परवत। ३६—नाथ। ३७—कस्यप। ३८—ह्रषीकेस। ३९—बिहारी। ४०—नायक। ४१—प्यारे गोपाल। ४२—दयादेव। ४३—बनजू। ४४—मोहन विहारी। ४५—लाल उत्तमचन्द। ४६—सुन्दर। ४७—कान्ह। ४८—मोहन। ४९—चतुर भट। ५०—चतुर्भुज। इन कवियों की चुनिन्दा कविता इस ग्रंथ में आई है। इनमें कई ऐसे हैं जिनको हिन्दी संसार बिल्कुल नहीं जानता और कई के नाम मात्र से हम परिचित हैं पर उनके विषय में हमें कुछ मालूम नहीं है।

टिप्पणी—उपस्थित संग्रह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसकी तिथि ग्रंथ में कहीं प्राप्त नहीं हुई, पर देखने से ज्ञात होता है यह काफी पुराना है। कई कवियों के नाम प्रथमतः इसके द्वारा प्रकाश में आ गए और उनके सम्बन्ध में कुछ न कुछ जानकारी प्राप्त करना वाञ्छनीय है।

संख्या—२४४. कवित्त संग्रह, पत्र—६१, आकार—९ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्रीमयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी गोकुलनाथजी का मन्दिर, गोकुल मथुरा।

आदि—श्री गोपी जन वल्लभाय नमः॥ रूप अनूप दई दयो तोहि तो मान कीये

न सयान कहावै । ओर सुनो यह रूप जवाहिर भाग बड़े बिरले कोउ पावै ॥ ठाकुर सूम के जा तन कोऊ उदार सुने सब ही उठि धावै । दीजिए ताहि दिषाय दया करि जो चलि दूरि ते देखिवे आवै ॥ हार सवारि अनेकन फूल के आई ले मालिन भौन भरे में । काहु को सेत दियो उहि काहु को पीरो दियो रघुनाथ अरे में । नीरज नील को लेकर में कह्यो राधे सों को चतुराई धरे में । लीजिए हेत तिहारे में ल्याई हौ या रंग को लगे प्यारी गरे में ॥

अंत—टूटी जो उखारी रस पुंज की बुखारी सदा स्वाद को सुखारी यदि ओटति कराहियै । फूटी जो कपास कली लूटी लखि भाँति भली मीठा महमूदी चारि खाना चित चाहिये ॥ सन को सड़ाई कर कागद बनाई चारु जोतिस पुरान वेद वाद अवगाहिए ॥ आसा राम देखि दीह लेखे साह साहिन के टूटी फूटी सरी सबै अैसे के सराहिये ॥

× × ×

विषय—१-हरिचन्द । २–ठाकुर । ३–रघुनाथ । ४–देवकीनन्दन । ५-बेनी । ६–सम्भु । ७–मतिराम । ८–कवि कान्ह । ९–बेनीदास । १०–गंग । ११–लछीराम । १२–लोकानन्द । १३–जीत लाल । १४–कमलापति । १५–रससिंध जू । १६–देवदत्त । १७–भगवन्त । १८–पदमाकर । १९–भूधर । २०–कवि साइक । २१–श्रीपति । २९–मीर । २३–उधियारे । २४–आलम । २५–छेदाराम । २६–सबसुख । २७–रसरासि । २८–कवि दम्भ । २९–कविन्द । ३०–भूषन । ३१–ब्रजभूषन । ३२–जसमन्त । ३३–सरसरास । ३४–विहारी । ३५–घन आनन्द । ३६–कासीदास । ३७–निपट निरंजन । ३८–दौलत सिंह । ३९–लोकानन्द । ४०–सेनापति । ४१–कवि सुनत । ४२–निवाज । ४३–बेनी प्रवीन । ४४–सोमनाथ । ४५–तुलसीदास । ४६–लाल कवि । ४७–मनीराम । ४८–नित्यानन्द । ४९–सोभ । ५०–ग्वाल । ५१–चैन । ५२–परहित । ५३–अकबर । ५४–जीमन । ५५–रुद्रमन । ५६–अंगद । ५७–मुकुन्द । ५८–रमताराम । ५९–सुखपज । ६०–केसो दास । ६१–शिरोमनि । ६२–प्रोतीराम । ६३–गहर गुपाल (गोकुल निवासी ग्रंथ मालिक के कथनानुसार) ६४–रहीम । ६५–महमद । ६३–सुन्दर । ६७–हनूमान । ६८–सेवक । ६९–अजवेस । ७०–कवि बोधा । ७१–परमेस । ७२–गोकुल । ७३–आसाराम । इस वृहद् संग्रह में ऊपर लिखित कवियों की चुनी हुई कविताओं का संग्रह है जो बहुत ही उपयोगी है । कुछ कवि तो ऐसे हैं जिनके नाम धाम से हम बिलकुल अपरिचित हैं । संग्रह देखने से बहुत पुराना ज्ञात होता है यद्यपि सन् संवत कुछ नहीं दिया है ।

संख्या—२४५. कवित्त संग्रह (अनु०), रचयिता—२४ कवि, कागज—मूँजी, पत्र—४२, आकार—९½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) —१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४, अपूर्ण, रूप—बहुत प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, गोकुल नाथ जी के मन्दिर के अधिकारी, गोकुल, मथुरा ।

आदि— × × × सुजद सुधा के मीन छाके चहुँवा के छवि कहा उपमा के मृग सावक समा के हैं । भवन भवा के रुचि अवन नवा के दुति कुमुद न ताके कुमुद मुद रमा के हैं ॥

कलित कला के अरु ललित हला के कंज, मंजु अवला के जाके सनि सन साके हैं ॥ नाम नाथसिंह भने मैन सैन अैन आके, चंचल चला के नैन बाँके राधिका हैं ॥

अंत—आज ब्रज गली में विलोके गोप लली एक जोबन उठान सो कुठान जिय भै गई ॥ घूँघट में अटक करेजे अटक रही, चोटी की चटक चोट चाबुक सी कै गई ॥ नैन बान छोड़ते सुमान करी मेरी मति जाने दल सिंघ गति अैसी कछु ह्वै गई। कछु न सोहाए तृन सम तीनो लोक ले—जिआ ते अनदेषी भली देषी दुष दे गई ॥

विषय—१-भवानी राम। २-तुलसीदास। ३-श्रीपति। ४-नामनाथ सिंह। ५-नारायण। ६-रामनाथ सिंह। ७-दीनदयाल। ८-नन्द। ९-मसान। १०-घनस्याम। ११-केसोराय। १२-मदनगोपाल। १३-पदुमन: १४-भूपन। १५-गोपीनाथ। १६-कालिदास। १७-अभिराम। १८-सुजान। १९-गंग। २०-ऊधो। २१-श्रीप्रसाद। २२-सुन्दर। २३-दलसिंह। २४-नवीन। उपर्युक्त कवियों की कृतियाँ प्रस्तुत ग्रंथ में संगृहीत हैं। इनमें बहुत से अज्ञात कवि प्रतीत होते हैं—जैसे दलसिंह, नामनाथ सिंह, रामनाथ सिह, केसोराय आदि। इनकी कविताएँ विनोद तक में नहीं आयी हैं।

संख्या—२४६. कवित्त संग्रह, पत्र—२४, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६८, अपूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—पं० लछमण जी भट्ट बीच चौक, मु० पो० गोकुल, जिला—मथुरा।

आदि—तुम करतार जग रक्षा के करन हार, पूरत मनोरथ हो सब चित्त चाहे के ॥ यह जिय जान सेनापति हू सरन आयो, हूजिये दयाल ताप मेटो दुख दाहो को ॥ जो यों कहो तरे हेंरे करम अनै सै हम गाहक हैं सुकृति भगति लाहे के ॥ आपने करम कर उतरुँगो पार तो पै, हिम करतार करतार तुम काहे के ॥

अंत—निज पति ही के रँग राची रहै आठो जाम, रीस को न काम नैन लाज दरस्यो करै। कहें सुख सिंधु सीतलाई सुघराई अंग दृष्टि पिय पायन के पंथ परस्यो करै। मुख अरविन्द ते रसीले वैन बोले जब, जाने सुख कन्द यो सुधा सौ बरस्यौ करै। नवल छबीले नन्दलाल प्राण प्रीतम को, नेह नवनारि कहिये में सरस्यो करै ॥ × × ×

विषय—१-सेनापति। २-पदमाकर। ३-कविसिंह। ४-दास जू। ५-राम जू। ६-दत्त कवि। ७-शिव कवि। ८-शंभु। ९-आलम। १०-हरिजन। ११-मनिराज। १२-मतिराम। १३-नीलकंठ। १४-ठाकुर। १५-मकरन्द। १६-रसखान। १७-दूलह। १८-कविराज। १९-कविन्द। २०-चिन्तामनि। २१-सरदार। २२-घनश्याम। २३-बोधा। २४-देव जू। २५-गंग। २६-पूरवी। २७-ईश्वर। २८-दयादेव। २९-प्रवीनराय। ३०-नवी कवि। ३१-अहमद। ३२-कालिदास। ३३-ठाकुर। ३४-श्रीपति। ३५-रघुनाथ। ३६-भूधर। ३७-भंजन। ३८-प्रसाद। ३९-सोमनाथ। ४०-भूषण। ४१-नवनीत। ४२-बलभद्र। ४३-हरिकेश। ४४-कान्ह। ४५-लाल। उक्त कवियों की कविताओं का इसमें संग्रह है।

संख्या—२४७. कवित्त संग्रह, रचयिता—विभिन्न कवि, कागज—स्यालकोटी, पत्र—६, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७६, अपूर्ण, रूप—अर्वाचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर, मु० कठवारी, पो० अछनेरा, जिला—आगरा।

आदि— × × × रेल की सवारी ते सवारी सब हारी परी, मारी परी सेषी सब इंद्र के विमान की। आँधी की दादी और नानी है भमूरे की, भुआ कलानन्द की औ बहिन बड़े भान की। गाड़ी रथ घोड़ा ऊँट डाँक ऊ सब परी झूँठ, ग्वाल कवि कहैं जे है मौसी हनुमान की। पानी की प्यासी और ज्वाला की सरीखनी, धन की है दाता जे है माया भगवान की।

अंत—काहे को मान करै मन में बन में बनिता हमको बहुतेरी। एक ते एक अनूप त्रिया जाने कौन सूँ आस लगी रहे मेरी। घेरे रहैं घर बाहर लों पुनि न्यो निसि वासर साँझ सवेरी। तेरी सौं तोसी अनेक त्रिया पर आमति है औसेर सी तेरी। मोती तूँ क्यों रुठियो कहा दुखामत मोइ। अष्ट पहर चौंसठ घरी, सब सुख सौंप्यो तोइ। × ×

विषय—भिन्न भिन्न विषयों के कवित्तों का संकलन है।

टिप्पणी—ग्वाल, मतिराम, देव आदि कवियों की कविताओं का संग्रह है।

संख्या—२४८. कवित्त सार, कागज—मूँजी, पत्र—२६१, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२००, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मयाशंकर जी, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ उत्सव मिलन प्रथम बसन्त वर्णन। कवित्त आगम बसन्त रसवन्त प्रिय परजन बन, उपवन सोभा सम्पति सौं छायो है। सुरुर कुसुम जल छिरक पराग बूँका, बन्दन कपूर लै गुलाल लपटायो है। अरस परस राधा रमन सुमन गेंद, सषिन समाज साज षेल त्यो मचायो है॥ नैननि नचाइ भौंह भेद सतराइ प्यारो कंदुक चलाइ मनोहरन बचायो है॥

अंत—पीरी परी देह छीनी राजत सनेह भीनी, कीनी है अनंग राग अंग रंग बोरी सी। नैन पिचकारी ज्यों चलोई करै रैन दिन, बगराये बारन फिरत झकझोरी सी॥ कहाँ लौ बषानौ घन आनन्द दुहेली दसा, फागुन ई भई जान प्यारे वह भोरी सी। तिहारे निहारे बिन प्रान न करत होरी विरह अगारिन में गारी हिये होरी सी॥ × × ×

विषय—१-पद्माकर। २-भगवन्त। ३-पजनेस। ४-निहाल। ५-भूधर। ६-राजाराम। ७-दयादेव। ८-सेनापति। ९-भंजन। १०-आलम। ११-मनिराज। १२-सोमनाथ। १३-ठाकुर। १४-द्विज भूप। १५-मोतीराम। १६-ब्रह्म। १७-रसानन्द। १८-घन आनन्द। १९-भूधन। २०-श्रीपति। २१-ससिनाथ। २२-बृजनाथ। २३-बदुनाथ। २४-मकुन्दलाल। २५-लाल। २६-ग्वाल। २७-मतिराम। २८-कविन्द। २९-उदयराम। ३०-कासीराम। ३१-देव। ३२-ऊधोराम। ३३-हलस्याम। ३४-तोष। ३५-वल्लभ रसिक। ३६-सखी सुख। ३७-विहारी। ३८-

मनोहर। ३९–बैनी। ४०–कालिदास। ४१–निरंजन निपट। ४२–रसिक किशोर। ४३–हितध्रुव। ४४–नवल विहारी। ४५–मतिराम। ४६–दास गोपाल। ४७–सुन्दर। ४८–व्रजचन्द। ४९–सेखमनि। ५०–वंशीधर। ५१–लछिदास। ५२–ईसुर। ५३–नन्ददास। ५४–मंडन। ५५–रसखान। ५६–केशवराइ। ५७–देवराम। ५८–मीर। ५९–केशव। ६०–धुरंधर कवि। ६१–नन्दराम। ६२–वल्लभ रसिक। ६३–चन्द्र। ६४–शेख। ६५–कविगोवर्धनदास। ६६–राधावल्लभ। ६७–भूपति नरेन्द्र। ६८–नवीन। ६९–रघुनाथ। ७०–भरमी सुकवि। ७१–बुद्धिराम। ७२–गुमान। ७३–चन्द्रभान। ७४–दत्त। ७५–महेश। ७६–किशोर। ७७–कृष्ण। ७८–उधोराम। ७९–नरोत्तम। ८०–भीस सैन। ८१–श्रीमनि। ८२–नीलकंठ। ८३–चिन्तामनि। ८४–बलभद्र। ८५–नूर। ८६–सिरोमनि। ८७–सादी कवि। ८८–गोप। ८९–मुरली। ९०–बुध। ९१–रस आनन्द। ९२–प्रेम। ९३–ठाकुर। ९४–दूल्हा। ९५–सुकवि रमेस। ९६–चन्द्रमणि। ९७–गंग। ९८–चतुर प्रवीन। ९९–दयानिधि। १००–पुषी। १०१–स्याम। १०२–गुपाल। १०३–बदन। १०४–मनमोहन। १०५–तुलसी। १०६–जालम। १०७–रहीम। १०८–कल्यान। १०९–अभिमन्यु। ११०–कवि नायक। १११–जदुनाथ। ११२–चतुर कवि। ११३–गोविन्द। ११४–रसनिधि। इन कवियों की स्फुट कविता इस ग्रन्थ में आयी है।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ खोज मेंअत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें प्रायः ११४ कवियों की रचनाएँ संगृहीत हैं जो बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। इनमें कई कवियों की कृतियाँ अप्राप्य हैं अथवा नाम मात्र को अभी तक मिली हैं और कई कवियों से बिल्कुल अपरिचित हैं। हमने परिश्रम से प्रायः सभी कवियों के नाम ग्रन्थ से चुनकर दे दिए हैं।

संख्या—२४९. कवित्तों का स्फुट संग्रह, रचयिता—१०४ कवि, कागज—मूँजी, पत्र—१०८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ जी का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—× × × अकबर पायो भगवन्त के तनय सौं बहुरिकै–जगतसिंह महा मरदाने—सौं॥ जहाँगीर पायो महाराज महासिंध जू सों, साहि जहाँ पायो जै साहि बर बाने सौं। अब अवरंगजेब पायो रामसिंग जू सों, औरो दिन दिन पैहैं कूरम के माने सौ॥ और राजा राय मान पामें पातसाहिन सौ, पामे पातसाह मान मान के घराने सौ॥

अंत—काम नवला सी किधौं वरुन की फाँसी यह, किधौं प्रेम डंड जामे कोटिक विलास है। किधो है मनाल यह जाकी अद्भुत गति, जामे परि विधि भ्रमो अन गन मास है॥ किधौं काम बाग की कल्पलता नूर कहि, किधो सोभियत प्यारी भुज को विलास है॥ सुन्दर सुहावनी है चित को चुरावनी है, नैन सियरावनी है सुख को निवास है॥

विषय—१–सूरत। २–ज्ञानराय। ३–घनआनन्द। ४–हरिकेस। ५–हिम्मत नरेस। ६–केसव। ७–भूषण। ८–देवीदास। ९–घासीराम। १०–नवलेस। ११–रसखान। १२–

सोमनाथ । १३-मोती । १४-सोभ । १५-देव । १६-कवि पुषी । १७-ससिनाथ । १८-सोमनाथ । १९-मंडन । २०-नाथ । २१-बैनी । २२-भवसिंध । २३-चिन्तामणि । २४-गंग । २५-नारायण । २६-कविन्द । २७-सदानन्द । २८-प्रवीन । २९-सम्भु । ३०-सुजान । ३१-आलम । ३२-मुनिराज । ३३-नायक । ३४-कवि दास जू । ३५-नरिन्द । ३६-भोगीलाल । ३७-वीर । ३८-लाल कवि । ३९-लालमनि (?) ४०-हरराम । ४१-मधुसूदन । ४२-परवीन । ४३-पुरुषोतम । ४४-छत्रसाल । ४५-उदयनाथ । ४६-मनिराम ४७-जयराम । ४८-शेष । ४९-दयादेव । ५०-रसिक । ५१-रघुनाथ । ५२-सुमेर कवि ५३-सोभालाल । ५४-कल्यान । ५५-सन्तन । ५६-कवि सिद्धि । ५७-घनश्याम । ५८-भूधर । ५९-सूदन । ६०-कासीराम । ६१-कालिदास । ६२-गोविन्द । ६३-पुहकर । ६४-बालकृष्ण । ६५-हरिकृष्ण । ६६-हरिदेव । ६७-सषीसुष । ६८-दास भैरों । ६९-विहारी । ७०-साहिनराम । ७१-श्रीपत । ७२-हरिवेश । ७३-नरोत्तम । ७४-चतुर । ७५-नूर । ७६-नीलकंठ । ७७-जैन दी महम्मद । ७८-मंडन । ७९-गंगापति । ८०-मुरली कवि । ८१-भगवन्त । ८२-सिपह दरषान । ८३-मनिकंठ । ८४-ऊधोदास । ८५-जगतीस ८६-ऐन कहैं । ८७-श्रीमन । ८८-बलभद्र । ८९-ईस । ९० ब्रह्म । ९१-तारा कवि । ९२-काशीमणि । ९३-रस आनंद । ९४-तोप । ९५-ग्वाल । इन कवियों की कविताएँ इस संग्रह में आयी हैं ।

विशेष ज्ञातव्य-प्रस्तुत ग्रंथ बहुत बड़ा है और इसमें प्रायः ९५ से अधिक कवियों की कृतियाँ संगृहीत हैं । इनमें कई कवि ऐसे हैं जिनका हमें कुछ भी परिचय नहीं है, पर कविता के पढ़ने से ज्ञात होता है कि वह प्रतिभाशाली है । बहुत सी ऐसी कविताएँ आयी हैं जो आज दिन अनुपलब्ध हैं । कई राजा महाराजाओं एवं आश्रयदाताओं का वर्णन कवियों ने किया है जो इसमें बहुतायत से पाया जाता है । ग्रंथ का अध्ययन कर प्रायः सभी कवियों के नाम परिश्रम से छाँट लिये हैं, कुछ ही रहे होंगे । संग्रह अत्यन्त उपयोगी है । ऐसा संग्रह सर्वसाधारण की पहुँच में होना चाहिए जिससे इच्छानुसार लाभ इससे उठाया जा सके । सभा इसकी लिपि करा ले तो बहुत अच्छा हो ।

संख्या—२५०. कवित्त सवैया संग्रह (अनुमानिक), रचयिता—विभिन्न कवि, कागज—सादा, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६०, अपूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्रीबाबूलालजी शर्मा पथवारी का नुक्कड़, धूलियागंज—आगरा ।

आदि—तारे है गिरजा लाल चन्दन रसाल जाके सिखी हेत देत नेत सीक्षा सकारे हैं ॥ सकारे हैं सन्त एक दन्त नित ध्यान धरैं, गन्ध अक्षतादि लै लै आरती अधारे है ॥ धारे हैं सीसचन्द ईश के अनन्द कन्द, रचि रचि सुछन्द दन्त खलन संघारे हैं ॥ गारे हैं गंजन त्रिकाल के कराल जाल, श्री गणेश जी के चरण लागे तृण तारे है ॥

अंत—कवित्त कोमल कमल पद राजत रजत रुप, रवि की किरण संग ज्योति के धरन हैं ॥ सुधा सों सुधारे औ निहारे है विधाता विधि, वरन सत्य गुण कारन करन है ॥

देवता अदेव नित्य प्रत करै जाकी सेव, सन्त औ असन्तन के दारन दरन हैं ॥ कहैं कविराय निसि द्यौस ही सहाई जग दम्बा के चरन मेरे दुख के हरन है ॥

विषय—इसमें फुटकर कवित्तों तथा सवैयों का संग्रह है । १–गणेश वन्दना । २–कालिका देवी के कवित्त । ३–दंगल में कहने के वीर-रस सम्पन्न ओजस्वी कवित्त । ४–महादेव जी की स्तुति । ५–भैरव की स्तुति । ६–गंगाजी की स्तुति । ७–पंजाबी में शिव जी के कवित्त । ८–सावन वर्णन । ९–बसन्त वर्णन । १०–उपदेशात्मक कवित्त । ११–पैसा के सम्बन्ध में कवित्त । १२–तरकश के वर्णन में कवित । १३–हनुमान की स्तुति । १४–शीत ऋतु के कवित्त । १५–राधा जी का वर्णन । १६–कृष्ण के कवित्त । १७–सर्व रस । १८–काशी महिमा । १९–चरस भंग के कवित्त । २०–फुलवारी वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में विभिन्न कवियों के कवित्त सवैयों का संग्रह है ।

संख्या—२५१. ख्याली दंगल (अनुवाद), रचयिता–(विभिन्न ख्याली), कागज़—स्यालकोटी, पत्र—२४, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) २८, परिमाग (अनुष्टुप्)—६७२, अपूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री जगन्नाथ प्रसाद वैद्य, नूरी दरवाजा, आगरा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—रंगत लंगड़ी में । मुन्शी नारायन प्रसाद कायथ शाहजहाँपुर निवासी कृत ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ आने के हज़रते जिनूँ के बने हैं हम दीवाने से ॥ मस्ताने से हो गये इश्क के एक पैमाने से ॥ ताने से गम नहीं न मुतलक खुशी सिरफ फरमाने से ॥ धमकाने से न डर न मजा गले लिपटाने से ॥ जाने से जी के न खौफ़ नहीं मुतलक उर्म बढ़ाने से ॥ शरमाने का काम क्या जब हम हुए बिगाने से ॥

अंत—सताना बेगुनाहों का नहीं अच्छा सितम करके । खुदा के वास्ते बख्शो हमें जालिम रहम करके । लवों पर जान आई है तपिस से तिशनगी करके । पिला दो आब थोड़ा सा मेरे ऊपर रहम करके । हमें हज़रत अली ने गोद में बरसों खिलाया है । औ बीबी फातमा ने दूध बरसों ही पिलाया है । मदीने में मुसलमान कुल मुझे ईमा समझते हैं । खुदा ने दीनदारों का मुझे अफ़सर बनाया है ॥ × × ×

विषय—१–प्रेमी और प्रेमिका । २–वियोग वेदना । ३–यार की मुहब्बत । ४–लैला-मजनू । ५–शीरीं फरहाद । ६–दुखी । ७–सच्चा प्यार । ८–दिल की दुकानदारी । ९–बाग, यौवन और वसन्त का वर्णन । १०–ईश प्रार्थनाएँ । ११–संसार की नश्वरता एवं माया । १२–हुसैन का करबला में कत्ल ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत अपूर्ण ग्रंथ में निम्नलिखित रचयिताओं की रचनाएँ हैं :—
१–मुंशी नारायण प्रसाद, २–मुंशी जगन प्रसाद, ३–लछमन प्रसाद, ४–अजुद्धीराय । ५–पं० पन्नालाल, ६–पं० रूपराम । मुंशी नारायण प्रसाद को छोड़ कर अन्य सभी आगरे के निवासी बतलाए जाते हैं ।

संख्या—२५२. कीर्तन, पत्र—१०२, आकार—१६ × १३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन जिल्द, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री जमनादास जी, नवा मन्दिर पुजारियों का, गोकुल, मथुरा ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः रागदेव गंधार, ब्रज भयो महरि के पूत जब यह बात सुनी। सुनि आनन्दे सब लोक गोकुल गणक गुनी॥ ग्रह लगन नछत्र बल सोधि कीनी वेद धुनी। ब्रज पूरब पूरे पुण्य रोपी कुल सिथर थुनी॥ सुनि धाई सब व्रज नार सहज सिंगार किये। तन पहिरे नव तन चीर काजर नैन दिये॥

अंत—राग सारंग राखी बाँधत जसोदा मैया॥ विविध सिंगार किये पट भूषन, गिरधर हलधर मैया॥ वदन चूमि चुच कारि हियो भरि, पुनि २ लेत वलैया॥ नाना भाँति भोग आगे धरि, कहति लेऊँ दोउ भैया। करिके तिलक आरती उतारत, अति हरषित मन मैया॥ केसो जन प्रभु गिरधर चिरजीवो, सकल घोष सुख दैया॥ इति श्री कीर्तन।

विषय—

जन्माष्टमी की बधाई	१६३	पद	रास के पद	१०७	पद
पालने के पद	४७	,,	मुरली के पद	३६	,,
ढोंटी (? ढाढ़ी) के पद	१७	,,	धनतेरस	४	,,
छटी के पद	६	,,	रूप चौदस	६	,,
दस्ठोन के पद	४	,,	दीप मालिका	५	,,
मास दिन चौक के पद	३	,,	हटरी के पद	१२	,,
अन्न प्रासन	४	,,	कानज गाइबे के पद	३	,,
कर्ण बेध	६	,,	गोवर्द्धन पूजा तथा अन्नकूट	६१	,,
बाल लीला	५९	,,	गाइ को खिलाना	१०	,,
राधा अष्टमी के पद	५४	,,	इन्द्रकोप पद	४२	,,
राधा जी के पालने के पद	३	,,	भाई दूज के पद	५	,,
दान के पद	२२१	,,	गोपाष्टमी	१६	,,
वामन जी के पद	९	,,	देव प्रबोधिनी	११	,,
साँझी के पद	७	,,	ब्याह के पद	३८	,,
नव विलास पद	८	,,	श्री गुसाई जी की बधाई	१६३	,,
विजय दशमी पद	२१	,,	बसन्त के पद	१४२	,,
करखा के पद	२४	,,	धमार के पद	३४८	,,
डोल के पद	३५	,,	रथयात्रा	३६	,,
फूल मंडली	३३	,,	मलार के पद	८४	,,
रामनवमी	१६	,,	हिंडोरा	२०७	,,
श्री आचार्य महाप्रभून की बधाई	१५४	,,	पवित्रा के पद	३०	,,
अक्षय तृतीया	७	,,	रक्षा बंधन के पद	२०	,,
नृसिंह चतुर्दशी	६	,,			
स्नान यात्रा	५	,,			

विशेष ज्ञातव्य—अष्टछाप, विट्ठल, गोविन्द प्रभु, व्रजपति, लाल, जन गोविन्द चतुर-विहारी, कल्यान, रामदास, मुकुन्द, गदाधर, हरिनारायन, स्यामदास, भगवान हित राम राय, दास गोपाल, केसोदास, रसिक-प्रीतम, गिरधर दास, कल्यान राय, किशोरीदास, लछिराम, रघुनाथ, रसिक सिरोमनि-रसिक राइ, आसकरन, अग्रदास, माधोदास, कृष्णजीवन, लाल-दास, विष्णुदास, माधोदास, रसिक-राय, हरि कृष्णजीवन लछिराम, मोहनदास, जनदयाल, रामराय, मथुरा। उपर्युक्त पद-रचयिताओं के पद इसमें आए हैं। इनके अतिरिक्त भी कुछ होंगे जिन्हें ग्रन्थ मालिक की अधीरता के कारण नहीं छाँटा जा सका। यह पदों का बड़ा ही सुन्दर संग्रह है।

संख्या—२५३. लीलाओं के पद (अनुमान से), रचयिता—कविगण, पत्र—१६, आकार—१० X ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० मंगलसिंह, मु०—कराहरी, पो०—सुरीर, जिला—मथुरा।

आदि—राग कल्याण जमुना किनारैं री किनारै बनवारी, प्यारो धेनु चरावैं। मैं जमुना जल भरन जात ही वंसी बजा विरमावै। कवित्त, लाल ई लाल के लालई लोचन लाल ही के मुष लाल ही बीरा। लाल बनी कटि काछनी लाल के लाल कै सीस मुकेसी चीरा। लाल ई बागो सोहत सुन्दर लाल ठडे जमुना के तीरा। गोविन्द प्रभु की सोभा निरपत लाल के कंठ विराजत हीरा।

अंत—राग मल्हार ॥ श्याम सुनि नियरे ही आयो मेह। भीजेगी मेरी सुंग चुनरी ओढ़ पीताम्बर देह। दामिन सो डरपति हूँ मोहन, निकट आपने लेहु। कुम्भनदास लाल गिरधर सो, बाढ्यो है अधिक सनेह।

विषय—१-पनघट लीला, १-५। २-पीरी पिछोरी लीला, ६-९। ३-रासगीत, १०-१३। ४-फूल डोल, १४-१६। निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ इस ग्रंथ में आयी हैं। कुम्भनदास, सुन्दर, गोविन्द प्रभु; महबूब, नागरीदास, मीरा, लछीराम, श्री विट्ठल, परमानन्द, सूर, नन्ददास, व्यास स्वामिनी।

विशेष ज्ञातव्य—बहुत से भक्त कवियों के सुन्दर पदों का संग्रह है।

संख्या—२५४. लुकमान के उपदेस, कागज मूँजी, पत्र—८, आकार—९ X ३१/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण—(अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन सुंदर अक्षर, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण जी, मु० पो०—कोसी, जिला—मथुरा।

आदि—ये उपदेस के वचन जो लुकमान हकीम ने अपमे पुत्र तै कहे है॥ जो कोइ इनकी रीति सौ चलै सौ बहुत चतुर होइ॥ हे पुत्र ईश्वर की भक्ति में सदैव रहिये १ बिना उद्देश भली कि मुष ते कोई वचन न काढ़िये॥ मन का भेद काहू को न दीजिये॥ स्त्री अर बालक जो कहें ताकी परतीत न करियै॥ और इनको भेद मन का न कहिये॥ लुगाइन ते बहुत हित न राखिये॥

अंत—बुरे कूँ सिष्या मति करौ ॥ ताज दसमी मैं यह लिख्या था ॥ अपने से छोटा होइ जिस पै दया राषौ । वृध के कहने को सीलता राषो ॥ और उनका आदर सत्कार करो ॥ वृद्धपन का काम ज्वान अवस्था में मति करौ वृद्धपन तै डरपौ मति ॥ जी जब थोरो समझो ॥ इह हवाल नव सेर पात साह.की दस ताज में लिषा था ॥ संपूर्ण ॥

विषय—नीति और सदाचार का उपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—नवशेर बादशाह की दश ताज नामक फारसी ग्रंथ में जगत धन्वन्तरि लुकमान हकीम के उपदेश लिखे हैं । इसी ग्रन्थ के एक भाग का यह भाषान्तर है । इन उपदेशों का फारसी साहित्य में उसी तरह सम्मान है जिस तरह चाणक्य नीति और विदुर नीति का संस्कृत में । उपदेश उच्चकोटि के हैं ।

संख्या—२५५. महरी मुनस की कथा, कागज—मूँजी, पत्र—८, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मौनी साधु, सांधनखेड़ा ।

आदि—॥ अथ महरी मुनस की कथा ॥ चौपाई, बांमण एक नग्र में रहे ॥ अगम निगम की बातें कहे ॥ पर ताकी महरी अति पोटी ॥ पकड़े मूँड़ उपाड़े चोटी ॥ झूठ नही यह विश्वा बीस ॥ पनही तोरे पति के सीस ॥ कहूँ कहा भारी दुप पायो ॥ तब तिरिया सो बात न आयो ॥

अंत—छुरी जो बसै नाकी होइ ॥ तौ कहा बेटन बाढ़े कोइ ॥ राज कुवस्त्र सों तोरयो तागा ॥ भूत भिया हो मारग लागा ॥ दोहा, बाग्रीदा कही क्यों बनैं, मिसरी काढ़ि गिलूण ॥ भूत हूँ भागैं बुरे ते, मांणस वपुड़ो कौण ॥ महरी मुनस की कथा समाप्त

विषय—इसमें एक पढ़े लिखे पंडित की दुर्दशा, उसकी स्त्री ने कैसी कर रक्खी थी, बतलायी है । तात्पर्य यह है कि वेदान्ती और त्यागी ब्राह्मणों की भी माया बुरी तरह दुर्गति करती है ॥

विशेष ज्ञातव्य—साँधन खेरे में एक मौनी साधु से भेंट हुई । उन्हीं के पास इस ग्रंथ का नोटिस लिया । वे अपना पता न बता सके कारण कि वे सदैव रमते रहते हैं ॥

संख्या—२५६. मानस दीपिका (काव्यांग), पत्र—२६, आकार—१० × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) —१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२८, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मोहनलाल जी, स्थान—बैजुआ, पो०—अराँव, जिला—मैनपुरी ।

आदि—आदि के ३४ पृष्ठ लुप्त—३५ वें पृष्ठ से उद्धृत—अथ शब्दालंकार छेकानुप्रास यथा ॥ भये प्रगट कृपाला परम दयाला कौसिल्या हितकारी अथ वृत्तानुप्रास एक वरन ॥ बहु ॥ यथा ॥ कहि जय जय जय रघुकुल केतु अथ ॥ अथ लाटानुप्रास ॥ एक पद बहुत वेर आवै ॥ यथा ॥ भव भव विभव पराभव कारिनि ॥ वैदरभी गौनी पंचाली एहू रीति क्वचित् मते है ॥ अथ यमक ॥ एक शब्द द्वै बार आवै ॥ यथा भये विदेह विशेषी अरु और यमक भेद चारों चरन अर्ध अर्ध को अर्ध इत्यादि ॥ अथ अर्थालंकार ॥ जाको वरनन सो उपमेय जाको उपमादेइ सो उपमान समता कारक वाचक धर्म दूनो मो जो रहैं ॥ चारों होइ तहाँ पूरन उपमा यथा ॥ तरुन असन अंबुज सम चरना ।

अंत — × × ×

कमल बंध

धरु धरु मारु मारु धरु मारू ।
सीस तोरि गह भुजा उपारू ॥

अहि बंध

बंदौ पवन कुमार,
पल वन पावक ज्ञान घन ।
जासु हृदै आगार,
वसहि राम सर चाँप धर ॥

विषय—तुलसी कृत राम चरित्र मानस में वर्णित छन्दों के लक्षण, अलंकार और प्रस्तारादि वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में रामायण में आये हुए कुछ छन्दों के लक्षण और प्रस्तारादि वर्णन के साथ ही साथ कुछ अलंकारों के लक्षणादि पर भी विचार किया गया है । उदाहरण सभी रामचरित मानस के हैं । ग्रंथ आदि से खंडित है और उसके अन्त में कुछ चित्र काव्य भी दिया गया है । रचयिता के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं होता ।

संख्या—२५७. मानस दीपिका कोश, पत्र—२५, आकार—१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, खंडित, रूप—पुराना जर्जर, गद्य, लिपि–नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० सोहनपालजी, स्थान, बैजुआ, पो०–अराँव, जिला–मैनपुरी ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मानस दीपिका कोश लिख्यते ॥ बंदे श्री जानकी जानिं जगज्जन्मादि कारणं । जावालि पक्ष नेतारं जागरूक जयावहं ॥ १ ॥ दोहा ॥ कोश कटी सुवरन असी, लसी कसौधी पानि । रामायन रन भूजसी, भ्रमरि प्रसीसहि हानि ॥१॥ ॥ २ ॥

अनुग्रह = सदादया, अलौकिक = लोक में जैसा दूसरा नहीं, अरुण = लाल रंग वा सूर्य को सारथी वा सूर्य, अछत=रहते, अयन=घर, अनुसरहीं औ अनुहरत, अविरोधा = अनुसार, अनुराग=प्रीत वा अल्प ललाई, अमिय मूरि = सजीवन जड़ी, अनहित=शत्रु वा बुरा, अकथ = जो कहि न जाय, अघ = पाप वा दुख ।

अंत—महिसुर औ महिदेव = ब्राह्मण, मयन औ मनोज औ मदन औ मनसिज औ मनोभव औ मनमथ औ मनजात औ मनोभूत = काम, मज्जहिं = नहाइ, मराल = हंस, मति = बुद्धि, महिषेस = जमराज वा महिषासुर, मग = मगह देश वा रास्ता, मरु = निर्जल देश, मनुज = मनुष्य, मधुर = मीठा वा सुन्दर, मद = अभिमान वा मदिरा, मधुकर औ मधुप = भँवर, मरजाद = हद्द वा रीति, मर्कट = बानर ।

विषय— तुलसी कृत रामायण के कठिन शब्दों के अर्थ ।

संख्या—२५८. मंत्र संग्रह, कागज—स्याल कोटी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५२, अपूर्ण, रूप—नवीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० छिछीलाल हे० मा०, मुकाम—अरुआ खास, पा०—अछनेरा, तह०—किरावली, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—गुरसठि गुरसठि गुरै नीर गुरु सायर सेरुं गुरु लखमी गुरु तंत्र मंत्र गुरु अखै निरंजन गुरु बिन होम जाप नहि कीजै हो बलिहारि गुरु तिहारि आहु छे कूँ सीगीं पूहुँ औनें गौनें जेगर दीजै आठहु चौदश करतो ज्ञान जो जानैं संसारा वेई अवगुन पूजै गनपत देई गनपत पूजै कहाँ परेई एक फूल गन नायक दीजै दुजोलै सरस्वती यै दीजै तीजो लै माई वापै दीजै चौथे लै हनुमान दीजै हमई सरस्वती हमई पती हमकूँ दीजै विद्या भाव उठौ सरस्वती करौ कमाव डौरु छूटि जटा में पडै जौ चढ़ि लावै ॥ हे कंकाल महाकाल जइयों रे विष समुद पताल । समुद पाताल की बाजी घांटी नाहर सिंह विष हो जा गोबर माटी ॥ फुरो मंत्र ॥

अंत—पीरी सिरसों कारी बेनी नै बाँधो छत्तीसों नैंनी उड़त पखेरु बुंधियो पर बन्धो अकाश आई अक्खी खुल जाय नही बाबा सी धव सीधे की आनि बाबा गुरु गोरख नाथ की अनि मेरी उसारी आँखि उखें न दुखें अमुक समय तक होय न पीर। दर्द पीर को खेंचि बाँधि बाबा हनुमन्त वीर० पु० १४० पाप दोष सब करौ छैः बाबा राम दास की जै फुरो मंत्रो ॥ × × ×

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में १४० मंत्र नागरी में दिये हुए हैं । १-गुरु के मनाने के मंत्र, २-सिंदूर चढ़ाना, ३-बिच्छू साँप का मंत्र, ४-आँचर पकने के उपचार का मंत्र, ५-दुखती आँख का मंत्र, ६-डाढ़ के कीड़े के मंत्र, ७-रतुवा फोड़े का मंत्र, ८-बच्चों की पसली का, आधा, सीसी, बद, करवराई, ततैया काटने पौहौ (ढ़ोरो) के छँछूदर मारने, उनके जरा खा जाने, भौरी खा जाने, एकतरा ज्वर, कुत्ता काटने, सूअर के घाव, खून बंन्द करने का, घाव बाँधने, अपनी रक्षा के मंत्र तथा मोहिनी । भूत का नजर लगने का, आग से जले का, साँपों के मंत्र, हथियार की धार बाँधने का, माथे के दर्द, गर्भपात रोकने, बावल कुत्ते का, घोंटू, कमल बाय, तिजारी, पाण्डु, बैलों के फार लगने, थाली बाँधने, थाली खोलने आदि के मंत्र ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ बड़ा ही मनोरंजक है। रचयिता भिन्न २ गुनिया लोग हैं ।

संख्या—२५९. मंत्र तंत्र (अनुमानिक), रचयिता—भिन्न२ गुनिया, कागज—बाँसी, पत्र—१८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्) ४०५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—वि० १८९४ = (१८३७ ई०), प्राप्तिस्थान—श्री पं० शिवशंकर जी शर्मा, मु० पो०—अछनेरा, तह० किरावली, जिला—आगरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि —मंत्र मथवाइ का, ॐ नमो आदेश गुरु कूँ बाल में बाल कपाल कपाल में भेजी मे भेजी कीड़ा कीड़ा करै न पीड़ा सोने का सला वारूँ परकौ हतो डाइसुर घड़े गो राजा तोड़े इनकौ श्री महादेव जी तोड़े सबद साँचा पिंड काँचा फुरो मंत्रो ईस्वरो वाचा ॥ विधि भबूति सै आँकि जे ७ वेर ॥

अंत—कामरु देश कमक्षा देवी जहाँबसै इस्माइल जोगी, इस्माइल लगावै बारी, फूल चुनै नौना चम्बारी जो सूघें फूलन की बास सो चले आवै मेरे पास मोंसो चित्र अन्न कैं धरे गर्दन तोड़ जमीं में करै मार मार मुहमदा पीर चौकी जती हनुमन्त जी की आन नहीं मानै तो मुहमदा बरि की आन ॥

विषय—मंत्र तंत्र इसमें लिखे हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ बड़ा ही मनोरंजक है ॥

संख्या—२६०. नित्य कीर्त्तन, रचयिता—कविगण, कागज—देशी, पत्र—१८७, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८४३ वि०—१७८६ ई०, प्राप्ति स्थान—श्रीयुत ध्यानदास जी, महाप्रभून की बैठक, मु०—करहैला, पो०—बरसाना, जिला—मथुरा ।

आदि—श्रीकृष्णाय नमः ॥ राग भैरों, प्रात समै उठ करिये श्री लक्ष्मण सुत गान । प्रगट भए श्रीवल्लभ देत भक्तनु दान । श्री विठ्ठ लेश महाप्रभू के निधान । श्री गिरिधर गिरधर उदय भयो भान । श्री गोविंद आनन्द कन्द कहां वरणो गुण गान ॥ श्री बालकृष्ण बाल के रूप ही सुहान । श्री गोकुलनाथ प्रगट भयो मारग बखान । श्री रघुनाथ लाल देख मन- मथ लजान ।

अन्त—राग जै जै वन्ती ॥ तेरो तो कन्हैया कारो मेरो राधा गोरी है । अति ही स्वरूप मानो चन्दा जैसी उजियारी है । चम्पा जैसी कली मानो डार सो उतारी है । शंख चक्र गदा पद्म पीताम्बर धारो है । एसे सूर स्याम ऊपर कोट राधा वारी है । उतते आये नन्द नन्दन इत वृखभान दुलारी है । राधा कृष्ण जोरी उपर सूर बल बल हारी है । इति श्री नित्य के कीर्तन प्रात ते सायकाल ताई सम्पूर्णम् ॥

विषय—महाप्रभु तथा गोसई जी की बधाई, पद संख्या ४, यमुना गंगा के पद १७, जगाने के १२, कलेऊ १८, मंगला के सन्मुख के पद २८, लगन २८, दधिमथन २६, खंडिता के पद २८, मुरली ४६, पद मंगला आरती ११, वृतचर्या १४, स्नान ५, पृ० १ से ५४ तक । पलना १२, खिलोना ४, चन्द्रप्रकाश ४, खेलना ६, बलदेव जी ४, बाल लीला १४, फलफलारी ४, माटी खाना ४, दामोदर लीला ६, प्रातःकाल दोहन ४, गैया के पद १५ ,पृ० ५५—८१ तक । माखन चोरी ४, उलाहना ९, शृंगार-सन्मुख २०, पनघट १०, लगन १४, कुलह ६, टिपारा १०, सेहरे ३, भोजन को बुलाना ९, भोजन १४, कुंज भोजन ४, वृज भक्तन के घर भोजन के पद ९, भोग ४ वीड़ी ५, पृ० ८२—११२ तक । छाक २१, भोग २,

बीरी २, राजभोग २१, कुँज के पद ८, मान के पद ३, बाललीला ४, उलाहना ४, साँझ पनघट ५, खसखाना ८, रूखरी २, चन्दन ४, श्रीभागवत ७, फूल मंडली १०, पृ० ११३–१३६। विरह ७, स्मरण १०, उत्थापन २, भोग समय १३, गाय बुलाना २, आवनी के पद १२, संझा आरती २, श्रृंगार बड़े होयबे के ३, साँझ समय ७, ब्यारू के पद १०, दूध ३, बीड़ी २, सेन सन्मुख ३६, पृ० १३–१५७ तक। मान, मान छूटना २०, मान मिलाप ७, पोढ़ना १८, कहानी ३, बीनती २७, सोरठ के पद ३५, जै जै वन्ती २, पृ० १५८–१६० | निम्नलिखित रचयिताओं के पद इसमें संगृहीत हैं :— १–परमानन्द २–व्यासदास ३–विट्ठल ४–गोविन्द प्रभु ५–किन्हरदास ६–माधोदास ७–छीत स्वामी ८–श्री गोकुलनाथ ९–कृष्णदास १०–नन्ददास ११–विष्णुदास १२–कुम्भनदास १३–सूरदास १४–रसिक १५–विप्र गदाधर १६–चतुर्भुज १७–दामोदर १८–केसोदास १९–दास गोपाल २० बिहारीलाल २१ तानसेन २२–स्याम दास २३–विद्यापति २४–जगन्नाथ २५–मुरारी दास २६–रामदास इत्यादि।

विशेष ज्ञातव्य—संग्रह अच्छा है। इसमें कई अज्ञात कवियों के भी पद आए हैं।

संख्या—२६१. अथ नित्य कृत, रचयिता—अष्टछाप तथा अन्य भक्त गण (व्रज भूमि), कागज—मूँजी, पत्र—८७, आकार ६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान–श्री प्रेमबिहारी का मन्दिर, प्रेम सरोवर, पो०—बरसाना, जिला—मथुरा (उत्तरप्रदेश)।

आदि—राग भैरों, जे जै जै श्री वल्लभ नन्द। कोटि कला श्री वृन्दाबन चन्द। बानी वेद न लहे पार। सो ठाकुर श्री अक्का जू के द्वार। शेस सहस मुख करत उच्चार। व्रज जन जीवन प्रान अधार। लीला ही गिरि धार्यो हाथ। छीत स्वामी श्री विट्ठलनाथ।

अंत—राग बिहागरो। घाट पर ठाढ़े श्री मंदन गुपाल। कहा बढ़्यो घर गोरस और गोधन के ठाट ॥ कोने जुगत सों भरोरी जमुना जल पर हमारे ख्याल ॥ घोस बड़ो घर सासु रिसहें चलन सकत एक चाल। परमानन्द स्वामी चित चोर्यो बेंन वजाई रसाल। × ×

विषय—प्रार्थना के पद, कलेऊ के पद, पृ० १–७ तक। पद खंडिता के, मंगला आरती, अभ्यंग श्रृंगार, पद खंडिता के, पद ग्वाल घैया के, पृ० ८–२३ तक। श्रृंगार के रस, भोजन, २४–३२ तक। पद छाक के, राजभोग, ब्रीड़ा के, राजभोग आरती, ३३–४६ तक। उष्णकाल, पद भोग के, संझा आरती के, पद घैया के, दूध के, ब्यारू के, बीरी के–४७–६८। तक। शयन आरती के, सुनाइबे के, पद मान के, ६९–८७। × × निम्नलिखित कवियों की ही उपर्युक्त पद रचनाएँ हैं। १–छीतस्वामी २–रसिक ३–नन्ददास ४–रघुनाथ दास ५–गुसाईं ६ चत्रभुज ७ परमानन्द ८–गोविन्द प्रभु ९–सूरदास १०–गोपालदास ११–विष्णुदास १२–गिरधरन लाल १३–कृष्णदास १४–तानसेन १५–मुरारीदास १६–सन्तदास १७–कुम्भनदास १८–हरिनारायन स्यामदास १९–चतुर बिहारी २०–रामदास।

संख्या—२६२. अथ नित्य पदन की पुस्तक, कागज—बाँसी, पत्र—२०९, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति ष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९८७, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जमनादास कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल, मथुरा ।

आदि—प्रथम श्री आचार्य महाप्रभून के पद ॥ राग भैरों ॥ प्रात समय उठि करिये श्री लछमन गुन गान ॥ प्रगट भये श्री वल्लभ प्रभू देत भक्त दान ॥ श्री विट्ठलेश महाप्रभु रूप के निधान ॥ श्री गिरधर श्री गिरधर उदे भयो भान ॥ श्री गोविन्द आनन्द कन्द कहा बरनौ गुन गान ॥ श्री बाल कृष्ण बाल केलि रूप ही सुहान ॥ श्री गोकुल नाथ कियो प्रगट मारग बखान ॥ श्री रघुनाथ लाल देखि मन मथ ही लजान ॥

मध्य—धनाश्री, आज जसोमति के भवन में, कछु किंकिन धुनि सुनि । चुटकी दे दे गावहिं इत उत नन्द घरनि, माखन के काजे नाचें गुपाल गुनी ॥ 'टोडर' सुख बरखत और विहरत सब ब्रज की नारि पुलकत प्रेम प्रीति होत दुनी दुनी । दे असीस चढ़ि विमान जहाँ तहाँ थकित भई, एरी तिह सब देखत सुरदेर मुनी ॥

अंत—राग खट मुरली री माई कछू न विचारे ॥ लोक लाज कुल कान्ह आरज-पथ गरब सरब रसि ही घसि डारे ॥ गोपी सब विधि ओपी भई हैं मृगी गन दोरे ॥ आवें नाद बस पट न सभाँरत, नन्ददास प्रभु अधरन लागी । डोले मधुर तानन बानन मारे ॥

विषय—श्री आचार्य जी के पद—२४, श्री गोसाईं जी के पद—३०, यमुना जी के पद—७१, गंगा जी के—८, जगायबे के—५५, कलेऊ के—१२, मंगला समय के—४४, लगन के १०, दधि मथन के—१८, खंडिता पद—२०९, मंगला आरती के पद—१४, व्रतचर्या के ३४, स्नान के ७, सिंगार के—१६, पालने के—५०, खिलौना के—६, चन्दा के १०, खेलने के १०, बलदेव जी के ६, तृणावर्त के ५, बाल लीला ४५, फलफलादि—२, माटी के २२, दामोदर लीला—१३, गौ दोहन १२, गैया—२४, माखन चोरी—२, उलाहनो—४८, शृंगार—६०, पनघट के ३६, दान के ४९, लगन, कुल्हे टिपारे के—५२, सेहरे के—३, भोजन के—२८, कुंज भोजन के—५, ब्रज भक्त संग भोजन के—२२, भोग सरबे के—५, बीड़ी के—७, छाक के ४७, भोग, बीड़ी राज भोग—७१, कुँज, मान, लीला के—६५, उराहना, दान—२५, पनघट, उरहाना, सखरी, आरती, चन्दन, फूलमंडली—७५, स्मरण के—३८, इत्यादि ।

विशेष ज्ञातव्य—१—रसिक, २—अष्ट सखा, ३—हरिदास, ४—कान्हरदास, ५—विष्णुदास ६—माधोदास प्रीतम, ७—रसिक, ८—व्रजपति, ९—गोविंददास, १०—आसकरन, ११—अग्र स्वामी, १२—गिरधारी, १३—गोविन्द प्रभु, १४—रामदास, १५—चतुरबिहारी, १६—धोंधी, १७—सुघरराय, १८—मानदास, १९—श्री भट, २०—रसनिधि, २१—व्रजनिधि, २२—व्रजाधीश, २३—बिहारी दास, २४—द्वारकेस, २५—गदाधर, २६—विट्ठल गिरिधर, २७—रसिक, २८—रसनिधि, २९—मुरारीदास, ३०—व्यास दास, ३१—रसिकदास, ३२—हरिनारायण स्यामदास, ३३—मदनमोहन, ३४—तानसेन; ३५—लालदास, ३६—कृष्ण जीवन लछिराम, ३७—व्रजत्रादास, ३८—जगन्नाथ, ३९—भगवान हितराम राय, ४०—व्रजजन, ४१—स्यामदास, ४२—मुरलीधर, ४३—दामोदर, ४४—श्री भट, ४५—विद्यादास या विद्यापति, ४६—कुँवर सैन, ४७—स्यामसखि,

४८–दास गोपाल, ४९-गुंजर, ५०–टोडर, ५०–ठाकुरदास, ५१–जनहरि, ५२–मोहनदास, ५३–रामराय हित, ५४–नारायण वल्लभ, ५५–केसोदास, ५६–हित हरिवंश, ५७–गोविन्दास, ५८–कन्हरदास । उपर्युक्त भक्त रचयिताओं के पद इस बृहत संग्रह में आए हैं जिनमें कई एक ऐसे हैं जिनके संबन्ध में अभी तक हमें कुछ नहीं मालूम । पद साहित्य की प्रचुरता देख कर दंग रह जाना पड़ता है। इनमें कुछ ऐसे पद हैं जो दो भक्तों ने मिलकर बनाए हैं । ऐसे पदों में दोनों रचयिताओं की छाप पद में आयी है । यथा १-हरिनारायण श्यामदास २–भगवान और हितराम राय ३–कृष्णजीवन लछिराम । सं० २६ विट्ठल गिरधर का असली नाम गंगा बाई है। यह गिरधर विट्ठल के पुत्र की शिष्या थी और हमेशा उन्हीं की छाप से पद बनाती थीं, ऐसा उनके संप्रदायवालों का कहना है ।

संख्या—२६३. नित्य सेवा के पद, रचयिता—२९ (पदरचयिता), कागज—मूँजी, पत्र—८८, आकार—९ x ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जमनादास कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः राग भैरव, जै जै जै श्री वल्लभ नन्द को, कोटिकला श्री वृन्दावन चन्द्र । निगम उचारत लहें न पार । सो ठाकुर श्री अक्का जू के द्वार ॥ शेष सहस मुख करत उचार । व्रज जन जीवन प्रान अधार ॥ लीला ही गिरि धारयो हाथ ॥ छीत स्वामी श्री विट्ठलनाथ ॥

मध्य—राग विलाबल, जसुमति के भवन में कछू किंकनी धुनि सुनि आजु ॥ चुटकी दै दै नचावत गावत इत उत नन्द घरुनी, माखन के काजे नाचें गोपाल गुनी आजु ॥ टोडर सुख वरषत और हरषत सब व्रज की बाल—प्रेम प्रीत पुलकि पुलकि होत दूनी दुनी चढ़ि विमान दे असीस जहाँ तहाँ सब थकित भए लोक वदन देव मुनी ॥

अंत—राग विहाग, जो कोई गोकुल रस चाखे । जाको चित नहीं अनत नहीं भटके, लोभ दिखावो लाखें । परगें रहैं छोंकर की छैंया, निरखत नरवर साखें ॥ श्री जमुना जल पान करत है नित श्री वल्लभ मुख भाखें । सात स्वरूप आदि श्री जी मिलि, ध्यान हृदे में राखें ॥ रसिक प्रीतम जू के बानिक ऊपर जगत बारि सब नाखें ॥ x x x

विषय—प्रात समय के पद—१९, जगायबे के पद–२३, कलेऊ के पद–१६, दधि मथन के–५, खंडिता के–२४, श्री जमुना जी के-५५, मंगला आरती के–७, व्रतचर्या के–११, शीत काल के श्रंगार के–३०, सिंगार के–४६, ग्वाल के–१८, पालने के–११, घर के–२३, छाक के–२६, भोग सेर के–६, बीरी के–६, सीतकाल की राजभोग की आरती के पद–३६, उष्णकाल की राजभोग की आरती के पद–६३, उत्थापन के और भोग के–६५, संध्या आरती के पद–४२, उष्णकाल की संध्या आरती–४८, दूध के पद–३, बीरी के पद ५, शयनके–५६, कुंज की शयन आरती १५, उष्णकाल की शयन आरती–९, स्फुट पद शयन आरती के–२७, मान के पद–१४, उष्णकाल के मान के पद–१७, पोढ़िबे के पद–७, आश्रय के पद–५०

विशेष ज्ञातव्य—१—अष्ट सखा २—प्रेमदास ३—गोकुलनाथ ४—दास गोपाल ५—श्रीविट्ठल गिरिधर ६—रसिक सिरोमणि ७—मानिकचन्द ८—भगवान हितराम राय ६—गदाधर १०—मानदास ११—आसकरन १२—गोविन्द प्रभू १३ बिहारी दास १४—श्री भट १५—व्रजपति १६—जगन्नाथ कविराय १७—विद्यापति १८—मुरारीदास १९—व्रजजन २०—जन भगवान २१—धोंधी २२—मुरली २३—विष्णुदास २४—प्रभु कल्यान २५—व्रजाधीश २६—अग्रस्वामी २७—कहरदास २८—माधोदास २९—टोडर । इस विशाल ग्रंथ में से उपर्युक्त कवियों के विवरण नाम छाँट लिये गये हैं । और भी बहुत से नाम निकाले जा सकते थे, पर ग्रंथ का विवरण पुस्तक मालिक के देख रेख में लेना पड़ता है और उनकी जल्दी-जल्दी की धुन के मारे सरलता से काम करना कठिन है । संग्रह बहुत ही उपयोगी है ।

संख्या—२६४, पद संग्रह, कागज—स्यालकोटी, पत्र—३७८, आकार—१२½ X १० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९४२०, अपूर्ण, रूप—विशालकाय, प्राचीन, देशी कपड़े की जिल्द । पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५५ वि० से १८६५ तक, प्राप्तिस्थान—श्री विहारी जी का मन्दिर, विहारीपुरा, मु० पो० आ०—कोसी कलाँ, जिला—मथुरा ।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति ॥ श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति श्री हितरूप गुरुभ्यो नमः ॥ अथ श्री बसन्त उत्सव लिख्यते ॥ राग बसन्त ॥ मधु रितु वृन्दावन आनँद न थोर ॥ राजत नागरी नव कुशल किशोर ॥ १ ॥ जूथिका जुगल रूप मंजरी रसाल ॥ विथकित अलि मधु माधवी गुलाल ॥ २ ॥ चम्पक बकुल कुल विविध सरोज ॥ केतकी मेदनी मद मुदित मनोज ॥ ३ ॥ रोचक रुचिर बहै त्रिविध समीर ॥ मुकलित नूतन निन्दति पिक कीर ॥ ४ ॥ पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज ॥ किसलय सयन रचित सुखपुंज ॥ ५ ॥ मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग ॥ बाजत उपंग वीना वर मुष चंग ॥ ६ ॥ मृग मद मलयज कुंकुम अवीर ॥ वदन अंग रसत सुरंगित चीर ॥ ७ ॥ गावत सुंदरि हरि सरस धमार ॥ पुलकित षग मृग वहत नवारि ॥ ८ ॥ जै श्री हित हरिवंश हंस हंसनि समाज ॥ ऐसे ही करहु मिलि जुग जुग राज ॥ ९ ॥

मध्य—व्रज को दिन दुलहु रंग भरयो ॥ हो हो होरी बोलतु डोलतु हाथ लकुट सिर मुकुट धरयो । गाढ़े रंग रंग्यो व्रज सबरो फागु खेल को असल परयो ॥ "वृन्दाबन हित" जन सुष बरसत गान तान सुनि मन जु हरयो ॥ ईमन, होरी षेलन लाग्यो रे मोसौं ॥ जोवन मात्यौ कहा तू डोले, डारि अबीर कहाँ भाग्यो रे ॥ नये षिलार षेलि उनही सौं, जिनके रंग रस पाग्यो रे ॥ "कृष्ण जीवनि हरि लछिराम" प्रभु, कहा फिरतु अनुराग्यो रे ॥

अंत—पवित्रा पहिरै श्री गिरधर लाल ॥ वाम भाग वृषभान नन्दिनी, बोलत वचन रसाल ॥ आस पास सब ग्वाल मण्डली, मनहुँ कमल अलि भाल ॥ 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन, नन्द नंदन व्रजबाल ॥ आये स्याम धरि रूप सषी को ॥ यह अभिलाष कहूँ मिस करिके, देषो मुष वृषभान लली कौ ॥ अँगिया पीत कुसुम्भी सारी, लहँगा अतलस को अति नीकौ ॥ पग नूपुर कटि किंकिनि रुनझुन, रुरकत

हार गरे मोती कौ ॥ कोहे री तू कर गहे स्यामा बोली निरषि वदन जुवती कौ ॥ साँवरी सषी हौं नन्द गाँव की मन तो सो पेलन साझीं कौ ॥ लई भुज भरि सुनि रीझि लाड़िली, भयौ भाव तो दोऊ जन जी कौ ॥ 'इछाराम' गिरधर संग बिलसत यह सुष देषौं प्यारी पीकौ ॥

विषय—जयदेव कृत गीत गोविन्द का मंगला चरण संस्कृत में, प० १–२ । ब्रज में बसन्त का विराट् उत्सव, पत्र—३–२५ | ब्रज की होरी और धमार गीत, पत्र २६–१०६ । फाग रंगीली और धुलेंड़ी, १०७–१३८ । श्री राधा कृष्ण की प्रेम लीलाएं १३९–१९८ | तक श्री राम जी की बधाई तथा रामजन्मोत्सव, पत्र—१९९–२३१ तक । श्रावण के झूले तथा राधा कृष्ण की वर्षा बहार, २३२–२५५ तक । लाड़िली जी अर्थात् राधा जी का जन्मोत्सव, २५६–२६४ तक । कृष्ण भगवान की बधाई और जन्मोत्सव, २६५–२७८ तक । नन्द बाबा की वंशावली ब्रह्मा जी से लेकर, २७९–२८८ । भगवान् कृष्ण की बाललीला, २८९–२९५ । छटी और जन्म के कवित्त, २९६–३०८ । साँझी का वर्षोत्सव, ३०९–३४६ । तक स्फुट पद, ३४७–३७८ पत्र तक । भक्त कवियों के नाम क्रमशः जिनके पद इस ग्रंथ में आए हैं :—जयदेव (संस्कृत), हित हरिवंश, श्री दास, श्री कृष्ण दास, श्री दामोदर हित, कमलनैन, हित हरिलाल, हित रूपलाल, किशोरी लाल हित, श्री हरिदास व्यास स्वामिनी, नागरीदास, हित ध्रुव, रसिकदास, श्रीभट, विहारिन दास, नन्ददास, गदाधर, कुम्भनदास, कृष्णा, भगवान हित राम राइ, चतुर्भुजदास, अग्रअली, चतुरसषी, वृन्दावन हित, गोविन्द प्रभु, बनमाली हित, कुंजलाल हित, सदानन्द हित, श्री इन्द्रमणि हित, कृष्णजीवन लछिराम, हित घनस्याम, परमानंददास, सूरदास, राधौदास, जगन्नाथ, जन गोविन्द, विपुल विहारिन दास, माधुरी, हित मकरंद, वल्लभ रसिक, रामराय प्रभु, आनन्दघन; लछिराम, आसकरन, रसिकदास, माधवदास, नरहरि, सुघरराइ, गोकुलेश, लालदास, प्रेमदास हित, हित सुषलाल, ललिता सखी हित अनूप, चन्द्रसखी, अचलदास, अग्रदास, परमानन्द, नाभाजी, केवलराम, गोविन्ददास, तुलसीदास, जनसोभू, मुरारीदास, स्यामदास, कमलानन्द, विट्ठल गिरधर, श्री लाल रुप, व्यासदास, गरीबदास, ठाकुरदास, मथुरादास, दास गोपाल, जुगलदास, नागर सखी, इच्छाराम, लक्ष्मीदास हित, इत्यादि ८० भक्त कवि ।

विशेष ज्ञातव्य—यह विशालकाय ग्रंथ खोज में निहायत महत्व का है। इसकी सानी के बहुत कम संग्रह देखने में आते हैं । इसमें हजारों पदों का संग्रह है । कुल ८० भक्त कवियों के हैं । अधिकतया राधावल्लभ संप्रदाय के हैं । कुछ ऐसे भी हैं जो खोज में सर्व प्रथम आए विदित होते हैं । इस वृहद् ग्रंथ की विशालता का पता इसीसे अनुमान किया जा सक्ता है कि १० वर्ष के लगभग तो इसे लिखने में लग गये। अंत में संवत पड़ा है :—"शुभमस्तु संवत् १८६५ चैत्र वदी २ मंगलवार शुभं ॥" बीच में संवत् १८५५ चैत्र सुदी १० बुधवार" है । अतः १० वर्ष तो इस महाग्रंथ को लिखने में ही लग गए । जिस मंदिर में यह ग्रंथ है वह निम्बार्क सप्रदायवालों का है । वह लोग बड़ी ही श्रद्धा से इसे रखते हैं, पर यदि कोई नकल का विचार करे तो मंदिर के अधिकारियों को समझाया जा सकता है

और वह नकल के लिये मना नहीं करेंगे। वैसे मैं बड़ी कठिनता से इसे देख पाया। खोज में अभूतपूर्व है। इससे कल्पना की जा सकती है कि इस ब्रजभूमि में पद साहित्य की एक अपार राशि पड़ी हुई है। उसका हिसाब लगाया जाय तो हिंदी और प्राचीन साहित्य इसकी बराबरी में कुछ भी नहीं है। दुख तो यह है कि और भी स्थानों में यहां ऐसे ऐसे ग्रन्थ हैं, पर पहुँच का रोना है। जिन लोगों के पास ग्रंथ हैं, जो दिखलाने में बड़ी आना कानी करते हैं। इसका कारण कुछ अज्ञान, कुछ मिथ्या मोह और अन्ध धार्मिक विश्वास है।

संख्या—२६५. पद संग्रह, कागज- देशी, पत्र—२११, आकार—१४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान -श्री जमनादास जी कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः राग भैरव जय जय जय श्री वल्लभ देव। सुर नर मुनि जाकी पद रज सेव ॥ आनंद रूप अलौकिक देव ॥ निगम बिचारत न लहत भेव ॥ श्री गिरधर धर सो अति सनेह ॥ रसीक जनन को नित सुख देह ॥

अंत—सोरठ भयो यह पोढ़न को समयो ॥ इन आई कुंजन तर छाई उत ढर चंद गयो ॥ लटक चलत दोउ कुंज सदन में, आलस अंग छयो ॥ रसिक प्रीतम पीय प्यारी पोढ़ेय हरस नैन पीयो ॥

विषय—१-रसिक, २-अष्टछाप, ३-रामदास, ४-हरिदास, ५-गोविन्द प्रभु, ६-विहारीदास ७-आसकरन, ८-दास गोपाल, ९-दामोदर, १०-हित हरिवंश, ११-व्यास स्वामिनी, १२-श्रीभट, १३-रामराय, १४-विष्णुदास, १५-केसोदास, १६-नारायण प्रभु, १७-विद्यापति, १८-धोंधी, १९-चतुरविहारी, २०-अग्रस्वामी, २१-प्यारेलाल, २२-द्वारकेश, २३-गदाधर, २४-गोसाई ब्रजपति, २५-कल्यान, २६-तानसेन, २७-रूपहित, २८-कमलनैन, २९-मुरारीदास, ३०-हित राम राय, ३१-नागरिया, ३२-माधोदास, ३३-रसिकदास, ३४-हरिराय, ३५-रसिक विहारन, ३६-जगन्नाथ कविराय, ३७-दास अनन्द, ३८-मानदास, ३९-हरिनारायण स्यामदास, ४०-हरिवल्लभ, ४१-भगवान हितराम राय, ४२-कृष्णजीवन, लछीराम, ४३-रामराय, ४४-कटहरिया, ४५-सरसरंग, ४६-आनन्दघन। भक्ति और शृंगार संबन्धी पद इसमें संगृहीत हैं। उपर्युक्त कवियों के पद आए हैं।

संख्या—२६६. पद संग्रह, कागज—मूंजी, पत्र—४३२, आकार - १२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) - १९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८०९, अपूर्ण, रूप—प्राचीन. वृहत्काय जिल्द, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान - श्री जमुनादास जी कीर्तनियाँ, नवा मन्दिर गुजरातियों का, गोकुल, मथुरा।

आदि—राग सारंग ॥ कुंज मण्डली के पद ॥ ताल चंचरी ॥ बृषभान नन्दनि गिरधरन लाल मिलि, कुञ्जन के महल में केलि ठानी। परम सीतल सुखद तरन तनया निकट, सघन घन सरस रस बहेत पानी ॥ कुंद केतकी जाय कुरबक कुसुम लाय, परम खनीय सेनीय बानी ॥ हँस सारस मोर और खग की रोर, मन्द मारत चलत मधप गानी ॥ १ ॥ × × ×

अंत—परम सुन्दर गात॥ छबि सोहेल्हात॥ कुंडल जगमगात॥ जैसी छबि रवि की॥ अनूप अनुहार॥ नन्ददास बलिहार॥ कहाँ लौं बखानौ में—मिष्टिम बुद्धि कबकी ॥२॥

× × ×

विषय—१–कुँज मंडली के पद (सारंग), १–२२ तक, २—नित्य कीर्तन के पद (राग नट), ३—पूरबी २३–३४ तक, ४—गायों के पद, मान और सेहरा के पद, मुरली, मुकुट आदि विषयों के पद आदि।

टिप्पणी—इसी प्रकार के पद इसमें संकलित हैं। उनका विषय प्रायः यही है और अन्य विवरणपत्रों में विस्तार पूर्वक वह विषय विवरण दिया जा चुका है। अतः उसका दुहराना आवश्यक नहीं है।

अष्टछाप, केसोजन, रसिक, प्रीतम, ब्रजजन, गोकुलनाथ, दामोदर हित, नागरीदास, गोविन्द प्रभु, तानसेन, रामदास, कल्यान, चतुर विहारी, मुरारीदास, केसोदास, हरिदास, धोंधी, कृष्णजीवन, लछिराम, जगन्नाथ कविराय, रसिकराय, रघुनाथदास, हित हरिवंस, रसिक सिरोमनि, मथुरा, हरिनारायण–स्यामदास, दासगोपाल, माधोदास, आनन्दघन, ब्रह्मदास, रामराय, मदनराय, स्यामदास, गिरिधरलाल आसकरन, कमलनयन, श्रीभट, चिन्तामणि, रसिक प्रीतम, विष्णुदास, पियदयाल, सुघरराय कविनृप जगदेव आदि। उपर्युक्त कवियों के पद इस संग्रह में आये हैं।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत विशालकाय ग्रंथ को देखकर आश्चर्यान्वित होना पड़ता है। कपड़े की सुन्दर जिल्द बँधी हुई है। लिपि काल आदि का ग्रंथ में उल्लेख नहीं है। पर ग्रंथ पुराना है, इसमें कोई सन्देह नहीं। यह ग्रंथ पद साहित्य का अपूर्व भण्डार है। वस्तुतः ऐसे ग्रंथों को तो जनसाधारण की प्रिय लायब्रेरी में रहना चाहिए।

संख्या—२६७. पदसंग्रह, कागज—सन का, पत्र—४०४, आकार—१२½ × १० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—कीर्तनमण्डल, द्वारकाधीश जी का मन्दिर, मथुरा।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः राग सारंग कुंज मण्डली के पद॥ आजु वृन्दा विपन कुंज अद्भुत नई॥ परम सीतल सुखद स्याम सोभित जहाँ, माधुरी मधुर अरु पीत फूलन छई॥ विविध कदली खम्म झुमका झूम रहे, मधुप गुंजार सुर कोकिला धुनि ठई॥ तहाँ राजत बृखभान की लाड़िली, मनो हो घनस्याम ढिग उलही सोभा जई॥

अंत—सुनि संकेत उठी पिय प्यारी। छाँडि मान गुन मान हरन मन, चली चपल बुधि सों छवि वारी॥ यो लपटी पिय के उर सों मानो, स्याम तमाल कनक लता री॥ दोऊ मिलि पौढ़े कुसुम सेज पर, परमानन्ददास बलिहारी॥ × × ×

विषय—१–अष्टछाप, २–धोंधी, ३–रामदास, ४–रसिक प्रीतम, ५–कल्यान, ६–मुरारीदास, ७–तानसेन, ८–गोविन्द प्रभु, ९–भगवान हित रामराय, १०–आनन्दघन, ११–चतुरविहारी, १२–हरिदास, १३–हित हरिवंश, १४–विष्णुदास, १५–रामराय, १६–मदन राय, १७–धीरज, १८–मैन, १९–वल्लभ, २०–कृष्णजीवन लछिराम, २१–श्री विठ्ठल गिरधर, (गंगा बाई जी गुसांई विठ्ठलनाथ जी की सेविका) २२–हरिनारायण स्यामदास,

२३-विहारीदास, २४-जगन्नाथ प्रभु, २५-आसकरन, २६-माधुरी, २७-गदाधर, २८-कमलनैन हित, २९-दामोदर हित, ३०-मदनमोहन, ३१-बृजाधीश, ३२-हरिदास, ३३-जगन्नाथ कविराय, ३४-सुघरराय, ३५-लालगिरधर, ३६-रमानन्ददास, ३७-श्रीभट, ३८-केसोदास इत्यादि।

विशेष ज्ञातव्य—३८ पद रचयिताओं से अधिक के पद इस बृहद् ग्रंथ में संगृहीत हैं। इनमें कई पद दो भक्तों ने मिलकर बनाए हैं जिनमें दोनों की छाप दी हुई है-जैसे, १-भगवान हित रामराय, २-कृष्णजीवन लछिराम, ३-विट्ठल गिरधर, ४-हरिनारायण स्यामदास, ५-जगन्नाथ कविराय। सं० ३ के विषय में किसी किसी का ख्याल है कि इस छाप के पद दो व्यक्तियों के बनाये नहीं हैं वरन् गुसाईं विट्ठलनाथ जी की सेविका गंगाबाई के बनाए हैं जो सदैव "श्री विट्ठल गिरधर" का योग पदों में देती थीं। इसमें कुछ ऐसे भी पद रचयिता हैं जिनके नाम प्रायः ह० लि० पद संग्रहों में नहीं मिलते। यथा, १-मदनराय, २-धीरज, ३-मैन, ४-रमानन्ददास आदि।

संख्या—२६८. पदसंग्रह, कागज—मूँजी, पत्र—१७६, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जमनादास कीर्तनियाँ, नवा मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ नित्त कीर्तन मंगला लिखते ॥ × × × राग विभास प्रात समें उठके जो सदा श्री वल्लभ नन्दन के गुण गैये। फिर कर जोरि रूप चिन्तन करि, उन ही के चरणन सिर नैये ॥ सब साधन को सार इही पद, बार बार समुझइये ॥ कहे हरिदास मानि सिख मेरी, श्री विट्ठलनाथ के दास कहैये ॥

अंत—पोढ़े लाल राधिका के गेह। नवल धाम जु नवल सेज्या, नवल बाढ्यो नेह ॥ नवल राधा नवल जोबन, नवल विलसत नेह ॥ नवल दुल्हैया कृष्णदास, स्वामी नवल नागर ऐह ॥ संपूर्ण।

विषय—निम्नांकित भक्त इस पद संग्रह में हैं:— १-नन्ददास, २-हरिदास, ३-व्रजपति, ४-गोविन्द प्रभु, ५-सूर, ६-परमानन्ददास, ७-आसकरन, ८-चतुर्भुज, ९-रसिक प्रीतम, १०-कृष्णदास, ११-मुरारीदास, १२-छीतस्वामी, १३-विट्ठलनाथ १४-कुम्भनदास, १५-व्यास स्वामिनी, १६-माधोदास, १७-कमलनैन, १८-भगवानहित राम राय, १९-जनभगवान, २०-रामदास, २१-श्री भट इत्यादि-इत्यादि, रेखांकित, कवियों के पद संग्रह में अधिक हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ विशालकाय है और काफी महत्व का है। बीसों भक्त कवियों की रचनाएँ संगृहीत हैं जिनमें से कुछ नाम छाँटने का प्रयत्न किया है और विषय के कोष्ठ में दे दिये हैं।

संख्या—२६९. पदसंग्रह, कागज—मूँजी, पत्र—१२८, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१९८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० नन्दराम जी, मु० पो०—सादाबाद (मथुरा)।

आदि—अथ मुकुट के भाव के पद ॥ राग मलार ॥ तुम देखो भाई सुन्दरता को नीर ॥ दादुर मोर पपैया री बोलत, नदी जमुना के तीर ॥ कारी घट आई चहुँदिसि तें, कोयल करत पुकार ॥ नन्हे नन्हे बूँदन बरखन लाग्यो, रहे है प्रेम पचिहार ॥ कुंडल लोल कपोल विराजत, झलकत मोतिन माल मुकुट काछनी और उपरना, अति बने हैं गोपाल ॥

अंत—राग देव गंधार ॥ भयो श्री गोकुल में जय जय कार । भक्ति सुधा प्रगटे श्री विट्ठल कलियुग जीव निस्तार ॥ महा अघोर कटैया कलि के, प्रगट कृष्ण अवतार ॥ "विष्णु दास" प्रभू पर तन मन, धन सिगरो बलिहार ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ हिंडोरा और वर्षा ऋतु में गाये जानेवाले मलारों का संग्रह है । १–अष्टछाप, २–कृष्ण जीवन लछिराम, ३–रसिक प्रीतम, ४–श्री विट्ठल गिरधर, ५–भगवान हित राम राय, ६–विहारिनदास, ७–व्रजाधीश, ८–रामदास, ९–गदाधर, १०–केसोदास, ११–तानसेन, १२–गोविन्द प्रभू, १३–हित हरिवंस, १४–वल्लभदास, १५–जन भगवान मदन मोहन, १६–दामोदर हित, १७–कल्यान, १८–रसिक दास, १९–मदन मोहन, २०–आसकरन, २१–मुदित नरायन, २२–सुघरराय, २३–हित माधुरी, २४–बिहारी दास, २५–हित गोपाल, २६–माधोदास, २७–पुरुषोत्तम, २८–हरिदास, २९–जन गोविन्द, ३०–जगन्नाथ, ३१–धर्मदास, ३२–श्री रघुबीर, ३३–क्षेमदास, ३४–धोंधीं, ३५–ऋषिकेश, ३६–इच्छाराम, ३७–नागिरीदास, ३८–भगवानदास, ३९–मानिकचन्द, ४०–सगुनदास । उपर्युक्त पद रचयिताओं के पद प्रस्तुत ग्रंथ में आए हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—इस बृहद् ग्रंथ में ४० से अधिक भक्त कवियों के पद आए हैं। इनमें कई ऐसे हैं जिनका नामतक हमें नहीं मालूम था । संग्रह बहुत ही उपयोगी दीखता है ।

संख्या—२७०. पदसंग्रह, कागज—बाँसी, पत्र—१८८, आकार १० × ६ इंच; पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१३४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० इन्द्रमिश्र, मु० ब्रह्मपुरी, पो०–कोसी, जिला–मथुरा ।

आदि—सारंग होरी साँवरो ब्रजराज लड़ै तो षेलन गहवर आयो । भूषन वसन वनाइ चाइ चित जसुमति लाड़ लड़ायो ॥ केसरी नीर भरे कंचन घट कांवर सजि सजि लाये । कर लिये डफहि बजावत गावत संग सषा मन भाये ॥ हो हो हो कहि करत कुलाहल नाचत अति रंग भीने । धुनि सुनि श्रवननि कुस नव नागरि ललितादिक संग लीने ॥ साषि जिवादि अरगजा चोवा रंगनि भरी कमोरी ॥ हेम छरी नग जरी करनि में राजति नवल किशोरी ॥ वाजत ताल पषावज आवझ जंत्र मंत्र से बोले ॥ अबीर उड़वति गावति गारी कछु कछु षोलें ॥ आई मिले दोऊ पोर साँकरी टोल महाधुनि छाई । रतन जटित पिचकारी छूटति लागत परम हवाई ॥

अंत—काफी आजु हरि नीकी फागु बनी ॥ इत गोरी रोरी भरि झोरी, उत ब्रजराज धनी ॥ चोवा को ठोवाकर राच्यो केशर कीच घनी ॥ भरि पिचकारी प्रेम रंग छिरकत सारी जात सनी ॥ अँजुरिन छुटत गुलाल लाल के मुरि मुरि जात अनी ॥ कृष्ण जीवनि हरि लछिराम प्रभु जोरी सरस बनी ॥

विषय—१—होरी की धूम धाम के पद २—रासोत्सव के पद ३—चान्दनी के पद ४—फूल डोल के पद ५—जलविहार ६—बाल भोग, शृंगार भोग आदि आरती के पद। ७—वर्षोत्सवों का वर्णन ८—वर्षा ऋतु के मलार ९—बसन्त ऋतु का वर्णन। हित कृष्णदास, हित ध्रुव, दामोदर हित, कमलनैन, श्रीकुंजलाल हित, रूपलाल हित, जगन्नाथराय, रसखानि, रसिक सखी, सूरदास, वृन्दावन हित, कृष्णजीवन लछिराम, विहारिनदास, नागरीदास, नन्ददास, हित मकरन्द, रामराइ, वल्लभ रसिक, भगवान हित रामराई, रसिकदास, लालदास, प्रेमदास, हित सुखलाल, श्री बिहारीदास अचल दास, माधवदास, नरहरि, चतुर्भुज, हित हरिलाल, किशोरीलाल हित, सदानन्द, जै श्री वल्लभ हित, इन्द्रमणिहित, श्री जतनलाल हित, माधुरीदास, हित घनश्याम, परमानन्द, हित श्री दाम, हरिनारायण इत्यादि।

विशेष ज्ञातव्य—पदसाहित्य का यह अनूठा संग्रह है। इसमें लगभग ४५ भक्त कवियों के पद संगृहीत हैं। अधिकतया हित हरिवंश जी के संप्रदाय के अनुयायियों तथा उनके शिष्यों के पद हैं। जिनके नाम के आगे पीछे हित लगा हुआ है, वे हित हरिवंश जी के शिष्य हैं। राधावल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिरों में इन्हीं के पद विशेषतया गाए जाते हैं। इसी प्रकार वल्लभ संप्रदाय में तो यह नियम है कि उनके मंदिरों में सिवाय अष्ट सखाओं के अतिरिक्त और किसी के पद नहीं गाए जाते हैं। हाँ, जो उनके संप्रदाय के अन्य भक्त कवि हैं उनके भी पद विशेष उत्सवों पर गाए जा सकते हैं।

यह मालूम होना चाहिए कि भगवत सेवा में पद गायन का प्रधान स्थान है। मंगला आरती, शृंगारभोग, राजभोग, संझाआरती, बियारी और शयन आरती आदि दिनचर्य्या बिना विषयानुसार पद-गायन के नहीं होती है और उत्सवों की बात ही दूसरी है।

संख्या—२७१. पदसंग्रह (अनु०), कागज—मूँजी, पत्र ६९, आकार—११ x ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण—(अनुष्टुप्)—२०७०, अपूर्ण, रूप—बहुत प्राचीन, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—ठाकुर किशनलालजी, मु०—परसोत्तीगढ़ी, पो०—सुरीर, जिला—मथुरा।

आदि—परभाती। रैंनि उनींदे आए आजु हरि रैंनि उनींदे आए॥ अधरन अंजन लिलाट महावर नैन तमोल षवाए॥ दह निदाग नष रेषा सोभा विन्दु का भाल बनाए॥ मान मनावत पाग लटपटी भृकुटी चन्दन लाए॥ बिन गुन माल विराजत उर पर कंकिनि पीठि गड़ाए॥ सूरदास प्रभु यहो अचंभो तीन तिलक कहाँ पाए॥

अंत—बसन्त। पौढ़े कुंजबिहारी प्यारी॥ रितु बसन्त रजनी रँग भीनी, फैली चन्द उजारी॥ नव रानि कुंज सुगन्धित चहूँ दिसि मण्डित है फुलवारी॥ किशोरीदास कोइल कल कूँजति भमर करत गुँजारी॥

विषय—१—गोस्वामी तुलसीदास, २—सूरदास, ३—हित हरिवंश, ४—वृन्दावन हित, ५—श्री भट्ट, ६—व्यासदास, ७—किशोरीदास, ८—नन्ददास, ९—हित ध्रुव, १०—रसिक गोविन्द, ११—व्यास स्वामिनी, १२—आनन्दघन, १३—गदाधर दास, १४—दयासखी, १५—

नागरीदास, १६–चन्दसखी, १७–रूपलाल, १८–कृष्णजीवन, १९–कुंभनदास, २०–मानदास। २१–चतुर्भुज, २२–परमानन्द दास, २३–श्रीभट, २४–मथुरादास, २५–मुरारीदास, २६–जन गोविन्द, २७–विट्ठलदास, २८–अग्रदास, २९–राय गुपाल, ३०–चरणदास।

उपर्युक्त पद रचयिताओं के पद इस संग्रह में आये हैं जो सभी भगवद्भक्ति से संबंध रखते हैं।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत ग्रंथ में ३१ से अधिक पद रचयिताओं की रचनाएँ हैं, इनमें से कई ऐसे हैं जिन्हें हम बिल्कुल नहीं जानते। दो तीन स्त्री कवियों की भी रचनाएँ है। संग्रह बड़ा ही अच्छा है।

संख्या—२७२. पदावली, रचयिता—सूरदास आदि, कागज—मूँजी, पत्र—८०, आकार ६ X ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि–नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० केशवदेव जी, मु० पो०–माठ, जिला—मथुरा।

आदि— X × × बोलनि मधुर बीन धुनि साजै। बाजे कल भूषन अंग अंग ॥ मृग मद अगर जवादि कुम कुमा। किल किंचित बहु रंग। छूटत पिचक कटाछ दुहूँ दिशि, भरी है अधिक अनुराग। वृन्दावन प्रभु को सुख विलसत। ललतादिक बड़ भाग ॥

अंत—शेष महेश सुरेश न पायो। अज अबहुँ पछिताई ॥ श्रीवृषभान सुता पद पंकज जिनकी सदा सहाई ॥ इह रस मगन रहे जे तिनपर। नन्ददास बलिजाई ॥

विषय—भगवान कृष्ण की भक्ति विषयक पद। निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ आई हैं :—१–वृन्दावन हित, २–कृष्णदास, ३–चतुर्भुज, ४–सूरदास, ५–जनगोविन्द, ६–नन्ददास, ७–कमलनैन, ८–परमानन्द, ९–गजाधर इत्यादि।

विशेष ज्ञातव्य—यह पदों का बड़ा ही उत्तम संग्रह है जो अन्वेषण में मिला है।

संख्या—२७३. पदों का सार (अनु०), रचयिता—भक्त कविगण, कागज—मूँजी, पत्र—२१८, आकार—८½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्) ३९१४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (लाल मोटे कपड़े की जिल्द), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वर जी, मु० पो०—कोसी कलाँ, जिला—मथुरा।

आदि— + + + राग सारंग। आपन मंगल गावै नन्दरानी ॥ आज लाल को जनम द्योस है, मोतिन चौक पुरावै ॥ गांउ गाउ ते ग्यान आपुनी गोपिन नौति जिवावै ॥ अनुचार मुनि गरग परासर, तिन हिय वेद पढ़ावैं ॥ हरदी तेल सुगन्ध सुवासित, लाले उवटनवावै ॥ हरि तन ऊपर करत निछावर, जन परमानन्द पावै ॥

अंत—राग सारंग रक्षा बाँधति जसुमति मैया। सबै सिंगार साज पट भूषन राम कृष्ण दोउ भैया ॥ गावति गीत सबै जुवती मिलि, घरघर होत बधैया ॥ परमानन्द दास को ठाकुर, सब सुष फलन फलैया ॥ × × ×

विषय—(१) कृष्ण जन्म के पद, पृ० १—४५ तक। छठी, पालना, बधाई, बाल लीलाएँ, ४६–६७। दान लीला, ६८–७०। वामन अवतार की बधाई, दशहरा के पद, बाल-कृष्ण के खेल, ७१–८७। अन्नकूट दिवारी का उत्सव, धन तेरस, भाई दूज, गोपाष्टमी, ८८–१०१। प्रबोधिनी के पद, गिरधर की बधाई, बसन्त के पद, १०२–११४। गुसाईं (वल्लभाचार्य) की बधाई, ११५–१२७। धमार और होली का उत्सव, १२८–१७०। फूल डोल का उत्सव, फूल मड़नी, रामनवमी, स्नान यात्रा, १७१–२१८।

(२) निम्नलिखित भक्त कवियों के पद इसमें हैं:—परमानन्द, आनन्दघन, नारायन, सूरदास, विट्ठल गिरधर (गंगाबाई), चतुर्भुज, हित हरिवंस, रसिक, कृष्णदास, रामदास, नन्द-दास, हरिदास, विठ्ठल, कुम्भनदास, गरीबदास, विष्णुदास, आसकरण, कल्यान, ब्रह्मदास, गोविन्द प्रभु, केसवजन, रसिक प्रभु, अग्रस्वामी, रामकृष्ण, गदाधर मिश्र, छीतस्वामी, लाल-दास, हरिजीवन, मानकचंद, भगवानदास, रामराय, गिरधरन, रघुनाथदास, वृन्दाबनचन्द, व्रजपति, माधोदास, हीरालाल, स्यामदास, व्यास स्वामिनी, सुघरराय, रसिकराय, तुलसी, किशन दास, माधोदास, रामराय। × × ×

विशेष ज्ञातव्य—यह अपूर्ण पद संग्रह उपयोगी है। इसमें प्रायः ४५ पद रचयिताओं के पद हैं।

संख्या—२७४. पदों की पोथी (अनु०), रचयिता—कविगण अष्टछाप, कागज-मूँजी, पत्र—१५३, आकार—११½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५४८, पूर्ण, रूप—बहुत प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१७८९ = १७३२ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रेम विहारी जी का मन्दिर-प्रेम सरोवर, पो०—बरसाना, जिला—मथुरा।

आदि—राग देव गंधार ॥ ब्रज भयो महरि के सुत जब यहे बात सुनी। सुनि आनन्दे सब लोक गोकुल गनित गुनी ॥ ब्रजपुर वपुरे पुन्य रूपी कुल सुथिर थुनी। ग्रह लगन नक्षत्र वलि साधि कीनी वेद धुनी। सुनि धाई सबै ब्रजनारि सहज सिंगार किये। तन पहिरे तो तन चीर काजर नैन दिये। कसी कुंचकी तिलक ललाट सोभित हार हिये। कर कंकन कंचन थार मंगल साजु लिये।

अंत—राखि बाँधित जसोदा मैया। विविध सिंगार कीये पट भूषन, फुनि फुनि लेत बलैया। तिलक करत आरती उतारत अति हरषत मन महीया। नाना भाँति भोग आगें धरि कहेत लेहु बलि जैया। नर नारी सब आई तहाँ मिलि, निरखत नंद लैया। कैसो प्रभू गिरधर चिरजी, यो सकल घोस सुख दईया। इति श्री बर्षोत्सव के पद।

विषय—वर्ष उत्सव तथा जन्माष्टमी की बधाई, पृ० १–१६ तक। कहानी के पद, पृ० १७–१८। छटी, पृ० १९–२०। दसठोन, अन्नप्रासन, ढाढ़ी, २१–२२। पलना, दधिमथन घैयां, माखनचोरी, उलाहना, बाललीलाएँ, राधाअष्टमी की बधाई, २३–३६। दानलीला, वामन जी के पद, साँझी, नव विलास, कररवा, दशहरा, रास, धनतेरस रूप चौदश, दीपमालिका, कान्ह को जगाना, हटरी के पद, गोवर्द्धन पूजा, ३७–६०। गाय को चराना,

अन्नकूट की लीला, इन्द्रकोप, भाई दोज, गौ चारण, ब्याह, देव जगाने के पद, बसन्त, ६१–८९। होरी धमार, ९०–१२५। डोल के पद, १२६–१२७। दुतिया, फूल मण्डली, रामनवमी अक्षय तृतीया, नरसिंहजी के पद, स्नान और जलयात्रा, रथयात्रा, मलार, हिंडोला, वर्षोत्सव रास के पद, १२८–२५३।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत ग्रंथ में निम्न लिखित कवियों के पद आए हैं:— १–सूरदास, २–चतुर्भुजदास, ३–परमानन्द, ४–विट्ठल, ५–कृष्णदास, ६–माधोदास, ७–हित हरिवंश, ८–नन्ददास, ९–गिरधरदास, १०–गोविन्द प्रभु, ११–किसोरीदास, १२–रामदास, १३–व्यासदास, १४–कुम्भनदास, १५–हरिनारायन, १६–तानसेन, १७–विष्णुदास, १८–रसिक, प्रभू १९–छीतस्वामी, २०–ब्रह्मदास, २१–वल्लभदास, २२–गिरधरदास, २३–हरिदास, २४–गजाधरदास, २५–अग्रस्वामी, २६–मोहनदास, २७–तुलसीदास आदि।

संख्या—२७५. पहेली संग्रह, पत्र—१२, आकार—१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६४, खण्डित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—अर्बी, प्राप्तिस्थान—पं० देवता प्रसाद जी, स्थान—बामई, पो० –शिकोहाबाद, जिला—मैनपुरी।

आदि—पहेली। आदम व हव्वा—विधना ने इक पुरुख बनाया। तिरिया दे औ नेह लगाया॥ चूक भई कछु वासे ऐसी। देश छोड़ हुआ परदेसी। कलमदान–एक ताबूत और कितने मुरदे। कटे कटाये क्या दिल गुरदे॥ ताल में पीवैं काला पानी। रहै जफर नित उनकी निशानी॥ कलम दवात—एक पुरुख नारि से लागा। काला मुँह कर वासो भागा॥ भाग चले कोई लखिय न और। दो नारी यक लड़का जोड़॥ कलम—एक अजब मैं देखी नार। अच्छे मुँह सब उसके यार। सर उसका सब कलम करैं। काला मुंह कर आगे धरैं॥ इस तिरिया की अजब है चाल। ऐसा देखा नहीं मैं हाल॥ पल में हाथ हमारे है। पल में काले पानी है। आसमान और तारे—एक थाल मोतियों से भरा। सबके सर पर औंधा धरा। चारों ओर वह थाल फिरै। मोती उससे एक न गिरै॥

अंत—॥ दो सखुना हिन्दी॥ × × × पोस्ती क्यों रोया, चौकीदार क्यों सोया—अमल न था। बड़ा क्यों न खाया, जूता क्यों न चढ़ाया—तला न था॥ सालन क्यों न खाया, डोम क्यों न गाया—गला न था॥ जोगी क्यों भागा, ढोलकी क्यों न बाजी—हड्डी न थी॥ दही क्यों न जमा, नौकर क्यों न रखा—जामन न था॥ सितार क्यों न बजाया, औरत क्यों न आई—परदा न था॥......

विषय—कुछ पहेलियों और उनके उत्तरों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के अन्तिम भाग के कुछ पन्ने लुप्त हो गए हैं।

संख्या—२७६. राग रागिनी, रचयिता—सूरदास, कागज—बाँसी, पत्र—६४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११५२, अपूर्ण, रूप–प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान–पं० चोखेलाल जी, मु०–गढ़ी परसोत्ती, पो० सुरीर, जिला—मथुरा।

आदि—राग सोरठि जोग ठगोरी वृजन बिके है ॥ मूरी के पातन के बदले को मुकता हल दैहे ॥ यह व्यौपार तिहारो उधो, योही धरयो रहै है । लैकिन जाऊ जहाँ कौ बनि है ह्वाई के हाट बिके है ॥ छाँड़ि दाष मुष कटुक निबौरी कौन आनि कर लैहे ॥ सूरदास सरगुनै छाँड़िके को निरगुन निरबेहै ॥

अंत—सषी सुनि सामन ह्व लै आयो । चारि मास की लग्न लिषाई, बदरनु अम्बर छायो ॥ बिजुरी चमकति बगुला बराती, कोइल सबद सुनायो । दादुर मोर पपीहा बोलत, इन्द्र निसान बसायो ॥ हरी भूमि पर चलति इन्द्र वधु, नेह बिछौना बिछायो । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को, मानिन मंगल गायो ॥

विषय—१-श्री विट्ठल, २-वृन्दाबन हित, ३-कृष्णदास, ४-श्रीहरिदास, ५-नन्ददास, ६-बिहारीदास, ७-दया सषी, ८-हित हरिवंश, ९-व्यास स्वामिनी, १०-कुम्भनदास ११-चतुर्भुजदास, १२-परमानन्द, १३-कमलनैन, १४-चन्दसषी, १५-मुकुन्द, १६-कृष्णजीवन (लछिराम ?), १७ – रूपलाल, १८-नागरीदास, १९-आनन्दघन, मालिन लीला, जोगिन लीला, मन्हारी लीला, जोगीलीला, २०-घनश्याम के रचित पद—२१-तुलसीदास, २२-श्री माधौदास × × × बधाई के पद वृन्दावन हित कृत २३-मुरारी दास, २४-मथुरादास, २५-आलम, २६-मानदास, २७-मानदास । ऊपर लिखे कवियों के पद इसमें संगृहीत हैं जो सभी राधा कृष्ण आदि की भक्ति के हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में २७ रचयिताओं के पद हैं । इनमें नवीन रचयिता अर्थात् जिनके विषय में हिंदी संसार को कुछ मालूम नहीं है—१-दया सखी, २-चन्द्रसखी, ३-मुकुन्द, ४-कृष्णजीवन, ५—रूपलाल, ६-घनश्याम, ७-माधौदास, ८-मुरारीदास, ९-मथुरादास, १०-मानदास आदि हैं । इस ग्रन्थ में कुछ आलम के भी पद हैं जो मेरे ख्याल से अभी साहित्यिक क्षेत्र में प्रकट नहीं हैं । यहाँ तक कि खयाल भी नहीं है कि ये पद इन्होंने लिखे होंगे । कृष्ण जीवन और लछिराम दोनों नाम एक ही पद में साथ साथ कभी कभी आते हैं अतः कहा नहीं जा सकता कि ये कोई अन्य लछिराम हैं अथवा वह जिनके पद बहुधा मिलते हैं, पर ऐसे पदों में उनका नाम सिर्फ लछिराम ही आता है ।

संख्या—२७७. साषी सन्तन की, रचयिता—विभिन्न कवि; कागज—मूँजी, पत्र—१४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दाताराम महन्त, मु० मेवली, पो०—जगनेर, तह०—खैरागढ़, जि०—आगरा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—॥ अथ साषी सन्तन की लिष्यते ॥ कामधेनु कबीर है, हरै बिषै की पीर ॥ पीया (?) पीवैं साधु सब, दुहि दुहि अनतै छीर ॥ अनतै (अनन्त) कही कबीर ने, कामधेनु प्रवान ॥ पीया (?) बीजक देखि कैं, सब साधु कथै ग्यान ॥ निरगुन कह्यौ कबीर ने, सरगुण सूर बनाय ॥ पीया दीपक ज्योति सौं, सब जोइ जोइ ले जाय ॥ भगत दला (?) बड़ ऊपजी, ल्याए रामानन्द ॥ परगट करी कबीर जी, सात दीप नौ षंड ॥

अंत—निर्गुण ब्रह्म बतावे रे ॥ जनम मरण का साँसा मेटे, अनहद सबद सुनावे रे ॥ कोटि पंडित मैं पूछत हार्‌यो, दूरैं दूर बतावेरे ॥ जा सुमरे मेरी आसा पुरवै, ताको दूर बतावे रे ॥ अनेक तीरथ मैं भरम भरम आयो, भरम भरम ही बतावे रे ॥ जहाँ तहाँ प्रतमा की पूजा, सो मेरे चित न आवे रे ॥ कोई जप तप कोई ब्रत बतावै, कासी करत षावै रे ॥ कोई मोनी कोई दुधा धारी, पंच अगनि तन तावै रे ॥ अनेक जतन कीये या तन को, काया गढ़ हाथ न हावै रे ॥ गोला सबद कबीर काल का, भरम के बुरज उड़ावे रे ॥ दया करी मेरी सतगुरु दाता, अब के लिये उबारी रे ॥ "दास मनोहर" निरगुन के गुन, बार बार गुन गावेरे ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ में कबीरदास जी की महिमा वर्णित है जो विभिन्न सन्तों ने उनके निर्गुण मार्ग बतलाने के लिये की है।

विशेष ज्ञातव्य—इसमें निम्नलिखित रचयिताओं की रचनाएँ सम्मिलित हैं :—
१-दादू, २-व्यास, ३-नरसिंह, ४-जनगोपाल, ५-दास मनोहर, ६-जीवणदास।

संख्या—२७८. संग्रह कविताई (सार संग्रह), रचयिता—७१ कवि, कागज—मूँजी, पत्र—११०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) – १०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी, प्राप्तिस्थान-पं० मयाशंकर जी याज्ञिक, अधिकारी, गोकुलनाथ का मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—अथ सार संग्रह लिख्यते ॥ हम चोरी तिहारी करी न कछू चित चोर किते कतरान लगे। यह नीति नहीं है अनीति अहो कर प्रीत कहा इतरान लगे। मुष रावरे कौ न विलोके बिना अग अंग सबै पतरान लगे ॥ रिस कै हम सो सतान लगै हँसि औरनि सौ बतरान लगे ॥

मध्य—दाव कुदाव "जनोल" की नाव लगी प्रभु जू दुष कौन हरेगो। साषी सुवा ने कही जब यो मति सोच करै सब काज सरेगो ॥ तोहि बताऊँ जसी जसवन्त सौ सो अपने पन सौ न टरेगो ॥ है जदु मंडल में जदुनाइक मौहन मित्र सहाइ करेगो ॥

अंत—दीरघ बुद्धि दया उर में बहु तेज प्रताप लषैं अकरूरौ ॥ सुन्दर रूप सरूप अनूप है काम कला चित मै हित पूरौ ॥ श्री हरि भक्ति रहै निसिवासर जंग जुरै न टरै रन रूरौ ॥ मनिकपाल महीपति कौ सुत मोहन सिंघ बली अति सूरो ॥

विषय—१-केशव, २-घन आनन्द, ३-ठाकुर, ४-अनन्त, ५-ईस, ६-सुन्दर, ७-बलभद्र, ८-परमेश, ९-आलम, १०-हितराम, ११-कुन्दन, १२-मंडन, १३-कासीराम, १४-जिनोल, १५-विहारी १६-घासीराम- १७-देव, १८-हरिवंश, १९-धीरज, २०-कृष्णमणि, २१-सन्तन, २२-कवि नन्दन, २३-सोमनाथ, २४-सेष, २५-गंगापति, २६-ब्रजचंद जू, २७-प्रवीनराय, २८-भूपति, २९-प्रसिद्धि, ३०-पुष, ३१-गंग, ३२-रसषान, ३३-कवि नाथ, ३४-कवि ताज, ३५-बालकृष्ण, ३६-कवि चैन, ३७-सम्भु, ३८-पद्माकर ३९-मतिराम, ४०-नागर, ४१-ससिनाथ, ४२-मधुसूदन, ४३-टोडर सुकवि, ४४-श्रीपति,

४५–श्रीमुकुन्द, ४६–लाल, ४७–करीम, ४८–मदन, ४९–घनश्याम, ५०–ब्रजनिधि, ५१–रूपसाहि, ५२–फतेराम, ५३–हरिबक्स, ५४–जगदीश, ५५–सेनापति, ५६–बिहारी लाल, ५७–देवीदास, ५८–बुधसिंघ, ५९–जदुनाथ, ६०–ऊधोराम, ६१–दूलह, ६२–कवीन्द्र, ६३–हितराम, ६४–मनिकंठ, ६५–मोतीराम, ६६–सुजान, ६७–मोहनसिंघ, ६८–भगवन्त जू, ६९–नरहरि, ७०–उग्रसेन, ७१–राधाकृष्ण। उपर्युक्त कवियों के कवित्त और सवैयों का संग्रह इस ग्रंथ में है। इनमें कई कवि ऐसे हैं जिन्हें हिंदी संसार बिल्कुल नहीं जानता।

विशेष ज्ञातव्य—खोज में यह प्राचीन संग्रह महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। इसमें विभिन्न कवियों की चुनी हुई कविताएँ दी गयी हैं। मैंने प्रायः सभी कवियों के नाम पढ़कर निकाल लिये हैं जिनमें कई कवि ऐसे हैं जिनकी कविता बड़ी सुन्दर है, पर उनके विषय में हम कुछ नहीं जानते। बहुत से अलभ्य छन्द इसमें आये हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से भी ग्रंथ कम महत्व का नहीं है। कई कवियों ने आश्रयदाताओं का वर्णन किया है—जैसा कि मध्य और अन्त के उद्धरण से स्पष्ट है। ग्रंथ मालिक से पता चलता है, संग्रह भरतपुर रियासत से उन्हें उपलब्ध हुआ था।

संख्या—२७९. संकावली, कागज—मूँजी, पत्र—१४, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० छेदालाल जी, मु०–बन्दी का नगला, पो०–माट, जिला—मथुरा।

आदि—अथ संकावली लिख्यते॥ ए गोसाईं जी की रामायणि विचार्तें सर्व संका रहित है जाते पूर्वा पर प्रकर्ण लगाए ते या ग्रंथ में समाधान्य बाहुल्य ते मिलत हैं परन्तु या ग्रंथकों प्रचार बहौत है याते बहुत लोग संका करत हैं ताते कछू लिखत है॥ संका॥ भासा बद्ध करब में सोई॥ प्रतिज्ञा ते विरुद्ध कारण्डन के आदि संस्कृत काहे कवि लिखे॥ उत्तर देव वानी कौ अति मंगल रूप जानि के वा भासा के खट् लछन में संस्कृत तू चहीये॥

अंत—लै ले सब हत्यार आपने सान धराए त्यों तेहे के दारुण दरस देखि कैं पतित करत त्यो त्यो टूटि फिरे घर कोई न बतावै सुपच कोरिया लोरि सभरि गिरा परम किंकर तब करयो छूटि न सक्यो। हाइ हाइ हो फित पुकारत राम नाम नव को ताल पखावज चले वजावत समधी सोभो कों॥ × ×

विषय—इस ग्रंथ में रामायण की चौपाइयों और दोहों के क्रमशः गूढ़ार्थ स्पष्ट किये हैं। स्पष्टीकरण में कहीं संबंधित कथाएं भी दी गई हैं।

विशेष ज्ञातव्य—जिस प्रकार 'विजय दोहावली' में कई दोहों और चौपाइयों को स्पष्ट किया गया है, उसी प्रकार का इसमें प्रयत्न किया है। प्रतीत होता है यह उसीका भाषान्तर है, अपनी तरफ से रचयिता ने कुछ और बढ़ा दिया है।

संख्या—२८०. सर्वांग वर्णन, रचयिता—भिन्न कवि, कागज—स्यालकोटी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्रीरामचन्द्र साहित्यरत्न, पो०—ढोलपुरा, तह०—फीरोजाबाद, जिला—आगरा (उत्तरप्रदेश)।

आदि—॥ अथ सर्वांग वर्णन ॥ चन्द्रकान्ति सम मुख लसत, नील केस सह पास ॥ पुष्प राग सम कर लसैं, नारी रत्न समास ॥ चन्द्रकला उड़ दामिनी कनक सलाका देख ॥ दीप सिषा वोषद लता, माला बाला पेख ॥ सुभग सुधा धर तुल्य मुख, मधुर सुधा से बैन ॥ कुच कठोर श्री फल सरस, अरुन कमल से नैन ॥ मुख पूरन ससि सोहनो अमल कमल दल नैन ॥ कनक वेलि कल कामिनी माखन मधुरे बैन ॥ × × × नवला अमला कमल सी; चपला सी चल चारु ॥ चन्द्र-कला-सी सीतकर, कमला सी सुकुमार ॥

अंत—कवित्त । पन्ना कोटि कोटि वार डारौं नारि वारन पै, नील मनि कोटि कोटि नैन कजयारे पै ॥ नासिका के रंग पर पुषराज कोटि कोटि, वारि डारौं हीरा कोटि दन्त उजवारे पै ॥ अधर पै कोटिन प्रवाल लाल वारि डारौं, मेरु परवत कोटि भुजा गौरि वारे पै ॥ नखन पे तेरे मात मोती कोटि वारि डारौं, मानिक की पाँति कोटि तरवा तिहारे पैं ॥ सवैया चन्द्रकली जू कहा करिहै, सर कोकिल कीर कपोत लजानै ॥ विभ्रम हेम करी अहि केहरि, कुंज कली औ अनार के दानै ॥ काम सरासन धूम की रेख, मलूक सरोवर कंज भुलाने ॥ ऐसी भई नहीं है भुव मैं नहीं, होयगी नारि कहा कवि जानै ॥ × × ×

विषय—मुख, नासिका, दन्त, नेत्र, बाँह, टोढ़ी, ओंठ, कपोल, हाथ, केस, जाँघ, उदर, त्रिवली, गुल्फ, पैर आदि शरीर के सर्व अंगों की शोभा सरस सवैया तथा कवित्तों में वर्णित है।

विशेष ज्ञातव्य–उपर्युक्त ग्रन्थ में निम्न लिखित कवियों की कृतियाँ हैं जो प्रायः उत्कृष्ट एवं उत्तम हैः—१–विजै, २–गंग कवि, ३–राव राना सुकवि, ४–ईश्वर प्रसाद, ५–बिहारी, ६–कलिदास, ७–मुरलीधर, ८–गदाधर, ९–गुलामराम, १०–चंद, ११–महाकवि बालम, १२–कृष्ण, १३–प्रेम, १४–केशव, १५–लाल, १६–मलूक। इन कवियों के नाम कवित्त और सवैयों में आये हैं।

संख्या—२८१. शिल्प शास्त्र भाषा टीका तथा राज वल्लभे वास्तु शास्त्र, पत्र—८४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५९६, अपूर्ण, रूप—अर्वाचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० राधेश्याम जी ज्योतिषी, स्वामीघाट–मथुरा।

आदि— × × × षाड मासे आरम्भे मांडे तो पशुनो नाश थाय। श्रावण मासे आरम्भे तो पुत्रादीक लक्ष्मीनोव धारो होय। भाद्र पदे आरंभे तो शुन्य रहे। अश्वन मां आंरभे तो कलेश होय दुष उपजे कार्तिक माह आरंभे तो घरनां मनुष्य तथा सेवक चाकर मरे ॥ मार्ग शिर्ष मां आरम्भे तो धन धान्य होय। पौष मांसे आरंभ मांडे तो अग्नी नो भय उपजे ॥ फागुन मासे आरंभे तो श्री जे लक्ष्मी नोव थारो थाम ॥

अंत—तारां भयं हांति करोति युग्मां । लाभं तृतीया बहुशो पियाते । वामः शुभं मृत्यु वश द्वितीयो । तथा तृतीयो धन जीव नासं । टीका—दुर्ग १ भय हरे २ भय करे ३ त्रिगुण दुर्गा भेलि होय तो लाभ दाता डाबि होय तो भय उपजे ॥ त्रिगुण होय तो धन जीवनो नास होय ॥ डाबे पासे शब्द करै तो जमणि अनेड़ा विशब्द करै तो दुर्गा घणी फलदाता होय ॥ × × ×

विषय—राजग्रहों का वर्णन, १–३९ । द्विशाला, गृहक्षों का वर्णन, ४०–४३ । त्रिशाला युक्त ग्रह, ४४–४७ । सिंहासन छत्र गवाक्षः सभाष्टक, वेदिका, चतुष्टदीप स्तंभ लक्षण, ४८–५० । अद्भुत क्षेत्र रचना, ५१–६० । गृह निवास, ६१–६४ । दिन रात्रि मान स्वरोदय कोट चक्र त्रिकाल, ६५–७० । ज्योतिष लक्षण, ७१–७६ । × ×

विशेष ज्ञातव्य—इति श्री राजवल्लभे वास्तु शास्त्रे मंडन कृते सिंहासन छत्र लक्षणायां मष्टमोध्यायः ॥

संख्या—२८२. सूरसागरादि, रचयिता– सूरदास (गौघाट रुनकुता), कागज—मूँजी, पत्र—११०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)–२११६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बसन्तलाल, मु० पो०—नोहझील—मथुरा ।

आदि—अैसे हरि ऊधो सों जु कही । इन्द्री पाँच छटौ मन जीते सो मेरो दास सही । परनिन्दा हिंसा और मिथ्या करत नहीं । पर उपकार सके प्रानीन पै वांछित है हित ही । जग के माहि डर है जो अैसे ज्यो पाहुन उपही । मुदित भयौ मेरे जस गावै जग उपहास सही । सूरदास प्रभु भक्ति जु उपजी सतगुरु सर निगही ॥

अन्त—लंका वान चलि आयो पिय मेरे । करि पर पंच हरी ते सीता लंका कोहि ठगायो पिय मेरे । अंबहु मूढ़ मरमु नहीं जान्यो जब मैंने समझायो । अब क्यों न मिले पाय रुख अपने रामचन्द्र चढ़ि आयो । ऊँचीं भुजा देखि रथ ऊपर लछिमन धनुष चढ़ायो । गहिपद सूरदास भामिनि कहि राज विभीषण पायो ।

विषय—महाकवि सूरदास जी के विभिन्न पद—जिनमें कृष्ण भक्ति, कृष्ण लीला, प्रेम आदि के वर्णन हैं—संगृहीत हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—सूरदास के अतिरिक्त निम्नलिखित कवियों के पद भी प्रस्तुत संग्रह में आगए हैं :—१–तुलसीदास, २–किशोरीदास, ३–मीरा, ४–हरीदास, ५–कबीर ।

संख्या—२८३. ओषाचरित्र, कागज—बिचौंदी, पत्र—३७, आकार—६ × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण,) पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सार्वजनिक पुस्तकालय, मु० पो०—सादाबाद, जिला—मथुरा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि— × × × राग मारू । ओषा कहे सुंण साहेली ॥ लाव्य स्वामिनेवेली वेली ॥ बेनी तुं छू सुषनी दाता ॥ लाव्य स्वामी ने थाए सुजसाता ॥ चतुरांने कहे चित्र

लेहा ॥ बाईला ब्याना उपाय केहा ॥ दुर पंथ छे द्वारामती ॥ के मजवाय मारी वती ॥ त्यां सुद्रसन चक्र जफरे ॥ जे जाए ते तुंम स्त्रक हरे ॥ जावु जोजन सहस्त्र अंगार ॥ तारो केम आवै भरतार ॥

अंत—राग देसी फेर शुक देव राजा प्रत्ये कथा कै तेणे समे । ओषा अनिरुध बेजणं, बेठां मालिया मारमे । पुत्र पछे तेन आपियो, फैयर करे रिसामणा । गुरुगोत्र जनेमना वियां, कोडेदई वधामणां ॥ इसीषे गायने सांभले, ओषा अनिरुधनो विवाय ॥ तेने रोग मात्रन परभवे, चलि प्रश्न वैकुंठ राए ॥ पांच 'पदारथ नव निधि, सर्व सिधि उपर हाथ ॥ तेने तरियो तावन परभवे, तमें सांभलो सनु साथ ॥ कथा ओषा हरणनि कविता एकहि कर जोड़ ॥ श्रोता जन श्रवणे सुणि, बोलो जै जै रणछोड़ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे ओषा चरीत्र कथा सम्पूर्ण ॥ समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥

विषय—उषा का स्वप्न में अनिरुद्ध से प्रेम, चित्रलेखा सखी का अनिरुद्ध को द्वारिका से रात्रि में उठा लाना, वाणासुर को उषा और अनुरुद्ध के प्रेम का पता लगना, कृष्ण और प्रद्युम्न आदि का राक्षस से युद्ध में विजय प्राप्त करना और उषा को द्वारिका लाना आदि सम्पूर्ण उषा अनुरुद्ध आख्यायिका इसमें वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य-प्रस्तुत उषा चरित्र बहुत प्राचीन प्रकट होता है । आद्योपान्त पढ़ जाने पर भी इसके रचयिता के नाम का पता न लगा । भाषा इसकी ठेठ मारवाड़ी अथवा कुछ कुछ गुजराती सी प्रतीत होती है । इसपर विशेष विचार किया जाना आवश्यक है ।

संख्या—२८४. वचनिका गंगेवनी बावत की, पत्र—६, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कुमरपाल जी पचौली, स्थान—तरामई, पो०—शिकोहाबाद, मैनपुरी ।

आदि—श्री रामजी १ सिध श्री गणेसाइ नमाः ॥ वचनका गगेवनी वावत की ॥ षीचीरोगढ़ गागरुणाः स्थावण भाद्रवरीः संघरीक वारता मडे न रही छः वहु वीजु भुड लायसः सहरुसर पापर पड़ाघरः भाषरु का नाल हरीयरः पानी घर का ना नाडभरी घरः चोटी घर ली टंह क रही छः राजा नेत रग सहुत मन कपड़ा री षोली घर परी कीजे य पछः के वीणा चाकको जे घर छः उपत घोड़ा राषाषानः घोड़ा कीण भातराः लकी पापर कुतर घरः गंगाजल मुडीकटत्म प्रान नी आषराः काल भागी माकड़ जुझाण भरतः

अन्त—सह नाय री टहक हुई न रही छः उना राव राजा ननुसीप दीजीय छः येराको दीजछः न जुहार की जीय छः आतरा माहे राणी जी बोलर, जो कद ठाकुर पधारार लीरग हुवाः सुर नार रागन घटी घरः काले केहरि धरः मह पुरी घर पापान जुगला उपरी, धरः व बेटे वाव—विसारिया भाई न संभारः दातार की बात ड़ी माग नर संभारं ॥ वचन का गंगेवनी वावत षीचीरी लष जी समो पुरी बचन का वाँचे सो राम राम ॥

विषय—गंगेव का कथा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ में कहीं कहीं तो ठेठ हिंदी के शब्द एवम् क्रियाएँ व्यवहृत हुई हैं और कहीं कहीं गुजराती तथा महाराष्ट्री की क्रियाओं का समावेश है ।

संख्या—२८५. वर्षोत्सव पद संग्रह, रचयिता—भक्त गण, कागज—मूँजी, पत्र—१०४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२२३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमोहनलाल राधेलालजी रहसधारी, मु० पो०—श्री नन्दग्राम, जिला—मथुरा।

आदि—श्रीकृष्णाय नमः राग विलावल ॥ गोपी हो नन्दराय घर माँगन फगुवा आई। प्रमुदित कर है कुलाहल गावत गारि सुहाई। अबला एक अगमनी आगे दई है पठाई। तिनमें मुख्य राधिका लागत परम सुहाई। जसुमति अति आदर सों भीतर भवन बुलाई। खेलो हँसो निसंक संक जिन मानो काई।

अन्त—राग जै जै वन्ती। आजु तो हिंडोरे झूले छैया कदम की। गोपीजन ठाड़ी मानो चित्र के सदन की। देखत रँगीले नैंना बोलत मधुरे बैना, मोहे सब कोट काम छबीले वदन की। गावत मधुरे धुनि मोहे सब सुर मुनि, संकर से महाजोगी तारी छूटी तिनकी। त्रिविध समीर जहाँ वंसीवट झूले तहाँ, मन्द मन्द गावैं गोपी राधा के रमन की। नन्ददास प्रभु तहाँ ललिता झुलावै जहाँ भई है मगन सिन्धु सोभा स्याम घन की।

विषय—जन्माष्टमी की बधाई, १-१५। पलना के पद, १६-१७। बाल लीला, १८-२०। राधाष्टमी की बधाई, २१-२४। दान के पद, २५-२७। साँझी, २८-२९। नवरात्रि के नव विलास, ३०-३२। तेवहार तथा पूजा, ३३-५६। रास बसन्त, ५७-६६। होरी धमार, ६७-८६। फूल डोल अक्षय तृतिया, ८७-९१। मलार हिंडोला, ९२-१०४। निम्नांकित कवियों की रचनाएँ संगृहीत हैं:—१-माधोदास, २-रघुबीर, ३-सूरदास, ४-परमानन्द, ५-नन्ददास, ६-गोविन्द प्रभु, ७-हरिनारायण, ८-चतुरभुजदास, ९-श्रीविठ्ठल स्वामी, १०-रामदास, ११-व्यासदास, १२-दास गोपाल, १३-कृष्णदास, १४-हरिवंस, १५-रसिक प्रभू, १६-मानकचन्द, १७-कुम्भनदास।

विशेष ज्ञातव्य—संकलन बड़ा ही अच्छा है। कई ऐसे कवियों के भी इसमें पद्य हैं जिनके विषय में अभी तक कुछ विदित नहीं है, जैसे-१-रघुवीर। २-व्यासदास। ३-मानकचन्द आदि।

संख्या—२८६. वसन्त धमार, कागज—मूँजी, पत्र—२०९, आकार—६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—जमनादास जी कीरतनिया, नवा मन्दिर गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः अथ बसन्त धमार लिख्यते ॥ अथ राग बसन्त ॥ अष्ट पदी ॥ हरी री व्रज जुवती सत संगे ॥ विलसत किरणी गण व्रत बारण ॥ विरह वरति पति मान भंगे ॥ विभ्रम संभ्रम लोल विलोचन ॥ सूचित संचिता भावं ॥ कापि दृगंचल कवलय निकरै ॥ रंचि ततकल रावं ॥

अंत—राग बसन्त, खेले फागु अनुराग बढ्यो, गोपीजन देत असीस ॥ रसिकन की रस रार श्री श्री गिरधर जीवो कोटि वरीस ॥ घेरि आइ खेलन के कारन, अबला जुरि दस बीस ॥ हरिदास प्रभु खेलो बसन्त मिल श्री गोकुल के ईस ॥ × × × संवत् १८९४ ना वर्षे भाद्र पद मासे कृष्ण पक्षे तिथि ९ श्री गुरु वासरे × ×

विषय—अष्टछाप, अग्रस्वामी, रामदास, श्रीभट, वल्लभदास, व्रजपति, कृष्णजीवन लछिराम, गदाधर, मानकचंद, भैया माधोजन, गोविन्द प्रभु, रघुवीर, गोकुलचन्द, जन गोविन्द, रसिकशिरोमनि (हरिराइ), गोपीदास, ऋषीकेश, स्यामदास, विष्णुदास, वीरा गोपीदास, गोपालदास, माधोदास, मुरारीदास, सिरोमनि प्रभु, जगन्नाथ, हरिनारायण, स्यामदास, मोहनदास। इन पद रचयिताओं के पद इस ग्रंथ में लिपिबद्ध हैं। यथा शक्य इन्हें छाँटा गया है और इससे अधिक भी हो सकते हैं। राग बसन्त के पद, १–२७। धमार के पद, २८–१८७। डोल, १८८–१९६। सूचीपत्र, २००–२०९।

संख्या—२८७. बसन्त पद संग्रह, कागज—मूँजी, पत्र—१७४, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीजमुनादास जी कीर्तनिया, नवा मन्दिर, गोकुल, मथुरा।

आदि—श्री वल्लभाचार्य्य चरण कमलेभ्यो ॥ श्री आचार्य जी के वंश के नाव लिखे है ॥ श्री आचार्य जी को जन्म दिवस ॥ संवत् १५३५ ॥ वर्षे बैशाख बदी ११ माते हे नी चैत्र वदी ११ ॥ गुरुवार शुभ दिने द्विजराज श्री लक्ष्मण भट्ट जी गृहे भार्या उभय कुलानन्द दायिनी श्री भवानी अक्काजी श्री आचार्य महा प्रभुन को प्रागट्य ॥ जन्म लग्न ७ ॥ श्री आचार्य जी गहे भार्या श्री महालक्ष्मी अक्का जी उनके पुत्र ॥ २ ॥ प्रगट भए ॥ बड़े श्री गोपीनाथ जी उनका जन्म संवत् १५६७ वर्ष भाद्र बदि १२ ॥ अब श्री विट्ठलनाथ जी को जन्म संवत् १५७२ वर्षे पौष बदि ९॥

अन्त—राग छाया नट ॥ चपक ताल ॥ .वा अठताल ॥ होरी को है औसरि जिन कोऊ रिस माने ॥ काहू को हार तोरि काहू की चुरी फोरि काहू की खुभी लै भाजै ॥ अचानक काहू कों पिचकारिन नैननि तकि ताने ॥ काहू की नकबेसरि पकरी, काहू की चोली काहू की बैनी ॥ गहि कंठ सरी लै झटकि आनैं ॥ कुम्भनदास प्रभु इहि विधि खेलत गिरधर पिय सब रंग जाने ॥ × × ×

विषय—१–समस्त पदों की सूची। २–श्री आचार्य वल्लभ का जन्म तथा उनकी वंशावली। ३–वसन्त के पदों का चयन। अष्टसपा, गिरधर लाल, व्यास, गदाधर, अग्रस्वामी, रसिक प्रीतम, भगवान, हितरामराय, गोविन्द प्रभू, कल्यान, हरिदास, हित हरिवंश, जगत राइ, रघुवीर राइ, श्री भट, जन तुलसी, श्रीविट्ठल गिरधर, मोहनलाल, हरिजीवन, रघुनाथ, जगन्नाथ, दास गोपाल।

विशेष ज्ञातव्य—यह बड़ा ग्रंथ बहुत उपयोगी प्रतीत होता है। इसमें वल्लभाचार्य की जन्मतिथि, कुण्डली उनके वंश के लोगों का सम्पूर्ण परिचय और समय दिया हुआ है। इसमें २४ भक्त कवियों से अधिक के नाम आए हैं। बहुत से पद इस ग्रंथ में संकलित हैं।

चतुर्थ परिशिष्ट

काव्य संग्रहों में आए उन कवियों की नामावली जिनका पता आज तक न था।

चतुर्थ परिशिष्ट

काव्य संग्रहों में आए उन कवियों की नामावली जिनका पता आजतक न था।

क्र० सं०	कवियों के नाम
१	अजुद्धीराम
२	आशाराम
३	उग्रसेन
४	कमलानंद
५	कलाहरिया
६	कवि साईक
७	कवि सुनत
८	कश्यप
९	काशीदास
१०	काशीमणि
११	कृष्ण
१२	गुंजार
१३	गोकुलेश
१४	चंद्रभान
१५	चतुर प्रवीन
१६	जन हरि
१७	जय श्री वल्लभ हित
१८	जिनाल
१९	जीतलाल
२०	टोढ़ा
२१	तारा कवि
२२	दयासखि
२३	दास भैरो
२४	दौलत सिंह
२५	द्विज भूप
२६	नवल विहारी
२७	नवलेश

क्र० सं०	कवियों के नाम
२८	नामनाथ
२९	नारायण वल्लभ
३०	निरारी
३१	परहित
३२	पियादयाल
३३	पुष्य
३४	पुर्बी
३५	प्यारे गोपाल
३६	बटूनाथ
३७	बनजू
३८	बालम महाकवि
३९	विट्ठल गिरिधर (गंगाबाई)
४०	बीरा गोपीदास
४१	ब्रजाधीश
४२	भवसिंधु
४३	भवानीराम
४४	मुंशी जगन प्रसाद
४५	मुंशी नारायण प्रसाद
४६	मदन राय
४७	मसान
४८	माणिक पाल
४९	मुदित नारायण
५०	मैन
५१	मोहन बिहारी
५२	मोहन सिंह
५३	रमताराम

क्रम सं०	कवियों के नाम
५४	रससिंधु
५५	रसिक कृष्ण
५६	रसिक प्रभु
५७	रसिक शिरोमणि गोपीदास
५८	रूपहित
५९	लच्छीदास
६०	लक्ष्मीदास हित
६१	विपुल बिहारिन दास
६२	वृंदावन चन्द
६३	शेष मणि
६४	श्री दास
६५	श्री प्रसाद
६६	श्री मणि
६७	श्री रघुबीर

क्रम सं०	कवियों के नाम
६८	श्री लाल रूप
६९	सरस रंग
७०	सादी
७१	साहिबराम
७२	सुकवि रमेश
७३	सुखपज
७४	सुघर राय
७५	सपेहदार खाँ
७६	हरिनारायण श्यामदास
७७	हित अनूप
७८	हित कृष्णदास
७९	हित गोपाल
८०	हित श्रीदाम

ग्रंथकारों की अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों के सामने की संख्याएँ परिशिष्ट १ और २ में दी हुई क्रम-संख्याएँ हैं।

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथों के सामने की संख्याएँ परिशिष्ट १, २ और ३ में दी हुई क्रम संख्याएँ हैं।

———